

3087

LB: 4: 6  
15246.4



LB:4:6

5330

15246.4

Haridas vaidya  
Chikitsa chandoday





3087

5330

HRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR  
(LIBRARY)

5330

B:4:6 JANGAMAWADIMATH, VARANASI

5246.4

Please return this volume on or before the date last stamped  
Overdue volume will be charged 1/- per day.

[illegible]









# केतसा-चन्द्रोदय

❀ चौथा भाग ❀



लेखक—  
बाबू हरिदास वैद्य ।









# चिकित्सा-चन्द्रोदय

❀ चौथा भाग ❀

१/७१

---

लेखक  
बाबू हरिदास वैद्य



हरिदास एण्ड कम्पनी, लि०  
गली रावलिया, मथुरा ।

नवौ संस्करण

}

{

मूल्य ६)



प्रकाशक  
हरिदास एण्ड कम्पनी लि०,  
मथुरा ।

LB: 4: 6  
152 H 6.4-



1639

SRI JAG-  
JNANA S...  
LIBRARY,  
Jangamwadi Math, VARANASI.

Acc. No. 3087

1639

5330

नवाँ संस्करण  
मई १९४६  
२००० प्रतियाँ



मुद्रक  
पं० सत्यपाल शर्मा,  
कान्ति प्रेस, आगरा ।



# लेखक का निवेदन

—(ॐ)—

कागज तथा छपाई की अन्य सामग्रियों की भयानक महँगी के बावजूद विकित्सा-चन्द्रोदय ४थे भाग के दो-दो नये संस्करण इस लड़ाई के दरम्यान छपाने पड़े। पाठकों के प्रेम और कृष्ण की कृपा का इससे बड़ा सबूत और क्या हो सकता है !

पिछले संस्करण का कागज कुछ खराब था और छपाई भी उतनी अच्छी नहीं हो पाई थी। मेरी बीमारी के कारण उस संस्करण में कोई संशोधन-संवर्द्धन भी नहीं हो सका था। पर इस संस्करण में, खर्च की परवा न कर, जो अच्छे से अच्छा कागज बाजार में मिल सका वह लगाया गया है, छपाई भी उम्दा हुई है और अपनी तकलीफों का खयाल न कर मैंने स्वयं पुस्तक का प्रूफ पढ़ा है जिससे पुस्तक की रही-सही भूलें निकल गई हैं, कई नुस्खों में सुधार हो गया है तथा चन्द आजमूदा नुस्खे और बढ़ा दिये गये हैं। परिस्थिति के मुताबिक पुस्तक को अधिकाधिक उपादेय बनाने की पूरी कोशिश की गई है।

मथुरा  
२८ अप्रैल, १९४६

भवदीय—  
हरिदास वैद्य ।



**COPYRIGHT RESERVED.**

*All rights reserved.*  
इस ग्रन्थके सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ।

कोई भी शस्त्र चिकित्सा-चन्द्रोदय के किसी  
अंश या सर्वांश अथवा नुसखों को उलट-पुलट  
कर नहीं छाप सकेगा । प्रकाशक ने सारे  
अधिकार अपने हाथ में रखे हैं ।



# विषय-सूची

## प्रमेह-रोग-वर्णन ।

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
प्रमेहके सामान्य लक्षण	१	वातज प्रमेहोंके लक्षण	१२
प्रमेहके निदान कारण	२	प्रमेहोंके इतने भेद कैसे ?	१४
जिसे प्रमेह होने वाला होता है		साध्यासाध्यत्व	१४
वह क्या करता है ।	३	कफज प्रमेह क्यों साध्य हैं ?	१५
प्रमेहकी सम्प्राप्ति	४	पित्तज प्रमेह कष्टसाध्य क्यों ?	१५
प्रमेहमें दोष और दूष्य	५	वातज प्रमेह असाध्य क्यों ?	१६
प्रमेहके पूर्व रूप	५	प्रमेहोंके उपद्रव	१७
प्रमेहकी किस्में	६	कफज प्रमेहोंके उपद्रव	१७
प्रमेहके और भेद	६	पित्तज प्रमेहोंके उपद्रव	१७
कफज प्रमेहोंके नाम	६	वातज प्रमेहोंके उपद्रव	१७
पित्तज प्रमेहोंके नाम	७	उपद्रव सहित प्रमेह कष्टसाध्य	१८
वातज प्रमेहोंके नाम	७	चिकित्साकी उपेक्षा हानिकारक	१८
कफज प्रमेहोंके लक्षण	८	प्रमेहके असाध्य लक्षण	१८
पित्तज प्रमेहोंके लक्षण	१०	प्रमेहके अरिष्ट चिह्न	१९



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
जन्मका प्रमेह असाध्य	१६	प्रमेह मर्दन रस	८१
उपेक्षासे सभी प्रमेह मधुमेह	१६	रतिवल्लभ चूर्ण	८२
मधुमेह शब्दकी प्रवृत्तिमें कारण	२०	प्रमेहघ्न चूर्ण	८३
मधुमेहके भेद	२०	वसन्तकुसुमाकर रस	८३
मधुमेहके लक्षण	२०	धातु रोगान्तक चूर्ण	८५
शक्करकी परीक्षा विधि	२१	लोधासव	८६
स्त्रियोंको प्रमेह क्यों नहीं होता ?	२३	सुधारस	८८
प्रमेहकी उपेक्षासे पिड़िका	२३	प्रमेह-सुधा	८८
दस प्रकारकी पिड़िकाओंके लक्षण	२४	सेमल पाक	८९
पिड़िकाओंकी असाध्यता	२५	किशोर गुग्गल	९०
पिड़िकाओंके उपद्रव क्या बिना प्रमेहके भी पिड़िका ?	२६	गुग्गुलादि बटी	९१
प्रमेह चिकित्सामें चिकित्सकके ध्यान देने योग्य बातें	२६	प्रमेहान्तक बटी	९१
शरीर-शोधन चूर्ण	२६	आमलक्यादि मोदक	९३
दस्तावर नुसखा	३०	न्यग्रोधादि चूर्ण	९३
सामान्य चिकित्सा	४२	प्रमेहान्तक चूर्ण	९४
गरीबी नुसखे	४२	प्रमेह गजकेशरी बटी	९५
शिलाजीत परीक्षा	५०	प्रमेहान्तक खीर	९६
शिलाजीत शोधनेकी विधि	५२	सर्व प्रमेहनाशक चूर्ण	९७
शिलाजीत-सेवन-विधि	५२	त्रिकुटाद्य गुटिका	९७
अमीरी नुसखे	७५	गोक्षुराद्यावलेह	९८
रस-चिकित्सा	७५	असवादियोग	९८
प्रमेह-कुठार रस	७७	प्रमेहान्तक चूर्ण	९९
योगराज गुटी	७८	कामिनीमानमर्दन चूर्ण	९९
गूगल शोधनेकी विधि	७९	हरिशंकर रस	१००
प्रमेहारि शर्बत	८०	चन्द्रप्रभा बटी	१०१
		प्रमेहारि बटी	१०४
		कामिनी-मद-धूनक रस	१०५
		कामिनीमदभञ्जन बटी	१०५
		प्रमेहान्तक शर्बत	१०६
		शिलाजतु बटी	१०७



## विषय-सूची ।

३

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
शतावरादि चूर्ण	१०७	शनैर्मेह चिकित्सा	११५
प्रमेहान्तक बटी	१०८	लालामेह चिकित्सा	११५
प्रमेह-पिड्डिका चिकित्सा	१०९	कफज प्रमेहकी सामान्य चिकित्सा	११७
विशेष चिकित्सा	१११	पित्तज प्रमेह चिकित्सा	११७
कफजप्रमेह चिकित्सा	१११	क्षारमेह चिकित्सा	११७
उदकमेह चिकित्सा	१११	नीरप्रमेह चिकित्सा	११७
इक्षुप्रमेह चिकित्सा	११२	कालप्रमेह चिकित्सा	११८
सुराप्रमेह चिकित्सा	११२	हारिद्र प्रमेह चिकित्सा	११८
सान्द्रप्रमेह चिकित्सा	११२	माञ्जिष्ठ प्रमेह चिकित्सा	११९
पिष्टप्रमेह चिकित्सा	११३	रक्त प्रमेह चिकित्सा	११९
शुक्र-मेह चिकित्सा	११३	पित्तज प्रमेहोंकी सामान्य चिकित्सा	१२०
सिकतामेह चिकित्सा	११४	मिश्रित चिकित्सा	१२२
शीतमेह चिकित्सा	११५		



## नपुंसकता और धातु-रोग १२३

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
हस्तमैथुनका नतीजा	१२३	महाषण्ड नपुंसक	१४४
नपुंसकके सामान्य लक्षण	१२५	सौगन्धिक नपुंसक	१४५
पुंसत्व और नपुंसकत्वका		नपुंसकोंके और चार भेद	१४६
एकमात्र कारण वीर्य	१२६	बीजोपघात क्लीव (१)	१४६
सात प्रकारकी नामर्दी	१२६	कारण	१४६
मानसिक क्लैव्य (मनकी		ध्वजभङ्ग क्लीव (२)	१४८
नामर्दी)	१२७	ध्वजभङ्गके कारण	१४८
पित्तज क्लैव्य (पित्त वृद्धि-		जरासम्भव नपुंसक (३)	१५०
की नामर्दी)	१२६	कारण	१५१
वीर्यजन्य क्लैव्य (वीर्यकी		क्षय क्लीव नपुंसक (४)	१५२
कमीसे नामर्दी)	१३२	दूषित शुक्र-आर्तव	१५३
रोगजन्य क्लैव्य (रोगोंसे		वीर्यके दूषित होनेके कारण	१५३
नामर्दी)	१३५	दूषित शुक्रके भेद	१५५
शिराछेदजन्य क्लैव्य (नसकी		वात-दूषित वीर्यके लक्षण	१५५
नामर्दी)	१३६	पित्त-दूषित वीर्यके लक्षण	१५५
शुक्र-स्तम्भ क्लैव्य (वीर्यकी		कफ-दूषित वीर्यके लक्षण	१५६
रुकावटकी नामर्दी)	१३६	पित्त-वात दूषित वीर्यके	
सहज क्लैव्य (जन्मकी		लक्षण	१५६
नामर्दी)	१४२	रुधिर-दूषित वीर्यके लक्षण	१५६
आसेक्य नपुंसक	१४३	सन्निपात दूषित वीर्यके लक्षण	१५६
ईर्ष्यक नपुंसक	१४३	चोट प्रभृतिसे दूषित वीर्यके	
कुम्भीक नपुंसक	१४४	लक्षण	१५६



## विषय-सूची ।

५

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
अवसादादि वीर्य	१५६	जालीनूसवाला चींटियोंका	
शुद्ध वीर्यके लक्षण	१५६	तेल	१६६
नपुंसक-चिकित्सामें ध्यान देने		अन्य उपाय	१६६
योग्य बातें	१५७	चींटियोंका लेप	१६७
लिंगेन्द्रियकी शिथिलतापर सेक	१५६	माजून लवूच	१६६
दूसरा सेक	१५६	माजून गर्म	२००
सेकके साथ खानेकी दवा	१५६	गरीबी नुसखा	२००
लिंगकी शिथिलता नाशकलेप	१६०	लिंगपुष्टिकर लेप	२०३
लिंगका टेढ़ापन नाशक लेप	१६०	शीघ्रपतनकी चिकित्सा	२०३
सम्भोग सम्बन्धी शिक्षाएँ	१६३	( १ ) पहिला कारण	२०३
स्त्री-भोग सन्तानके लिए	१६४	दस्तावर नुसखा	२०४
सन्तानके लिए शुद्ध रज-वीर्य	१६६	वमनकारक क्वाथ	२०६
बाजीकरण औषधियाँ	१६८	शराब, फंजनोश	२०६
स्त्री-गमनका उचित समय	१७१	माजून खबसुल हदीद	२०७
कामियोंके याद रखने योग्य		शीघ्र वीर्यपतनकी चिकित्सा	२०८
बातें	१७८	( २ ) दूसरा कारण	२०८
मैथुनके पीछे खानेकी गोली	१८६	( ३ ) तीसरा कारण	२०६
दूसरा नुसखा	१८६	काहूका चूर्ण	२०६
तीसरा नुसखा	१८७	दूसरा चूर्ण	२१०
सुन्दरी नारी भी बलवर्द्धक है	१८७	( ४ ) चौथा कारण	२११
कामिनी गर्भहारि रस	१८८	मृगनाभ्यादि बटी	२१२
स्त्री-वशीकरण रस	१८६	शीघ्र वीर्यपतन संबंधी शिक्षा	२१३
अपूर्व स्तम्भनकारक चूर्ण	१९०	शुक्रतारल्य नाशक चूर्ण	२१४
स्तम्भनकारक गरीबी नुसखा	१९०	शुक्रतारल्य नाशक लेप	२१४
हर्षोत्पादक लेप	१९०	गर्भाधानका मन्त्र	२१६
अश्वगन्दाधि चूर्ण	१९२	सन्तानोत्पादक योग	२१७
आमलक्य रसायन	१९३	नपुंसकता और वीर्यके रोगोंकी	
हरड़-सेवन-विधि	१९४	सामान्य चिकित्सा	२२०
जलपान	१९४	गरीबी नुसखे	२२०
माजून सुकराती	१९४	अमीरी नुसखे	२४६



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
रस-चिकित्सा	२४६	वीर्यस्तम्भन-कारक बटी	२८३
ध्यान देने योग्य सूचना	२४६	महाकन्दर्प चूर्ण	२८३
धातु-पुष्टिकर चूर्ण	२४१	मदनमञ्जरी बटी	२८४
मदनानन्द चूर्ण	२४२	नारसिंह चूर्ण	२८५
बानरी चूर्ण	२४३	रतिवल्लभ महारस	२८६
किशमिशादि मोदक	२४४	स्त्री-रतिवल्लभ पूगीपाक	२८७
हरशशांक चूर्ण	२४५	कामेश्वर मोदक	२८६
माषादि मोदक	२४५	शतावरी घृत	२८६
मदनानन्द मोदक	२४६	फल घृत	२८७
बानरी गुटिका	२४७	नपुंसक-वल्लभ मांस	२८८
कामिनी मदभञ्जन मोदक	२४८	नपुंसकत्व नाशक पाक	२८९
मदनविनोद बटिका	२४९	स्त्रीमदभञ्जन अमृत रस	२९०
महापौष्टिक योग	२५०	शतावरी पाक	२९१
दूसरा महापौष्टिक पाक	२५१	पुरुषवल्लभ चूर्ण	२९२
मदनकान्ता गुटिका	२५२	कूष्माण्ड पाक	२९३
वीर्यवर्द्धक मोदक	२५३	विजया-पाक	२९४
पुष्टिकर योग	२५४	गोखरू पाक	२९५
पुष्टिकर चूर्ण	२५५	मूसली पाक	३००
पुष्टिकारक गोलियाँ	२५६	मृगनाभ्यादि बटी	३०१
धातु-विकार नाशक योग	२५६	मुक्तादि बटिका	३०१
सर्वरोगान्तक महौषधि	२७०	च्यवनप्राश अवलेह	३०२
कामेश्वर मोदक	२७१	खण्ड कूष्माण्ड अवलेह	३०३
नपुंसकत्वारि तेल	२७२	वृहत् कूष्माण्ड अवलेह	३०४
वृहत् बानरी मोदक	२७४	आम्र-पाक	३०५
आँवलोंका अवलेह	२७५	लवङ्गादि चूर्ण	३०६
नपुंसकरंजन अवलेह	२७६	शतावरी पाक	३०७
योगराज	२७७	असगन्ध पाक	३०८
पंचामृत चूर्ण	२७८	आमला पाक	३०९
बलीवीर्यवर्द्धक योगराज	२७८	एलादि बटी	३१०
पाकराज	२८०	बालाईका हलवा	३११



## विषय-सूची ।

७

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
बादामका हलवा	३११	वृहद् पूर्णचन्द्र रस	३३८
धातुवर्द्धक सुधा	३१२	श्रीमन्मथ रस	३३९
अमृत भल्लान्तक पाक	३१३	वृहच्छङ्गाराश्रक	३४१
अक्रीम-पाक सर्द मिज्जाज- वालों के लिए	३१४	पुष्पधन्वा रस	३४१
अक्रीम-पाक गर्म मिज्जाज- वालोंने के लिए	३१६	श्रीकामदेव रस	३४२
एरण्ड पाक	३१७	कन्दर्प सुन्दर रस	३४३
नोशदारू	३१८	वसन्तकुसुमाकर रस	३४४
पीपल पाक	३१९	कामिनी-विद्रावण रस	३४४
कैवाळ पाक	३२०	नपुंसकत्व नाशक गुटिका	३४५
मेथी मोदक	३२१	शुक्रवल्लभ रस	३४५
उच्चटापाक	३२२	कामेश्वर रस	३४६
रसाला या श्रीखण्ड	३२३	केशरादि बटी	३४७
शतावरी घृत	३२३	कस्तूरी गुटिका	३४८
आँवलोंने हलवा	३२४	कस्तूरी गुटिका	३४८
पुष्टिकर पूरी	३२५	अष्टावक्र रस	३५०
वीर्यवर्द्धक खाद्य	३२५	शुक्रमातृका बटी	३५०
अश्वगन्धादि घृत	३२५	कामाग्नि सन्दीपक मोदक	३५१
वृहत् अश्वगन्धादि घृत	३२७	मदनानन्द मोदक	३५३
उत्तमोत्तम रस	३२८	बलवीर्यवर्द्धक फुटकर नुसखे	३५६
लक्ष्मीविलास रस	३२८	स्तम्भन-योग	३५७
महालक्ष्मीविलास रस	३२९	लिंग-वृद्धिके उपाय	३६६
चन्द्रोदय रस क्रिया	३३२	स्त्री-द्रावक नुसखे	३७०
नपुंसक बल्लभ रस	३३४	नाना प्रकारके लेप और तिले	३७१
लघुचन्द्रोदय रस	३३५	राक्षस-तैल	३६२
मकरध्वज रस	३३६	नामर्दी नाशक तिला	३६६
सिद्धसूत रस	३३६	कन्दर्प तैल	३६७
पूर्णचन्द्र रस	३३७	तिला नामर्दी	३६८
		शिशन-वृद्धिकारक नुसखे	४०२



## धातुओंका शोधन-मार्ग ४०५

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
अभ्रक भस्मकी विधि	४०५	अभ्रक-द्रावण	४२७
अभ्रकके भेद	४०५	उत्तम अभ्रक-भस्मकी पहचान	४२८
अभ्रककी पहचान प्रभृति	४०६	अभ्रकसे रोग-नाश	४२८
अभ्रक शोधन जरूरी है	४०७	अभ्रक सेवनके लिए अनुपान	
अभ्रक शोधनेकी पाँच		और मात्रा	४२९
तरकीबें	४०७	बङ्ग-भस्मकी विधि	४२६
धान्याभ्रककी विधि	४०८	भस्मके लिए राँगा कैसा लेना	४३६
अभ्रकके मारनेकी तरकीबें	४१०	राँगा शोधनेकी तरकीब	४३६
दशपुटी अभ्रक-भस्म	४१०	बिना शोधे राँगेके दोष	४४०
अभ्रककी एक पुटी भस्म	४११	बङ्गभस्मके विकारोंकी शान्ति	
तीनपुटी अभ्रक-भस्म	४१२	का उपाय	४४०
दशपुटी अभ्रक-भस्म	४१३	बङ्गभस्मके गुण	४४०
बीसपुटी अभ्रक-भस्म	४१४	राँगा मारनेकी तरकीब	४४१
इकतालीस पुटी अभ्रक-भस्म	४१६	बङ्गभस्मकी परीक्षा	४४३
साठ पुटी अभ्रक-भस्म	४१७	बङ्गभस्मकी और तरकीब	४४५
शत (सौ) पुटी अभ्रक-भस्म	४१८	दूसरी विधि	४४५
सहस्र पुटी अभ्रक-भस्म	४१९	तीसरी विधि	४४६
अभ्रक भस्मकी और तरकीबें	४२२	चौथी विधि	४४६
अभ्रक-सत्व पातन-विधि	४२४	पाँचवीं विधि	४४७
अभ्रक-सर्व शोधन-विधि	४२५	छठी विधि	४४७
अभ्रक-सत्व मारण-विधि	४२६	सातवीं विधि	४४७
अभ्रक-भस्मका अभृतीकरण	४२६	आठवीं विधि (आसान)	४४८
श्वेत अभ्रक बनानेकी विधि	४२७	बङ्गभस्म सेवनके अनुपान	४५०



## विषय-सूची ।

६

विषय	पृष्ठांक
शीशा-भस्मकी विधि	४५४
शीशा कैसा लेना चाहिये ?	४५४
शीशा शोधनेकी तरकीब	४५४
शीशा मारनेकी विधियाँ	४५५
पहली विधि	४५५
दूसरी विधि	४५७
शीशा-भस्मकी तीसरी विधि	४५८
पीली भस्मकी विधि	४५८
काली भस्मकी विधि	४५८
शीशा भस्मके गुण	४५९
दूषित भस्मका शुद्धिकरण	४५९
शीशा-भस्मके अनुपान	४६०
जस्ता-भस्मकी विधि	४६१
जस्ता कैसा लेना ?	४६१
जस्ता शोधन-विधि	४६१
जस्ता मारनेकी तरकीब	४६२
पहली विधि	४६२
दूसरी विधि	४६२
तीसरी विधि	४६३
जस्ता भस्म के गुण	४६४
खराब जस्ता भस्मके दोष	४६४
दूषित जस्ता भस्म की शान्ति के उपाय	४६४
जस्ता भस्म सेवनके अनुपान	४६४
लोहा-भस्मकी विधि	४६५
लोहा कैसा लेना ?	४६५
लोहा शोधने की तरकीब	४६६
लोहा मारनेकी विधियाँ	४६७
पहली विधि	४६७
दूसरी विधि	४६७
तीसरी विधि	४६८
चौथी विधि	४६८
अशुद्ध सुवर्णके दोष	४७१
अशुद्ध सुवर्णभस्मकी शान्ति का उपाय	४७१
सुवर्ण भस्मके गुण	४८०
सुवर्ण-भस्म सेवन के अनुपान	४८०
चाँदी-भस्मकी विधि	४८३
चाँदी कैसी लेनी ?	४८३
चाँदी शोधनेकी तरकीब	४८३



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
चाँदी भस्मकी विधियाँ	४८४	पहली विधि	४९८
पहली विधि	४८४	दूसरी विधि	४९९
दूसरी विधि	४८५	हरताल मारनेकी विधि	५००
तीसरी विधि	४८६	हरताल भस्म परीक्षा	५००
चौथी विधि	४८७	हरताल-भस्मकी सेवन-विधि	५०१
चाँदी भस्म के गुण	४८८	मूँगा भस्मकी विधि	५०४
अशुद्ध चाँदी भस्म के उपद्रव	४८८	मूँगा भस्मके गुण	५०५
उपद्रव शान्तिके उपाय	४८८	मूँगा शोधनेकी तरकीब	५०५
चाँदी भस्म सेवन के अनुपान	४८८	मूँगा मारनेकी पहली तरकीब	५०६
ताम्बा-भस्मकी विधि	४९१	मूँगा-भस्मकी और विधि	५०६
ताम्बा कैसा लेना ?	४९१	तीसरी विधि	५०७
ताम्बा शोधनेकी विधि	४९१	मूँगा-भस्मके अनुपान	५०७
ताम्बा मारनेकी विधि	४९२	मोती-भस्मकी विधि	५०८
पहली विधि	४९२	मोतीकी उत्पत्ति	५०८
दूसरी विधि	४९४	मोतीकी परीक्षा	५०८
तीसरी विधि	४९४	मोती-भस्मकी पहली विधि	५०९
ताम्बा-भस्म सेवनके अनुपान	४९५	दूसरी विधि	५१०
संखिया मारनेकी विधि	४९७	तीसरी विधि	५१०
पहली विधि	४९७	मोती-भस्मके गुण	५१०
दूसरी विधि	४९७	मोती-भस्म सेवनके अनुपान	५११
हरताल भस्मकी विधि	४९८	मकरध्वज	५११
हरताल शोधन-विधि	४९८	घङ्गुणवलिजारित मकरध्वज	५१२



# चन्द उपधातुओं और विषोंकी शोधन विधि ५१३

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
गन्धकका वर्णन	५१३	मैनसिल शोधनेकी विधि	५२०
गन्धकके गुणादि	५१३	हरताल वर्णन	५२१
अशुद्ध गन्धकके दोष	५१४	हरतालके नाम और गुण	५२१
शुद्ध गन्धकके गुण	५१४	शुद्ध और मारी हरतालके गुण	५२१
गंधक शोधनेकी विधियाँ	५१४	अशुद्ध हरतालके दोष	५२२
पहली विधि	५१४	हरताल शोधन-विधि	५२२
दूसरी विधि	५१५	तूतिया-वर्णन	५२२
तीसरी विधि	५१५	तूतियाके गुण	५२२
चौथी विधि	५१६	तूतिया शोधन-विधि	५२३
पाँचवीं विधि	५१६	तूतिया मारण	५२३
अशुद्ध गन्धकके दोषोंकी शान्ति		मुर्दासंग-वर्णन	५२४
का उपाय	५१६	नाम और गुण	५२४
गन्धक सेवन-विधि	५१६	शोधन-विधि	५२४
हिंगुल-वर्णन	५१७	मारनेकी तरकीब	५२४
हिंगुलके नाम और लक्षण	५१७	सिन्दूर-वर्णन	५२४
हिंगुलके गुण	५१७	सिन्दूर शोधन-विधि	५२५
हिंगुलसे पारा निकालनेकी विधि	५१७	मण्डूर-वर्णन	५२५
हिंगुल शोधनेकी विधि	५१८	मण्डूर शोधन-विधि	५२५
शिलाजीत वर्णन	५१९	मण्डूर-भस्म विधि	५२६
मैनसिल-वर्णन	५१९	मण्डूर-भस्मके गुण	५२६
मैनसिलके नाम और गुण	५१९	सेवन-विधि	५२६
अशुद्ध मैनसिलके दोष	५२०	सोनामक्खी-वर्णन	५१५



विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
शुद्ध सोनामक्खीके गुण	५२७	रूपामक्खी-वर्णन	५३०
अशुद्ध सोनामक्खीके दोष	५२८	शुद्ध रूपामक्खीके गुण	५३०
सोनामक्खी शोधन-विधि	५२८	अशुद्ध रूपामक्खी के दोष	५३१
सोनामक्खी-भस्म	५२९	शोधन-विधि	५३१
उत्तम भस्मकी पहचान	५२९	रूपामक्खीकी भस्मकी विधि	५३१
अशुद्ध भस्मसे हानि	५२९	अशुद्ध रूपामक्खीकी शान्ति	५३१
अशुद्ध सोनामक्खीकी शान्ति	५३०		

## विष और उपविषोंकी शोधन-विधि ।

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
विषके नाम और लक्षण	५३२	चिरमिटीके विषकी शान्ति	५३८
विष शुद्ध करनेकी विधि	५३४	अफीम-वर्णन	५३८
सींगिया विषकी शुद्धि	५३४	शोधन-विधि	५३८
उपविष शोधन-विधि	५३४	अफीमकी शान्तिके	
आकका दूध	५३४	उपाय	५३९
आककी शोधन-विधि	५३५	कुचला-वर्णन	५३९
कलियारीका वर्णन	५३५	शोधनेकी तरकीब	५३९
शोधन-विधि	५३५	धतूरेका वर्णन	५४०
कनेरका वर्णन	५३५	शोधन-विधि	५४१
कनेर शोधन-विधि	५३७	बाँझको सन्तान देनेवाले और	
चिरमिटी-वर्णन	५३७	नामर्दको मर्द बनानेवाले	
शोधन-विधि	५३७	उत्तमोत्तम योग	५४१-५४४



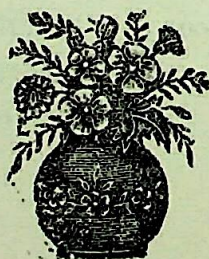
## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके सुभातेके लिए कुछ नई-नई बातें ५४५-५७३

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
नपुंसकता या नामर्दी	५७४	वाजीकरणकी क्या	
वाजीकरण	५८५	जरूरत है ?	५९७
वाजीकरण शब्दका अर्थ	५८६	स्वप्नदोष	५९८
वाजीकरण पदार्थ	५८७	वीर्यका नाश होना प्रमेह है	५९९
स्त्री ही सर्वोत्तम वाजीकरण है	५८७	प्रसंगवशात् शुक्रमेह-वर्णन	६०१
दो तरह की वाजीकरण		शुक्रमेह किन्हीं और क्यों	
चिकित्सा	५८९	होता है ?	६०१
वाजीकरण किन-किन को		शुक्रमेहसे नपुंसकता	६०२
हितकारी है ?	५९०	शुक्रमेहके उपद्रव	६०३
वाजीकरण-सेवन किनके लिए		कफज प्रमेहोंके उपद्रव	६०२
अनुचित है ?	५९०	समस्त प्रमेहोंके उपद्रव	६०३
निरोगको वाजीकरणकी क्या		स्वप्नदोष या स्वप्नमेहके कारण	६०४
जरूरत है ?	५९४	स्वप्नदोष या स्वप्न-प्रमेहके	
वाजीकरण सेवन करनेसे		पूर्व रूप	६०६
पहले पेट साफ करना		स्वप्नदोष या स्वप्नमेहके	
परमावश्यक है	५९५	लक्षण	६०८
वाजीकरण सेवनमें पथ्यापथ्य	५९६	स्वप्नदोष नाशक नुसखे	६१०
पथ्य	५९६	स्वप्नदोष-रोगियोंके याद	
अपथ्य	५९६	रखने योग्य बातें	६२३



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिए फलोंके गुणावगुण ६२५

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठांक
फालसे	६२५	बेलफल	६३२
आम	६२६	अनार	६३२
खरबूजे	६२८	नीबू	६३३
शान्तरे	६२८	बिजौरा नीबू	६३४
नारङ्गियाँ	६२८	जंभीरी नीबू	६३४
शहतूत	६२९	मीठा नीबू	६३५
सेब	६२९	खजूर	६३५
नाशपाती	६३०	केला	६३५
अंगूर	६३०	नारियल	६३६
शरीफा	६३१	सूखा नारियल	६३६
सिंघाड़े	६३१	हरे नारियलका पानी	६३७
खिरनी	६३२	फलोंका व्यवहार लाभदायक	६३८-६४०





## उत्तमोत्तम परीक्षित नवीन योग ६४१

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
स्वप्नदोष-नाशक योग	६४१	चाँदीकी सफेद भस्म	६५७
सरल वाजीकरण योग	६४२	हिंगुलकी सफेद भस्म	६५७
नपुंसकत्वहर योग	६४२	संखिया भस्म	६५७
अपूर्व वाजीकरण योग	६४२	संखिया भस्मकी और विधि	६५८
स्वप्नदोष-नाशक गरीबी योग	६४२	संखिया भस्मकी और विधि	६५९
अनुभूत वाजीकरण योग	६४३	पारेकी भस्म	६५९
प्रवाल योग	६४३	गन्धक योग	६६०
पुष्टिकारक महौषधि	६४४	उन्मत्त पंचक अर्क	६६०
पुष्टिकारक गरीबी योग	६४४	नामर्दी पर अचूक गोली और	
नपुंसकत्व-नाशक सरल योग	६४५	मरहम	६६१
पुष्टिकर हलवा	६४५	अपूर्व मैथुन-शक्तिवर्द्धक योग	६६३
टानिक पिल्स ( मद्रासी )	६४५	उत्तमोत्तम लेप और तिले	६६३
कानपुरी शक्तिवर्द्धक दवा	६४६	शिथिलता-नाशक लेप	६६३
धातुपुष्टिकी अपूर्व आज्ञामूदा		बानर चोआ	३६४
गोली	६४६	शिथिलता-नाशक घृत	६६४
सर्वाङ्ग शक्तिवर्द्धक रसयोग		एक यूनानी तिला	६६४
चाँदी-भस्म	६४६	लिंगको दृढ़ करनेवाला तेल	६६४
स्वप्नदोषनाशक अचूक नुसखा	६४७	काबिल तारीफ तिला	६६५
अंग्रेजी पेटेन्ट टॉनिक पिल्स	६४८	अजीबो गरीब तिला	६६६
खून बढ़ानेवाला नुसखा	६४८	हस्तमैथुनियोंको तिला	६६६
परम पुष्टिकर पारेकी भस्म	६४९	मैथुन-शक्तिवर्द्धक तिला	६६७
महावाजीकरण योग शिंगरफ		नपुंसकत्व-नाशक अपूर्व तिला	६६७
की सफेद भस्म	६५२	नपुंसकत्वहर घृत	६६८

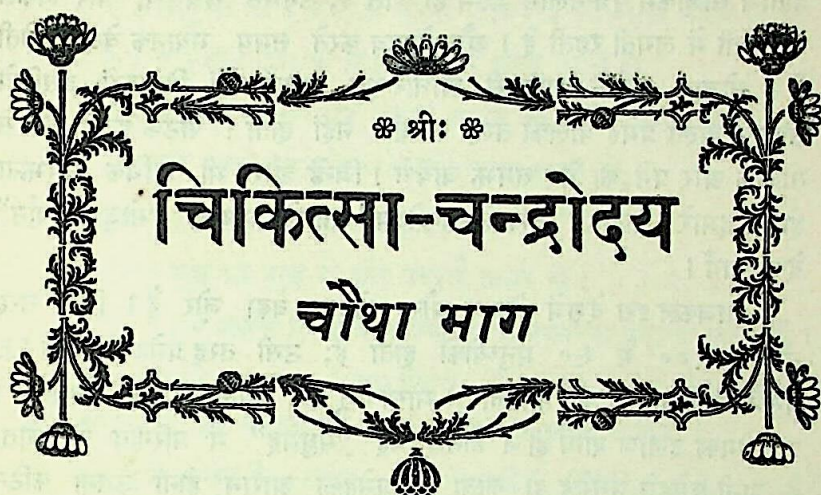


१६

विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठांक	विषय	पृष्ठांक
करवीराय तेल	६६८	अपूर्व लेप	६७४
मुजरंब तिला	६६८	परम पुष्टिकर और क्षधा वर्द्धक	
नपुंसकत्व गजकेशरी लेप	६६८	बटी	६७४
त्राण्डी प्रभृतिका लेप	६७०	शक्तिवर्द्धक अंग्रेजी गोली	६७५
तिलोंका राजा	६७०	शक्तिवटी ( अंग्रेजी )	६७५
बाँकापन नाशक लेप	६७१	डामियाना पिल्स	६७५
स्तम्भनकारक तिला	६७१	टानिक पिल्स	६७६
अपूर्व चमत्कारक तिला	६७१	सोजाककी दवा	६७७
फलोंका तेल	६७२	अपूर्व स्तम्भन बटी	६७७
मैथुनमें आनन्दकारी लेप	६७२	शीघ्रपतन-नाशक बटी	६७७
लज्जत देने वाला लेप	६७२	समस्त प्रमेहनाशक परीक्षित	
राजबका मज्जा देने वाला लेप	६७२	योग	६७८
अपूर्व आनन्ददायक लेप	६७३	महावाजीकरण योग	६७८
बीरबहुटी आदिका आनन्द-		मेहमिहर तेल	६८६
कारी लेप	६७४	स्वर्ण बङ्ग	६८७
कपूरादि लेप	६७४	इन्द्रवटी	६८८
अत्यानन्दी लेप	६७४	बृहत् बंगेश्वर	६८८
कवाबचीनीका लेप	६७४		





## प्रमेह रोग-वर्णन ।

### प्रमेह के सामान्य लक्षण ।

( प्रमेहकी सीधी-सादी पहचान )

प्रमेह रोग होनेसे पेशाब ज़ियादा और गदला होता है, ये ही प्रमेहके सामान्य लक्षण हैं ।

नोट—( १ ) प्रमेह पेशाबकी नलीका रोग है, पर यह सोज़ाककी तरह एकमात्र पेशाबकी नलीसे ही सम्बन्ध नहीं रखता, बल्कि सारे शरीरसे सम्बन्ध रखता है; अर्थात् प्रमेह और सोज़ाक दोनों ही पेशाबकी नलीके रोग हैं; पर प्रमेह सारे शरीरसे सम्बन्ध रखता है और सोज़ाक एकमात्र मूत्र-नलीसे सम्बन्ध रखता है । प्रमेह होने से—शरीरकी खून, मांस, चरबी और वीर्य प्रभृति धातुएँ खराब होकर, मूत्र-नली द्वारा, मूत्रके साथ निकलती हैं; इससे मनुष्यका जीवन कठिन हो जाता है; किन्तु सोज़ाकसे यह नहीं



होता । सोजाकमें मूत्र-नलीमें जख्म हो जाते हैं, उनमेंसे राध या पीप निकल कर धोती में लगती रहती है । और पेशाब करते समय भयानक वेदना होती है । सोजाक होनेसे शरीरकी आधार-भूत धातुएँ नहीं निकलतीं; इसलिये सोजाक वाला प्रमेह वालेकी तरह कमजोर नहीं होता । पाठक इतने ही से सोजाक और प्रमेहका भेद समझ जायेंगे । जिन्हें और भी अधिक समझना हो, वे हमारे लिखे “चिकित्सा-चन्द्रोदय” तीसरे भागका “सोजाक-वर्णन” देख जायें ।

आजकल इस देशमें सोजाक और प्रमेहका बड़ा जोर है । जिस तरह सोजाक १०० में ६० मनुष्योंको होता है; उसी तरह प्रमेह १०० में ६६ मनुष्योंको होता है । कोई विरला ही भाग्यवान् इस भयानक रोगसे बचता है । इस रोगका इलाज शीघ्र ही न होनेसे यह “मधुमेह” में परिणत हो जाता है; यानी प्रमेहसे मधुमेह हो जाता है; प्रमेहका आराम होना उतना कठिन नहीं; पर मधुमेहका आराम होना कठिन ही नहीं, बल्कि अनेक बार असम्भव हो जाता है । इसलिये इस रोगके होते ही फ़ौरन इलाज कराना चाहिये । आरम्भमें, इसका इलाज सहजमें हो जाता है, पर जब यह भयङ्कर रूप धारण कर लेता है तब बड़ी कठिनाई होती है । असाध्य हो जाने पर तो ब्रह्मा भी इसे आराम नहीं कर सकता । अतः जिन्हें सुखपूर्वक जीना हो, जिन्हें आरोग्य-सुख भोगना हो, जिन्हें पूरी १०० वर्षकी उम्र तक इस दुनियामें रहना हो, वे प्रमेह के चिह्न नज़र आते ही, हजार काम छोड़कर, प्रमेहका इलाज करें या करावें । हारीतने कहा है :—

यथा च नामानि तथैव लक्षणं बलक्षयं नापि नरस्य देहे ।  
कुर्वन्ति शीघ्रं भिषजांवरिष्ठाः कुर्यात्क्रियाञ्च शमनायहेतुम् ॥

### प्रमेहके निदान-कारण ।

नीचे लिखे कारणोंसे मनुष्यको प्रमेह रोग होता है:—

- ( १ ) ज़रा भी मिहनत न करने से ।
- ( २ ) रात दिन बैठे-बैठे आनन्दमें गुंजारनेसे ।
- ( ३ ) हर समय पलँग या गद्दे-तकियों पर पड़े रहनेसे ।
- ( ४ ) दिन-रात खूब सोनेसे ।
- ( ५ ) दही-दूध ज़ियादा खानेसे ।



( ६ ) कछुआ और मछली प्रभृत जलचरों का मांस खाने से ।

( ७ ) जलवाले देश के प्राणियों का मांस खाने से ।

( ८ ) दिहाती पशु—भेड़ बकरी आदि का मांस खाने से ।

( ९ ) नये चावल प्रभृति नये-नये अन्न खाने से ।

( १० ) बरसात का नया जल पीने से ।

( ११ ) गुड़ या गुड़ के बने पदार्थ खाने से ।

( १२ ) इन सबके सिवाय अन्यान्य कफकारक पदार्थ खाने से ।

नोट—जितने कफकारक आहार-विहार हैं, वे सब प्रमेह पैदा करते हैं; अतः मनुष्य को कफ बढ़ानेवाले पदार्थ ज़ियादा न खाने चाहिए ।

वाग्मट्ट ने लिखा है—स्वादु, खट्टे, नमकीन, चिकने, भारी, कफकारी, शीतल पदार्थ, नवीन अन्न, मदिरा, अनूप देश के प्राणियों का मांस, ईख, गुड़, गायका दूध, एक स्थान में रहना, एक ही तरह के आसनसे प्रीति रखना, और शास्त्र-विरुद्ध सोना—ये सब प्रमेह पैदा करनेवाले हैं । आत्रेय ऋषि कहते हैं—मिहनत करने, धूपमें फिरने, तीक्ष्ण एवं विरुद्ध भोजन करने एवं शराब, दूध तथा चरपरे पदार्थ खाने से मुनियोंने प्रमेह की उत्पत्ति लिखी है ।

प्रश्न—बंगाली मछली बहुत खाते हैं, पर उनको प्रमेह क्यों नहीं होता ?

उत्तर—प्रमेह बङ्गालियों को भी होता है, पर मछली खानेसे इसलिये नहीं होता कि वे लोग मछली को सरसोंके तेल में भूँज कर खाते हैं । तेल में भूँजनेसे मछली का कफकारी गुण जाता रहता है ।

**जिसे प्रमेह होने वाला होता है, वह**

**क्या-क्या करता है ?**

सुश्रुताचार्य लिखते हैं—

दिवास्वप्नाव्यायामालस्यप्रसक्तं शीतस्निग्धमधुरमेघद्रवान्न-  
पानसेविनं पुरुषं जानीयात्प्रमेही भविष्यति ।

जो मनुष्य गरमीके मौसमके सिवा और मौसमोंमें दिनमें सोता या बहुत सोता है, किसी तरह की कसरत या मिहनत नहीं करता, आलस्यमें दिन काटता है, बहुत ही शीतल, चिकने और मीठे



पदार्थ खाता-पीता है; यानी शीतल शर्बत, घी, दूध, शिखरन और पन्ने प्रभृति उचितसे अधिक खाता-पीता है, समझना चाहिये, उसे “प्रमेह” रोग होगा । जिन्हें प्रमेहसे बचना हो, वे प्रमेह पैदा करने वाले उपरोक्त कारणोंसे बचें ।

नोट—दिनमें किन-किनको और कब सोना चाहिये—और किन-किन को कब दिनमें न सोना चाहिये—इस विषयमें हमने “स्वास्थ्यरत्ना” के पृष्ठ २४१—४५ में विस्तारसे लिखा है । प्रत्येक तन्दुरुस्ती चाहने वालेको वहां लिखे हुए निद्रा-सम्बन्धी नियम देख लेने चाहिएँ ।

## प्रमेह की सम्प्राप्ति

( प्रमेह कैसे होता है ? )

कफ—मूत्राशय या वस्तिमें रहनेवाली चरबीको, मांसको और शरीरके क्लेदको दूषित करके या बिगाड़ कर “कफज प्रमेह” उत्पन्न करता है ।

नोट—वात, पित्त और मेदके साथ कफके मिले रहनेसे “कफका प्रमेह” होता है ।

कफकी तरह ही, बहुत ही ज़ियादा गरम पदार्थोंके सेवन करनेसे पित्त—कुपित होकर या बढ़कर, कफादि सौम्य धातुओंका क्षय या कमी होने पर—मेद और मांस आदि धातुओंको दूषित या खराब करके “पित्तज प्रमेह” पैदा करता है ।

नोट—वात, कफ, रुधिर—खून और मेदके साथ पित्तके मिले रहनेसे “पित्तका प्रमेह” होता है ।

कफ और पित्तके क्षीण होजानेसे, वायु—कुपित होकर चरबी, मज्जा, ओज और लसीका धातुओंको खींचकर, वस्ति या मूत्राशय अथवा पेशाबकी थैलीके मुँहपर ले आता और इस तरह “वातज प्रमेह” पैदा करता है ।

नोट—कफ, पित्त, वसा, मज्जा और मेदके साथ वायुके मिले रहने से “वातज प्रमेह” होता है ।



## प्रमेहमें दोष और दूष्य

प्रमेह रोगमें वात, पित्त और कफ ये तीन दोष हैं । जो दूसरों को दूषित करते हैं; उन्हें दोष कहते हैं ।

प्रमेहमें मेद, खून, वीर्य, रस, चरबी, लसीका, मज्जा, ओज और मांस—ये दूष्य हैं; क्योंकि ये वात, पित्त और कफसे दूषित होते हैं ❀ ।

प्रमेहमें वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष, ऊपर लिखे मेद, खून, वीर्य, रस, चरबी, लसीका, मज्जा और ओज एवं मांसको दूषित करते हैं; मतलब यह है कि, वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष; मेद, मांस आदि धातुओंको खराब करके प्रमेह रोग पैदा करते हैं ।

खराब करनेवाले हैं—वातादिक दोष और खराब होने वाली हैं—मेद, मांस प्रभृति धातुएँ । इन धातुओंके खराब होनेका परिणाम या नतीजा अथवा फल है—“प्रमेह” ।

## प्रमेहके पूर्वरूप ।

जिसे प्रमेह रोग होनेवाला होता है, उसके पहले दाँत, कण्ठ, जीभ और तालुमें मैल जमता है; हाथ-पैरोंमें जलन होती है, शरीरमें चिकनापन; और मुँहमें मीठापन होता है तथा प्यास बहुत लगती है । किसी-किसीने बालोंकी जटासी हो जाना एवं नाखूनोंका बहुत बढ़ना भी लिखा है ।

❀ मांसके चिकने भागको “वसा” या चरबी कहते हैं । हड्डीके बीचके चिकने भागको “मज्जा” या हड्डीका गूदा कहते हैं । चमड़े और मांसके बीचके पानी-जैसे पदार्थको “लसीका” कहते हैं और सब धातुओंके सारको “ओज” कहते हैं ।



## प्रमेहकी किस्में ।

मुख्यतया प्रमेह तीन तरहके होते हैं:—

( १ ) कफज ।

( २ ) पित्तज ।

( ३ ) वातज ।

## प्रमेहके और भेद ।

कफके, पित्तके और वायुके प्रमेह विद्वानोंने, इलाजके सुभीतेके लिए, बीस किस्मोंमें बाँटे हैं:—

( १ ) कफज प्रमेह १० प्रकारके होते हैं ।

( २ ) पित्तज प्रमेह ६ प्रकारके होते हैं ।

( ३ ) वातज प्रमेह ४ प्रकारके होते हैं ।

## कफज प्रमेहोंके नाम ।

( १ ) उदक प्रमेह ।

( २ ) इक्षु प्रमेह ।

( ३ ) सान्द्र प्रमेह ।

( ४ ) सुरा प्रमेह ।

( ५ ) पिष्ट प्रमेह ।

( ६ ) शुक्र प्रमेह ।

( ७ ) सिकता प्रमेह ।

( ८ ) शीत प्रमेह ।

( ९ ) शनैर्मेह ।

( १० ) लाला प्रमेह ।



नोट—इन प्रमेहोंके जैसे-जैसे नाम हैं, वैसे-ही-वैसे पेशाब होते हैं। जैसे; उदक का अर्थ पानी है। उदक प्रमेह होनेसे पानी-जैसा पेशाब होता है। इन्तु का अर्थ ईख या गन्ना है, इसलिये इन्तु प्रमेह होनेसे ईख या गन्नेकी तरह अत्यन्त मीठा पेशाब होता है। इसी तरह और सबको समझ लेना चाहिये।

## पित्तज प्रमेहों के नाम ।

( १ ) क्षार प्रमेह ।

( २ ) नील प्रमेह ।

( ३ ) काल प्रमेह ।

( ४ ) हरिद्र प्रमेह ।

( ५ ) मांजिष्ठ प्रमेह ।

( ६ ) रक्त प्रमेह ।

नोट—इन प्रमेहोंके भी जैसे नाम हैं, वैसे ही पेशाब होते हैं। क्षार प्रमेह वाले का पेशाब खारे जल-जैसा; नील प्रमेह वालेका नीले रङ्गका, काल प्रमेह वालेका काले रङ्गका, हरिद्र प्रमेह वालेका गहरे हल्दीके रङ्गका, मांजिष्ठ प्रमेह वालेका मँजीठके रङ्गका और रक्त प्रमेह वालेका खूनके रङ्गका पेशाब होता है।

## वातज प्रमेहों के नाम ।

( १ ) वसा प्रमेह ।

( २ ) मज्जा प्रमेह ।

( ३ ) क्षौद्र प्रमेह ।

( ४ ) हस्ति प्रमेह ।

नोट—इन प्रमेहोंमें भी नामानुसार पेशाब होते हैं। वसाका अर्थ चरबी है। वसा प्रमेहकी चरबी-जैसा पेशाब होता है। मज्जा प्रमेहकी पेशाब मज्जाके समान या मज्जा मिला होता है। क्षौद्रका अर्थ शहद है। इसमें पेशाब कषैला, रूखा और मीठा होता है। हस्ति प्रमेह वाला हाथीकी तरह बारम्बार, वेगारहित और रुक-रुक कर मूतता है।



## कफज प्रमेहोंके नाम ।

( १ ) उदक प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब ज़ियादा सफ़ेद, साफ़, शीतल, गन्धहीन, पानी-जैसा, किसी क़दर गदला और चिकना होता है ।

नोट—इस प्रमेह वाला जब मूतता है, तब उसे मूत्र-नलीमें ठण्डा-ठण्डा पानी-सा जान पड़ता है । बहुधा मिक्कदारमें ज़ियादा, साफ़, सफ़ेद; गन्धरहित जलके समान पेशाब होता है । इस प्रमेह वालेको “नीमकी अन्तरछाल” का काढ़ा शहद मिलाकर ४० दिन तक पीना चाहिये ।

( २ ) इन्तु प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब ईख या गन्नेके रसकी तरह मीठा होता है ।

नोट—इन्तु प्रमेहका पेशाब रंग और स्वादमें ईख जैसा होता है । इस प्रमेह वालेके पेशाब पर भी चींटियाँ लगती हैं, पर यह मधुमेहकी तरह असाध्य नहीं होता । इसमें ‘अरनी’ का काढ़ा पीना हितकारी है ।

( ३ ) सान्द्र प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब, रातके समय, किसी बर्तनमें रख देनेसे सवेरे ही गाढ़ा हो जाता है ।

नोट—इस प्रमेह वालेका पेशाब बर्तनमें गाढ़ा हो जाता है और नीचे गदला पदार्थ जम जाता है । इसके लिये “सातलाकी जड़”का काढ़ा अच्छा है ।

( ४ ) सुरा प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब ऊपरसे सुरा या शराबकी तरह साफ़ और नीचेसे गाढ़ा होता है ।

नोट—अगर इस रोगीका पेशाब बोटलमें रखकर देखा जाय, तो वह नीचेसे गाढ़ा और ऊपरसे पतला होगा, रङ्ग मटमैला या किसी क़दर ललाई लिये होगा । इसके लिये भी उदक प्रमेहकी तरह “नीमकी अन्तरछाल” का काढ़ा अच्छा है ।

( ५ ) पिष्ट प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब पिसे हुए चाँवलोंके पानी-जैसा सफ़ेद और मिक्कदारमें ज़ियादा होता है तथा पेशाब करते समय रोएँ खड़े हो जाते हैं ।

नोट—पिष्ट प्रमेहकी लिये हल्दी और दारुहल्दीका काढ़ा पीना हित है ।



( ६ ) शुक्र प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब वीर्य-जैसा होता है अथवा इसके पेशाब में वीर्य मिला रहता है ।

नोट—शुक्र प्रमेहकी पेशाबमें वीर्य मिला रहता है । इसके लिये ‘दूबकी जड़, शैवाल और करंज की गिरी’ का काढ़ा हितकर है ।

( ७ ) सिकता मेह—इस रोग वालेके पेशाबमें बालू-जैसे कड़े पदार्थ गिरते हैं; यानी पेशाबके साथ बालू रेतके समान छोटे-छोटे कण गिरते हैं ।

नोट—सिकता मेह और शर्करा रोगकी पहचानमें अक्सर भूल हो जाती है । सिकता मेहमें पेशाबके साथ सफ़ेद रङ्गकी बालू आती है; पर शर्करामें लाल रङ्गकी बालू आती है । बालूकी रङ्गतसे ठीक पता लगता है । सिकता मेह होनेसे पेशाब करते समय दर्द भी होता है । शर्करा रोग अक्सर सोझाक होने के बाद होता है । हकीम लोग सिकता मेह और शर्करा दोनों को ही “रेग मसाना” कहते हैं । सिकता मेहमें “चीतेकी जड़की छाल” का काढ़ा मुफीद है ।

( ८ ) शीत मेह—इस रोगीका पेशाब बहुत ही शीतल, मीठा और मिक्तदारमें ज़ियादा होता है ।

नोट—शीत प्रमेहवाला पेशाब करते समय जाड़ेके मारे काँप उठता है और उसके रोएँ खड़े हो जाते हैं । सुश्रुतने शीत प्रमेहकी जगह “लवण मेह” लिखा है । हरीतने भी “लवण मेह” लिखा है । इसके रोगी भी देखनेमें आते हैं । इस रोगीको “पाढ़ी और अगरका काढ़ा” लाभदायक है ।

( ९ ) शनैर्मेह—इस रोगवाला बहुत ही धीरे-धीरे पेशाब करता है और पेशाब मिक्तदार में थोड़ा होता है; यानी यह रोगी धीरे-धीरे और थोड़ा मूतता है ।

नोट—इस रोगमें थोड़ा-थोड़ा और बारम्बार पेशाब होता है, पर पेशाब करते समय किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती । बहुतसे लोग थोड़ा पेशाब देखकर इसे “मूत्रकृच्छ्र” समझ लेते हैं । यह बड़ी भूल है । मूत्रकृच्छ्रमें पीड़ा होती है; पर शनैर्मेह में पीड़ा नहीं होती है । इस रोगीको “खैर के पेड़की छाल का काढ़ा” अच्छा है ।

( १० ) लाला प्रमेह—इस रोगीका पेशाब लार के समान, तार या तौतूदार एवं चिकना या लिबलिबा होता है ।



नोट—सुश्रुतमें लाला प्रमेह का भी जिक्र नहीं है। इसके स्थानमें “फेन प्रमेह” लिखा है। रोगी दोनों तरहके मिलते हैं। फेन-प्रमेही को पेड़ू पर बोझ-सा रखा जान पड़ता है और पेशाब भागदार होता है या पेशाबपर भाग जम जाते हैं। इन दोनों प्रमेहवालोंको “त्रिफलाका काढ़ा” अच्छा है।

सूचना—इन दसों प्रमेहोंमें जो काढ़े दिये जायँ, उनके औट जानेपर, उनमें “शहद” जरूर मिला दें। शहदकी मात्रा ३ माशेसे १ तोले तक है। काढ़ेकी दवा दो या अढ़ाई तोले लेकर, मिट्टीकी हॉंडीमें, पाव सवा पाव जल डालकर, औटानी चाहिए। जब आधा या चौथाई पानी रह जाय, मल-छानकर शीतल कर लेना चाहिए और “शहद” मिलाकर पी जाना चाहिये। उपरोक्त सब काढ़े इन रोगोंपर परीक्षित हैं; पर एक ही दवा सबको फ़ायदा नहीं कर सकती। अगर काढ़ोंसे लाभ न हो, तो आगे लिखी दवाओंमेंसे कोई बढ़िया दवा देनी चाहिए। हाँ, एक बात और है; अगर रोगीका मिज़ाज गरम हो, उधर गरमीका मौसम हो, तो काढ़ा न देकर, “हिम” देना चाहिए; बरसात और जाड़े में “काढ़ा” देना ही हितकर है; पर इसपर भी न भूलना चाहिए; रोगीका मिज़ाज देखना चाहिए। अगर मिज़ाज ठण्डा हो तो “काढ़ा”; और गरम हो तो “हिम” देना चाहिए। मौसमकी अपेक्षा प्रकृति या मिज़ाज पर ध्यान देना जरूरी है।

नोट—अगर दवा पानीमें भिगोकर औटायी जाती है, तो उसे “काढ़ा” कहते हैं। अगर रातको भिगोकर सवेरे, बिना औटाये, मल-छानकर पिलायी जाती है, तो “हिम” कहते हैं।

## पित्तज प्रमेहों के लक्षण ।

( १ ) चार प्रमेह—इस रोगीका पेशाब गन्ध, वर्ण, रस और स्पर्श में खारे जलके समान होता है।

नोट—चार प्रमेहोंको “त्रिफलेका हिम” हितकारी है।



( २ ) नील प्रमेह—इस रोगीका पेशाब नीले रंगका या पपहिया पत्तीके रंग जैसा होता है ।

नोट—इस रोगीको “पीपलके पेड़की छालका काढ़ा या हिम” अच्छा है ।

( ३ ) काल प्रमेह—इस रोगीका पेशाब काली स्याहीके जैसा काला होता है ।

नोट—इस रोगीको “नीमकी अन्तरछाल, आमले, गिलोय और परवलके पत्तोंका काढ़ा” अच्छा है ।

( ४ ) हरिद्र मेह—इस रोगीका शाव रसमें कड़वा एवं रङ्गमें हल्दीके गहरे रङ्गका होता है और पेशाब करते समय जलन भी होती है ।

नोट—इस रोगीको “लोध, सुगन्धवाला, सफ़ेद चन्दन और धायके फूलोंका काढ़ा या हिम” अच्छा है ।

( ५ ) मांजिष्ठ प्रमेह—इस रोगीके पेशाबमें बदबू आती है और वह रङ्गमें मँजीठके काढ़े-जैसा होता है ।

नोट—इस रोगीको “नीमकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और कमलगट्टे-की गिरीका ( हरी पत्तो निकालकर ) काढ़ा या हिम” उत्तम है ।

( ६ ) रक्त प्रमेह—इस रोगीका पेशाब बदबूदार, गरम, खारा और खून-जैसा लाल होता है ।

नोट—“लाल कमलके फूल, नीले कलमके फूल, फूलप्रियंगू और ढाकके फूल” इन चारोंका काढ़ा, मिश्री मिलाकर पिलानेसे रक्त प्रमेहमें अवश्य लाभ होता है ।

सूचना—इन छहों प्रमेहोंमें, यदि पहले पेशाब साफ़ करके दवा खिलायी-पिलाई जाय, तो उत्तम हो—जल्दी लाभ हो । पेटके रोगोंमें जिस तरह कोठा साफ़ करके दवा देनेसे जल्दी लाभ होता है, उसी तरह प्रमेह रोगोंमें मूत्र-मार्ग साफ़ करके दवा देना अच्छा है । नं० ५ मांजिष्ठ प्रमेह और नं० ६ रक्त प्रमेहमें तो इस बातकी बहुत ही ज़रूरत है, क्योंकि रक्त प्रमेहमें रोगी भीतरी गरमीसे बेचैन रहता है । अगर ऐसे रोगीका पेशाब शीतल और साफ़ हो जायगा, तो रोगीको चैन आजायगा और उसे आराम होनेका विश्वास हो जायगा । “शीतल-चाँनीको” पाकक, घण्टे-घण्टे या दो-दो घण्टेमें, दो-दो या तीन-तीन माशे,



फँकानेसे पेशाब साफ़ होंगे । शीतलचीनी फाँककर ऊपरसे १ गिलास जल पीना होगा । शीतलचीनीके साथ पिया हुआ पानी पेटमें नहीं रहता; निकल जाता है । प्रमेहमें अधिक जल पीना जरूर बुरा है, पर खासकर कफज और वातज प्रमेहोंमें; पित्तज प्रमेहमें उतना हानिकर नहीं और खास कर शीतलचीनीके चूर्णके साथ । पित्तके छहों प्रमेहोंमें शीतलचीनीका चूर्ण कम-से-कम एक सप्ताह फाँककर, पेशाब साफ़ कर दिया जाय और फिर कोई काढ़ा या हिम अथवा अन्य दवा दी जाय, तो निश्चय ही जल्दी लाभ हो ।

## वातज प्रमेहोंके लक्षण ।

( १ ) वासा प्रमेह—इस रोगवाला चरबी-जैसा या चरबीके समान पेशाब करता है ।

( २ ) मज्जा प्रमेह—इस रोगवाला मज्जा-मिला या मज्जा-जैसा मूतता है ।

( ३ ) क्षौद्र प्रमेह—इस प्रमेह वालेका पेशाब शहदके रङ्गका, मीठा, रूखा और कषैला होता है । इसपर भी मक्खियाँ अथवा चींटियाँ बैठती हैं ।

( ४ ) हस्ति प्रमेह—इस प्रमेहवाला मतवाले हाथीकी तरह या उसके मद-जैसा पेशाब बारम्बार, वेगरहित, तार-तार और रुक-रुक कर करता है; यानी हस्ति प्रमेही ठहर-ठहर कर मूतता है, पेशाबमें तारसे निकलते हैं और उसमें वेग नहीं होता ।

नोट—हस्ति प्रमेहीको पेशाबके पहले वेग नहीं होता—हाजत नहीं होती । वह हाथीकी तरह मिक्रदारमें अधिक मूतता है । इस रोगीका पेशाब कभी-कभी रुक भी जाता है ।

## प्रश्नोत्तर ।

प्रश्न ( १ )—हस्ति प्रमेह और शनैः प्रमेहमें क्या फर्क है ?

उत्तर—हस्ति प्रमेह वाला ठहर-ठहरकर मूतता, पर मिक्रदारमें



जियादा मूतता है; शनैः प्रमेह वाला धीरे-धीरे मूतता, पर मिक्कदारमें कम मूतता है ।

प्रश्न ( २ )—पिष्ट प्रमेह और हस्ति प्रमेहमें क्या भेद है ?

उत्तर—पिष्ट प्रमेह वाला भी मिक्कदारमें जियादा मूतता है और हस्ति प्रमेही भी; किन्तु पिष्ट प्रमेहवालेका पेशाब रङ्गमें पिसे हुए चावलोंके धोवन-जैसा होता है; पर हस्ति प्रमेहवालेका पेशाब हाथीके मूद-जैसा होता है । पिष्ट प्रमेहवाला जब मूतता है, तब रोएँ खड़े हो जाते हैं; पर हस्ति प्रमेह में ऐसा नहीं होता ।

प्रश्न ( ३ )—इन्नु प्रमेह और चौद्र प्रमेहमें क्या भेद है ?

उत्तर—इन्नु प्रमेहवालेका पेशाब ऊखकी तरह का और मीठा होता है । उसपर चींटियाँ लगती हैं; किन्तु चौद्र प्रमेहवालेका पेशाब शहदके रंगका, मीठा, कषैला और रूखा होता है; चींटियाँ इसपर भी बैठती हैं । इन्नु प्रमेह कफसे होता है और असाध्य नहीं होता; जबकि चौद्र प्रमेह वातज होता और असाध्य होता है ।

प्रश्न ( ४ )—सिकता प्रमेह और शर्करा में क्या भेद है ?

उत्तर—सिकतामें पेशाबके साथ सफेद बालू आती है; पर शर्करामें लाल आती है ।

प्रश्न ( ५ )—शनैः प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रमें क्या भेद है ?

उत्तर—शनैः प्रमेहमें रोगी रुक-रुककर मूतता है, पर उसे तकलीफ नहीं होती; मूत्रकृच्छ्रमें भी रोगी ठहर-ठहरकर मूतता है, पर इसमें जलन और पीड़ा होती है ।

प्रश्न ( ६ )—उदकमेही और शीतमेहीके पेशाबमें क्या फर्क है ?

उत्तर—उदकमेहीका पेशाब शीतल होता है और शीतमेहीका अत्यन्त शीतल होता है । उदकमेहीको पेशाब करते समय भीतरसे ठण्डा-ठण्डा मालूम होता है; पर उसे जाड़ा नहीं लगता और वह काँपता नहीं, किन्तु शीतमेहीको पेशाब करते समय शीत लगता है, वह काँप उठता है और उसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।



प्रश्न ( ७ )—सान्द्रप्रमेह और सुरामेहके मूत्रमें क्या भेद है ?

उत्तर—सान्द्रमेही और सुरामेही दोनोंके पेशाबोंको बर्तनमें रखने से नीचे गाढ़ा-गाढ़ा पदार्थ जम जाता है। फर्क यही है कि, सान्द्रमेहीका पेशाब सब गाढ़ा हो जाता है; किन्तु सुरामेह वालेका ऊपरसे पतला होता है और उसका रङ्ग भी मटियल और कुछ सुर्खीमाइल होता है ।

प्रश्न ( ८ )—मांजिष्ठ प्रमेही और रक्त प्रमेही दोनों ही के पेशाब लाल और बदबूदार होते हैं, फिर अन्तर क्या ?

उत्तर—मांजिष्ठ प्रमेहीका पेशाब मँजीठके रङ्गका और रक्तप्रमेहीका रक्तके रङ्गका होता है। मांजिष्ठ प्रमेहवालेके पेशाबमें आम या कच्ची दुर्गन्ध रहती है; किन्तु रक्त प्रमेहमें कच्ची बदबू नहीं होती। साफ पहचान यह है कि, रक्त प्रमेहीका पेशाब खूनके रङ्ग का और गरम बहुत होता है ।

प्रश्न ( ९ )—किस प्रमेहमें मूतते समय दर्द भी होता है ?

उत्तर—सिकता प्रमेहमें। दर्द मूत्रकृच्छ्रमें भी होता है। सिकता मेहमें सफेद बालू आती है और मूत्रकृच्छ्रमें दर्द होने पर भी बालू नहीं आती ।

## प्रमेहों के इतने भेद कैसे ?

वात, पित्त और कफ—इन तीनों दोषों और मेद, मांस आदि धातुओंकी विशेषता और संयोग की विशेषतासे मूत्र या पेशाबके रङ्ग वगैरहमें जो फर्क होता है, उसीसे प्रमेहों के इतने भेद हुए ।

## साध्यासाध्यत्व ।

( १ ) कफके दस प्रमेह साध्य हैं; यानी उत्तम चिकित्सासे आराम हो जाते हैं ।



( २ ) पित्तके ६ प्रमेह याप्य या कष्टसाध्य हैं; यानी बड़ी दिक्कतों से आराम होते हैं ।

( ३ ) वातके चार प्रमेह असाध्य हैं; इनका आराम होना असम्भव है ।

## कफज प्रमेह क्यों साध्य हैं ?

कफज प्रमेह इसलिये साध्य हैं कि, वे केवल मेद आदि धातुओंके दूषित होनेसे होते हैं और कर्षण रूप एक क्रिया से ही नाश हो जाते हैं; यानी इनकी औषधि-क्रिया समान है । वे केवल एक “कफ” को ठीक करनेसे आराम हो जाते हैं । किसीको घटाना और किसी को बढ़ाना नहीं पड़ता ।

नोट—कफके दसों प्रमेह शरीरके दोष और दूष्यकी एक ही क्रिया होनेसे साध्य होते हैं । यह रोग का प्रभाव है कि प्रमेहमें ‘दोष और दूष्यकी तुल्यता’ साध्यत्व का कारण होती है । प्रमेहके सिवा और रोगोंमें दूष्यकी असमानता साध्यताका कारण होती है ।

## पित्तज प्रमेह कष्टसाध्य क्यों ?

पित्तज प्रमेह इस कारणसे याप्य या कष्टसाध्य हैं कि, वे कफ आदि सौम्य धातुओंके क्षय होने पर, मेद आदिके दूषित होनेसे होते हैं । इनकी औषधि-क्रिया कफज प्रमेहोंकी तरह समान नहीं—असमान या विषम है । ये मधुर और रूखी आदि विषम क्रियासे नाश होते हैं । विषम इसलिए कि, शीतल और मधुर पदार्थ पित्तको शान्त करते हैं, पर मेदको बढ़ाते हैं; उधर गरम और कटु पदार्थ मेद को नाश करते हैं, पर पित्तको बढ़ाते हैं ।



खुलासा यों समझिये, किं अगर पित्तज प्रमेहोंके नाश करनेके लिए पित्त नाशक शीतल और मीठे पदार्थ देते हैं, तो पित्त तो शान्त हो जाता है; पर मेद आदि धातुएँ बढ़ने लगती हैं। इस दशामें रोगका आराम होना कठिन हो जाता है; क्योंकि पित्त शान्त हो और मेद न बढ़े, तभी प्रमेह आराम हो। इसीसे पित्तके प्रमेहोंमें मधुर और रूखी—असमान या विषम चिकित्सा करते हैं; क्योंकि मधुरसे पित्त शान्त होता और रूखीसे मेद आदि घटते, पर बढ़ने नहीं पाते।

नोट—दोष और दूष्यकी विषम क्रिया होनेसे पित्तज प्रमेह याप्य या कष्टसाध्य होते हैं; अर्थात् दवा खाने तक आराम रहते हैं। पित्तज प्रमेहमें दोष—पित्त—जिस दवासे शान्त होता है, दूष्य मेदादि धातुएँ उसीसे बढ़ती हैं। कफज प्रमेहोंमें यह बात नहीं है। जिस दवासे कफ शान्त होता है, उसीसे मेदादि घटते हैं। कफज प्रमेहकी चिकित्सामें यह बड़ा आराम है, पर पित्तजमें यह सुभीता नहीं।

## वातज प्रमेह असाध्य क्यों ?

वातज प्रमेह असाध्य इस कारणसे हैं कि, ये सारी धातुओंके क्षय होनेसे होते हैं। वायु—मज्जा आदि गम्भीर धातुओंको आकर्षण करनेसे पीड़ित करता है। वातज प्रमेहोंमें सारी धातुएँ क्षय होती हैं और इनकी भी क्रिया या चिकित्सा विषम है, इसीसे वातज प्रमेह असाध्य समझे जाते हैं।

नोट—प्रमेहके सिवा और रोगोंमें भी मेद, मांस आदि धातुएँ दूषित या खराब होती हैं, पर प्रमेहकी तरह नहीं। और रोगोंमें धातुएँ ऐसी दूषित नहीं होतीं, जो प्रमेहकी तरह पेशाबके साथ बाहर जाने लगें। प्रमेहमें धातुएँ पतली होकर और पेशाबमें मिलकर बाहर गिरने लगती हैं, इसीसे प्रमेहवाला दिन-दिन कमजोर होने लगता है। यही वजह है कि शास्त्रोंमें ओज धातुका नाम लिया गया है, क्योंकि जब मेद आदि धातुएँ घटेंगी, तो सब धातुओंका सार “ओज” आप ही घटेगा।



## प्रमेहोंके उपद्रव

### कफज प्रमेहोंके उपद्रव ।

( १ ) अन्नका अच्छी तरह न पचाना, ( २ ) अरुचि, ( ३ ) वमन, ( ४ ) तन्द्रा, ( ५ ) खाँसी, और ( ६ ) पीनस या जुकाम, ये कफज प्रमेहोंके उपद्रव हैं ।

नोट—उपरोक्त छै उपद्रवोंके सिवा पेशाब और शरीरपर मक्खियाँ बैठती हैं, आलस्य बढ़ता, साथ ही मांसकी वृद्धि होती, बारम्बार जुकाम होता और उसकी वजहसे सिरमें ऐसी पीड़ा होती है, जिसके कारण समझमें नहीं आते ।

### पित्तज प्रमेहोंके उपद्रव ।

( १ ) मूत्राशय, या पेड़ूमें तोड़ने-सरीखी पीड़ा, ( २ ) दोनों अण्डकोषों या फोतोंका पककर फूटना, ( ३ ) ज्वर चढ़ना, ( ४ ) जलन होना, ( ५ ) प्यास लगना, ( ६ ) खट्टी डकारें आना, ( ७ ) मूर्च्छा या बेहोशी, और ( ८ ) मल-भेद या दस्त लगना—ये सब पित्तज प्रमेहोंके उपद्रव हैं ।

नोट—इन उपद्रवोंके सिवा लिङ्गकी नलीमें सुईसी गड़ती हैं और घाव भी हो जाते हैं । नाक, आँख और मुँहसे धुआँ-सा निकलता जान पड़ता है । दाह, मूर्च्छा, प्यास, नींद न आना और पाण्डु रोग—ये विकार देखे जाते हैं । नेत्र, दस्त और मूत्र इत्यादि पीले हो जाते हैं; क्योंकि हाट डिज़ीज, किडनीके रोग—दिलके मर्ज, गुर्देके रोग और पाण्डु रोगका पूरा सम्बन्ध है ।

### वातज प्रमेहोंके उपद्रव ।

( १ ) उदावर्त, ( २ ) कँपकँपी, ( ३ ) छातीमें दर्द, ( ४ ) हृदयका रुकना, ( ५ ) चपलता, ( ६ ) शूल—दर्द, ( ७ ) नींद न आना,



( ८ ) शोष, ( ९ ) श्वास, और ( १० ) खाँसी ये वातज प्रमेहोंके उपद्रव हैं ।

नोट—इन लक्षणोंके सिवा हृदयका अकड़ना-सा और दस्तका कब्ज भी होता है ।

## उपद्रव-सहित प्रमेह कष्टसाध्य ।

जो प्रमेह सुखसाध्य होते हैं, वे भी उपद्रव-सहित होने से कष्टसाध्य हो जाते हैं; यानी दिक्कतसे आराम होते हैं ।

## चिकित्साकी उपेक्षा हानिकारक ।

आयुर्वेदमें लिखा हैः—

सर्व एव प्रमेहास्तु कालेनाप्रतिकारिणः ।

मधुमेहत्वमायान्ति तदाऽसाध्या भवन्ति हि ॥

प्रमेह रोगके होते ही इलाज न करनेसे, सब तरहके प्रमेह, समय पाकर, “मधुमेह” हो जाते हैं; और जब मधुमेह हो जाते हैं, तब असाध्य हो जाते हैं ।

## प्रमेहके असाध्य लक्षण ।

उधर कहे हुए सब उपद्रव हों; पेशाब बारम्बार होता हो, शरा-विकाः आदि दश प्रमेह-पिड़िकाओंमें से कोई पिड़िका हो और रोगने शरीरमें वास कर लिया हो, तो प्रमेह-रोगीका आराम होना कठिन ही नहीं—असम्भव है । ऐसा प्रमेह रोगीको मार डालता है । और भी कहा हैः—



मूच्छ्राद्धिज्वरश्वासकासविसर्प गौरवैः ।

उपद्रवैरुपेतो यः प्रमेही दुष्प्रतिक्रियः ॥

जो प्रमेह-रोगी मूच्छ्रा, वमन, ज्वर, श्वास, खाँसी, विसर्प और गुरुता या भारीपनसे युक्त हो, वह असाध्य है; अर्थात् वह आराम हो नहीं सकता ।

## प्रमेहके अरिष्ट-चिन्ह ।

जिस प्रमेह-रोगीमें सब लक्षण हों, जिसके पेशाबके साथ बहुतसा वीर्य जाता हो और जो पिड़िकाओंसे पीड़ित हो, वह प्रमेह-रोगी निश्चय ही मर जायगा ।

## जन्मका प्रमेह असाध्य ।

जातः प्रमेही मधुमेहिनो वा न साध्य रोगः सहि बीजदोषात् ।  
ये चापि केचित्कुलजा विकारा भवन्ति तांस्तान्प्रवदन्त्यसाध्यान् ॥

मधुमेही मनुष्यसे पैदा हुए प्रमेहीका 'प्रमेह—बीजके दोषके कारण से—साध्य नहीं होता; यानी आराम नहीं होता, क्योंकि जो विकार जिसके कुल-परम्परासे चले आते हैं, वे आराम नहीं होते ।

उपेक्षासे सभी प्रमेह मधुमेह हो जाते हैं ।

चिकित्सा न करनेसे—शीघ्र ही इलाज न करनेसे—सभी तरहके प्रमेह "मधुमेह" हो जाते हैं और जब मधुमेह हो जाते हैं, असाध्य हो जाते हैं ।



## मधुमेह शब्दकी प्रवृत्तिमें कारण ।

मधुरं यच्च सर्वेषु प्रायो मध्विव मेहति ।

सर्वेऽपि मधुमेहाख्या माधुर्याच्च तनोरतः ॥

प्रायः सब तरहके प्रमेहोंमें मनुष्य मीठा और मधुके समान मूतता है तथा शरीरमें मधुरता होती है; इसीसे सब प्रमेहोंको 'मधुमेह' कहते हैं ।

## मधुमेहके भेद ।

मधुमेह होनेसे पेशाब मधु—शहद—जैसा—होता है । मधुमेह दो तरहके होते हैं:—

( १ ) धातुओंका क्षय होनेके कारण, वायुके प्रकोपसे होता है ।

( २ ) दोषों द्वारा, वायुकी राहें रुक जानेसे होता है ।

वायुकी राह रुक जानेसे वायु अकस्मात् दोषोंके चिह्न दिखाती है तथा उसी तरह क्षणमात्रमें मूत्राशयको खाली कर देती है और क्षण-भरमें ही भर भी देती है, इसीसे यह प्रमेह कष्टसाध्य हो जाता है ।

## मधुमेहके लक्षण ।

सभी तरहके प्रमेहोंका बहुत दिन इलाज न होनेसे मधुमेह रोग हो जाता है । इस रोगमें पेशाब मधुकी तरह गाढ़ा, लिबलिबा, मीठा और पिङ्गल वर्णका होता है । मधुमेहकी शरीर भी स्वादमें मीठा हो जाता है । मधुमेहमें जिस-जिस दोषकी अधिकता रहती है, उसी-उसी दोषके लक्षण नजर आते हैं । इस अवस्थामें बहुत दिनों तक इलाज न होनेसे तरह-तरहकी पिड़िकायें उत्पन्न हो जाती हैं । मधुमेह और पिड़िकाःमेह असाध्य होते हैं । शास्त्रमें कहा है:—



पिड़िका पीड़ितं गादमुपसृष्टमुपद्रवैः ।

मधुमेहिनमांचष्टे सचासाध्यः प्रकीर्तितः ॥

पिड़िकाओंसे पीड़ित और उपद्रवोंसे युक्त रोगी मधु ही होता है और वह असाध्य होता है ।

और भी कहा है:—

सचापि गमनात् स्थानं स्थानादासनमिच्छति ।

आसनात् वृणुते शय्यां शयनात् स्वप्नमिच्छति ॥

मधुमेह वाले रोगीको चलनेसे बैठना, बैठनेसे लेटना और लेटनेसे सोना अच्छा लगता है ।

“चरक”के सूत्र-स्थानमें लिखा है:—

गुरुस्निग्धाग्ललवणं भजतामतिमात्रशः ।

नवमन्नं च पानं च निद्रामास्या सुखानि च ॥

त्यक्त्व्यायाम चिन्तानां संशोधनमकुर्वताम् ।

श्लेष्मा पित्तं च मेदं च मांसं चाति प्रवर्धते ॥

तरावृत्तः प्रसादश्च गृहीत्वा याति मारुतः ।

यदा वस्ति तदा कृच्छ्रो मधुमेहः प्रवर्तते ॥

भारी, चिकना, खट्टा और खारी पदार्थ अत्यधिक खानेसे, नया अन्न और नया जल सेवन करनेसे, बहुत सोनेसे, एक जगह सुखसे बैठे रहनेसे, मिहनत और चिन्ता न करनेसे और किसी तरह शरीरका शोधन न करनेसे शरीरमें कफ, पित्त, मेद और मांस बहुत बढ़ते हैं ; उनसे घिरा हुआ वायु प्रसादको ग्रहण कर, वस्तिकी ओर जाता है, तब कठिनसे आराम होनेवाला मधुमेह हो जाता है ।

## शकरकी परीक्षा-विधि ।

एक काँचकी नलीमें पेशाब लो और उसमें पेशाबसे आधा “लाइकर पोटास” डाल दो ओर उसको हिलाकर स्पिरिट-लैम्पपर या दीपकपर रखकर गरम करो । अगर पेशाबमें शकर होगी, तो



पेशाबका रङ्ग भट्ट भूरा या पोर्ट वाइनके रङ्गके जैसा हो जायगा । अगर १ औन्स पेशाबमें १० से २० ग्रेन तक शक्कर जाती हो, तो रोगको असाध्य समझो ।

एक विद्वान् वैद्यने “वैद्य कल्पतरु”में लिखा है—“पेशाब अधिक आता है और उसमें शक्कर जाती है, उसे “मधुमेह” कहते हैं । खूनमें शक्करका एक भाग रहता है । जब शक्कर उन्नत प्रमाणमें होती है, तब वह पेशाबके साथ नहीं निकलती, किन्तु जब शक्कर या शक्करकेसे धर्मवाले पदार्थ अधिक खाये जाते हैं, अथवा मगजमें कोई रोग होता है, तब पेशाबमें शक्कर जाती है ।” मधुमेहकी एक दूसरी किस्म “डायबिटीज इन्सीपीडस” है । उसमें भी पेशाब बहुत होता है, किन्तु उसमें शक्कर नहीं जाती । उसके लक्षण “मूत्रातिसार” अथवा “उदकमेह” से मिलते हैं ।

ठण्ड या सरदी, मदिरा-सेवन, शक्करके बने पदार्थोंके उचितसे अधिक सेवन करने एवं मगजके रोगोंके कारण मधुमेहकी भयङ्कर व्याधि होती है । आयुर्वेदमें तो प्रमेहके जो कारण लिखे हैं, वे ही मधुमेहके लिखे हैं । वर्तमान नवीन चिकित्सकोंने खोजकर पता लगाया है, कि कलेजेका काम ठीक रूपसे न होनेके कारण यह रोग होता है । इस वजहसे, शक्कर रक्तमें मिलकर, मूत्र-मार्गसे बाहर निकलती है । जो लोग आनन्दका जीवन बिताते हैं, काम-धन्धा नहीं करते; धी, चीनी, मिष्ठान्न और भात अधिक खाते हैं, उन्हें यह रोग होता है ।

कितने ही लोगोंको शुरूमें यह रोग मालूम नहीं होता; कितनों-हीको इसके चिह्न शीघ्र ही मालूम होते हैं । शरीर शीघ्र ही अशक्त या बेकाम हो जाता है । पेशाब बारबार या मिक्रदारमें ज़ियादा होता है । २४ घण्टेमें १० से ३० सेर तक पेशाब होता है । उसमें शक्कर आधी छटाँकसे १ सेर तक निकल जाती है । प्यास लगनेके कारण जल ज़ियादा पिया जाता है । पेशाबमें कभी-कभी जलन होती है और पीप भी गिरती है । पेशाबका रङ्ग फीका पानी-जैसा होता है;



पर उसका स्वाद मीठा और गन्ध भी मीठी-मीठी होती है । पेशाबको कुछ देर तक रखनेसे उसमें भाग-से आते हैं और उसके ऊपर जीव-जन्तु चढ़ते हैं, यह इस रोगीकी सामान्य परीक्षा है । मुँह, जीभ और गला ये सूखते हैं । प्यासकी तरह भूख भी ज़ियादा लगती है, कभी-कभी अरुचि भी होती है, जीभ खून बन जाती है, दाँतोंके पेड़े शिथिल हो जाते हैं, उनसे रक्त भी निकलता है और दाँत गिर जाते हैं, दस्तकी क़वज़ियत ज़ियादा होती है, थूकमें शक्कर रहती है, मुँह मीठा-मीठा रहता है, चमड़ा सूखा रहता है, चेहरा चिन्तातुर रहता है, स्वभाव बदल जाता है, कमज़ोरी आजाती है और पुरुषत्व कम हो जाता है । इसके भी आगे चलकर नोंद नहीं आती, सूक्ष्म ज्वर रहता है, नाड़ी क्षीण चलती है और शरीर सूखकर हाड़ोंका पख़र हो जाता है । इस रोगमें क्षय, चमड़ेसे सम्बन्ध रखनेवाला रक्त रोग, नेत्रोंमें मोतियाबिन्द, सूजन प्रभृति होते हैं और शेषमें मृत्यु होती है ।

## स्त्रियोंको प्रमेह क्यों नहीं होता ?

रजः प्रसेकान्नारीणां मासि मासि विशुद्ध्यति ।

कृत्सनं शरीरं दोषांश्च न प्रमेहन्त्यतः स्त्रियः ॥

स्त्रियोंको हर महीने रजोधर्म होता रहता है; इस कारण उनके शरीरके सब दोष शुद्ध रहते हैं, इसीसे स्त्रियोंको प्रमेह नहीं होता ।

## प्रमेहकी उपेक्षा से पिड़िकाओंकी पैदायश ।

प्रमेहकी उपेक्षा करनेसे—जल्दी ही, रोग होते ही, इलाज न करनेसे—प्रमेह जिस तरह मधुमेह हो जाते हैं; उसी तरह सन्धियोंमें,



मर्म-स्थानोंमें और अधिक मांसवाले स्थानोंमें नीचे लिखी दस तरहकी पिड़िकायें हो जाती हैं:—

- ( १ ) शराविका ।
- ( २ ) सर्षपिका ।
- ( ३ ) कच्छपिका ।
- ( ४ ) जालिनी ।
- ( ५ ) विनता ।
- ( ६ ) पुत्रिणी ।
- ( ७ ) मसूरिका ।
- ( ८ ) अलजी ।
- ( ९ ) विदारिका ।
- ( १० ) विद्रधिका ।

## दस प्रकारकी पिड़िकाओंके लक्षण ।

### १—शराविका ।

जो पिड़िका या फुन्सी अन्तमें ऊँची, मध्यमें नीची और मिट्टीके शकोरे-जैसी हो, उसे “शराविका” कहते हैं ।

### २—सर्षपिका ।

जो फुन्सी सरसोंके आकार वाली और उतनी ही बड़ी हो, वह “सर्षपिका” कहलाती है ।

### ३—कच्छपिका ।

जो फुन्सी कछुएकी पीठके जैसी हो और जिसमें जलन होती हो, उसे “कच्छपिका” कहते हैं ।

### ४—जालिनी ।

जो फुन्सी सूक्ष्म नस-जालसे लिपटी हो और जिसमें तेज जलन हो, वह “जालिनी” कहलाती है ।



## ५-विनता ।

जो बड़ा मोटी, नीले रङ्गकी हो तथा पेट या पीठ में हुई हो उसे “विनता” कहते हैं ।

## ६-पुत्रिणी ।

जो फुन्सी बड़ी हो और जिसके इर्द-गिर्द सूक्ष्म बारीक फुन्सियाँ हों या जो महीन-महीन फुन्सियोंसे घिरी हो, उसे “पुत्रिणी” कहते हैं ।

## ७-मसूरिका ।

जो फुन्सी मसूरकी दालके समान बड़ी हो, उसे “मसूरिका” कहते हैं ।

## ८-अलजी ।

जो फुन्सी लाल और काली हो तथा और फुन्सियोंसे व्याप्त हो, उसे “अलजी” कहते हैं ।

नोट—अलजी और पुत्रिणी दोनों ही पिड़िकायें अन्य फुन्सियोंसे व्याप्त होती हैं पर और बातोंमें फर्क होता है ।

## ९-विदारिका ।

जो फुन्सी विदारीकन्दके समान गोल और कठोर हो, उसे “विदारिका” कहते हैं ।

## १०-विद्रधिका ।

जो फुन्सी विद्रधिके लक्षणों वाली हो, उसे “विद्रधिका” कहते हैं ।

नोट—जो प्रमेह जिस दोषसे होता है उसकी पिड़िका भी उसी दोष वाली होती है ।

## पिड़िकाओं की असाध्यता ।

गुदा, हृदय, शिर और पीठ—इनके मर्म-स्थानोंमें उत्पन्न हुई, उपद्रव-सहित और मन्दाग्नि वाले मनुष्यके पैदा हुई पिड़िकाओंकी चिकित्सा न करनी चाहिये; क्योंकि वे असाध्य होती हैं ।

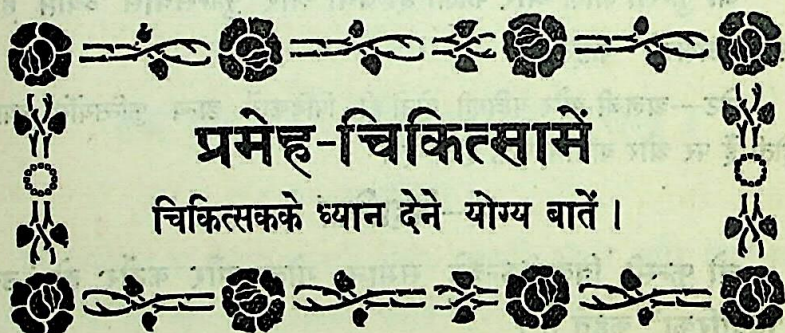


## पिड़िकाओंके उपद्रव ।

प्यास, बेहोशी, मांसका संकोच, श्वास, हिचकी, मद, ज्वर, विसर्प और मर्म-स्थानोंमें अवरोध,—ये पिड़िकाओंके उपद्रव हैं ।

## क्या बिना प्रमेहके भी पिड़िका होती हैं ।

जिस मनुष्यकी मेद दूषित या खराब होती है, उसके बिना प्रमेह भी पिड़िकायें हो जाती हैं । पिड़िकायें जब तक अपने अपने स्थानोंको नहीं पकड़तीं, नहीं दीखतीं ।



( १ ) वैद्यको चाहिये, पहले कारूरः द्वारा यानी पेशाबको शीशीमें रखकर एवं लक्षण मिलाकर मालूम करले, कि रोगीको कैसा प्रमेह है; यानी प्रमेह कफसे हुआ है या पित्तसे अथवा वातसे । अगर कफज प्रमेह है, तो शास्त्रमें लिखे उदक मेह, इच्छु प्रमेह, सुरा प्रमेह आदिक दसों प्रमेहोंमें कौनसा प्रमेह है । अगर पित्तज है, तो चार प्रमेह, नील प्रमेह, काल प्रमेह आदिकमें कौनसा प्रमेह है । अगर प्रमेहकी खास किस्म मालूम हो जाय, तो चिकित्सामें सुभीता है, उसकी खास दवा दी जा सकती है । अगर मालूम न पड़े या किसी कारणसे मालूम न हो सके, तो वैद्य साधारण चिकित्सा करे, समस्त



प्रमेह-नाशक कोई नुसखा दे । इस तरह भी आराम हो सकता है, पर कहीं-कहीं दिक्कत होगी और जल्दी कामयाबी भी न होगी । मान लो; किसीको पित्तज प्रमेहका एक भेद “रक्त प्रमेह” है । इस प्रमेहमें रोगीकी भीतरी गरमी बहुत बढ़ जाती है; वह घबराता रहता है, क्योंकि दिल कमजोर हो जाता है, रोगीको आराम होनेकी आशा नहीं रहती । अगर वैद्य सामान्य चिकित्सा करेगा, तो सम्भव है, कि गिर पड़ कर रोगी चङ्गा हो जाय; पर यदि वैद्य यह जान ले कि, यह रक्त प्रमेह है; यह पित्तज है; अतः इसमें गरमीका बहुत जोर रहता है, तो वह पहले उसकी धातुकी गरमी छाँटेगा, जिससे रोगीको शान्ति मिलेगी, उसके दिल-दिमागमें तरी पहुँचेगी, उसका चित्त स्थिर-शान्त होगा, उसे आराम होनेका भरोसा हो जायगा, अतः वह बिना चोंचपड़ किये दवा खाये जायगा और आराम भी हो जायगा । इन बातोंके सिवा, सबसे बड़ा लाभ यह होगा, कि वीर्यकी गरमी शान्त होनेसे, मैला निकल जानेसे, दवा जल्दी फायदा करेगी । जिस तरह पेटके रोगोंमें दस्त कराकर, कोठा साफ करके, दवा देनेसे जल्दी फायदा होता है; उसी तरह सोजाक और प्रमेहमें इन्द्रिय-जुलाब या बहुत पेशाब लाने वाली दवा देने से खूब जल्दी आराम होता है । पेशाब साफ करने वाली दवाएँ “चिकित्सा-चन्द्रोदय” तीसरे भागके सोजाक प्रकरणमें बहुत लिखी हैं । शीतल-चीनी ( काँटेदार गोल मिर्च ) जिसे कबाबचीनी भी कहते हैं, इस कामके लिये परमोत्तम है । कबाबचीनीके मेलसे बनी और दवाएँ भी अच्छी होती हैं । इसको, रोगीका बल, मौसम और देश प्रभृतिका विचार करके, एक-एक, दो-दो और तीन-तीन माशेकी खूराकसे, दिनमें बारह बार, ६ बार और चार बार तक दे सकते हैं । इसके चूर्णको फाँककर ऊपरसे १ गिलास साफ पानी पीना चाहिये । इस दवाके साथ पिया हुआ पानी पेटमें ठहरता नहीं; इसलिये प्रमेहमें अधिक पानी पीनेकी मनाही होने पर भी, कोई खटका नहीं । दवाके साथ पिया



हुआ जल हानि नहीं करता । जब वैद्य देखे कि, रोगीको खूब पेशाब हुआ; अब उसको मूत्रनली साफ है; वीर्यकी गरमी निकल गई है, तब उसे कोई परीक्षित काष्ठादि औषधियोंसे बना चूर्ण देना चाहिये । अच्छी धातु बढ़ाने वाली दवा इस मौकेपर देनेसे फायदा कर जाती है; पर कोरी इसी बातपर जमकर, बिना समझे, रोगीको ताकतवर और मेद प्रभृति बढ़ानेवाले पदार्थ न देने चाहिएँ । दूध वगैरह ताकतवर पदार्थोंसे यह रोग उल्टा बढ़ता है । सभी धातुएँ बह-बहकर निकल जाती हैं । हमने बहुतसे रोगी गिलोयके रसमें हल्दी या हल्दीका चूर्ण शहदमें मिलाकर देने अथवा त्रिफलेका चूर्ण शहदमें मिलाकर देने अथवा आमलोंके रसमें शहद और हल्दीका चूर्ण मिलाकर देनेसे आराम किये हैं । वे प्रमेह-रोगी कहते थे, साहब ! हम जितना ही दूध-बी खाते हैं, रोग उतना ही बढ़ता जाता है ।

( २ ) शास्त्रोंमें, प्रमेह रोगीके लिये भी वमन विरेचनादिसे शुद्ध करके दवा देनेकी राय दी है; इस तरह जल्दी लाभ होता है । अगर रोगी वमनके योग्य न हो या वमन पसन्द न करता हो, तो वैद्य किसी हल्की दस्तावर दवासे, जिससे रोगीको कष्ट न हो, दो चार या ज़ियादा दस्त करा दे; पर ऐसा न करे कि, रोगी मर मिटे । जब कोठा साफ हो जाय, भोजन पचने लगे, पाखाना रोज साफ होने लगे, प्रमेह-नाशक दवा दे । हम तो अमीर-मिर्जाज और एकदम नर्म कोठे वालोंको 'पंचसकार चूर्ण' ( देखो स्वास्थ्यरत्ना ) देकर कोठा साफ कर लेते हैं; पर यह चूर्ण क्रूर या कड़े कोठे वालोंको दस्त नहीं लाता । वे इसे हजम कर जाते हैं; इसलिये उन्हें "इच्छाभेदी रस" देते हैं । किसी-किसीको सोंठ और कालेदानेका जुलाब भी देते हैं । यह सर्वोत्तम दस्तावर दवा है । स्वास्थ्यरत्नाके पृष्ठ ३५४ में इसकी तरकीब लिखी है । इससे प्रायः सभीको दस्त हो जाते हैं । किसी-किसीको पावभर गरम दूधमें अण्डाका तीन चार तोले तेल मिलाकर भी देते और कोठा साफ कर लेते हैं । बहुतसे अमीरोंको हकीमी मुञ्जिस



और जुलाब देते हैं। हमने अपने आजमूदा जुलाब और मुखिस “चिकित्सा-चन्द्रोदय” पहले भागके शेषमें लिखे हैं। नीचेका चूर्ण दस्त लानेमें सर्व श्रेष्ठ हैं:—

## शरीर शोधन चूर्ण ।

काला दाना ... .. ३ तोले ।

सनाय ... .. ३ तोले ।

काला नमक ... .. १ तोले ।

पहले कालेदाने और सनायको पीस-कूटकर छानलो; पीछे नमकको पीस-छानकर उसी चूर्णमें मिलादो। इसीको “शरीर शोधन चूर्ण” कहते हैं। यह चूर्ण कब्ज मिटाने और दस्त खुलासा लानेमें विचित्र औषधि है।

यह चूर्ण यकृत, सीहा, शूल और गर्भाशयके रोगोंमें भी दिया जाता है। इनके सिवा, जिन रोगोंमें दवा देनेसे पहले कोठा साफ करनेकी जरूरत होती है, उन सबमें इसे दे सकते हैं। इसमें यह खूबी है, कि इससे पतला दस्त नहीं आता; पर कोठेका सारा मल बँधे हुए दस्तके रूपमें निकल जाता है।

इसकी मात्रा २॥ माशेसे ८ माशे तक है। रातको, सोते समय, एक मात्रा चूर्ण फाँक कर, ऊपरसे गुनगुना जल पीना चाहिये। सवेरे ही एक या दो दस्त खुलासा होनेसे शरीर हल्का फूल हो जाता है। पहले इसे थोड़ी मात्रासे सेवन करना चाहिये, पीछे मात्रा बढ़ा सकते हैं। इस दवाके खानेसे पेटमें दर्द-सा होता है, क्योंकि यह चूर्ण आँतोंमें जमे हुए मलको खुरचता है। ऐसी दशामें थोड़ी-सी “सौंफ” मुँहमें रखकर चूसनेसे शीघ्र ही मल निकल जाता है।

हमने इस चूर्णकी परीक्षा की है। लाजवाब दस्तकी दवा है। इसके लिए हम पण्डित लक्ष्मीचन्दजी आर्य वैद्य, वैद्यरत्न, ओम्बलिया,



जिला बलियाके कृतज्ञ हैं। आपहीने 'परोपकारार्थ' हमें यह लिख भेजा था और परीक्षा करके "स्वास्थ्यरक्षा" या "चिकित्सा-चन्द्रोदय" में लिखनेके लिए कहा था। हमने खूब परीक्षा करके ही इसे यहाँ लिखा है। प्रत्येक गृहस्थ और वैद्यसे हम इसे काममें लानेकी सिफारिश करते हैं।

यह चूर्ण भी ऐसे मौकेके लिए अच्छा है:—

### दस्तावर नुसखा ।

१-हरड़का बकला	...	...	...	६ माशे
२-सैंधानोन	...	...	...	२१ माशे
३-आमले	...	...	...	६ माशे
४-गुड़ ( पुराना )	...	...	...	१ तोले
५-दूधियाबच	...	...	...	२ माशे
६-बायबिड़ङ्ग	...	...	...	२ माशे
७-हल्दी	...	...	...	२ माशे
८-छोटी पीपर	...	...	...	१ माशे
९-सोंठ	...	...	...	२ माशे

गुड़को छोड़कर, बाकी आठों दवाओंको पीस-छान लो। पीछे गुड़में मिला लो। इसे खाकर, ऊपरसे गरम जल पी लेनेसे कोठा साफ हो जाता है। इसे सवेरेके समय सेवन करना चाहिये। इसके सेवनसे पहले, यदि स्नेह-स्वेद कर लिया जाय तो अच्छा; अन्यथा किसी मुखसिसे मल फुला लेना चाहिये या खूब घी डालकर मूँग-चाँवलोंकी खिचड़ी खानी चाहिये। इस तरह करके, यह चूर्ण फाँकनेसे दस्त जल्दी होंगे; क्योंकि मल नर्म हो जायगा। दस्त हो जानेके बाद, स्नान करके, तीन दिन तक यवागू अथवा पाँच दिन तक घी खाना चाहिये, अथवा सात दिनों तक पुराने चाँवलोंके भातका माँड़ या खिचड़ी खानी



चाहिये । जब पेट साफ़ हो जाय—कोई रसायन औषधि या अन्य औषधि लेनी चाहिये ।

शास्त्रों में लिखा है :—प्रमेह रोगमें, पहले रोगीको प्रियंगू आदि के द्वारा सिद्ध किये तेलसे स्निग्ध करके, वमन और विरेचन कराने चाहिएँ; यानी क़य और दस्त कराने चाहिएँ । विरेचनके बाद “सुरसा-दिगण” की औषधिके काढ़ेमें सोंठ, देवदारु और नागरमोथेका चूर्ण एवं शहद और सेंधानोन—मिलाकर—निरुह वस्ति या पिचकारी देनी चाहिएँ । अगर गुदामें दाह हो, तो न्यग्रोधादि काथसे निरुह वस्ति—पिचकारी देनी चाहिये । जिन प्रमेहोंमें वायुका कोप ज़ियादा दीखे, उनमें स्नेह पान कराना यानी घी वगैरः चिकने पदार्थ पिलाना हित है । आजकल इतना भ्रंश करने वाले रोगी बहुत कम मिलते हैं, इसलिये घी डाली हुई मूंगकी खिचड़ी तीन-चार दिन खिलाकर, “नारायण चूर्ण” या ऊपर लिखे चूर्ण अथवा “इच्छामेदी रस” से कोठा साफ़ करके, दवा देनी चाहिये । पथ्य-अपथ्यका ठीक खयाल रखनेसे रोगी अवश्य आराम हो जाता है । अगर रोग आराम हो, रोगी स्नेह पान, वमन विरेचन और वस्ति-क्रिया पर राजी हो और इनके योग्य भी हो तो, इनको कराना ही चाहिये । जो रोगी इनको सहन नहीं कर सकता, उसके लिए ये सब नहीं हैं । उसके लिए बलानुसार दो-चार दस्त ही काफी हैं । जो संशोधनके योग्य नहीं, उन्हें शोधना भारी भूल है । वाग्भट्ट ने कहा है—“असंशोध्यस्य तान्येव सर्वमेहेषु पाययेत्” अर्थात् न शोधने योग्य रोगियोंको वैद्य शमन औषधि दे देवे ।

( ३ ) प्रमेहमें पथ्य पदार्थ या हितकारी आहार-विहारकी बड़ी ज़रूरत है । बिना अहितकारी आहार-विहार त्यागे अथवा जिन कारणों से प्रमेह हुआ है उनके त्यागे, प्रमेह जा नहीं सकता । पथ्यकी प्रमेहमें बड़ी ज़रूरत है, इसीसे महर्षि सुश्रुताचार्यने अमीरों या राजा-महाराजाओंके खाने-पीनेके पदार्थों में घृणा पैदा करने वाली या उनको बदज़ायके करने वाली चीजोंके मिला देनेकी राय दी है, जिससे रोगी



का मन उन चीजोंसे हट जाय । प्रमेह में कषैले पदार्थ हितकर होते हैं; इसलिये पाढ़, हरड़ और चीतेके काढ़ेमें शहद अधिक मित्रदारमें मिलाकर पिलाना चाहिये । त्रिफला, हल्दी, गिलोय और आमले इस रोगमें अच्छे हैं । जो रोगी दूध-घी प्रभृति बढ़िया पदार्थ अथवा प्रमेहमें वर्जित पदार्थ न त्यागे, उसकी पसन्दके पदार्थोंमें अँट या गधे प्रभृतिकी लीद मिला देनी चाहिये, ताकि, वह आपही उन्हें छोड़ दे—उसे उनसे नफ़रत हो जाय । अगर रोगी रसीले और पतले पदार्थ न त्यागता हो, तो उसमें सेंधानोन, हींग या सरसों मिला देनी चाहिये । अगर रोगी अधिक जल पीता हो, तो उसके पीनेके जलमें शहद, कैथ और गोल मिर्च डाल देनी चाहिये । इस तरह रोगी पानीसे घृणा करने लगेगा; क्योंकि पानी प्रमेहको खूब बढ़ाता है और रोगी उसे बारम्बार पीना चाहता है । क्योंकि धातुओंके पेशाबकी राहसे निकल जानेके कारण, उसकी प्यास बढ़ जाती है, मुँह सूखता रहता है । इस रोगमें और अपथ्य पदार्थोंसे रोगीको बचाना जैसा जरूरी है उसकी अपेक्षा पानीसे बचाना विशेष आवश्यक है; क्योंकि पानी पीनेसे “बहुमूत्र” या “मधुमेह” हो जाता है । मधुमेह असाध्य प्रमेह है ।

प्रमेहमें नीचे लिखे पदार्थ या आहार-विहार अपथ्य हैं :—

सौवीर, मदिरा, माठा, तेल, दूध, घी, गुड़, खटाई, ईख, रस, अनूपदेश ( जैसे बंगाल ) के जानवरोंका मांस, सिरका, रायता, मूली प्रभृतिका अचार, मैरेय मदिरा—शराब, मामूली शराब, आसव जो जमीनमें गाड़नेसे तैयार हो, बहुत जल पीना, दूध पीना, तेल या तेलके पके पदार्थ खाना, घी खाना, अखका रस या राब, दही, सत्तू, इमली और आम आदि खट्टे पदार्थोंका पना, शर्बत, ग्राम्य पशुओं और जल-जीवों—मछली आदिका मांस, पेशाब रोकना, स्नेह कर्म, धूमपान—हुक्का बीड़ी पीना; फसद खुलवाना, बहुत देर तक बैठे रहना, दिनमें सोना, नया अन्न खाना, पिट्टीके पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, काँजी, गुड़, तूम्बी, ताड़फलकी गुठली की मींगी,



विरुद्ध भोजन, कुम्हड़ा, खट्टा-मीठा-नमकीन रस, मैला पानी, लाल मिर्च, लहसन, प्याज, मूली, नारंगी, अमरुद, केला, चूका, पूरी, कचौरी, घुइयाँ, आलू, साँभर नोन, बादी पदार्थ, स्त्री देखना, बहुत खाना, राह चलना, भागना, कपड़ेसे हवा करना, लाल कपड़े पहनना, एकान्त घरमें गाना, स्त्री या बालकको प्यार करना, गहने पहनना, पान खाना, क्रोध करना, मिठाई खाना, साग खाना, ये सब पदार्थ या आहार विहार एवं उड़दकी दाल, धूपमें फिरना ये सब प्रमेह रोगीको त्याग देने चाहियें ।

वैद्य-विनोदमें लिखा है:—

सौवीरकं सुरा तक्रं दधि क्षीरं घृतं गुडम् ।

अम्लेक्षुरसपिष्टान्नातप मांसानिवर्जयेत् ॥

काँजी, शराब, माठा, घी, दही, खट्टे पदार्थ, ईख-रस, पीसा अन्न, धूप और मांस प्रमेह वालेको मना हैं ।

“वृन्द वैद्यक”में लिखा है:—

गुरुसौवीरकं मद्यं तैलं क्षीरं गुडं घृतम् ।

अम्लभूयिष्ठेक्षुरसानूपमांसानिवर्जयेत् ॥

प्रमेह-रोगीको भारी पदार्थ, सौवीर, काँजी, शराब, तेल, दूध, गुड़, घी, बहुत खटाई वाले पदार्थ, ईख-रस और अनूप देशके जान-बरोँका मांस छोड़ देना चाहिये ।

आज-कलके डाक्टरोंने लिखा है कि, मधुमेहमें शक्कर जाती है; अतः शक्कर वाले खान-पान त्याग देने चाहियें । शक्कर, चीनी, गुड़, गेहूँ, मक्का, चाँवल प्रभृति पदार्थ—जिनमें पिसानका सत्व यानी स्टार्च ज़ियादा हो; एवं स्टार्च-धर्म—गुणवाले साग जैसे आलू, प्याज, पके फल, सूखा मेवा, नीबू, अदरक और अधिक दूध आदि प्रमेह-रोगीको हानिकर हैं । हाँ “शुक्र प्रमेह” में पुष्टिकर आहार हितकर हैं, पर औरोंमें नहीं ।

प्रमेह-रोगीको नीचे लिखे पदार्थ पथ्य हैं:—



वाग्भट्टने लिखा है—जौके मालपुए, जौका सत्तू, गाय या घोड़े-की गुदासे निकले जौ, मूँग, पुराने शालि चाँवल, पुराने साँठी चाँवल, कैथ, तेंदू, शहद, त्रिफला, काँटोंपर पकाया हुआ सूखा जङ्गली जीवोंका मांस, पुराना मध्वरिष्ट, आसव, डाभका सफेद पानी, शहद-मिला जल, त्रिफलेके काढ़ेमें रात-भर भिगोये और फिर सुखाये हुए जौका सत्तू ये सब प्रमेह-रोगीको पथ्य हैं । प्रमेह-रोगीको रूखा और गाढ़ा उबटन, कसरत, रातमें जागना एवं अन्यान्य “कफ-मैद नाशक” क्रियाएँ भी हितकर हैं ।

किसीने लिखा है—पुराने वाँसमती चाँवल, साँठी चाँवल, कोदों, जौ और गेहूँकी रोटी, चना, अरहर, कुलथी, मूँगकी दाल, मूँग-अरहर की मिली दाल, करेला, जंगली जानवरोंके मांसका रस इत्यादि हित हैं ।

आज-कलके चिकित्सकोंकी राय है कि, प्रमेह-रोगीको दिनमें पुराने चाँवलोंका भात, मूँग या मसूरकी दाल, चनेकी दाल, छोटी मछलीका थोड़ासा शोरबा; हिरन, खरगोश, उल्लू और बटेरेके मांसका शोरबा; परवल, गूलर, बैंगन, सहँजनेकी डंडी, केलोका फूल, नरम कच्चा केला, कागजी या पाती नीबू—ये खाने चाहियें । रातके समय रोटी, करेले, बैंगन, परवल आदिका साग, चीनी-मिला थोड़ा दूध, सब तरहकी कड़वी कषैली चीजें, सिंघाड़े, किशमिश, बादाम, खजूर, अनार, भिगोये हुए चने, कम चीनीका मोहनभोग और बर्दाश्त हो तो स्नान—ये सब हितकर हैं ।

किसी ने लिखा है—गेहूँ, चना, मूँग, उड़द, जौ, चाँवल, अरहर, करेला, ककड़ी, गोभी, तोरई, परवल, चौलाई, कमल-नाल, ककड़ी और मेथी हित हैं ।

हारीतने लिखा है—लाल चाँवल, साँठी चाँवल, कुलथी, थोड़ा घी और जरा मधुर अन्न ये पथ्य हैं ।

अपथ्यसे हुए प्रमेह वालोंको कसरत जरूर करनी चाहिए । दण्ड



पेलने, बैठक करने, मुग्दर फिराने, राह चलने प्रभृति से प्रमेहमें जरूर लाभ होता है; क्योंकि प्रमेहमें वायु गरम होकर मेदके साथ मिल जाता है इससे शरीर मोटा होता जाता है और प्रमेह रोग बढ़ता जाता है । शरीरकी मेद कम करने और मुटाई नाश करनेके लिये कसरत या मिहनत अवश्य करनी चाहिये; क्योंकि कसरत या मिहनतसे मेद और मुटाई नाश होती है । अपथ्य सेवनसे हुए प्रमेहमें कफ और मेदका घटाना प्रमेहकी सच्ची चिकित्सा है । वाग्भट्टने कहा है—

रुक्षमुद्रर्त्तनं गाढं व्यायामो निशि जागरः ।

यच्चान्यच्छ्लेष्ममेदोघ्नं वहिरन्तश्चतद्विद्वितम् ॥

प्रमेहवालेको रुखा और गाढ़ा उबटन, कसरत, रातमें जागना एवं दूसरे कफ-मेद नाशक पदार्थोंका शरीरके भीतर और बाहर प्रयोग करना लाभदायक है ।

आपने—कफ-मेद नाशक होनेके कारण ही—प्रमेहवालेको “शिलाजीत” सेवनकी राय जोरसे दी है, क्योंकि शिलाजीतमें मुटाई नाश करने और प्रमेह आराम करनेका विशेष गुण है ।

बहुतसे मूर्ख समझते हैं कि, प्रमेहमें कसरत हानिकर है । अगर कसरत या मिहनत हानिकर होती, तो महर्षि वाग्भट्ट ऐसा न कहते—

अधनश्छत्रपादत्ररहितो मुनिवर्तनः ।

योजनानां शतं यायात्खनेद्वा सलिलाशयान ।

गोशकृन्मूत्रवृत्तिर्वा गोभिरेव सह भ्रमेत् ॥

निर्धन प्रमेह-रोगीको जूता और छाता न लेकर, मुनियोंकी वृत्ति धारण करके, चार सौ कोस तक सफ़र करना चाहिये और तालाब आदि खोदने चाहियें अथवा गायका गोबर और गोमूत्र सेवन करते हुए गायके साथ-साथ घूमना चाहिये ।

बहुतसे रोगोंमें कसरतकी मनाही है; जैसे, रक्तपित्त रोगी,



कमजोर, किसी रोगसे सूखने वाला, दमा वाला, खाँसी वाला, क्षीण पुरुष, रास्ता चलनेसे थका हुआ, भोजन करके चुका हो, स्त्री-प्रसङ्ग ज़ियादा करने वाला—इनको कसरत नहीं करनी चाहिये । प्रमेह-रोगी भी कमजोर हो, मिहनत करने योग्य न हो, तो उसे भी मिहनत या कसरत न करनी चाहिये । सुश्रुतके चिकित्सा-स्थानके ११ वें अध्यायमें कहा है:—“कृशान्तु सततं रक्षेत्” “वह प्रमेही जो निर्धन हो और जिसके कुटुम्बमें कोई न हो, नङ्गे पैरों, बिना छाता लिये, माँग-माँग कर खाता हुआ, हर गाँवमें एक रात ठहरता हुआ, मुनियोंकी तरह संयम रखता हुआ चारसौ कोस या इससे भी ज़ियादा चले । यदि धनाढ्य हो, तो भी श्यामाक, नीवार खा-खाकर अथवा आँवले, कैथ, तेंदू, अशमन्तक फल खाता हुआ हिरनोंके साथ घूम और उनके मूत्र और मैगनियोंको सेवन करे अथवा निरन्तर गायके साथ फिरे, कूआ खोदे; परन्तु दुर्बल रोगीको मिहनतसे बचाना चाहिये । मतलब यह है, प्रमेह-रोगी यदि मोटा-ताज़ा हो, तो मिहनत या कसरत करे । इससे उसकी मेद घटेगी, प्रमेह नाश होगा; पर कमजोर यदि व्यायाम करेगा या चार सौ कोस पैदल चलेगा, तो प्रमेहसे चाहे जल्दी न भी मरे; पर इस तरह शीघ्र ही यमराजका पाहुना होगा । जिनको कुल-परम्परासे प्रमेह हुआ है; उनके लिये भी कसरतकी दरकार नहीं ।

नोट—सहज प्रमेह-रोगीको दूध मना है; पर अधिक मनाही नहीं । हसी तरह उसे घीको भी एकदम मनाही नहीं है । अपथ्य-जनित प्रमेह वालेको कसरतकी जैसी ज़रूरत है; सहज प्रमेह वालेको नहीं । अपथ्य-जनित प्रमेह रोगीको करेला प्रभृति कषैले साग सरसोंके तेलमें या अलसीके तेलमें भूँजे हुए हित हैं; पर सहज प्रमेह वालेको तेलमें भूँजी तरकारी हितकर नहीं । यह वैसी ही बात है; जैसी कि ज्वरमें; नवीन ज्वर रोगीको दूध-घी मना है; पर पुराने ज्वर वालेको दूध हितकर है ।

( ४ ) लिख आये हैं कि, चिकित्साकी उपेक्षा करनेसे सभी प्रमेह मधुमेह हो जाते हैं; पर मधुमेहमें भी वही उपाय करने चाहियें



जो प्रमेहोंमें किये जाते हैं। प्रमेह या मधुमेहमें शिलाजीत, वङ्गभस्म, लोहभस्म, कान्तिसार या फौलादभस्म, अफीम या भाँग आदि पदार्थ हितकर हैं। शहद मीठा है, पर प्रमेहमें अत्युत्तम है, इसीसे प्रायः प्रत्येक काढ़े या रसके साथ “शहद”की आज्ञा शास्त्रकारोंने दी है। शिलाजीतकी तरह शहद प्रमेहकी उत्कृष्ट औषधि है। शहदके सम्बन्धमें शास्त्रोंमें लिखा है:—

वर्ण्य मेधाकरं वृष्यं विशदं रोचनं जयेत् ।

कुष्ठार्शः कासपित्ता सृक्कफमेह क्रम कृमीन् ॥

मदतृष्णावमिश्रवास हिक्कातीसारहृदग्रहान् ।

दाहक्षतक्षयास्रं तु योग बाह्यल्प वातलम् ॥

शहद शरीरके रङ्गको अच्छा करता है; बुद्धिबढ़ाता है; धातु पुष्ट करता है; विशद और रोचक है; कोढ़, बवासीर, खाँसी, पित्त, रक्त, कफ, प्रमेह, ग्लानि, कृमि, मद, तृषा-प्यास, क्रय, श्वास, हिचकी, अतिसार, हृदय-रोग, दाह, क्षत, क्षय और रक्तको जीतता है। यह योगवाही और किसी कदर बादी करनेवाला है।

शहद भी चार तरहके होते हैं—( १ ) माक्षिक, ( २ ) पैत्तिक, ( ३ ) क्षौद्र, और ( ४ ) भ्रामर। तेलकी कान्तिवाला माक्षिक, घोके जैसा पैत्तिक, भूरे रङ्गवाला क्षौद्र और बिल्लौरी पत्थरके जैसा साफ़ भ्रामर होता है।

मधुओंमें माक्षिक—तेलकी कान्तिवाला—मधु श्रेष्ठ है। यह नेत्र-रोगोंको हरता और हलका है। पैत्तिक, जो घो-जैसा होता है, रुखा और गरम है तथा पित्त, दाह और रक्तवात करता है। माक्षिक और क्षौद्र गुणमें समान हैं, पर प्रमेह नाश करनेमें “क्षौद्र” अच्छा है। इसका रङ्ग भूरा-सा होता है। भ्रामर मधु, जो बिल्लौरी शीशेके जैसा होता है, रक्तपित्तको नाश करता है; मूत्र और जड़ता करनेवाला तथा भारी है। नया शहद अभिष्यन्दी और चिकना तथा कफनाशक और सर



यानी दस्तावर होता है; पर पुराना शहद मलको बाँधने वाला, रूखा, मेदनाशक और अत्यन्त लेखन होता है। प्रमेह, मेद और अतिसार नाश करनेमें “पुराना शहद” ही अच्छा होता है। आग और धूपमें गरम किया हुआ शहद खानेमें प्राणनाशक होता है।

आजकल ठग लोग शहदको भी नकली लाते हैं। कोई खाँड़की चाशनी ले आते हैं और कोई मुर्दोंके ऊपरका शहद ले आते हैं। अतः खूब परीक्षा करके शहद लेना चाहिये। कपड़ेकी बत्तीपर शहद लगाकर दियासलाई दिखानेसे जल उठनेवाला शहद अच्छा है। असली शहद कागज पर रखनेसे कागज नहीं गलता, पर खाँड़की चाशनीसे कागज गल जाता है। असली शहदको कुत्ता नहीं खाता। तीनों तरहसे परीक्षा करके शहद लेना चाहिये अथवा अपने सामने छत्तेसे निकलवाना चाहिये। शहदकी प्रमेह-चिकित्सामें बड़ी जरूरत रहती है, इसीसे हमने शहदपर इतना लम्बा लेख लिखा है। “मदनपाल निघण्टु”में लिखा है:—

मधु शीतं लघु स्वादु रूक्षं ग्राहि विलेखनम् ।

चक्षुष्यं दीपनं स्वर्यं त्रणशोधन रोपणम् ॥

शहद शीतल और हलका है, स्वादु और रूखा है, मलको बाँधता है, लेखन है, आँखोंको मुफीद है, अग्निको जगानेवाला है, स्वरमें हितकारी है, घावोंको शोधता और भरता है।

संस्कृतमें “मधु”, फारसीमें “शहद” और अरबीमें “असल” कहते हैं। यूनानी हकीमोंने लिखा है, शहदका रङ्ग लाल, पीला और सफेद होता है। यह दूसरे दर्जेका गरम और अब्बल दर्जेका रूखा होता है। गरम मिजाजवालों तथा मस्तिष्कको हानि करता और सिर दर्द करने वाला है। अनार, सिरका और धनिया इसके दर्पको नाश करनेवाले हैं। इसकी मात्रा ३ तोले तक है। यह दोषोंको साफ़ करता, कफको छौटता, व्यर्थकी चिकनाईको दूर करता; जलोदर, स्तम्भ और सब तरहकी वायुनाशक है। पेशाब, दूध और आर्तवकी प्रवृत्ति करने-



वाला है; वस्ति और वृद्धकी पथरीको तोड़ता है; आमाशय और यकृतको बल देता है; मस्तक और छातीको साफ़ करता है। हकीम जालीनूसकी रायमें सरदीके रोगोंके लिए इससे अच्छी और दवा नहीं है।

(५) शिलाजीत जिस तरह प्रमेहकी उत्कृष्ट महौषधि है, उसी तरह सोनामाखी और रूपामाखी भी प्रमेहमें अमृत हैं। इनको सारगणकी औषधियोंकी भावना देकर, सारगणकी औषधियोंके साथ पीना चाहिये। इनके सेवनसे ज्वर, कोढ़, पाण्डु रोग, प्रमेह और क्षय नाश हो जाते हैं। जो सोनामाखी मधुर और सोनेकीसी कान्ति वाली हो, वह उत्तम होती है। रूपामाखी खारी और चाँदी-जैसी अच्छी होती है। प्रमेहमें कुलथी पथ्य है; पर रूपामाखी और सोनामाखी सेवन करनेवाले प्रमेह-रोगीको कुलथी और कबूतरका मांस नुकसानमन्द है। इस बातको ध्यान रखकर रोगीसे कह देना चाहिये।

नोट—शिलाजीत और रूपामाखी एवं सोनामाखी प्रभृति उपधातुओंको शोधकर काममें लाना चाहिये। बिना शोधी सोनामाखी या रूपामाखी सेवन करनेसे, अग्नि मन्द होती, बल नाश होता; नेत्ररोग, कोढ़, गण्डमाला और फोड़े होते हैं। इनके शोधनेकी विधि आगे लिखी है।

(६) अगर रोगीके पिड़िका हो जायँ, तो वैद्यको सबसे पहले जोंक लगवाकर वहाँका खराब खून निकलवा देना चाहिये। इसके बाद गाय या बकरीके पेशाबसे उन्हें दिन में दो बार धुलवाना चाहिये। इसके बाद, उनपर कोई दवा लगानी चाहिये। इनकी उपेक्षा करना ठीक नहीं। पिड़िका-नाशार्थ गूलरके दूधका लेप या सोमराजीके बीजोंका लेप अथवा बबूलकी ताज़ा पत्ती, छोटी इलायची और कत्थेका चूर्ण एकत्र करके बुरकना परीक्षामें अच्छा साबित हुआ है। आगे पिड़िका-चिकित्सामें हमने ये सब बातें लिखी हैं। पिड़िका हो जानेपर, खानेकी दवामें, मकरध्वज प्रभृति सबसे अच्छे हैं।



बङ्गसेन महोदय लिखते हैं—पिड़िकामेंसे पहले खून निकलवा देना चाहिये । अगर पक गई हो, तो नशतर लगा देना चाहिये । फिर बकरीके दूध, बनस्पतियोंके काढ़े या अन्य तीक्ष्ण पदार्थोंसे पिड़िकाओंको साफ करके, इलायची आदि पदार्थोंके कल्क से बना तेल लगाना चाहिये; जिससे घाव भर जायँ । अमलताश आदिके क्वाथसे उद्धर्तन करके, सालसार आदिके काढ़ेसे सींचना चाहिये एवं चने प्रभृतिका भोजन खानेको देना चाहिए ।

( ७ ) प्रमेहमें जौको सभीने राय दी है । आजकलके डाक्टर भी, खासकर मधुमेहमें, जौका सेवन अच्छा समझते हैं । हमारे यहाँ लिखा है—जौकी पिट्टी एक महीने तक शहदके साथ सेवन करनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं । लिखा है:—

मेदघ्ना वद्वमूत्राश्च समाः सर्वेषु धातुषु ।

यावस्तस्माद्विशिष्यन्ते प्रमेहेषु विशेषतः ॥

जौ मेदको नाश करनेवाले, मूत्रको रोकनेवाले और सब धातुओंको समान करनेवाले हैं, इसी कारणसे जौ प्रमेहमें विशेष हितकारी हैं ।

इसी वजहसे कितने ही विद्वानोंने जौका सत्तू प्रमेहमें हितकर लिखा है, क्योंकि वह रुखा, लेखन, अग्निदीपक, हल्का, दस्तावर, कफ तथा पित्त नाशक होता है ।

“भावप्रकाश”में लिखा है—सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, पाढ़, सहजनेकी जड़, बायबिड़ङ्ग, होंग, कुटकी, छोटी-बड़ी कटेरी, हल्दी, दारुहल्दी, अजवायन, सुपारी, शालपर्णी, अतीस, चीतेकी छाल, काला नोन, जीरा, हाऊबेर और धनियाँ—इन सबको एक-एक तोले लेकर पीस-कूटकर छान लो । पीछे इनके चूर्णके साथ, चार सेर और ८ तोले जौके सत्तूमें चौबीस तोले घी और चौबीस तोले शहद मिलाकर लड्डू बना लो । इनको “त्रिकुटाद्य मोदक” कहते हैं । इनमेंसे रोज लड्डू खानेसे अत्यन्त दारुण प्रमेह भी नष्ट हो जाता है ।



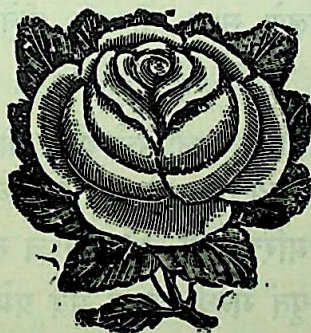
गायके खाये हुए जौओंको, गायके गोबरमेंसे चुनकर, गोमूत्रकी भावना देकर या न देकर, गायके उदशित यानी आधा जल-मिले माठेके साथ अथवा नीमके या मूँगके रसके साथ खानेसे प्रमेह नष्ट हो जाता है। एक मास तक, पानीके साथ, जौका आटा खानेसे भी प्रमेह नष्ट हो जाता है। प्रमेह-रोगीको जौ सेवन करनेकी अनेकोंने अनेक विधियाँ लिखी हैं; इसलिए वैद्यको, प्रमेह-रोगीका इलाज करते समय, “जौ” को न भूलना चाहिये; क्योंकि प्रमेहमें “जौ” परमोपकारी चीज है।

( ८ ) प्रमेह आराम हुआ या नहीं, इसकी परीक्षा पेशाबसे ही ठीक हो सकती है। शास्त्रोंमें लिखा है—

प्रमेहिनोयदा मूत्रमनाविलम् पिच्छिलम् ।

विशदं तिक्तकटुकं तदारोग्यं प्रपद्यते ॥

जब प्रमेह-रोगीका पेशाब साफ पिच्छिलता—लिबलिबापन रहित, विशद, कड़वा और कटुरस-युक्त हो, तब उसे आराम हुआ समझना चाहिये।





## सामान्य चिकित्सा ।

सामान्य चिकित्सा में, प्रमेह की एक ही दवा वीसों प्रकार के प्रमेहों को आराम करती है। उसमें—कफज प्रमेह है, पित्तज प्रमेह है या वातज प्रमेह है—इस तरह की परीक्षा करने की ज़रूरत नहीं; पर विशेष चिकित्सा में प्रमेह की क्रिमें जानने की ज़रूरत है; अर्थात् यह कफज प्रमेह है या पित्तज प्रमेह है या वातज प्रमेह है इत्यादि। कफज प्रमेह का नुसखा पित्तज प्रमेह-रोगी को नहीं दे सकते। ऐसा करने से भयानक हानि हो जाने की सम्भावना है; क्योंकि पित्तज प्रमेह-रोगी को शीतल दवा देनी चाहिये और दी जायगी गरम, तो हानि होगी ही। हाँ, विशेष चिकित्सा से रोग आराम जल्दी होता है; पर रोग की क्रिमें, और उसके अंशांश जानना तथा वैसा ही नुसखा तजवीज करना ज़रूरी है। यह काम अनुभवी और विद्वान् वैद्य ही कर सकते हैं, इसी से हम यहाँ पहले प्रमेह की “सामान्य चिकित्सा” लिख रहे हैं।

### गरीबी नुसखे ।

(१) महुआ की छाल ६ माशे और कालीमिर्च ४ रत्ती—इन दोनों को सिलपर, जल के साथ, पीसकर पीने से असाध्य प्रमेह भी नाश हो जाते हैं।

(२) सैंधा नमक, घी, कालीमिर्च और घीग्वार का गूदा—इनके सेवन करने से प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं। कहा है—

सिंध्वाज्य मरिचोपेतां कौमारीं च ततस्तथा ।

त्रिफलाज्ययुतं गन्धं शस्तं सर्व प्रमेहिनाम् ॥

ऊपर के नं० २ नुसखे के सिवा—त्रिफला, शुद्ध गन्धक और घी को मिलाकर सेवन करने से समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं।

और भी कहा है—



गन्धकं पलमानन्तु गोदुग्धेन विशोध्य च ।

शर्करासंयुतं कार्यं मरुत्पित्तकफात्तिनुत् ॥

तुष्टिपुष्टिकरो नित्यं रुचिकृन्नेत्ररोगजित् ।

वीर्यक्षयं प्रमेहं च कुष्ठपित्तरुजं हरेत् ॥

चार तोले गन्धकको, गायके दूधमें शोधकर, मिश्रीमें मिलाकर खानेसे वात, पित्त और कफके रोग नाश होते हैं; वृत्ति होती है, नित्य रुचि होती है, नेत्र-रोग नाश होते हैं एवं वीर्य-क्षय, प्रमेह, कोढ़ और पित्तके रोग शान्त होते हैं ।

नोट—चार तोले गन्धक एक बारमें ही न खा लेना । अपने बलाबलके अनुसार १।२ या ४।६ माशे की मात्रा तजवीज करके, उसमें मिश्री मिलाकर खाना चाहिये । यह नुसखा प्रमेह पर रामबाण है । अभी हालमें एक अत्यन्त कष्टसाध्य और अनेकों चिकित्सकोंके इलाजसे ना-उम्मेद हुए प्रमेह-रोगीको ६ माशे शुद्ध गन्धक और ६ माशे मिश्री धारोष्ण दूधके साथ ३ महीने खिलाकर हमने आराम किया है ।

( ३ ) त्रिफलेका चूर्ण, शहदके साथ, चाटनेसे पुराना प्रमेह भी नाश हो जाता है ।

नोट—त्रिफला तीन फलोंको कहते हैं । वे ये हैं:—( १ ) हरड़, ( २ ) बहेड़ा, ( ३ ) आमला । तीनोंको मिलाकर “त्रिफला” कहते हैं । खाली त्रिफला कह देनेसे ही पसारी समझ जाते हैं; पर हरड़ कितनी, बहेड़ा कितना और आमला कितना लेना चाहिये, इस बातको वैद्योंके सिवा बहुत कम लोग जानते हैं । शास्त्रोंमें लिखा है—

एका हरीतकी योज्या द्रौच योज्यौ विभीतकौ ।

चत्वार्यमलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्तिता ॥

एक हरड़, दो बहेड़े और चार आमले—इनको “त्रिफला” कहते हैं । एक हरड़ वज्रनमें दो बहेड़ोंके बराबर होती है और दो बहेड़े चार आमलोंके बराबर होते हैं । इस तरह इन तीनों फलोंकी तोल बराबर हो जाती है । उत्तम मोटी हरड़ प्रायः २ तोलेकी होती है, बहेड़ा प्रायः एक तोलेका होता है और आमला आधे तोलेका होता है । इस तरह १ हरड़=२ तोलेके; २ बहेड़े=२ तोलेके; ४ आमले=२ तोलेके । मगर सबका समान वजन लेनेसे “त्रिफला” दस्तावर, गरम और पेशाबकी थैलीमें गरमी करनेवाला हो जाता है । अगर रोगीके रोगमें



कफके अंश ज़ियदा हों अथवा उसे कब्ज रहता हो, तो इसी तरह त्रिफला लेना ठीक है । अगर रोगीका मिज़ाज गरम हो या उससे त्रिफला खाया न जाय तो मात्रासे आधी मिश्री मिला देनी चाहिये । अथवा हरड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग और आमला तीन भाग लेना चाहिये । इस तरह बढ़ा-बढ़ाकर भाग लेनेसे त्रिफला गरमी नहीं करता । आज-कलके गरम-मिज़ाज वालोंके हकमें यह अच्छा प्रमाणित हुआ है । नेत्ररोग नाश करनेके लिये भी त्रिफला इसी तरह बढ़ाकर लेना ठीक है ।

त्रिफले की आयुर्वेदमें बड़ी तारीफ है । प्रमेहपर इसको देनेकी प्रायः नये-पुराने सभी वैद्योंने राय दी है । “वैद्यरत्न” में लिखा है—

चूर्णं फलत्रिकं भवं मधुनावलीढं ।

हन्ति प्रमेहगदमाशु चिरप्रभूतम् ॥

“त्रिफलेका चूर्ण” शहदमें मिलाकर लेनेसे पुराना प्रमेह शीघ्र ही नाश हो जाता है ।

और भी कहा है—

मधुना त्रिफलाचूर्णमथवाश्मजतुद्भवम् ।

लोहजं वा भयोत्थं वालिहेत्मेह निवृत्तये ॥

“त्रिफलेका चूर्ण” शहदमें मिलाकर चटानेसे प्रमेह नाश हो जाता है; “शिलाजीत” शहदके साथ चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाता है; “लोह भस्म” शहदके साथ चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाता है अथवा “हरड़का चूर्ण” शहदमें मिलाकर चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाता है । इन चारोंमेंसे किसी भी नुसखेके सेवन करने से प्रमेह नाश हो जाता है । अगर त्रिफलेका चूर्ण, शुद्ध शिलाजीत और शहद तीनों मिलाकर चाटे जायँ, तबतो कहना ही क्या ? त्रिफलेके सम्बन्धमें “शार्ङ्गधर” में लिखा है—

त्रिफलामेहशोथघ्नी नाशयेद्विषमज्वरान् ।

दीपनी श्लेष्मपित्तघ्नी कुष्ठहन्त्री रसायनी ॥

सर्विर्मधुभ्यां संयुक्ता सेव नेत्रामयाञ्जयेत् ।

त्रिफला—प्रमेह, शोथ-सूजन और विषम ज्वरोंको नाश करता है, भूख लगाता, कफ-पित्तको नाश करता, कोढ़को दूर करता और



रसायन है; यानी रोग नाश करके उम्र बढ़ानेवाला है । त्रिफले को घी और शहदके साथ लगातार कुछ दिन सेवन करनेसे आँखोंके सब रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं ।

नोट—घी और शहद साथ लेने हों, तो भूलकर भी बराबर-बराबर न लेने चाहियें । अगर शहद ६ मासे लिया जाय, तो घी १ तोले लिया जाय ।

मात्रा—त्रिफलेको कूटकर कपड़-छन करलो और किसी साफ शीशीमें भर कर रख दो । इसकी मात्रा ३ मासेसे एक तोले तक है । जवान आदमीको १ तोले त्रिफलेका चूर्ण १ तोले शहदमें चटानेसे बहुत लाभ होते देखा है । कितनोंहीके प्रमेह नाश हो गये । सवेरे-शाम, दोनों समय, चाटना चाहिये । त्रिफलेका चूर्ण फाँककर, कोरा जल पी लेनेसे भी लाभ होता है; पर दस-पाँच दिन त्रिफला सेवनसे प्रमेह आराम नहीं हो जाता । रोगकी कमी-वैशीके अनुसार एक मास, दो मास और ज़ियादा-से-ज़ियादा ६ मास चाटना चाहिये । इसके चाटनेसे ६ मासमें घोर प्रमेह भी नाश हो जाता है, इसमें शक नहीं ।

यह न समझना चाहिये, कि त्रिफला मामूली चीज़ है; इससे क्या होगा ? त्रिफला, रोग नाश करनेमें, दूसरा अमृत है । वैद्यक-शास्त्रमें लिखा है:—

मृता यस्त्रिफलायष्टिचूर्णं मधुघृतान्वितम् ।

दिनान्ते लेटि नित्यं सरतौ चटकवद् भवेत् ॥

त्रिफलेका चूर्ण; शहद, घी और कान्तिसार—इन सबको मिलाकर, नित्य रातके समय, सेवन करनेसे पुरुष उसी तरह मैथुन कर सकता है; जिस तरह लाल चिड़िया मुनियाके साथ मैथुन करता है और थकता नहीं ।

“शार्ङ्गधर” में लिखा है:—

चौद्रेण त्रिफला क्वाथः पीतो मेदहरः स्मृतः ।

शीती भूतं तथोष्णाम्बु मेदोहत चौद्रसंयुतम् ॥

त्रिफलेका काढ़ा, शहदके साथ, पीनेसे मेद-वृद्धि या बेढङ्गी बुटाई नाश होती है; उसी तरह गरम पानीको, शीतल होने पर, शहदके साथ पीनेसे मेद-वृद्धि नाश होती है ।



और भी कहा है—

फल त्रिकोद्भवं क्वाथं गोमूत्रेणैव पाययेत् ।

वातश्लेष्मकृतं हन्ति शोथं वृषणसंभवम् ॥

त्रिफलेका काढ़ा, गोमूत्रके साथ, पीनेसे बादी और कफसे पैदा हुई फोतोंकी सूजन दूर हो जाती है ।

नोट—त्रिफलेके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे कामला रोग नाश हो जाता है । काढ़ेके लिये त्रिफला अढ़ाई तोले लेना चाहिये और उसे १ पाव जलमें औठाना चाहिये । पीछे छानकर, शीतल होने पर, उसमें तीन माशे शहद मिलाकर पी लेना चाहिये ।

(४) हल्दीके पिसे-छने चूर्णमें “शहद और आमलेका स्वरस” मिलाकर चाटनेसे, निश्चय ही प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—हल्दी—वही हल्दी जिसे आप दाल-सागमें डालते हैं—मामूली चीज़ नहीं, बड़ी गुणकारी है । यह कड़वी, तेज, रूखी और गर्म है । इससे चमड़ेके सब रोग नाश हो जाते हैं । प्रमेह, पाण्डु-पीलिया और सूजन तथा फोड़े-फुन्सियोंको भी यह नाश करती है । कहते हैं, हल्दीको पानीमें पीसकर सूजन पर लगानेसे सूजन नाश हो जाती है । कच्ची हल्दीको गुड़में मिलाकर खिलानेसे बालकोंके पेटके कीड़े मर जाते हैं । तेल या उबटनमें हल्दी मिलाकर शरीर पर मलनेसे शरीरका रङ्ग सुन्दर होता है । तेलमें हल्दी डालकर मलनेसे चमड़ेके रोग नष्ट हो जाते हैं । चूना और हल्दी मिलाकर और गरम करके लगानेसे पीड़ा और सूजन शान्त होती है । आयुर्वेदमें, जैसा कि हमने ऊपर लिखा है, हल्दीके चूर्णको कच्चे आमलों के स्वरसमें मिलाकर खानेसे प्रमेहका नाश होना लिखा है । हकीम लोग भी हल्दीको प्रमेह-नाशक कहते हैं । हल्दीसे सड़े-से-सड़े घाव आराम हो जाते हैं । अगर आपको प्रमेह है, तो आप ऊपरके हल्दी वाले नुस्खेका अवश्य सेवन करें; अवश्य लाभ होगा ।

प्रमेह नाश करनेके लिए “हल्दी” बड़ी उत्तम चीज़ है । किसी ग्रन्थमें लिखा है:—

सक्षौद्रं रजनी चूर्णं लेहनं निष्कद्वयं तथा ।

असाध्यं नाशयेन्मेहं विद्यावागीशको रसः ॥

चार माशे हल्दीके चूर्णमें “शहद” मिलाकर चाटनेसे असाध्य प्रमेह भी नाश हो जाता है । इसको “विद्यावागीश” रस कहते हैं ।



मात्रा—जवानके लिये आमलोंका स्वरस या चूर्ण एक तोले, हल्दी दो मांशे और शहद एक तोले काफी होगा ।

( ५ ) गिलोय या गुर्चके स्वरसमें “शहद” मिलाकर पीनेसे सब तरहके प्रमेह नाश होते हैं । कहा है—

**गुडूच्या स्वरसः पेयो मधुना सह मेहजित ॥**

नोट—नीम पर चढ़ी ताज़ा गिलोय लाकर कुचल लो और कपड़ेमें रस्खकर रस निचोड़ लो । कूटते समय इसमें पानी मत मिलाना । गिलोयके १॥ तोले स्वरसमें १ तोले शहद मिलाकर, २१ दिन, पीनेसे सब तरहके प्रमेह नाश हो जाते हैं । गिलोयके दो तोले स्वरसमें १ मांशे हल्दीका चूर्ण मिला कर पीनेसे भी प्रमेह नाश होजाते हैं । गिलोयके दो तोले स्वरसमें ६ मांशे शहद डालकर पीना भी अच्छा है । इस योगसे बातज और पित्तज प्रमेह निश्चय ही आराम होते हैं । परीक्षित है ।

कहा हैः—

**पीत्वा सक्षौद्रममृतासंजयति मानव ।**

**प्रमेहं विंशतिं विधं मृगेन्द्र इव दन्तिनम् ॥**

शहद और गिलोयका स्वरस पीनेसे बीसों प्रमेह इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह सिंह हाथीको नष्ट कर देता है ।

नोट—‘शार्ङ्गधर’में लिखा है—अमृतास्वरसोहन्ति क्षौद्रयुक्तोहि कामलाम् । अर्थात् गुरुचका स्वरस “शहद”के साथ पीनेसे कामला—पीलिया नाश हो जाता है ।

लोलिम्बराज महोदय भी कहते हैं—

**समधुरिच्छन्नास्वरसो नानामेहनिवारणः ।**

**वदन्ति भिषजा सर्वे शरदिन्दुनिभानने ॥**

हे शरद् ऋतुके चन्द्रमाके समान मुँहवाली ! गिलोयको कूटकर, उसके निचोड़े हुए रसमें “शहद” मिलाकर पीनेसे सब तरहके प्रमेह नाश हो जाते हैं—यह सभी वैद्योंकी राय है ।

नोट—प्रमेहपर यह योग भी आमलेके योगकी तरह ही रामवाण है । आमलोंके चार तोले स्वरसमें “६ मांशे शहद और १ मांशे हल्दी” मिलाकर दोनों समय पिलानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं । पित्तज प्रमेहोंके नाश होनेमें तो सन्देह ही नहीं । मगर गिलोय और आमलेके स्वरस कम-से-कम ८० दिन तक पीने चाहियें । परीक्षित है ।



गिलोय मामूली चीज नहीं है । इससे बहुतसे रोग नाश होते हैं:—

( १ ) गिलोयके दश माशे रसमें १ माशे शहद और १ माशे सैंधानोन मिलाकर खरत करने और आँजनेसे तिमिर, आँखोंकी खुजली, काचविन्दु तथा नेत्रके सफ़ेद और काले भागके सब रोग नाश हो जाते हैं ।

( २ ) गिलोयका काढ़ा “छोटी पीपर” एक या दो रत्ती मिलाकर पीनेसे कफसे हुआ जीर्णज्वर नाश हो जाता है, इसमें ज़रा भी शक नहीं ।

( ३ ) गुड़ची घृतके सेवनसे वातरक्त और कोढ़ नाश हो जाते हैं । अगर गिलोयका घी बनाना हो, तो गिलोयको पीसकर लुगदी बनालो । फिर कड़ाहीमें लुगदी, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना दूध डालकर पकालो और घी मात्र रहने पर उतारलो ।

सूचना—गुरुच घीके साथ बादीको, गुड़के साथ कृब्जको, मिश्रीके साथ पित्तको और मधुके साथ कफको, अरण्डीके तेलके साथ वातरक्तको और सोंठके साथ आमवातको नष्ट करती है । ये अनुपान याद रखने चाहियें । जहाँ जैसा उचित हो, वहाँ वैसा ही अनुपान देना चाहिये ।

( ६ ) आमलोंके १ तोले स्वरसमें १ तोला “शहद” डालकर पीनेसे भी बीसों प्रकारके प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—आमलोंके १ तोले स्वरसमें १ तोले “शहद” और २ माशे “हल्दी” मिलाकर पीनेसे भी प्रमेह नाश हो जाते हैं । अगर ताज़ा आमले न मिलें तो सूखे आमले लेकर पीस-छान लो और एक तोले चूर्णमें १ तोले “शहद” डालकर चाट जाओ ।

वैद्यजीवन-कर्त्ताने लिखा है—

**स्फुरतसुन्दरो दारमन्दारदामप्रकामभिरास्तनद्वन्द्व रम्ये ।**

**हरिद्रारजो माक्षिकाभ्यां विमिश्रः शिवायः कषायः प्रमेहापहारी ॥**

हे प्रकाशमान और सुन्दर मन्दारके फूलोंकी मालासे यथेच्छ मनोहर और रमणीय स्तनोंवाली स्त्री ! आमलोंके काढ़ेमें “हल्दी और शहद” मिलाकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—दो या अढ़ाई तोले आमलोंके काढ़ेमें १ तोला शहद और २ माशे हल्दीका चूर्ण, शीतल होनेपर, मिलाकर पीना चाहिये । बहुत लिखना फिजूल है; आमलोंके स्वरसमें “शहद और हल्दी” मिलाकर सेवन करनेकी नये-पुराने सभी आचार्योंने भूरि-भूरि प्रशंसा की है और यह नुसखा है भी ऐसा ही । परिचित है ।



( ७ ) दो माशे शुद्ध शिलाजीतको, एक तोले शहदमें मिलाकर, २१ दिन, चाटनेसे सब प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—शिलाजीतके शोधनेकी तरकीब और असली नकलीकी पहचान आगे लिखी है ।

( ८ ) त्रिफलेका चूर्ण और शुद्ध शिलाजीतको शहदमें मिलाकर सेवन करनेसे वीसों प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—त्रिफलेका चूर्ण १ तोले, शुद्ध शिलाजीत २ माशे और शहद १ तोले—इनको मिलाकर जवान आदमी चाट सकता है । अगर रोगी कम उम्र या कमजोर हो, तो मात्रा घटा लेनी चाहिये ।

( ९ ) २ माशे शुद्ध शिलाजीत, ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे सब प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

शिलाजीतकी महिमा न पूछिये ।  
लिखा है—

**सर्वानुपानैः सर्वत्र रोगेषु विनियोजिते ।**

**जयत्यभ्यासतो नूनं तांस्तान रोगान्न संशयः ॥**

विचार-पूर्वक, अलग-अलग अनुपानोंके साथ, शिलाजीत लेनेसे खमस्त रोग नाश हो जाते हैं ।

**एलपिप्पली संयुक्तम् मासमात्रं तु भक्षयेत् ।**

**मूत्रकृच्छ्रं मूत्ररोधं हन्ति मेहं तथा क्षयम् ॥**

छोटी इलायची और पीपलके चूर्णके साथ “शिलाजीत” सेवन करने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्रावरोध—पेशाबका रुकना, और प्रमेह और क्षयी रोग नाश हो जाते हैं ।

नोट—यह नुसखा भी परमोत्तम है । इलाइची १ रत्ती, पीपर १ रत्ती और शिलाजीत २ माशे—तीनोंको मिलाकर सेवन करना चाहिये । इन चीजोंका बज्जून घटाया-बढ़ाया भी जा सकता है । यह बात रोगी पर निर्भर है । अगर रोगी कमजोर हो, तो शिलाजीत १ माशे ही काफी होगा ।

शिलाजीत, छोटी इलायची, शंखपुष्पी और मिश्री—सबको कूट-



पीसकर चूर्ण बना लो। इसमेंसे चार मासे चूर्ण, पानीके साथ, खानेसे भी प्रमेहे चले जाते हैं।

नोट—सूरजकी तपतसे जब पहाड़ तपते हैं, तब उनमेंसे धातुओंका सार रूप गोंद-जैसा पतला पदार्थ निकलता है, उसे ही “शिलाजतु” या “शिलाजीत” कहते हैं। पर असली शिलाजीत बहुत कम हाथ आता है। बेचनेवाले पहाड़ी बन्दरोंका पाखाना बेचते हैं, जो रूप रंगमें शिलाजीत जैसा ही होता है; पर वह कामका नहीं होता। इसलिये शिलाजीत खूब परीक्षा करके लेना चाहिये।

## शिलाजीतकी परीक्षा ।

शिलाजीतकी परीक्षा इस तरह करनी चाहिये :

( क ) शिलाजीतमेंसे ज़रा-सा लेकर आग पर डाल दो। अगर उसके आगपर डालनेसे धूँआँ न उठे, तो उसे उत्तम समझो।

( ख ) शिलाजीतको बिना धूँएँकी आगपर रखो। अगर शिलाजीत अच्छा होगा, तो वह लिङ्गेन्द्रियकी तरह खड़ा हो जायगा।

( ग ) ज़रासा शिलाजीत एक तिनकेकी नोकमें लगाकर पानीके भरे कटोरेमें डालो। अगर उसके तारसे होकर, वह जलमें बैठ जाय, तो उसे अच्छा समझो।

( घ ) शिलाजीतको नाकसे सूँघो; अगर उसमें गोमूत्रकी-सी बदबू आवे, वह रङ्गमें काला और पतले गोंद-जैसा हो तथा वजनमें हल्का और चिकना हो और उसमें बालू, रेत आदि न हों, तो उसे उत्तम समझो।

शिलाजीत खरीदते समय चारों तरहसे परीक्षा करलो। एक परीक्षासे सन्तोष मत कर लो। अगर शिलाजीत चारों परीक्षाओंमें ठीक निकले, तो खरीदो; अन्यथा मत खरीदो।

## शिलाजीतके गुण और लक्षण

सभी तरहके शिलाजीत स्वादमें चरपरे, कड़वे, कषैले तथा



दस्तावर, कटुपाकी, उष्ण-वीर्य, रस रक्त आदि धातुओंको सुखाने वाले और मिले हुए कफ आदि दोषोंको अपनी शक्तिसे हटाकर निकाल देनेवाले होते हैं ।

रस, उपरस, पारा, रत्न और लोहमें जो गुण होते हैं, वे ही सब गुण शिलाजीतमें होते हैं; क्योंकि शिलाजीत धातुओंका सार होता है, जो गरमी पाकर पहाड़ोंपर बह आता है । शिलाजीत बुढ़ापे और मृत्युको जीतनेवाला, वमन, कम्पवायु, बीसों प्रकारके प्रमेह, पथरी, शर्करा, रेगमसाना, सोजाक, कफक्षयी, श्वास, वातज बवासीर, पीलिया, मृगी, उन्माद-पागलपन, सूजन, कोढ़ और कृमि रोग यानी पेटके कीड़ोंको नाश करनेवाला है । किसी-किसीने श्लेष्म-फोल-पाँव या हाथी-पाँव और गुल्मनाशक भी लिखा है । किसीने विषम ज्वर नाशक भी लिखा है । इतने सब रोगोंपर शिलाजीत ऐसा ही होगा, पर हम परीक्षा नहीं कर सके । प्रमेह प्रभृति दो-चार रोगों पर इसका आश्चर्य फल देखा है । हमारी रायमें प्रमेहकी यह अव्वल दर्जेकी दवा है । मोटे शरीरको सुखाकर पतला करनेमें भी यह अव्वल दर्जेकी दवा है । शाखोंमें इसकी बड़ी तारीफ लिखी है । लिखा है, जो इसे चार सौ तोले तक खा लेता है, वह शतायु होता है; यानी १०० साल तक जीता है । मगर इतने शिलाजीतके खानेको यदि दो मासे रोज भी खाया जाय, तो ६ साल आठ महीने लगें । पहले लोग आजकलके लोगोंकी तरह जल्दबाज न होते थे । वे अपनी आरोग्यता और आयु-वृद्धिके लिये वर्षों तक ऐसे पदार्थ खाया करते थे, इसीसे वे लोग हजार-हजार वर्ष तक जीते थे । इसमें शक नहीं; उस समयके मनुष्योंको ५ सेर शिलाजीत खानेमें सात-सात साल न लगते थे । इतना शिलाजीत वह प्रायः १ सालमें ही पचा जाते थे, क्योंकि वे बली होते थे । इन दिनों अगर कोई उतना शिलाजीत खाले, तो लाभके बदले हानि उठावे । खैर; अगर आपको प्रमेह हो, तो आप शुद्ध शिलाजीत बे-खटके सेवन

Library  
Jangamawadi Math, Varanasi  
5330



करें; पर शुद्ध करके और पथ्यके साथ । आपका प्रमेह-रान्नससे अवश्य पीछा छूट जायगा । वाग्भट्ट महोदय कह गये हैं—

मधुमेहित्वमापन्नो भिषग्भिः परिवर्जितः ।

शिलाजतु तुलामद्यात् प्रमेहार्तः पुनर्नवः ॥

वैद्योंका त्यागा हुआ—असाध्य समझा हुआ मधुमेही अगर मात्रासे ४०० तोले या ५ सेर शिलाजीत (६-७ या ४ साल में) खावे, तो फिर उसका चोला नया हो जाय । इसमें कोई शक नहीं, कि असाध्य या वैद्योंके त्यागे हुए प्रमेह-रोगीके जीवनकी आशा “शिलाजीत” पर ही है ।

## शिलाजीत शोधनेकी विधि ।

शास्त्रमें लिखा है—(१) गायके दूध, (२) त्रिफलेके काढ़े, और (३) भाँगरेके स्वरसमें भावना देने और सुखा लेनेसे शिलाजीत का मैल निकल जाता है—वह शुद्ध हो जाता है । एक दिन गायके दूधमें भावना देकर—भिगो और मसलकर—सुखा दो, दूसरे दिन त्रिफलेके काढ़ेमें भावना देकर सुखा दो और तीसरे दिन भाँगरेके रसमें भावना देकर सुखा लो । इस तरह शोधा हुआ शिलाजीत गरम होता है ।

सार वर्गकी औषधियोंकी भावना देनेसे भी शिलाजीत खाने योग्य हो जाता है और उन्हीं औषधियोंके काढ़ेके साथ सेवन भी किया जाता है ।

## शिलाजीत की सेवन-विधि ।

(क) वमन-विरचन आदि द्वारा शरीरको शुद्ध कर लेने या कृय और जुलाबसे क़ोठा साफ़ कर लेनेके बाद, अगर शिलाजीत सेवन किया जाता है, तो ज़ियादा फ़ायदा करता है ।



(ख) शिलाजीतको सवेरे ही, सूर्य निकलनेके बाद, सार वर्गकी दवाओंके जलमें पीसकर अथवा शहद या दूध प्रभृतिमें मिलाकर लेना चाहिये ।

(ग) शिलाजीत और भिलावे सेवन करने वालेको एक समान पथ्य-परहेज करने पड़ते हैं । सवेरेका खाया शिलाजीत पच जानेपर जङ्गली ज्ञानवरोंका मांस-रस—शोरबा खाना चाहिये या इसके साथ भात खाना चाहिये अथवा जौकी रोटी या जौकी बनी और कोई चीज खानी चाहिये । प्रमेहमें जौ अमृत है ।

(१०) शहद, पीपल और शिलाजीतमें एकसे तीन रत्ती तक “निश्चन्द्र अभ्रक भस्म” मिलाकर सेवन करनेसे बीसों तरहके प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं । परीक्षित है । शिलाजीतकी मात्रा १ माशे से दो माशे तक है । अपने बलाबलके अनुसार मात्रा तजवीज कर लेनी चाहिए ।

(११) एक या दो माशे शिलाजीतको, मिश्री-मिले दूधके साथ, खानेसे बीसों प्रकारके प्रमेह नष्ट हो जाते हैं, इसमें शक नहीं ।

(१२) शुद्ध शिलाजीत, बङ्गभस्म, छोटी इलायचीके दाने और नीली भाँई का वंशलोचन—इन चारोंको बराबर-बराबर लेकर, शहदके साथ खरल करके, रत्ती या दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो । सवेरे-शाम, अपने बलाबलके अनुसार, एक या दो गोली खाकर ऊपरसे गायका दूध पीनेसे प्रमेह, बहुमूत्र—पेशाबका बहुत और बारम्बार होना, नाताकृती और धातुविकार निश्चय ही आराम हो जाते हैं ।

नोट—छोटी इलायची और वंशलोचनको महीन पीसकर, तत्र बंग और शिलाजीतमें मिलाना चाहिए । बङ्गभस्म रॉगेकी भस्मको कहते हैं । प्रमेह नाश करनेमें जैसा शिलाजीत रामवाण है; बङ्ग भी वैसी ही है ।

(१३) सेमलकी छालका रस, शहद और हल्दीके चूर्णके साथ, खानेसे बीसों प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं ।



नोट—सेमलका पेड़ बड़ा ऊँचा और पुराना होता है । इसको संस्कृतमें “शाल्मलि” और बङ्गलामें “शिमूल” कहते हैं । इसके वृक्षमें काँटे होते हैं, इससे इसपर चढ़नेमें कठिनाई होती है । इसमें खूब सुख फूल लगते हैं । चैत के महीनेमें फूलोंको देखकर बड़ा आनन्द आता है । इसके पेड़की रुई गद्दे-तकियों में भरी जाती और बड़ी मुलायम होती है ।

( १४ ) सेमलकी छालके रसमें, शहद और हल्दीका चूर्ण मिलाकर— इस रससे “बङ्गभस्म” खाने; यानी अपने बलानुसार एक या दो रत्ती “बङ्गभस्म” शहदमें मिला और चाटकर, ऊपरसे शहद-हल्दी मिला सेमलका रस पीनेसे प्रमेह इस तरह भागते हैं, जिस तरह सिंहको देखकर हाथी भागते हैं ॥

जवान आदमीको चाहिये, कि एक या दो रत्ती बङ्गभस्म ६ माशे शहदमें मिलाकर चाट ले । ऊपरसे दो तोले सेमलकी छालके स्वरसमें १ तोले शहद और २ माशे हल्दीका चूर्ण मिलाकर पी जावे । ये सब चीजों कमो-बेश भी की जा सकती हैं ।

नोट—सेमलकी छालका काढ़ा “सुरा प्रमेह” में अत्युत्तम है ।

( १५ ) हरड़ोंके पिसे-छने चूर्णको शहदमें मिलाकर, नित्य, खानेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

( १६ ) “वैद्य विनोद” में लिखा है—जो नित्य सवेरे ही ‘पोहकर-मूलका चूर्ण’ उचित अनुपानके साथ सेवन करता है और रातको छोटी हरड़ोंका चूर्ण खाता है, उसके प्रमेह इस तरह दूर भागते हैं, जिस तरह शङ्करके स्मरणसे पाप दूर भागते हैं । कहा हैः—

प्रातः पिवेत्पुष्करमूलचूर्णं पथ्याच रात्रौ प्रतिघस्रमंति ।

तस्य प्रमेहाः प्रलयं प्रयान्ति पापानि शम्भोः स्मरणादयथा ॥

( १७ ) अपने बलाबल अनुसार दो से चार तोले तक काले तिल सवेरे ही खानेसे प्रमेह और बहुमूत्र रोग नाश हो जाते हैं, यह बात “वैद्य विनोद” में लिखी है । जैसे—

\* शाल्मलित्वग्रसोपेतं सक्षौद्रं रजनीरजः ।

बङ्गभस्म हरेन्महान्मेहान्पञ्चानन इव द्विपान् ॥



## पलं तिलानामशितम् प्रभाते निहन्ति मेहं बहुमूत्रतां च

नोट—प्रमेह की नहीं कह सकते, पर सच होने में शक नहीं। हां, बहु-मूत्र रोग में तिलोंका सेवन निस्सन्देह रामबाण है। तिल और गुड़को मिला कर खूब कूटना चाहिये और फिर उसी तिलकुटे को खाना चाहिये। पेशाबोंके बहुत होने में अवश्य लाभ होगा; यानी इससे पेशाब कम आवेंगे।

( १८ ) छोटी दूधी को छाया में सुखा कर, उसमें बराबर की शक्कर वा मिश्री मिला दो। उसमें से एक तोले भर खाकर ऊपर से पावभर गाय का दूध पीलो। इस तरह से लगातार करने से प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं।

( १९ ) दारुहल्दी, मुलहठी, त्रिफला और चीते की जड़ की छाल इन चारों को मिलाकर दो या तीन तोले लेकर, काढ़ा बनाकर, निरन्तर कुछ दिन पीने से प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

( २० ) त्रिफला, दारुहल्दी, इन्द्रायण और नागरमोथा—इन चारोंके काढ़ेमें, सिलपर जलके साथ पीसी हुई “हल्दीकी लुगदी और शहद” मिलाकर, रोज, कुछ दिन, पीनेसे प्रमेह रोग निश्चय ही भाग जाते हैं।

नोट—“इन्द्रायणके” स्थानमें “देवदारु” भी लेते हैं। त्रिफला, देव-दारु, दारुहल्दी और नागरमोथेके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं। बड़ा अच्छा नुसखा है। इसमें “हल्दीका चूर्ण” मिलाना और भी अच्छा है।

( २१ ) जौकी पिट्टी, एक मास तक, शहदके साथ खानेसे प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं। कहा है:—

भक्षयेन्मधुना मासं प्रमेही यवपिष्टकम् ।

मेदोघ्ना बद्धमूत्राश्च समाः सर्वेषु धातुषु ॥

यवास्तस्माद्विशिष्यन्ते प्रमेहेषु विशेषतः ॥

जौकी रोटी या पिट्टी १ या २ महीने खानेसे प्रमेहमें निश्चय ही लाभ होता है, क्योंकि जौ मेदेको नाश करने वाला, मूत्रको रोकने वाला और सब धातुओंको समान करनेवाला है; इसीसे प्रमेह रोगमें जौ विशेष हितकर है।



( २२ ) गायके खाये हुए जौओंको उसके गोबरसे चुन लो । इच्छा हो, गोमूत्रकी भावना दे दो; इच्छा न हो न दो । उन्हें गायके उदरिवत नामक माठेके साथ या नीमके रसके साथ अथवा मूंगके रसके साथ सेवन करो । अवश्य प्रमेह नाश होगा ।

नोट—प्रमेहवालेके हकमें “जौ” बड़ीही उत्तम चीज़ है । परीक्षित है ।

( २३ ) शीशमके पत्ते २ तोले और काली मिर्च दो माशे—इन दोनोंको एक पाव जलमें पीस-छानकर पीनेसे प्रमेह, सोजाक और शरीरकी गरमी शान्त हो जाती है । खटाई-मिठाईसे बचना चाहिये ।

( २४ ) चिरमिटीके पत्तोंका एक या दो तोले रस अथवा कमती रस, गायके एक पाव दूधके साथ, पीनेसे प्रमेह अवश्य नाश हो जाते हैं ।

नोट—सफ़ेद चिरमिटीके रसमें मिश्री और सफ़ेद ज़ीरा मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र रोग आराम हो जाता है । चिरमिटीकी जड़ दूधमें पकाकर और शक्कर मिलाकर खानेसे धातुका गिरना बन्द हो जाता और वीर्य बढ़ता है ।

( २५ ) रेवन्द चीनी आठ तोले, मिश्री आठ तोले और सूखे सिंघाड़े आठ तोले लेकर, कूट-पीसकर छान लो । इसमें से नौ माशे चूर्ण, निराहार मुँह, भोजनसे पहले, पाव-भर दूधके साथ खानेसे बहुत पुराना प्रमेह भी अवश्य ही नष्ट हो जाता है ।

( २६ ) महानीमकी पकी और कच्ची निबौलियाँ लाकर छायामें सुखाकर, पीस-कूट कर चूर्ण बना लो । इसमेंसे १ तोला चूर्ण “चाँवलके धोवन” के साथ खानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

“वैद्य विनोद” में लिखा है:—

महानिम्बस्य बीजानि षट् च निष्काः सुपेषितः ।

पलं तन्दुलतोयस्य घृतनिष्कद्वयं तथा ॥

एकीकृत्य पिवेत्सर्वं हन्ति मेहं पुरातनम् ।

दो तोले महानीमके बीजोंको चार तोले चाँवलोंके धोवनमें



पीस कर और उसमें दो तोले “घी” डालकर पीनेसे सब तरहके पुराने प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

नोट—इस तरह आजमानेका मौक़ा तो हमें नहीं मिला । उस तरह तो मुझीद है ही; कदाचित् इस तरह उसकी अपेक्षा अधिक लाभप्रद हो ।

( २७ ) बबूलकी नरम-नरम कोंपलें एक तोले लाकर, सिलपर पीस लो और बराबरकी पिसी मिश्री मिलादो । इसको खाकर पानी पीनेसे, २१ दिनमें और कभी-कभी जल्दी ही, सब प्रमेह नाश हो जाते हैं । यह दवा आजमूदा है; कभी फेल नहीं होती—अपना चमत्कार शीघ्र ही दिखाती है । इससे स्वप्नदोष और धातु गिरना प्रभृति सभी रोग नाश होते हैं ।

नोट—अगर बबूलकी हरी पत्तियाँ न मिलें, तो सूखी पत्ती आधी लेनी चाहिएँ । मात्रा ४ माशेकी है ।

( २८ ) बबूलकी फलियाँ, जिनमें बीज न आये हों, लाकर छायामें सुखाओ और कूट-पीस कर, मिश्री मिलाकर, खाओ; प्रमेह अवश्य भाग जायगा । फली और पत्ती समान लाभ दिखाती हैं । बबूलके फूल भी प्रमेहको नाश करते हैं ।

नोट—फलियोंका चूर्ण ६ माशे लेना चाहिये । अगर इस नुस्खेपर १ पाव गायका दूध पिया जाय, तो और भी अच्छा । बराबरकी मिश्री चूर्णमें मिला ली जाय अथवा दूधमें डाल दी जाय तो उत्तम हो । आधा पानी मिला दूध पीना भी अच्छा है ।

( २९ ) पलाश यानी ढाकके फूल एक तोलेमें, छै माशे मिश्री मिलाकर, २१ या ३१ दिन, खाने और ऊपरसे शीतल जल पीने या शीतल जलमें, भाँगकी तरह फूलोंको पीस-छानकर पीनेसे बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

( ३० ) सफ़ेद सेमलके कन्दके बारीक-बारीक टुकड़े करके सुखालो और पीछे कूटकर चूर्ण बना लो । रोज, सवेरे ही, इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, १ तोले घी, ६ माशे मिश्री और ३ रत्ती जायफलके चूर्णमें



मिलाकर खानेसे प्रमेह नाश हो जाते और बल-वीर्य बढ़ता है ।  
परीक्षित है ।

नोट—अगर सेमलका कन्द न मिले, तो सेमलकी छालका चूर्ण ही सेवन करना चाहिये ।

( ३१ ) साफ पत्थरपर ज़रासा पानी डालकर “निर्मली”को चन्दनकी तरह घिस लो । उसके २ माशे घिसे हुए रसमें ६ रत्ती कालीमिर्च मिलाकर चाटनेसे समस्त धातुरोग नष्ट हो जाते हैं । बड़ी उत्तम चीज़ है । अनेक बार परीक्षा की है ।

( ३२ ) दूधमें तालमखाना पकाकर खानेसे प्रमेह रोग जाता रहता है ।

नोट—तालमखानेका चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने और ऊपरसे “धारोष्ण दूध” पीनेसे प्रमेहमें लाभ होता है । तालमखाने, मूसली और गोखरूके चूर्णको खाकर, मिश्री मिला धारोष्ण दूध पीनेसे धातुरोगमें बड़ा उपकार होता है । परीक्षित है । तालमखाना, मूसली और गोखरूको बराबर-बराबर लेना चाहिये ।

( ३३ ) केलेके पेड़के भीतरी भागको छायामें सुखाकर, पीस-कूट कर चूर्ण बनालो । इसमेंसे ६ माशे या १ तोले चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने और ऊपरसे जल पीनेसे प्रमेह आराम हो जाता है ।

नोट—एक पके केलेमें “६ माशे घी” मिलाकर सवेरे-शाम खानेसे चन्द रोज़में ही प्रमेह, प्रदर और धातु-विकार नाश हो जाते हैं । अगर किसीको सर्दी जान पड़े, तो चार बूँद “शहद” भी मिलाले । केला प्रमेहनाशक है ।

( ३४ ) खैर-वृक्षके अंकुर ४ तोले-भर और सफ़ेद जीरा १ तोले गायके दूधमें पीस-छान और “मिश्री” मिलाकर, सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है तथा मूत्रकृच्छ्र रोग भी जाता रहता है ।

नोट—खैरके वृक्ष वनमें बड़े-बड़े होते हैं । इसीकी लकड़ीसे खैरसार और कथा बनता है ।

( ३५ ) आध पाव साफ़ गेहूँ रातको पानीमें भिगो देने और सवेरे ही सिलपर पीस, मिश्री मिला, कपड़ेमें छानकर पीनेसे प्रमेहमें



आश्चर्य चमत्कार दीखता है । कमसे कम सात दिन ही देखो । परीक्षित है ।

( ३६ ) सत्यानाशीके पत्तोंके दो तोले रसमें दो तोले “घी” मिला कर, पाँच दिन तक, दिनमें एक बार, सेवन करनेसे प्रमेह अवश्य आराम हो जाता है ।

( ३७ ) कुड़ेकी छाल, विजयसार, दारुहल्दी, नागरमोथा और त्रिफला—इनका काढ़ा पीनेसे सब तरहके प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

नोट—विजयसारको बँगलामें “पिपाशाल” कहते हैं । यह रसायन है; प्रमेह, गुशके रोग, कफ पित्त और खून-विकार आदि नाशक है । इसकी मात्रा २ माशेकी है ।

( ३८ ) पाँच तोले विनौलोंको एक पाव जलमें भिगोदो । सवेरे ही उन्हें मलकर पानीको छानलो, विनौलोंको फेंक दो और छने हुए पानी को कढ़ाहीमें चढ़ाकर, उसमें तीन तोले “मिश्री” डालकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ । जब शहद-जैसी चाशनी हो जाय, उतार लो और शीतल करके चाट जाओ । हमने देखा है, इस नुसखेके २१ दिन सेवन करनेसे समस्त प्रमेह आराम हो जाते हैं । खासकर वह प्रमेह, जिसमें शहद या तेल-सा पेशाब होता है, जिसपर चींटियाँ और मक्खियाँ लगती हैं तथा जिसमें प्यास बहुत लगती और पेशाब बहुत होते हैं, इस उपायसे अवश्य ही आराम हो जाता है ।

( ३९ ) सेमलकी सूखी मूसली ३ माशेको कूटपीस कर और उसमें बराबरकी “मिश्री” मिलाकर खाने और ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पीनेसे प्रमेह नाश होकर बल-वीर्यकी वृद्धि होती है । परीक्षित है ।

( ४० ) चार माशे हल्दीके चूर्णमें “शहद” मिलाकर चाटनेसे असाध्य प्रमेह भी नाश हो जाता है । इसको “विद्यावागीश रस” कहते हैं ।



नोट—कोई आश्चर्यकी बात नहीं । हल्दी, आमला, त्रिफला, गिलोय, शिलाजीत, सेमलकी छाल या मूसली और बङ्गभस्म—ये सब प्रमेहकी उत्कृष्ट दवाएँ हैं ।

( ४१ ) मुलेठी १॥ तोले, गुलनार ३ तोले, काहूके बीज ४॥ तोले और सम्हालू के बीज ५ तोले लेकर पीस-कूट और छान लो । इसमेंसे ६ या ६ माशे चूर्ण, सवेरेही, कोरे कलेजे, भोजनसे पहले, फाँककर, ऊपरसे जल पीनेसे सब तरहके प्रमेह या धातुरोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं । कम-से-कम २-३ हफ्ते सेवन करना जरूरी है ।

( ४२ ) खैर, खाँड़, देवदारु, हल्दी और नागरमोथे का चूर्ण एक तोले या ६ माशे रोज़-सेवन करनेसे समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

नोट—इन सबको बराबर-बराबर लाकर, पीस-छानकर चूर्ण बनालो ।

( ४३ ) लौंग, चित्रक, सफ़ेद चन्दन, नागरमोथा, खस, छोटी इलायची, काली अंगूर, बंसलोचन, असगन्ध, शतावर, गोखरू, जाय-फल, गिलोय, निशोथ, तगर, नागकेशर और कमलगट्टेकी मिरी ( हरी पत्ती निकाल कर ) इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान लो और सब चूर्णमें बराबरकी “मिश्री” मिला दो और रख दो । इसकी मात्रा ६ माशेसे लेकर एक तोले तक है । सवेरे ही एक मात्रा खाकर, ऊपरसे जल पीनेसे बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं ।  
अव्वल दर्जेकी दवा है ।

( ४४ ) शतावरको पीस-कूटकर शतावरके ही रसमें २१ भावना दो और फिर सुखालो । सूखनेपर बराबरकी पिसी “मिश्री” मिलाकर रख दो । इसकी ख़ूराक चारसे छै माशे तक है । सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, ऊपरसे गरम दूध पीनेसे पेशाबके रोग, धातुरोग, प्रमेह, बवासीर, दस्तकी कब्जियत प्रभृति रोग निश्चय ही शान्त हो जाते हैं ।

( ४५ ) केवड़ेकी जड़को पानीमें उबाल कर दो तोले रस



निकाल लो । पीछे उसमें दो तोले “शक्कर” मिला सेवन करो । इस नुसखेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

( ४६ ) काँडोलकी छालमें पानी डालकर पीस लो और रस निकाल लो । इसके एक या दो तोले रसमें “मिश्री” मिलाकर पीओ । इससे प्रमेह अवश्य ही नाश हो जाते हैं ।

( ४७ ) कवावचीनीका चूर्ण “शक्कर” मिलाकर या “मिश्री” मिलाकर छै-छै माशेकी मात्रासे, दिनमें चार-छै बार, फाँक कर ऊपरसे पानी पीनेसे प्रमेह, खास कर छहों पित्तज प्रमेह, अवश्य ही नाश हो जाते हैं । मास्त्रिष्ठ या रक्त प्रमेहमें तो यह नुसखा बड़ा ही शान्तिदायक है । अगर सभी प्रमेहोंमें इसको कुछ दिन सेवन कराया जाय और पीछे अन्य दवा दी जाय, तो जल्दी लाभ हो ।

( ४८ ) बड़ी इन्द्रायणकी जड़, त्रिफला और हल्दी—इनको बराबर-बराबर आठ-आठ माशे लेकर, काढ़ा बनाकर और शहद मिलाकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—इन दवाओंका काढ़ा या हिम भी दिया जाता है । ३ माशे “शहद” काढ़ा शीतल होनेपर मिलाना चाहिए ।

( ४९ ) ग्वारपाठे या धीग्वारका गूदा आध सेर निकालो और उसे हाथोंसे खूब मथो । फिर कलईदार कढ़ाहीमें गायका आध सेर घी डालकर गरम करो । घी कलमलाते ही उसमें ग्वारपाठेका गूदा डाल दो और २०।२५ मिनट तक मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ । इसके बाद उसी कढ़ाहीमें गेहूँकी मैदा १ पाव और चीनी आध सेर भी डाल दो और पकाओ । जब लड्डू बनाने लायक हो जाय, उतार कर आधी-आधी छटाँकके लड्डू बना लो । सवेरे ही, भोजनसे पहले, अपने बलाबल अनुसार एक या दो लड्डू खाकर ऊपरसे गायका दूध पीओ । यह नुसखा परीक्षित है । इसके १५ दिन सेवन करनेसे प्रमेह रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं । अगर यह नुसखा ३१ या ४० दिन सेवन किया जाय, तब तो क्या कहना ? इसके सेवनसे



महा दुर्बल भी बलवान और मोटा-ताजा हो जाता है; क्योंकि इसके सेवन करनेसे मांस और वीर्य खूब जल्दी बढ़ते हैं। भूख भी खूब ही लगती है।

नोट—अगर ग्वारपाठके रसमें पानी न मिलाया जाय और भ्रमकेसे अर्क निकाल लिया जाय, तो और भी सुभोता हो। इस अर्ककी मात्रा एकसे दो तोले तक है। इस अर्कमें दूध या मिश्री अथवा शहद मिलाकर पीनेसे भी प्रमेहमें बड़ा उपकार होता है। कई बार परीक्षा की है। पहले भूख बेतहाशा बढ़ती है।

( ५० ) गिलोय, आमले और गोखरू—इन तीनोंको आध-आध पाव लेकर खूब कूट-पीसकर छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, सवेरे ही, ६ माशे घी और ३ माशे शहदमें मिलाकर, कुछ दिन खानेसे प्रमेह नाश होकर बेइन्तहा बलवीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

( ५१ ) मुलेठी, गिलोय, आमले, हरड़, बहेड़ा, सफ़ेद मूसली, स्याह मूसली, बिदारीकन्द, नागकेशर और शतावर—इन दसोंको दो-दो तोले लाकर पीस-छानकर रख लो। इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण सवेरे ही, ६ माशे घी और ३ माशे शहदके साथ चाटनेसे, एक मासमें, सब प्रमेह नाश होकर बे-अन्दाज बलवीर्य बढ़ता है। अञ्जलि दर्जेकी दवा है। परीक्षित है।

( ५२ ) कौंचके बीज, बरियाराकी जड़, शतावर, गोखरू, ककहीकी जड़ और तालमखाने—इन छहोंको एक-एक छटाँक लाकर, कूट-पीसकर छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, सवेरे ही गायके पावभर दूधके साथ, लेनेसे प्रमेह और धातुरोग निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं।

नोट ( १ )—ककही, ककहिया, कंधी और कंगही एकही दवाके नाम हैं। संस्कृतमें इसे अतिबला कहते हैं। इसको “दूध और मिश्री”के साथ पीनेसे प्रमेह अवश्य नाश हो जाता है।

( २ )—बरियाराको, संस्कृतमें बला और खिरेंटी कहते हैं। हिन्दीमें बरियारा, खिरेंटी और बीजवन्द कहते हैं। इसकी जड़की छालके चूर्णको, दूध और मिश्रीके साथ खानेसे मूत्रातिसार निश्चय ही नाश हो जाता है।



परीक्षित है । बरियाराकी जड़ बड़ी वीर्यवर्द्धक और पुष्टिकर है । यह वात-पित्त जीतनेवाली और रुके हुए कफको शोधनेवाली है ।

( ५३ ) खसखसके बीज, गोखरू, दालचीनी, भुना हुआ धनिया, भुने हुए छिले चने और सालम मिश्री—इन सबको दो-दो तोले लेकर पीस-छान लो । शेषमें, सारे चूर्णके वजनके बराबर “मिश्री” मिला दो । इसकी मात्रा ६ से ६ माशे तक है । एक मात्रा सवेरे ही खाकर, ऊपरसे गायका दूध पीनेसे समस्त धातुरोग नष्ट हो जाते हैं । १ मास सेवन करना चाहिये ।

( ५४ ) शंखाहूली १ छटाँक, छोटी इलायचीके दाने १ छटाँक, शुद्ध शिलाजीत १ छटाँक, तवाखीर आध पाव और मिश्री आध पाव; इन सबको कूट-पीसकर छान लो । इस चूर्णकी मात्रा ६ से ६ माशे तक है । इसे फाँककर, ऊपरसे गायका कच्चा—धारोष्ण दूध या बासी जल पीनेसे बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—तवाखीरको संस्कृतमें तवक्षीर और पयःक्षीर आदि कहते हैं । हिन्दीमें तवाखीर, फारसीमें तवाशीर और अङ्गरेज़ीमें अरारूट कहते हैं । यह प्रमेह, पाण्डु, मूत्रकृच्छ्र, और मूत्राश्मरी आदि नाशक है । यह सिंघाड़ेके आटे, बनगायके दूध और जौ प्रभृतिसे बनती है तथा जौ की और बन-गायके दूधकी उत्तम होती है ।

शंखाहूलीके शंखापुष्पी, कोडिल्ला आदि कई नाम हैं । इसके फूल बहुत छोटे-छोटे और शंख जैसे होते हैं । इसकी मात्रा छै रत्ती की है ।

( ५५ ) काली मिर्च, लौंग, चिरौंजी, छुहारे, बादाम, लालचन्दन, छोटी इलायची, तज, तेजपात, पीपर, सफ़ेद जीरा, स्याह जीरा, धनिया, सोंठ, पीपरामूल, नागरमोथा, कौंचके बीजोंकी गिरी, शतावर, सफ़ेद मूसली, स्याहमूसली, तवाखीर और कमलगट्टेकी गिरी ( हरी पत्ती निकालकर )—इन सबको दो-दो तोले लेकर कूट-पीसकर छान लो । इसके बाद इस चूर्णमें एक सेर “मिश्री” पीसकर मिला दो । इस चूर्णकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है । सवेरे ही एक मात्रा खाकर गायका धारोष्ण दूध पीनेसे सारे प्रमेह नष्ट होकर बलवीर्य बढ़ता है । बड़ा अच्छा नुसखा है । परीक्षित है ।



( ५६ ) बबूलकी बिना बीजोंकी—छाया में सुखाई—फली १ तोले, तालमखाना ६ माशे, बीजबन्द ३ माशे और मिश्री ३। तोले—इन सबको पीस-छानकर चूर्ण बनालो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, सवेरे ही, फाँककर ऊपरसे गायका एक पाव दूध पीनेसे प्रमेह नष्ट हो जाता, और धातु गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

( ५७ ) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागर-मोथा और शोधी हुई गूगल—इन सबको कूट-पीसकर, खरलमें डालो और ऊपरसे शहद और गोखरूका काढ़ा डाल-डालकर खूब घोटो जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, गोलियाँ बनालो । इन गोलियोंके सवेरे-शाम खानेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी और प्रदर रोग नष्ट होजाते हैं । अश्वल दर्जेका नुसखा है ।

नोट—गूगल शोधकर लेना । गूगल गिलोयके स्वरसमें मिलाकर धूपमें सुखा लेनेसे शुद्ध हो जाती है; अथवा गिलोय और त्रिफलेके काढ़ेमें गूगलके टुकड़े करके पका लेनेसे गूगल शुद्ध और मुलायम हो जाती है । गूगलके सम्बन्धमें और भी इसी मागमें आगे लिखा है । जो गूगल आगमें डालनेसे जल जाय, गरमीमें रखनेसे पिघल जाय, गरम जलमें डालनेसे पानी-जैसी हो जाय—वही गूगल दवाके कामकी होती है । गूगल एक पेड़का गोंद है । गरमीके मौसममें सूरजकी तेजीसे निकलती है । मात्रा दो माशेकी है । महिषाक्ष और हिरण्याक्ष दो तरहकी गूगल होती है । महिषाक्ष भौरे और अंजनके रङ्गकी और हिरण्याक्ष सोनेके रङ्गकी होती है । हिरण्याक्ष मनुष्योंके लिये अच्छी है । महिषाक्ष भी कभी-कभी काममें आती है ।

( ५८ ) सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा और आमला—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान लो । फिर चूर्णके बराबर ही “शुद्ध गूगल” भी मिला दो और खरलमें डालकर घोटो । ऊपरसे “गोखरूका काढ़ा” डालते जाओ । जब मसाला गोलियाँ बनाने योग्य हो जाय, गोलियाँ बनालो । इन गोलियोंके सेवन करनेसे प्रमेह, वात-रोग, वायुसे खून बिगड़ना, मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं ।

( ५९ ) सालम-मिश्री, शीतलचीनी, दालचीनी, रूमी-मस्तगी,



मीठा सोरंजन और बोजीदान—ये सब छै छै माशे और मिश्री १ तोले लेकर, सबको पीस-छानकर चूर्ण बनालो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान—बकरीका दूध है। इसके २१ दिन तक खानेसे, प्रमेह आदि धातुरोग नष्ट होकर, खून और वीर्य बढ़ते एवं रुकावट होती है। अब्बल दर्जे की आज्ञमूदा दवा है। इसको सेवन करते समय तेल, लालमिर्च, गुड़, खटाई और दहीसे परहेज रखना चाहिये।

( ६० ) हरड़का छिलका, बहेड़ेका ककला, गुठली निकाले आमले, हल्दी, बबूलके फूल और छोटी दूधी इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। इसमें चूर्णके वजनके बराबर 'मिश्री' मिलाकर रख दो। इसकी मात्रा ६ माशे से एक तोले तक है। अनुपान—गायका पावभर दूध। इसके सेवनसे दस्त साफ होता, भूख बढ़ती और प्रमेह रोग नष्ट होता है। प्रथम श्रेणीकी दवा है।

नोट—दूधी तीन तरहकी होती हैं। सबमें दूध निकलता है। छोटी और बड़ी दूधी मशहूर हैं। इनका सर्वाङ्ग दवा के काम आता है। मात्रा २ माशेकी है। यह वीर्य बढ़ानेवाली, पेशाब लानेवाली एवं वात, कफ और कीड़े नाश करने वाली है।

( ६१ ) सिरसके बीज, ढाकके बीज और मिश्री—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। मात्रा—६ माशेसे १ तोले तक। अनुपान—गायका दूध। इसके रोज खानेसे प्रमेह नाश होकर धातु गाढ़ी होती है। बड़ी अच्छी गरीबी दवा है। परीक्षित है।

( ६२ ) हल्दी, शहद, खैर और शीशेकी भस्म—इन चारोंको उचित मात्रा और अनुपातसे सेवन करनेसे निश्चय ही प्रमेह चला जाता है। परीक्षित है।

नोट—हल्दी २ माशे, खैर २ माशे, शीशेकी भस्म १ या २ रस्ती, इनको एक तोले शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपर से धारोष्ण दूध एक पाव पीओ।

( ६३ ) निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, त्रिफला और हल्दी को शहदमें



मिलाकर चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं, इसमें ज़रा भी शक नहीं ।  
“वैद्यरत्न” में लिखा भी है—

निश्चन्द्रमाभ्रकं भस्म सवराजनीरजः ।

मधुनालीढमचिरात्प्रमेहान्विनिवृन्तति ॥

नोट—इस नुसखे के उत्तम होनेमें ज़रा भी शक नहीं । अभ्रक भस्म १ से ४ रत्ती तक, त्रिफला ३ माशेसे १ तोले तक, हल्दी २ से ४ माशे तक और शहद १ तोले तक दे सकते हैं । रोगीको देखकर मात्रा तज्जीज करनी चाहिये ।

( ६४ ) अभ्रक भस्म एकसे चार रत्ती तक, १ माशे पीपर और ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे और ऊपरसे दूध पीनेसे, प्रमेह, श्वास, विष-रोग, कोढ़, वायु, पित्तकफ, कफक्षय, क्षतक्षय, संग्रहणी, पीलिया और भ्रम ये सब नाश होते हैं । परीक्षित है ।

( ६५ ) वायविडंग, सोंठ, गोलमिर्च और पीपर—इनको बराबर-बराबर ले पीस-छान लो । इसमेंसे बलाबल अनुसार ३ माशेसे ६ माशे तक चूर्ण लेकर, उसमें एक या दो रत्ती “अभ्रक भस्म” मिलाकर अन्दाज़से “शहद” भी मिला लो और चाट जाओ । इस नुसखेसे क्षय, पाण्डुरोग, ग्रहणी, शूल, आम, कोढ़, श्वास, प्रमेह, अरुचि, खाँसी, मन्दाग्नि और समस्त उदर रोग—पेट के रोग नाश होकर भूख बढ़ती है । परीक्षित है ।

( ६६ ) छोटो इलायची, गोखरू, और भुई आमला—इनको बराबर-बराबर ले पीस-छान लो । १ से ४ माशे तक इस चूर्णमें “अभ्रक भस्म” एक या २ रत्ती मिलाकर खाने और ऊपरसे “मिश्री-मिला गायका दूध” पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—भुई आमलेको भुई आँवरा या भूम्यामलकी कहते हैं । दवाके काममें इसके फल लेते हैं । मात्रा २ माशेकी है ।

( ६७ ) गिलोय और मिश्रीके ६ माशे चूर्णमें १ या २ रत्ती “अभ्रक भस्म” मिलाकर खाने और दूध पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।



नोट—कफके रोगोंमें अभ्रक भस्मको कायफल, पीपल और मधुके साथ देना अच्छा है। पित्तके रोगोंमें गायके दूध और चीनी के साथ देना हित है। धातुपातमें त्रिफलेके चूर्ण के साथ, स्तम्भनके लिए भाँगके साथ और धातु बढ़ानेको लौंग और शहदके साथ “अभ्रक भस्म” सेवन करनी चाहिये।

( ६८ ) दो रत्ती बंग भस्म और ४ रत्ती इलायचीका चूर्ण इन दोनोंको तोले भर या कम “शहद” में मिलाकर चाटनेसे और ऊपर से “हल्दीका चूर्ण-मिला आमलोंका काढ़ा” पीनेसे घोर प्रमेह भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—पहले वङ्ग भस्म और इलायचीके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाट जाना चाहिये। तीन तोले आमलोंका काढ़ा बनाकर और उसमें २ माशे “हल्दी” मिलाकर ऊपरसे पी जाना चाहिये। अगर रोगी बलवान् हो तो चार-पाँच तोले आमलोंके काढ़ेमें आधे तोले हल्दीका चूर्ण भी मिला सकते हैं।

( ६९ ) एक या दो रत्ती बंगभस्म तुलसीके पत्तोंके साथ अथवा शहद और मिश्रीके साथ खानेसे प्रमेह नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—ताकतके लिये बंगभस्म दूध या जायफलके साथ लेनी चाहिये। स्तम्भन के लिए बंगभस्म पानमें या भाँगमें अथवा कस्तूरीमें लेनी चाहिये। शरीर-पुष्टिके लिए तुलसीके पत्तोंके रसमें लेनी चाहिये। अगर लिङ्ग बढ़ाना हो तो लौंग, समन्दर फल और पानोंके रसमें बंगभस्म पीसकर, लिङ्ग पर लेप करना चाहिये।

सूचना—बंगभस्म, शीशाभस्म और अभ्रकभस्म प्रभृति बनाने की विधि आगे लिखी हैं।

( ७० ) बेलकी जड़ और गोखरू—दोनोंको समान-समान लेकर पीस-कूटकर छान लो। इसमेंसे १ तोले चूर्ण गरम पानामें भिगो दो। फिर, इसमें जरासी मिश्री मिलाकर रोज पीओ। इस नुसखेसे नया प्रमेह शीघ्र ही चला जाता है। परीक्षित है।

( ७१ ) बड़-वृक्षके फल लाकर छायामें सुखालो। सूख जाने पर कूट-पीसकर कपड़-छन कर लो। जितना यह चूर्ण हो, उतनी ही बढ़िया “मिश्री” पीसकर मिला दो और एक अमृतबान या बोटलमें



रख दो । इसमेंसे नौ-नौ माशे चूर्ण, सवेरे-शाम फाँक कर, ऊपरसे गायका दूध पीनेसे प्रमेह रोग नाश होकर, वीर्य पुष्ट और बलवान होता है । परीक्षित है ।

( ७२ ) बिदारीकन्द चार तोले, सेमलकी नई मूसली चार तोले, गोखरू दो तोले और कमलगट्टेकी गिरी ( हरी पत्ती निकाल कर ) दो तोले,—सबको लाकर, कूट-पीसकर, कपड़छन कर लो और जितना वजन इस चूर्ण का हो, उतनी ही “मिश्री” पीसकर इसमें मिला दो और रखदो । इसमेंसे १ तोले चूर्ण सवेरे और एक तोले शाम को फाँककर, ऊपरसे गायका दूध पीनेसे प्रमेह नाश होकर धातु गिरना और स्वप्नदोष होना आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

( ७३ ) आमले चार तोले, आमाहल्दी ४ तोले और मिश्री ४ तोले—इन तीनोंको मिलाकर और छानकर रख दो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण ३१ दिन खानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( ७४ ) तुलमरिहाँ ५ तोले ३ माशे, अकरकरा तीन तोले ६ माशे और मिश्री ८ तोले ६ माशे—इन तीनोंको पीस-कूटकर छान लो और बासनमें रख दो । इसमें से १० माशे चूर्ण लेकर, उसमें १ रत्ती “वङ्गभस्म” अथवा “मूँगेकी भस्म” मिला लिया करो और उस चूर्णको फाँक कर, “अधौटा गरम दूध मिश्री मिलाकर” ऊपरसे पीलिया करो । इस नुसखेके, सुबह-शाम, सेवन करनेसे, १ मासमें प्रमेह, नाश हो जाता और बेइन्तहा बलवीर्य बढ़कर शरीर तैयार हो जाता है । लाल मिर्च, खटाई, मिठाई, गुड़, तेल, दही और स्त्री-प्रसङ्गसे परहेज रखना चाहिये । परीक्षित है ।

( ७५ ) आध पाव त्रिफला और आध पाव गोखरू लाकर पीस-कूटकर छानलो । इस चूर्णमें से ६ माशेसे १ तोले तक चूर्ण ३ माशेसे एक तोले तक “शहद” में मिलाकर चाटनेसे पेशाबकी जलन समेत लाल, पीले और सफेद प्रमेह नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।



( ७६ ) प्रमेह-रोगी अगर चूहेको तीन-चार लेंडी दूध के साथ कुछ दिन सेवन करे, तो प्रमेहसे छुटकारा पा जाय ।

( ७७ ) मुनी हुई अलसी १ तोले और जेठी मधु या मुलेठी १ तोले, इन दोनों का काढ़ा कुछ दिन तक सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

( ७८ ) पारेके योगसे बनी हुई वज्र भस्म, रोज सवेरे, एक चाँवल भर मलाईके साथ खानेसे प्रमेह समूल नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

( ७९ ) फिटकरीको आगपर फुलाकर रख लो । उसमेंसे २ माशे फिटकरीको एक चीनीके प्यालेमें रखकर ऊपरसे पानी भर दो और घोल दो । फिर इस प्यालेमें पेशाब करो । जब पेशाबकी हाजत हो, तभी यही काम करो । ऐसा करनेसे प्रायः २३ सप्ताहमें प्रमेह चला जाता है । अगर किसी खानेकी दवाके साथ यह नुसखा काममें लाया जाय, तो और भी उत्तम हो । परीक्षित है ।

( ८० ) गिलोयका स्वरस २ तोले, श ६ ६ माशे, हल्दीका चूर्ण ६ रत्ती और सफेद चन्दनका बुरादा ३ रत्ती—इन सबको मिलाकर, सवेरे-शाम सेवन करनेसे प्रमेह रोग मय जलनके नष्ट हो जाता है । परीक्षित है ।

( ८१ ) त्रिफलेको पीसकर पानीमें घोल दो और उसी पानीमें “चने” भिगो दो । उन चनोंको रोज सवेरे खा जाओ । आपका प्रमेह आराग हो जायगा । पर कम-से-कम ३१ दिन तक ऐसा करो ।

( ८२ ) त्रिफला और त्रिकुटा लाकर पीस-कूटकर छान लो । इसमें से ६ माशे चूर्ण, ६ माशे “शहद”में मिलाकर चाटनेसे अथवा जलमें घोलकर पीनेसे प्रमेह आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

( ८३ ) तोले या दो तोले आमलोंका चूर्ण, शहदमें मिलाकर, २३ महीने, चाटनेसे प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

( ८४ ) एक तोले सौंफको, जलके साथ, भाँगकी तरह पीसकर,



एक मिट्टी या पत्थरके बर्तन पर कपड़ा रखकर, उसीमें सौंफकी लुगदी रख दो और ऊपरसे आध सेर या डेढ़ पाव जल डालकर छान लो । इस “सौंफ-जल” को सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

( ८५ ) नीमको भीतरी सफेद छाल पाँच तोले लाकर कुचल लो और रातको “गरम जल” में भिगो दो । सवेरे ही मलकर कपड़ेमें छान लो और जरा-सी “मिश्री” मिलाकर पी जाओ । इस नुसखेके कुछ दिन सेवन करनेसे गरमी रोग और प्रमेह दोनों आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( ८६ ) पकी हुई केलेकी गहर, आमलोंका स्वरस, मिश्री और शहद—इन सबको एकत्र मिलाकर, कुछ दिन सेवन करने से प्रमेह या पानी-समान धातुका गिरना आराम हो जाता है ।

नोट—पका हुआ केला और ६ माशे घी मिलाकर खानेसे प्रमेह या धातु गिरना आराम हो जाता है । अगर सरदी करे, तो माशे, दो माशे या तीन माशे शहद मिला लेना चाहिये । परीक्षित है ।

( ८७ ) अड़ूसेका स्वरस १ तोला, गुर्च या गिलोयका स्वरस १ तोला और मधु १ तोला—इन तीनोंको मिलाकर पीनेसे प्रमेह, खासकर सफेद धातुका गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

( ८८ ) अनारके फूलोंकी कली, कत्था और मिश्री—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण जलके साथ खानेसे सब प्रमेह आराम हो जाते हैं ।

( ८९ ) खाँड़ और इलायचीका चूर्ण मिलाकर खानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

( ९० ) चीनीके शर्बतमें बड़ी इलायचीका चूर्ण डालकर पीनेसे समस्त प्रमेह आराम हो जाते हैं ।

( ९१ ) शोधी हुई गन्धक “गुड़” में मिलाकर खाने और ऊपरसे दूध पीनेसे बीसों प्रमेह, २१ दिनमें, चले जाते हैं । गन्धककी मात्रा ४ माशे से १ तोले तक है । गुड़ बराबर लेना चाहिये । परीक्षित है ।



( ६२ ) दो माशे शुद्ध शिलाजीतको ज़रासे जलमें घोलकर पीने और ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( ६३ ) त्रिफलेका चूर्ण १ तोले, हल्दीका चूर्ण ३ माशे और शहद १ तोलेमें २ रत्ती “अभ्रक भस्म” मिलाकर खानेसे १ मासमें बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( ६४ ) गूलरके कच्चे फल खाकर, ऊपरसे “मिश्री” डालकर धारोष्ण दूध पीने से हृदयकी जलन, प्रमेह, पेशाबकी जलन और पेशाबके रोगोंमें विशेष लाभ होता है ।

( ६५ ) गूलरके सूखे फलोंका चूर्ण मिश्री डालकर, सवेरे ही, धारोष्ण दूधके साथ, १५ दिन पीनेसे, वीर्य-सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं ।

नोट—इस चूर्णको मिश्री मिलाकर ताज़ा पानीके साथ पीनेसे रक्त-प्रदर आराम हो जाता है ।

( ६६ ) दूधमें घी और शक्कर बराबर-बराबर मिलाकर और औटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और शर्करा-प्रमेह आराम हो जाते हैं ।

( ६७ ) अनन्तमूल, उशबा, सनाय, बड़ी हरड़, चोपचीनी, मुलेठी, सफ़ेद मूसली, असगन्ध और मुण्डी—हरेक एक-एक तोले, सौंफ़, मँजीठ, लाल चन्दन, सफ़ेद चन्दन, उन्नाब ( बीज निकालकर ) और गुलाबके फूल हरेक छै छै माशे; दालचीनी, केशर, इलायची और लौंग चार-चार माशे लाकर कूट पीस लो । फिर कुटो-पिसी दवाको दो सेर पानीमें, मिट्टीकी या कलईदार देगची या हांडीमें, मन्दाग्निसे पकाओ; जब आध सेर या चौथाई पानी रह जाय, कपड़ेमें छान लो और बोटलमें रख दो ।

इसमेंसे सवेरे-शाम दो-दो तो तोले काढ़ा पीनेसे सब तरह के खून-विकार, उपदंश—आतशक प्रमेह, पारेके दोष, कोढ़, वातरोग, पुराना



क्रब्ज, धातुकी कमजोरी, पुरुषत्व-हानि—नामर्दी और मन्दाग्नि आदि रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं ।

इस काढ़ेसे एक हफ्तेमें मल-मूत्रद्वारा दूषित मल निकलकर शरीर, की ग्लानि दूर होती है, दूसरे हफ्तेमें भूख बढ़ती है, तीसरे हफ्तेमें खून साफ होता है और चौथे हफ्तेमें नया खून पैदा होता है । इसके बाद रोग नाश होकर शरीर पुष्ट होता है । “वैद्य”में लिखा है, कि यह “सालसा” अनेक बारका परीक्षित है, कभी फेल नहीं होता । अगर इस सालसे का भभके द्वारा अर्क खींचकर बेचा जाय, तो बड़ा लाभ हो । जो अर्क न खींच सकें, वे इसे हर हफ्ते औटा-छानकर बोतलमें रख लें । अर्क जल्दी खराब नहीं होता तथा रंग-रूप और स्वादमें भी अच्छा होता है । अर्क खींचने-सम्बन्धी बातें चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागके पृष्ठ ५६६ में लिखी हैं । जब दवाएँ बढ़ानी हों, इसी हिसाबसे दूनी, चौगुनी या अठगुनी कर लेनी चाहियें ।

( ६८ ) पीपल-वृक्षकी छालके चूर्णको “मिश्री” मिलाकर, ४ या ५ रत्ती खानेसे पुराना प्रमेह और श्वेत प्रदर आराम हो जाते हैं ।

( ६९ ) पीपलके अंकुर, पीपलकी जड़की छाल, और पीपलके फलोंको आठ-आठ माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बनाओ । जब चौथाई पानी रह जाय, छान लो । शीतल होने पर “शहद और मिश्री” मिलाकर पीलो । इस काढ़ेसे धातु-सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं । यह नुस राजीकरण है ।

( १०० ) पीपल-वृक्षके कच्चे फल और अंकुर बराबर-बराबर लाकर और दोनोंके बराबर कच्ची “चीनी” मिलाकर, शीतल जलके साथ सेवन करनेसे पुराना प्रमेह, शुक्र या वीर्यकी क्षीणता और स्त्रियों का श्वेत-प्रदर रोग नाश होते हैं एवं धातु पुष्ट होती है ।

( १०१ ) कतीरा गोंद ६ माशे, कीकरका गोंद १ तोले, सफेद मूसली ४ तोले, वंशलोचन ४ तोले और छोटी इलायचीके दाने २



तोले—इन सबको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो । फिर चूर्णके वजनके बराबर देशी मिश्री पीस-छानकर मिला दो ।

इसमेंसे सवेरे-शाम ६६ माशे चूर्ण एक तोले शहदमें मिलाकर खाने और धारोष्ण दूध पीनेसे २१ दिनमें स्वप्नदोष और प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( १०२ ) छोटी इलायचीके बीज ६ माशे, बंसलोचन ६ माशे; दक्खनी गोखरू ६ माशे, तालमखाना १ तोले, ईसबगोलकी भूसी २ तोले, चिकनी सुपारी १ तोले, सफ़ेद जीरा २ तोले, हज़रत वेर १ तोले, बेलगिरी २ तोले और सालम मिश्री १ तोले—इनको कूट-पीस कर छान लो । फिर चूर्णसे आधी देशी मिश्री पीस-छान कर मिला दो ।

इसमें से ६६ माशे चूर्ण एक-एक तोले शहदमें चाटकर; ऊपर से पावभर धारोष्ण दूध पीनेसे, २१ दिनमें स्वप्नदोष और प्रमेह आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( १०३ ) सफ़ेद कटेरीके पञ्चाङ्गका चूर्ण १॥ तोले और बबूलकी अन्तर्छालका चूर्ण १॥ तोले तथा पिसी हुई देशी मिश्री २॥ तोले—सबको मिलाकर रखलो । इसमेंसे नित्य सवेरे ही तीन-तीन माशे चूर्ण सेवन करनेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर और स्वप्नदोष आदि रोग दूर होते हैं ।

( १०४ ) गिलोयके काढ़ेमें मिश्री मिलाकर, लगातार कुछ दिन पीनेसे, प्रमेहमें जो लाभ होता है वह बरसोंतक अनेक कीमती दवाएँ खानेसे नहीं होता ।

नोट—गिलोयको कूटकर, रातके समय, एक कोरी हाँडीमें, शीतल जल डालकर भिगो दो । सवेरे ही भल-छान कर और मिश्री मिलाकर पीनेसे पेशाबकी जलन, चिनग और पीप गिरना बन्द हो जाता है । मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और सोझाक पर यह रामवाण नुसखा है ।

( १०५ ) सफ़ेद कटेरीका रस ६ माशे, गिलोयका रस १॥ तोले



और शहद ६ माशे—तीनोंको मिलाकर ११ दिन तक, सबेरे ही, सेवन करनेसे प्रमेह, श्वास, खाँसी और सूजन ये रोग नाश हो जाते हैं ।

( १०६ ) कच्चा दूध १ पाव, पानी १ पाव और मिश्री २ तोले—सबको मिलाकर पीनेसे प्रमेहमें लाभ होता है ।

( १०७ ) वायविड़ङ्ग, हल्दी, मुलेठी, सोंठ और गोखरू—इनको पाँच-पाँच माशे लेकर काढ़ा पकाओ और छान लो । फिर शीतल होनेपर “शहद” मिलाकर पीओ । इस काढ़ेसे प्रमेह आराम होजाता है ।

( १०८ ) निर्मलीका तीन माशे चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपरसे पाव-भर “माठा” पीओ । एक महीने तक इस दवाके सेवन करनेसे प्रमेह इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह रामसे रावण मारा गया ।

नोट—निर्मली सफ़ेद रंगकी और बकरीकी मैंगनी-जैसी होती है । पानीमें पीसकर गदले जलमें धोल देनेसे जल नितर कर साफ़ हो जाता है ।

( १०९ ) शुद्ध आमलासार गंधक २ रत्ती, एक तोले पुराने गुड़ में मिलाकर खाने और ऊपरसे धारोष्ण दूध पीनेसे प्रमेह और पिड़िका नाश हो जाते हैं ।

गन्धकं गुडसंयुक्तं कर्षं मुक्त्वा पयः पिबेत् ।

विंशतिस्तेन नश्यन्ति प्रमेहाः पिटिका अपि ॥

( ११० ) हरे आमलों का रस १ तोले, हल्दीका चूर्ण ३ माशे और शहद ४ माशे—इनको मिलाकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है ।

( १११ ) हरड़, बहेड़ा, आमला, दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु और गिलोय—इनका काढ़ा शीतल होनेपर “शहद” डालकर पीनेसे प्रमेह जाता रहता है ।

( ११२ ) शतावरका स्वरस एकसे दो तोले तक, गायके आध पाव दूधमें मिलाकर पीनेसे प्रमेह आराम हो जाता है ।

( ११३ ) बड़ी इलायचीका तीन माशे चूर्ण शहद में मिलाकर चाटनेसे प्रमेह आराम हो जाता है ।



( ११४ ) ढाकके एक तोले फूलोंको पानीमें पीसकर और ६ माशे मिश्री मिलाकर एवं पानीमें छानकर पीनेसे प्रमेह अवश्य जाता रहता है ।

( ११५ ) हज़रत वेरको गुलाबजलमें ३ दिन तक खरल करके रख लो । इसमेंसे चार रत्तीसे १ माशे तक चूर्ण घी या शहदमें मिलाकर सवेरे-शाम, चाटनेसे नया और पुराना प्रमेह चला जाता है ।  
परीक्षित है ।

नोट—हज़रतवेर हाऊवेरका भेद है ।

( ११६ ) चोपचीनी १ तोले, त्रिफला १॥ तोले, दक्खनी गोखरू १ तोले, सफेद इलायचीके दाने ६ माशे, सालम मिश्री १ तोले, ताल-मखाना १ तोले, मूँगा-भस्म ६ माशे और मिश्री ६ तोले—इन सबको पीस-छान लो ।

इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण छै-छै माशे शहदमें मिलाकर, सवेरे-शाम, चाटनेसे १०० मेंसे ६० आदमियोंका प्रमेह आराम होता है ।  
पर-परीक्षित है ।

( ११७ ) गोखरूके काढ़ेमें शहद या मिश्री डालकर पीनेसे प्रमेह आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

( ११८ ) गिलोयको पानीमें पीस-छानकर और शहद मिलाकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाता है ।

## अमीरी नुसखे

### रस-चिकित्सा

( ११९ ) “चाँदीकी भस्म” चार चाँवलसे १ रत्ती तक—इलायची १ माशे, तेजपात १ माशे और दालचीनी १ माशे—इन तीनोंके



तीन माशे चूर्णमें मिलाकर खानेसे बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं । इसमें ज़रा भी शक नहीं ।

( १२० ) बबूलकी छाल, कटहलकी छाल और महुएकी छाल—इनको ६-६ माशे लेकर, जलके साथ पीस लो और उसमें रत्ती आधी रत्ती “चाँदीकी भस्म” मिलाकर खाओ । निश्चय ही सब प्रमेह नष्ट हो जायँगे ।

( १२१ ) गूलरके फलोंका चूर्ण १ तोले लेकर, उसमें १ रत्ती “तांबा भस्म” रखकर खानेसे बीसों प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं ।

( १२२ ) तुलसीके पत्तोंके साथ “बङ्ग भस्म” खानेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

नोट—तुलसी सफ़ेद और काली दो तरहकी होती हैं । गुणमें दोनों समान हैं । मात्रा—१ माशेकी है ।

( १२३ ) गोरखमुण्डी और गोखरूके रसमें मिश्री मिलाकर, उस रसमें “बङ्ग भस्म” खानेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं । समय—सवेरे सेवन करना चाहिये ।

नोट—गोरखमुण्डी छोटी और बड़ी दो तरहकी होती हैं । मात्रा दो माशे की है ।

( १२४ ) पान और मिर्चोंके साथ “लोहा भस्म” खानेसे प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

( १२५ ) त्रिफलेके चूर्णके साथ “लोहा भस्म” खानेसे बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

( १२६ ) पानके साथ “जस्ता भस्म” खानेसे प्रमेह नाश होजाते हैं ।

( १२७ ) शहद, पीपल और शिलाजीतमें १ या २ रत्ती “अभ्रक भस्म” मिलाकर खानेसे निश्चय ही बीसों प्रमेह शान्त हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( १२८ ) इलायची, गोखरू, मुई-आमला, मिश्री और गायके दूध के साथ रत्ती-भर “अभ्रक भस्म” खानेसे प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।



( १२६ ) गुरुच और मिश्रीके साथ “अभ्रक भस्म” खानेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( १३० ) तुलसीके पत्तों या शहद और मिश्रीके साथ रत्ती-भर “वज्र भस्म” खानेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( १३१ ) जायफल, जावित्री और लौंगके साथ “वज्र भस्म” खाने से धातु-रोग जाते रहते हैं ।

### १३२ प्रमेह-कुठार रस ।

छोटी इलायचीके बीज	...	...	...	३ माशे
भीमसेनी कपूर	...	...	...	३ ”
मिश्री	...	...	...	३ ”
आमले	...	...	...	३ ”
जायफल	...	...	...	३ ”
गोखरू	...	...	...	३ ”
सेमलकी छाल	...	...	...	३ ”
शुद्ध पारा	...	...	...	३ ”
शुद्ध गन्धक	...	...	...	३ ”
वज्र भस्म	...	...	...	३ ”
लोह भस्म	...	...	...	३ ”

बनानेकी तरकीब—पहले पारे और गन्धकको खरलमें डालकर खूब घोटो । जब कजली हो जाय, तब उसमें वज्र-भस्म और लोहा-भस्म मिलाकर घोटो । इन चारोंके अलावा बाक़ी दवाओंको हिमामदस्तेमें कूट-पीसकर कपड़-छन करलो । उसके बाद इस चूर्णको भी उसी खरल में डालकर फिर घोटो । जब सब एक-दिल हो जायँ, शीशीमें भरकर रख दो । यही “प्रमेह-कुठार रस” है ।



सेवन विधि—इस रसमें से १ माशे या १॥ माशे रस, छैः माशे यम-तोले भर शहदमें मिलाकर चाटनेसे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं ।

## १३३ योगराज गुटी ।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, कालीमिर्च, भुनी होंग, अजमोद, सिरस, सफेद जीरा, स्याह जीरा, रेणुकाके बीज, इन्द्रजौ, पाद, बाय-बिड़ङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारङ्गीकी जड़, वच, मरोड़फली, तेजपात, देवदारु, पीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सेंधानोन, छोटी इलायची, गोखरू, हरड़, धनिया, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार और तिल—इन सबको एक-एक तोले लेकर, खूब महीन कूट-पीसकर छान लो । इसके बाद, इस चूर्णका जितना वज्रान हो उतनी ही “शुद्ध भैंसा मूगल” लो । पीछे सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे “घी” दे-देकर, खूब कूटो । जब एक-दिल हो जाय, चने या बेरके समान गोलियाँ बनाकर, चिकने बर्तनमें, रख दो ।

इन “योगराज गुटियों” को अलग-अलग अनुपानोंके साथ सेवन करनेसे शुक्र-दोष, प्रमेह, वायुरोग, आमवात, मृगी, वातरक्त, कोढ़, दुष्टव्रण, बवासीर, तिल्ली, वायुगोला, उदर-रोग, अफरा, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, अरुचि नाभिशूल, कृमिरोग, क्षय, हृद्रोग, उदावर्त और भगन्दर रोग नाश हो जाते हैं ।

मात्रा—तीन माशेसे इस दवाको शुरू करें और हर सातवें दिन इतनी ही बढ़ाकर एक तोले तक पहुँचा दें । वैसे तो इसकी मात्रा जवान को ६ माशे की है ।

पथ्यापथ्य—इस दवाको सेवन करनेमें मैथुन और खाने-पीनेका कोई परहेज नहीं । अर्थात् इन गोलियोंके सेवन करने वालोंको खानपान और स्त्री-भोगकी कोई क़ैद नहीं । मरीज इच्छानुसार आहार-विहार कर सकता है ।



## योगराज गुटीकी सेवन विधि ।

<u>रोगके नाम ।</u>	<u>अनुपान ।</u>
सब तरहके वात रोगोंमें	रास्नाका काढ़ा
प्रमेहमें	दारुहल्दीका काढ़ा
वातरक्तमें	गिलोयका काढ़ा
पीलियामें	गोमूत्र
मेद-वृद्धि ( मुटाई रोगमें )	शहद
सफेद या काले कोढ़में	नीमका काढ़ा
शूलमें	मूलीका काढ़ा
चूहेके विषमें	पादलकी जड़का काढ़ा
उग्र नेत्र-रोगमें	त्रिफलाका काढ़ा
समस्त उदर रोगोंमें	पुनर्नवादि काढ़ा

## गूगल शोधनेकी विधि ।

किसी कलईदार देगचीमें अन्दाज़से त्रिफला और पानी भर दो और ऊपरसे कपड़ा बाँध दो । उस कपड़े पर “भैंसा गूगल” कुचलेकर रख दो और फिर ढक्कन बन्द करके, नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगाओ । इस तरह गूगल शुद्ध हो जायगी । एक सेर गूगल शोधनेको १ सेर त्रिफला कूटकर डाल दो और पानी ५-६ सेर डालो ।

## गूगल शोधनेकी दूसरी विधि ।

एक पाव त्रिफला और आध पाव गिलोयको अथकचरा करके, एक बर्तनमें डालदो और ऊपरसे तीन-चार सेर पानी डालकर सतको भिगो दो । सवेरे ही उसे आगपर चढ़ाकर काढ़ा बनाओ । जब आधा पानी रह जाय, उतारकर काढ़ा छान लो ।

इस काढ़ेको कलईदार या लोहेकी कढ़ाहीमें रखकर आगपर चढ़ादो और



कढ़ाहीके दोनों कुन्धों या कानोंमें एक लम्बी लकड़ी आड़ी पिरो दो एक साफ़ कपड़ेमें एक पाव भैंसा गूगल बाँधकर, पोटली सी बना लो और उस पोटलीको उसी लकड़ीमें बाँधकर, कढ़ाहीमें लटका दो। मगर इस तरह लटकाओ कि, गूगल काढ़ेके भीतर रहे। नीचे मन्दी-मन्दी आग लगाओ। हाँ, पोटलीको भोलीकी तरह रखना, यानी उसका मुँह खुला रखना। हलवाईयोंकी-सी लोहेकी डोरी (जिससे वे खाँड़को निकालते हैं) से उसी कढ़ाहीमेंसे काढ़ा भर-भरकर, उस गूगलवाली थैलीमें डालो और कलछीसे या भरसे गूगलको चलाते भी रहो। दस बारह दफ़ा काढ़ा थैलीमें डालनेसे सारी गूगल कढ़ाहीमें छन-छनकर निकल जायगी। जब कपड़ा खाली हो जाय, कपड़ेको निकाल लो। उसमें गूगलका मैल रह जाय, उसे फेंक दो। कढ़ाहीमें जो गूगल मिला काढ़ा रहेगा, उसे धीरे-धीरे धार बाँधकर निकाल लो। मैल-मिट्टी कढ़ाहीमें नीचे रह जायगा। नितारे हुए काढ़ेको फिर आगपर चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आग लगाओ और भरसे चलाते रहो, ताकि गूगल जले नहीं। जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। शीतल होनेपर, हाथोंमें “धी” चुपड़कर गूगलकी गोलियाँ बनाकर सुखालो। यह शुद्ध गूगल है। यही सब दवाओंमें डालने योग्य है। अगर कढ़ाही साफ़ न हो, तो उसे गायके गोबरसे साफ़ कर लो। गोबरसे गूगल फ़ौरन छूट जायगी।

### १३४ प्रमेहारि शर्बत ।

बबूलकी छाल, पीपरके पेड़की छाल, महुएकी छाल, कटहलकी छाल, सफ़ेद चन्दनका बुरादा और गिलोय,—इन पाँचोंको आध-आध पाव लेकर जौकुट करलो और रातको मिट्टीके या कलईदार बर्तनमें, दस सेर जल डालकर, भिगो दो। सवेरे उसे कलईदार कढ़ाहीमें डाल कर मन्दाग्निसे पकाओ। जब चौथाई जल रह जाय, काढ़ा छान लो। उस काढ़ेमें १ सेर “मिश्री” मिलाकर, फिर आगपर चढ़ाओ और दूध मिले पानीके छिंटे दे-देकर मैल साफ़ करलो। जब शर्बतकी चाशनी हो जाय, जमीन पर बूँद टपकानेसे न फैले, उतार लो और छानकर बोतलोंमें भर दो। सेवन-विधि—इसमेंसे १ या १॥ तोले शर्बत रोज़ चाटनेसे पित्तज प्रमेह निश्चय ही शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।



## १३५ प्रमेह-मर्दन रस ।

शुद्ध पारा	...	...	...	...	२ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	...	...	४ तोले
त्रिफला	...	...	...	...	१२ तोले
त्रिकुटा	...	...	...	...	१२ तोले
नागरमोथा	...	...	...	...	१२ तोले
बायबिडङ्ग	...	...	...	...	१२ तोले
चीतेकी छाल	...	...	...	...	१२ तोले
शुद्ध लोह-कीट	...	...	...	...	६० तोले

बनानेकी विधि—पहले गन्धक और पारेको खूब खरल करो । जब काजल-सी कजली हो जाय, रख लो । त्रिफला, त्रिकुटा, नागर-मोथा, बायबिडङ्ग और चीतेकी छालको कूट-पीसकर कपड़-छन कर लो । लोह-कीटको भी पीस-छान लो । शेषमें पारे और गन्धककी कजली, त्रिफला प्रभृतिके चूर्ण और लोह-कीट सबको खरलमें डाल खूब घोटो । जब घुट जायँ, शीशीमें रख दो । यही “प्रमेह-मर्दन रस” है ।

रोग नाश—इस रसके सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र, बीसों प्रमेह, मधुमेह, पथरी और आठों शुक्रदोष नाश होते तथा बूढ़ा भी जवान हो जाता है ।

मात्रा—यह नुसखा वृन्दका है । उन्होंने एक तोलेकी मात्रा लिखी है, पर हमारी रायमें आजकल इतनी मात्रासे लाभके बदले हानि ही होगी, अतः बलाबल अनुसार एक या दो माशेसे आरम्भ करना चाहिये । अगर उतनेसे कोई उपद्रव न हो, निर्विघ्न पच जाय, तो तीन या चार माशेसे अधिक न लेना चाहिये । यानी बलवान-से-बलवानको २।३ या ४ माशे रस काफी होगा । हमारा आज्ञामूदा



नहीं, पर बृन्दके नुसखे अक्सर अचूक होते हैं। फिर इसमें जो चीजें हैं, उनके ऊपर वचार करनेसे मालूम होता है, कि यह नुसखा अवश्य ही शीघ्र फलप्रद होगा ।

नोट—पारा और गन्धक शोधनेकी विधि “चिकित्सा-चन्द्रोदय” दूसरे भागके पृष्ठ ५७५-८० में देखिये और लोहकीटके लिए तीसरे भागके पृष्ठ ४०१-३ देखिये ।

### १३६ रतिवल्लभ चूर्ण ।

सकाकुल मिश्री	...	...	...	८ तोले
बहमन सफ़ेद	...	...	...	२ तोले
बहमन सुर्ख	...	...	...	२ तोले
सालम मिश्री	...	...	...	२ तोले
दालचीनी	...	...	...	२ तोले
सफ़ेद मूसली	...	...	...	४ तोले
स्याह मूसली	...	...	...	४ तोले
छुहारे	...	...	...	४ तोले
छोटी इलायचीके बीज	...	...	...	२० माशे
गोखरू	...	...	...	२० माशे
गावजुबाँ	...	...	...	२० माशे
मिश्री	...	...	...	३३ तोले

इन सब चीजोंको पीस-कूटकर छान लो और बोतलमें भरकर रखदो। इसके सेवनसे दिल-दिमागमें ताक़त आती, शरीर तैयार होता, धातु पुष्ट और गाढ़ी होती तथा स्त्री-प्रसंगकी इच्छा बेतहाशा बढ़ जाती है। यह चूर्ण हमने कितने ही रोगियोंको दिया और हरबार सफलता मिली। इसकी जितनी प्रशंसा करें थोड़ी है। जिनके पेशाबमें वीर्य जाता हो, जिनकी धातु पतली हो, वे इसे अवश्य सेवन करें, उनकी इच्छा पूरा होगी। परीक्षित है।



सेवन-विधि—इसकी मात्रा जवानको तोले-भर की है। सवेरे ही, भोजनसे पहले, एक खुराक चूर्ण खाकर, ऊपरसे गायका थन-दुहा धारोष्ण दूध पीना चाहिये ।

### १३७ प्रमेहघ्न चूर्ण ।

नागौरी असगन्ध और विधारा—दोनों बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूटकर छानलो। सवेरे ही इसमेंसे ६ माशे चूर्ण फाँककर, गायका दूध मिश्री मिला कर पीनेसे प्रमेह आदि धातुरोग नाश होकर, शरीर खूब बलवान और मोटा-ताजा होता है। कम-से कम ४० दिन सेवन करना चाहिये। वृद्धोंके लिये तो अमृत ही है। परीक्षित है।

### १३८ वसन्तकुसुमाकर रस ।

सोनेकी भस्म	....	...	...	१ तोले
सौ आँचकी निश्चन्द्र अभ्रक भस्म	...	...	...	१ तोले
फौलाद भस्म या कान्तिसार	...	...	...	१॥ तोले
बंगेश्वर	...	...	...	१॥ तोले
मूँगेकी भस्म	...	...	...	२ तोले
मोती भस्म	...	...	...	२ तोले

बनानेकी विधि—इन छत्रों भस्मोंको बढ़िया खरलमें—जिसमें पत्थर न धिसे—डालकर खूब घोट लो। पीछे, इसमें नीचे लिखी चीजोंकी एक-एक भावना दोः—

( १ ) गायका दूध ।

( २ ) अड़ूसेका स्वरस ।

( ३ ) ताजा हल्दीका स्वरस ।

( ४ ) केलेकी जड़का स्वरस ।



( ५ ) गुलाबके फूलोंका स्वरस ।

( ६ ) मालतीके फूलोंका स्वरस ।

( ७ ) कस्तूरी ।

( ८ ) शुद्ध कपूर ।

( ९ ) तुलसीकी पत्तियोंका स्वरस ।

इनमेंसे प्रत्येककी, एक दिनमें एक, भावना देना अच्छा है । अगर ताजा हल्दी न मिले, तो सूखी हल्लीको पीसकर काढ़ा बना लेना चाहिये और उसीसे भावना देनी चाहिए । गुलाब के फूलोंके स्वरसके बजाय, बढ़िया “अर्क गुलाब”की भावना भी दे सकते हो । भावना देनेके बाद चूर्णको सुखाकर, साफ शीशीमें भरकर रखदो । यही “वसन्त-कुसुमाकर रस” है । प्रमेह नाश करने में यह प्रसिद्ध है । कोई अभाग्य ही आराम नहीं होता, वरना यह सबको आराम करता है ।

सेवन-विधि—शास्त्र में लिखा है—

गुञ्जा द्वयंददीतास्य मधुनासर्वमेहनुत् ।

सिताचन्दन संयुक्श्चाम्लपित्तादि रोगजित् ॥

इस वसन्तकुसुमाकर रसको, १ या २ अथवा आधी या चौथाई रत्तीकी मात्रासे, शहदके साथ सेवन करनेसे समस्त—बीसों—प्रमेह आराम हो जाते हैं और मिश्री तथा सफेद चन्दनके साथ सेवन करने से अम्लपित्तादि रोग नाश हो जाते हैं ।

परीक्षासे मालूम हुआ है कि, इसको “शहद”के साथ सेवन करनेसे कफ-वातसे उपजे प्रमेह नाश हो जाते हैं । मिश्री और चन्दनके साथ या अर्क गुलाब, मिश्री और सफेद चन्दनसे बने “शर्बत चन्दन” के

❀ किसी चीज़की कजलीमें या किसी दवा की लुगदी या कल्कमें किसी दवाके काढ़े या स्वरसको डालकर मलने और सुखालेनेको “भावना देना” कहते हैं । जैसे; ऊपरकी मिली हुई मसोंको दूधमें मलकर सुखा लो । बस, यही एक भावना हुई ।



साथ सेवन करनेसे पित्तज प्रमेह और अम्लपित्तादि रोग नाश हो जाते हैं । जिनका प्रमेह किसी दवासे न जाय, वे इसे जरूर सेवन करें । ताकत वर और सर्द-मिज्जाज वालेको दो रत्ती भी पच जाता है—गरमी नहीं करता । गरम-मिज्जाज वालेको चौथाई रत्तीसे शुरू करना चाहिये ।

नोट—सोना भस्म; फौलाद भस्म, और मोती भस्म आदि बनानेकी विधि इसी पुस्तकके शेषमें देखें ।

## १३६ धातुरोगान्तक चूर्ण ।

मिश्री	६ छटाँक	१ तोले	८ माशे
छुहारे	७ ”	१ ”	८ ”
रूमी मस्तगी	० ”	२ ”	४ ”
सफेद मूसली	० ”	२ ”	४ ”

बनानेकी विधि—सब दवाओंको अलग-अलग कूट-पीस कर छानो । जब चारों अलग-अलग कुट जायँ, काँटेसे तोल-तोल कर मिला दो । सबको एक साथ कूटनेसे यह दवा क्या—कोई भी दवा अच्छी नहीं बनती ।

सेवन-विधि—इस चूर्णकी मात्रा दो से साढ़े तीन तोले तक है । इसे सन्ध्या समय फाँककर, ऊपरसे गायका अघौटा दूध पीना चाहिये । अगर न भावे, तो जरासी मिश्री मिला लेनी चाहिये । अगर दूधके औँटनेके समय ६ माशे घी मिला दें और शीतल हो जाने पर उसमें ३ माशे “मधु” भी मिला दें और पी जावें, तो क्या कहना ? पर यह अनुपान बलवानोंके लिए अच्छा है । हमने इसे दोनों तरह देकर खूब चमत्कार देखा है । कोई ३०-३५ बरससे हम इसे आजमा रहे हैं । हमें यह नुसखा किसी आधुनिक ग्रन्थसे मिला था । नाम हमें याद नहीं और जहां यह नुसखा हमारी परीक्षित नुसखोंकी पुस्तकमें लिखा है,



किसी भी नुसखेका असली उद्गम-स्थान नहीं लिखा । नक़ल करते समय, हमें यह खयाल नहीं था कि शायद हम कभी कोई वैद्यक सम्बन्धी ग्रन्थ लिखेंगे ।

## १४० लोभ्रासव ।

पठानी लोघ	...	...	१ तोला
कपूर	...	...	१ "
पोहकरमूल	...	...	१ "
छोटी इलायची	...	...	१ "
मूर्वा ( मरोड़ली )	...	...	१ "
बायबिडंग	...	...	१ "
त्रिफला	...	...	१ "
अजवायन	...	...	१ "
चव्य	...	...	१ "
प्रियंगूमूल	...	...	१ "
चिकनी सुपारी	...	...	१ "
इन्द्रायणकी जड़की छाल	...	...	१ "
कड़वा चिरायता	...	...	१ "
कुटकी	...	...	१ "
भारङ्गी	...	...	१ "
तगर	...	...	१ "
चीतेकी जड़की छाल	...	...	१ "
पीपरामूल	...	...	१ "
मीठा कूट	...	...	१ "
अतीस	...	...	१ "
ईख	...	...	१ "
पादी	...	...	१ "



## प्रमेह-वर्णन ।

८७

कालीमिर्च	...	...	१ तोला
मोथा	...	...	१ ”
इन्द्रजौ	...	...	१ ”
नागकेशर	...	...	१ ;,
अर्जुन वृक्षकी छाल	...	...	१ ”
जवासा	...	...	१ ”

बनानेकी तरकीब—इन सब दवाओंको जौकुट करके, रातके समय, बारह सेर पानीमें डालकर, मिट्टीके बासनमें, भिगो दो। सवेरे ही कलर्ददार बर्तनमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो और डेढ़ सेर “शहद” मिलाकर किसी चीनीके बासन या घीके चिकने बासनमें रखकर, ऊपरसे ढक्कन देकर, ढक्कनकी सन्धियोंको मुलतानी मिट्टी और कपड़ेकी तहें देकर बन्द कर दो, जिससे ज़रा भी साँस न रहे। इसे १५ दिन इसी तरह रक्खा रहने दो—छेड़ो मत। १५ दिन बाद खोलकर कपड़ेमें छान लो और बोतलमें भर दो। यही “लोध्रासब” है।

रोगनाश—

लोध्रासवोऽयं कफपित्तमेहान्निग्रं निहन्याद्विप्लप्रयोगात् ।  
षाण्ड्वामयार्शास्य रूचिं ग्रहण्या दोषं वलासं विविधं च कुष्टम् ॥

इस लोध्रासवसे “कफपित्त जनित” प्रमेह नाश होते हैं। इनके सिवा पीलिया, बवासीर, अरुचि, ग्रहणी और कोढ़ प्रभृति आराम होते हैं। हम इतन रोगोंपर आजमा नहीं सके, पर इसमें शक नहीं कि कफ-पित्तज प्रमेह-रोगी इससे कई साफ आराम हो गये।

मात्रा—६ माशेसे दो तोले तक ।

समय—सवेरे-शाम ।

नोट—बहुतसे वैद्य कहते हैं, इससे वातज बवासीर भी आराम होती है।  
वैद्य लोग अज़माकर देख लें। वातज बवासीरका आराम होना सम्भव है।  
इन्द्रायण दो तरहकी होती हैं:—(१) बड़ी (२) छोटी। एक इन्द्रायणके



फल लाल नारङ्गीके जैसे होते हैं और दूसरीके पीले फल होते हैं । पर फूल सफेद होते हैं । इसके फलका गूदा दवाके काममें आता है । मात्रा ६ रत्तीसे २ माशे तक है । बङ्गलामें बड़ीको “बढ़वाकाल” और छोटीको “राखालशशा” कहते हैं । यह उपविष और घातक है ।

## १४१ सुधारस ।

बङ्ग भस्म	...	...	६ माशे
छोटी इलायची	...	...	६ माशे
बंसलोचन	...	...	६ माशे
सत्त गिलोय	...	...	६ माशे
शिलाजीतका सत्त	...	...	६ माशे
अवीध मोती	...	...	२ माशे
चाँदीके वर्क	...	...	२४ नग

इन सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे अर्क गुलाब बढ़िया दे-देकर घोटो । गिरती धातुको रोकनेमें यह रस रामवाण है । अनेक प्रमेह रोगी इससे आराम हुए हैं । जिसे दिया वही चङ्गा हो गया । धातु-रोगी इस “सुधारस”को अवश्य सेवन करें । सचमुच ही यह यथा नाम तथा गुण है । परीक्षित है ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ४ रत्तीसे १ माशे तक है । एक मात्रा खाकर ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पीना चाहिये ।

## १४२ प्रमेह सुधा ।

मोतीकी सीपीकी भस्म	...	...	४ तोले
सफेद मूसली दिल्लीकी	...	...	१० ”
तज सूरती	...	...	१० ”

इन तीनोंको कूट-पीस और छानकर शीशीमें रख दो । इसके



४० दिन सेवन करनेसे निश्चय ही बीसों प्रमेह नाश हो जाते हैं ।  
परीक्षित है । हमने कितनी ही बार आज्ञामांश की है ।

नोट—सीप कई प्रकारकी होती हैं । मोतीकी सीप खरीदनेमें धोखा मत खाना । मोतीकी सीप प्रायः ७-८ इञ्च लम्बी और ५ या ७ इञ्च चौड़ी होती है । तथा दो अंगुलके करीब मोटी होती है । सीपके भीतर चेचकके दाने-जैसे कितने ही दाने उमरे रहते हैं, उन्हींमें मोती रहते हैं । मोती निकाल लिये जाते हैं, सीप रह जाती है । वही मोतीकी सीप लेनी चाहिये और उसकी भस्म कर लेनी चाहिये । उसकी विधि इसी पुस्तकमें आगे लिखी है ।

### १४३ सेमल पाक ।

सेमलकी छाल	...	...	511
इलायची के दाने	...	...	५ तोलें
दालचीनी	...	...	५ "
तेजपात	...	...	५ "
लौंग	...	...	५ "
जायफल	...	...	५ "
नागकेशर	...	...	५ "
नागरमोथा	...	...	५ "
धनिया	...	...	५ "
बंसलोचन	...	...	५ "
सोंठ	...	...	५ "
पीपर	...	...	५ "
मिर्च	...	...	५ "
असगन्ध	...	...	५ "
हरड़	...	...	५ "
फौलाद भस्म	...	...	५ "
गुड़	...	...	52 सेर
दूध	...	...	54 सेर



बनानेकी विधि—पहले सेमलकी छालको पीसकर दूधमें मिला दो और औटाओ, जब खोआ हो जाय, रख दो। इलायचीसे हरड़ तककी सब दवाओंको कूट-पीसकर छान लो। गुड़को कढ़ाहीमें डाल और थोड़ा पानी देकर औटालो—जब गाढ़ा-सा हो जाय, उसे उतार लो और फौरन ही खोआ, दवाओंका चूर्ण और कौलाद-भस्म मिलाकर खूब एक-दिल करो और थालीमें जमादो या तोले-तोले-भरके लड्डू बना लो।

सेवन-विधि—एक लड्डू रोज़ खानेसे समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं। रामवाण दवा है। परीक्षित है।

नोट—अगर किसी वजहसे इतना पाक न बना सको, तो सब चीज़ोंको आधी-आधी ले लेना या चौथाई-चौथाई ले लेना। जब लाभ दीखे और बना लेना। ४० दिन खानेसे गँवारको भी लाभ दीखने लगता है।

## १४४ किशोर गुग्गुल

गिलोय २ सेर, गुग्गुल भैंसा १ सेर और त्रिफला १ सेर—इन तीनोंको कूट-कुचलकर एक वर्तनमें डालकर, ऊपरसे १६ सेर पानी मिला दो और चूल्हेपर चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब आठ सेर पानी रह जाय, उतारकर काढ़ेको छान लो। छने हुए काढ़ेको फिर आगपर रखकर पकाओ। जब गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें सोंठ, मिर्च, पीपर, बायबिडङ्ग और त्रिफला दो-दो तोले लेकर पीस-कूट कर मिला दो। इसके बाद निशोथ एक तोले, दन्तीकी जड़ एक तोले और गिलोय ४ तोलेको भी पीस-कूट कर उसीमें मिला दो। पकते समय भर प्रभृतिसे चलाते रहो, जिससे दवा पैदेमें न लगे। जब गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो। हाथोंमें “घो” चुपड़ कर तन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इस “किशोर गुग्गुल”के सेवन करनेसे सूजन, ब्रण, गोला, कोढ़, उदर-रोग, वातरक्त, खाँसी, मन्दाग्नि-पीलिया और प्रमेह-रोग नाश हो जाते हैं।



## १४५ गुग्गुल आदि बटी ।

१-शुद्ध गुग्गुल	...	...	...	१ पाव
२-सोंठ	...	...	...	२ तोला
३-गोल मिर्च	...	...	...	२ ”
४-हरड़	...	...	...	२ ”
५-बहेड़ा	...	...	...	२ ”
६-आमला	...	...	...	२ ”
७-हल्दी	...	...	...	२ ”
८-रुमी मस्तगी	...	...	...	२ ”
९-सालिम मिश्री	...	...	...	२ ”
१०-इलायचीके दाने	...	...	...	२ ”
११-पीपल	...	...	...	२ ”

गुग्गुलको पहले शोध लो । शोधो हुई गुग्गुलको पानीमें मिलाकर, कढ़ाहीमें डालकर, आगपर चढ़ा दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाकर लेई सी कर लो । जब लेई सी हो जाय, उसमें सोंठ प्रभृति दसों दवाओं के पिसे-छने चूर्णको मिलाकर खूब चला दो । जब गुग्गुल और दवाओं का चूर्ण दोनों खूब मिल जायँ, उतार लो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो । इन “गुग्गुल आदि बटियोंके” सेवनसे प्रमेह रोग निश्चय ही नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

मात्रा—३ माशेकी । अनुपान—गरम जल । समय—सवेरे और शाम ।

नोट—गुग्गुल वही अच्छी होती है, जो भैंसाकी आँखोंकी तरह लाल होती है । भैंसाके नेत्रों-जैसी होनेसे ही उसे महिषाक्ष या भैंसा गुग्गुल कहते हैं ।

## १४६ प्रमेहान्तक बटी ।

भीमसेनी कपूर	...	...	...	१ माशे
कस्तूरी	...	...	...	१ माशे



अफ्रीम	...	...	...	४ माशे
जावित्री	...	...	...	४ माशे

इन चारोंको खरलमें डालकर घोटो और ऊपरसे बँगला पानों का, निकाल कर रखवा हुआ, रस छोड़ते जाओ। जब ८१० घण्टे घुटाई हो जाय, रत्ती रत्तीभरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सेवनसे प्रमेहमें तत्काल फायदा होता है; साथ ही वीर्य बढ़ता और गाढ़ा होता है।

सेवन विधि—सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर ऊपरसे दूध पीना चाहिये।

नोट—अफ्रीम ६ माशे लेकर, एक कटोरीमें रखकर, पाव आध पाव जलमें धोलकर, एक मोटे कपड़ेमें छानलो। कपड़ेमें मिट्टी और मैला रह जायगा, असले माल पानीमें मिलकर कपड़ेसे नीचे निकल जायगा। उस पानी को आगपर चढ़ाकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। यह अफ्रीम शुद्ध है।

### भीमसेनी कपूर बनानेकी विधि ।

कपूर २ तोले, समुद्रफेन ३ माशे, रसौत ३ माशे, छोटी इलायचीके बीज ६ माशे, केसर १॥ माशे, कस्तूरी ६ रत्ती, निर्मली ३ माशे, नागरमोथा ३ माशे और अगर ३ माशे—इन नौ चीजोंको साफ धोये हुए खरलमें डालकर, गुलाबजल दे-देकर घोटो। पीछे इसकी एक टिकिया-सी बना लो।

काँसीकी थालीमें इस टिकियाको रखकर, ऊपरसे फूल-काँसीका कटोरा औँधा रख दो। थाली और कटोरेकी सन्धियोंको पानीमें साने हुए उर्दके आटेसे बन्द कर दो, जिससे हवा न आ जा सके। इसके बाद थालीको तीन ईंटोंपर रख दो और थालीके नीचे “धीका चिराग” ऐसी मोटी बत्ती डालकर जला दो, जिससे दीपककी लौ छोटी अँगुली-जितनी मोटी उठती रहे; यह चिराग कोई ३ या ३॥ घण्टे तक जलता रहना चाहिये। कटोरेके ऊपर, रेज़ीका कपड़ा ८१० तह करके और पानीमें तर करके रख दो। अगर कपड़ा सूखने लगे तो ऊपरसे थोड़ा-थोड़ा टण्डा जल टपकाते रहो। इस तरह करनेसे तीन घण्टेमें “भीमसेनी कपूर” तैयार हो जायगा और वह ऊपरके कटोरेमें लगा मिलेगा। कटोरेके जोड़ छुड़ाकर, कपूरको निकालकर, शीशीमें रख लो। यह कपूर बड़ी ही कामकी चीज़ है। उपरोक्त गोलियोंके सिवा, इससे और बहुत काम निकलते हैं। इससे आँखोंके सुरमे भी बहुत ही बढ़िया तैयार होते हैं ॥



## १४७ आमलक्यादि मोदक ।

आमले (गुठली निकले हुए)	...	...	३ तोले
हरड़का बकल	...	...	३ "
बहेड़ेका छिलका	...	...	३ "
नागकेशर	...	...	८ "
दालचीनी	...	...	८ "
लौंग	...	...	८ "
छोटी इलायचीके बीज	...	...	८ "
तुख्मरिहाँ तुलसीके बीज	...	...	८ "
कौंचके बीज	...	...	१६ "
धनिया	...	...	१६ "
सफेद जीरा	...	...	१६ "

इन ग्यारह चीजोंको कूट-पीस कर कपड़छन कर लो। इस “आमलक्यादि मोदक या चूर्ण”के ४० दिन सेवन करनेसे सब तरहके प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं और साथ ही बल-वीर्य बढ़ता है।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ६ माशेसे ६ माशे तक है। हरेक खूराकमें बराबरका घी और मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम, खाना और ऊपरसे दूध पीना चाहिये। जैसे; ६ माशे चूर्ण लेना तो ३ माशे घी और तीन माशे मिश्री लेना।

## १४८ न्यग्रोधादि चूर्ण ।

बड़वृक्षकी छाल, गूलरकी छाल, पीपलके पेड़की छाल, सोना-पाठा, अमलताशका गूदा, आमकी छाल, कौंचके पेड़की छाल, जामुनकी छाल, अर्जुनकी छाल, चिरौंजी, नागरमोथा, मुलेठी छिली हुई, लोधकी छाल, वरनाकी छाल, कूट, करंजुआ, महुएकी छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुड़ेकी छाल और शुद्ध भिलावेके फल—इन २२ दवाओं



को दो-दो तोले लेकर, कूट-पीस कर छान लो और शीशीमें रख दो । इस चूर्णके ३०-४० दिन तक सेवन करनेसे वीसों प्रकारके प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं तथा प्रमेह-पिड़िकायें पैदा नहीं होतीं । इस चूर्णकी विद्वानोंने जैसी तारीफ़ की है, वैसा ही है ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ६ माशेकी है । इसे “शहद” के साथ चाटकर, ऊपरसे “त्रिफलेका काढ़ा या निकाढ़ा” पीना चाहिये । अकेले “त्रिफला और शहद” ही प्रमेहके काल हैं । अगर इनके साथ “न्यग्रोधादि घूर्ण” भी सेवन किया जाय, तब तो प्रमेहके नाश होनेमें सन्देह ही क्या ?

### १४६ प्रमेहान्तक चूर्ण ।

कच्चे सिंघाड़े (सूखे)	...	...	...	२ तोले
ईसबगोलकी भूसी	...	...	...	२ तोले
मैदा लकड़ी	...	...	...	२ ”
कौंचके बीज	...	...	...	२ ”
धनिया	...	...	...	२ ”
गोखरू	...	...	...	२ ”
बीजबन्द	...	...	...	२ ”
सेमलका गोंद	...	...	...	२ ”
ढाकका गोंद	...	...	...	२ ”
बबूलका गोंद	...	...	...	२ ”
समन्दरकी सीप	...	...	...	२ ”
तालमखान	...	...	...	२ ”
काहूके बीज	...	...	...	६ ”
मिश्री	...	...	...	१५ ”

बनानेकी विधि—इन सबको पीस-कूटकर छान लो और अमृत-बानमें रख दो । इसके सेवन करनेसे प्रमेह आदि धातु रोग नष्ट होकर, धातु गाढ़ी होती, बलवीर्य और कान्ति बढ़ती एवं शरीर खूब पुष्ट



होता है । मगर इतने रोग दस-पाँच दिनमें नाश नहीं हो जाते । कम-से-कम ४० दिन खानेसे अपूर्व चमत्कार दीखता है । जिनके पेशाबमें वीर्य बढ़ जाता है, उनके लिये यह चूर्ण रामवाण है । परीक्षित है ।

मेवन-विधि—१ तोले चूर्ण खाकर, ऊपरसे पाव डढ़पाव गायका “धारोष्ण दूध” पीना चाहिये ।

नोट—ईसबगोलको संस्कृतमें “ईषद्गोल” और फारसीमें “इसागुला” कहते हैं । यह अत्यन्त पुष्टिकारक, मधुर, क्वाविज तथा रक्तातिसार नाशक है । यह ज़रा बादी तो करता है, पर कफ-पित्तको नाश करता है । यह मिश्र और ईरानमें होता है । इसके बीज तीन तरहके होते हैं—( १ ) काले, ( २ ) लाल और ( ३ ) सफ़ेद । काले बीज दवाके कामके नहीं, सफ़ेद बीज सर्वोत्तम होते हैं ।

मैदा लकड़ी एक दरख्तकी जड़ है । बाहरसे काली और भीतरसे पीलापन लिए सफ़ेद होती है तथा स्वादमें फीकी होती है । इसकी मात्रा ५ माशेकी है । बदल “बालछड़” और “अकरकरा” है ।

## १५० प्रमेह गजकेशरी वटी ।

पीपल	...	...	...	६ माशे
नागरमोथा	...	...	...	६ ”
लौंग	...	...	...	६ ”
सौंफ	...	...	...	६ ”
छोटी हरड़	...	...	...	६ ”
दालचीनी	...	...	...	६ ”
रुमी मस्तगी	...	...	...	६ ”
तालमखाना	...	...	...	६ ”
मीठे इन्द्रजौ	...	...	...	६ ”
बड़ी इलायची	...	...	...	६ ”
आमला	...	...	...	६ ”
बालछड़	...	...	...	६ ”
छोटी इलायची	...	...	...	६ ”



गोल मिर्च	...	...	...	६ माशे
सफेद मिर्च	...	...	...	६ ”
अगर	...	...	...	६ ”
अगर बिलसाँ	...	...	...	६ ”
अकरकरा	...	...	...	६ ”
कुचला ( शुद्ध )	...	...	...	१ तोले
जायफल	...	...	...	६ माशे
शहद	...	...	...	३२ तोले
कंकोल	...	...	...	६ माशे

बनानेकी विधि—शहदको अलग रख दो । कुचलेको शोध लो । इसके बाद, शहदके अलावा—इक्कीस दवाओंको पीस-कूटकर छान लो । पीछे शहदकी चाशनीमें सब चूर्णको मिलाकर, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो ।

रोग—इन गोलियोंके ४० या ८० दिन सेवन करनेसे सारे प्रमेहादि धातुरोग नाश होकर नयी जवानी आती है; कामदेव बहुत जोर करता, भूख बढ़ती और शरीर सोनेकी तरह चमकता है । इसके सिवा आतशक-गरमी, गठिया और बादीके रोग भी नाश हो जाते हैं ।

सेवन-विधि—भोजनसे पहले, बड़े सवेरे ही, एक गोली खानी चाहिए ।

नोट—कुचला शोधनेकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय पाँचवें भागके १३६ पृष्ठमें देखिये ।

## १५१ प्रमेहान्तक खीर ।

गायके एक पाव दूधमें एक तोला “ईसबगोल” डालकर पकाओ; जब पक जाय, ज़रा सी सेलखड़ी पीसकर मिला दो, यही “प्रमेहान्तक खीर” है । इस खीरके सवेरे ही खाने और भूख लगनेपर भोजन



करनेसे, एक मासमें, प्रमेह, धातुक्षीणता, स्वप्रदोष, धातुका पतलापन एवं धातु-सम्बन्धी अन्य रोग नाश हो जाते हैं । परोक्षित है ।

## १५२ सर्व प्रमेहनाशक चूर्ण ।

सफेद चन्दन, नागरमोथा, खस, छोटी इलायचीके बीज, लौंग, चीता, कूट, काली अगर, वंसलोचन, असगन्ध, शतावर, जायफल, गिलोय, गोखरू, निशोथ, तगर, नागकेशर और कमलगट्टेकी गिरी— इन सबको कूट-पीसकर छान लो और बराबरकी “मिश्री” मिलाकर रख लो । इसकी मात्रा १ तोलेकी है । इस चूर्णके कुछ दिन लगातार खानेसे बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं । परोक्षित है ।

## १५३ त्रिकुटाय गुटिका ।

त्रिकुटा	...	...	१ पाव
त्रिफला	...	...	१ पाव
शुद्ध गूगल	...	...	२ पाव

बनानेकी विधि—पहले गूगल को शोध लो । जब ढीली सी हो जाय, अलग रख दो । त्रिकुटा और त्रिफलाकी छहों चीजोंको कूट-पीसकर छान लो पीछे गूगल और इस चूर्णको खरलमें घोटो; ऊपर से गोखरूका काढ़ा डालते जाओ । जब सब चीज एक-दिल हो जायँ, मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो । देश, काल और बलका विचार करके, एक या दो गोली नित्य खानेसे समस्त प्रमेह नष्ट हो जाते हैं । ये गोलियाँ वातअनुलोमक; यानी अपानवायुको निकालनेवाली, वातरोग, वातरक्त; मूत्राघात, मूत्र-दोष और प्रदरको नाश करनेवाली हैं । सबसे बड़ी बात यह कि, इनपर कोई पथ्य-परहेज नहीं; रोगी तबियत चाहे सो खा सकता है ।



## १५४ गोक्षुराद्यवलेह ।

पत्ते, फल और जड़ समेत “गोखरू” पाँच सेर लाकर, ज़रा अधिकचरा सा करके चौगुना यानी २० सेर जल डालकर पका लो । जब जलते-जलते चौथाई यानी पाँच सेर जल रह जाय, उतारकर कपड़े में छान लो । इस छाने काढ़ेको, कलईदार कढ़ाही में, फिर आग पर चढ़ा कर, “मिश्री” अढ़ाई सेर मिला दो और मन्दी-मन्दी आग से पकाओ । जब गाढ़ा हो जाय इसमें—

सोंठ, पीपल, गोलमिर्च, नागकेशर, दालचीनी, छोटी इलायची, जायफल, कोहक फूल और खीरेके बीज हरेक आठ-आठ तोलेका— पीस-छानकर पहलेसे रखा हुआ चूर्ण ( ऊपर की चाशनी में ) डाल दो, और बत्तौस तोले नीली झाईवाला “बंसलोचन” पीसकर और मिला दो; और फिर कढ़ाहीको फौरन उतार लो । यह चाटने लायक रहना चाहिये, क्योंकि अवलेह है ।

रोग-नाश—इस अवलेहके सेवन करनेसे पेशाबकी जलन, पेशाबका रुकना, धातुदोष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तप्रमेह ( छूठा पित्तज प्रमेह ), पथरी रोग और मधुमेह,—ये रोग नाश हो जाते हैं । इसकी मात्रा चार तोलेकी लिखी है; पर अपने बलाबल अनुसार विचार कर खानी चाहिये ।

## १५५ असवादि योग ।

विजयसार, चिरौंजी, साल, खैर और सारवर्गकी दवाएँ—इन सबको पीस-छानकर रख लो । इस चूर्णके सेवन करनेसे वह मधुमेह रोगी भी आराम हो सकता है, जिसे अन्य वैद्योंने असाध्य समझकर त्याग दिया हो ।



## १५६ प्रमेहान्तक चूर्ण ।

गोखरू, तालमखाना, सफ़ेद मूसली, स्याह मूसली, शतावर, कौंचके बीजोंकी गिरी, उटंगनके बीज, सूखे सिंघाड़े, ईसबगोलकी भूसी, बबूल-का गोंद, बहमन सुर्ख, बहमन सफ़ेद, तोदरी जर्द, तोदरी सुर्ख, कसेरू, लिहसौड़ा और रूमी मस्तगी,—इन सबको दो-दो तोले लेकर, कूट-पीस कर छानलो और फिर चूर्णके वजनके बराबर पिसी “मिश्री” भी मिला दो और किसी साफ़ बर्तनमें रख दो ।

रोग—इसके सेवनसे बीसों प्रमेह नाश होकर, बल-वीर्य और कान्ति बढ़ती है । खानेवालेका शरीर खूब तैयार होता है । धातु खूब गाढ़ी होती और स्त्री-प्रसंगमें बड़ा आनन्द आता है ।

सेवन-विधि—जवानके लिये इस चूर्णकी मात्रा १ तोलेकी है । सवेरे-शाम चूर्ण फाँककर, ऊपरसे गायका “धारोष्ण दूध” एक पाव पीना चाहिये । २१ दिनमें ही यह अपूर्व चमत्कार दिखाता है । अगर ४० दिन तक खा लिया जाय और स्त्रीसे परहेज रखा जाय, तब तो कहना ही क्या ? परीक्षित है ।

## १५७ कामिनी मानमर्दन चूर्ण ।

शतावर	...	...	४ तोले
गोखरू	...	...	४ ”
कुलींजन	...	...	४ ”
बिदारीकन्द	...	...	४ ”
कौंचके बीजोंकी गिरी	...	...	४ मासे
उटंगनके बीज	...	...	४ ”
पीपर	...	...	४ ”
छोटी इलायचीके बीज	...	...	४ ”



नागकेशर	...	...	४ माशे
सफेद मूसली	...	...	४ "
लाल चन्दन	...	...	४ "
छरीला	...	...	४ "
गिलोय	...	...	४ "
बंसलोचन	...	...	४ "

बनानेकी विधि—सब दवाओंको पीस-कूटकर छान लो । फिर पत्थरके बड़े खरलमें चूर्णको ढाल “सेमरके स्वरस” की २१ भावना या पुट दो । इसके बाद “ढाभके रस” की २१ भावना दो, और शेषमें इसे छायामें सुखा दो । सूख जानेपर, चूर्णके वजनकी बराबर, “मिश्री” पीसकर मिला दो और साफ बासनमें भर कर रख दो ।

रोग—यह चूर्ण हमारा बहुत बारका परीक्षित है । इसके सेवन करनेसे बीसों प्रसेह नाश होकर अपार बल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है । इस चूर्णके सदा सेवन करनेवाले की कामिनी दासी हो जाती है । चालीस दिनमें ही यह अपूर्व चमत्कार दिखाता है । यथा नाम तथा गुण है । परीक्षित है ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, बलाबल अनुसार, ६ माशे से १ तोले तक चूर्ण खाकर, ऊपरसे गायका १ पाव धारोष्ण दूध पीना चाहिये ।

## १५८ हरिशंकर रस ।

निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, पारेकी भस्म और शुद्ध तृतीया—तीनोंको एक-एक तोले लेकर, खरलमें ढालो और सात दिन तक “आमलेके स्वरस” की भावनाएँ दो । फिर दो-दो या तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो । प्रमेह नाश करनेमें यह रस रामवाण है । इससे समस्त प्रमेह नाश हो जाते हैं । पहले एक गोलीसे शुरू करना चाहिये । ज्यों-ज्यों माफ़िक आता जाय, दो या तीन गोली तक बढ़ा देना चाहिये । इससे अधिक न लेना चाहिये । कहा है—



मृताभ्रसूतकं तुत्थं धात्रीफलनिजद्रवेः ।

सप्ताहं भावयेत स्वल्पे रसोऽयं हरिशंकर ॥

माषमानां वटीं खादेत् सर्वमेह प्रशान्तये ॥

नोट—(१) यह रस हमने “वैद्यविनोद” से लिया है । दो-तीन बार परीक्षा करनेपर अच्छा साबित हुआ, इसीसे लिखा है । हमने एक-एक माशेकी गोलियाँ न बनाकर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनाईं । इसमें शक नहीं, किसी-किसीको तीन-तीन गोली तक निर्विघ्न पच गईं ।

( २ )—किसी दवाके चूर्ण या कजलीको किसी दवाके स्वरस या काढ़ेमें भिगोकर, मर्दन करने और सुखा लेनेको “भावना” देना कहते हैं ।

## १५६ चन्द्रप्रभा वटी ।

१-कपूर	...	...	३ माशे
२-दूधियाबच	...	...	३ ”
३-नागरमोथा	...	...	३ ”
४-मीठा चिरायता	...	...	३ ”
५-गिलोय	...	...	३ ”
६-देवदारु	...	...	३ ”
७-हल्दी	...	...	३ ”
८-अतीस	...	...	३ ”
९-दारुहल्दी	...	...	३ ”
१०-पीपरामूल	...	...	३ ”
११-चीते, की जड़की छाल	...	...	३ ”
१२-धनियॉ	...	...	३ ”
१३-त्रिफला	...	...	३ ”
१४-चण्य	...	...	३ ”
१५-बायबिडङ्ग	...	...	३ ”
१६-गजपीपर	...	...	३ ”

Jangamawadi

Acc. No.

3007



१०२

## चिकित्सा-चन्द्रोदय ।

१७-सोंठ	...	...	३ माशे
१८-पीपर	...	...	३ "
१९-गोल मिर्च	...	...	३ "
२०-सोनामक्खीकी शुद्ध भस्म	...	...	३ "
२१-जवाखार	...	...	३ "
२२-सज्जीखार	...	...	३ "
२३-सैंधानोन	...	...	३ "
२४-कालानोन	...	...	३ "
२५-बिड़नोन	...	...	३ "
२६-निशोथ	...	...	१० "
२७-दन्ती	...	...	१० "
२८-तेजपात	...	...	१० "
२९-दालचीनी	...	...	१० "
३०-छोटी इलायचीके बीज	...	...	१० "
३१-बंसलोचन	...	...	१० "
३२-कान्तिसार	...	...	२० "
३३-मिश्री	...	...	२॥ तोला
३४-शुद्ध शिलाजीत	....	...	५ "
३५-शुद्ध गूगल	...	...	५ "

बनानेकी विधि—एक नम्बर कपूरसे बंसलोचन तककी ३१ दवाओंको, सोनामक्खीकी भस्मको छोड़कर, कूट-पीसकर कपड़-छन करलो । इसके बाद, उस पिसे-छने चूर्णमें कान्तिसार या फौलाद भस्म, सोना मक्खीकी भस्म, शिलाजीत और गूगलको मिलाकर पानी दे-देकर, खरलमें घोटो । गूगल छटाँक-भर जलमें घोलकर, ज़रा गरम कर लेईसी कर ली जाय, तो अच्छी तरह मिल जायगी । जब सब दवाएँ एक दिल हो जायँ, रत्ती-रत्ती या दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । इन्हीं गोलियोंको “चन्द्रप्रभा बटी”



कहते हैं । प्रमेह नाश करनेमें ये मशहूर हैं । वास्तवमें ये प्रमेहको आराम करती हैं । इनके सम्बन्धमें लिखा है—

चन्द्रप्रमेति विख्याता सर्वरोगप्रणाशिनी ।

प्रमेहान्विशति कृच्छ्रं मूत्राघातं तथाश्मरीम् ॥

चन्द्रप्रभा गोलियाँ समस्त रोग नाश करनेवाली, बीसों प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और पथरीको आराम करनेवाली हैं ।

हमने यह नुसखा कितनी ही बार आजमाया, सभी प्रमेहोंको आराम करता है; पर कहीं-कहीं असफलता भी होते देखी । लेकिन कफघातके प्रमेहोंमें तो शायद ही कमी फेल होता हो । प्रमेह-रोगियोंको इसे अवश्य सेवन करना चाहिये ।

वैद्य-विनोद-कर्ता और वृन्द प्रभृति विद्वानोंने तो यहाँ तक लिखा है—  
कुपथ्यसे हुए अरोचक, वमन और शूल-समेत प्रमेह नाश हो जाते हैं और कष्टसाध्य-इन्द्रिय-सम्बन्धी गाँठ, अन्त्रवृद्धि, अण्डवृद्धि, कामला, पाण्डु, कोढ़, प्लीहा, उदर-रोग, भगन्दर, श्वास, खाँसी, नेत्र-रोग, मन्दाग्नि, दारुण मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, शूल, अफारा, भगन्दर, पथरी और पुरुषोंके शुक्र या वीर्यके रोग आराम हो जाते हैं । इन गोलियोंसे औरतोंका आर्तव रोग ( मासिक रोग ) नाश होता और बाँझके पुत्र होता है । वैद्य लोग परीक्षा कर देखें, कि प्रमेहोंके सिवा और रोगोंको भी ये आराम करती हैं या नहीं ।

वैद्यक ग्रन्थोंमें इन गोलियोंकी प्रत्येक दवाका वज़न और तरह लिखा है । हमारे इस नुसखेमें कुछ कमी-वेशी है । शास्त्रोंमें लिखा है कि, इन दवाओंको खरल करके, गायके घीसे गोलियाँ बना लेनी चाहियें । भोजनके पहले “शहद”के साथ खानी चाहियें और पीछेसे रोगानुसार, इन पर छाछ, दहीका पानी, बकरेका मांस, जङ्गली हिरनका मांस, दूध या शिलाजीत पीना चाहिये । अफ़सोस है कि प्रमेहके सिवा और रोगोंमें इन्हें आजमा नहीं सके ।

सबने हमारे नं० १ कपूर से नं० २५ बिड़नोन तक की दवाएँ एक-एक कर्ष या एक-एक तोले, गूगल बत्तीस तोले, शिलाजीत १२ तोले, लोह मस्म ८ तोले, वंसलोचन ४ तोले, मिश्री १६ तोले, निशोथ १६ तोले, दन्ती १६ तोले, त्रिभुगन्ध ( दालचीनी, तेजपात और इलायची ) ३६ तोले लिखी हैं । दवाएँ सब प्रायः एक ही हैं । दो एक दवा में फ़र्क है । किसी ने रास्ता ली है, तो दूसरेने गिलोय ॥ और मेद नहीं । मात्रा भी एक तोले की लिखी है । पर



इस ज्ञमानेमें १ तोलेकी मात्रासे रोगी सीधा यमालय पहुंचेगा। जिनकी इच्छा शास्त्र-विधिसे गोतियाँ बनानेकी हो, वे सब चीजोंको इस नोटमें लिखे प्रमाणसे लेकर गोली बनालें और परीक्षा करें; कदाचित् इस तरह बनानेसे ये उपरोक्त सभी रोगोंको आराम करें। हमने जिस तरह बनाई और आजमाई उस तरह लिखा ही है। हम केवल प्रमेहोंपर परीक्षा कर सके हैं। यों तो ये सभी प्रमेहोंको आराम करती हैं, पर कफ-वातज प्रमेहोंको तो निश्चय ही शान्त करती हैं।

सूचना—कान्तिसार या फौलाद-भस्म वही अच्छी होती है, जो जलके भरे कटोरेमें डालने से तैरने लगती है। पानीपर पड़ी हुई भस्मपर, आप चन्द गेहूँके दाने डाल दें; अगर कान्तिसार या लोह भस्म उत्तम होगी, तो गेहूँ पानीपर तैरते रहेंगे, अगर खराब होगी, तो डूब जायेंगे। हमने इस तरह बारम्बार परीक्षा की है।

गूगल शोधनेकी तरकीब इसी भाग के पृष्ठ ७५ में लिखी है, और शिलाजीत शोधनेकी विधि इसी भागके पृष्ठ ५२-५३ में लिखी है। गूगल और शिलाजीत शोधकर ही काममें लाने चाहिएँ।

### १६० प्रमेहारि बटी ।

जायफल	...	...	२ तोले
लौंग	...	...	२ "
जावित्री	...	...	२ "
छोटी इलायचीके बीज	...	...	२ "
अकरकरा	...	...	२ "
दालचीनी	...	...	२ "
त्रिफुटा	...	...	२ "
केसर	...	...	२ "
चीतेकी छाल	...	...	२ "
असगन्ध नागौरी	...	...	२ "
शतावर	...	...	२ "
गोखरू	...	...	२ "
लोहसार	...	...	१३॥ माशे.
मिश्री	...	...	५॥=

बनानेकी विधि—इन पहली बारह दवाओंको कूट-पीसकर कपड़छन करलो। इसके बाद इस चूर्णमें साढ़े तेरह माशे. "लोहसार"



मिलाकर, एक-दिल करलो । सबके अन्तमें, अढ़ाई पाव “मिश्री” पीसकर मिला दो और जलके साथ खरल करके नौ-नौ माशेकी गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे १ पाव दूध पीनेसे बीसों प्रमेह निश्चय ही चले जाते हैं । इसके सिवा, वीर्यमें स्तम्भन-शक्ति भी बढ़ती है । परीक्षित है ।

### १६१ कामिनी-मद-धूनक रस ।

शुद्ध पारध—इसमें...	...	...	१ तोला
शुद्ध गन्धक यह बात	...	...	१ तोला
धतूरेके शुद्ध बीज - ही नह	...	...	२ तोला

बनानेकी तरकीब—पहले एक और पारेको, कोई ८-१० घण्टे घोटो; पीछे धतूरेके बीज डालकर घाटो; शेषमें, धतूरेके बीजोंका तेल डाल-डालकर, कोई ३-४ घण्टे खरल करलो और शीशीमें रखदो । यही “कामिनी-मद-धूनक रस” है । इसके सेवन करनेसे बीसों प्रमेह नाश होते, वीर्य बढ़ता और स्त्रीको द्रवित करनेकी सामर्थ्य होती है ।

सेवन-विधि—इसमेंसे १ रत्ती रस, मिश्रीके साथ खाना चाहिये ।

“वैद्यविनोद” में लिखा है, बड़ी ही उत्तम चीज है । कहा है:—

रसगन्धकयोः पिष्टी तत्समं धूर्तबीजकं ।

मर्दयेद् धूर्ततैलेन कामिनीमदधूनकः ॥

वल्लोऽस्य सितयायुक्तः सर्वान्मेहान्निकृन्तति ।

द्रावणो मैथुने स्त्रीणां सेवनाद्वीर्यदाढ्यकृत् ॥

नोट—कामी पुरुषोंको यह रस अवश्य खाना चाहिये । पारा शोधनेकी विधि “चिकित्सा-चन्द्रोदय” दूसरे भागके पृष्ठ ५७७-५७८ में और गन्धक शोधनेकी विधि पृष्ठ ५७५ में तथा धतूरेके बीज शोधनेकी विधि पृष्ठ ५७२ में लिखी है । यह रस हमारा आज्ञामूढ़ा नहीं है ।

### १६२ कामिनी-मदभञ्जन बटी ।

मोतियोंसे भरी सीपी ... .. ५ तोले



तालमखाना	...	...	...	५ तोले
मिश्री	...	...	...	५ तोले

बनानेकी विधि—पहले मोतियोंसे भरी सच्ची सीपको खरल में डालकर, तीन दिन तक, खरल करो । खरल होने पर, तालमखाने और मिश्रीको पीस-छानकर मिलादो; फिर ऊपरसे बड़का दूध देकर घोटो; घुट जानेपर छोटे बेर-समान गोलियाँ बना लो और छायामें सुखालो ।

ही हुई मरु

मरु उत्त

सेवन-विधि—सवेरे ही, पहले ५ जायेंगे गोली खाकर, ऊपर से गायका दूध पीओ । शामको गोलियाँ खाओ । दूसरे दिन, सवेरे-शाम, दोनों समय, एक-एक गोली खाओ । तीसरे दिन दो-दो गोली सवेरे-शाम खाओ । इसी तरह एक-एक गोली बढ़ाकर, सात दिन खाओ । स्त्रीसे दूर रहो ।

रोग-नाश—इन गोलियोंके ७ दिन खानेसे प्रमेहादि धातु-रोग नाश हो जाते हैं, नाम भी नहीं रहता । अगर कोई ४० दिन खाले तब तो कहना ही क्या ? परीक्षित है ।

### १६३ प्रमेहान्तक शर्बत ।

गिलोय	...	...	...	५१ सेर
गोखरू	...	...	...	५१ सेर
सफेद चन्दनका बुरादा	...	...	...	१६ तोले

बनानेकी विधि—गोखरू, गिलोय और चन्दनको कूट-पीस कर, रातके समय, कलईदार वासनमें साढ़े सात सेर पानी डालकर भिगो दो । सवेरे ही आगपर चढ़ाकर पकाओ । जब दो भाग पानी, जल जाय, उतारकर काढ़ा छान लो । उस काढ़ेमें ३ सेर “मिश्री” डालकर पकाओ । जब पकने लगे, उसमें कच्चा दूध और पानी मिलाकर



थोड़ा-थोड़ा देते जाओ। इस तरह मैल छूटेगा; मैलको भरसे उतारते जाओ। बीच-बीचमें जरा-जरा-सा शर्बत, भरसे लेकर एक लकड़ीके तख्ते या पत्थरपर टपकाते रहो। जब वह चाशनी न बहे—हाथमें चिप-चिप करे, तब उतार लो और छानकर बोतलोंमें भर दो। अगर तीन बोतल माल मिले, तो उत्तम समझना, कम रहनेसे जम जायगा और ज़ियादा रहनेसे सड़ जायगा। परीक्षित है।

सेवन-विधि—इसमेंसे एक या दो तोले शर्बत चाटनेसे प्रमेह नाश हो ने हैं—यह बात ग्रन्थोंमें लिखी है, पर पित्तज प्रमेहके नाश हे गो सन्देह ही नहीं; और प्रमेहों—जैसे वात-पित्तज प्रमेह—में होता है।

### १६४ शिलाजतु बटी ।

शुद्ध शिलाजीत	....	....	...	४ माशे
लोह भस्म	...	...	...	२ माशे
सोनामक्खीकी भस्म	....	...	...	२ माशे

इन तीनोंको एकत्र खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम मक्खन या मलाईमें मिलाकर खानेसे प्रमेह और सफेद धातुका गिरना बन्द हो जाता है। यह नुसखा “वैद्य” का है। लेखकका परीक्षित है।

### १६५ शतावरादि चूर्ण ।

शतावर, तालमखाना, कौंचके बीज, गोखरू, तोदरी, सफेद मूसली, गुलसकरी, काली मूसली और बरियारा—इन सबको एक-एक छटाँक लाकर, कूट-पीस-छानकर, चूर्ण कर लो। इसकी मात्रा ६ माशे से एक तोले तक है। एक मात्रा चूर्ण फाँक कर, गायका “धारोष्ण”



दूध पीना और स्त्रीसे दूर रहना चाहिये । इसके २१ या ३१ दिन सेवन करनेसे पतली धातु गाढ़ी होती और धातुका पेशाबके साथ गिरना बन्द होता है । परीक्षित है ।

## १६६ प्रमेहान्तक बटी ।

बङ्गभस्म	...	....	...	१ तोले
शुद्ध शिलाजीत	...	....	...	१॥ तोले
लोहभस्म	...	....	...	१ तोले
अकरकरा	...	...	...	३ माशे
नारियलकी गिरी	...	...	...	१ तोले
छुहारा	...	...	...	१ तोले
केशर	...	...	...	४ माशे
बादामकी गिरी	...	...	...	६ माशे
जायफल	...	...	...	१ तोले
मिश्री	...	...	...	३ तोले

बङ्गभस्म आदि पहली तीन दवाओंको अलग रखकर, अकरकरादि सातों चीजोंको पीस-कूटकर कपड़-छन कर लो । पीछे इस चूर्णमें बङ्ग, लोहभस्म और शिलाजीत मिलाकर घोटो और आध-आध माशेकी गोली बना लो । जवान और बलवान १ से २ गोली तक खा सकता है । सवेरे-शाम एक-एक या दो-दो गोली खाकर, ऊपरसे मिश्री मिलाकर दूध पीनेसे प्रमेह जड़से नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।



## प्रमेह-पिड़िका-चिकित्सा ।

बसे पहले जौंके लगवाकर, पिड़िका-स्थानका खून निकालवा दो । अगर पिड़िका पक गई हो, तो नशतरसे मलामत निकाल दो । जौंके लगवाकर, पिड़िकाको “गाय या बकरीके मूत्र” से दिनमें दो बार धोओ । पीछे नीचे लिखे उपाय करो, जिससे घाव भर जायः—

( १ ) वबूलकी हरी पत्तियाँ दो तोले लाकर, एक कटोरीमें रक्खो और कटोरीको आगपर रख दो । थोड़ी देरमें पत्तियाँ जलकर खाक हो जायँगी । उस भस्मको महीन पीस लो । फिर छोटी इलायचीके चार दाने लेकर आगमें जला लो और पीसकर पत्तियोंकी भस्ममें मिला दो । शेषमें, तीन माशे कत्था महीन पीस-छानकर, उन दोनोंके चूर्णमें मिला दो । फिर, सबको एकदिल करके शीशीमें भर दो । पिड़िकाओंके लिए, यह चूर्ण या बुरका सर्वोत्तम और परीक्षित है ।

लगावकी विधि—साबुन या निर्मलीके पानीसे पिड़िकाको धोकर और कपड़ेसे पोंछकर, उसपर जरा-सा “रेंडीका तेल” चुपड़ दो, और ऊपरसे यही बुरका, शीशीमेंसे निकाल कर, बुरक दो । इस तरह करनेसे, प्रायः १ सप्ताहमें असाध्य पिड़िका भी नाश हो जाती है ।

( २ ) पत्थर पर पानी डालकर, नीमकी छाल और मुर्दासंग बराबर-बराबर घिसो । पहले छालको घिस लो; फिर मुर्दासंगको उसीपर घिस लो और इस लेपको पिड़िकापर लगा दो । यह भी परीक्षित लेप है ।



( ३ ) पिड़िकापर गूलरका दूध लगानेसे भी बहुत जल्द लाभ होता है । सोमराजीके बीज पीसकर लेप करनेसे भी लाभ होता है ।

( ४ ) पिड़िकावालेको अनन्तमूल, श्यामलता, मुनका, त्रिवृत्त, सनाय, कुटकी, बड़ी हरड़, अड़ूँसेकी छाल, नीमकी छाल, हल्दी, दारु-हल्दी और गोखरूके बीजोंका काढ़ा बनाकर पिलाना बहुत लाभदायक है ।

( ५ ) पिड़िकावालेको मकरध्वज या सारिवादि लौह अथवा सारिवाद्यासव भी परम हित हैं ।

( ६ ) पिड़िका-स्थानको, पक जानेपर, चिरवा दो । फिर बकरीके मूत्र आदि तीक्ष्ण पदार्थोंसे साफ करके, “एलादि गण” की दवाओंके कल्कके साथ बने हुए तेलको लगाकर, घावको भर दो । ‘आरग्वधादि गण’ × का उचित काढ़ा पिलाना, ‘शालसारादि गण’ + के योग्य काढ़ेसे पिड़िकाओंको सींचना और चने प्रभृति खिलाना भी हितकारी है ।

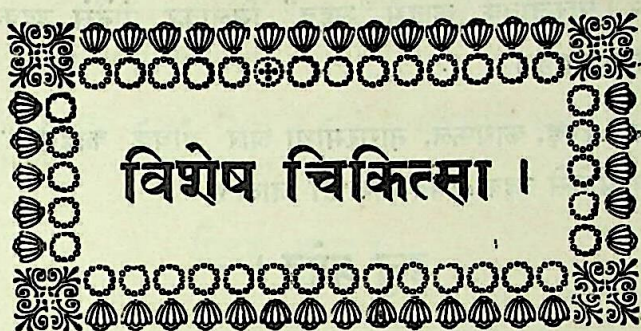
❧ त्रिवृत्त—इसे हिन्दीमें “सफ़ेद निशोथ” और बँगलामें “श्वेततेउड़ी” कहते हैं ।

❧ इलायची, तगर, पादुका, कूट, जटामांसी, गन्धतृण, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, प्रियंगू, रेणुका, नखी, सेंहुड़, चोर पुष्पी, गठिवन, गन्दा-बिरोजा, चोरक, बाला, गूगल, राल, घण्टा, पाटला, कुन्दूर खोटी, अग्र, चूकशाक, खसकी जड़, देवदारु, केशर और नागकेशर—ये सब “एलादिगण” या इलायची आदि हैं ।

× आरग्वधादि गण—कवाँच, मैनफल, केवड़ेका फूल, कुरैया, अकवन, काँटेदार बैंगन, रक्तलोध, मूर्वा, इन्द्रजौ, छातिमकी छाल, नीमकी छाल, पीतभारी, लीलभारी, गुरुच, चिरायता, महाकरंज, नाटाकरंज, डहरकरंज, परवलकी पत्ती, चिरायते की जड़ और करेला,—इन सबको “आरग्वधादिगण” या अमलताशादि, कहते हैं । ये कफ, विष, मेद, कोढ़, ज्वर, खुजली और कयको नाश करती हैं ।

+ शाल, आसन, खैर, पपरिया-खैर, तमाल, सुपारी, भोजपत्र, मेढ़ासिङ्गी, तिनिस, चन्दन, लाल चन्दन, सीसों, सिरस, पियाशाल, धव, अर्जुन, सागवान, करंज, डहरकरंज, लताशाल, अग्र और कालिया काष्ठ—इन सबको “शालसारादि गण” कहते हैं । इनसे कोढ़, प्रमेह, पाण्डु, कफ और मेद रोग नाश होते हैं ।





## विशेष चिकित्सा ।

### कफज प्रमेहोंकी चिकित्सा ।

#### उदकमेह ।

( १ ) उदक प्रमेहमें दो तोले नीमकी अन्तरछाल लाकर, एक मिट्टीकी हॉडी में, एक पाव जल डालकर, पकाओ। जब आधा या चौथाई पानी रह जाय उतारकर मल-छान लो और शीतल होनेपर, काढ़ेमें १ तोले “शहद” मिलाकर पी जाओ। अगर गरमी जान पड़े, तो नीमकी दो तोले छालको कुचलकर, १ पाव पानीमें भिगो दो और रातको खुली छतपर रख दो। सवेरे ही मल-छानकर और “शहद” मिलाकर पी लो। इस तरह दोनों समय—सवेरे-शाम—इस काढ़े या हिमके पीनेसे “उदक प्रमेह” नाश हो जाता है, पर कम-से-कम ४० दिन पीना जरूरी है।

( २ ) धायके फूल, अर्जुन वृक्षको छाल, ताल वृक्षकी छाल और सफेद चन्दन—इन चारोंको दो तोले लेकर, ऊपरकी विधिसे काढ़ा बनाकर और “शहद” मिलाकर पीनेसे “उदक प्रमेह” चला जाता है। अगर दवा खुशकी लावे, तो काढ़ा न बनाकर, ऊपरकी विधिसे “हिम” बनाकर और “शहद” मिलाकर पीना चाहिये। परीक्षित है।



( ३ ) परिजातके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे उदक प्रमेह नाश हो जाता है ।

( ४ ) हरड़, कायफल, नागरमोथा और लोधके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे उदक प्रमेह नाश हो जाता है ।

### इक्षु प्रमेह ।

( ५ ) अरणीके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीने या हिम बनाकर पीनेसे इक्षु प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

( ६ ) पाढ़, बायबिडंग, अर्जुनकी छाल और धमासेके काढ़ेमें “शहद” डालकर पीनेसे इक्षु प्रमेह नाश हो जाता है ।

### सुरा प्रमेह ।

( ७ ) नीमकी अन्तरछालके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीने या हिममें “शहद” मिलाकर पीनेसे सुरा प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

( ८ ) कदम की छाल, शाल वृक्षकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और अजवायनके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे सुराप्रमेह नाश हो जाता है ।

( ९ ) सेमलक पेड़की छालका काढ़ा पीनेसे सुरा प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

### सान्द्र प्रमेह ।

( १० ) सातलाकी जड़की छालका काढ़ा ४० दिन तक पीनेसे सान्द्रप्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।



( ११ ) हल्दी और दारुहल्दीके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे सान्द्रमेह जाता रहता है ।

( १२ ) हल्दी, दारुहल्दी, तगर और बायबिडंगके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे सान्द्रमेह जाता रहता है ।

## पिष्ठ प्रमेह ।

( १३ ) हल्दी और दारुहल्दीका काढ़ा पीनेसे पेशाबमें पिसान आना बन्द हो जाता है । पिसान आना बन्द हो जानेपर, कोई बढ़िया दवा देनी चाहिये । लेकिन जब तक चाँवल-धुला पानी-सा आना बन्द न हो जाय, यही काढ़ा देना चाहिये । परीक्षित है ।

( १४ ) अगरके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पिष्ठमेह नाश हो जाता है ।

( १५ ) दारुहल्दी, बायबिडंग, खैरसार और धीके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पिष्ठ प्रमेह नाश हो जाता है ।

( १६ ) अड़ूसेका स्वरस १ तोले, गिलोयका स्वरस १ तोले और शहद १ तोले—सबको एकत्र मिलाकर सेवन करनेसे चाँवल्लोके धोवन-जैसा पेशाबका होना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

( १७ ) फुलाई हुई फिटकरी ६ माशे, एक केलेकी गहरमें मिलाकर खानेसे, २१ दिनमें, असाध्य सफेद प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

## शुक्र मेह ।

( १८ ) शुक्रमेहीको सफेद दूबकी जड़, शैवाल और करंजकी गिरीका काढ़ा या हिम पीना हितकर है । परीक्षित है ।



( १६ ) देवदारु, कूट, अगर और चन्दनके काढ़ेमें “शहद” डालकर पीनेसे शुक्रमेह नाश होता है ।

( २० ) सफेद दूब, कसेरू, दुर्गन्ध-करंजकी गिरी, कायफल, नागरमोथा और शैवाल या सिवारका काढ़ा पीनेसे शुक्रमेह नाश होता है ।

( २१ ) सफेद गुलबाँसकी गाँठ, गायके दूधमें घिसकर, ७ दिन पीनेसे शुक्रमेह या पेशाबमें मिलकर धातुका गिरना आराम होता है ।

( २२ ) सफेद सेमलके छोटेसे कन्दका चूर्ण “मिश्री” मिलाकर खानेसे शुक्रमेह या वीर्यपतन नाश होता है ।

नोट—सेमलकी छालके चूर्णमें मिश्री मिलाकर फाँकने और गरम जल पीनेसे “मूत्रकृच्छ्र” आराम होता है ।

( २३ ) बागकी कपासके दो-तीन पत्ते रोज मिश्री मिलाकर, सवेरेही खानेसे शुक्रमेह—मूत्रके साथ वीर्य गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

( २४ ) सफेद सेमलकी छाल २ तोलेको गायके दूधमें पीस लो और उसमें १ या २ माशे सफेद जीरा तथा १ तोले मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम, १४ दिन पीनेसे “पेशाबके साथ वीर्य जाना या शक्कर जाना” आराम होता है । परीक्षित है ।

( २५ ) कायफलकी छाल और नारियलका रस मिलाकर, ७ दिन, पीनेसे “धातुप्रमेह” नाश हो जाता है ।

## सिकता मेह ।

( २६ ) चीतेकी जड़की छालके काढ़ेमें “शहद” डालकर पीनेसे सिकता मेह आराम हो जाता है । अगर गरमी मालूम हो, तो



“हिम” लेना चाहिए; यानी रातको चीता भिगोकर, सवेरे, मल-छान कर “शहद” मिलाकर पीना चाहिए । परीक्षित है ।

( २७ ) दारुहल्दी, अरणी, त्रिफला और पादक के काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे भी सिकतामेह नाश हो जाता है ।

नोट—दवा देनेसे पहले सिकतामेह है या शर्करारोग है, इसका निश्चय कर लेना ज़रूरी है । सिकतामेहमें पेशाबके साथ सफ़ेद बालू-सी आती है, पर शर्करामें लाल बालू आती है । अगर शर्करा हो, तो पेटके-रसमें हींग और जवाखार मिलाकर सेवन करनेसे शर्करा रोग आराम हो जाता है । परीक्षित है । इस नुसखेसे “पथरी रोग” भी जाता रहता है ।

## शीत मेह ।

( २८ ) शीतमेहमें पादी और अगरका काढ़ा या हिम “शहद” मिलाकर पीनेसे अवश्य लाभ होता है । परीक्षित है ।

( २९ ) पादी, चुरनहार और गोखरूके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे भी लाभ होता है ।

नोट—सुश्रुतमें शीत प्रमेहकी जगह “लवणमेह” लिखा है ।

## शनैर्मेह ।

( ३० ) खैरके पेड़की छालका काढ़ा या हिम “शहद” मिलाकर पीनेसे शनैर्मेह मिट जाता है । परीक्षित है ।

( ३१ ) अजवायन, खस, हरड़ और गिलोयके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीने या इन्हींके हिममें “शहद” मिलाकर पीनेसे शनैर्मेह आराम हो जाता है ।

## लाला मेह ।

( ३२ ) लालामेहीको त्रिफलेका काढ़ा या हिम “शहद” मिलाकर पीनेसे लाभ होता है । परीक्षित है ।



नोट—लालामेहको ही “फेनप्रमेह” कहते हैं। दोनोंके एक ही लक्षण और एक ही दवा है।

( ३३ ) त्रिफला, अमलताश और दाख—इनके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे लाला-प्रमेह या फेन प्रमेह आराम होता है। परीक्षित है।

( ३४ ) जामुनकी छाल, आमले, चीतेकी छाल और सतौना के काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे लाला-मेह नष्ट होता है।

नोट—कफज प्रमेह दस प्रकारके होते हैं। इनके जितने नुसखे लिखे हैं, उनमें जवानके लिये, काढ़ेकी दवाएँ, चाहे एक हो चाहे चार या छः—मिलाकर दो तोले लेनी चाहियें। १ पाव पानीमें काढ़ा औटाकर, आधा या चौथाई रहने पर उतार लेना चाहिये और शीतल होने पर, शहद ३ माशेसे १ तोले तक मिलाकर पीना चाहिये। काढ़ा, बिना ढकना दिये, मिट्टीकी हॉडीमें औटाना चाहिये। अगर रोगीका मिजाज गरम हो, काढ़ा खुशकी लावे, तो काढ़ेकी दवाओंको शीतल जलमें, रातको भिगोकर, सवेरे ही मल-छान कर, मिश्री मिलाकर, पीना चाहिये। सभी नुसखोंमें कमीबेश “शहद” जरूर मिला लेना चाहिये।

कफके प्रमेह दस होते हैं; उन दसोंकी चिकित्सा हमने अलग-अलग लिखी है। यदि यह मालूम हो जाय, कि यह कफज प्रमेह है, पर यह न मालूम पड़े कि, दस कफज प्रमेहोंमेंसे यह अमुक प्रमेह है, जैसे उदकमेह है, शीतमेह है, शनैःमेह है इत्यादि उस दशामें, कफज प्रमेहोंकी “सामान्य चिकित्सा” करनेमें कोई ऐब या दोष नहीं। अगर प्रमेह ठीक कफज होगा, यानी दसोंमेंसे कोई एक होगा, तो सामान्य चिकित्सासे अवश्य लाभ होगा। हाँ, यदि अनाड़ीपनसे पित्तज प्रमेहको कफज समझकर इलाज किया जायगा, तो आराम होनेके बजाय बीमारी बढ़ेगी। सारांश यह, पहले देखो कि प्रमेह रोग है कि नहीं। अगर देखो कि प्रमेह है, तब इस बातकी जाँच करो कि, प्रमेह कफका है या पित्तका अथवा वातका। अगर मालूम हो, कि कफज है, तो पता लगाओ कि दसोंमेंसे कौनसा है। जब मालूम हो जाय, कि अमुक है, तब उसीकी दवा दो। अगर ठीक पता न लगे, पर कफज प्रमेह होनेमें सन्देह न हो, तो आगे लिखे नुसखे काममें लाओ:—



## कफज प्रमेहोंकी सामान्य चिकित्सा ।

( ३५ ) त्रिफला, दारुहल्दी और नागरमोथा—इन तीनोंके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर, पीनेसे कफके सब प्रमेह आराम हो जाते हैं ।  
परीक्षित है ।

नोट—त्रिफला जब लो तब हरड़ १ भाग, बहेड़ा २ भाग और आँवले ४ भाग लो । इस तरह काढ़ा मूत्राशयमें गरमी नहीं करता ।

( ३६ ) नागरमोथा, हरड़, लोध और कायफल बराबर-बराबर ६६ माशे लेकर, एक पाव पानीमें काढ़ा बनाओ । जब आधा पानी रह जाय, छानकर शीतल करलो और १ तोला “शहद” मिलाकर पीलो । इस नुसखेसे “१ मासमें” कफक दसों प्रमेह नाश हो जाते हैं ।  
परीक्षित है ।

## पित्तज प्रमेह-चिकित्सा ।

### चार प्रमेह ।

( ३७ ) चार-मेह वालेको त्रिफलाका “हिम” पीना हित कर है ।  
परीक्षित है ।

( ३८ ) पाढ़के काढ़ेमें “शहद” डालकर पीनेसे भी चार प्रमेह आराम होता है । अगर काढ़ा गरमी करे, तो “हिम” देना चाहिये ।

नोट—पित्तज प्रमेहोंमें “हिम” अधिक फ़ायदा करता है । दवाको रातको भिगोकर, सवेरे ही मल-छानकर और उसमें शहद ३ माशे या ६ माशे मिलाकर पीना चाहिये । इसीको “हिम” कहते हैं ।

### नील प्रमेह ।

( ३९ ) पीपलके पेड़की छालका काढ़ा या हिम “मधु” मिलाकर पीनेसे नील प्रमेह आराम होता है । परीक्षित है ।



( ४० ) पीपल वृक्षका पक्काङ्ग, पीस-कूट कर चूर्ण बनालो । इस चूर्णमेंसे ६ माशे चूर्ण, गायके दूधके साथ, पीनेसे नील प्रमेह आराम होता है । परीक्षित है ।

( ४१ ) हरड़, मले, खस और नागरमोथा इन चारोंके काढ़े या हिममें “शहद” । नाकर पीनेसे नील प्रमेह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

## काल प्रमेह ।

( ४२ ) नीमकी अन्तर छाल, परवलके पत्ते और शाखा, आमले और गिलोय, इन चारोंके काढ़े या हिममें “मिश्री” मिलाकर पीनेसे काल प्रमेह आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—इसमें “शहद” भी मिला सकते हैं । इस नुसखेको, दोनों समय, ४० दिन तक सेवन करना चाहिये ।

## हरिद्र प्रमेह ।

( ४३ ) मोथा, हरड़, पद्माख और इन्द्रजौ, इन चारोंका काढ़ा या हिम पीनेसे हरिद्र प्रमेह आराम हो जाता है ।

( ४४ ) पठानी लोध, सुगन्धवाला, सफ़ेद चन्दन और धवके फूल, इन चारोंका काढ़ा या हिम भी हरिद्र-प्रमेहको नाश करता है ।

नोट—( १ ) ऊपरके दोनों नुसखे परीक्षित हैं । अगर हरिद्रमेहीका दस्त साफ़ न होता हो, तो पहले “अमलताशका काढ़ा” पिलाकर दस्त करा देने चाहियें, तब उपरोक्त काढ़ोंमेंसे कोई सा देना चाहिये ।

( २ ) हारीतने एक ‘पीत प्रमेह लिखा है । उसके लिये उन्होंने नील-कमल, खस, हरड़, आमले और नागरमोथा—इनका काढ़ा “शहद” मिलाकर पीनेको लिखा है । उन्होंने पीत प्रमेहके लक्षण नहीं लिखे; पर जान पड़ता है, “हरिद्र” और “पीत प्रमेह” एक ही हैं ।



( ३ ) ईसबगोल १ पाव साँझ को भिगो दो, सवेरे ही उसमें एक “नीबू” निचोड़ो और १॥ तोले “मिश्री” डालकर पी जाओ । इससे १५ दिनमें पीला प्रमेह चला जाता है ।

## माज्जिष्ठ प्रमेह ।

( ४५ ) नीमकी छाल, अर्जुन वृक्षकी छाल और कमलगट्टेकी गिरी—इन तीनों का काढ़ा या हिम माज्जिष्ठ-प्रमेहको आराम करता है ।

( ४६ ) कवाबचीनी या शीतल मिर्च को महीन पीस-कूटकर छान लो और बराबरकी “मिश्री” मिला दो । इस चूर्णकी मात्रा ४ माशेकी है । और दिनमें तीन-चार बार फाँककर, ऊपरसे जल पीनेसे माज्जिष्ठ प्रमेह और बहुधा पित्तके छहों प्रमेहोंमें बड़ा उपकार होता है । अगर यह नुसखा इन छहों प्रमेहोंमें पहले कुछ दिन सेवन कराया जाय, तो बड़ा लाभ हो । परीक्षित है ।

नोट—माज्जिष्ठ प्रमेह और रक्त प्रमेहमें गरमीका जोर बहुत होता है; रोगी ध्वरा जाता है । ऐसी हालतमें पहले शीतल चीनीका चूर्ण तीन तीन माशे, दो-दो घंटोंपर फाँककर, एक गिलास जल पिलाना चाहिये । इन प्रमेहोंमें या पित्तके सभी प्रमेहोंमें ५॥७ दिन इस चूर्ण के सेवन करनेके बाद, दूसरा नुसखा दे मेसे खूब जल्दी लाभ होता है । जब पेशाब साफ़ होने लगे, तब कोई धातु-रोग नाशक, धातुवर्द्धक दवा खिलानी चाहिये, जो हमने इस पुस्तकके नपुंसक-अध्यायमें आगे लिखी है ।

## रक्त-प्रमेह ।

( ४७ ) प्रियंगूके फूल, लाल कमलके फूल, नील कमलके फूल और ढाकके फूल—इन चारोंके काढ़े या हिममें “मिश्री” मिलाकर पिलानेसे अवश्य लाभ होता है । परीक्षित है ।



नोट—रक्त प्रमेहमें शीतल-चीनी दस-पाँच दिन फाँककर, तब दूसरी दवा खानेसे खूब जल्दी लाभ होता है । रोगीको आराम होनेका विश्वास हो जाता है । उसके दिल-दिमागकी गरमी निकल जाती है । पीछे माझिष्ठ प्रमेहमें जो कबाबचीनीका नुसखा लिख आये हैं, वह रक्त प्रमेहमें भी बहुत ही अच्छा है ।

( ४८ ) लिहसौदोंका काढ़ा भी रक्त-प्रमेहमें बड़ा गुण दिखाता है ।

( ४९ ) जसवन्ती और ककही, दोनोंकी तोले-तोले भर पत्तियोंको सिलपर पीसकर, तीन तोले “मिश्री” मिला लो और घोट छानकर पी लो । इस तरह करनेसे २१ दिनमें लाल-प्रमेह चला जाता है ।

## पित्तज प्रमेहोंकी सामान्य चिकित्सा ।

( ५० ) परवल, नीमकी छाल, आँवले और गिलोय—इनका काढ़ा पित्तज प्रमेह-नाशक है । परीक्षित है ।

नोट—शहद तीन माशेसे ६ माशे तक मिला लेना चाहिये अथवा मिश्री जैसी जरूरत हो । सब दवाएँ ६-६ माशे लेनी चाहियें । कुल मिलाकर २ या २॥ तोले ।

( ५१ ) खस, लोध, अर्जुनकी छाल और सफेद चन्दनके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम होते हैं ।

( ५२ ) खस, नागरमोथा, मुलेठी और हरड़के काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम होते हैं ।

( ५३ ) लोध, आमाहल्दी, दारुहल्दी और धायके फूलके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम हो जाते हैं ।

( ५४ ) सोंठ, अर्जुनकी छाल, सौंफ और कमलके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर देनेसे पित्तज प्रमेह शान्त हो जाते हैं ।

( ५५ ) सिरसकी छाल, धनिया, अर्जुनकी छाल और नाग-केशरके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम हो जाते हैं ।



( ५६ ) फूल पियंगू, लाल कमल, नील कमल और ढाक़े फूलोंके काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पित्तज प्रमेह आराम हो जाते हैं ।

नोट—यह नुसखा सभी पित्तज प्रमेह नाश करता है; पर छठे रक्त प्रमेह को तो खासकर आराम करता है ।

( ५७ ) आमलोंके चार तोले स्वरसमें, १ माशे “हल्दी” और ६ माशे “शहद” मिलाकर पीनेसे सभी प्रमेह—बीसों प्रमेह—आराम हो जाते हैं; पर पित्तज प्रमेहोंके नाश होनेमें तो ज़रा भी शक नहीं । परीक्षित है ।

( ५८ ) गिलोयके दो तोले स्वरसमें ६ माशे “शहद” मिलाकर, दोनों समय पीनेसे वात और पित्तके प्रमेह निश्चय ही नाश हो जाते हैं ।

नोट—ये नुसखे प्रायः ६० दिन सेवन करनेसे पूर्णरूपसे रोग नाश कर देते हैं । गिलोयके स्वरस और आमलेके स्वरसवाले ये दोनों नुसखे सभी प्रमेहों पर अच्छे हैं, पर पित्तज प्रमेहोंमें तो शायद कभी ही फेल होते हों । गरीब लोगोंको, प्रमेह होनेपर, इन दोनोंमेंसे कोई नुसखा ३-४ मास तक सेवन करना चाहिये ।

( ५९ ) धनिया, जीरा और स्याह जीरा—इन तीनोंको कूट-पीस-छान कर चूर्ण बनालो । इस चूर्णसे पित्तज प्रमेह नाश हो जाते हैं । मात्रा ६ माशेकी है ।

( ६० ) गुलाबके ताज़ा फूल पाँच नगमें, तीन माशे “मिश्री” मिलाकर खाने और ऊपरसे गायका दूध पीनेसे दस्त साफ़ होता, पेशाबकी जलन मिटती, पीलापन जाता, प्रदर रोग नाश होता, धातु का विकार शान्त होता, खूनी बवासीर और पित्तके विकार मिटते हैं । परीक्षित है ।

( ६१ ) वायविडङ्ग, दारुहल्दी, धायके फूल, सोनापाठा, नील-कमल, इलायची छोटी, पेठा और अर्जुनकी छाल—इस काढ़ेमें “शहद” मिलाकर पीनेसे पित्तके प्रमेह इस तरह नष्ट होते हैं, जिस तरह बज्रसे पर्वत नष्ट होते हैं । परीक्षित है ।



## मिश्रित चिकित्सा ।

### मधुमेह ।

( ६२ ) पपरिया कत्था, खैर और सुपारीका काढ़ा मधुमेहको नाश करता है ।

### वसा मेह

( ६३ ) अरनीका काढ़ा पीनेसे वसामेह शान्त हो जाता है ।

### हस्ति प्रमेह ।

( ६४ ) पाढ़, सिरसकी छाल, जवासा, मूर्वा, तेंदू, ढाकके फूल और कैथ—इनका काढ़ा हस्ति प्रमेहको नाश करता है ।

नोट—वृन्द वैद्यकमें “जवासे” की जगह “कौंच” या दुःस्पर्शा लिखा है ।

### घृत प्रमेह ।

( ६५ ) गिलोय और चीतेकी छालका काढ़ा घृत प्रमेहको नाश करता है ।

( ६६ ) पाढ़, कुड़ेकी छाल, होंग, कुटकी और कूटके चूणसे घृत प्रमेह नाश होता है ।

ॐ सभी प्रकारके प्रमेह, बहुत दिनों तक इलाज न होनेसे “मधुमेह” हो जाते हैं । मधुमेहमें पेशाब मधु—शहदकी तरह गाढ़ा, मीठा, पिङ्गल वर्ण और लिबलिबा होता है । रोगीका शरीर भी मीठा हो जाता है । मधुमेहमें जिस दोषकी अधिकता रहती है, उसी दोषके लक्षण देखनेमें आते हैं । चिकित्सामें देर होनेसे पिङ्गिकायें पैदा हो जाती हैं । यों तो सभी प्रमेह कष्टसाध्य होते हैं, पर मधुमेह और पिङ्गिका-मेह तथा माता-पिताके दोषसे हुए प्रमेह असाध्य होते हैं । मधुमेहमें जौकी रोटी, गरम करके रक्खा हुआ शीतल जल, घोड़े-हाथीकी सवारी, कसरत, पैदल घूमना, मूँग, मसूर या चनेकी दालका रस, कच्चा केला, परवल, मक्खन निकाला दूध, आमले, कागजी नीबू, पका केला, जामुन और कसेरू आदि पथ्य या हितकर हैं ।



# नपुंसकता और धातुरोग।

## हस्त मैथुनका नतीजा

तो इस जगत् में सदा सर्वदासे मर्द और नामर्द दोनों ही होते चले आये हैं, पर आजकल जिस तरह नामर्दोंकी बहुतायत है, उस तरह पहले न थी। क्योंकि पहलेके लोग संसार-प्रवेश करने या गृहस्थीमें कदम रखनेसे पहले पूर्ण ब्रह्मचर्य्य व्रतका पालन करते और आयुर्वेद-विद्या या शरीर-सम्बन्धी विद्याको पढ़-समझकर ही विवाह-शादी करते थे। आजकल तो जिसे देखो वही टके कमानेकी विद्यामें लंगा हुआ है। जिस शरीरसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी प्राप्ति होती है, जिस शरीरसे टका कमाया जाता है, उस शरीरकी रक्षाकी विद्याको कोई नहीं पढ़ता। यही वजह है कि लोग अनजान होनेके कारण, नाना प्रकारके प्रकृति-विरुद्ध, नियम-विरुद्ध या शास्त्र-विरुद्ध कर्म कर-करके, अपने शरीर, पुं सत्व और अपनी आयुका नाश करके, छोटी उम्रमें ही, कालके गालमें समा जाते हैं।

आज-कल सृष्टिके नियमोंके विपरीत हस्त-मैथुन, गुदामैथुन और अयोनि मैथुन प्रभृतिकी बहुत चाल हो गई है। इन कुकर्मोंके कारणसे ही, आज प्रायः पच्चीस फी सदी भारतवासी बल-वीर्य-हीन नपुंसक हो रहे हैं। प्रायः ६० फी सदी भारतीय प्रमेह-राक्षसके



पञ्जेमें फँसे हुए अपनी ज़िन्दगीके दिन पूरे कर रहे हैं । बहुत क्या—इन सृष्टि-नियम-विरुद्ध सत्यानाशी चालोंने इस देशको बिल्कुल बेकाम कर दिया है । नीचे हम केवल हस्त-मैथुन या हथरसके सम्बन्धमें दो-चार बातें कहना चाहते हैं । पाठक देखें, कि उससे क्या-क्या हानियाँ होती हैं ।

सृष्टि-नियमोंके विपरीत—कानून कुदरतके खिलाफ़ अथवा नैचरके क़ायदोंके विरुद्ध आनन्दकारक असर पैदा करनेके लिये—मज़ा उठानेके लिये, बेवकूफ़ और नादान लोग, नीचोंकी सुहबतमें पड़ कर शिशन या लिङ्गेन्द्रियको हाथसे पकड़ कर हिलाते या रगड़ते हैं, उससे थोड़ी देरमें एक प्रकारका आनन्द-सा आकर वीर्य निकल जाता है,—इसीको “हस्तमैथुन” या “हथरस” कहते हैं । अँगरेज़ीमें इसे मास्टरबेशन, सैल्फपौल्यूशन, डैथ डीलिंग, हैल्थ डिस्ट्राइङ्ग प्रभृति कहते हैं । इस सत्यानाशी क्रियाके करने वालेका शरीर कमजोर हो जाता है, चेहरेकी रौनकमारी जाती है, और मिज़ाज चिड़चिड़ा हो जाता है, सूरत-शकल बिगड़ जाती है, आँखें बैठ जाती हैं, मुँह लम्बा-सा हो जाता है और दृष्टि नीचेकी ओर रहती है । इस कर्मके करनेवाला सदा चिन्तित और भयभीत-सा रहता है; उसकी छाती कमजोर हो जाती है, दिल और दिमागमें ताक़त नहीं रहती; नींद कम आती है; ज़रा-सी बातसे घबरा उठता है; रातको बुरे-बुरे स्वप्न आते हैं और हाथ-पैर शीतल रहते हैं । यह तो पहले दर्जेकी बात है । अगर इस समय भी यह बुरी आदत नहीं छोड़ी जाती तो नसें खिंचने और तनने तथा सुकड़ने लगती हैं । पीछे मृगी या उन्माद आदि मानसिक रोग हो जाते हैं । इनके अलावा स्मरण-शक्ति या याददाश्त कम हो जाती है, बातें याद नहीं रहतीं, शरीरमें तेज़ी और फुरती नहीं रहती, काम-धन्धेको दिल नहीं चाहता, उत्साह नहीं होता, मन चञ्चल रहता है, बात-बातमें बहम होने लगता है, दिमागी काम तो हो ही नहीं सकते, पेशाव करनेकी इच्छा



चारम्बार होती है और पेशाबके समय कुछ दर्द भी होता है, लिङ्गका मुँह लाल-सा होजाता है, बारम्बार वीर्य गिरता है और पानीकी तरह गिरता रहता है, स्वप्नदोष होते हैं, फोतोंमें भारीपनसा जान पड़ता है । इसके बाद, धातु-सम्बन्धी और भी अनेक भयंकर रोग हो जाते हैं । इस तरह हथरस करने वाला, अपने दुर्भाग्यसे, पुरुषत्वहीन—नामर्द हो जाता है । इस कुटेवमें फँसनेवाले जवानीमें ही बूढ़े हो जाते हैं । उठते हुए लड़कों की बढ़वार रुक जाती है, शरीरकी वृद्धि और विकाशमें रुकावट हो जाती है, आँखें बैठ जाती हैं, उनके इर्द-गिर्द काले चक्करसे बन जाते हैं, नजर कमजोर हो जाती है, बाल गिर जाते हैं, गञ्ज हो जाती है, पीठके वाँसे और कमरमें दर्द होने लगता है, और बिना सहारे बैठा नहीं जाता इत्यादि । इन बुराइयोंके सिवा जननेन्द्रिय, या लिङ्गेन्द्रिय निर्बल हो जाती है, उसकी सिधाई नष्ट हो जाती है, बाँकपन या टेढ़ापन आ जाता है, शिथिलता या ढीलापन हो जाता है तथा स्त्री-सहवासकी इच्छा नहीं होती । होती भी है तो शीघ्र ही शिथिलता हो जाती है अथवा शीघ्र ही वीर्यपात होजाता है । कहाँ तक लिखें, इस एक कुचालमें अनन्त दोष हैं । नामर्दोंके जितने मुख्य-मुख्य कारण हैं, उनमें हथरस और गुदा-मैथुन सर्वोपरि हैं । इन या ऐसी ही और कुटेवोंके कारण, आज भारतके करोड़ों घर सन्तान-हीन हो गये हैं, ब्रियाँ व्यभिचारिणी और कुलटा हो गईं और हो रही हैं, अतः हम इस अध्यायमें “क्लीवता”, “नामर्दी” या “नपुन्सकत्व” और “धातुरोग” के निदान, लक्षण और चिकित्सा खूब समझा-समझाकर विस्तारसे लिखते हैं । आशा है, हमारे भारतीय भाई, हमारे इस परिश्रमसे लाभान्वित होकर, हमारी मिहनतको सफल करेंगे ।

## नपुन्सकके सामान्य लक्षण ।

( नामर्दकी मामूली पहचान )

जिस पुरुषके प्यारी और वशीभूत स्त्री हो, पर वह उससे नित्य



मैथुन न कर सके; अगर कभी करे भी तो साँस चलनेके मारे घबरा जाय, शरीर पसीने-पसीने हो जाय, इच्छा पूरी न हो, चेष्टा व्यर्थ जाय, लिङ्ग ढीला और बीज-रहित हो—जिस पुरुषमें ऐसे लक्षण हों, वह नपुंसक या नामर्द है। दूसरे शब्दों में यों समझिये कि, जो पुरुष अपनी मन-चाही, प्यारी और वशीभूत स्त्रीसे रोज़ मैथुन न कर सके; अगर कभी करे तो पसीनोंसे तर हो जाय, हाँफने लगे, जननेन्द्रिय या लिङ्ग तैयार न हो, चेष्टा करनेसे भी सफलता न हो—वह मर्द कहने भरका मर्द है, वास्तवमें “नामर्द” है।

## पुंस्त्व और नपुंसकत्वका एकमात्र कारण वीर्य ।

नपुंसकता किसे कहते हैं ?

यों तो नपुंसकता या नामर्दीके बहुतसे कारण हैं, पर असली कारण “वीर्य” है। “चरक” में लिखा है—नपुंसकता केवल वीर्य-दोष से होती है। वीर्य-दोषसे पुरुष नपुंसक हो जाता है और वीर्यकी शुद्धिसे उसकी शुद्धि हो जाती है; यानी वीर्यके शुद्ध और निर्दोष होने पर पुरुष, पुरुष हो जाता है; अर्थात् मैथुन करनेमें समर्थ हो जाता है। “भावप्रकाश” में लिखा है :—

क्लीवः स्यात्सुरताशक्तस्तद्भावः क्लैव्यमुच्यते ।

तच्च सप्तविधं प्रोक्तं निदानं तस्य कथ्यते ॥

जो पुरुष स्त्रीके साथ मैथुन नहीं कर सकता, उसे “क्लीव”—नपुंसक या हिजड़ा कहते हैं। क्लीवके भाव या धर्मको क्लैव्य या नामर्दी कहते हैं। यह क्लीवता या नामर्दी सात तरहकी होती है ।

## सात प्रकारकी नामर्दी ।

( १ ) मानसिक क्लैव्य—मन सम्बन्धी नामर्दी ।



- ( २ ) पित्तज क्लैव्य—पित्त बढ़नेकी वजहसे हुई नामर्दी ।  
 ( ३ ) वीर्यजन्य क्लैव्य—वीर्यके कारणसे हुई नामर्दी ।  
 ( ४ ) रोगजन्य क्लैव्य—रोगकी वजहसे हुई नामर्दी ।  
 ( ५ ) शिराछेदजन्य क्लैव्य—वीर्यवाहिनी नसों के छिदनेसे हुई नामर्दी ।  
 ( ६ ) शुक्रस्तम्भजन्य क्लैव्य—मैथुन न करनेसे हुई नामर्दी ।  
 ( ७ ) सहज क्लैव्य—जन्मकी या पैदायशी नामर्दी ।

## मानसिक क्लैव्य \* ।

( मनकी नामर्दी )

मैथुन करनेवाले पुरुषका मन जब भय, शोक अथवा क्रोध आदि दुःखदायी विकारोंसे बिगड़ जाता है, अथवा जिस स्त्री को पुरुष नहीं चाहता, उसके साथ मैथुन करता है, तब उसका शिश्न या लिङ्ग गिर जाता है—ढीला हो जाता है—ऐसी क्लीवता या नामर्दीको “मानसिक क्लैव्य” या मनसे सम्बन्ध रखनेवाली नामर्दी कहते हैं ।

हिकमतके ग्रन्थोंमें भी लिखा है:—“अगर दिलमें किसी प्रकारका भय या बुराई बैठ जाय अथवा स्त्रीके पास जानेवाला पुरुष मनमें पहले ही से ऐसे विचार करे कि, मैं उससे कुछ भी न कर सकूँगा अथवा शर्मा जावे—तो चैतन्यता नहीं होती—शिश्नमें तेजी और सख्ती नहीं आती । दिलमें जब बुरे विचार उठ आते हैं अथवा भय लगता है, तब अक्सर ऐसा ही हुआ करता है; चाहे शरीर पूर्णतया निरोग ही क्यों न हो, चाहे वीर्यकी अधिकता ही क्यों न हो । बहुतसे पुरुषोंका स्वभाव एक ही स्त्रीसे सहवास करनेका होता है । जब कभी वे उस स्त्रीको छोड़कर, दूसरीके पास जाते हैं,

\* क्लीव और नपुंसक शब्द संस्कृतके हैं । इनका अर्थ बोल-चालकी भाषामें “नामर्द या मुखन्नस” है । क्लैव्य और नपुंसत्व दोनों भाववाचक शब्द हैं । स्त्रीसे मैथुन न कर सकना—क्लैव्य, नपुंसकत्व, नपुंसकता या नामर्दी है ।



तब उनको कामेच्छा नहीं होती, उनका शिश्न तैयार नहीं होता । बहुत करके वह स्त्री कुँवारी और युवती हो, तब तो ऐसा अवश्य ही होता है । क्योंकि मूढ़ आदमी डर जाता है और भयके कारण उसके मनमें अरुचि उत्पन्न हो जाती है; और इसीसे उसे प्रसंगेच्छा नहीं होती । क्योंकि भय, शोक, लज्जा प्रभृति सुस्तीके ज़बर्दस्त कारण हैं । अगर पुरुष संभोगके समय भय और लज्जा न रक्खे, दिलमें हिम्मत रक्खे, तो उसे नदामत न उठानी पड़े—लज्जित न होना पड़े ।

अनेक बार जब किसी मुँहफट, बेहया, बूढ़ी, ज़बर्दस्त या दुष्टा स्त्रीसे प्रसंगका काम पड़ जाता है, तब ये स्त्रियाँ ऐसी बातें कह देती हैं, जिनसे अच्छे वीर्यवान पुरुषके दिल में भी, अपने पुरुषत्वके सम्बन्धमें, शङ्का हो जाती है, वह अपने तई नामर्द समझने लगता है; और उसका अपने तई नामर्द समझना या उन स्त्रियोंकी बातोंका उसके मन पर प्रभाव पड़ना ही, उसे सच्चा नामर्द बना भी देता है; यानी वह सब तरहसे सच्चा मर्द होनेपर भी, नामर्द हो जाता है । ऐसी बातोंका दिलपर असर होनेसे, जब कभी वह प्रसङ्गको तैयार होता है, उसे वही बातें याद आ जाती हैं । फलौं स्त्रीने यह कहा था कि, 'तुम तो किसी कामके नहीं हो, तुमसे कुछ भी नहीं हो सकता ।' ऐसा खयाल होते ही फिर प्रसङ्गके लिए शिश्न तैयार नहीं होता, लज्जा आने, रंजीदा होने, भयभीत होने या चिन्ता-मग्न होने पर, जो मैथुन करने बैठते हैं, उनके मनपर लज्जा और शोकादिका बोझा पड़नेसे चैतन्यता होती ही नहीं, अगर होती भी है; तो नहींके समान । ऐसी अवस्थामें, मूर्ख लोग यह तो नहीं समझते कि, हमें जिस वक्त किसी तरहका भय हो, लज्जा हो या चिन्ता हो, मैथुन न करना चाहिए । वे ऐसी हालतमें भी मैथुन करते हैं और सफल न होनेपर, अपने तई नामर्द मान लेते हैं । इस मान लेनेका परिणाम, उन्हें सदा—जब तक उनका वहम चला नहीं जाता—नामर्द ही बनाये रखता है । जब-जब वह मैथुन करते हैं, तभी-तभी उन्हें अपनी



नामर्दीका ध्यान हो आता है, और फिर वह नामर्दीका-सा ही काम करने लगते हैं ।

“तिब्बे अकबरी”में लिखा है—“जिस तरह हो सके, पुरुष अपने विचारोंको ठीक करे और दिल-दिमागको ताक़तवर बनानेकी चेष्टा करे, क्योंकि अगर दिल और दिमाग ही बलवान होंगे, तो फिर ऐसी बोदी बातें क्यों मनमें बैठेंगी और यह दिलकी नामर्दी क्यों पैदा होगी ?”

वैद्यको चाहिये, कि ऐसे नामर्दका इलाज हाथमें लेते ही उससे पूछ ले—“क्योंजी ! स्त्रीसे अलग रहने या सोनेकी हालतमें तो तुमको तेज़ी होती है न ? स्त्री-प्रसंगकी इच्छा होती है न ? क्योंकि मानसिक क्लीवकी स्त्रीसे अलग रहनेकी हालतमें चैतन्यता अवश्य होती है; पर औरतके सामने आते ही, वह निकम्मा हो जाता है, उसे चैतन्यता नहीं होती । स्त्री और उस पुरुष दोनोंके ही हजार कोशिश करनेपर भी चैतन्यता नहीं होती । वैद्यको जब इस बातका निश्चय हो जाय, कि यह रोगी “मानसिक क्लीव” है—मनका नामर्द है, असलमें नामर्द नहीं—तब उसकी नब्ज-नाड़ी आदि देखकर, उससे कहना चाहिये कि भाई, तुम तो पूरे मर्द हो, तुममें ज़रा भी दोष नहीं, यह सब तुम्हारे मनका वहम है । इस तरह धीरज और तसल्ली देनेके सिवा, उसे दिल-दिमाग और वीर्यको ताक़तवर और पुष्ट करनेवाली कोई अच्छी दवा भी दे देनी चाहिये, और साथ ही उस दवा की लम्बी-चौड़ी तारीफ़ भी कर देनी चाहिये । बस, इन उपायोंसे मानसिक क्लीव—मनका नामर्द चञ्चा हो जायगा ।

## पित्तज क्लैव्य ।

( पित्त-वृद्धिकी नामर्दी )

चरपरे, खट्टे, गरम और खारी प्रभृति पित्तको बढ़ानेवाले पदार्थोंके अत्यन्त खाने-पीनेसे पित्त बढ़ जाता है । पित्तके बढ़नेसे



वीर्य क्षय हो जाता है, और इसलिये पुरुष क्लीब या नपुंसक हो जाता है। इस तरह जो क्लीवता—नपुंसकता या नामर्दी होती है, उसे “पित्तज क्लैव्य” कहते हैं और जिसे यह नामर्दी होती है, उसे “पित्त-वृद्धिके कारणसे हुआ नामर्द” कहते हैं।

जिस तरह शरीरमें वीर्यकी कमी होनेसे पुरुष नामर्द हो जाता है, उसी तरह वीर्यमें विकार या दोष होनेसे भी नामर्द हो जाता है। ऐसे नामर्दोंका वीर्य एक-दम पानी-जैसा पतला हो जाता है। इसका कारण लिख आये हैं; फिर भी संक्षेपमें, कहे देते हैं। जो लोग लालमिर्च, खटाई, नमकीन, खारी और गरम तथा रूखे पदार्थ बहुत ही ज़ियादा खाते-पीते हैं, उनका पित्त बहुत ही बढ़ जाता या कृपित हो जाता है। फिर वह पित्त वीर्य पैदा करनेवाली धातुओंको ही विगाड़कर कमज़ोर कर देता है, जिससे नवीन वीर्य पैदा होनेका सोता ही बन्द हो जाता है। मौजूदा वीर्य बेकाम हो जाता है, नया पैदा नहीं होता, इससे पुरुष नामर्द हो जाता है। खुलासा यह है कि, खटाई और लालमिर्च आदि गरम चीज़ोंके ज़ियादा खाने-पीनेसे पित्त उभरकर वीर्यको सुखा या गला डालता है। जब वीर्य सूख या गल जाता है, तब इन्द्रिय-चैतन्यमें बाधा होती है। अतः जिन्हें स्त्री-सुख भोगना हो, अच्छी सन्तान पैदा करनी हो, स्त्रीको राज़ी रखना हो, वे लालमिर्च, खटाई, नमकीन, खारी और गरम पदार्थोंसे बचें। साथ ही अताइयोंकी बातोंमें आकर, धातु या वीर्य बढ़ानेको कच्ची-पक्की वज्र भस्म, शीशा भस्म, लोह भस्म आदि न खावें अथवा तेज़ी लानेको अफीम, भाँग और कुचला प्रभृतिका सेवन न करें। इनसे बड़ी हानि होती है। कच्ची भस्म या अशुद्ध भस्म नाना प्रकारके रोग कर देती हैं, जिनके कारण ज़िन्दगी ही खराब हो जाती है। नशेकी चीज़ोंसे क्षणिक उत्तेजना तो होती है; पर, फिर लोग जल्दी ही बिल्कुल नामर्द हो जाते हैं। अफीम तो नामर्द बनानेमें सबसे ऊपर है। यद्यपि अफीमसे वीर्यका स्तम्भन होता है—मैथुनमें देर



लगती हैं, पर पाँछे लगातार खानेसे देर भी नहीं लगती और शिथिलता या ढीलापन बढ़ता जाता है, मैथुनेच्छा होती ही नहीं।

वैद्यजी ! आपके हाथमें यदि नामर्द रोगी आवे, तो पहिले यह देखो कि वह किस तरहका नामर्द है। यदि वीर्यकी कमीसे नामर्द है, तो वीर्य बढ़ानेवाली दवा खिलाइये; पर साथ ही वीर्यकी कमीके कारण—अति मैथुन या शोक-चिन्ता आदिको भी बन्द कराइये। जब तक कारण नहीं त्यागे जायँगे, रोगी कभी आराम न होगा। यदि रोगी वीर्य-दोषसे नामर्द हुआ हो, तो वीर्यदोषकारक आहार-विहारोंसे रोगीको परहेज करवाइये। यदि रोगी अमृत भी खाय, पर लाल मिर्च, खटाई प्रभृति पित्तकारक पदार्थोंको न त्यागे, तो आराम हो ही नहीं सकता—उसकी पित्त-कोपसे हुई नामर्दी जा नहीं सकती।

वीर्य-दोषवाले नामर्दका वीर्य पानी-जैसा पतला या फटा हुआ सा रहता है। यह आदमी मैथुन करता है, तो शीघ्र ही स्खलित हो जाता है, कुछ भी आनन्द नहीं आता। किसी-किसीको चैतन्यता होती ही नहीं, और किसीको होती है, तो ज़रा देरमें ही फिर सुस्ती आ जाती है—मनोरथ पूरा नहीं होता। ऐसे रोगीके चित्त पर गरमी और सुस्ती रहती है, अतः उसे गरम पदार्थोंसे सदा रोकना चाहिये, क्योंकि एक तो ऐसे ही उसके चित्तपर गरमी और सुस्ती रहती है, और गरम पदार्थोंसे वह और भी बढ़ जाती है। ऐसे रोगीको तो वीर्यको शुद्ध करने और उसे बढ़ानेवाले पदार्थ या दवाएँ देनी चाहियें। नीचे लिखे हुए नुसखे ऐसे नपुंसकोंके हकमें अच्छे हैं:—

(१) बिदारीकन्दमें बिदारीकन्दकी भावना देकर, उसे यथा-विधि खिलाओ।

(२) आमलोंमें आमलोंके स्वरसकी ७ भावनाएँ देकर, और सुखाकर ना बराबर “घी-शहद”के साथ खिलाओ।

(३) बिदारीकन्द और गोखरूके एक तोले चूर्णमें बराबरकी “मिश्री” मिलाकर, तोले-भर रोज़ खिलाओ।



- ( ४ ) आमलोंका मुरब्बा चाँदीके बर्क लगाकर खिलाओ ।  
 ( ५ ) शतांवरी पाक, सेवती पाक या कूष्माण्ड पाक खिलाओ ।  
 ( ६ ) ईसबगोलकी भूसीमें बराबरकी “मिश्री” मिलाकर, ६ से १० माशे तक, फँकाओ और ऊपरसे “मिश्री मिला दूध” पिलाओ ।

नोट—हमने ये नुसखे और अन्य नुसखे, मय बनाने और खानेकी तरकीबोंके आगे लिखे हैं ।

## वीर्यजन्य क्लैव्य ।

( वीर्यकी कमीसे नामर्दी )

जो पुरुष मैथुन तो बहुत करता है, पर वीर्यको पैदा करनेवाले या बढ़ानेवाले पदार्थों अथवा बाजीकरण औषधियोंका सेवन नहीं करता, उसे मैथुनेच्छा या शहवत प्रायः नहीं होती; क्योंकि अत्यधिक स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे जो वीर्य-क्षय होता है, उसकी पूर्ति नहीं होती और तन्यता हो नहीं सकती । इस तरह, वीर्यकी

कमीसे, जो नामर्द होता है, उसे “वीर्यजन्य क्लैव” कहते हैं ।

अल्प-वीर्य नपुंसकको चैतन्यता, या शहवत तो होती है, पर बिना वीर्यपात हुए ही सुस्ती आ जाती है, लिङ्ग शिथिल या ढाला हो जाता है । बाज-बाज औक्तात वीर्य गिरता ही नहीं; अगर गिरता है, तो दो-चार बूंद मात्र । ऐसे पुरुषसे स्त्री संतुष्ट नहीं होती, अतः ऐसा मर्द नामर्द ही है ।

“तिब्बे अकबरी”में लिखा है—“जब वीर्य कम हो जाता है, तब प्रसङ्गकी इच्छा नहीं होती; क्योंकि चैतन्यताका कारण वीर्य है । वीर्य चौथे पचावका फोक है । जब भोजन अवयवोंमें बँट जाता है, तब उसका फोक रगोंसे टपक-टपक कर वीर्य पैदा करता है । वीर्य वह मल है, जिसके जमनेसे हड्डी, मिल्ली और गजरुफ प्रभृति अवयव पैदा होते हैं । वीर्यका खमीर असल दिमारासे कानके पीछेकी दोनों रगोंमें उतरकर आता है । ये दोनों रगें भेजेसे मिलकर



उत्तरी हैं और प्रत्येक प्रधान और अप्रधान अवयवकी एक शाखा इन रगोंमें आ मिली है और ये रगें फोतोंमें जा मिली हैं । ईश्वरकी महिमा है कि वह मल, जो इन रगोंमें आना है, फोतोंमें पहुँचते ही किसी क्रूर सफ़ेद और गाढ़ा हो जाता है । जिस तरह स्त्रीका खून उसकी छातियोंमें पहुँच कर, दूध बन जाता है, उसी तरह भोजनका सार इन रगोंमें पहुँचकर और वहाँसे फोतोंमें उतरकर, सफ़ेद और गाढ़ा हो जाता है ।

सभी वैद्य-हकीम कहते हैं, कि स्त्री और पुरुष दोनोंमें वीर्य है । वीर्यका मूल कानोंकी पिछली नसोंमें आता है, इसका सबूत यह है, कि जब ये दोनों कानोंके पीछेकी रगें काट डाली गईं, तब पुरुष की जनन-शक्ति जाती रही । दूसरे, इन रगोंका खून दूधके जैसा होता है । इस बातका प्रमाण, कि वीर्य प्रत्येक अवयवसे टपक-टपक कर इन दोनों नसोंमें आता है,—यह है कि, इन नसोंमें से ज़रासा भी दूध-जैसा खून निकलनेसे जितनी कमजोरी आती है, उतनी दूसरी जगहका डबल या दूना खून निकलनेसे भी नहीं आती । मतलब यह है, कि चैतन्यताका कारण “वीर्य” और उसकी कमी होनेसे चैतन्यता भी कम होती है । अगर वीर्यकी कमी होती है, तो शरीर दुबला हो जाता है, देहमें बल नहीं रहता, रङ्ग पीलासा हो जाता है, भोजनकी इच्छा कम होती है तथा शिश्न या लिंगेन्द्रिय दुर्बल और सूखीसी रहती है इत्यादि ।

जो लोग मैथुन तो दिन-रात करते हैं, पर शक्ति-वर्द्धक, धातु-पौष्टिक, बाजीकरण पदार्थोंके सेवन करनेका नाम भी नहीं लेते, वे वीर्य-भण्डारके कम होनेसे नामर्द हो जाते हैं । बहुतसे मूर्ख, दिनमें दो-दो और तीन-तीन बार, वीर्यको हस्तमैथुन या हथरस से निकाल कर वीर्यके फ़कीर हो जाते हैं । आयुर्वेद में, ७० सालकी उम्रके बाद, वीर्यका एक दम कम हो जाना लिखा है; पर आजकल तो ५० या ६० सालकी उम्रमें ही पुरुष निकम्मे और वीर्यहीन हो जाते हैं ।



अगर लोग, हर शीतकाल या जाड़ेमें, धातुवर्द्धक औषधियाँ सेवन करते रहें, तो उनका वीर्य कम न हो और वे ६० सालकी उम्र में भी संसारका सुख अच्छी तरहसे भोगते रहें। पर, आजकल तो लोग पैसेकी धुनमें ऐसे मस्त रहते हैं कि, उन्हें अपने शरीरका भी ध्यान नहीं रहता। जो लोग वीर्यको खर्च तो करते हैं, पर बढ़ाते नहीं, वे शीघ्र ही—असमयमें ही—मर जाते हैं। सबसे बड़ी दुख-की बात यह होती है कि, अधिकांश लोग एक स्त्रीके मर जाने पर दूसरी शादी ४०-५० या ६० सालकी उम्रमें भी कर लेते हैं। शादीमें हजारों खर्च कर देते हैं, पर जिस वीर्यसे शादीका आनन्द मिलता है, जिससे पुत्ररत्नकी प्राप्ति होती है, उसकी वृद्धिका उपाय नहीं करते ! अभी हालकी एक आँखों-देखी घटना पाठकोंको सुनाते हैं:—

हमारे पड़ोसमें एक.....सज्जन रहते हैं। आपने कोई ४५ साल की उम्रमें दूसरी शादी की है। चौदह सालकी नई दुलहन आई है। आपने कोई पाँच-छै महीने खूब चरखा चलाया। सारा संचित वीर्य-भण्डार खाली कर दिया। अब वे निकम्मे हो गये हैं। उनकी नव पार-णीता पीन-यौधरा, नव-यौवना, नवेली छबीली दूसरोंके काम आरही है। आप उसे खान-पान और वस्त्रालङ्कारोंसे सन्तुष्ट करनेके लिए खूब धन खर्च करते हैं; पर धनसे भी कहीं स्त्री सन्तुष्ट होती है ? वह जितना ही अधिक खाती-पीती है, उतनी ही उसकी कामाग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित होती है। धिक्कार है उनको, जो चढ़ी उम्रमें शादी करते और उनसे भी अधिक उन्हें, जो शादी तो करते हैं, पर बाजीकरण औषधियाँ सेवन नहीं करते।

ऐसे नामर्द अगर वैद्यके पास चिकित्सार्थ आवें, तो वैद्यको चाहिये कि उन्हें स्त्रीके पास जानेकी सख्त मनाही करदे, और निम्न-लिखित बल-वीर्य्य बढ़ाने वाले, वायुनाशक, तर-गरम पदार्थ सेवन करनेकी सलाह दें:—



( १ ) दूध, घी, रबड़ी, मलाई, मोहनभोग आदि ।

( २ ) उर्दकी दालकी खीर ।

( ३ ) उर्दके लड्डू ।

( ४ ) आम्रपाक ।

( ५ ) असगन्धपाक ।

( ६ ) मूसलीपाक ।

( ७ ) बादामका हलवा ।

( ८ ) मलाईका हलवा ।

( ९ ) गोखरूपाक ।

नोट—ये सब पदार्थ और पाक प्रभृति तो वीर्यजन्य नामर्दी नाश करनेके लिये अच्छे हैं ही । इनके सिवा, और भी अनेक नुसखे हमने बल-वीर्य बढ़ानेवाले आगे लिखे हैं । इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि, वीर्यकी कमीवालेको प्रमे शक पदार्थ या दवाएँ भूलकर भी न दी जायँ एवं धातु-मस्म आदि न दी जायँ । इस थोड़े वीर्यकी नामर्दीके रोगमें, वायुनाशक, तृ गरम और वीर्य-वर्द्धक पदार्थ अतीव हितकर हैं ।

## रोगजन्य क्लैव्य ।

( रोगोंसे नामर्दी )

लिंगेन्द्रियमें किसी प्रकारका भयङ्कर रोग होने या अन्य रोगोंके कारणसे जो नामर्दी होती है, उसे “रोगजन्य क्लैव्य” या रोगकी वजहसे हुई नामर्दी कहते हैं ।

खुलासा यह है, कि जिनको सोजाक या उपदंश आदि रोग हो जाते हैं, उनको स्वप्रदोष, वीर्यक्षय या प्रमेह प्रभृति रोग हो जाते हैं । इससे उनका वीर्य दिन-दिन क्षीजता और कम होता रहता है; साथ ही वीर्यमें दोष भी हो जाते हैं । इसलिये ऐसे लोग नामर्द हो जाते हैं; मैथुनके समय उनको लिंगेन्द्रिय जवाब दे देती है ।



बेचारे बड़ी-बड़ी कोशिशें करते हैं, पर सफल काम नहीं होते । स्त्रियोंसे लज्जित होकर, हकीम, वैद्य या डाक्टरोंकी खोज करते हैं । अगर किसी अनाड़ी या अताईसे पाला पड़ जाता है, तब तो हालत पहलेसे भी खराब हो जाती है । उस समय ये लोग एक और बड़ी बात यह करते हैं, कि दस-पाँच दिनमें ही मर्द बनकर प्राणवल्लभाको सन्तुष्ट करना चाहते हैं । पर असम्भव सम्भव कैसे हो सकता है ? दो-चार लालची और स्वार्थी चिकित्सकोंसे ठगाकर निराश हो जाते हैं और फिर दवाका नाम भी नहीं लेते । इस तरह, इस जगत्में आकर भी संसार-सुखसे वञ्चित रहते हैं । ऐसे नामर्दोंकी आजकल भारतमें कमी नहीं ।

“तिब्बे अकबरी”में लिखा है:—बहुत ही ज़ियादा मिहनत करने, बहुत समय तक बीमार रहने, बहुत भूखों मरने और स्वाभाविक गरमीको दूर करनेवाले पदार्थोंके सेवन करनेसे हृदयमें दुर्बलता हो जाती है । दिल और दिमागके कमजोर होनेसे कामोत्पादक-शक्ति उत्पन्न नहीं होती—शहवत या प्रसंगेच्छा नहीं होती । ऐसे पुरुषकी नाड़ीमें गरमी और कमजोरी होती है । वह स्त्री-प्रसंग बहुत ही कम कर सकता है । यदि कभी करता है, तो चित्तमें प्रसन्नता नहीं होती । प्रसंगके बाद मूर्च्छा या बेहोशी सी आती और व्यास लगती है । ऐसा पुरुष, लज्जा और भयके विचारोंसे, सम्भोग करनेसे रुक जाता है; क्योंकि ऐसे पुरुषके दिलदिमाग कमजोर होजाते हैं ।

“इस दशामें, जैसा कारण हो उसके अनुसार, दिलको मजबूत करना चाहिये; अर्थात् दिलको ताकत बरखशनेवाली या हृदयको बलवान् करनेवाली पुष्टिकारक दवाएँ सेवन करनी चाहिएँ । शोक-फिक्क और चिन्तासे बचना चाहिये । रूपवती सुन्दरी स्त्री अपने पास रखनी चाहिए, क्योंकि काम-शक्ति बढ़ानेमें मनमोहिनी सुन्दरी स्त्रीके समान और दवा नहीं है ।



“आमाशय या कलेजेके कमजोर हो जानेसे भी नामर्दी हो जाती है । इनके कमजोर होनेसे अच्छा खून बहुत कम बनता है, इसीसे वीर्य भी कम तैयार होता है; क्योंकि वीर्य तो खूनसे ही तैयार होता है । वीर्य तैयार नहीं होता, इसीसे सम्भोग-शक्ति घट जाती है । इस हालतमें भोजन या अन्य विषयोंकी इच्छा कम हो जाती है; पाचनशक्ति निर्बल हो जाती है तथा प्रकृतिके अन्य उपद्रव उठ खड़े होते हैं । इस दशामें, कारणके अनुसार, दोषी अवयव और उसकी प्रकृतिको बलवान और ठीक करना उचित है ।

“दिमागकी कमजोरीसे भी नामर्दीका तत्फलुक है । जब दिमाग कमजोर हो जाता है, तब काम-शक्ति बढ़ानेवाला ‘मल’ मूत्रेन्द्रिय तक नहीं पहुँचता, उससे मूत्रेन्द्रिय या लिंगको वीर्यका ज्ञान नहीं होता, और जब तक लिंगको वीर्यके खटके नहीं मालूम होते—मैथुनेच्छा हो नहीं सकती । इस दशामें, इन्द्रियाँ ज्ञानशून्य हो जाती हैं, सुस्ती घेर लेती है और प्रसंगकी इच्छा एकदम कम हो जाती है । दिमागकी कमजोरीवाले नपुंसकको रातमें जागनेसे नुक्सान पहुँचता है; पर गरमीसे लाभ पहुँचता है । अगर रोग गरमीसे होता है, तो गरमीसे हानि होती है; पर, अगर रोग तरीसे होता है, तो तरीसे हानि होती है और हम्माम या स्नानागारमें संभोगकी इच्छा नहीं होती, किन्तु तरीसे रोग होनेपर, खुश्क चीजोंसे लाभ होता है । अगर दिमागमें खुश्की होती है, तो तर पदार्थोंसे लाभ होता है । इस दशामें, कारणके विरुद्ध, गरमी और सर्दीका ख्याल करके, दिमाग या मस्तिष्कको बलवान करनेवाली माजून, पाक या चूर्ण सेवन करानेसे लाभ होता है ।

‘गुर्देमें कमजोरी होने या कोई और रोग होनेसे भी पुरुषकी प्रसंगेच्छा कम हो जाती है । जब तक गुर्दे बलवान नहीं होते, प्रसंगेच्छा भी बलवती नहीं होती । गुर्दे जितने ही बलवान होते



हैं, चैतन्यता उतनी ही अधिक होती है। 'अस्वाव'का लेखक लिखता है—वीर्यका मैल, नलियों द्वारा, कलेजेसे गुर्दोंकी तरफ जाता है और इन्हींमें पानीसे साफ होता है। गुर्दोंसे वह उस नलीमें जाता है, जो गुर्दों और फोतोंके दम्यांन है। इस नलीमें बहुतसे गोल-गोल चक्कर पड़े हुए हैं। इनमें वीर्य पकता और सफेद होकर फोतोंमें जाता है। गुर्दोंकी गर्मीसे ही वीर्य बन जाता है; इसीसे जिसके गुर्दोंमें बीचके दर्जेकी गर्मी होती है, वह वीर्यवान और अधिक सम्भोग शक्तिवाला होता है। अगर गुर्दोंमें कमजोरी या कोई रोग हो, तो गुर्दोंका इलाज करना चाहिये। इनके निरोग और बलवान होते ही, नामर्दी नाश होकर, पुंसकत्व प्राप्त होता है।”

## शिराछेदजन्य क्लैव्य ।

( नस काटनेसे नामर्दी )

किसी कारणसे वीर्यवाहिनी नसोंके छिद जाने या कट जानेसे भी लिंगमें चैतन्यता नहीं होती। ऐसी नामर्दीको “शिराछेदजन्य क्लैव्य” या “नस छिदनेसे हुई नामर्दी” कहते हैं।

यही बात, उधर, हम “तिब्बे अकवरी”के हवालेसे लिख आये हैं, कि, कानके पीछेकी ये दोनों नसें, जो फोतों तक गई हैं, अगर काट दी जाती हैं, तो पुरुष की काम-शक्ति नष्ट हो जाती है; क्योंकि ये दोनों नसें वीर्य-वाहिनी हैं। शरीरके समस्त अङ्गोंसे वीर्य बननेका मसाला इनमें टपक-टपककर आता है और इनके द्वारा गुर्दोंमें होकर और पककर फोतोंमें पहुँचता और वहाँ गाढ़ा होता है। अगर ये दोनों नसें कट जायँ या छिद जायँ, तो पुरुषमें पुंसत्व कैसे रह सकता है ?

हमारे यहाँ भी लिखा है, वीर्य-वाहिनी नसों और मर्म-स्थानोंके



कट जाने, छिद जाने, टूट-फूट जाने, फोतोंके कुचल जाने, गुदा और फोतोंके बीचकी नसके कट जाने, कानके पीछेकी नसके कट जाने आदिसे भी पुरुष नामर्द हो जाता है। ऐसे नामर्द का इलाज होना असम्भव है। इसीसे हम यहाँ कोई उपाय नहीं लिखते।

नोट—“ब्रह्मसेन”में लिखा है—“महतामेद्ररोगेण चतुर्थी क्लीवता भवेत्” यानी लिङ्गके बहुत बड़े होनेके कारण चौथी क्लीवता—नपुंसकता—होती है।

## शुक्रस्तम्भ क्लैव्य ।

( वीर्यके रुकनेसे नामर्दी )

जिस पुरुषका शरीर दृष्ट-पुष्ट हो, जिसे काम सताता हो, स्त्री-प्रसंगकी इच्छा होती हो; पर वह पुरुष मैथुन न करे, इस कारण से यानी बारम्बार रुकनेसे वीर्य हर्षको प्राप्त नहीं होता। जब वीर्यमें हर्ष नहीं होता, तब चैतन्यता कैसे हो सकती है? यानी पहले तो मन चलनेपर भी स्त्री-प्रसंग नहीं करता, किन्तु जब वीर्य शान्त हो जाता है, तब फिर करना चाहता है; उस समय लिङ्गमें तेजी नहीं आती और इस वजहसे वह मैथुन कर नहीं सकता; इसीसे ऐसी नामर्दीको “शुक्रस्तम्भ क्लैव्य” या “वीर्य रुकनेकी नामर्दी” कहते हैं।

खुलासा यों समझिये, कि वीर्यके रुके रहने, कभी भी स्त्रियोंका ध्यान न करने, स्त्रियोंकी बात न करने और उन्हें न देखने और न छूने प्रभृति कारणोंसे वीर्य स्थिर हो जाता है—अपने स्थानसे चलायमान नहीं होता; इससे पुरुषके चेहरेपर खूब तेज और कान्ति होनेपर भी, शरीर मजबूत और बलवान होनेपर भी, वह स्त्री-प्रसंग कर नहीं सकता; क्योंकि बिना वीर्यके लिङ्गमें चैतन्यता, तेजी और सख्ती हो नहीं सकती।



ऐसे नामर्दका इलाज दवा-दारुसे हो नहीं सकता । ऐसे रोगीको नाच-गाना देखना, हल्की बढ़िया शराब पीना, स्त्रियोंको चुम्बन और मर्दन करना, मनोहर उपन्यास या शृङ्गार रसकी पुस्तकें पढ़ना प्रभृति कर्म हितकर हैं । ऐसे-ऐसे कामोंसे वीर्य पतला होकर, अपनी जगहसे चलने लगता और फिर चैतन्यता होकर स्त्रीके पास जानेकी इच्छा होने लगती है । बस, इस तरह ऐसी नामर्दी चली जाती है ।

“तिब्बे अकबरी”में लिखा है—“जब वीर्य अपनी जगहपर रुका रहता है, अपने स्थानसे नहीं चलता, तब चैतन्यता नहीं होती और पुरुष नामर्द-सा हो जाता है । यह हालत अक्सर उनकी होती है, जो भौंग, चरस, अफीम और पोस्ता प्रभृति बहुत ही ज़ियादा खाते-पीते हैं । ऐसे लोगोंका वीर्य अधिक निकलता है और गाढ़ा तथा ठिठरासा होता है । उन्हें पूरी रुकावट नहीं होती, पर वीर्य बड़ी मिहनतके बाद गिरता है, जिससे थकाई और बेचैनी बहुत जान पड़ती है । इस हालतमें, वीर्यको गरम और उत्तेजित करनेवाली दवायें या अन्य पदार्थ सेवन करनेसे लाभ होता है । जैसे—जरुनी, माजून लवूब, माजून बुजूर प्रभृति खिलानी चाहियें । अथवा गोखरू और सोंठके काढ़ेमें, ताजा दूध और अखरोटका तेल मिलाकर हुकने करने चाहिएँ अथवा बिनौलोंकी मींगी, अकरकरा, बहरोजा, शेरकी चर्बी और नारियलका तेल मिलाकर, एक कपड़ा उसमें भिगोकर, उस कपड़ेको गुदामें रखना चाहिये ।”

“तिब्बे अकबरी” में और भी लिखा है—“बहुत समय तक स्त्रीसङ्गका मौक्का न पड़नेसे वीर्यकी पैदाइश उसी तरह बन्द हो जाती है, जिस तरह बालकका दूध छुड़ानेके पीछे, दूध की उत्पत्ति बन्दहो जाती है, यानी जिस तरह स्त्री अपने हालके पैदा हुए बच्चेको यदि दस-बीस दिन दूध नहीं पिलाती, तो फिर उसके स्तनोंमें दूध नहीं आता । बस, ठीक इसी तरह अगर पुरुष बहुत दिनों तक



स्त्री-प्रसङ्ग नहीं करता, तो उसके शरीरमें वीर्यकी उत्पत्ति बन्द हो जाती है। ऐसा पुरुष अगर मैथुन करना चाहता है, तो उसका लिङ्ग चैतन्य नहीं होता, इससे वह नामर्द कहलाता है। इस दशामें चैतन्यता और उत्तेजना पैदा करनेवाले पदार्थ काममें लाना हित है। जैसे:—

( १ ) सुरीले गलेवाली कोकिल-कण्ठी स्त्रियोंके गीत सुनना ।

( २ ) सितार और तम्बूरा सुनना ।

( ३ ) पशुओंको सम्भोग करते देखना ।

( ४ ) स्त्रियोंकी बातें सुनना ।

( ५ ) खूबसूरत स्त्रियोंको देखना, उनसे हँसना, बोलना और उन्हें चूमना प्रभृति ।

( ६ ) रसीली पुस्तकें पढ़ना ।

( ७ ) कामोद्दीपक पदार्थ खाना । जैसे; अण्डोंकी जर्दी, बकरी या सुर्गीके बच्चोंका मांस प्रभृति ।

( ८ ) सौसनका तेल, खेरीका तेल, मोम और बैलका पित्ता—इन चारोंको मिलाकर फोतों और पेड़ों पर मलना अथवा “अकरकरा” बिनौलोंके तेलमें मिलाकर मलना ।

( ९ ) लिङ्गेन्द्रियको सख्त करनेके लिए “फरफयून, मुश्क—कस्तूरी और अकरकरा” इन तीनोंको एक-एक माशे लेकर, जम्बकके तेल या चमेलीके तेलमें मिलाकर, लिङ्गके अगले भागको छोड़कर, ऊपरी भाग पर मलना चाहिये ।

( १० ) हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है, शरीरका जो अवयव जिस कामके लिए बनाया गया है, अगर उससे वही काम लिया जाय, तब तो वह बलवान और कामका बना रहता है; अगर उससे वह काम नहीं लिया जाता, तो वह कमजोर हो जाता है। इसी वजहसे हकीमोंने लिखा है कि, सम्भोग करनेसे मनुष्य बलवान और



हृष्ट-पुष्ट रहता है और सम्भोग न करनेसे कमजोर और दुबला हो जाता है । असल बात यह है कि, बहुत दिनों तक सम्भोग न करनेसे मूत्रनली या लिङ्गेन्द्रिय सुकड़ जाती है । इस दशामें, कुछ गरम जल मूत्रनलीपर डालना चाहिये । इससे छेद नर्म और ढीले होते तथा तरी पहुँचती है । इसके बाद, मूत्र-स्थानके चारों ओर “भेड़का दूध” धीरे-धीरे मलना चाहिए ।

## सहज क्लीव ।

( जन्म का नामर्द )

जो पुरुष जन्मसे ही क्लीव या नामर्द होता है, उसे “सहज क्लीव” या “जन्मका नामर्द” कहते हैं ।

माता-पिताके वीर्य-दोष या गर्भके विकारसे “सहज क्लीव” या जन्मके नामर्द पैदा होते हैं । आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है कि, माँ-बापके वीर्य-दोषसे, पूर्व-जन्मके पापोंसे, गर्भमें वीर्य वहनेवाली नसोंमें दोष होनेसे, वीर्यके सूख जानेसे वीर्यका क्षय होता है । इस तरह जो बालक पैदा होते हैं, उनके पुरुष-चिह्न—शिश्र नहीं होता । उनको हिजड़ा, जनखा या मुखन्नस कहते हैं । उनके पुरुष-चिह्न नहीं होता । दूसरे वह होते हैं, जिनके पुरुष-चिह्न तो होता है, पर वह निर्जीव या निकम्मा होता है—खाली पेशाब करनेके कामका होता है । ऐसे जन्मके नामर्दोंका इलाज हो नहीं सकता; इससे चरक-सुश्रुतादिने जन्मके नामर्दको असाध्य या लाइलाज कहा है । पूर्व-आयुर्वेद-आचार्योंने लिखा है:—

असाध्यं सहज क्लीवमंगच्छेदाच्चयद् भवेत् ।



सब तरहके नामर्दोंमें, जन्मके नामर्द और नस कट जाने या लिङ्ग अथवा फोतोंके पिस जाने प्रभृतिसे हुए नामर्दोंका इलाज हो नहीं सकता । ये असाध्य हैं । इन दोनोंको छोड़कर, बाक़ी पाँचों प्रकारके नामर्दोंका इलाज हो सकता है ।

नोट—सुश्रुतमें कहे हुए आसेक्य, ईर्ष्यक, कुम्भिक, महाषण्ड और सौगन्धिक नपुंसक इसी जन्मके नामर्दोंके भेद हैं । क्योंकि ये पाँचों नपुंसक भी जन्मसे ही नपुंसक होते हैं । ध्वजभङ्ग नपुंसकके भी पाँच भेद होते हैं । इनका जिक्र हम यहाँ करेंगे, क्योंकि ये भी जन्मसे ही ऐसे होते हैं ।

सुश्रुतमें कहे हुए पाँच तरहके नपुंसक ।

### ( १ ) आसेक्य नपुंसक ।

माता-पिताके अत्यल्प—बहुत ही कम वीर्य होनेपर भी यदि गर्भ रह जाता है, तो “आसेक्य नपुंसक” पैदा होता है । ऐसा पैदा हुआ लड़का दूसरे पुरुषसे अपने मुँहमें मैथुन कराता है । जब मैथुन कराने वालेका वीर्य गिरता है, तब वह नपुंसक उसे खा जाता है । उस वीर्यके खा लेनेसे उस नपुंसकका लिङ्ग चैतन्य होता है और तब वह अपनी स्त्रीसे मैथुन करता है । ऐसे नपुंसकको “मुख-योनि” भी कहते हैं ।

### ( २ ) ईर्ष्यक नपुंसक ।

जो मनुष्य अपने-आप मैथुन कर नहीं सकता, पर जब वह किसी दूसरेको मैथुन करते देखता है, तब मैथुन करने लगता है । यानी दूसरेको मैथुन करते देखकर, उसके लिङ्गमें चैतन्यता होती है । उसे “ईर्ष्यक नपुंसक” या “दृग्योनि” कहते हैं ।

### ( ३ ) कुम्भीक नपुंसक ।

जो पुरुष बिना स्वयं गुदा-मैथुन कराये अपनी स्त्रीसे मैथुन



नहीं कर सकता, उसे “कुम्भीक नपुन्सक” कहते हैं । कुम्भीक नपुन्सक इच्छा करनेसे, अपनी स्त्रीके साथ संगम कर नहीं सकता । जब उसे मैथुन करना होता है, तब वह पहले किसी दूसरे पुरुषसे अपनी गुदा-भञ्जन कराता है । गुदा-भञ्जनसे उसकी इन्द्रिय चैतन्य होती है । इसके बाद वह स्त्रीसे मैथुन करता है । कोई-कोई यह कहते हैं कि जो पुरुष लौंडेबाज होते हैं, वे अपने शिथिल लिङ्गसे पहले स्त्रीसे गुदा-मैथुन करते हैं, तब कहीं उनके लिङ्गमें तेजी आती है । इसके बाद वह स्त्रीसे योनि-मैथुन करते हैं । ऐसे पुरुषोंको “कुम्भीक नपुन्सक” और “गुदयोनि” भी कहते हैं ।

कुम्भीक नपुन्सक कैसे पैदा होते हैं, इस विषयमें काश्यपने कहा है कि, ऋतुकालमें श्लेष्म रेतवाला पुरुष यदि अल्प रजवाली स्त्रीसे मैथुन करता है, तो उस स्त्रीकी काम-शान्ति नहीं होती—अतः वह दूसरे पुरुषसे मैथुन करनेकी इच्छा करती है । उसके जो पुत्र पैदा होता है, वह “कुम्भीक नपुन्सक” पैदा होता है ।

### ( ४ ) महाषण्ड नपुन्सक ।

जो पुरुष ऋतुकालमें—मैथुनके समय—आप स्त्रीके नीचे सोता है और स्त्रीको अपने ऊपर चढ़ाकर मैथुन कराता है या आप नीचेसे मैथुन करता है, उससे यदि गर्भ रह जाता है, तो जो पुत्र पैदा होता है, उसकी सारी चेष्टायें स्त्रीकी-सी होती हैं । वह लड़का स्त्रीकी तरह आप नीचे सोकर, अपने लिङ्गपर दूसरे पुरुषसे वीर्य गिरवाता है । ऐसे नपुन्सकको “महाषण्ड नपुन्सक” कहते हैं ।

नोट—महाषण्ड नपुन्सक दो तरहके होते हैं । उनमेंसे एकके सम्बन्धमें ऊपर लिख ही आये हैं । दूसरा यह है कि स्त्री ऊपर और पुरुष नीचे—इस तरह



गर्भ रहनेसे अगर कन्या पैदा होती है, तो उस कन्याकी सारी चेष्टाएँ पुरुषके जैसी होती हैं; यानी वह दूसरी स्त्रियोंको अपने नीचे सुलाकर, मर्दकी तरह, अपनी योनिसे उसकी योनि को रगड़ती है। ऐसी स्त्रीको “नारी षण्ड नपुन्सक” कहते हैं। अगर इस तरह दो स्त्रियाँ भगसे भगको रगड़कर मैथुन करती हैं, तो दोनोंका रज गिरता है और उससे अगर गर्भ रह जाता है तो पैदा होने वाली सन्तानके शरीरमें हड्डियाँ नहीं होतीं। वह पैदा हुई सन्तान अपने हाथ-पैर नहीं समेट सकती; दूसरा कोई उसके हाथ-पैरोंको चाहे जिस ओर भुकादे। ऐसे बालक पैदा होनेकी खबरें अक्सर अखबारोंमें छपती रहती हैं। ऐसे बालक जीते नहीं; कोई पैदा होते ही और कोई एक-दो दिन जीकर मर जाते हैं।

## ( ५ ) सौगन्धिक नपुन्सक ।

जो पुरुष दुष्ट योनिमें पैदा होता है, उसके लिङ्गमें, दूसरेका लिङ्ग और योनि सूँघनेसे चैतन्यता आती है; यानी जब वह दूसरेके लिङ्ग और योनि को सूँघता है, तब उसका लिङ्ग तैयार होता है। ऐसे नपुन्सकको “सौगन्धिक नपुन्सक” और “नासायोनि” भी कहते हैं।

नोट—आसेक्य, सौगन्धिक, कुम्भिक और ईर्ष्यक—चारों नपुन्सकोंमें वीर्य होता है, केवल “महाषण्ड” में वीर्य नहीं होता। वीर्य होनेपर भी उन चारोंको नपुन्सक इसलिए कहते हैं कि, वे बिना वेजा कामोंके मैथुन कर नहीं सकते। खुलासा यह है कि आसेक्य, सौगन्धिक, कुम्भिक और ईर्ष्यक इन चारों तरहके पुरुषोंमें तो वीर्य रहता है; किन्तु षण्ड नपुन्सकमें वीर्य नहीं रहता इसीलिए षण्ड-नपुन्सक असाध्य होता है। कोई-कोई यह सन्देह करते हैं कि, यदि षण्ड-नपुन्सकमें वीर्य नहीं रहता, तो वह जीता कैसे है? अगर उसमें वीर्य नहीं होता, तो उसे जीना भी न चाहिये। यह शंका फ़िजूल है। इस सन्देहमें तत्व नहीं। हरएक मर्दमें दो तरहका वीर्य रहता है:—( १ ) एक तो वह जो स्त्रीसे मैथुन करनेके समय गिरता है, और ( २ ) दूसरा वह जो ज़िन्दगीको कायम रखता और शरीरको पोषता और बढ़ाता है। षण्ड पुरुषमें स्त्रीसे मैथुन करने लायक वीर्य नहीं रहता, लेकिन ज़िन्दगी कायम रखने लायक—जीवनोपयोगी—सूक्ष्म वीर्य रहता है। उसीसे षण्ड-पुरुष जीता और बढ़ता है।



“चरक” से

## नपुन्सकोंके और चार भेद ।

महर्षि चरकने नपुन्सक चार तरहके माने हैं । जैसे:—

( १ ) बीजोपघात क्लीव ।

( २ ) ध्वजभंग क्लीव ।

( ३ ) जरासम्भव क्लीव ।

( ४ ) वीर्य-क्षय क्लीव ।

नोट—( १ ) जो वीर्यमें किसी तरहका विकार होनेसे मैथुन नहीं कर सकता, उसे “बीजोपघात क्लीव” कहते हैं । ( २ ) जो लिङ्गमें सूजन, फोड़े-फुन्सी या और रोग होनेसे मैथुन नहीं कर सकता, उसे “ध्वजभङ्ग क्लीव” कहते हैं । ( ३ ) जो बुढ़ापेके कारण, वीर्य क्षय होनेसे, मैथुन नहीं कर सकता उसे “जरासम्भव क्लीव” कहते हैं । ( ४ ) जो पुरुष चिन्ता, मय और क्रोध आदिसे वीर्य क्षय हो जानेके कारण मैथुन नहीं कर सकता, उसे “वीर्यक्षय क्लीव” कहते हैं ।

## ( १ ) बीजोपघात क्लीव ।

जो बीजके उपघात या वीर्यमें किसी तरहका विकार होनेसे मैथुन नहीं कर सकता, जिसके वीर्यका रङ्ग पीला हो जाता है, शरीर कमजोर हो जाता है और पीलिया, तमकश्वास, कामला, अनायास श्रम—थकान आदिसे पीड़ित होता है—उसे “बीजोपघात क्लीव” कहते हैं ।

## कारण ।

नीचे लिखे कारणोंसे बीजोपघात क्लीवता पैदा होती है:—

( १ ) ठण्डे, सूखे और खट्टे पदार्थ खानेसे ।

( २ ) विरुद्ध भोजन करनेसे । जैसे दूध मछली एक साथ खाना ।



- (३) कच्चा अन्न या खट्टे, कषैले और चरपरे पदार्थ खानेसे ।
- (४) बहुत ही शोच-फिक्र या चिन्ता करनेसे ।
- (५) हर समय भयभीत रहनेसे ।
- (६) बहुत ही जियादा स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे ।
- (७) दुश्मनके जादू टोनेसे ।
- (८) शरीरमें रस-रक्त आदि धातुओंकी कमी होनेसे ।
- (९) बहुत ही जियादा मिहनत करनेसे ।
- (१०) स्त्रीके आनन्दको न समझनेसे ।
- (११) वमन-विरेचन आदिमें गड़बड़ होनेसे ।
- (१२) वात, पित्त और कफके बढ़नेसे ।
- (१३) व्रत-उपवास प्रभृति करनेसे ।
- (१४) काम-कला न जाननेवाली स्त्री के साथ भोग करनेसे ।

सारांश यह है कि, रूखे-सूखे, खट्टे-खारी, कषैले और चरपरे पदार्थ खाने, रात-दिन चिन्तामें डूबे रहने, डरने, व्रत-उपवास करने, जियादा मिहनत करने, स्त्रीसे सदा अलग रहने आदि कारणोंसे पुरुषका वीर्य दूषित या विकृत हो जाता है, अतः संसार-सुख-भोगनेकी इच्छा रखनेवाले पुरुषोंको उपरोक्त कारणोंसे सदा बचना चाहिये । हमने आंखोंसे देखा है, अब्बल दरजेके कामी पुरुष चिन्ता-फिक्रमें गार्क रहने, डरने और अत्यधिक परिश्रम करनेसे साफ नपुंसक होगये । जिनसे एक दिन भी स्त्री बिना न रहा जाता था, वे महीनों स्त्रीका नाम नहीं लेते । यदि कभी स्त्री बेचारी इच्छा करती भी है, तो आपको झूँझल आती है । सचमुच ही अधिक चिन्ता, क्रोध, व्रत, उपवास और अत्यधिक परिश्रम पुरुषके पुंस्त्वके शत्रु या मर्दको नामर्द बनानेवाले हैं ।

चिकित्सा—जिन कारणोंसे रोग हुआ हो, उनको त्यागो और वीर्यको शुद्ध करनेवाली तथा बढ़ानेवाली चीजें या दवाइयाँ खाओ ।



## ध्वजभङ्ग क्लीव ।

जिसे ध्वजभङ्ग रोग होता है, उस पुरुषके लिङ्गमें सूजन और पीड़ा होती है, लिङ्गका रङ्ग सुर्ख होता है, उसपर फोड़े-फुन्सी होते हैं, मांस बढ़ जाता है, चाँवलोंके माँड़-जैसा अथवा काला और लाल पदार्थ लिङ्गसे गिरता रहता है, अथवा काला, नीला, लाल और खराब खून निकला करता है । लिङ्ग आगसे जला-सा हो जाता है, मूत्राशय, फोते और जाँघोंके जोड़ोंमें घोर दाह—जलन और पीड़ा होती है, लिङ्गसे कभी गाढ़ा और कभी पीला पदार्थ गिरता है, सूजन गीली और मन्दी होती है, मवाद थोड़ा निकलता है और सूजन देरमें पकती है और कभी जल्दी ही पक जाती है, लिङ्गमें कीड़े पड़ जाते हैं, बदबू आती है, सुपारी गल जाती है, लिङ्ग और फोते दोनों गलकर गिर जाते हैं तथा लिङ्ग सुकड़कर ऐसा गोल मटोल हो जाता है, कि पकड़नेमें नहीं आता । ध्वजभङ्ग रोगीको ज्वर, श्वास, भ्रम, मूर्च्छा और वमन प्रभृति रोग भी सताते हैं ।

## कारण

ध्वजभङ्ग क्लीवताके नीचे लिखे कारण हैं:—

- ( १ ) खट्टे, खारी और नमकीन पदार्थ खाना ।
- ( २ ) विरुद्ध भोजन करना ।
- ( ३ ) कच्चा अन्न खाना ।
- ( ४ ) पानी बहुत पीना या खराब पानी पीना ।
- ( ५ ) विषम अन्न और भारी यानी देरमें पचनेवाली चीजें खाना ।
- ( ६ ) दही, दूध और अनूपदेशके पशुओंका मांस अधिक खाना ।
- ( ७ ) किसी रोगसे दुबला हो जाना ।
- ( ८ ) कम-उम्र लड़की या कन्यासे ( जो रजस्वला न हुई हो ) मैथुन करना ।



- ( ६ ) जिस स्त्रीके योनि न हो, उससे मैथुन करना ।
- ( १० ) गुदा-मैथुन करना ।
- ( ११ ) जिसकी योनिपर बड़े-बड़े बाल हों, उससे मैथुन करना ।
- ( १२ ) जिस स्त्रीने बहुत दिनोंसे यानी दो-चार सालसे मैथुन न किया हो, उससे मैथुन करना ।
- ( १३ ) रजस्वलासे मैथुन करना ।
- ( १४ ) बदबूदार योनिमें मैथुन करना यानी जिस स्त्रीकी योनिमें बदबू आती हो उससे मैथुन करना ।
- ( १५ ) सोमरोग वाली या जिसकी योनिसे पानी-जैसा पदार्थ बहता हो उस स्त्रीसे मैथुन करना ।
- ( १६ ) मतवालेकी तरह मैथुन करना ।
- ( १७ ) अतिहर्षसे मैथुन करना ।
- ( १८ ) गधी, घोड़ी, गाय, भैंस आदिसे मैथुन करना ।
- ( १९ ) लिङ्गमें किसी तरह चोट लगाना ।
- ( २० ) लिङ्गको रोज न धोना । उसपर मैल जम जाना ।
- ( २१ ) चाकू, उस्तरा, दाँतों अथवा नाखूनोंसे लिङ्गपर घाव होना ।
- ( २२ ) लकड़ी आदिसे लिङ्गपर चोट लगाना ।
- ( २३ ) लिङ्गका पिस जाना ।
- ( २४ ) लिङ्गको मोटा करने या बढ़ानेके लिये शूक आदि प्रयोग करना यानी हानिकारक दवाएँ लगाना ।
- ( २५ ) वीर्यका दूषित हो जाना ।

मतलब यह है कि, उपरोक्त २५ कारणोंसे लिङ्गमें, “ध्वजभंग रोग” हो जाता है । ध्वजभंग वाला मैथुन कर नहीं सकता, अतः वह भी एक प्रकारका नपुंसक होता है । जो लोग लड़कोंसे गुदा-मैथुन करते हैं, उनके मुँहमें....., अताइयोंकी विधिसे लिङ्ग



को मोटा करना चाहते हैं, मतवालोंकी तरह अंधाधुन्ध मैथुन करते हैं, छोटी लड़कियोंसे मैथुन करते हैं, अत्यधिक जल पीते हैं या मिर्च-खटाई बहुत खाते हैं, वे इन बातोंपर ध्यान दें । सृष्टि-नियमके विरुद्ध या आईन-विरुद्ध काम करना, सदा हानिकारक है । परमात्माने स्त्री ही इस कामके लिये बनाई है । उसीसे पुरुषको मैथुन करना उचित है । स्त्रीमें भी इस बातका ध्यान रखना चाहिये, कि वह रजस्वला तो नहीं है, योनिपर बड़े-बड़े बाल तो नहीं हैं, एकदम कम उम्र तो नहीं है । मतवालेकी तरह जोरसे मैथुन करनेसे लिङ्ग.....  
.....इधर-उधर जाता है, जिससे बड़ी सख्त चोट लगती है । .....के मुखमें देनेसे दाँत लग जाते हैं और उससे भयङ्कर विष पैदा होकर घाव हो जाते हैं । ये सब परले सिरैकी वेवकूफीके काम हैं । जिन्हें इन सत्यानाशी कामोंकी लत हो, वे इन्हें मौतसे भी भयङ्कर समझकर त्याग दें । अगर वे इनको न त्यागेंगे, तो ध्वजभङ्ग क्लीव होकर संसारमें बदनामी और बेइज्जतीके साथ गल-गलकर मरेंगे और कई केसोंमें, मालूम होजानेपर, सरकार हिन्दके मुजरिम भी होंगे ।

## जरासम्भव नपुन्सक ।

छोटी, मध्यम और बड़ी—ये तीन अवस्थाएँ होती हैं । इन तीनोंमेंसे बड़ी या बुढ़ापेकी अवस्थामें, बहुधा, वीर्य क्षीण हो जाता है; इसलिये पुरुष नपुन्सक-सा हो जाता है; यानी बुढ़ापेमें मैथुन कर नहीं सकता । ऐसे नपुन्सकको “जरासम्भव नपुन्सक” कहते हैं ।

❀ बहुतसे अज्ञानी जोर-जोरसे मैथुन करनेमें आनन्द समझते हैं, यह उनकी भूल है । यह काम जितना ही आहिस्ता-आहिस्ता किया जाता है, उतना ही आनन्द मिलता है और कामिनीकी भी काम-शान्ति हो जाती है; लिङ्गकी नसें टूटने और स्त्रीको भी चोट लगनेका डर नहीं रहता । ये सब “काम-शास्त्र” न पढ़नेके नतीजे हैं ।



बुढ़ापा आनेपर, उत्तम-से-उत्तम पदार्थ हलवा, खीर, मोती, मूँगा प्रभृति खानेपर भी मनुष्य तन-क्षीण, वीर्य-हीन और निर्बल हो जाता है। इस अवस्थामें, पित्तकी गरमी जब शान्त हो जाती है, तब वायुका जोर पड़ता है। वायु वालोंको सफेद कर देता है। पित्त प्रकृतिवालोंके बाल जल्दी सफेद होते हैं और कफ प्रकृति-वालोंके देरमें। बूढ़ोंको वायु-नाशक और कफवर्द्धक दवाएँ अच्छी होती हैं।

## कारण ।

बुढ़ापेमें नपुंसकता नीचे लिखे कारणोंसे होती है:—

- ( १ ) रस, रक्त, माँस, मेद आदि धातुओंके क्षीण होनेसे ।
- ( २ ) वीर्य बढ़ानेवाली दवाओंके न खाने से ।
- ( ३ ) बल, वर्ण और इन्द्रियोंके क्षीण होनेसे ।
- ( ४ ) उम्रका उतार होनेसे ।
- ( ५ ) भूखा-प्यासा रहनेसे; यानी समयपर खाना-पीना न करनेसे ।
- ( ६ ) अधिक मिहनत करनेसे ।

मतलब यह है, जो पुरुष, बुढ़ापेमें भी, स्त्री-सुख भोगना चाहते हैं, उन्हें अपनी रस-रक्तादि धातुओंको बढ़ानेके उपाय करने चाहिए; बल-वीर्यवर्द्धक वायुनाशक औषधियाँ, हरसाल, शीतकालमें खानी चाहिए। भोजन ठीक समयपर करना चाहिये । अपनी ताकतसे कम मिहनत करनी चाहिये । बुढ़ापेको रोकनेके लिये “रसायन” सेवन करनी चाहिये । शरीरमें सदा “नारायण तैल” या “चन्दनादि तैल” लगाना चाहिये । अगर स्थिति अच्छी न हो, तो काले तिलोंका तेल ही लगाना चाहिये । आँखोंमें नित्य “त्रिफलेके पानी” के छोट्टे देने चाहियें । “त्रिफलेका चूर्ण” मिश्री मिलाकर सेवन करना चाहिये; क्योंकि बुढ़ापेमें आँखोंकी रोशनी कम हो जाती है; दाँत



जवाब दे देते हैं और घुटनों तथा पीठके बाँसेमें पीड़ा होने लगती है । कम-से-कम नीचे लिखे काम, बुढ़ापेसे बचनेको अवश्य करने चाहिएँ:—

( १ ) शरीरमें रोज तेल लगाना चाहिये ।

( २ ) सिरमें तेल लगाना चाहिये और कानोंमें तेल डालना चाहिये ।

( ३ ) “स्वास्थ्यरक्षा”में लिखा “अमीरी दन्त मंजन” रोज दाँतोंमें मलना चाहिये अथवा कड़वे तेलमें “सैधानोन” पीस और मिलाकर उसीसे दाँत मलने चाहिएँ या काले तिलोंके तेलके कुल्ले करने चाहियें । अगर ये उपाय पहलेसे ही किये जायँ, तो बुढ़ापेमें दाँत हरगिज तकलीफ न दें ।

( ४ ) आँखोंमें त्रिफला-जलके छींटे देने चाहियें । त्रिफला “मिश्री” मिलाकर सेवन करना चाहिये ।

( ५ ) असगन्ध और विधायरा—दोनों बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लेने चाहियें । पीछे ६ माशेसे १ तोले तक यही चूर्ण फाँककर ऊपरसे “गायका धारोष्ण दूध” पीना चाहिये । बूढ़ोंके लिये यह चूर्ण दूसरा अमृत है । अगर कोई चार-पाँच महीने तक इसे लगातार खा ले, तो स्त्री-प्रसंगमें जवानोंसे अधिक पराक्रम दिखा सके ।

## क्षयक्लीव नपुंसक ।

अत्यन्त चिन्ता, अति शोक, अति क्रोध, अति भय, अति ईर्ष्या, उत्कंठा और उद्वेग करने तथा रूखा अन्न सेवन करने, कमजोर होनेपर भी निराहार रहने, थोड़ा-सा खाने और उसके भी हृदयमें रखे रहने वगैरः वगैरः कारणोंसे—सब धातुओंमें असल धातु “रस” क्षीण होता है । जिसकी ऐसी हालत होती है, वह दिन-दिन क्षीण और निर्बल होता जाता है । उसके रक्त आदि धातु क्षीण होने लगते हैं । फिर सब धातुओंका अवसान—परिणाम—वीर्य भी



सोण हो जाता है। जब वीर्य क्षीण हो जाता है, तब मनुष्यको घोर व्याधियाँ घेर लेती हैं और वह मर जाता है। खुलासा यह है कि चिन्ता, क्रिक्, शोक, क्रोध, भय, द्वेष और घबराहट आदि कारणोंसे वीर्य भीतर-ही-भीतर नाश हो जाता है। इसके बाद लिङ्ग और फोतोंमें दर्द होता है। मैथुनके समय कमजोरी मालूम होती है और मैथुनके अन्तमें वीर्य नहीं निकलता अथवा खून निकलता है। इसके बाद हालत दिन-ब-दिन खराब होती जाती है। अतः आरोग्य-सुख चाहनेवालोंको अपने वीर्यकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये, क्योंकि थोड़ीसी भी राकलतसे यह रोग, असाध्य होकर, प्राणनाश कर देता है।

नोट—कोई-कोई आचार्य लिङ्ग और फोतोंके गिर पड़नेके “ध्वज मङ्ग” और “क्षयज क्लीव”को असाध्य कहते हैं। चिकित्सा—पहले कारणोंको त्यागना चाहिये। उसके बाद, यथोचित उपाय करने चाहिएँ।

## दूषित शुक्र आर्तव ।

### वीर्यके दूषित होनेके कारण ।

असलमें, मनुष्यमें वीर्यका ही पुरुषार्थ है। वीर्य नहीं तो पुरुषार्थ भी नहीं। जिस तरह कीड़े-मकोड़ोंका खाया, आगसे जला हुआ, काल और जलसे दूषित बीज हरा-भरा नहीं होता; उसी तरह दूषित वीर्यसे गर्भ नहीं रहता; अगर रह भी जाता है, तो सन्तान रोगी और अल्पायु होती है। जिसके खाँसी, क्षय, प्रमेह, मृगी, उन्माद, गठिया, गरमी या सोजाक आदि रोग होते हैं,—वह यदि मैथुन करता है और



गर्भ रह जाता है, तो उसकी औलादको भी यही रोग होते हैं । कोढ़-रोगी यदि सन्तान पैदा करता है, तो उसके नाती-पोतों तकके कोढ़ होता है । इसीसे वाग्भट्टने कहा है:—

**शुद्ध शुक्रार्तवस्वस्थं संरक्तं मिथुन मिथः ।**

अगर पुरुषका वीर्य और स्त्रीका आर्तव शुद्ध हो एवं शरीरमें कोई रोग न हो, तभी स्त्री-पुरुषको मैथुन करना चाहिये; क्योंकि रोगीकी सन्तान भी रोगी होगी । अल्प वीर्य या दूषित वीर्यवालेके सन्तान भी अल्पवीर्यवाली या दूषित वीर्यवाली होगी । मतलब यह निकला कि, माता-पिताके दूषित शुक्र-आर्तव होनेकी हालतमें मैथुन करनेसे सन्तानका वीर्य दूषित होता है, यानी वीर्यके दूषित होनेका पहला कारण दूषित वीर्यवाले माँ-बाप हैं ।

इसके सिवा नीचे लिखे कारणोंसे भी वीर्य दूषित हो जाता है:—

- ( १ ) बहुत ही ज्यादा स्त्री-प्रसंग करनेसे ।
- ( २ ) दण्ड-कसरत करनेसे ।
- ( ३ ) अपनी प्रकृति या मिजाजके खिलाफ खाना खानेसे ।
- ( ४ ) कुसमयमें मैथुन करनेसे ।
- ( ५ ) गरमी या सोजाकवाली स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे ।
- ( ६ ) बैठे रहनेसे ।
- ( ७ ) रूखे, कड़वे, कषैले, नमकीन, खट्टे, खारी और गरम पदार्थ खाने-पीनेसे ।

( ८ ) मधुर, चिकने और भारी भोजन करनेसे ।

( ९ ) बुढ़ापेसे ।

( १० ) चिन्ता, शोक और अविश्वास आदिसे ।

( ११ ) शस्त्र, खार या अग्निके प्रयोगसे ।

( १२ ) भय और क्रोधसे ।

( १३ ) क्षय रोग अथवा धातुओंके दूषित होनेसे



मतलब यह है, कि इन १३ कारणोंसे वातादि दोष, अलग-अलग या सब मिलकर, वीर्य बहानेवाली नाड़ियोंमें घुसकर, वीर्यको दूषित—यतला, बदरंग या बदबूदार प्रभृति कर देते हैं। शुक्रके दूषित होनेसे हीऽस्वप्नदोषॐ वगैरः होने लगते हैं।

### दूषित शुक्रके भेद ।

दूषित वीर्य आठ प्रकारका होता हैः—( १ ) फेनदार या भाग-वाला, ( २ ) सूखा, ( ३ ) खराब रंगका, ( ४ ) सड़ा हुआ, ( ५ ) लिबलिबा, ( ६ ) गाढ़ा, ( ७ ) धातुके साथ मिला हुआ, और ( ८ ) अवसाद आदि ।

### वात-दूषित वीर्यके लक्षण ।

लगे हीकी वजहसे वीर्य भागवाला, सूखा, कुछ गाढ़ा, थोड़ा और चीण होता है। यह वीर्य गर्भके कामका नहीं होता। एक वैद्यक ग्रन्थमें लिखा है—वायुसे दूषित वीर्य रंगमें काला और लाल होता है तथा उसमें चोंटनेकी-सी पीड़ा होती है।

### पित्त-दूषित वीर्यके लक्षण ।

पित्तसे दूषित वीर्य नीला, पीला और अत्यन्त गरम होता है एवं उसमें बुरी बदबू आती है। जब निकलता है, तब लिंगमें दाह वा जलन होती है। वैद्यक ग्रन्थोंमें लिखा है—पित्तमें दूषित वीर्यका

\* हमने वीर्यके दोष दूर होने, पतलापन नाश होकर गाढ़ा होने या स्वप्नदोष मिटने अथवा स्तम्भन होने वगैरःके नुसखे आगे लिखे हैं। एक परीक्षित नुसखा “स्वप्नदोष”—नाशक याद आगया, उसे यहाँ लिखते हैं। जिन्हें स्वप्नदोष होता हो, वे अवश्य सेवन करेंः—अफीम ४ चाँवल मर, कपूर २ रत्ती और शीतलचीनी ६ रत्ती—इन तीनोंको मिलाकर, रातको, सोते समय, रोज खाकर ज़रासा जल पीलें। ईश्वर-कृपासे “स्वप्नदोष” आराम हो जायगा। ६ माशे मोचरसमें ४ तोले मिश्री मिलाकर, रोज सवेरे ही, फाँकने और धारोष्ण दूध पीनेसे भी धातु गाढ़ी होती और स्वप्नदोष आराम हो जाता है। यह नुसखा भी परीक्षित है।



रंग पीले, नीले प्रभृति रंगोंका होता है तथा उसमें चूसनेकी-सी पीड़ा होती है । पित्त-दूषित वीर्यमें राधकी-सी बदबू आती है ।

### कफ-दूषित वीर्यके लक्षण ।

कफसे वीर्यवाहिनी नाड़ियोंके मार्ग बन्द हो जाते हैं और इससे वीर्य अत्यन्त गाढ़ा हो जाता है । एक वैद्यक ग्रन्थमें लिखा है कि, कफ-दूषित वीर्यका रंग सफेद होता है तथा उसमें मन्दी-मन्दी पीड़ा होती है और वह गाँठदार होता है ।

### पित्त-वातसे दूषित वीर्यके लक्षण ।

पित्त-वातसे वीर्य क्षीण होता है ।

### रुधिर-दूषित वीर्य के लक्षण ।

रुधिर-दूषित वीर्यका रंग लाल होता है तथा उसमें चूसनेकी-सी पीड़ा होती है । ऐसे वीर्यमें मुँह की-सी दुर्गन्ध आती है ।

### सन्निपातसे दूषित वीर्यके लक्षण ।

सन्निपातसे दूषित वीर्यमें सब दोषोंके रंग पाये जाते हैं, पीड़ा होती है और उसमें पेशाब तथा पाखानेकी-सी दुर्गन्ध आती है ।

### चोट प्रभृतिसे दूषित वीर्य के लक्षण ।

अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने और चोट लगनेसे पुरुषके खून मिला हुआ वीर्य निकलता है ।

### अवसादि वीर्य ।

अवसाद आदि वीर्य बड़ी तकलीफसे गाँठके समान निकलते हैं ।

### शुद्ध वीर्यके लक्षण ।

जो वीर्य चिकना, गाढ़ा, मलाई-जैसा, लिबलिबा, मीठा, दाह-रहित और चिकने बिल्लौरी शीशेके समान होता है, वह शुद्ध होता है ।



## नपुंसक चिकित्सामें

ध्यान देने योग्य बातें ।

( १ ) अगर आपके पास कोई रोगी आवे और वह अपने तई कमजोर कहे, तो आप उसकी बारीकीसे जाँच करें । ऐसा न हो, कि आप रस-रक्त और वीर्य आदिकी कमीवालेको “प्रमेह नाशक” दवा देने लगें और प्रमेहवालेको “नपुंसकत्व ना. कृ” । मतलब यह है, कि रोगकी खूब परीक्षा करके चिकित्सा करनी चाहिये । अगर आपको ठीक तौरसे यह मालूम हो जाय, कि रोगी नपुंसक है, तो इस बातका पता लगाइये, कि सात तरहके या चार तरहके नपुंसकोंमेंसे यह कौन-सा नपुंसक है । अगर आपका रोगी सहज क्लीव—जन्मका नामर्द—हो अथवा नसों कट जानेसे नामर्द हो या क्षयक्लीव हो, तो आप चिकित्सा न कीजिए । अगर आप चिकित्सा करेंगे, तो आराम तो होगा नहीं, बदनामी बेशक आपके पल्ले पड़ेगी । हाँ, इनके सिवा, बाक़ी रहे हुए प्रकारोंके नपुंसक हों, तो आप बेशक इलाज करें । जिनके पुरुष-चिह्न ही नहीं, उनका इलाज तो कदाचित् धन्वतरि भी न कर सकें; पर यदि यथायोग्य पुरुष-चिह्न हो, नसों ठीक हों, ईश्वरकी इच्छा हो, रोगीका पुण्य हो, और सद्बैद्य मिल जाय, तो कदाचित् जन्मका नपुंसक भी चंगा हो जाय; पर ऐसा प्रायः कभी ही होता है ।

( २ ) अगर आपको “मानस क्लैव्य”के लक्षण जान पड़ें, तो आप रोगीको तसल्ली दें और विश्वास दिलावें कि तुम्हें कुछ भी रोग



नहीं है, तेरे मनका बहम मात्र है । अगर इतनेसे सुधार न हो, तो आप उसके दिल-दिमागको ताकतवर बनानेवाले उपाय करें; क्योंकि दिल और दिमागके बलवान होनेसे; उसके दिलके बहम निकल जायँगे । इस विषयमें हम उधर लिख आये हैं ।

( ३ ) अगर आपके रोगीको पित्तवर्द्धक आहार-विहारोंसे नामर्दी हुई हो, तो आप ऐसे रोगीको शीतल और चिकनी औषधियाँ तजबीज करें; क्योंकि ठण्डा और चिकनी दवाओंसे ही पित्तके विकार शान्त होकर, सौम्य धातुओंकी वृद्धि और बिगड़ी हुईकी शुद्धि हो सकती है । जैसे—बिदारोकन्दमें बिदारीकन्दकी भावना देकर सेवन कराओ । आमलोंके सूखे चूर्णमें ताजे आमलोंके रसकी भावना देकर खिलाओ । पेठा पाक अथवा आगे लिखी माजून आदि खिलाओ; साथ ही जिन पित्तकारक आहार-विहारोंसे रोग हुआ हो, उन्हें बन्द कराओ; क्योंकि बिना कारणोंके बन्द किये आराम हो नहीं सकता ।

( ४ ) अगर आपका रोगी वीर्यकी कमीसे नामर्द हो, तो आप सबसे पहिले उसके रोगके कारण बन्द करें—रूखी-सूखी, गरम एवं नशीली चीजें सेवन करनेसे रोकें । इसके बाद बलवीर्य बढ़ानेवाले दूध, रबड़ी, मावा, मलाई, बादामका हलवा, उड़दकी खीर, उड़दके लड्डू, असगन्ध पाक, मूसली पाक, आम्र पाक, गोखरू पाक आदि सेवन करनेकी सलाह दें; पर धातुभस्म या प्रमेहनाशक दवा भूल कर भी न दें; क्योंकि इस रोगमें धातुओंकी वृद्धि करनी पड़ती है और प्रमेहमें मेद प्रभृति धातु और दोष घटाने होते हैं ।

( ४ ) अगर आपका रोगी रोगजन्य क्लीब हो, किसी रोगके कारणसे नामर्द हो, हस्त-मैथुन, गुदा-मैथुन या पशु-योनि-मैथुनसे अपनी मैथुन शक्तिको खो बैठा हो, तो पता लगावें, कि उसकी इन्द्रियोंमें क्या दोष है । अगर उसने हस्त-मैथुन किया होगा, तो उसकी इन्द्रियमें बांकपन होगा—वह आगेसे मोटी और पीछेसे पतली होगी, नीली-नीली नसें चमकती होंगी, उनमें दूषित पानी भर गया होगा,



इन्द्रियमें तेजी या चैतन्यता न होती होगी—वह ढीली रहती होगी, उसमें छूनेसे कुछ न मालूम होता होगा, वह सूतीसी होगी । अगर लिङ्गेन्द्रियमें कोई विष या बाह्यात तिला वगैरः लगाया होगा, तो लिङ्गेन्द्रिय पक गई होगी या सूख गई होगी या स्पर्श-ज्ञान-शून्य हो गई होगी अथवा शीतल हो गई होगी । आप अच्छी तरहसे पता लगाकर यथोचित उपाय करें । हम इन दोषोंके नाश करनेवाले अनेक तिले और लेप आदि आगे लिखेंगे, पर चन्द परीक्षित उपाय बतौर उदाहरणके यहाँ भी लिखते हैं:—

**लिङ्गेन्द्रियकी शीतलता पर सेक ।**

अगर लिङ्गेन्द्रिय शीतल हो गई हो, तो हमारी लिखी आगेकी पोटलियोंसे या इस पोटलीसे सेक कराओ । जैसे अरण्डके बीज १ तोले, पुराना गुड़ १ तोले, तिल १ तोले, बिनौलोंकी गिरी १ तोले, कूट ६ माशे, जायफल ६ माशे, जावित्री ६ माशे, अकरकरा ६ माशे पुराना गोला या खोपड़ा १ तोले और शहद २ तोले—इन सबको कूट-पीसकर पोटली बना लो । मन्दी आगपर थोड़ा-सा बकरीका दूध औटाओ और ऊपरसे उस गरम दूधमें इसी पोटलीको डुबो-डुबोकर, लिङ्गपर (अगला भाग छोड़कर) सेक करो । परीक्षित नुसखा है । ११ दिनमें शीतलता जाती रहेगी ।

**दूसरा सेक ।**

केंचुआ, वीरबहुटी, नागौरी असगन्ध, आमाहल्दी और भुने चने—इन सबको “गुलाबके तेल”में पीसकर पोटली बना लो और आगपर तपा-तपाकर १४ दिन सेक करो । इस सेकसे कितने ही दोष मिट जाते हैं ।

**सेकके साथ खानेकी दवा ।**

साथ ही बड़ा गोखरू १३॥ माशे और काले तिल १३॥ माशे दोनोंको पीसकर छान लो । फिर, इस चूर्णको सेरभर गायके दूधमें



पकाओ। जब खोआ हो जाय, खालो। यह एक मात्रा है। इस खोयेके ४० दिन खानेसे और ऊपरसे सेक करनेसे अवश्य लाभ होगा।

### लिंगकी शिथिलता-शून्यता-नाशक तैल ।

अगर स्पर्शज्ञान न हो या कम हो अथवा ढीलापन बहुत हो, तो “कौड़िया लोबान” चार तोले लेकर, पहले “करोंदेके रस” में खरल करो; इसके बाद चार तोले “घी” डालकर खरल करो। फिर “पाताल-यन्त्र” की विधिसे तेल निकाल लो और शीशीमें भर लो। जब लगाना हो, पहले लिंगेन्द्रिय पर “हल्दीका चूर्ण” मलो, इसके बाद सीवन सुपारी छोड़कर, बाक़ी हिस्सेमें इस तेलको रोज़, ३० मिनट तक, मलो। २१ दिनमें लिंग दुरुस्त हो जायगा। अगर इतना न हो सके, तो खाली “लोबानका असली तेल रोज़ लगाओ” और ऊपरसे “पान” सेक कर बाँधो।

### लिंगका बाँका या टेढ़ापन नाशक तैल ।

अगर लिंगेन्द्रिय बाँकी हो गई हो, तो चमेलीके पत्तोंका तेल लगाओ। इस रोगपर चमेलीका तेल या चमेलीके पत्तोंका तेल उत्तम है। हमने इसके कई नुसखे आगे लिखे हैं। एक आजमायाहुआ नुसखा यहाँ भी बताये देते हैं:—तिलीके १२ तोले तेलको कढ़ाहीमें चढ़ाओ, ऊपरसे चमेलीके पत्तोंका स्वरस ६ तोले डाल दो और साथ ही “कूट, सुहागा और मैनसिल” दो-दो तोले पीस-छानकर डाल दो। जब चमेली का रस जल जाय, तेलको उतार लो और शीशीमें भर कर रख दो। इस तेलको सीवन और सुपारी छोड़कर, हर दूसरे दिन यानी एक दिन बीचमें छोड़कर, आध घण्टे रोज़ मलो। कोई डेढ़ महीनेमें, कैसा ही बाँकपन हो मिट जायगा और सख्ती आ जायगी।

\* पाताल यन्त्रकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागके अन्त में चित्र देकर समझाई गई है।



अगर नसोंमें पानी भर गया हो, नसें नीली दीखती हों, तो हमारे आगे लिखे तिलोंमेंसे कोई तिला लंगाओ, अथवा मालकाँगनी आध सेर, जमालगोटा पावभर, लौंग आधपाव, जायफल आधपाव, दालचीनी आधपाव और जावित्री आधपाव—इन सबको कूट-पीसकर “पाताल यन्त्र”से तेल निकालो । सीवन-सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिंग पर इस तेलको रोज़ मलो । ऊपरसे “पान” सेककर बाँध दो । जब तक छोटी-छोटी फुन्सियाँ न निकलें, ऐसा ही करते रहो । फुन्सियोंके निकलते ही, तिला मलना बन्द करदो और “सौ बारका धोया मक्खन” लगादो । अथवा “चिकित्सा-चन्द्रोदय”के तीसरे भागके पृष्ठ ४४६ में लिखी कपूर, कत्था और सिन्दूर वाली “क्षतारि मरहम” लगाओ अथवा और कोई उत्तम मरहम लगाओ ।

इन उपायोंसे अथवा हमारे आगे लिखे हुए बढ़िया-बढ़िया तिलोंके लगानेसे लिंगेन्द्रियके दोष मिटकर नामर्द मर्द हो जायगा । यदि तिलेके साथ कोई उत्तम दवा भी खाई जाय, तो और भी अच्छा हो ।

( ६ ) अगर आपका रोगी वीर्य रुके रहने—बहुत दिनों तक स्त्रीका नाम भी न लेने—से नामर्द हुआ होगा, तो आपको वह हृष्ट-पुष्ट और तेजवान दीखेगा । उसे आप रूपवती स्त्रियोंसे मुहब्बत करने, उनका गाना सुनने, इत्र आदि सूँघने, फूलोंकी माला धारण करने, नाच या थियेटर देखने और हल्की शराब पीने प्रभृतिकी सलाह दें । इन उपायोंसे उसको उमङ्ग आवेगी—वीर्य अपनी जगह छोड़ेगा और उसकी इच्छा मैथुन करनेकी हो जायगी ।

( ७ ) अगर आपका रोगी चढ़ी उम्रका बूढ़ा-सा हो और वह अवस्थाके उतारसे स्त्री-प्रसङ्ग न कर सकता हो, तो आप यथोचित उपाय करें; पर ध्यान रखें कि बुढ़ापेमें वायुका जोर रहता है । वायुकी अधिकताके कारण, भोजनका सार—रस—शरीरमें ठीक काम नहीं



करता । इसलिये आप उसे गरम दूध, हलवा, मोहनभोग, खीर आदि खानेकी सलाह दें । “असगन्ध और विधायरेका चूर्ण” धारोष्ण दूधके साथ खानेकी सलाह दें और लालमिर्च, नमक, खटाईसे परहेज करावें । ऐसे रोगीको यह चूर्ण ३।४ महीने खाना और औरतसे परहेज करना चाहिये । इन दोनों दवाओंका चूर्ण बूढ़ोंको जवान बनाने वाला है । अगर यह बुढ़ापेसे कुछ पहले खाया जाय, तो बाल सफेद ही न हों । अगर वृद्ध रोगीके पैरों और कमरमें पीड़ा हो, तो आप उसे वातनाशक पाक या अन्य औषधि दें; क्योंकि कमजोरी और बुढ़ापेमें वायु का जोर बढ़ जाता है । ऐसे रोगियोंको “मेथीके लड्डू” या “असगन्ध पाक” या “लहसन पाक” प्रभृति दें । अथवा उसे कुछ दूर टहलाकर, सुहाता-सुहाता गरम दूध “शहद” मिला कर, खड़े-खड़े पिलवावें । “सोंठका चूर्ण” ३ माशे फाँककर, गरम दूध पीना भी गोड़ीके दर्दमें अच्छा है । कुचलेकी गोलियाँ भी उत्तम हैं; पर मेथी पाक या कुचला प्रभृति आँखोंके लिये कुछ नुकसानमन्द हैं । अतः इन्हें देते समय, रोगीके नेत्र आदिका विचार कर लें । अगर रोगीको साँसका रोग हो, तो उसे “निश्चन्द्र अभ्रक भस्म”—शहद, अदरखके रस और पीपरके साथ सेवन करावें । एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म, दो रत्ती पीपर, ३ माशे शहद और इतना ही अदरखका रस—श्वास और खाँसीके लिये परमोत्तम हैं । यह नुसखा सरदीके श्वासके लिये है और बुढ़ापेमें श्वास बहुधा सरदीसे ही होता है । सरदीके श्वासमें जो दवा दी जाय, वह “गरम-तर” होनी चाहिये; मगर गरमीके श्वासमें दवा “सरद-तर” दी जानी चाहिये । अगर गरमीके श्वासमें सरदीके श्वासकी और सरदीके श्वासमें गरमीके श्वासकी दवा दे दी जायगी, तो भयानक हानि होगी । लिख चुके हैं, कि बुढ़ापेमें श्वास-रोग प्रायः सरदीसे होता है, फिर भी, जाँच अवश्य कर लेनी चाहिये । अगर श्वास-रोग गरमीसे होता है, तो कण्ठकी नली चौड़ी हो जाती है, जिसके कारण रोगी



को हौकनी सी लग जाती है; पर सरदीके श्वासमें कण्ठ-नली सुकड़ जाती है, जिससे श्वास रुक-रुक कर या टूक-टूक कर आता है। आयु-वेद में पाँच प्रकारके श्वास लिखे हैं; पर मनुष्योंको बहुधा “तमक श्वास” हुआ करता है और यह श्वास रोग सरदीसे होता है। इसके विपरीत “प्रतमक श्वास” गरमीसे होता है।

सम्भोग-सम्बन्धो  
**अनमोल शिक्षायें**

आज-कल हमारे देश-भाई न तो “आयुर्वेद” पढ़ते हैं और न “काम-शास्त्र”; इसलिये वे स्त्री-संभोगके नियम नहीं जानते। वे लोग समझते हैं, कि सम्भोगके क्या नियम होंगे। पर नियम और कायदे सभी कामोंके हैं; बिना नियम और कायदेके जो काम किये जाते हैं, उनका फल अच्छा नहीं होता। अँगरेज़ लोग बिना नियमके कोई काम नहीं करते; इसीसे वे निरोग, दृष्ट-पुष्ट, बली और आयुष्मान् होते हैं; पर भारतीय इसके खिलाफ़ रोगग्रस्त, दुर्बल और अल्पायु होते हैं। उनके यहाँ “सम्भोग-विषय” पर बड़ी अच्छी-अच्छी पुस्तकें हैं। उन्हें पढ़कर स्त्री-पुरुष रोगोंसे बचते हैं। अमेरिकाके डाक्टर फ़ूटकी लिखी ‘साइक्लोपेडिया आव् पोप्युलर मेडिकल साइन्स एण्ड सेक्सुएल साइन्स’ नाम्नी पुस्तक सम्भोग-विषयपर बहुत ही अच्छी है। हमने उसकी चन्द बातें ली हैं। यदि हम सारा क्या, चौथाई विषय भी लेते, तो भारतके नई रोशनीके जैन्टिलमैन “अश्लील” “अश्लील” की पुकार मचा देते। इसीसे हमने चन्द ज़रूरी बातें ही उक्त पुस्तक और हिक्मतकी पुस्तकोंसे ली हैं। हमें कानून भी मानना है और लोगोंके तानोंसे भी बचना है। राज-कानूनके खिलाफ़ कोई भी काम करना तो हमें पसन्द ही नहीं। राजा चाहे देशी हो या विदेशी—उसका कानून, हमारी तुच्छ मतिमें, सभीको मानना चाहिये। पर, जिस विषयको हम लिखने बैठे हैं, उसमें यदि हम अश्लील मज़ाँके नाम भी न



लिखें, तो हम नहीं समझते, हम या और कोई लेखक महोदय अपने सैक्सुएल साइन्स या सम्भोग-सम्बन्धी खयालात किस तरह ज़ाहिर कर सकते हैं ।

हमारी इच्छा है कि, भारतसे हस्त-मैथुन, गुदा-मैथुन, अयोनि-मैथुन, पर-स्त्री-गमन, वेश्या-गमन प्रभृति उठ जायँ—नेस्तनाबूद ही हो जायँ । साथ ही जो लोग इन कुकर्मोंके कारण नपुंसक हो गये हैं, वे चंगे हो जायँ और भविष्य में नपुंसक न हों । इसीसे हमें एक एक बात तीन-तीन जगह ढंग बदलकर लिखनी पड़ी है । यदि लोग हमारी लिखी बातोंको याद रखेंगे, इस भागका दस-पाँच बार पाठ कर जायँगे, तो अवश्य ही बड़ा उपकार होगा । हम दावेके साथ कह सकते हैं, कि अनेक ग्रन्थ होनेपर भी “प्रमेह, नपुंसकता और वीर्य-रोगोंपर” इससे अच्छा, इससे विस्तृत और इससे सरल हिन्दी-ग्रन्थ भारतवासियोंके हाथ पहले न आया होगा ।

## स्त्री-भोग सन्तानके लिए ।

**प**रमात्माने स्त्री और पुरुषका जोड़ा इसीलिये बनाया है कि उसकी रची हुई सृष्टि चली जाय, संसारसे जीवधारी लोप न हो जायँ, जन्म-मरणका चक्र बराबर चलता रहे, उस बागवानका बाग नेस्तनाबूद न हो जाय । प्राचीन कालके ऋषि-मुनियोंने शादी-विवाहकी चाल भी इसीलिये चलाई थी, कि ईश्वरकी इच्छा पूरी होती रहे; हजारों-लाखों वृक्षों और पौधोंके रोज सूखने और मर जानेपर भी, उस मालीका बाग सदा हरा-भरा और सरसब्ज बना रहे । इसी गरजसे उन्होंने लिखा है, कि जिसके घरमें पुत्र-रत्न नहीं उसका घर, हर तरहकी सम्पत्ति—यहाँ तक कि अष्ट सिद्धि नव-निद्धि और अनेक नातेदार और बन्धु-बान्धव होनेपर भी, सूना है । चाणक्यने कहा है:—

अपुत्रस्य गृहशून्यं सर्वं शून्या दरिद्रता ।

पुत्र-हीनका घर सूना होता है और जिसके घरमें धन-हीनता—दरिद्रता होती है, उसको सभी सूना होता है ।



“वाग्भट्ट”के उत्तर स्थानमें लिखा है:—

अच्छायः पूतिकुसुमः फलेनरहितो द्रुमः ।

ययैकश्चैकशाखश्च निरपत्यस्तथा नरः ॥१॥

स्खलद्गमनमव्यक्तवचनं धूलिधूसरम् ।

अपिलालाविलमुखं हृदयाह्लादकारकम् ॥२॥

अपत्यं तुल्यता केन दर्शनस्पर्शनादिषु ।

किं पुनर्यद्यशो धर्ममानश्रीकुलवर्द्धनम् ॥३॥

जिस तरह छायाहीन, दुर्गन्धित बेलोंवाला और एक शाखावाला वृक्ष अच्छा मालूम नहीं होता; उसी तरह सन्तान-हीन पुरुष अच्छा नहीं दीखता ।

चञ्चल चालवाली, तोतली बोली बोलनेवाली, धूलि-धूसरित मुख और शरीरवाली, मुखसे लार टपकानेवाली सन्तान परमानन्द-दायिनी होती है; अर्थात् बालकोंकी चञ्चल और चपल चाल, तोतली बोली—टूटी-फूटी बातें, धूलसे सना हुआ मुँह और शरीर तथा लार का गिरना प्रभृति मनमें परमानन्द करते हैं । ऐसे बच्चोंके देखनेसे मनमें जिस आनन्दका उदय होता है, उसे लिखकर बताना असम्भव नहीं, तो कठिन जरूर है । सारांश यह है कि, सन्तानका मुख देखनेमें जो आनन्द है, उसकी तुलना और किसी भी आनन्दसे की नहीं जा सकती ।

जितना आनन्द सन्तानको देखने और छूने वगैरहसे होता है, उतना आनन्द किसके दर्शन और स्पर्शनसे मिल सकता है ? अर्थात् सन्तानके समान आनन्दवर्द्धक और दूसरा कोई भी नहीं है । फिर; यदि सन्तान यश, धर्म, मान, शोभा और कुलको बढ़ानेवाली हो, तब तो कहना ही क्या ?

सारांश यह है कि सन्तान अवश्य होनी चाहिये । अब यह विचारना चाहिये, कि सन्तान किस प्रकार होती या हो सकती है । सन्तानकी उत्पत्ति स्त्री-पुरुषके मैथुन-कर्मसे होती है । यह नियम है कि,



दो चीजोंके मिलनेसे तीसरी चीज पैदा होती है । जिस तरह दो बादलोंके मिलने या रगड़ खानेसे बिजली पैदा होती है, उसी तरह स्त्री-पुरुषके मिलने या मैथुन करनेसे सन्तान होती है; अतः स्त्री-पुरुषको सन्तानोत्पत्तिके लिए मैथुन करना ही चाहिये ।

## सन्तानके लिये शुद्ध रज-वीर्यकी जरूरत ।

जिस तरह अच्छी जमीन और उत्तम बीजसे उत्तम फल देनेवाला वृक्ष लगता है, उसी तरह उत्तम और शुद्ध रज-वीर्यसे उत्तम सन्तान होती है; दूषित रज-वीर्यसे दूषित या खराब औलाद होती है । इसीसे महर्षि वाग्भट्ट महोदय लिख गये हैं:—

शुद्ध शुक्रार्त्तवं स्वस्थं संरक्तं मिथुने मिथः ।

स्नेहैः पुंसवनैः स्निग्धं शुद्धं शीलित वस्तिकं ॥

जब पुरुषका वीर्य और स्त्रीका आर्त्तव वा रज शुद्ध और निर्दोष हों, शरीरमें कोई रोग न हो, स्त्री-पुरुष दोनों ही आपसमें अनुरक्त हों, तब स्नेह, पुंसवन और वमन-विरचन आदिसे वीर्यको गाढ़ा और चिकना करके मैथुन करना चाहिये ।

सारांश यह, कि जब आपको कोई रोग हो, आपका वीर्य पतला या गरम हो अथवा किसी दोषसे दूषित हो, हरगिज मैथुन न करें । खासकर सन्तानार्थ तो भूलकर भी न करें । अगर आप रोगावस्थामें मैथुन करेंगे, तो आपका रोग भयंकर रूप धारण कर लेगा । ज्वरकी अवस्थामें मैथुन करनेसे रोगी बेहोश होकर मर जाता है, खाँसीमें मैथुन करनेसे खाँसी अमृतसे भी आराम नहीं होती और अन्तमें क्षय रोग होकर रोगी मर जाता है । इसी तरह और रोगोंमें भी समझिये । इसके सिवा अगर गर्भ रह जाता है, तो जो सन्तान पैदा होती है, वह भी सारी जिन्दगी रोगोंमें फँसी रहती है, उसे क्षण भरको भी सुख नहीं मिलता । कौड़ी यदि स्त्री-प्रसंग करता है,



तो उसकी औलाद भी कोढ़ी होती है। उपदंश या सोझाक-रोगी अगर मैथुन करता है, तो उसकी स्त्रीको भी ये भयङ्कर रोग हो जाते हैं। अतः बोमारी और दूषित रज-वीर्यकी हालतमें कभी मैथुन न करना चाहिये। दूषित रज-वीर्यसे दूषित सन्तान होती है। इसके सिवा, दूषित वीर्यसे बहुधा गर्भ ही नहीं रहता। 'चरक' में लिखा है:—

बीजं यस्माद्व्यवायेषु हर्षयोनिमुत्थितम् ।

शुक्रं पौरुषमित्युक्तं तस्माद्व्यामितच्छृणु ॥

यथाबीजमकालाम्बु कृमिकीटाग्निदूषितम् ।

न विरोहितसन्दुष्टं तथा शुक्रं शरीरिणाम् ॥

हर्षसे और जिङ्ग तथा योनिके आपसमें मिलने या एक दूसरेको छूनेसे पुरुषका बीज अथवा शुक्र उठता है—वैतन्यता या शहवत होती है, यह हम पहले ही कह चुके हैं। अब हम वीर्यके दोषोंकी बात कहते हैं। जिस तरह असमयमें जल बरसने, कीड़ों द्वारा बीजके खाये जाने अथवा आगसे जलनेसे बीज नहीं उगता, उसमें अँकुए नहीं फूटते; उसी तरह प्राणियोंके दूषित बीज या वीर्य से सन्तान पैदा नहीं होती।

मतलब यह, दूषित वीर्य गर्भके कामका नहीं। अब्बल तो दूषित या खराब वीर्यसे गर्भ रहता ही नहीं। यदि रह भी जाता है तो अनेक प्रकारके रोगों वाली, अल्पायु, अङ्गहीन, निर्बुद्धि और कुरूपा सन्तान जनमती है; अतः वीर्यकी सदा रक्षा करनी चाहिये। उसे दूषित होनेसे सदा बचाना चाहिये। वीर्य किन कारणोंसे दूषित होता है अथवा किन कामोंसे बचनेसे वीर्य शुद्ध रहता है, यह हम पीछे इसी भागमें, अच्छी तरह लिख आये हैं। अतः यहाँ फिर लिखना व्यर्थ है ! हाँ, इस सम्बन्धमें जो कुछ हमने उधर नहीं लिखा है, उसे यहाँ लिखना बुरा नहीं।



## वाजीकरण औषधियाँ ।

संसारमें मनुष्यके लिये “रसायन” और “वाजीकरण” औषधियोंका सेवन करना परमोपकारी है । जिन औषधियोंके सेवन करनेसे मनुष्य मृत्यु और बुढ़ापेसे बच सकता है, उन्हें “रसायन” कहते हैं और जिन औषधियों या आहार-विहारके सेवन करनेसे मनुष्य स्त्रियोंके साथ, बिना हारे, घोड़ोंकी तरह मैथुन कर सकता है, उन्हें “वाजीकरण” कहते हैं । आयुर्वेदमें लिखा है:—

यथा वाजी मदोन्मत्तो धावतो वडवा शतम् ।

तथा नारी नरस्तेन वाजीकरणमुच्यते ॥

जिस तरह मदोन्मत्त घोड़ा सैकड़ों घोड़ियोंपर दौड़ता है; उसी तरह जिन औषधियोंके सेवन करनेसे पुरुष स्त्रियोंमें आसक्त होता है, उन्हें “वाजीकरण” कहते हैं ।

वाग्भट्ट महोदयः लिखते हैं:—

वाजीकरणमन्विच्छेत्सततं विषयी पुमान् ।

तुष्टिः पुष्टिरपत्यं च गुणवत्तत्र संश्रितम् ॥

अपत्य सन्तानकरं यत्सद्यः संग्रहर्षणम् ।

वाजीवाऽतिबलो येन यात्यप्रतिहतोंगनाः ॥

भवत्यतिप्रियः स्त्रीणां येन येनोपचीयते ।

तद्वाजीकरणं तद्दिदेहस्योर्जस्वरं परम् ॥

अल्पसत्त्वस्य तु क्लेशैर्बाध्यमानस्य रागिणः ।

शरीरक्षयरक्षार्थं वाजीकरणमुच्यते ॥

निरन्तर विषयी या कामी पुरुषको “वाजीकरण” औषधियोंकी इच्छा रखनी चाहिये—उसे वाजीकरण औषधियाँ शौक और चाह के साथ सेवन करनी चाहिये, क्योंकि वाजीकरणमें तुष्टि-पुष्टि और सन्तान हैं; अर्थात् वाजीकरण औषधियाँ सेवन करनेसे मनमें प्रसन्नता होती है, शरीर पुष्ट और बलवान होता है तथा सन्तान



या पुत्र-जैसे अमूल्य रत्नकी प्राप्ति होती है। “वाणीकरण” सन्तान देनेवाला और तत्काल आनन्द करनेवाला है।

जिसके सेवन करनेसे पुरुष घोड़ेकी तरह बलवान और अप्रतिहत सामर्थ्यवाला होकर, युवती स्त्रियों को भोगता है; उनका प्यारा होता और वृद्धिको प्राप्त होता है, उसे “वाजीकरण” कहते हैं। वाजीकरण देहमें अत्यन्त बल-पराक्रम करता है।

निर्बल या कमजोर पुरुषोंके दुःख दूर करने, उनका प्रेम निवाहने और उनके शरीरकी रक्षाके लिये “वाजीकरण” कहते हैं।

जिस वाजीकरणके आश्रय तुष्टि, पुष्टि और सन्तान हैं; जो यशमान और धन-धर्म तथा कुलको बढ़ानेवाला पुत्र दे सकता है; जो युवती स्त्रियोंका गर्व खर्व करके, उन्हें पुरुषकी दासी बना सकता है; संसारमें उससे बढ़कर और कौन-सा पदार्थ है? ऐसे वाजीकरणको कौन सेवन न करना चाहेगा? एक पुरुष-चिह्न-हीन नपुंसक इसे न चाहें तो न चाहें; उनके सिवा, पुरुष-मात्र इसे चाहेंगे। एक जमाना था, जब भारतवासी सदा-सर्वदा, विशेषकर शीतकाल या मौसम सरमामें, वाजीकरण औषधियोंको अवश्य सेवन करते थे; इसीसे वे महा बलवान और पराक्रमी होते थे। उनकी सन्तान भी रूपवती, बलवती और बुद्धिमती होती थी एवं उनकी स्त्रियाँ सच्ची पतिव्रता और भारतका मस्तक ऊँचा करनेवाली होती थीं। उनको आजकलकी तरह आधि-व्याधियोंका शिकार न होना पड़ता था और इसीसे दम-दममें वैद्य-डाक्टरोंका मुँह देखना न पड़ता था। वे पूर्णायु भोगकर, संसारमें अपनी कीर्ति छोड़कर, सच्ची मृत्यु आनेपर, सुखसे देह त्यागते थे। अकाल मृत्यु उनके दर्शनोंसे कंपती थी। जबसे भारतीयोंने आयुर्वेदका पढ़ना छोड़ा, आयुर्वेद-विद्या केवल धन्धा करनेवाले वैद्योंकी विद्या हो गई, उन्होंने बिना कामशास्त्र पढ़े ही स्त्री-प्रसङ्ग करना शुरू कर दिया; तबसे अधिकांश लोग “वाजीकरण”



किस चिड़ियाका नाम है, यह भी नहीं जानते । जानते हैं, केवल वैद्य-विद्यासे रोटि कमा खानेवाले वैद्य-मात्र । वाजीकरण औषधियोंका व्यवहार घटजाने या न रहनेसे हो यहाँके निवासी अल्प-वीर्य, अल्पायु, अल्प-पुरुषार्थी, अल्प-धनी और अल्प-बुद्धि हो गये । उनपर दूसरे देशवालोंने अपना सिक्का आ जमाया, उन्हें गुलाम और दास बना लिया । बकौल यूनानों यात्री मेगस्थनीजके जिस भारतमें ढूँढ़ने और खोज करनेसे भी व्यभिचारिणी या पर-पुरुष-रता स्त्रियां न मिलती थीं, सर्वत्र पतिव्रता-ही-पतिव्रता नजर आती थीं, अब उसी भारतमें अन्यान्य देशोंकी तरह, अपतिव्रता और कुलिटाओंकी भरमार हो रही है । जिस तरह दो अढ़ाई हजार वर्ष पहले, कुलिटा देखनेको न मिलती थी, उसी तरह अब सच्ची पतिव्रता किसी-किसी भाग्यशालीके घरमेंही होती हो तो होती हो । ये सब आयुर्वेद न पढ़ने और वाजीकरण तथा रसायन औषधियोंके सेवन न करनेका ही फल है । आज कोई बिरलाही पुण्यात्मा होगा जिसे “प्रमेह” न हो; आज कोई बिरला ही खुश किस्मत होगा, जिसका वीर्य निर्दोष, समुचित गाढ़ा, सफेद और प्रसङ्ग में आनन्द देनेवाला हो । आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है—“मैथुनमें बहुत ही जल्द वीर्यगत होनेपर भी, यदि गर्भ रह जाता है तो पैदा होनेवाली सन्तान कमजोर होती है और यदि उचितसे अधिक देरमें वीर्य स्खलित होता है, तो क्रोधी और पित्त-प्रकृति यानी गर्म भिजाजवाली औलाद पैदा होती है ।”

आजकल जिसे देखो उसीकी धातु पतली है, जिसे देखो उसीको गर्म-बादी या उष्णवातका मर्ज है । आजकल ऐसे लोगोंकी इफरात है, जो स्त्रीके दर्शन करते ही धोती खराब कर देते हैं; स्वर्ग-द्वारमें जाना तो दूरकी बात है, द्वारपर ही मुक्त हो जाते हैं । आज कौन वेदमंत्र पढ़कर सन्तानार्थ मैथुन कर सकता है ? जितनी देरमें वेद-मन्त्र समाप्त न होगा, उससे पहले ही करम फूट जायेंगे । लोगोंमें स्तम्भन-शक्ति जरा भी नहीं । जिसे देखो वही



“स्तम्भन वटी” की खोजमें है । स्तम्भनकारक औषधि लोग मँगाते हैं, विज्ञापन-बाजोंको ठगाते हैं; पर उनका मनोरथ पूरा नहीं होता । जब तक वीर्य शुद्ध, पुष्ट और शीतल न होगा, इच्छानुसार स्तम्भन हजार कोशिश करनेपर भी न होगा । जिन्होंने वचपनमें हथरस या गुदा-मैथुन किया है, जिन्होंने चिन्ताको अपना साधन बना रक्खा है, जिन्हें स्त्री-भोगके क्रायदे नहीं मालूम, जिन्होंने—साल-दर-सालकी तो बड़ी बात है—जीवनमें कभी भी वाजीकरण औषधियोंका सेवन नहीं किया, उनको स्तम्भन हो नहीं सकता; उनका वीर्य इच्छामत रुक नहीं सकता; उनकी प्राणवल्लभा उनसे सन्तुष्ट हो नहीं सकती; उनके घरसे कलह जा नहीं सकता; वे अपनी प्राणेश्वरीके लिये चाहे जितने बख्तालंकार क्यों न दें, सोने और जवाहिरातसे उसे जड़ हो क्यों न दें । बहुत लिखनेसे यह ग्रन्थ बढ़ जायगा और उतना बढ़ाना हमें अभीष्ट नहीं; इसलिये हम इस विषयको यहाँ खतम करके, सम्भोग-सम्बन्धी अन्य आवश्यक बातें लिखते हैं:—

## स्त्री-गमनका उचित समय

हम लिख आये हैं कि प्राचीन कालके भारतीय एक मात्र सन्तान पैदा करनेका विवाह-शादी करते थे; आजकलकी तरह विषय-लालसा पूरी करनेको विवाह-शादी न करते थे । हमें रघुवंशका एक श्लोक याद आया है, उससे पाठकोंको हमारी इस बात पर यकीन हो जायगा । महाकवि कालिदासने महाराजा दिलीपके सम्बन्धमें रघुवंशके प्रथम सर्गमें लिखा है:—

स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान परिणेतुः प्रसूतये ।

अप्यर्थ कामौ तस्यास्तां धर्मएव मनीषिणः ॥

उस सुपण्डित राजाके अर्थ और काम भी धर्मरूपमें परिणत हो



गये थे, क्योंकि लोकस्थितके लिये वह अपराधियोंको दण्डित करता था और सन्तानके लिये उसने विवाह किया ।

कहिये पाठक ! अब तो सन्देह नहीं रहा, कि प्राचीन कालके अधिकांश भारतीय केवल सन्तानार्थ विवाह करते थे । वे लोग, विवाह करके, सन्तान उत्पन्न करना—अपना धर्म और कर्ज समझते थे । चूँकि ऋतुकालमें, शास्त्रमें लिखी रात्रियोंमें, मैथुन करनेसे गर्भ रहनकी सम्भावना रहती है; अतः वे ऋतु-कालके सिवा अन्य दिनोंमें स्त्री-प्रसंग न करते थे और ऋतुकालमें ऋतुदान न करने या प्रसंग न करनेमें अपने तई दोष-भागी समझते थे । एक बार रघुवंशी दिलीप महाराज स्वर्गको गये थे । जब युद्धमें जय लाभ करके भारतको लौटनेवाले थे, उन्हें याद आगई कि अमुक दिन रानी ऋतु-स्नान करेंगी; अतः वे शीघ्रतासे चले । राहमें, वे वशिष्ठाश्रममें आये; पर ऋतुदानका समय निकल जानेके खयालसे, जल्दीमें, मुनिकी नौ-सुरभिकी प्रदक्षिणा करना भूल गये और अपनी राजधानीमें आ गये । उन्होंने ऋतुदान किया, पर गर्भ न रहा । सन्तान न होनेके खयालने उन्हें अत्यन्त दुःखित कर दिया । इसलिये उन्होंने वशिष्ठजीके पास जाकर, उन्हें अपनी हृदयव्यथा सुनाई । ऋषिने विचार कर कहा:—

धर्मलोपभयाद्राज्ञीमृतुस्नातामिमां स्मरन् ।

प्रदक्षिण क्रियार्हयां तस्यां त्वं साधु नाचरः ॥

अवजानासि मां यस्मादतस्तेन भविष्यति ।

मत्प्रसूतिम नाराध्य प्रजेति त्वां शशाप सा ॥

जिस दिन आप स्वर्गसे लौट रहे थे, उस दिन रानीने, चौथे दिन ऋतुस्नान किया था । आपको उसी दिन राजधानीमें पहुँचकर, ऋतुदान करनेका खयाल हो आया । आपको, समयपर न पहुँचनेसे धर्मके लोप होनेका भय था; अतः आप जल्दीमें सुरभिकी प्रदक्षिणा करना भूल गये । इसलिए सुरभिने आपको आप दिया, कि तुमने



मेरी अवज्ञा की है; अतः जब तक तुम मेरी सन्तानकी सेवा न करोगे, तुम्हारे सन्तान न होगी।

पाठक, हमारे इतना लिखनेका यही मतलब है, कि आप समझ जायँ, पहलेके लोग ऋतुकालके सिवा अन्य दिनोंमें स्त्री-प्रसङ्ग न करते थे। और ऋतुकालके समय प्रसङ्ग न करनेमें धर्महानि समझते थे। वे लोग आजकलकी तरह जब इच्छा होती थी, स्त्री-गमन न करते थे; क्योंकि ऋतु-समय गमन करनेसे वीर्य वृथा नष्ट नहीं होता। उसके फलने-फूलनेकी आशा रहती है। वीर्य समस्त धातुओंका सार है, प्राणीका बल-पुरुषार्थ और जीवन है। उसे गँवारोंके सिवा और कौन वृथा नष्ट करना चाहेगा ?

“मनुसंहिता”में लिखा है:—

ऋतुकालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतस्सदा ।

पर्वं वर्जं व्रजेच्चैनां तद् व्रतोरति काम्यया ॥

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडशस्मृताः ;

चतुर्भिरतिरेः सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥

पुरुषको, ऋतुकालमें अपनी स्त्रीके साथ संगम करना चाहिये। अपनी स्त्रीके सिवा, पर-स्त्री-गमनका खयाल भी मनमें न लाना चाहिये। अमावस, चौदस प्रभृति पर्वकी रात्रियोंमें संगम न करना चाहिये। स्त्रियोंका स्वाभाविक ऋतुकाल १६ रात्रियोंका है। उनमेंसे पहलेकी चार रात्रियोंमें गमन करना ठीक नहीं। इसी तरह ग्यारहवीं और तेरहवीं रात भी प्रसंगके लिये ठीक नहीं। शेष बची दस रात्रियोंमें मैथुन करना चाहिये।

सारांश यह है, कि रजोधर्म होनेके दिनसे सोलह रात्रियां ऋतु-कालकी हैं। इनमेंसे पहली चार तथा ग्यारहवीं और तेरहवीं रातें प्रसङ्ग करने योग्य नहीं, शेष दसमें प्रसङ्ग करना चाहिये। इस विषयमें मतभेद है, अतः हम सर्वसम्मत नियम लिखते हैं:—



पहली तीन रातोंमें तो भूलकर भी स्त्री-सङ्गम न करना चाहिये । इन रातोंमें सङ्गम करनेसे भयङ्कर रोग हो जाते हैं; यहाँ तक कि, पुरुष नपुंसक हो जाता है । आयुर्वेदमें लिखा है:—

रजस्वलां गतवतो नरस्यासंयतात्मनः ।

दृष्टयायस्तेजसां हानिरधर्मश्च ततो भवेत् ॥

रजस्वलाके साथ प्रसङ्ग करनेसे दृष्टि, आयु और तेजकी हानि होती तथा घोर पाप लगता है; अतः ऋतुकालके पहले तीन दिनोंमें स्त्री-प्रसङ्ग न करना चाहिये । चौथे दिनसे प्रसङ्गका दिन गिना जाता है; क्योंकि पहली तीन रातोंमें स्त्रीकी योनिसे रज बहुत ही ज़ियादा गिरता रहता है । उस दशामें प्रसङ्ग करनेसे वीर्य ठहर नहीं सकता; वह बह जाता है । इसके सिवा, स्त्रीके खूनमें जो गरमी होती है, वह पुरुषके लिङ्ग द्वारा उसके शरीरमें प्रवेश करके उसके खूनको गरम कर देती और मस्तिष्क तक पहुँचकर उसे बुद्धिहीन बना देती है । जो रजस्वलाके साथ बारम्बार प्रसङ्ग करते हैं, उन्हें पेशाबके अनेक रोग सोझाक, गरमी—उपदंश, मूत्रकृच्छ्र या भगन्दर प्रभृति हो जाते हैं ।

आयुर्वेद-ग्रन्थोंमें लिखा है:—

( १ ) पुरुष यदि चौथे दिन प्रसंग करता है, तो उसके निरोग और पूर्णायु पुत्र पैदा होता है ।

( २ ) छठी रातमें प्रसंग करनेसे निश्चय ही पुत्र पैदा होता है ।

( ३ ) आठवीं रातमें प्रसंग करनेसे भाग्यवान पुत्र पैदा होता है ।

( ४ ) दसवीं रातमें प्रसंग करनेसे धनैश्वर्यमान पुत्र होता है ।

( ५ ) बारहवीं रातमें प्रसंग करनेसे बलवान पुत्र होता है ।

नोट—इस बातको याद रखना चाहिये कि, उत्तरोत्तर रात्रियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं । चौथी रातसे छठी, छठीसे आठवीं, आठवींसे दसवीं और दसवींसे बारहवीं उत्तम होती है । मतलब यह कि, आठवीं रातमें संगम करनेसे जैसा बलवान और



बुद्धिमान पुत्र होगा, उसकी अपेक्षा दसवींमें प्रसंग करनेसे और भी बलवान होगा तथा दसवींसे भी अधिक बली बारहवींमें प्रसंग करनेसे होगा । यह बात हमने स्वयं परीक्षा करके देखी है कि, अठवीं रातमें प्रसंग करनेसे अवश्य ही पुत्र होता और वह बलवान होता है ।

( ६ ) पाँचवीं, सातवीं, नवीं और ग्यारहवीं रातोंमें प्रसंग करनेसे कन्या पैदा होती है । पाँचवींकी अपेक्षा सातवीं, सातवींकी अपेक्षा नवीं और नवींकी अपेक्षा ग्यारहवीं रात कन्या पैदा करनेके लिये उत्तम है ।

( ७ ) चौथी, छठी, आठवीं प्रभृति युग्म रातें पुत्र पैदा करनेके लिये और पाँचवीं, सातवीं, नवीं प्रभृति कन्या पैदा करनेके लिये हैं । उनमें प्रसङ्ग करनेसे पुत्र होता है और इनमें प्रसङ्ग करनेसे कन्या होती है । लेकिन द्वादशवीं, चौदहवीं, पन्द्रहवीं और सोलहवीं रातें गर्भाधानके लिये ठीक नहीं हैं ।

( ८ ) चौथी, छठी आदि सम रात्रियोंमें पुरुषका वीर्य ज़ियादा और स्त्रीकी रज कम रहती है । पाँचवीं, सातवीं प्रभृति विषम रात्रियोंमें पुरुषका वीर्य कम और स्त्रीकी रज अधिक होती है । यदि पुरुषका वीर्य अधिक होता है, तो पुत्र होता है और यदि स्त्रीकी रज अधिक होती है, तो कन्या होती है । पुरुषका वीर्य और स्त्रीकी रज—दोनोंके समान होनेसे नपुंसक पैदा होता है; अतः यदि पुत्रकी इच्छा हो, तो सम रात्रियोंमें और कन्याकी इच्छा हो, तो विषम रात्रियोंमें मैथुन करना चाहिये ।

( ९ ) हिकमत ग्रन्थोंमें लिखा है—“स्त्री-प्रसंगके लिये मौसमः बहार या वसन्त ऋतु अच्छी है । सात वारोंमें सोमवार, वृहस्पतिवार और शुक्रकी रात प्रसंगके लिये उत्तम हैं । इन तीन दिनोंके सिवा और दिनोंमें मैथुन करनेसे जो सन्तान होती है वह चोर और लबाट होती है तथा माताको दुःख देती है ।

“सोमवारकी रातका मालिक चन्द्रमा और मस्तरी वज्जीर है;



अतः सोमकी रातको मैथुन करनेसे जो सन्तान होती है, वह प्रखर-बुद्धि, सन्तोषी और माके हकमें अच्छी होती है ।

“मङ्गलका स्वामी मिरीख और वजीर जोहरा है, अतः मङ्गलको सहवास करना हानिकर है । अगर मङ्गलको संगम किया जायगा और गर्भ रह जायगा, तो मरी हुई सन्तान होगी ।

“बुधका मालिक अतारुद और वजीर जोहरा है । इस रातमें संगम तो दूर रहा, स्त्रीसे बात भी न करनी चाहिये ।

“वृहस्पतिका स्वामी मुस्तरी और वजीर सूरज है । वृहस्पतिकी रात स्त्री-प्रसङ्गके लिये सबसे उत्तम है ।

“शुक्रका स्वामी जोहरा और वजीर या मन्त्री चन्द्रमा है । इस दिन विवाह या प्रसङ्ग करना बहुत ही अच्छा है; आजके दिन गर्भ रहनेसे जो सन्तान होती है, वह विद्वान् और तपस्वी होती है, यह परीक्षा करके देख लिया है ।”

( १० ) वैद्यक-ग्रन्थोंमें लिखा है—सवेरे-शाम, पर्वके दिन, आधी रातको, गायोंको छोड़नेके समय और दोपहरके समय मैथुन करना हानिकारक है । जिसमें प्रभात-कालका मैथुन तो बहुत ही हानिकर है । किसी विद्वान्ने कहा है—

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा वालार्कस्तरूणां दधि ।

प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

सड़ा मांस, बूढ़ी स्त्री, सवेरेका सूरज, तत्कालका जमाया दही, प्रभात-कालका मैथुन और प्रातःकालका सोना—ये छै तत्काल बलको नाश करनेवाले हैं ।

हेमन्त और शिशार ऋतु या पौष-माघमें, गुदगुदे बिस्तरोंपर स्त्रियोंसे चित्त प्रसन्न करना, वाजीकरण औषधियाँ सेवन करके उन्हें आलिङ्गन करके सोना और शक्ति-अनुसार मैथुन करना ठीक है ।

वसन्त या फागुन-चैतमें, बागोंकी सैर करना और युवतीसे मैथुन करना सुखदायी है ।



ग्रीष्म ऋतु या वैशाख-जेठमें स्त्री-प्रसङ्ग करना हानिकारक है ।  
अगर रहा ही न जाय, तो पन्द्रहवें दिन कर सकते हैं ।

बरसातमें जब बादल छा रहे हों, मन्दी-मन्दी वर्षा हो रही हो, मैथुन कर सकते हैं; पर नित्य मैथुन करना रोग मोल लेना है ।

शरद् ऋतु या कातिक-अग्रहनमें, जब दिल जाहे, सरोवर प्रभृतिके किनारे मैथुन कर सकते हैं ।

पौष-माघमें वाजीकरण औषधियाँ सेवन करके इच्छानुसार मैथुन कर सकते हैं । वसन्त और शरद् ऋतु यानी फागुन-चैत और कातिक-अग्रहनमें, तीन-तीन दिनके बाद मैथुन कर सकते हैं । वर्षाकाल और गरमीके मौसममें, महीनेमें दो बार मैथुन कर सकते हैं ।

जाड़ेके मौसममें रातके समय, गरमीमें दिनके समय, वसन्तमें रात या दिन किसी समय—जब जी चाहे—प्रसंग कर सकते हैं, बरसातमें जब बिजली चमकती हो और बादल गरजते हों तभी कर सकते हैं ।

जब शरीर तन्दुरुस्त हो, शरीरमें यथेष्ट बल हो, मनमें शोक-चिन्ता, ईर्ष्या-द्वेष आदि विकार न हों और हवा ठीक हो,—भोजन पचा गया हो, पर पेट एकदम खाली न हो, तभी मैथुन करना चाहिये । पाखाने-पेशाबकी हाजत और भूख-प्यासकी हाजतमें मैथुन न करना चाहिये । अगर भोजन न पचा हो, शरीरमें थकान हो, पहली रातमें जागरण किया हो, मनमें शोक-चिन्ता आदि विकार हों, भूलकर भी मैथुन न करना चाहिये । इस दशामें, मैथुन करनेसे बेहोशी प्रभृति उपद्रव पैदा हो सकते हैं । मन सुस्त हो, भूख लगी हो, तब भी मैथुन न करना चाहिये । शरीरमें गरमी या सरदी हो, तब भी मैथुन न करना चाहिये । अगर बहुत ही मन हो, तो गरमी कम होने पर कर सकते हैं । सूखी प्रकृतिवालोंको हम्माम या स्नानागारमें और अधिक सरदीमें मैथुन हानि-कारक है ।



## कामियोंके याद रखने योग्य बातें ।

( १ ) कम उम्रमें, स्त्री-प्रसङ्ग करना अनुचित है । छोटी वयसमें मैथुन करने या अधिक स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे 'शुक्रतारल्य' रोग हो जाता है, यानी वीर्य पतला हो जाता है । इस दशामें, मल-मूत्र त्यागते समय वीर्य निकल जाता है, स्त्रीको देखने या छूने मात्रसे वीर्यसे धोती बिगड़ जाती है, ज़रा भी रुकावट नहीं होती, यानी संगम होते ही अथवा भगदर्शन करते ही वीर्यपात हो जाता है । अगर इस दशामें जल्दी ही इलाज नहीं किया जाता, तो दस्तकब्ज, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अतिसार, काममें दिल न लगना, सिर घूमना, चक्कर आना और नेत्रोंके इर्द-गिर्द काले-काले दाग हो जाना प्रभृति रोग हो जाते हैं । जब रोग बढ़ जाता है तब लिंगके चैतन्य हुए बिना ही वीर्य गिरने लगता । फिर, चैतन्यता या शहवत होना ही बन्द हो जाता है अथवा 'ध्वजभंग-रोग' आ दवाता है; यानी मर्द नामर्द हो जाता है, गाहे-ब-गाहे स्वप्न-दोष होने लगते हैं, पर स्त्री-प्रसंगकी शक्ति नहीं रहती । अतः छोटी उम्रमें ही स्त्री-प्रसंग या हस्तमैथुन आदिसे वीर्यपात न करना चाहिए । वाग्भट्ट महोदय कहते हैं:—

पूर्णषोडशर्षा स्त्री पूर्णविंशेनसंगता ।

शुद्धे गर्भाशये मार्गे रक्ते शुक्रे अनिले हृदि ॥

वीर्यवन्ते सुतं सुते ततो न्यूनाब्दयोः पुनः ।

रोग्यल्पायुरधन्यो वा गर्भोभवति नववा ॥

सोलह सालकी स्त्री अगर बीस सालके पुरुषके साथ मैथुन करती है; साथ ही गर्भाशय, गर्भाशयकी राह, खून, वीर्य, हवा और हृदय शुद्ध होते हैं; तो वह वीर्यवान्, बलवान् पुत्र जननी है । अगर इन अवस्थाओंसे कम उम्रके स्त्री-पुरुष मैथुन करते हैं, तो प्रथम तो गर्भ रहता ही नहीं; अगर रह भी जाता है, तो रोगी, अल्पायु और निर्धन सन्तान होती है ।



नोट—सुश्रुताचार्य १६ सालकी स्त्री और २४ सालके पुरुषको मर्माधान करने या प्रसंग करनेकी आज्ञा देते हैं । पर आजकल तो ८।१० वर्षकी लड़की और दस-बारह वर्षके लड़कोंकी शादी हो जाती है । माता-पिता १३-१४ सालके कच्चे लड़कोंको बहूके पास ज़बरदस्ती भेजते हैं । परिणाम यह होता है, कि शीघ्र ही लड़कोंको “प्रमेह या शुक्रतारल्य” अथवा धातुके पतलेपनका रोग हो जाता है । १८।२० सालके लड़के धातुपुष्टिकी दवा खोजते देखे जाते हैं । हमारे यहाँ ऐसे रोगी जितने आते हैं, उतने और रोगों के नहीं आते । मार-वाड़ियोंमें बाल-विवाहकी बड़ी चाल है; अतः वे ही सबसे ज़ियादा आते हैं । जिन्हें स्त्री-सुखका आनन्द भोगना हो, उत्तम सन्तान पैदा करनी हो, पूरी उम्र तक जीना हो, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—चतुर्वर्ग—की प्राप्ति करनी हो, उन्हें कम-से-कम महर्षि वाग्भट्टकी आज्ञापर चलना चाहिये । सुश्रुतकी आज्ञा पालन करना तो बड़े कलेजेका काम है ।

( २ ) वाजीकरण औषधियोंके सेवन करनेवाला, शुद्ध वीर्य और निरोग शरीरवाला पुरुष, सोलह वर्षकी उम्रसे सत्तर सालकी उम्र तक, मैथुन कर सकता है । सोलहसे कम और सत्तरसे ज़ियादा उम्रमें मैथुन हानिकारक है । अगर सत्तर सालके उपर की उम्रवाला मैथुन करता है, तो शीघ्र ही नष्ट हो जाता है ।

नोट—आजकल जन्म-भर शरीरमें तेल न देने और हर साल वाजीकरण औषधियाँ न खानेसे—चालीस-पैंतालीस सालकी उम्रमें ही—पुरुष स्त्री-प्रसंगके योग्य नहीं रहते । इस उम्रमें नहीं—तो ५०।५५ की उम्रमें; पहलेके ७० साल वालोंसे भी गये-बीते होते हैं ।

( ३ ) स्त्री-प्रसंग नियमानुसार करना चाहिए । अधिक स्त्री-प्रसंग करनेमें असीम हानियाँ हैं । अधिक सहवाससे शोथ—सूजन, खौंसी, क्षय या राजयक्ष्मा ( थाइसिस ), ज्वर, बवासीर, पीलिया, स्वरभंग, ध्वजभंग—नामदीं आदि भयंकर और प्राणसंहारक रोग हो जाते हैं । जिन्हें अधिक मैथुन करना हो उन्हें, सदा वाजीकरण औषधियाँ सेवन करनी चाहियें । आयुष्मान, बुढ़ापेसे रहित—जवान, बलवान, दृष्टपुष्ट पुरुषोंको, हर मौसममें, तीन-तीन दिनके बाद और मौसम गरमीमें पन्द्रह दिनके बाद स्त्री-प्रसंग करना



उचित है। जो लोग इन नियमों के विपरीत मैथुन करते हैं, उन्हें उपरोक्त रोगोंके सिवा और भी दुर्जय रोग हो जाते हैं और वे अपने समयसे पहले ही मर जाते हैं। कहा है:—

ग्लानिः श्रमश्च दौर्बल्यं धात्वद्रिय बलक्षयः ।

क्षयवृद्धयुपदंशाद्या रोगाश्चातीव दुर्जयः ।

अकालमरणञ्च स्याद्भजतः स्त्रियमन्यथा ।

जो नियम-विरुद्ध या शास्त्र-विधि-विपरीत मैथुन करते हैं, उन्हें ग्लानि, श्रम, कमजोरी, धातु और इन्द्रियोंके बलका नाश, क्षय, अण्डवृद्धि—फोते बढ़ना और उपदंश प्रभृति रोग हो जाते हैं और वे अकालमृत्युसे मर जाते हैं।

जो पुरुष धड़ाधड़ मैथुन चलाते हैं, अपने बलसे अधिक स्त्री-प्रसंग करते हैं, वे अगर पूरी उम्र तक जीना चाहें, सदा निरोग रहना चाहें, लोक-परलोक बनाना चाहें; तो आजसे ही नियमानुसार मैथुन करें। स्त्री-प्रसंगमें सन्तानोत्पत्तिके सिवा और कोई लाभ नहीं। जिन्होंने अपनी उम्रमें अत्यन्त स्त्री-प्रसंग किया, उन्हें हमने पछताते और रोते देखा। एक दिन ऐसा हाल सभीका होता है। वे बूढ़े लड़्डू हैं। जो इन्हें खाता है, वह भी पछताता है और जो नहीं खाता है, वह भी पछताता है।

हमारा अभिप्राय यह नहीं, कि जीवन-भर स्त्री-प्रसंग करना ही न चाहिए। हम कहते हैं, कीजिए, अवश्य कीजिए, पर अधिक न कीजिए। हर चौथे दिन रातको, एक बार कीजिए। पर रातमें दो-दो और तीन-तीन बार करना कदापि अच्छा नहीं। दूसरी-तीसरी बार करनेसे वीर्यकी जगह खून या खून-मिला वीर्य आता है। अधिक वीर्य नष्ट करनेसे आँखोंकी रोशनी घट जाती है, असमयमें बाल सफेद होने लगते हैं, नेत्रोंके नीचे काले-काले दाग, माँई या चकत्ते हो जाते हैं; २५३० अथवा ज़ियादा-से-ज़ियादा ४०।५० सालकी उम्रमें मृत्यु हो जाती है। जो बहुत ही ज़ियादा मैथुन करते हैं,



दिन-रात उसीमें लगे रहते हैं, वे तो क्षयादि रोगोंके पंजों में फँसकर, भरी जवानीमें ही अपनी प्राणवल्लभाको रोती-विलपती छोड़कर, यमराजके मेहमान होते हैं । इसीसे वेदोंमें महीनेमें एक बार, ऋतु-स्तानके बाद, मैथुनकी आज्ञा है ।

( ४ ) जब आपका शरीर सब तरहसे निरोग हो, आपका दिल कहीं न लगे, लिंगेन्द्रिय बिना मन चलाये आपही सख्त हो जाय, स्त्रीको देखते ही कलेजा धड़कने लगे, गफलत-सी होने लगे, उस हालतमें आप अवश्य मैथुन करें । ये कामातुर होनेके लक्षण हैं । इस अवस्थामें मैथुन न करनेसे—मैथुनके वेगको रोकनेसे—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और नपुन्सकत्व आदि रोग हो जाते हैं । जो कामातुर होनेपर भी, बार-बार वीर्यके वेगको रोक लेते हैं; वीर्य निकलना चाहता है और लोग निकलने नहीं देते; उनका वीर्य शान्त हो जाता है; फिर इच्छा करनेसे भी अपने स्थानसे चलायमान नहीं होता । बिना वीर्यके चलायमान हुए, पुरुष मैथुन कर नहीं सकता । मतलब यह है, कि लिंगेन्द्रियके चैतन्य होने या शहवत होने पर भी जो मैथुन नहीं करते—वे निश्चय ही नामर्द हो जाते हैं । ऐसी नामर्दीको “शुक्रस्तम्भजन्य” या वीर्य रुकनेसे हुई नामर्दी कहते हैं । इसके सम्बन्धमें हम इसी भागके पृष्ठ १३५ में लिख आये हैं । भगवान् ने जो अङ्ग जिस कामको बनाया है, उससे वही काम लेना चाहिये; पर उचित रूपसे । अगर उस अंगसे उसका काम न लिया जायगा, तो वह निश्चय ही बेकाम हो जायगा । लोहेकी चाबीसे अगर काम नहीं लिया जाता, वह नित्य प्रति तालेमें नहीं लगाई जाती, तो उस पर जंग चढ़ जाती है और फिर वह तालेमें नहीं लगती, उसे न खोलती है और न बन्द करती है । हमने देखा है, अगर नित्य एक बार मैथुन किया जाता है, तो अपने समय पर नित्य लिंगेन्द्रियमें सख्ती और तेजी आजाती है; पर यदि चार छै महीने एक दम नहीं किया जाता, तो पहिले कुछ कठिनाई होती है; यानी कुछ दिक्कत



उठानेके बाद शहवत या कामेच्छा होती है । अतः लिंगेन्द्रियसे पेशाब और मैथुन दोनों हीका काम लेना चाहिये; पर 'अति' सब जगह खराब है । खीरका भोजन अमृत-तुल्य है । अगर उचित मात्रासे खाते हैं, तो मनमें प्रसन्नता, तृप्ति और बलवृद्धि होती है । पर यदि वही खीर अत्यधिक खाई जाय—अनापशानाप उड़ाई जाय, तो अजीर्ण, दस्तकब्ज और कृमि-रोग प्रभृति रोग पैदा कर दे । रोज मैथुन करनेसे जितना आनन्द आता है, उसकी अपेक्षा तीसरे-चौथे दिन करनेसे अधिक आता है और तीसरे-चौथे दिनकी अपेक्षा, महीनेमें दो-चार या एक बार करनेसे और भी अधिक आता है । सारांश यह, कामातुर होनेपर, कामका वेग होनेपर, मैथुन अवश्य करो । जिस तरह छींक, डकार, नींद प्रभृति तेरह वेगोंका रोकना भयङ्कर रोगोत्पादक है; उसी तरह मैथुनके वेगके रोकनेको भी समझिये ।

( ५ ) मैथुन जब करो, अपनी ही स्त्रीसे करो, पराई स्त्रियों या वेश्याओंके साथ मैथुन करनेमें इतनी हानियाँ हैं, जिनका उल्लेख हम कर नहीं सकते । अपनी स्त्रीमें जो आनन्द है पराईमें उसका शतांश भी नहीं । पर-स्त्रीमें सदा जानका खतरा रहता है । हर समय भय लगा रहता है । जब मनमें भय होगा, स्त्री-प्रसङ्गमें आनन्द कदापि न आयेगा । भयातुर पुरुषको पूरे तौरसे शहवत ही नहीं होती । ऐसे मौकों पर, लोग ज़बर्दस्ती लिंगेन्द्रियको चैतन्य करनेकी कोशिश करते हैं । अनेक बार चेष्टा करनेपर भी चैतन्य नहीं होती और यदि हो भी जाती है तो पूरा आनन्द नहीं आता; क्योंकि डरके मारे दिल धड़कता रहता है । इसके सिवा, अपनी स्त्रीकी अपेक्षा पराई स्त्री और वेश्याके साथ गमन करनेसे वीर्य भी ज़ियादा निकलता है । यह सबसे बड़ी हानि है । फिर; पर-स्त्रीमें मुहब्बत भी नहीं होती । वह केवल काम-शान्ति या गहने-कपड़ोंके लालचसे आपकी हुई है । जबतक आप उसकी इच्छा पूरी करेंगे, वह



आपकी रहेगी; जहाँ इसमें बाधा पड़ी अथवा कोई आपसे अच्छा देने वाला या काम-शान्ति करने वाला मिला, वह आपको फौरनसे पहले त्याग देगी। जो अपने व्याहताको छोड़कर, दूसरे पुरुषसे प्रेम करती है, उसे नित नये पुरुषोंकी चाट लग जाती है। कहा है:—

एक नारि जब दो से फसी, जैसे सत्तर वैसे असी ।

पर-पुरुष-रता स्त्रियोंको किसीसे भी सच्ची मुहब्बत नहीं होती। जब वे अपने सात फेरोंके व्याहताकी न हुई, तब यारों या धरे खसमोंकी कैसे होंगी ? किसीने ठीक ही कहा है:—

कागज़की भसम क्या भसमनमें ? धरो खसम क्या खसमनमें ?  
सौ रुपैया क्या रुपयानमें ? एक वेटा क्या वेटानमें ?

जिन्होंने भी पर-नारियोंपर नीयत ढिगाई, उनका अन्तमें बुरा ही हुआ। रावणने सीतापर मन ढिगाकर, अपना सर्व्वनाश कराया और प्राण तक खोये। जयद्रथने द्रौपदीपर नीयत ढिगाकर अपना घोर अपमान कराया। भीमने उसकी एक ओरकी मूँछें और सिर मूँड़कर, द्रौपदीके सामने ही लातें लगाई। कीचकने भी द्रौपदीके कारण ही अपनी जान गँवाई। स्वयं त्रिलोकीनाथ भगवान् विष्णुने, जलन्धर-पत्नी—वृन्दाके साथ व्यभिचार करके, नीचा देखा। दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा कहलानेवाले सम्राट्-कुल-तिलक शाहन्शाह अकबरने पर-स्त्री-गामी होनेके कारण, अपनी घोर बदनामी कराई। शेषमें बीकानेरकी एक सती-साध्वी रानीने शिक्का देकर, उनकी खोटी लत छुड़ाई। पर-नारीके फेरमें पड़ने वालोंका सर्व्वस्व म्वाहा हो जाता है। किसीने ठीक ही कहा है—

परनारी पैनी छुरी, तीन ठौर ते खाय ।  
धन छीजे, जोबन हरे, मुए नरक ले जाय ॥



पर-नारियोंसे बचनेके लिये, अपने हिन्दुओंके धर्म-शास्त्र—  
“मनुसंहिता” के रचयिता मनु महाराजने कहा है:—

ऋतुकालाभिगामी स्यात् स्वदारे निरतः सदा ।

ब्रह्मचर्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥

जो पुरुष अपनी ही स्त्रीसे सन्तुष्ट रहता है और ऋतु-कालमें उसीसे संगम करता है, वह गृहस्थाश्रममें रहकर भी, ब्रह्मचारीके समान होता है ।

नीतिशास्त्रमें लिखा है:—

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत् ।

आत्मवत् सर्व भूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ॥

जो पर-स्त्रियोंको अपनी जननी—माताके समान, पराई दौलतको मिट्टीके ढेलेके समान और समस्त प्राणियोंको अपने समान देखता है, वही पण्डित और बुद्धिमान है ।

जो लोग अपनी स्त्रियोंको त्यागकर, पर-स्त्री-गमन या वेश्या-गमन करते हैं—उन्हें क्षण भरको भी सुख नहीं मिलता । बन्धु-बान्धव और अड़ोसी-पड़ोसी उनकी निन्दा करते हैं, घरकी स्त्री दुखी होकर उनको कोसती और घरमें घुसते ही कलह-देवीका सामना करना पड़ता है । जिस घरमें कलह रहता है, हमने आँखोंसे देखा है, वह घर सत्यानाश हो जाता है । मनुजीने बहुत ही ठीक कहा है:—

शोचन्ति यामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम् ॥

न शोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धन्ते तद्धि सर्वदा ।

सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्ता भार्या तथैव च ।

यस्मिन्नेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम् ॥

जिन घरोंमें स्त्रियाँ दुखी होकर रात दिन शोक करती हैं, वे घर शीघ्र ही नाश हो जाते हैं और जिन घरोंमें ये शोक नहीं करतीं—सदा आनन्दमें मग्न रहती हैं, उन घरोंकी सदा उन्नति होती है ।



जिस घरमें स्त्रीसे पुरुष और पुरुषसे स्त्री सन्तुष्ट रहती है, दोनों ही एक दूसरेको प्रसन्न रखते हैं, उस घरमें सदा कल्याण रहता है। अर्थात् धन-दौलत, सुखैश्वर्य और सन्तानकी वृद्धि होती है।

हमने इन आँखोंसे देखा है कि, जयपुरके एक जौहरी महाशय परले सिरके पर-स्त्री-गामी थे। आपकी परिणीता पत्नी परम सुन्दरी थी, पर वे पाँच-सात रखनी अवश्य रखते थे। घरमें सब तरहके सुखैश्वर्यके सामान होनेपर भी, उन्हें सदा दुखी रहना पड़ता था। साथ ही वीर्य-रत्न भी जियादा नष्ट करना पड़ता था, क्योंकि गहने-कपड़े और भोग-विलास तथा धनके लिये ही वे स्त्रियाँ उनके चिपकी रहती थीं। बहुत कहाँ तक लिखें, वे हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी रोगोंके शिकार बनकर, भर-जवानीमें चल बसे। उनका पुत्र भी पिताजीके कुकर्म देखा करता था। उनके मरनेके बादसे, वह भी वैसा ही पर-स्त्री-गामी हो गया है। अब सोजाक और उपदंशकी उसपर सदा कृपा रहती है।

(६) कामी पुरुषको अपना वीर्य-भण्डार सदा खर्च ही न करना चाहिये। सदा खर्च ही खर्च करने और न बढ़ानेसे हिमालय-समान धन या वीर्य भी एक दिन समाप्त हो जाता है। जाड़ेमें अग्नि तेज रहती है; भारी और पौष्टिक पदार्थ भी पच जाते हैं; कम-से-कम जाड़ेके मौसममें धातुवर्द्धक पदार्थ अवश्य खाने चाहियें। मैथुन करके भी, मिश्री-मिला अधौटा दूध पीना चाहिये। मैथुनके बाद बदनकी गर्मी शान्त होनेपर, हाथ-पाँव धोकर, दूध पी लेनेसे जितना वीर्य खर्च होता है, उतना फिर तैयार हो जाता है। सवेरे ही, बदनमें, अपनी प्रकृतिके अनुसार “चन्दनादि तैल” या “नारायण तैल” मालिश कराकर स्नान करना चाहिये। भोजनके समय हलवा, मोहन भोग, बालाईका हलवा, दूध-चाँवलकी खीर या मेवेकी खिचड़ी प्रभृति तर, मीठे और पुष्टिकर पदार्थ खाकर दिनमें



दो घण्टे सोना चाहिये । जो विषयी पुरुष हमारी इन बातोंपर ध्यान देंगे, उनका बल-वीर्य कभी कम न होगा ।

“तिब्बे अकबरी” में लिखा है—मैथुनके बाद कोई ताकतवर और तर मिठाई—जैसे मिश्री-मिला अधौटा गायका दूध, रबड़ी, मलाई आदि पदार्थ अवश्य खाने चाहियें । ऐसे पदार्थ खा लेनेसे, दिल-दिमागमें तरी और मजबूती आती एवं बल-वीर्य नहीं घटता । जितना घटता है, उतना फिर पैदा हो जाता है । “कराबादीन कादरी” में एक प्रकारकी ऐसी गोलियाँ लिखी हैं, जिनको मैथुनके बाद खा लेने से गई हुई प्रधान शक्ति फिर लौट आती है । मैथुन किया है, ऐसा मालूम ही नहीं होता । पाठकोंके उपकारार्थ, हम उनके बनाने और सेवन करनेकी विधि नीचे लिखते हैं:—

### मैथुनके पीछे खानेकी गोलियाँ ।

मस्तगी ६ माशे और बैंगनके बीज ३ माशे लाकर, पीसकूट कर छानलो । फिर उस चूर्णमें “अगरका चोया” मिलाकर, खरलमें खूब घोटो । घुट जानेपर, काली मिर्चके समान, गोलियाँ बनालो ।

मैथुन कर चुकनेके बाद, दो या चार गोली खा लेनेसे फिर पहले जितनी ही शक्ति हो जाती है । ये गोलियाँ अमाशयको भी बलवान करती हैं ।

### दूसरा नुसखा ।

मैथुनके बाद १० माशे घी और ५ माशे शहदमें, दश माशे मुल-हठीका पिसा-छना चूर्ण मिलाकर चाटने और ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे बे-इन्तहा बल और मैथुन-शक्ति बढ़ती है । कामी पुरुषोंको इस नुसखेका सेवन, बिला नागा, रोज शामको, करना चाहिये; चाहे मैथुन करें या न करें । जेठी मधु या मुलहठी वीर्य बढ़ाने और उसका पतलापन नाश करनेमें रामवाण है ।



## तीसरा नुसखा ।

सम्भोग कर चुकनेके बाद, अगर जरासी “सोंठ” डालकर औटाया हुआ दूध पिया जाय, तो बड़ा लाभ हो । इस दूधके पीनेसे भी गई हुई ताकत लौट आती है । गाय, भैंस और भेड़का दूध सम्भोग-शक्ति बढ़ानेमें परमोत्तम है ।

सुन्दरी नारी भी बल बढ़ानेवाली है ।

मैथुनके बाद शरीरमें तेल मलवाना और रूपवती नारीके नर्मानर्म हाथोंसे पैरोंके तलवे और पिंडलियाँ मसलवाना भी अच्छा है । कामी पुरुषोंके लिये रूपवती कामनियाँ कल्पवृक्षके समान हैं । इनके साथ रहने, इनको चूमने और हँसी-दिल्लगी करनेसे कामोत्पत्ति होती और संगम करनेसे आनन्दकी प्राप्ति होती है । युवती और सुन्दरी नारियाँ आनन्द और सम्भोग-शक्ति बढ़ानेमें सर्वोपरि हैं । इनकी सुहृवतसे, शरीरकी गरमी और मैथुन करनेकी शक्ति निश्चय ही बढ़ती है । अगर इनके साथ संगम करनेसे वीर्य अधिक भी निकल जाता है, तो भी ताकत बहुत ही कम जाया होती है ।

(७) अगर आपका वीर्य स्त्री-प्रसङ्ग करने में शीघ्र ही निकल जाता हो, तो आप मूखोंकी बातोंमें आकर “अफीम, भाँग या गाँजे” वगैरहकी आदत न डालें । इनसे, आरम्भमें अवश्य स्तम्भन या रुकावट होगी, पर परिणाम बड़ा भयंकर होगा । इनको खाकर मैथुन करनेसे, वीर्य ज़ियादा निकलता और वह गाढ़ा तथा ठिठरा हुआ-सा होता है तथा बड़ी मिहन्तके बाद निकलता है, इससे बेचैनी और थकावट भी बहुत होती है । लगातार कुछ दिवस सेवन करते रहनेसे, कामोद्दीपक शक्ति जाती रहती है और अच्छा-भला मर्द नामर्द हो जाता है; फिर-शहवत होती ही नहीं; जब आपका वीर्य गाढ़ा, पुष्ट और तर होगा; उसमें अधिक गर्मी न होगी;



तब हमसाक या स्तम्भनकी दवा बिना खाये ही, काफी रुकावट होगी । अगर मिर्च, खटाई प्रभृति खानेसे आपका पित्त बढ़ गया होगा, तो अच्छी-से अच्छी रुकावटकी दवा खाकर मैथुन करने पर भी, आपको काफी रुकावट न होगी और उल्टा रोग बढ़ेगा । जिनका वीर्य शुद्ध होता है, अगर वे, कोई उत्तम स्तम्भनकारक पदार्थ खाकर, मैथुन करते हैं, तो उन्हें मामूलीसे अधिक स्तम्भन या रुकावट होती है । अतः सबसे पहिले, वीर्यकी गरमी छ़ाँटकर, उसे निर्दोष करना उचित है । अगर स्त्री-प्रसंगमें वीर्यके जल्दी निकलनेका रोग हो, तो आप नीचे लिखे उपाय करें:—

( क ) मिर्च-खटाई त्यागकर, सात या चौदह दिन तक, “कबाब-चीनी” या शीतल चीनीका चूर्ण, हर दो-दो घण्टेमें, दिनमें छै बार, डेढ़-डेढ़ या दो-दो माशे फाँककर, एक-एक गिलास “शीतल जल” पीवें । इस उपायसे पेशाब जियादा होकर, वीर्यकी गरमी शान्त होगी और दिल-दिमाग शीतल रहेंगे । इस तरह, ८ दिन इस दवाके लेनेके बाद, रातको सोते समय, कोई डेढ़ या दो माशे कबाबचीनीका चूर्ण “शहद”में मिलाकर ११ या २१ दिन चाटें । परमात्माकी दयासे आपको रुकावट होने लगेगी । शहदमें मिलाकर कबाब-चीनी, रोज रातको एक बार, चाटकर सो जानेसे “स्वप्नदोष” होना भी बन्द हो जाता है । जिन्हें स्वप्नदोषका रोग हो, वे इसे अवश्य सेवन करें ।

( ख ) अगर इस उपायसे आपको पूरा लाभ न हो, तो आप कबाबचीनीका चूर्ण, जलके साथ, ८ दिन फाँककर, नीचेका नुसखा काममें लावें । इसके सेवन करनेसे, आपको अवश्य अधिक स्तम्भन होगा और आप अपनी प्राणवल्लभाको स्वलित या द्रवित करके, अपनी सच्ची दासी बना सकेंगे—

कामिनी-गर्वहारि रस ।

अकरकरा ३ माशे, लौंग ३ माशे, केशर ३ माशे, सोंठ ३ माशे,



पीपर ३ माशे, जावित्री ३ माशे, जायफल ३ माशे, लालचन्दन ३ माशे, शुद्ध गंधक ६ रत्ती, शुद्ध हिंगलू ६ रत्ती और शुद्ध अफीम १ तोले—पहले लालचन्दन तककी आठों दवाओंको, ६।६ माशे लाकर और अलग-अलग कूट-पीस कर कपड़ेमें छानलो। फिर, सबको अलग-अलग, तीन-तीन माशे या चौअन्नी-चौअन्नी भर, तोल-तोल कर साफ खरलमें डालो। ऊपरसे ६।६ रत्ती “शुद्ध गंधक” और “शुद्ध हिंगलू” डालो। शेषमें शोधी हुई पतलीसी अफीम डाल कर घोटो। घोटते समय, ज़रा-ज़रासा पानी भी देते जाओ। जब गोली बनाने योग्य लुगदी हो जाय, तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बनालो और छायामें सुखा कर रख दो। अगर आपको प्रसंगमें रुकावट न होती हो, वीर्य जल्दी निकल जाता हो, तो आप, सोनेसे पहिले, एक गोली खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीलो। २१ या ४० दिन इन गोलियों के सेवन करनेसे आपकी वीर्य-स्तम्भन-शक्ति और मैथुन-शक्ति निश्चय ही बढ़ जायगी। वीर्यका पतलापन और ध्वजभंग—नामर्दी नाश करनेमें यह नुसखा अकसीरका काम करता है। परीक्षित है।

### स्त्री-वशीकरण रस ।

बंसलोचन १ तोले, धुली भौंगका चूर्ण ४ तोले, शुद्ध पारा ३ माशे, शुद्ध गंधक ३ माशे, लोहभस्म ३ माशे, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म ‘शतपुटी’ ३ माशे, चाँदीकी भस्म ३ माशे, सोनेकी भस्म ३ माशे और सोनामक्खीकी भस्म ३ माशे, इन सबको खरलमें पीसकर, ऊपरसे “भौंगका काढ़ा” डाल-डाल कर घोटो। घुट जानेपर, चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे अपने बलाबल अनुसार, एक या दो गोली रोज खाकर, ऊपरसे दूध पीनेसे शुक्र या वीर्यका पतलापन नाश होकर रुकावट बढ़ती और नामर्दी नाश होती है। चालीस दिन सेवन करनेसे ध्वजभंग-रोगी रा मर्द हो जाता है। परीक्षित है।



## अपूर्व स्तम्भनकारक चूर्ण ।

१-अकरकरा ... २ मासे.

२-काली तुलसीके बीज ... २४ मासे

३-मिश्री या मिश्रीके नीचे जमा हुआ कन्द २७ मासे

इन तीनोंको कूट-पीसकर छानलो और मैथुन करनेसे दो घण्टे पहले फाँक लो; पीछे मैथुन करो। अगर आपका वीर्य एक दम पतला और गरम न होगा, तो आप जबतक “नीबूका रस” न पियेंगे, कदापि स्वलित न होंगे। यद्यपि इस नुसखेमें “अफीम” नहीं है, तथापि यह अफीम वालोंसे अच्छा और सच्चा है। परीक्षित है।

## स्तम्भनकारक गरीबी नुसखा ।

इमलीके चीएँ तोलेभर लेकर, चार दिन तक पानीमें भिगो रखो, पीछे छीलकर तोल लो। जितने चीएँ हों, उनके दूना “पुराना गुड़” उनमें मिलादो और पीसकर एक दिल कर लो। शेषमें, चने-समान गोलियाँ बनालो। स्त्रीके पास जानेसे घण्टे या दो घण्टे पहले दो गोली खाओ। अगर वीर्य स्वलित न हो, तो “नीबूका रस” पीलो।

## हर्षोत्पादक लेप ।

कबाबचीनी, दालचीनी, अकरकरा और लाल मुनक्के—बराबर-बराबर लाकर महीन पीस लो। पीछे इसमेंसे कुछ चूर्ण लेकर “शहद” में मिला लो और, सुपारी छोड़कर लिंगेन्द्रियके ऊपरी हिस्सेपर इसका लेप करलो। घण्टे या आध घण्टे बाद, इस लेपको कपड़ेसे पोंछकर, मैथुन करो। ऐसा आनन्द आयेगा, कि दोनोंका दिल प्रसन्न हो जायगा।

(८) स्त्री-संगमसे शरीरमें कमजोरी न आने पावै, इसका खयाल जरूर रखना चाहिये। अगर मैथुन करनेसे हृदयमें जलन हो, अवधवमें सुस्ती पैदा हो, श्वास अपनी मुख्य दशासे बदल जाय



और वीर्य हमेशाके दस्तूरसे देरमें निकले, तो स्त्री-संगम त्याग दो और अपने शरीरको दुरुस्त करो । उपरोक्त लक्षण प्रकट होने या कमजोरी होनेकी हालतमें मैथुन करना, मौतको बुलाना है । इस हालतमें शरीरको गरम और ताजा करो, उसे आराम दो और मनको प्रसन्न करो । जिस खेल-तमाशोंमें दिल लगे, उसीमें लगाओ । गाय या भेड़का दूध पीओ । भुने हुए मुर्गीके अण्डे, बादाम या मलाईका हलवा खाओ । अगर बहुत मैथुन करनेसे शरीरमें कँपकँपी आवे, तो सिर या मस्तिष्कपर तेल मलो । शरीरपर “बान या शाद”का तेल मलो । जिनके पट्टे कमजोर होते हैं, उनको स्त्री-प्रसङ्गसे बहुत हानि होती है । अगर अति स्त्री-प्रसंगसे आँखोंकी ज्योति या बीनाई कमजोर होने लगे, तो सिरपर तेल मलो और नाकमें बादाम, बनफ़सा या कद्दूका तेल डालो । मीठे पानीमें स्नान करो और पानीमें नेत्र खोलो । आँखोंमें गुलाबजल टपकाओ । जब तक पहलेका-सा बल न आ जाय, हरगिज मैथुन मत करो ।

( ६ ) स्त्री-प्रसंग करते ही शीतल जल पीना, शीतल जलसे लिंगेन्द्रियको धोना और स्नान करना हानिकारक है । प्रसंगके समय शरीर गरम हो जाता है । उस दशामें शीतल जल या शर्बत पीनेसे जुकाम, कम्परोग या जलोदर हो जाता है अथवा बदन दुखने लगता या ज्वर चढ़ आता है । शीतल पानीसे लिंगको धोनेसे वह निकम्मा हो जाता है, उसकी गरमी मारी जाती है और उसमें नामर्दी की-सी शिथिलता या ढीलापन आ जाता है । मैथुन करके, तत्काल, हवामें जानेसे भी जुकाम, शिरदर्द और वेदना प्रभृति रोग हो जाते हैं । अतः मैथुनके १५/२० मिनट बाद, जब पसीने न रहें, गरमी शान्त हो जाय, दिलकी धड़कन कम हो जाय, बाहर जाना चाहिए और तभी निवाये जलसे लिंगको धोना चाहिये । हाथ-पाँव धोकर सोंठ-मिश्री मिला दूध या पेठेकी मिठाई प्रभृति खाने चाहियें । हाँ, मैथुन



करके, घरके भीतरकी मोरीपर, पेशाब तत्काल कर लेना चाहिये, जिससे मूत्रनलीमें यदि कोई वीर्यका कतरा रह गया हो, तो निकल जाय और पेशाबमें जलन या सोजाक आदि रोग न हो जायँ ।

( १० ) अगर आपकी उम्र चालीस या पचासके करीब है, पर आपने अपनी गलतीसे दूसरी या तीसरी शादी कर ली है, तो घबराइये मत । पीछे “जरासम्भव” प्रकरणमें हमारे लिखे हुए उपाय करें । आप जैसोंके लिये “अश्वगन्धादि चूर्ण” परमोत्तम है । इस नुसखेकी हमने अनेकों बार परीक्षा की है । कितने ही बूढ़े इससे जवान हो गये । आप उसे नीचेकी तरकीबसे बनावें और चार महीने सेवन करें ।

### अश्वगन्धादि चूर्ण ।

नागौरी असगन्ध और बिधायरा—इन दोनोंको बराबर-बराबर लाकर, पीस-कूटकर छान लो और धीके चिकने बरतनमें रख दो । इसमेंसे “दश माशे” या तोले भर चूर्ण सवेरे ही, खाकर ऊपरसे मिश्री-मिला गरम-गरम दूध पीओ । अगर सधे तो गायका तत्काल-दुहा “धारोष्ण दूध” पीओ । पर जिस दूधको दुहे हुए पाँच मिनट भी हो गए हों, उसे बिना औटाये न पीओ । इस “अश्वगन्धादि चूर्ण” के चार मास सेवन करनेसे मनुष्य दोष-रहित हो जाता है और बालोंके सफेद होनेका रोग जाता रहता है । हर साल, चार महीने, सेवन करनेसे ५० सालका वृद्ध, जवानोंकी तरह, युवती और मद-माती स्त्रियोंका गर्व खर्व कर सकता है । यदि इसके साथ-साथ “नारायण तेल” भी मालिश कराकर स्नान किया जाय, तब तो सोनेमें सुगन्ध ही हो जाय ।

❧ अश्वगन्धा वृद्धदारु समभागं विचूर्णयेत् ।

स्थाययित्वा घटे स्निग्धे कर्षमेकं तु मद्धयेत् ॥

दुग्धेन प्रातस्तथाय मवेदोषविवर्जितः ।

चातुर्मासप्रयोगेण वलीपलितवर्जितः ॥



नोट—“नारायण तेल” बनानेकी विधि हमने संसार-प्रसिद्ध पुस्तक “स्वास्थ्य-रक्षा” में लिखी है। यद्यपि इस तेलका बनाना कठिन काम है, पर हमने इस तरह लिखा है कि महामूढ़ भी इसे बना सकें। जो इतनेपर भी न बना सकें, हमारे कारखानेसे मंगा लें। विज्ञापनवाजोंके यहाँसे मँगाना ठगाना है। हमारे यहाँ इसका मूल्य सोलह रुपया सेर है। एक मासके लिए तीन पाव या एक सेर तेल काफी है। जिनकी प्रकृति बादीकी है, जिनको बुढ़ापेके कारण बादी सताती है और हाथ-पैरों या शरीरमें दर्द रहता है, नारायण तेलको अमृत समझें। जिनको ये शिकायतें न हों “चन्दनादि तेल” लगावें। चन्दनादि तेल घूढ़ोंको जवान करता है। बनानेकी विधि स्वास्थ्य-रक्षामें लिखी है। हमारे यहाँ २०) रुपये सेर मिलता है।

### आमलक्य रसायन ।

सूखे आमलोंको पीस-कूटकर चूर्ण कर लो। फिर उस चूर्णमें, ताजा आमलोंके स्वरसकी सात भावना दे-देकर सुखा लो और शीशीमें भर दो। इस चूर्णको अपने बलाबल अनुसार “शहद और मिश्री” के साथ खानेसे, एक मासमें बूढ़ा भी जवान हो सकता है।

सूखे विदारीकन्दको पीसकर, उसमें ताजा विदारीकन्दके रस की सात भावना देकर, “शहद और मिश्री” मिलाकर सेवन करनेसे बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

असगन्धके चूर्णमें—“घी, शहद और मिश्री” मिलाकर, सेवेरे ही, चार तोले रोज, खानेसे, एक मासमें, बूढ़ा भी जवान हो जाता है।

नोट—ये तीनों नुसखे आज्ञामूढ़ा हैं। एक मासमें तो बूढ़ेको जवान नहीं करते, पर हैं रामबाण। चार-छै महीने खानेसे बेशक बूढ़ा जवानोंसे टक्कर

ॐ धात्रीफलं च स्वरसैर्मावित सप्तवारितः ।

लिहन्ना सकलं चूर्णं धात्रीमधुसितायुतं ॥

मासेनैकेन वृद्धोपि युवास्याद्दुग्धपानतः ।

विदारीकन्दचूर्णं वा पूर्ववद्गुणवर्द्धनम् ॥

वाजिगन्धां प्रमातेयः सितामधुघृतप्लुताम् ।

प्रलप्रमाणां संग्रह्य मासात्स्यात्स्थविरोयुवा ॥



लेने लगता है। पर शर्त यह है कि स्त्री-प्रसङ्ग और क्रोध-चिन्ताको त्याग दे। ये रसायन-योग, अकाल मृत्यु और बुढ़ापेसे बचानेवाले हैं। अगर कोई शख्स इन्हें एक वर्ष तक खाले तो निश्चय ही उसकी जवानी फिर लौट आवे।

आप ऊपर कहे हुए नुसखोंको अवश्य सेवन करें; जब आपके शरीरमें काफी बल-वीर्य हो जाय, नीचे लिखी विधिसे “हरड़” सेवन करें। अगर आप बारहों महीने “हरड़” सेवन करेंगे, तो कोई भी रोग आपके पास न आवेगा।

### हरड़-सेवन-विधि।

- |                      |     |                       |
|----------------------|-----|-----------------------|
| ( १ ) गरमीके मौसममें | ... | बराबर भाग, गुड़के साथ |
| ( २ ) वर्षा-कालमें   | ... | सैंधेनोनके साथ        |
| ( ३ ) शरद् ऋतुमें    | ... | मिश्रीके साथ          |
| ( ४ ) हेमन्त ऋतुमें  | ... | सोंठके साथ            |
| ( ५ ) शिशिर ऋतुमें   | ... | पीपलके साथ            |
| ( ६ ) वसन्त ऋतुमें   | ... | शहदके साथ             |

### जलपान।

जो मनुष्य सवेरे ही उठकर, तारोंकी छायामें, आठ चुल्हू पानी रोज पीता है—उसके वात, पित्त और कफ-सम्बन्धी सब विकार दूर हो जाते हैं और वह १०० वर्ष तक जीता है।

जो मनुष्य सवेरे ही, नाकके छेदों द्वारा, पानी पीता है; उसके शरीर की सुकड़न, बालोंकी सफेदी, स्वरभङ्ग और नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस जलपानको “उषःपान” भी कहते हैं। इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। सवेरे ही बासी जल पीने और फिर न सोनेसे मूत्रकृच्छ्र, पेशाब की जलन, बवासीर और अनेक रोग नाश हो जाते और अनेकोंको दस्त साफ होने लगता है। अनेक बार परीक्षा की है।

### माजून सुकराती।

देशी अजवायन

१ सेर



गाजरके बीज	...	...	...	...	३ माशे
लौंग	...	...	...	...	३ "
फिटकरी	...	...	...	...	१॥ "
विसवासा ( जावित्री )	...	...	...	...	६ "
सहदाना ( तुल्लमरिहाँ )	...	...	...	...	६ "
ऊद गर्की	...	...	...	...	६ "

बनानेकी विधि—इन सातों चीजोंको पीसकर छान लो। पीछे चूर्णके वजनसे तिगुना “शहद” मिलाकर माजून बना लो।

रोग नाश—जिन्हें स्त्री-प्रसङ्गका आनन्द भोगना हो, वे इसे हर साल कम-से-कम एक महीने तक सेवन करें। यह माजून आमाशयको बलवान करती, संचित कफको निकालती, लार गिरनेको बन्द करती, पेटके कीड़ोंको नष्ट करती और गुदोंको ताकतवर बनाती है। हकीम सुकरात कहते हैं, अगर कोई वर्षमें एक हफ्ते भी इस माजूनको खा लिया करे तो ये रोग नष्ट हो जायँ और साथ ही असीम बल-पुरुषार्थ बढ़े। अगर इसके खानेपर भी, हकीम-वैद्यके पास जाना पड़े तो अचम्भेकी ही बात हो।

सेवन विधि—इसकी मात्रा नौ नाशेकी है। सबेरे-शाम साढ़े चार-चार माशे खाना ठीक होगा।

(११) अगर किसीकी लिङ्गेन्द्रिय बहुत ही छोटी या दुबली-पतली हो, तो उसे लम्बी या मोटी करनेके लिये, पागलोंकी तरह बाजारमें बैठनेवाले नीम हकीमोंकी लच्छेदार बातोंमें आकर, साँड़का तेल या अन्य लेप आदि न लगाने चाहियें। इन अताई उपायोंसे लिंग तो नहीं बढ़ता पर उलटे भयङ्कर रोग हो जाते हैं, जिनसे बहुधा लिङ्गेन्द्रिय गलकर गिर जाती है और कीड़े पड़ जाते हैं।

लिङ्गेन्द्रियको बढ़ानेके उपाय करनेकी जरूरत नहीं। अगर किसीकी इन्द्रिय बहुत ही छोटी हो, तो उसे उपाय करने चाहियें। जवानी या उठती जवानीमें इन्द्रिय बढ़ सकती है, पर बुढ़ापेमें



नहीं । हाँ, पुष्टि और मुटाई जवानीके उतारमें भी हो सकती है । लिंगेन्द्रिय बढ़ाने और सख्त तथा पुष्ट करनेके उपाय हम आगे लिखेंगे । यहाँ हम नामी हकीम जालीनूसका “चींटियों का तेल” लिखते हैं, जो हकीम साहबने स्वयं आज्ञमाया था । वह लिखते हैं, एक लड़केकी इन्द्रिय बहुत छोटी थी, पर “चींटियोंके तेल”से वह काफ़ी बढ़ गई ।

### जालीनूसवाला चींटियोंका तेल ।

सात बड़े-बड़े चींटे पकड़कर एक शीशीमें भरदो और ऊपरसे “नरगिसका तेल” भर दो । बादमें, शीशीमें काग लगा, शीशीको २४ घण्टों तक, बकरीकी मैगनियोंके बीचमें दबा दो । बादमें तेलको निकालकर छान लो । सुपारी बचाकर, शेष इन्द्रियपर इस तेलको बराबर कुछ दिन मलो । ईश्वर-कृपासे कुछ दिनमें इन्द्रिय बढ़ जायगी और साथ ही कामेच्छा भी बलवती हो जायगी ।

नोट—एक हकीम साहब कहते हैं, इस तेलको लगानेसे पहिले, किसी खर-दूरे कपड़ेसे इन्द्रियको रगड़-रगड़कर ताल कर लेना चाहिये तब चींटियोंका तेल लगाना चाहिये । यदि किसी और तेलसे मतलब हल हो जाय, तो जीवहत्या मत करो ।

### अन्य उपाय ।

(१) बकरीका घी लिंगेन्द्रियपर लगातार कुछ दिन मलनेसे लिंगेन्द्रिय पुष्ट और मोटी हो जाती है ।

(२) बकरीका घी कुछ रोज़ लगानेके बाद, सूखे कैचुए “सौसनके तेलमें पीसकर” मलो ।

(३) सौसनके तेलमें जौंक पीसकर लिंगपर मलो ।

(४) लौंग, समन्दर-फल और बंगभस्मको “पानोंके रसमें” खरल करके लिंगपर लेप करनेसे लिंग बढ़ जाता है । कहा है—

देवपुष्पस्य संयोगात्समुद्रफलयोगतः ।

नागापत्र रसैर्लेपान्निग वद्धिः प्रजायते ॥



( १२ ) अगर किसीकी लिंगेन्द्रिय सुस्त हो, उसमें चैतन्यता या सख्ती न आती हो और उसे इस दशामें भी जल्दी ही मैथुन करना हो, तो उसे नीचेका लेप करना चाहिये । यह लेप बहुत दिनोंकी निकम्मी लिंगेन्द्रियको, एक घण्टेमें, मैथुनके योग्य बना देता है:—

### चींटियोंका लेप ।

एक सौ बड़े चींटोंको कूट कर, एक शीशीमें भर दो और ऊपरसे अठारह माशे “रोगान बलसान या रोगान सौसन” भर दो । गरमीके मौसमकी तेज धूपमें, नित्य, आठ दिन तक, उस शीशीको रखो; इसके बाद उठाकर रखदो । जब मैथुन करना हो, इस लेपको किसी पत्तीके पंखसे, दोनों पैरोंके तलवों और उँगलियोंपर लगा दो और फिर प्रसंग करो । हिकमतमें इस लेपकी बड़ी तारीफ है । कितने ही हकीमोंने इसे आजमूदा लिखा है ।

नोट—यह लेप शीघ्र ही काम देता है, इससे यहाँ लिखा है । इन्द्रियका ढीलापन, सुस्ती और हथरस प्रभृतिसे हुए अन्य दोष नाश करनेवाले “तिले और लेप” हम आगे लिखेंगे । जहाँ तक हो सके, जीवहत्या मत करो ।

( १३ ) अगर आपको स्त्री-सुख भोगनेकी अधिक इच्छा है, तो आप जियादा शीतल जलसे स्नान न करें, नदियोंके शीतल जलमें खड़े होकर घण्टों तक भजन न करें, जितनी बार पाखाने जायँ उतनी बार स्नान न करें, बर्फ या और किसी शीतल चीजपर न बैठें; क्योंकि इन कर्मोंसे पट्टे निर्बल हो जाते हैं, उनमें एक तरहका अर्धाङ्ग हो जाता है, लिंग बिल्कुल निकम्मा तथा वीर्य अधिक और पतला हो जाता है और विना प्रसङ्ग किये अपने आप निकल जाता है । मूतेन्द्रियमें जरा भी बल नहीं रहता और वह दिन-दिन पतली और कमजोर होती जाती है । अगर ठण्डे पानीके छींटे मारनेसे इन्द्रिय सुकड़ जाय, तब तो इलाजकी आशा है; अगर न सुकड़े और बहुतही पतली दुबली हो गई हो, तो इलाज की आशा नहीं ।

नोट—अगर रोग साध्य हो, तो पट्टोंके अर्धाङ्गका इलाज अर्धाङ्ग-



चिकित्साकी तरह करना चाहिये । इस तरह हुए अन्य दोष लेप लगाने, गुदामें कोई दवा रखने या हुकना करनेसे आराम हो जाते हैं । हम इस मौकेके लेप और तिले वगैरः आगे लिखेंगे ।

( १४ ) हर मनुष्यको अपने दिल-दिमाग और आमाशयका खयाल रखना जरूरी है । जिसमें कामी पुरुषके लिये तो इनकी जरूरत भी कमजोरी खराब है । अगर आमाशय और कलेजा कमजोर हो जाते हैं, तो खून बहुत कम बनता है और जब खून कम बनता है, तब वीर्य भी कम बनता है, क्योंकि वीर्यकी जड़ खून है; यानी खूनसे ही वीर्य बनता है । अगर वीर्य कम बनेगा, तो सम्भोग-शक्ति घट जायगी और पाचन-शक्ति निर्बल हो जायगी एवं अन्य रोग उठ खड़े होंगे । यह तो हुई आमाशय और कलेजे की बात; अब दिमाग या मस्तिष्कके सम्बन्धमें भी सुनिये । अगर दिमाग कमजोर हो जायगा, तो काम-शक्ति बढ़ानेवाला मल लिंगेन्द्रिय तक देरमें पहुँचेगा । इस दशामें, लिंगको वीर्यका खटका या ज्ञान न होगा; बिना वीर्यके खटकेसे कामोत्पत्ति न होगी, इन्द्रियाँ ज्ञान-शून्य हो जायेंगी और स्त्री-संभोग की इच्छा बिल्कुल न होगी । अगर दिमागकी कमजोरी वाला रातको जागेगा तो उसे हानि होगी; पर गरमीसे लाभ होगा । लेकिन अगर रोग गरमीसे होगा, तो गरम चीजें नुकसानमन्द साबित होंगी और अगर रोग तरीसे होगा, तो तर चीजें नुकसान पहुँचायेंगी और हम्मा-स्तानागार अथवा जलमें स्त्री-भोगकी इच्छा न होगी । तरीसे रोग होनेपर सूखी चीजोंसे लाभ होगा ।

अगर दिल-दिमाग और आमाशय कमजोर हों, तो आप सरदी और गरमीका विचार करके, इनको ताकतवर बनानेवाली दवाएँ या पदार्थ सेवन करें । दिमागकी कमजोरी होनेपर, खुशबूदार पदार्थ सूँघना, सिरमें तेल लगाना और दिमागको बलवान करने वाले पदार्थ या दवा खाना अच्छा है । अगर दिल-दिमागमें गरमीसे



खराबो हो जाय, तो “शर्वत सफेद चन्दन” पीना हितकर है। दिल-दिमागकी कमजोरीकी दशामें, मैथुन भूलकर भी न करना चाहिये। इस दशामें, मैथुन करनेसे मूर्च्छा, उन्माद और अपस्मार या मृगी प्रभृति रोग हो जायँगे।

( १५ ) अगर स्त्री-प्रसङ्गमें आपका वीर्य थोड़ा और देरसे गिरे—आपको अपनी लिंगेन्द्रिय पहलेसे दुबली और सूखी सी दीखे, तो तो आप समझ लें, कि आपके शरीरमें वीर्यकी कमी है।

यह रोग गरमी और सरदी से होता है। अगर रोग गरमीसे होगा, तो आपका वीर्य गाढ़ा होगा। अगर वीर्य-नलीमें गरमी होगी, तो वीर्यका रंग जर्द—पीला होगा और वह जल्दी निकलेगा। इस हालत में, तर पदार्थ खाने-पीने और जलमें घुसनेसे लाभ होगा, अगर वीर्यकी नलीमें सरदी होगी, तो वीर्य गाढ़ा, शीतल और बँधा हुआ होगा और मिहनतसे निकलेगा।

अगर वीर्यकी नली गरमी और कमजोरीसे सूखी हो, तो आप दूध, मलाई, हलवा आदि तर और वीर्यवर्द्धक पदार्थ सेवन करें, पानी में तैरें, तेलकी मालिश करावें, खेल-कूदमें मस्त रहें दिल खोलकर हँसें, शोक और चिन्ताको कतई त्याग दें और ऐसी दवा खावें, जिससे खुशकी या गरमी कम हो और तरी बड़े।

अगर वीर्यकी कमी सरदीसे हो और मूत्रनली सूखी सी या दुबली-पतली हो, तो आप गरमी पैदा करनेवाली चीजें या दवाएँ खावें और लगावें। इस दशामें, “मुरब्बा सौंठ”, “माजून लंबूब” और “माजून गर्म” सेवन करें।

### माजून लंबूब ।

मीठे बाड़ामोंकी मींगी, बतमकी मींगी, हुब्बे सनोवरकी मींगी, जलमकी मींगी, फन्दककी मींगी, पिस्तोंकी मींगी, ताजा नारियलकी गिरी, सुपारीका फूल, खसखस सफेद, तोदरी सुख, सफेद तिल, अंजरा के बीज, गाजरके बीज, प्याजके बीज, शलगामके बीज, खसबेके



बीज, बहमन सुख, बहमन सफेद, सौंठ, सकाकुल, पीपर, काली मिर्च, कबाबः, कुरफा, दालचीनी, हिलयूनके बीज, चार मराज और कुलीजन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूटकर छान लो और इस चूर्ण के वजनसे तिगुने “शहद” में मिलाकर माजून बनालो। शहदको मन्दी आगपर जरा जोश देकर, भाग फैंक दो और फिर दवा मिला कर उतार लो। यही “माजून लवूब” है। वीर्य बढ़ानेमें यह परमोत्तम दवा है। जब इससे वीर्य बढ़ेगा, तब लिंगेन्द्रियकी मुटाई भी बढ़ेगी। अगर वीर्यकी कमीका रोग सरदीसे होगा, तो यह माजून अवश्य फायदा करेगी और खूब करेगी।

### माजून गर्म ।

सौंठ, सकाकुल, कुलीजन, अंजराके बीज, गाजरके बीज, जर-जीरके बीज और हिलयूनके बीज—इन सातोंको बराबर-बराबर लेकर पीसकूट कर छान लो।

फिर शहद और सफेद प्याजका स्वरस—दोनोंको मिलाकर, एक कलईदार बासनमें इतना औंटाओ कि, प्याजका रस जलकर “शहद मात्र” रहजाय।

शेषमें, इस उबाले हुए शहदमें; ऊपरका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और एक साफ अमृतवानमें रखदो। यही “माजून गर्म” है।

इस माजूनको, अपने बलाबल-अनुसार सेवन करनेसे स्त्री-प्रसङ्ग की इच्छा खूब बढ़ती है। जिसे बिलकुल स्त्री-इच्छा नहीं होती, वह भी मस्तीके मारे मस्त हो जाता है।

### गरीबी नुसखा ।

ढेढ़ माशे होंग और पाँच मुने हुए अण्डोंकी जर्दी—इन दोनोंको मिलाकर खानेसे स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा खूब बढ़ जाती है।

### लिङ्ग पुष्टिकर लेप ।

(क) “शहद और बेलपत्रोंका स्वरस” मिलाकर, लिङ्गपर लगाने से लिङ्ग पुष्ट और बलवान हो जाता है।



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

२०१

(ख) शहदमें “सुहागा” पीसकर, लिङ्गपर लेप करनेसे, निश्चय ही इन्द्रिय पुष्ट, मोटी और ताकतवर हो जाती है ।

(ग) सिंहकी चर्बी लिङ्गपर मलनेसे चन्द रोजमें लिङ्गका दुबलापन और सूखापन नाश होकर, लिङ्ग मोटा, पुष्ट और बलवान हो जाता है । “सूअरकी चरबी और शहद” बराबर-बराबर मिलाकर लिङ्गपर लगानेसे भी लिङ्ग मोटा हो जाता है ।

(१६) आजकल जिसे देखो वही स्तम्भन या इमसाककी दवाकी खोज करते देखा जाता है । अनेक लोग अफीम, भोंग प्रभृति खा-खाकर अपने तई नामर्द बना लेते हैं । यद्यपि हम इस विषय को पीछे लिख आये हैं; तथापि हम “हिकमत” से इस “शीघ्र-वीर्य-पात रोग”के कारण और चिकित्सा, यहाँ, विस्तारसे, फिर लिखना उचित समझते हैं; क्योंकि यह रोग आजकल ६६ फीसदी पुरुषोंको है । इस रोगके कारण आजकल स्त्री-पुरुषोंमें सच्चा प्रेम भाव नहीं ।

वीर्यके पतलेपन और जल्दी निकलनेके बहुतसे कारण हैं, उनमेंसे चन्द खास-खास हम नीचे लिखते हैं:—

(१) वीर्य निकालनेवाली शक्तिमें, तरी और खुशकीकी वजहसे, कमजोरी आ जाती है और वीर्यपात जल्दी होता है । इस दशामें, वीर्य पतला और रंगमें सफेद होता है, तथा उसमें गरमीके चिह्न नहीं होते ।

(२) जब किसी कारणसे शरीरमें वीर्य और खून उचितसे अधिक बढ़ जाते हैं; तब वीर्य जल्दी निकल जाता है । इस दशामें वीर्य न बहुत गाढ़ा होता है न पतला तथा लिंगेन्द्रियमें बल बहुत ज़ियादा होता है । यह तो स्त्री-प्रसंगमें जल्दी वीर्य निकलनेकी बात हुई । और भी सुनिए:—

नोट—सरदी और तरीके कारण, वीर्यकी नलीमें सुस्ती और ढीलापन अथवा शिथिलता होने लगती है, इस वजहसे वीर्यकी सेकनेवाली शक्ति या



ताक़त भी कम हो जाती है । जब वीर्यको रोकनेवाली शक्ति निर्बल हो जाती है, तब वह वीर्यको रोक नहीं सकती । इस दशामें वीर्य अपने-आप बाहर निकल जाता है । इस हालतमें वीर्य पतला होगा और बिना चैतन्यता हुए—बिना लिङ्गमें तेजी आये—निकल जायगा । इसके सिवा, सरदीके और भी चिह्न होंगे । इसमें इतना भेद है कि जब वीर्य रोकनेवाली ताक़त या बराबर ( Power ) बहुत ही कमजोर होगी, तब वीर्य नलीमें आते ही बिना चैतन्यता हुए निकल जायगा, लेकिन अगर वीर्यको रोकनेवाली शक्ति या पावर ज़ियादा कमजोर न होगी, तो वीर्य कुछ चैतन्यता होनेके बाद निकलेगा । कभी-कभी चैतन्यता होनेके आदिमें ही वीर्य निकल जायगा और कभी चैतन्यता होनेके पीछे अथवा सोनेके बाद । मतलब यह है कि, इस तरह सरदी या तरीका रोग होनेपर अधिक देर तक चैतन्यता हो नहीं सकती ।

बहुतसे पुरुषोंका वीर्य बिना स्त्री-प्रसंगके भी निकलने लगता है, यह अच्छा नहीं । अगर वीर्यवर्द्धक दवाएँ ज़ियादा खाई जाती हैं और स्त्री-प्रसंग किया नहीं जाता, तो वीर्य बहुतसा जमा हो जाता है । इस दशामें, सम्भोग करनेसे वीर्य बहुत ज़ियादा निकलता है, और वह न पतला होता है न गाढ़ा । शरीरमें ज़ियादा वीर्य होनेपर अगर ज़ियादा वीर्य निकलता है, तो भी कमजोरी होती है । कमजोरीकी दशामें, ज़ियादा वीर्य निकलनेसे कमजोरी और भी ज़ियादा होती है ।

( ३ ) अगर वीर्यमें गरमी और तेज़ी ज़ियादा होती है, तो वीर्यकी नली वीर्यको बहुत जल्दी निकालती है । इस दशामें जब वीर्य निकलता है, जलन या चुभनसी होती है, वीर्यका रंग पीला और उसकी चाशनी हल्की होती है । ऐसे वीर्यके निकलनेसे, पुरुषको तो कष्ट होता ही है, लेकिन स्त्री भी उस चिरमिराहटसे कष्ट पाये बिना नहीं रहती । शीतल जलसे योनि धोनेपर ही उसे चैन आता है । वीर्यमें ऐसी गरमी पित्तकारक पदार्थ—लालमिर्च-खटाई प्रभृति अत्यधिक खानेसे होती है । इस दशामें, वीर्य मैथुनके समय तो जल्दी निकल ही जाता है; पर इसके सिवाय यों भी बहने लगता है । वीर्यमें गरमी और तेज़ी रहनेसे



स्वप्नदोष भी होने लगते हैं । किसी-किसीके पेशाबमें जलन भी होती है ।

(४) अगर दिल-दिमाग, आमाशय और गुर्दे प्रभृति प्रधान अवयव—अङ्ग—कमजोर हो जाते हैं, तो इनके कमजोर हो जानेसे, और सारे अवयव भी कमजोर हो जाते हैं । इस दशामें भी शीघ्र वीर्य-पात होने या जल्दी वीर्य निकल जानेका मर्ज हो जाता है । असलमें यह शीघ्र वीर्यपतन होनेका रोग कामशक्तिकी निर्बलताके साथ होता है और कामशक्तिकी निर्बलता उस समय होती है, जब शरीरमें वीर्य कम होता है । जब हवा और खूनकी पैदायश कम होती है, जब शरीरमें रक्त कम तैयार होता है, तब वीर्य भी कम बनता है और वीर्य ही कामशक्तिका मूल है । मतलब यह है, कि हवा और खून कामशक्तिके बलवान होनेके कारण हैं; क्योंकि खूनसे ही वीर्य बनता है । हवा और खूनकी पैदायशकी कमीका कारण “भोजनकी कमी” है । जब शरीरमें वीर्य और खून कम बनते हैं, तब शरीर दुबला हो जाता है, बदनकी ताकत घट जाती है और रंग पीलासा हो जाता है इत्यादि ।

(५) अनेक बार स्त्रियोंकी बातें सुनने या स्त्री-प्रसंग करनेका विचार-मात्र मनमें आनेसे—वीर्य, मजी और बदीका बहना शुरू हो जाता है ।

**शीघ्र वीर्यपतनकी चिकित्सा ।**

(१) पहला कारण ।

अगर शीघ्र वीर्यपात होने या जल्दी वीर्य निकलनेका कारण, तबरी और खुश्की या सरदी हो, वीर्यकी रंगत सफेद हो, वीर्य पतला हो और उसमें और गरसीके लक्षण न हों, तो नीचेकी विधिसे चिकित्सा करो ।



( १ ) किसी उत्तम दस्तावर दवासे रोगीका कोठा साफ़ कर दो हिकमतमें “अयारजकी टिकिया” दस्त कशानेकी अच्छी समझी जाती है। वैद्यक-मतसे, पीछे पृष्ठ २६-३० में लिखा हुआ “कालादाना, सनाय और कालेनोनका चूर्ण” फँका देना अच्छा है। हमने पृष्ठ २६-३० में कई दस्तावर दवायें लिखी हैं। क्रय कराना और जुलाब देना बड़ी होशियारी चाहता है। अतः “चिकित्सा-चन्द्रोदय” पहले भागमें जो विरेचन-प्रकरण दिया है, उसे खूब पढ़-समझकर जुलाब देना चाहिये। नीचेका दस्तावर नुसखा भी अच्छा है:—

### दस्तावर नुसखा ।

हरड़	...	...	१ तोले
सैधानोन	...	...	१ ”
आमले सूखे	...	...	१ ”
पुराना गुड़	...	...	१ ”
बायविडङ्ग	...	...	१ ”
बालबच	...	...	१ ”
हल्दी	...	...	१ ”
छोटी पीपर	...	...	१ ”
सौंठ	...	...	१ ”

इन सबको कूट-पीसकर छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे ६ माशे तक है। इसकी एक मात्रा गरम पानीके साथ फाँकनी चाहिये। इसे नित्य या एक दिन बीचमें देकर फाँकना चाहिये दस्त हो जानेके बाद मूंगकी धुली दाल और चाँवलोंकी खिचड़ी खानी चाहिये। ५६ दिन तक घी मिली खिचड़ी खानेसे शरीरका बल नहीं घटता और जितनी कमी होती है, पूरी हो जाती है। इस खिचड़ीके बाद, ५ दिन तक घी-मिला हुआ दलिया खाना चाहिये। इससे जो पुराना मल रह जाता है वह भी निकल जाता है। इस दस्तावर दवासे



जब शरीर शुद्ध और मन प्रसन्न हो जावे; तब अपनी ताकत और मित्राजके माफिक धातु-पुष्टिकर दवा या वाजीकरण औषधि सेवन करनी चाहिये । बिना कोठा साफ किये जो ताकतवर दवा खाई जाती है, फायदा नहीं करती ।

( २ ) कोई वमनकारक या क्रय करानेवाली दवा पिलाकर क्रय करा देनी चाहिये । वमन करानेमें जुलाब देनेसे भी अधिक होशियारीकी दरकार है, क्योंकि उसमें रोगीकी जानको खतरा तक हो जाता है । अतः वमन करानी हो, तो “चिकित्सा-चन्द्रोदय” दूसरे भागके पृष्ठ १३६-१४० तक देख जायँ । वहीं आपको “वमनकारक औषधियाँ” भी पृष्ठ १३८ में मिल जायँगी । कफके दोषमें—मैनफल, पीपर और सैधेनोनका चूर्ण, गरम जलसे, खिलानेको लिखा है । अगर नीचेका “काढ़ा” बना लिया जाय, तो और भी अच्छा हो ।

#### वमनकारक काथ ।

मैनफल	...	...	...	६ मासो
सैधानोन	....	...	...	६ मासो
पीपर	...	...	...	२ मासो

इन तीनोंको अधिकचरा करके; मिट्टीकी हाँडीमें रख, ऊपरसे सेर भर पानी ढाल औटाओ; जब चौथाई जल जल जाय, यानी तीन पाव रह जाय, उतारकर मल-छान लो और सुहाता-सुहाता गरम रोगीको पिला दो । यह काढ़ा “कफ निकालनेको” बहुत ही उत्तम है ।

( ३ ) लिंगेन्द्रियकी सीवन और फोतोंकी गोलियों पर नीचेके तेलों में से कोई सा तेल आहिस्ते-आहिस्ते मलोः—

- ( १ ) कूटका तेल ।
- ( २ ) नरगिसका तेल ।
- ( ३ ) केशरका तेल ।



( ४ ) आसका तेल ।

( ५ ) “शराब फंजनोस” यानी लोहकीटकी शराब सेवन कराओ ।

( ६ ) “माजून खबसुलहदीद” सेवन कराओ ।

( ७ ) “माजून कमीनी” सेवन कराओ ।

( ८ ) पोदीनेके पत्ते, साद, गुलनार, मरुवा, कलौंजी और मीया-सूखा—ये चीजें भी अच्छी हैं । इनके सेवन करने और गरम पदार्थ खानेसे अवश्य लाभ होगा ।

( ९ ) खानेको उत्तम भोजन दो । अगर रोगी मांस खाता हो, तो “सूखा कलिया,” मुतंजन, दालचीनी, सातर और जीरेके साथ खिलाओ ।

### शराब फंजनोस ।

कच्चे अंगूरोंका रस	...	...	...	२६० तोले
सिमाक	...	...	...	२॥ ”
माजू	...	...	...	२॥ ”
गुलेनार ( अनारके फूल )	...	...	...	२॥ ”
गुलाबके फूल	...	...	...	२॥ ”
कुन्दर ( गोंद )	...	...	...	२॥ ”
मूरवा ( गोंद )	...	...	...	२॥ ”
धनिया	...	...	...	२॥ ”
सातर	...	...	...	२॥ ”
साद	...	...	...	२॥ ”
मुर्र	...	...	...	२॥ ”
त्रिकुटा	...	...	...	२॥ ”

( शुद्ध ) लोहेका मैल ... १० ”

बनानेकी तरकीब—इसमेंसे बारह चीजोंको कूट-पीसकर छान लो और “अंगूरोंके रसमें मिलाकर” उबाल लो । जब एक तिहाई या सवा सेरके करीब रस रह जाय, उतारकर छान लो और बोतलमें



रख दो । रोगीके बलाबल-अनुसार मात्रा नियत करके सेवन कराओ । इस शराबसे तरी या सरदीसे हुआ “शीघ्र वीर्य निकल जानेका रोग” अवश्य आराम हो जायगा ।

नोट—( १ ) “फंजनोस” लोहकीट या लोहके मैलको कहते हैं । इसीके कारण इस शराबका नाम “शराब फंजनोस” रखा गया है ।

( २ ) फंजनोस या लोहकीट शुद्ध करनेकी विधि हमने “चिकित्सा-चन्द्रोदय”के तीसरे भागमें खूब समझाकर लिखी है । हिकमतवाले इसे और तरहसे शुद्ध करते हैं । उनकी तरकीब सीधी और आराम की है; अतः उसे भी यहाँ लिखे देते हैं:—लोह-मैलकी शोधन-विधि—लोहके मैलको “अंगूरीसिरकेमें” डालकर, चौदह दिन-रात ऐसी जगहमें रखो, जहाँ धूल या कूड़ा करकट न गिरे । बस, १४ दिन बाद यह शुद्ध हो जायगा; निकालकर काममें लाओ ।

### माजून खबसुलहदीद ।

छोटी हरड़	...	...	...	२॥ तोले
बहेड़ा	...	...	...	२॥ ”
आमला	...	...	...	२॥ ”
गोलमिर्च	...	...	...	२॥ ”
पीपर	...	...	...	२॥ ”
सोंठ	...	...	...	२॥ ”
साद	...	...	...	२॥ ”
हिन्दी सातरज ( चीता )	...	...	...	२॥ ”
सम्बुल	...	...	...	२॥ ”
गन्दनेके बीज	...	...	...	११ ”
सोयेके बीज	...	...	...	१ ”
शुद्ध लोहकीट	...	...	...	२५ ”

बनानेकी तरकीब—इन बारह दवाओंको कूट-पीस और छान-कर चूर्ण कर लो । इस चूर्णमें “बादामका तेल” इतना मिलाओ, कि यह चूर्ण चिकना हो जाय । इसके बाद, इसमें अढ़ाई पाव “शुद्ध



शहद" और छै माशे "कस्तूरी" भी मिला दो । बस, यही "माजून खबसुलहदीद" है । इसे एक साफ बर्तन या चौड़े मुँहकी बोतलमें रखकर, काग लगा दो और उठाकर रख दो । छै महीने तक हाथ न लगाओ । बाद ६ महीनेके सेवन करो । मात्रा ६ माशेकी है ।

## शीघ्र वीर्यपतनकी चिकित्सा ।

### ( २ ) दूसरा कारण ।

अगर शीघ्र वीर्यपात होने या जल्दी वीर्य निकलनेका कारण—शरीरमें वीर्य और खूनका अधिक बढ़ जाना हो, वीर्य न बहुत पतला हो और न गाढ़ा, लिंगमें ताकत खूब हो और स्त्री-प्रसङ्गमें वीर्य जल्दी निकल जाता हो—तो आप नीचे लिखी विधिसे इलाज करें:—

( १ ) फस्द खोलो । वासलीककी फस्द खोलना ठीक है ।

( २ ) अगर शरीरमें बल हो, तो भोजनकी मात्रा घटा दो ।

( ३ ) मांस और शराब प्रभृति खून बढ़ानेवाले पदार्थ छोड़ दीजिये ।

( ४ ) सिकंजबीन, खट्टे-मीठे अनारोंका रस, नारंगीका शर्बत या अंगूरोंका शर्बत पीओ ।

( ५ ) खून और वीर्यको कम पैदा करनेवाले पदार्थ का सेवन कराओ । जैसे—मसूर, सिरका, काहूका पानी, धनियेका पानी—इनको खाओ-पीओ । बनफशा और कद्दूका तेल हड्डियोंपर मलो ।

( ६ ) स्त्री-प्रसङ्ग अधिक करो, क्योंकि इस दशामें अधिक मैथुन लाभदायक है ।

नोट—खून और वीर्यको घटानेवाली दवा सेवन करते समय यह जरूर देख लेना कि, रोग गरमीसे है या सरदीसे । अगर रोग गरमीसे हो, तो सर्द, और सरदीसे हो तो गर्म दवा और पथ्य सेवन कराना चाहिये ।



## शीघ्र वीर्यपतनकी चिकित्सा ।

( ३ ) तीसरा कारण ।

अगर वीर्य पित्तवर्द्धक आहार-विहारोंसे विगड़ा हो, गरमी और तेजीके कारण—प्रसंगके समय जल्दीसे निकल जाता हो और निकलते समय जलन-चुभन या चिरमिराहट करता हो, अथवा गरमीके मारे बिना प्रसंग किये ही स्वप्नमें निकल जाता हो, तो आप नीचे लिखी विधिसे चिकित्सा करें:—

( १ ) शर्बत खशखाश पीओ ।

( २ ) चूकेके बीजोंका या खुरफेके बीजोंका शीरा “काहूके बीजोंके साथ” सेवन करो ।

( ३ ) ईसबगोलकी भूसी ५ माशे और मिश्री ५ माशे—दोनोंको मिलाकर, सवेरे ही, फाँको और ऊपरसे “धारोष्ण दूध” पीओ ।

( ४ ) सूखे आमलोंके चूर्णमें आमलोंके स्वरसकी सात भावना देकर, “शहद और मिश्री मिलाकर” बलानुसार सेवन करो । अथवा विदारीकन्दके चूर्णमें विदारीकन्दके स्वरसकी सात भावना देकर, शहद और मिश्री मिलाकर सेवन करो ।

( ५ ) शर्बत नीलोफर, शर्बत बनफसा या शर्बत उन्नाव—इनमेंसे कोईसा शर्बत पीओ । काहूके बीज, खुरफेके बीज, ईसबगोल, कासनीके बीज, धनिया और नीलोफर प्रभृति इस रोगमें अच्छे हैं । अतः इनमेंसे किसीको “उचित रीतिसे” रोगीको सेवन कराओ । ये सब वीर्यकी गरमी नाश करके, उसे शीतल कर सकते हैं ।

( ६ ) शेख बू अली वीर्यकी गरमी शान्त करनेको नीचेके चूर्ण अच्छे बतलाते हैं:—

### काहूका चूर्ण

१—काहूके बीज

१ तोले



२-भाँगके बीज	...	...	...	१ तोले
३-कासनीके बीज	...	...	...	१ तोले
४-सूखा धनिया	...	...	...	१ तोले
५-नीलोफरके फूल	...	...	...	१ तोले
६-ईसबगोल	...	...	...	१० तोले

बनानेकी विधि—पहिली पाँचों चीजोंको कूट-पीस-छानकर चूर्ण बनालो । इस चूर्णमें “ईसबगोल” को मिला दो; क्योंकि ईसबगोल कूटा नहीं जाता ।

सेवन-विधि—इस चूर्णमेंसे चार या पाँच माशे चूर्ण फाँककर, ऊपरसे धारोष्ण (कच्चा) दूध या ताजा पानी पीना चाहिये । इस चूर्णके कुछ दिन सेवन करनेसे, वीर्यकी गरमी निश्चय ही शान्त हो जाती है । परीक्षित है ।

## दूसरा चूर्ण ।

१-तितलीके बीज	...	...	३ माशे
२-अनीसूँ	...	...	३ ”
३-गोखरू	...	...	६ ”
४-जुन्दवेदस्तर	...	...	६ ”
५-भाँगके बीज	...	...	६ ”
६-दम्बुल अखवैन	...	...	६ ”
७-बंसलोचन	...	...	६ ”
८-गुलेनार (अनारके फूल)	...	...	३ ”
९-गुलाबके फूल	...	...	६ ”

बनाने और खानेकी तरकीब—इन नौ दवाओंको महीन पीस-कूट और छानकर चूर्ण बनालो । इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण फाँककर ऊपरसे “शीतल जल” पीनेसे, वीर्यकी गरमी और तेजी शान्त



होकर वीर्यका बहना या जल्दी निकलना अथवा वीर्यकी गरमीके कारण स्वप्नदोष होना निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—आजकल शोक-चिन्ता अधिक करने, सट्टेका व्यापार करने, हर समय चिन्तित रहने और मिर्च, खटाई प्रभृति गरम पदार्थ अधिक खानेसे मारवाड़ियोंमें उष्णवात रोगकी बहुतायत है। इन लोगोंके वीर्यपर गरमी बहुत पाई जाती है; अतः स्त्रीकी योनिके दर्शन करने मात्रसे वीर्य निकल जाता है। हमने ये चूर्ण अनेकों रोगियोंको दिये। ईश्वर-कृपासे ६५ फ्री सदी रोगी आराम होगये। हम वैद्योंसे इन दोनों चूर्णोंके देनेकी ज़ोरसे सिफ़ारिश करते हैं। शीघ्र वीर्य-पतनका रोग गरमीसे है या सरदीसे या और तरह,—इसके जाननेमें भूल होनेसे यह नुसखे भले ही फेल हों; वरना कभी फेल हो नहीं सकते।

## शीघ्र वीर्य-पतन-चिकित्सा।

### ( ४ ) चौथा कारण

अगर शरीरके प्रधान अवयवोंके कमजोर होने, खून और वीर्यके कम बनने, और इस वजहसे कामशक्तिके दुर्बल होनेसे वीर्य जल्दी निकल जाता हो, तो दिल-दिमागमें तरावट लाने और वीर्य बढ़ाने वाले पदार्थ सेवन कराओ; अवश्य खून और वीर्य बढ़ेंगे एवं रोग नाश हो जायगा। इस हालतमें, नीचेके उपाय अच्छे हैं:—

( १ ) बल-वीर्य बढ़ानेवाले ताक़तवर फल खिलाओ। जैसे:—पका मीठा आम, दूध-मिला अमरस, पका केला, नारियलकी गिरी, कच्चे नारियलका फल, नारियलका पानी, पके अंगूर, दाख, खजूर, बादाम, सेव, नाशपाती, खरबूजा, ताड़फल पका हुआ, मीठा बेर, चिरोंजी, खिरनी, सिंघाड़े, फालसे, मीठा अनार और कसेरू,—ये सब फल वीर्य-वर्द्धक और पुष्टिकारक हैं।

( २ ) उत्तम-से-उत्तम भोजन कराओ। जैसे:—बादामका हलवा, मलाईका हलवा, उड़दकी दालकी खीर, बादाम पाक, नारियल-



पाक, मिश्री-मिला गायका दूध, गायका धारोष्ण दूध, दूधका मक्खन, दूध-चाँवलकी खीर, मलाई और मिश्री, गेहूँकी रोटी, उड़दकी दाल—दालचीनी, तेजपात, इलायची और गोल मिर्च डाली हुई प्याज, प्याजका रस—ना-बराबर घी और शहद मिला हुआ, मूँग-चाँवलकी खिचड़ी, ताजा जलेबी, सूजीका हलवा, बाटी और उड़दकी दाल, मावा, अधोटा दूध, भीमसेनी सिखरन, शाली चावलोंका भात और मेवेकी खिचड़ी । उपरोक्त सभी पदार्थ वीर्यवर्द्धक हैं । पेटेकी मिठाई, पेटेका साग, परवल और आलूका साग—ये भी वीर्य बढ़ानेवाले हैं ।

( ३ ) खूब नींद भरकर सोओ ।

( ४ ) हर समय दिल खुश रखो ।

( ५ ) स्त्री-प्रसङ्गका नाम भी न लो ।

( ६ ) गाना-बजाना करो या सुनो ।

( ७ ) बागकी सैर करो, इत्र सूँघो, फूलोंकी मालाएँ पहनो और गुलदस्ते हाथोंमें रखो ।

( ८ ) पीछे लिखी “माजून लबूब” सेवन करो ।

( ९ ) नीचे लिखी “मृगनाभ्यादि बटी” सेवन करोः—

### मृगनाभ्यादि बटी ।

१-कस्तूरी	...	...	२ माश
२-केशर	...	...	४ ”
३-जायफल	...	...	६ ”
४-छोटी इलायचीके दाने	...	...	५ ”
५-बंसलोचन	...	...	७ ”
६-जावित्री	...	...	८ ”
७-सोनेके वर्क	...	...	१ ”
८-चाँदीके वर्क	...	...	३ ”

बनानेकी विधि—नं० ३ से ६ तककी चीजोंको पीस-कूटकर



छान लो। फिर चूर्णमें बाक़ी चारों चीज़ें मिलाकर, खरलमें ढाल दो और घोटो तथा ऊपरसे “नागर पानोंका स्वरस” देते जाओ। घुटाई ३६ घण्टों तक होनी चाहिये। जब घुटाई हो जाय, रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना, छायामें सुखा लो। इनमेंसे १ या २ गोली, मलाईमें रखकर, खाने से लिङ्गकी शिथिलता नाश होकर, काम-शक्ति जागती और बढ़ती तथा मरी-से-मरी हुई धातु जी उठती है। परीक्षित है।

## शीघ्र वीर्य-पतन-सम्बन्धी शिक्षा ।

काम-शक्तिकी निर्बलता और शक्तिका सम्बन्ध जिस तरह लिङ्गेन्द्रियसे है, उसी तरह वीर्यके जल्दी या देरसे निकलनेका सम्बन्ध भी लिङ्गेन्द्रियसे ही है। जिन्हें जल्दी स्खलित होनेका रोग हो; उन्हें नीचे लिखी बातोंपर ध्यान देना चाहिये:—

( १ ) अगर आपको जल्दी स्खलित होनेका रोग है, तो आप बूढ़ी, कुरुपा या कफ-प्रकृतिवाली स्त्रीसे मैथुन न करें।

( २ ) देरसे वीर्य निकलनेके लिये, स्त्री-पुरुषकी प्रकृति या मिजाजका एक दूसरेके खिलाफ़ होना जरूरी है। पुरुषका मिजाज गरम हो, तो स्त्रीका सर्द होना चाहिये। अगर पुरुषका वीर्य गरमीसे जल्द निकल जाता हो, तो स्त्रीकी योनि ठण्डी होनी चाहिये। अगर पुरुषमें सरदी या तरी हो, तो स्त्रीकी भग गरम होनी चाहिये; पर ऐसा होना संभव नहीं। अगर स्त्री-पुरुषकी प्रकृति एकसी हो और “विरुद्ध प्रकृति”की दरकार हो तो मैथुनसे पहले “प्रकृति-विरुद्ध” दवाओंका लेप लिङ्ग और योनिमें कर लेना चाहिये।

मान लो, पुरुषका वीर्य गरम होनेके कारण जल्दी निकल जाता है। इस दशामें “सफ़ेद चन्दन, कपूर और सुगन्धवाला”—इन तीनोंको ताज़ा जलमें पीसकर लेप-सा बना लो। पुरुष इस लेपको अपने लिंगपर



लगा ले और स्त्री अपनी योनिमें लेप कर ले और मैथुन के समय दोनों ही लेपको पोंछकर मैथुन करें । अवश्य रुकावट होगी ।

मान लो, पुरुषका वीर्य सरदीसे जल्दी निकल जाता है, तो इस दशा में, “कबाबचीनी और अकरकरा”—दोनोंको पानीके साथ पीसकर, स्त्री-पुरुष भग और लिङ्गमें लेप कर लें और मैथुनके समय लेपको पोंछकर मैथुन करें; अवश्य रुकावट होगी ।

नो—ऊपरकी विधि बहुत ही उत्तम है । वीर्य जल्दी निकलनेके मुख्य दो ही कारण हैं—( १ ) गरमी और ( २ ) सरदी । इन दोनोंकी विधि ऊपर लिखी हैं । उनसे लाभ भी होता है । पर जिसका वीर्य पानीकी तरह पतला हो और ऐसे ही बहता हो, उसे उपरोक्त विधियोंसे भी कोई लाभ न होगा । अतः पहले वीर्यको गाढ़ा, पुष्ट और निर्दोष कर लेना चाहिए । उसके बाद यदि स्त्री-पुरुषकी प्रकृति मिल जानेसे, वीर्य जल्दी निकलता होगा, तो ऊपरकी तरकीबें फ़ायदेमन्द साबित होंगी । नीचेके दो नुसखे वीर्य बहने पर अच्छे लिखे हैं । कहते हैं, इनसे वीर्य गाढ़ा हो जाता है; अतः लिखते हैं:—

## शुक्रतारल्य नाशक चूर्ण ।

इमलीके चीएँ भूनकर छील लो और कूट-पीसकर चूर्ण बना लो । फिर बराबरकी “मिश्री” पीसकर मिला दो । इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण रोज सवेरे, सात दिन तक फाँकनेसे वीर्यका बहना और सोझाक बन्द हो जाता है । यह नुसखा हमारा आजमाया हुआ नहीं है ।

## शुक्रतारल्य नाशक लेप ।

“नया कायफल” भैंसके दूधमें पीसकर, लिंगपर लेप करने और सवेरे-शाम गरम जलसे धो लेनेसे वीर्य गाढ़ा होता है ।

नोट—कायफल “नया” होना परमावश्यक है । पुराने कायफल में ये गुण नहीं ।  
( १७१ ) अपनी पत्नीके सिवा, पर-पत्नी या वेश्याके साथ कभी गसन



मत करो। यदि आपकी खोटी लत न छुटे, आपको कली-कलीका रस लेनेका शौक ही हो, तो भी रजस्वला, बूढ़ी, रोगिणी, लँगड़ी-लूली, मैली, गरमी-सोजाक या प्रदर-रोग वाली, गुरु-पत्नी, भिखारिन, शत्रु-पत्नी, कन्या और जिसका काम न जागा हो—इन स्त्रियोंसे मैथुन हरगिज न करें।

रजस्वलाके साथ मैथुन करनेसे उपदंश—आतशक, सोजाक, और भगन्दर आदि रोग हो जाते हैं, बूढ़ीके साथ मैथुन करनेसे पुरुष बूढ़ा हो जाता है; बूढ़ी क्या—अपनी उम्रसे बड़ीके साथ मैथुन करनेसे भी, बल-बुद्धि-हीन एवं तेज-रहित होकर शीघ्र ही रोगी होता और मर जाता है। इसी तरह अगर छोटी उम्रवाली स्त्री अपनी उम्रसे अधिक उम्र वालेके साथ मैथुन करती है, तो उसे शीघ्र ही “प्रदर रोग, क्षय, खाँसी और तपेदिक आदि” हो जाते हैं। यही कारण है कि आज-कल एक-एक पुरुषकी तीन-तीन शादियाँ होतीं और स्त्रियाँ तपेदिक हो-होकर मरती चली जाती हैं।

गर्भवतीके साथ मैथुन करनेसे गर्भगत बालकको कष्ट होता-और बहुधा पेटके बच्चे मर भी जाते हैं, इससे हत्या लगती है। यही वजह है, कि आयुर्वेदकारोंने गर्भवतीके साथ गमन करनेकी मनाही की है। पशु भी गर्भ रह जानेपर मैथुन नहीं करते। रोज़ देखते हैं, जब गायको गर्भ रह जाता है, साँड़ उसे सूँघकर चल देता है, छेड़ता नहीं; पर आजकल अधिकांश मनुष्य पशुओंसे भी गये-बीते हो गये हैं।

आयुर्वेद-आचार्योंने लिखा है:—

गर्भिणी सप्तमान्मासादुपरिष्टाद्विशेषतः ।

निषिद्धात्वष्टमे मासे मैथुनं न समाचरेत् ॥

इसका आशय यही है, कि जिनसे रहा ही न जाय, वे छः महीने तक गर्भवतीके साथ मैथुन कर लें; पर सातवें, आठवें या नवें महीनेमें तो भूलकर भी पास न जायँ। चार महीने बाद ही इस तरह करें



कि, गर्भको हानि न पहुँचे । अनेक बार, ज़रा ऊँचा-नीचा पैर पड़नेसे ही गर्भ गिर जाता है ।

रोगिणी या योनि-रोगवालीके साथ मैथुन करनेसे रोग हो जाते हैं । प्रदर या सोजाक-गरमीवालीके साथ मैथुन करनेसे सोजाक या गरमी रोग हो जाते हैं । सोजाकसे वह मयङ्कर प्रमेह-रोग हो जाता है, जिससे भगवान् ही बचावें । उपदंश होनेसे लिंगेन्द्रिय सूख जाती, घाव हो जाते, कीड़े पड़ जाते, और ध्वज-भंग-रोग हो जाता है । अनेक बार तो लिंग गलकर ही गिर जाता है ।

छोटी उम्र वाली कन्याके साथ मैथुन करनेसे लिङ्गके छिल जाने या चोट लगनेका भय रहता है । छिल जानेसे भी उपदंशकी-सी पीड़ा हो जाती है ।

जिसका काम न जागा हो, जिसकी खुदकी इच्छा न हुई हो, उसके साथ मैथुन करनेसे दिल बिगड़ता और वीर्य क्षीण होनेका रोग हो जाता है ।

( १८ ) अगर आपकी इच्छा पुत्र उत्पन्न करनेकी हो, तो निरोग अवस्थामें “बाजीकरण” औषधियोंसे पुष्ट होकर, ऋतुस्नानके चौथे दिन, स्त्री-गमन कीजिये । अगर आपका वीर्य अधिक होगा, तो पुत्र होगा और यदि आर्तव अधिक होगा तो कन्या होगी । मैथुन करते समय, पुरुष प्रसन्न-चित्तसे स्त्री-सेवन करे और नीचेके मन्त्रका पाठ करता रहे । उधर स्त्री भी, जब तक पुरुषका वीर्य न गिरे, पतिमें ही दिल लगाकर, पतिको याद करती रहे । इस तरह रूपवान्, बलवान् और आयुष्मान् पुत्र होगा ।

### गर्भाधान का मन्त्र ।

ॐ अहिरसि आयुरसि सर्वतः प्रतिष्ठासि  
धाता त्वां दधातु ब्रह्मवर्चसां भवेति ।  
ब्रह्माप्रजापतिर्विष्णुः सोम सूर्यो तथाश्विनौ  
भगोथ मित्रावरुणौ वीरं ददतु मे सुतं ॥



अगर गर्भ न रहे, कई महीने निकल जायँ; पर जाहिरा कोई रोग दोनों प्राणियों को न हो, तो आप नीचे लिखे उपयोगोंसे कोई एक करें ।

### सन्तानोत्पादक योग❁ ।

( १ ) पीपल, अदरक काली मिर्च और नागकेशर,—इनको महीन पीस-छानकर और घीमें मिलाकर खाने से बाँझ भी गर्भवती हो जाती है ।

( २ ) नागकेशर और सुपारी का चूर्ण सेवन करनेसे भी गर्भ रह जाता है ।

( ३ ) गर्भ रहने पर, यदि गर्भवती “ढाकका एक पत्ता” दूध में पीस कर पीती है, तो निश्चय ही वीर्यवान पुत्र होता है । कहा है—

पत्रमेकं पलाशस्य गर्भिणी पयसान्वितं ।

पीत्वा च लभते पुत्रं वीर्यवन्तं न संशयं ॥

नोट—ढाकके बीजोंकी राख और हींग,—इन दोनों को दूधमें मिलाकर पीने से गर्भ नहीं रहता । वेश्याओं के लिये यह अच्छा नुसखा है ।

( ४ ) पुत्रजीव वृक्षकी जड़ दूधमें पीसकर पीने से दीर्घायु पुत्र होता है ।

( ५ ) पुत्र जीव वृक्ष की जड़ और देवदारु—इन दोनोंको “दूधमें पीसकर” पीने से अवश्य पुत्र होता है ।

( ६ ) बिजौरे नीबू के बीज, “बछड़ेवाली गायके दूधमें” पीसकर पीने से निश्चय ही पुत्र होता है ।

( ७ ) नागकेशर “बछड़ेवाली गाय के दूधके साथ” पीनेसे बाँझ भी पुत्र होता है ।

( ८ ) काले तिल, सोंठ, पीपर, मिर्च, भारंगी और पुराना गुड़,—इन सबको बराबर-बराबर, चार-चार माशे लेकर, पावभर जलमें औटाओ और आधा या चौथाई पानी रहनेपर उतार लो । इस काढ़े के

\* पाँचवें भाग में “सन्तानोत्पादक योग” बहुत जगहसे लिखे हैं ।



२० दिन पीने से स्त्री के गर्भाशयके सभी रोग नाश होकर, निश्चय ही, पुत्र होता है।

**सूचना**—स्त्रियोंके योनि-रोग, मासिक धर्म बन्ध्यादोष प्रभृतिके आराम होने के उपाय, फलघृत, सन्तानोत्पादक योग यानी पुत्र देनेवाले उत्तमोत्तम नुसखे, जो हमने इस जीवन में आज्ञामाये और कृष्णकी कृपा से जो कभी फेल नहीं हुए, अगले—पाँचवें भागमें लिखे हैं।

( १६ ) पाठकों को नीचे के तीन पैरों में लिखी हुई बातें कण्ठाग्र रखनी चाहिए। निम्न लिखित चीजें वीर्य को पैदा करती हैं:—

( १ ) मिश्री मिला हुआ गाय का दूध । ( २ ) गायका धारोष्ण दूध । ( ३ ) दूध का मक्खन । ( ४ ) चाँवल और दूध की खीर । ( ५ ) सेमल का मूसरा या मिश्री और दूध मिले हुये । ( ६ ) उड़द और दूध की खीर । ( ७ ) मलाई और मिश्री । ( ८ ) मलाई का हलवा । ( ९ ) बादाम का हलवा । ( १० ) गेहूँ की रोटियाँ । ( ११ ) उड़दकी दाल—दालचीनी, तेजपात, इलायची और गोल मिर्च डाली हुई । ( १२ ) प्याज या प्याजके रसमें घी और शहद मिले हुए । ( १३ ) शतावर । ( १४ ) असगन्ध । ( १५ ) बादाम । ( १६ ) केशर । ( १७ ) दालचीनी । ( १८ ) पके आम खाकर दूध पीना या आम-पाक खाना । ( १९ ) तालमखाना । ( २० ) सफ़ेद और लाल बहमन । ( २१ ) इन्द्रजौ ( २२ ) नारियल की गिरी । ( २३ ) चन्दनादि तेल लगाकर नहाना । ( २४ ) छोटी इलायची । ( २५ ) तोदरी । ( २६ ) मीठा अनार । ( २७ ) मैदान की सवेरे की हवा । ( २८ ) बढ़िया गढ़े-तकियेदार कसा हुआ पलँग । ( २९ ) रूपवतीस्त्री ।

नीचे लिखी हुई चीजें वीर्य को गाढ़ा करती हैं:—

मोचरस, सेमल का मूसरा, सफ़ेद मूसली, स्याह मूसली, बबूलका गोद, मखाने, शतावर, बंसलोचन, असगन्ध, बीजबन्द, रुमी-मस्तगी, लिहसौड़े और काले तिल ।

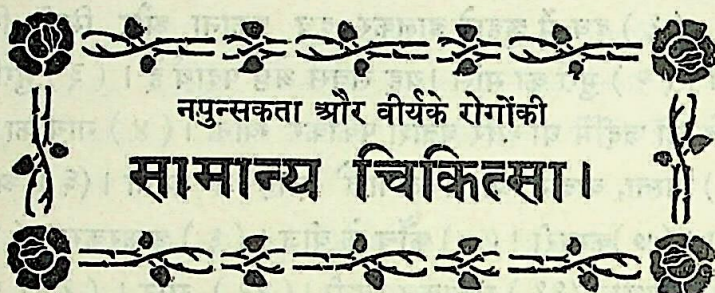


नीचे लिखे पदार्थ मैथुनेच्छाको बढ़ाते हैं:-

( १ ) दूध में छुहारे डालकर दूध पकाना और मिश्री मिला पीना । ( २ ) मुर्गे का मांस । यह सबसे श्रेष्ठ पदार्थ है । ( ३ ) मुर्गी के अण्डे की जर्दीमें घी और बताशे पकाकर खाना । ( ४ ) गाय का घी । ( ५ ) पिस्ता, बादाम और चिलगोज़े जाड़े में खाना । ( ६ ) अबीघ मोती । ( ७ ) कस्तूरी । ( ८ ) कौंच के बीज । ( ९ ) अकरकरा । ( १० ) सालम मिश्री । ( ११ ) सकाकुल मिश्री । ( १२ ) सोंठ । ( १३ ) दोनों बहमन ( १४ ) नारियल की गिरी । ( १५ ) प्याज के बीज । प्याज का रस । ( १६ ) सफ़ेद खसके दाने । ( १७ ) दूधकी खीर । हलवा । बादाम का हलवा, और पिस्तोंकी बरफी । ( १८ ) लौंग, गोल मिर्च, दालचीनी, तेजपात और सोंठ डाली हुई “उड़द की दाल” । ( १९ ) गन्नों का रस । ( २० ) अनार । ( २१ ) चाँदनी रात, नवयुवती रमणी, नाच, गाना और बाजा । बढ़िया शराब या कोई आसव । ( २३ ) मन की असन्नता ।

बङ्गसेन में लिखा है—जो पदार्थ मीठे, चिकने, प्राणरक्षक, मन में आनन्द करने वाले होते हैं उनको वृष्य या पुष्टिकारक कहते हैं । निम्न-लिखित पदार्थ वृष्य हैं—( १ ) तैलादिकी मालिश, ( २ ) चित्र-विचित्र कपड़े पहिनना, ( ३ ) चन्दनादि पदार्थों का लेपन ( ४ ) फूलमाला आदि पहनना, ( ५ ) गहन पहनना, ( ६ ) सुन्दर सजा हुआ मकान, ( ७ ) उत्तम पलंग, ( ८ ) तोता, मैना और मोर आदि का कलरव, ( ९ ) सुन्दरी मानिनी स्त्रियों के गहनों की झनकार, ( १० ) प्यारी स्त्रियों की बात-चीत, ( ११ ) सुन्दरी, रूपवती, यौवनवती, शुभ लक्षणों वाली और रति-कर्म-निपुण स्त्रियाँ,—ये सब मैथुन की चाह बढ़ाने वाले हैं ।





## शरीर-रोग-निवारण ।

( १ ) सफेद प्याज का रस ८ माशे, अदरक का रस ६ माशे, शहद चार माशे और घी ३ माशे—इन चारों को मिलाकर, २ महीने तक, सेवन करने से नामर्द भी मर्द हो जाता है । परीक्षित है ।

( २ ) प्याज का रस ६ माशे, घी ४ माशे और शहद ३ माशे मिलाकर सवेरे-शाम चाटने और रात को चीनी-मिला गरम दूध आध सेर पीने से दो-महीने में खूब वीर्य बढ़ता और उरुक्षत रोग आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

( ३ ) प्याजका रस ६ माशे, घी ४ माशे और शहद ३ माशे—इनको मिलाकर, सवेरे-शाम पीओ और सोते समय “एक तोले शतावर और २ तोले मिश्री डालकर” औटाया हुआ दूध पीओ, अपूर्व चमत्कार दीखेगा । चार महीने में तो स्त्री-प्रसंग की इच्छा खूब ही बढ़ जायगी । परीक्षित है ।

( ४ ) मोचरस का चूर्ण ६ माशे और मिश्री ४ तोले—इन दोनोंको गायके गरम दूधमें मिलाकर, लगातार २।३ महीने पीनेसे स्वप्नदोष प्रभृति आराम होकर खूब बलवीर्य बढ़ता है । परीक्षित है ।

( ५ ) कौंचके छिले बीजोंका चूर्ण ६ माशे, तालमखानेके बीजोंका



चूर्ण ६ माशे और मिश्री १ तोले—तीनोंको मिलाकर फाँकने और ऊपरसे “धारोष्ण दूध” पीनेसे बलवीर्य बढ़ता और वीर्य कम नहीं होता । यह उत्तम वाजीकरण योग है । परीक्षित है ।

( ७ ) एक तोले विदारीकन्दको सिलपर पीसकर लुगदी बनालो । इसे मुँहमें रखकर, ऊपरसे, १ तोले घी और दो तोले मिश्री-मिला दूध पीनेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता है । साल दो साल लगातार सेवन करनेसे बूढ़ा भी जवानके समान हो सकता है । परीक्षित है ।

( ८ ) धोई उड़दकी दाल सिलपर जलके साथ पीस लो और फिर कढ़ाहीमें “घी” डालकर भूँजलो; जब सुर्ख हो जाय; उतार लो । पीछे औटते दूधमें, इस भूँजी हुई दालको छोड़कर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब खीर सी हो जाय, उसमें “मिश्री” पीसकर मिलादो और चाँदी या काँसीकी थालीमें परोसकर, थोड़ीसी सवेरे ही खाओ । यह गरिष्ठ और भारी है; ज्यों-ज्यों पचता जाय, खूराक बढ़ाते जाओ । इस खीरके ४० दिन खानेसे बल-वीर्य बढ़ता और शरीर पुष्ट होता है । आयुर्वेदमें लिखा है:—

भुक्त्वा सदैव कुरुते तरुणी शत मैथुनं पुरुषः ।

अर्थात् इस खीरको सदा खानेवाला १०० स्त्रियोंको मैथुनसे सन्तुष्ट कर सकता है । इसके गुणकारक होनेमें ज़रा भी शक नहीं । संभव है, सदा खानेवाले १०० स्त्रियोंकी तृप्ति कर सकें । परीक्षित है ।

नोट—छिलके-हीन उड़दोंको घीमें भूँजकर दूधमें पकानेसे भी खीर बन जाती है । उसमें भी वही गुण हैं, जो ऊपर लिखे हैं । कहा है:—

“घृतभृष्टस्य माषस्य पायसं वृष्यमुत्तमम्”

( ९ ) आध सेर दूधमें एक तोले “शतावर” पीसकर डाल दो । जब डेढ़ पाव दूध रह जाय, उसमें “मिश्री” मिलादो । इस दूधके पीने से मैथुनेच्छा बढ़ती और लिंगेन्द्रिय ढीली नहीं होती—कड़ी रहती है । कम-से-कम ४० दिन तो ऐसा दूध पीना चाहिये ।



( १० ) बड़े सेमलके पेड़की छालके दो तोले स्वरसमें, दो तोले मिश्री मिलाकर खानेसे, सात दिनमें, वीर्यका समुद्र बन जाता है । इतनी बात तो नहीं देखी, पर है अक्वल नम्बरका नुसखा । परीक्षित है ।

( ११ ) विदारीकन्दके चूर्णको “घी, दूध और गूलरके रसके साथ” पीनेसे बूढ़ा भी जवान हो जाता है ।

विदारीकन्दको पीस-कूटकर छान लो । उसमेंसे तोले दो तोले चूर्णको गूलरके स्वरसमें मिलाओ और चाट जाओ । ऊपरसे दूधमें घी मिलाकर पीओ । इस नुसखेसे अद्भुत चमत्कार देखनेमें आता है । जिसे स्त्री-प्रसंगकी इच्छा ही नहीं होती, वह भी प्रसंगके लिये पागल हो जाता है । कहा है:—

विदारीकन्दचूर्णं च घृतेन पयसा पिवेत् ।

उदुम्बरसेनैव वृद्धोपि तरुणायते ॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिखा है । नुसखेके उत्तम होनेमें जरा भी शक नहीं । परीक्षित है ।

( १२ ) आमले लाकर पीस-कूटकर छान लो । फिर आमलोंका स्वरस निकालकर, उस रसमें इस चूर्णको डुबो दो और सूखने दो । दूसरे दिन, फिर आमलोंका रस निकालकर, सूखे हुए आमलोंके चूर्णको डुबो दो और सूखने दो । इस तरह सात दिन तक ताजा आमलोंका रस निकाल-निकालकर, चूर्णको भिगोओ और सुखाओ । यही सात भावनायें हुईं । इस सूखे हुए चूर्णमेंसे, अपने बलाबल अनुसार, दो तोले या अधिक चूर्णको १ तोले घी और ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपरसे पाव भर दूध पीओ । इसकी मात्रा ३ तोले तक है । जिसे स्त्री भोगनेकी इच्छा हो, वह गरम, चरपरे, खट्टे, खारी, नमकीन पदार्थ अधिक न खावे । इस नुसखेसे धातुके रोग नाश होकर, खूब बलपुरुषार्थ बढ़ता है । परीक्षित है ।

( १३ ) सूखा विदारीकन्द लाकर पीस-कूटकर छानलो । ताजा



विदारीकन्द लाकर, उसे सिलपर पीसकर, कपड़ेमें निचोड़कर, रस निकाल लो। रस इतना हो, जितनेमें सूखे विदारीकन्दका चूर्ण डूब जावे। उस रसमें विदारीकन्दके चूर्णको डुबो दो और पीछे सुखा दो। दूसरे दिन, फिर ताजा विदारीकन्दका रस निकाल कर, उसमें सूखे हुए विदारीकन्दके चूर्णको डुबा कर सुखादो। इस तरह सात दिन करो, फिर सुखालो। इस भावना दिये चूर्णमेंसे १ तोले चूर्ण लेकर, ६ माशे घी और ३ माशे शहदमें मिलाकर चाटो। इस चूर्णके लगातार १ वर्ष तक सेवन करनेसे पुरुष दस स्त्रियोंको राज़ी कर सकता है। परीक्षित है।

( १४ ) गोखरू, तालमखाने, शतावर, कौंचके बीजोंकी गिरी, बड़ी खिरंटी और गंगेरन,—इनको आध आध पाव लाकर, कूटनीसकर छान लो। इसमेंसे ६ माशेसे १ तोले तक चूर्ण फाँककर, ऊपरसे गरम दूध; रातके समय, पीनेसे वेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता है। आयुर्वेदमें लिखा है—  
चूर्णमिदं पयसा निशि पेयं यस्य गृहे प्रमदा शतमस्ति ।

जिसके घरमें सौ रमणियाँ हों, वह रातके समय दूधसे पीवे। हमने इसकी परीक्षा की है। इतना फल देखा, क्योंकि हम बराबर बरस दो बरस न खा सके। लगातार सेवन करने वाला, संभव है, १२० स्त्रियोंको सन्तुष्ट कर सके। हमने देखा है, ६० दिनमें ही यह खूब चम्त्कार दिखाता है। अमीर-गरीब इसे भोजनकी तरह, रोज़ रातको खाकर दूध पीवें और आनन्द भोगें। यह योग “चक्रदत्त” आदि कितने ही ग्रन्थोंमें लिखा है। परीक्षित है।

( १५ ) जो घीमें भुनी हुई मछलियाँ खाता है, वह स्त्रियोंके सामने कभी नहीं हारता।

( १६ ) तिल और गोखरूका चूर्ण, बराबर-बराबर लेकर, बकरीके दूधमें पकाओ और शीतल होनेपर “शहद” मिलाकर खाओ, तो हथरस या लौंडेबाज़ी वगैरहसे पैदा हुई नपुन्सकता नाश हो जायगी। चक्रदत्त।



( १७ ) सूखा सिंघाड़ा पीस-कूट और छानकर रख लो । इसमेंसे अपने लायक लेकर, घी और चीनीके साथ हलवा बनाकर, सवेरे ही खाओ । चालीस दिन हलवेके सेवन करनेसे निश्चय ही वीर्य पुष्ट होता है । परीक्षित है ।

( १८ ) सूखे सिंघाड़े और मखानोंकी ठुरी—दोनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान कर रखलो । मात्रा ६ माशेकी है । हर मात्रामें बराबरकी “मिश्री” मिलाकर फाँकने और ऊपरसे कच्चा पावभर दूध पीनेसे निश्चय ही धातु बढ़ती और गाढ़ी होती है । जो ३ मास सेवन करेंगे; उनकी इच्छा पूरी होगी । परीक्षित है ।

( १९ ) भुने हुए चनोंकी दाल ६ माशे और बादाम ६ माशे, दोनोंको मिलाकर, सवेरे से शाम, चालीस दिन तक खानेसे निश्चय ही वीर्य पुष्ट होता है ।

नोट—ज्यों-ज्यों पचने लगे, मात्रा बढ़ाते जायें; पर अति न करें ।

( २० ) चिलगोज्ञोंकी सोंग्ग्री ३ माशे और मुनक्के ६ माशे—दोनोंको रातके समय जलमें भिगो दें और सवेरे ही चीनी मिलाकर खाओ । इस नुसखेसे कुछ दिनोंमें वीर्य पुष्ट हो जाता है ।

( २१ ) ऊँटकटारेकी जड़की छाल २० माशे लेकर कुचल लो और एक कपड़ेमें बाँधकर पोटली बना लो । पीछे आधसेर दूधमें आधा सेर पानी मिला, कढ़ाहीमें चढ़ा दो; नीचे मन्दी-मन्दी आग लगाने दो । कढ़ाहीके कुन्दोंमें आढ़ी लकड़ी लगाकर, उसमें इस पोटलीको इस तरह लटका दो, कि पोटली दूधके भीतर रहे । औटते दूधमें ५ छुहारे भी डाल दो । जब पानी जलकर दूध-मात्र रह जाय, पोटलीको अलग कर दो और मिश्री मिलाकर दूधको पीलो । इस योग्यके ४० दिन सेवन करनेसे धातु खूब ही पुष्ट होती और प्रसंगेच्छा अत्यन्त बढ़ जाती है ।

( २२ ) छै तोले आठ माशे असगन्ध कूट-छानकर, एक सेर दूधमें डालकर औटाओ; जब औट जाय, २॥ तोले मिश्री मिलाकर, दोनों



समय सेवन करो । इस नुसखेसे बदन लाल हो जायगा । वीर्य और बल बेहद बढ़ेगा । यह मात्रा खूब ताकतवरको है ।

( २३ ) तरबूजके बीजोंकी मींगी ६ माशे और मिश्री ६ माशे मिलाकर खानेसे, २१३ मासमें, शरीर खूब पुष्ट होता है । गरीबोंके लिए बड़ी अच्छी दवा है । परीक्षित है ।

( २४ ) खरबूजेकी मींगी १० तोले, सफेद मूसली १० तोले, पेटेकी मिठाई १० तोले, घीग्वारके पट्टे नग दो और कबाबचीनी ६ माशे— इन सबको तैयार कर लो । ग्वारपाठेका गूदा निकालकर मथ लो । पेटे और ग्वारपाठेको घीमें भून लो । फिर आध सेर मिश्रीकी चाशनी बनाकर, उसमें पाव-भर खोआ और इन सबको मिला दो और घी-चुपड़ी थालीमें फैला दो; पीछे कतली काटकर या लड्डू बनाकर रखदो । मात्रा एक तोलेकी है । यह नुसखा बहुत ही अच्छा है । पित्त प्रकृति या गरम मिजाजवालोंको तो अमृत ही है । गिरते हुए वीर्यको तत्काल रोक देता और उसे खूब ही पुष्ट करता है । इसे मौसम गरमीमें भी खा सकते हैं । परीक्षित है ।

( २५ ) लहसन आध सेर लाकर, चार सेर दूधमें डाल दो और आगपर मन्दाग्निसे औंटाओ । जब सारा दूध सूख जाय, उस लहसन-मिले खोयेको आधसेर घीमें भूनो । फिर उतारकर “शहद”में माजून बना लो । इसके सेवन करनेसे गरम मिजाज या पित्त-प्रकृति वालोंका वीर्य खूब पुष्ट और बलवान होता है । फालिज और लकवेवालोंको भी यह माजून खूब गुण करती है ।

( २६ ) एक सेर “पीपल” लाकर, दो सेर दूधमें औंटाओ; जब दूध सूख जाय, पीपलोंको सुखा लो । सूखनेपर, पीस छानकर रख दो । इसमेंसे बलाबल-अनुसार मात्रा लेकर, उसमें छः गुनी मिश्री मिलाकर, खाओ और ऊपरसे दूध पीलो । इसके सेवन करनेसे शरीर खूब बलवान होता है । “इलाजुलगुर्बा”में लिखा है, २० माशे पीपरोँके चूर्णमें १० तोले मिश्री मिलाकर खाओ और दूध पीओ; पर हमने पीपरोँके ३४ माशे



चूर्णमें छः गुनी मिश्री मिलाकर शुरू कराया और ६ माशे तक ले गये कई रोगियोंको २ महीनेमें ही खासा फायदा हुआ । वीर्य पुष्ट होनेके सिवा कई और भीतरी रोग भी नाश हो गये ।

अथवा

एक पाव पीपरोको दो सेर दूधमें औंटाओ, जब आध सेर दूध बाक़ी रह जाय, तब पीपरोको निकालकर सुखा लो और पीस-छानकर रख लो । उस पीपरोके दूध का खोआ बना लो । पीछे पीपरोके पिसे-छने चूर्ण और खोए को घीमें भून लो । फिर दो सेर चीनी की चाशनीमें चूर्ण और खोये को डालकर बर्फी बना लो । मात्र ३ तोलेकी है । अनुपान मिश्री मिला दूध । परीक्षित है ।

नोट—पीपलोंके चूर्ण के बराबर मिश्री मिलाकर ६ माशेकी मात्रा फँकाने और दूध पिलानेसें भी वेहद बल-वीर्य बढ़ते देखा है । परीक्षित है ।

( २७ ) बबूलकी कच्ची फली, जो छायामें सुखाई हों, ५ तोले, मौलसरीकी सूखी छाल ५ तोले, शतावर ५ तोले और मोचरस ५ तोले—इन सबको पीस-कूटकर छान लो और चूर्णमें २० तोले “मिश्री” पीसकर मिला दो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण खाकर दूध पीनेसे,—कैसाही पतला वीर्य हो, गाढ़ा हुए बिना नहीं रहता । परीक्षित है । गरीब लोग इसे दो मास खाकर इसका आनन्द देखें ।

( २८ ) बड़ के पेड़ की कोंपलें ३ माशे, गूलर के पेड़की छाल ३ माशे और मिश्री ६ माशे—तीनों को सिलपर पीसकर लुगदी-सी बना लो और तीन बार मुँहमें रखकर खालो; ऊपरसे दूध १ तोले भर पीलो । ४० दिनमें ही अद्भुत चमत्कार दीखेगा । इस नुसखे पतला वीर्य खूब गाढ़ा होता है । परीक्षित है ।

( २९ ) दो तोले पिस्ते, दो तोले मिश्री और ६ माशे सोंठ, इन तीनोंको मिलाकर पीस लो । जब महीन हो जायँ, १ तोले शहदमें मिलाओ और ऊपरसे १ रस्ती धुली भाँग महीन पीसकर छिड़क दो । इस नुसखे के १४ दिन खानेसे ही वीर्य गाढ़ा हो जाता है । अगर कसर रहे, तो



२१ या ३१ दिन तक सेवन करो । कई बार अच्छा फल देखा है ।  
परीक्षित है ।

( ३० ) चीनिया गोंद और बहुफली छै-छै माशे लेकर, पीस-छान लो । यह एक मात्रा है । इसे फाँककर ऊपरसे दूध पीओ । इसी तरह ४० दिन खाने से और ऊपर से दूध पीनेसे वीर्य खूब गाढ़ा होता है ।  
परीक्षित है ।

( ३१ ) इमलीके बीज एक सेर लाकर पानीमें चार दिन तक भीगने दो । पीछे निकालकर, काले-काले छिलके दूर कर दो और बीजोंको सुखा लो । सूखनेपर, पीसकर छान लो और चूर्ण के बराबर “मिश्री” मिलाकर रख दो । इसमें से दो चने बराबर चूर्ण, ४० दिन, खानेसे वीर्य गाढ़ा होता और जल्दी स्खलित होनेका रोग शान्त होजाता है ।

( ३२ ) कौंचके कच्चे बीज लाकर, छायामें सुखा दो । सूखनेपर, महीन पीस कर छान लो और रख दो । इसमेंसे, ६ माशेसे एक तोले तक चूर्ण, गाय के दूधमें डालकर औंटाओ और पक जाने पर पीलो । इसके सेवनसे वीर्य गाढ़ा होता, स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा बढ़ती और प्रसङ्गमें देर लगती है । कौंचकी फली जंगलमें बहुत होती है । गरीब लोग लाकर २।३ मास खायें और संसार का आनन्द लूटें ।

( ३३ ) गेंदेके बीज ४ माशे और मिश्री ४ माशे—इन दोनोंको पीस कर, लगातार कुछ दिन खानेसे, वीर्यमें खूब रुकावट होती है । ज्यों-ज्यों बर्दाश्त होता जाय, मात्रा बढ़ाते जाओ । “इलाजुलगुर्बो” में २० माशे बीज और २० माशे मिश्रीकी एक मात्रा लिखी है । परीक्षित है ।

( ३४ ) समन्दर-शोष, तालमखानेके बीज और तुखम-रिहाँ—तीनों दो-दो तोले लाकर, कूट-पीसकर छान लो । इसमेंसे ६ माशेसे १० माशे तक चूर्ण, सवेरे ही, कोरे कलेजे खाओ । इससे पतला वीर्य खूब जल्दी गाढ़ा होता और स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है । ६० दिन सेवन करनेसे अच्छा लाभ होता है । परीक्षित है ।

( ३५ ) ढाकके पेड़ की छाल, ढाकका गोंद, गूलरकी छाल, गूलरका



गोंद, सेमलका मूसला, सेमलका गोंद, मौलसरी की छाल, मुने चने और बबूलका गोंद—इन सबको तीन-तीन तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो। इसमेंसे ४ से ६ माशे तक चूर्ण, सवेरे-शाम, खाकर गायका दूध पीनेसे निश्चय ही धातु गाढ़ी होती और प्रसङ्गमें देर लगती है। कम-से-काम १ मास खा देखें। परीक्षित है।

( ३६ ) ताजा साफ सूखे कैचुए १० तोले और अजवायन २० तोले—इनको कूट-पीसकर, चालीस तोली गुड़में मिलाकर, तोले-तोले भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके २१ दिन खानेसे कामदेव खूब जोर करता है। नामर्द भी मर्द हो जाता है।

( ३७ ) कसौंधी की छाल ४ तोले महीन पीसकर “शहद” में मिलाकर, तोले-तोले भरकी गोलियाँ बना लो। मात्रा ३ या ३। गोलीकी है। पहले एक गोली से शुरू करो। १ गोली खाकर १ पाव दूध पीओ। इस नुसखे के सेवन करने से पतली-से-पतली धातु गाढ़ी हो जाती है।

( ३८ ) काले धतूरेके फूल सुखाकर पीस लो और “शहद” में मिलाकर चने बराबर गोलियाँ बनालो। १ गोली रोज खानेसे ४० दिनमें वीर्य खूब बलवान होजाता है।

( ३९ ) मुर्गीके एक अण्डेकी जर्दी, बताशे ३ नग और घी ३ तोले, इन तीनों को मिलाकर, कोयलों की आगपर पकाओ और कलछी से हिलाते रहो। जब पक जाय, शीतल करके खा लो। परीक्षित है।

४० दिन खाने से शरीर खूब पुष्ट और बलवान हो जाता है। स्त्री-इच्छा तो इतनी बढ़ जाती है कि, लिख नहीं सकते। जो लोग अण्डे खाते हैं, अवश्य खा देखें। हमने कई पञ्जाबियों को, हालमें ही, सेवन कराकर बड़ा चमत्कार देखा।

नोट—जिन दो रोगियोंको यह नुसखा दिया, उन्हें सोझाक होगया था। सोझाक आराम हो जाने बाद, सुबह ही एक धातु-पुष्टिकर चूर्ण खिलाते थे और २।३ घण्टे बाद यह नुसखा। घी उतना न पचे तो ६ माशे भी ले सकते हैं।

( ४० ) सूखी शकरकन्दी कूट-छानकर, घी और चीनीके साथ हलवा



बनाकर खानेसे, निश्चय ही वीर्य पुष्ट और गाढ़ा होता है । परीक्षित है ।

नोट—कोई-कोई भुनी शकरकंदीको घीमें भूनकर; चीनीकी चाशनी में हलवा बनाते हैं ।

( ४१ ) सोनामक्खीकी भस्म, पारेकी भस्म, लोह-भस्म, शिला-जीत, बायविडङ्ग, हरड़ और घी तथा शहद—इन सबको उचित मात्रा से चाटनेवाला रोगी, यदि बूढ़ा हो तो भी, जवानकी तरह मैथुन कर सकता है ।

( ४२ ) कैंथके पत्ते लाकर सुखा लो और पीस-छानकर रख दो । इसमें से ६ माशे चूर्ण फांककर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीओ । इस चूर्णसे शरीरके भीतरकी गरमी निकल जायगी और धातु खूब पुष्ट होगी । परीक्षित है ।

नोट—जिसके फोते बढ़ जाते हैं, वह स्त्रीके काम का नहीं रहता । इसलिये एक परीक्षित गरीबी नुसखा लिखे देते हैं—इन्द्रायणकी जड़को पीसकर अरण्डी के तेलमें नहाकर नरो, नष्ट कर दो, वगु-प्लोतों, पर, तीक्ष्ण-तीक्ष्ण घरे पर लगाओ; साथ ही इन्द्रायणकी जड़का पिसा-छना चूर्ण दो माशे, सवेरे-शाम, गायके दूध में मिलाकर पीओ । तीन-चार दिनमें ही फायदा नज़र आयेगा । जबतक पूरा आराम न हो, सेवन करो ।

इन्द्रायण छोटी और बड़ी दो होती हैं । इस काम में बड़ी लेनी चाहिये । इसकी बेल होती है, उसमें फल लगते हैं । फल पहले तो हरे होते हैं, पर पकने पर लाल हो जाते हैं और स्वादमें कड़वे होते हैं ।

( ४३ ) प्याजके रसमें “शहद” मिलाकर चाटनेसे निश्चय ही वीर्य बढ़ता है । परीक्षित है ।

( ४४ ) सफ़ेद प्याजका रस १ तोले, अदरकका रस ६ माशे, घी ४ माशे और शहद ३ माशे—मिलाकर, सवेरे ही चाटनेसे ४१ दिनमें नामर्द मर्द हो जाता है । इस तरह भी कई रोगियों पर परीक्षा की है । ४१ दिनमें ही मर्दुमी आ जाती है, पर वह महीने दो महीनेमें फिर कम होने लगती है । ६१ दिन सेवन करनेसे पूरा पक्का लाभ होता है ।

( ४५ ) गोखरू १३॥ माशे और स्याह-तिल १३॥ माशे—दोनोंको



कूट-पीस-कपड़छन करके, एक सेर दूधमें ढालकर औंटाओ। जब खोआ-सा हो जाय खालो। इसी तरह रोज़ बनाओ खाओ। इस नुसखेके ४१ दिन खाने और कोई तिला लगानेसे नामर्द भी मर्द हो जाता है।

( ४६ ) सफ़ेद चिरमिटी १ पाव, खिरनीके बीज १ पाव और लौंग १ पाव—इन तीनोंको महीन कूट-पीसकर, सात कपरौटी की हुई आतिशी शीशीमें भरलो; और “पाताल यन्त्र”से तेल निकालकर शीशीमें भरलो। इसमेंसे एक सींक पानमें लगाकर रोज़ खानेसे, २१ दिनमें नामर्द मर्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इसकी एक सींक खाने वालेको, ऊपरसे, घंटे-आध घंटे बाद, १ छटाँक घी खाना जरूरी है। अगर दो सींक खाय, तो आध पाव घी खाना जरूरी है।

( ४७ ) लोहसार १ तोले, सोंठ ६ माशे और सालम मिश्री ६ माशे—इन तीनोंको कूट-पीसकर रख लो। इसमेंसे तीन या चार अथवा छै रत्ती चूर्ण खाने और “दूध-मिश्री” पीनेसे, धातु और बल-वीर्य खूब बढ़ते हैं और स्तम्भनकी शक्ति भी होती है। परीक्षित है।

( ४८ ) सोंठ, तालमखाना, ईसबगोल, स्याह मूसली, शतावर, पीपर और मुरुली—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस-छान लो। फिर बराबरकी मिश्री (सब दवाके वजन बराबर) पीसकर मिला दो। इसमेंसे १ तोले चूर्ण गायके अधौटे दूधमें मिलाकर पीनेसे प्रमेह, खाँसी और श्वास आदि नाश होकर बलवीर्य खूब बढ़ता है।

( ४९ ) पुराने सेमलका सुखाया हुआ मूसला ६ माशे महीन पीसकर, उसमें ६ माशे चीनी या मिश्री मिलाकर रोज़ खाओ और दूध पीओ। ४० दिनमें खूब वीर्य बढ़ेगा और अत्यन्त प्रसंगेच्छा होगी। मात्रा जवानको डेढ़ तोले तक है। परीक्षित है।

नोट—सफ़ेद मूसली और सेमलका मूसला बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके वजनके बराबर “मिश्री” पीसकर मिला दो। मात्रा एकसे दो तोले तक। अनुपान—दूध। यह नुसखा रति-शक्ति बढ़ानेमें अपूर्व है। परीक्षित है।

( ५० ) सिरसके बीज ३ माशे और ढाकके बीज ३ माशे—इनको



पीस-छानकर और ६ माशे “मिश्री” मिलाकर फाँको । इसके सेवनसे बल-वीर्य खूब बढ़ता है । परीक्षित है ।

नोट—जिसको अपनी इन्द्रियमें कसर मालूम हो, वह चमेलीका असली तेल रोज़ मले । लिङ्गेन्द्रियके लिये यह बहुत ही उत्तम है । अगर कोई इसे सदा लगावे, तो क्या कहना ?

( ५१ ) भाँग ८ माशे, अजवायन ५ माशे, कद्दूके बीज ५ माशे, इस्बन्द ६ माशे, भुने चने ७ माशे, अफीम ३ माशे, केशर ४ रत्ती, इलायचीके बीज १ माशे और पोस्तके डोडे नग २—इन सबको पीस-कूटकर छानलो और पोस्तके डोडोंके भिगोये जलमें खरल करके, छोटे बेरके समान गोलियाँ बना लो । सबेरे ही १ गोली खाकर दूध पीओ । खूब ताकत पैदा होगी । अगर सध जायँ, तो २ गोली भी खाई जा सकती हैं । परीक्षित है ।

( ५२ ) मुलहठी, बिदारीकन्द, तज, लौंग, गोखरू, गिलोय और सफेद मूसली,—इन सबको बराबर लेकर पीस-छानलो—इसमेंसे ३ माशे चूर्ण रोज़ खाकर दूध पीनेसे, पुरुष का बल-वीर्य कभी नहीं घटता । परीक्षित है ।

( ५३ ) गिलोय, त्रिफला, मुलहठी, बिदारीकन्द, सफेद मूसली, स्याह मूसली, नागकेशर और शतावर—इन सबको छटाँक-छटाँक भर लाकर, पीस-कूटकर छान लो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, ६ माशे घी और ४ माशे शहदमें मिलाकर रोज़ खाने और ऊपरसे दूध पीनेसे बूढ़ा भी जवान हो जाता है । ३० दिनमें खासा फायदा नज़र आता है, और ६० दिनमें तो कई स्त्रियाँ भोगनेकी शक्ति हो जाती है । यह नुसखा कई बारका परीक्षित है ।

( ५४ ) बेलके ताजा पत्तोंका स्वरस ५ तोले, कमलके फूलकी एक ढण्डीकी राख और गायका घी ५ तोले,—इन तीनोंको मिलाकर, सबेरे ह्दी, ४१ दिन, पीनेसे नामर्द निश्चय ही मर्द हो जाता है । परीक्षित है ।

( ५५ ) नागौरी असगन्ध और विधाराको एक-एक पाव लेकर पीस-



छान लो । इसमेंसे १ तोले चूर्ण “६ माशे घी और ३ माशे शहदके साथ” सेवन करनेसे प्रमेह नाश होता, बल-वीर्य बढ़ता और मैथुनमें आनन्द आता है । परीक्षित है ।

नोट—असगन्ध आधपाव और विधारा आधपाव लेकर पीस-छान लो । फिर पावभर “मिश्री” मिलाकर रख दो । इनमेंसे एक तोले चूर्ण रोज खाकर दूध पीनेसे खूब बलवीर्य बढ़ता है । यह तरकीब भी परीक्षित है ।

( ५६ ) घीग्वारका गूदा आधसेर, बिनौलेके बीजोंकी गिरी आधसेर, गेहूँका आटा आध सेर, मिश्री आध सेर, और घी आध सेर—इन को तैयार रखो । थोड़ा-सा “घी” कढ़ाहीमें चढ़ाकर, पहले घीग्वारके गूदेको भूनकर थालीमें रख लो । इसके बाद, फिर घी डालकर, बिनौलों के पिसे हुए चूर्णको भूनलो और अच्छी थालीमें रख दो । इसके भी बाद गेहूँके आटेको भून लो और अलग रख दो । शेषमें, मिश्रीकी चाशनी बनाओ । जब चाशनी हो जाय, उसमें तीनों भुनी हुई चीजोंको मिला दो और ऊपरसे गोखरूका चूर्ण आधी छटाँक, नारियलकी गिरी चार तोले, कतरे हुए पिस्ते ४ तोले और चिलगोजे ४ तोले भी मिला दो और एक वासनमें रख दो । इसमेंसे छटाँक-छटाँक भर रोज सवेरे ही खाकर ऊपरसे पाव आधसेर गायका दूध पीनेसे बल-वीर्य बढ़ता और प्रसंगेच्छा तेज होती है । अच्छा नुसखा है । साधारण लोग भी बना सकते हैं । दवा बनाते समय, आग खूब मन्दी न रखनेसे, पाक कड़ा हो जाता है । परीक्षित है ।

( ५७ ) उड़दोंका आटा एक तोले लेकर, उसमें ६ माशे घी और ६ माशे शहद मिलाकर, ४ मास सेवन करने और ऊपरसे दूध पीनेसे घोड़ेके समान मैथुन करनेकी शक्ति हो जाती है । परीक्षित है ।

( ५८ ) कौंचके बीजोंकी गिरीका चूर्ण ६ माशे और खसखसके बीजोंका चूर्ण ६ माशे ( या चार-चार माशे ) इन दोनोंको मिलाकर फाँकने और ऊपरसे “गायका धारोष्ण दूध” पीने से कदापि वीर्य-क्षय



नहीं होता। लगातार खाते रहनेसे, ४ मासमें, अपूर्व आनन्द आता है। परीक्षित है।

( ५६ ) पीपलके पेड़की छाल, फल, अंकुर और जड़को ६६ माशे लेकर, पावभर दूध और सेर भर पानीमें औटाकर, वही दूध मिश्री मिलाकर पीनेसे, १२ महीनेमें, बूढ़ा भी जवान हो जाता है। यह परम बाजीकरण है। परीक्षित है।

( ६० ) एक बारकी ब्याई हुई गायको, जिसका बछड़ा बड़ा हो, उड़दके पत्ते खिलाओ और उसका दूध पीओ। इस दूधकी जितनी तारीफ़ की जाय थोड़ी है। परले सिरेका बल-वीर्य-वर्द्धक है। परीक्षित है।

( ६१ ) मिश्री १ तोले और घी १ तोलेमें, उड़दोंका २ तोले आटा मिलाकर सान लो और घीमें पूरियाँ तल कर खाओ। इन पूरियोंके खानेवाला १०० स्त्रियोंसे भोग कर सकता है। इन पूरियोंके परम बलप्रद होनेमें सन्देह नहीं; खूब बल-वीर्य बढ़ता है। १०० स्त्रियोंकी बात तहीं आजमाई। परीक्षित है।

( ६२ ) बड़े बछड़े वाली गायके दूधमें “गेहूँका सत्त” ढालकर खीर बनाओ। फिर उसमें शहद, घी और मिश्री मिलाकर पीओ।

( ६३ ) बकरेके आँड़ोंको दूध और घीमें पकाकर, पीछे उनमें पीपलोंका चूर्ण और थोड़ासा सैधानोन लगाकर खानेसे, १०० स्त्रियोंसे भोग करनेकी सामर्थ्य हो जाती है।

( ६४ ) बकरेके आँड़ोंको दूधमें खूब पकाओ। इसके बाद, दूधको छान लो और उस दूधमें तिलोंको भिगो दो। चार पहर भोगनेके बाद उन्हें सुखा लो। इन तिलोंको मात्राके साथ “मिश्री” मिलाकर खानेसे, पुरुष, कुछ दिनोंमें सौ स्त्रियोंकी वृत्ति कर सकता है।

नोट—अगर चार पाँच दिन तक नये-नये आँड़ ला-लाकर दूधमें औटा-औटाकर उन दूधोंमें तिल बारम्बार भिगो-भिगोकर सुखाये जायँ, तो और भी उत्तम हो।

( ६५ ) कौँचके बीज और तालमखानेके बीजोंका चूर्ण मिश्री मिलाकर



फाँकने और ऊपरसे दूध पीनेसे धातु पुष्ट होती है । परीक्षित है ।

मात्रा—६ माशेसे १ तोले तक ।

( ६६ ) कौंचके बीजोंकी गिरी और तालमखानेके बीज—दोनों बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । फिर चूर्णके समान मिश्री पीसकर मिला दो और रख दो । इसमेंसे ६ माशेसे २ तोले तक चूर्ण खाकर, ऊपरसे मिश्री मिला धारोष्ण दूध पीनेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता है । खूब परीक्षित है ।

यह नुसखा भी परमोत्तम है । वीर्य बढ़ाने और कामोत्तेजना करनेमें अव्वल नम्बरका है । सुश्रुतमें लिखा हैः—

स्वयं गुप्तेक्षुरकयोः फलचूर्णं सशर्करम् ।

धारोष्णेन नरः पीत्वा पयसा न क्षयं व्रजेत् ॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिखा है ।

नोट—कौंचके पेड़की छाल और सफ़ेद कत्था, पानीमें पीसकर, पानीमें धोल लो । इस पानीको बारम्बार पिलानेसे संखियाका ज़हर उतर जाता है । केलेके गांभेका पाव-भर रस पिलानेसे भी संखियाका ज़हर उतर जाता है । परीक्षित है ।

( ६७ ) गेहूँ दो तोले और कौंचके बीज दो तोले लेकर—आध सेर दूधमें पकाओ । जब खीरकी तरह पक जाय, शीतल होनेपर उसमें दो तोले घी और चार तोले मिश्री मिलाकर खा लो । इस खीरको नित्य खानेवालेका वीर्य कभी क्षीण नहीं होता । खूब परीक्षित है ।

“सुश्रुत”में लिखा है—

क्षीरपक्वांस्तु गोधूमानात्मगुप्ताफलैः सह ।

शीतान् घृतयुतान् खादेत्ततः पश्चात्पयः पिबेत् ॥

गेहूँ और छिले हुए कौंचके बीजोंको दूधमें उबाल कर, शीतल कर लो । फिर उसमें “घी” मिलाकर खाओ और ऊपरसे उस दूधको पीलो । इच्छा हो, उसमें चीनी या मिश्री मिला लो । इच्छा



हो ना-बराबर घी और शहद मिला लो; पर मिलाओ शीतल होने पर ।

( ६८ ) एक पका केला, ६ माशे घीके साथ, सवेरे-शाम खानेसे, धातु-रोग और प्रदर-रोग नाश हो जाते हैं । अगर सरदी करे, तो ४ बूँद “शहद” मिला लेना चाहिये ।

( ६९ ) सन्ध्या समय, औंटाये हुए दूधमें १ तोला शतावरकी जड़ का चूर्ण और मिश्री २ तोले मिलाकर, २-३ महीने पीनेसे धातु पुष्ट होती है । परीक्षित है ।

( ७० ) कैकड़े या कछुएके आँड़ोंको दूधमें पकाकर, सेवन करनेसे भी, पुरुष १०० स्त्रियोसे भोग कर सकता है ।

( ७१ ) दूधके साथ उच्चटा—सफ़ेद चिरमिटी—का चूर्ण खानेसे मनुष्यमें मैथुन करनेकी सामर्थ्य बहुत बढ़ जाती है ।

नोट—सफ़ेद चिरमिटी पीसकर उनके छिलके दूर कर दो । फिर छिलके रहित चिरमिटीकी दालको दालसे चौगुने दूधमें औंटाओ । जब चौथाई दूध रह जाय, दालको निकाजकर, पानीसे धो डालो और सुखाकर पीस लो । इसमेंसे तीन-तीन रत्ती चूर्ण खाकर, ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीओ ।

( ७२ ) शतावर और उच्चटा—सफ़ेद चिरमिटीका चूर्ण खाकर, दूध पीनेसे, मैथुन-शक्ति निश्चय ही बहुत बढ़ जाती है । परीक्षित है ।

( ७३ ) काकड़ासिंगीको, सिलपर, जलके साथ पीसकर और दूधमें मिलाकर पीने और ऊपरसे “घी, शहद और दूधका भोजन” करनेसे पुरुष स्त्रियोंमें साँड़के समान हो जाता है ।

( ७४ ) दूधमें क्षीरकाकोली पकाकर और उसमें बराबरका घी और शहद मिलाकर खाने और ऊपरसे बाखरी गायका दूध पीनेसे पुरुष मैथुनसे नहीं थकता । वृन्द ।

( ७५ ) जो असंगन्धके चूर्णमें—मिश्री, घी और शहद मिलाकर चार तोले-भर रोज़ खाता है, वह ४ महीनेमें जवान हो जाता है । बड़ा अच्छा नुसखा है । परीक्षित है ।



नोट—घी और शहद जब मिलाने हों, ना-बराबर मिलाने चाहिएँ । जैसे १ तोले घी और ६ माशे शहद ।

( ७६ ) जो मनुष्य विधारेका चूर्ण, शहद और घीमें मिलाकर खाता है और दूधमें चाँवल पकाकर उनका गूथ पीता है, वह किन्नरोंके साथ गा सकता और स्त्रियोंकी खूब वृत्ति कर सकता है । परीक्षित है ।

( ७७ ) जो मनुष्य सवेरे ही उठकर हस्तिकर्णरज (हस्तिकन्द) का चूर्ण घीमें मिलाकर खाता है और इच्छानुसार दूध-भात-घीका भोजन करता है—वह बुद्धिमान, बलवान, कामी और सैकड़ों स्त्रियोंका भोगने वाला होकर हजार साल तक जीता है ।

( ७७ ) दिल्लीकी सफेद मूसली चालीस तोले लाकर, कूट-पीसकर छान लो और शीशीमें रख दो । इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है । एक मात्रा सवेरे-शाम खाकर, ऊपरसे पाव आध सेर गायका दूध पीने से, वीर्य खूब ताकतवर और स्त्री-प्रसंगमें आनन्द देनेवाला होजाता है । कम-से-कम ६ महीने खाना चाहिये । अगर कोई इसे साल-भर तक खाले तो वह दस स्त्रियोंको सन्तुष्ट कर सके । इसके खाने वालेके जो पुत्र होगा, वह भीमके समान बली होगा; इसमें शक नहीं । परीक्षित है ।

नोट—धातुपौष्टिक दवाएँ अक्सर कठिनाईसे पचती हैं । जिनकी अग्नि मन्दी होती है, उन्हें और भी ज्यादा दिक्कतसे पचती हैं । इनके सेवनसे दस्त कब्ज हो जाता है । अगर ऐसा हो, तो मात्रा ३ माशेकी कर लेनी चाहिये । जब दवाका असर होगा, पाखाना आफ्ही साफ़ होता रहेगा । कोई ४० दिनके बाद लाभ मालूम होता है; अतः नाउम्मेद होकर, दवा खाना बन्द न कर देना चाहिये । मूसली “रसायन” है । इसके सेवनसे बुढ़ापा और रोग पास नहीं आते ।

( ७६ ) कौँचके बीज १ सेर लाकर छील लो और उनकी गिरी निकालकर कूट-पीसकर छान लो । इस चूर्णकी मात्रा ५ माशेसे २ तोले तक है । इसके सेवन करनेसे घोड़ेके समान मैथुन करनेकी सामर्थ्य हो जाती है, क्योंकि कौँचके बीज “बाजीकरण” हैं । इनके सेवनसे घटी हुई स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा फिर पैदा हो जाती है और थोड़े दिनोंका नामर्द फिर मर्द हो जाता है । कम-से-कम ३४ मास इस



चूर्णका सेवन करना चाहिये । दवाकी मात्रा पहले कम लेनी चाहिये, ज्यों-ज्यों पचने लगे, बढ़ा कर दो तोले तक पहुँचा देनी चाहिये । सवेरे-शाम दवा खाकर, दूधमें मिश्री मिलाकर, दूध पीना चाहिये । परीक्षित है ।

नोट—कौंचके बीज चौगुने दूधमें पका लेनेसे नर्म होकर जल्दी छिल जाते हैं ।

( ८० ) मुलहठीको लाकर, कूट-पीसकर कपड़-छन कर लो और रख लो । इसमेंसे १ तोले चूर्णको—गायके ताज्जा घी १ तोले और शहद ६ माशोंमें मिला लो और चाट जाओ और ऊपरसे गायका दूध मिश्री मिलाकर पी जाओ । इस नुसखेके ३ महीने लगातार सेवन करनेसे स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा निश्चय ही बढ़ जाती और आनन्द भी बहुत आता है । इसमें कुछ खटखट नहीं । खाना खानेकी तरह, इसे रोज सेवन करनेसे जो लाभ होगा, लिख नहीं सकते । परीक्षित है ।

कर्ष मधुकचूर्णस्य घृतद्वौद्रसमांशिकं ।

प्रयुक्तेयः पयश्चान्नं नित्य वेगः सना भवेत् ॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिखा है । लोलिम्बराज भी अपने “वैद्यजीवन”में लिखते हैं :—

सहितेन घृतेन मधुना मधुकं,

परिसेचितं पिवति योऽनुपयः ।

नवसुभ्रुवां सुखकरः सततं,

बहुवोर्यपूरपूरितो भवति ॥

जो पुरुष घी और शहदमें मुलहठीका चूर्ण मिलाकर खाता और ऊपरसे दूध पीता है, वह नवयुवती कामिनियोंको भोगसे सुखी करता और सदा बहुतसे वीर्यसे भरा पूरा रहता है ।

नोट—मुलहठीका चूर्ण ६ माशोंसे एक तोले तक, घी मुलहठीके चूर्णके बराबर और शहद घीसे आधा लेना चाहिये । अगर कोई इसे सेवन करते समय लालमिर्च, खटई, तेल, शोक, चिन्ता आदि पीछे लिखे हुए अपथ्य पदार्थोंसे बचे तब तो कहना ही क्या है ? बिना अपथ्य पदार्थ त्यागे, किसी भी



दवासे लाभ नहीं होता । हाँ, कामी पुरुष चाहें तो नियमानुसार स्त्री-प्रसङ्ग कर सकते हैं । अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्गसे तो महाकामी भी नपुंसक हो जाता है । अगर नित्य मैथुन करनेवाला भी इस नुसखेको सदा सेवन करता रहे, तो खजानेमें कमी न आवे ।

( ८१ ) बिना छिलकोंके उड़द पीसकर आटा-सा बना लो । उसमें से दो या तीन अथवा पाँच तोले आटा और उतना ही ताजा घी मिलाकर चाट जाओ और ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीलो । इस उड़दके चूर्णके सेवन करनेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता और धातु पुष्ट होती है । स्त्री-भोगमें पुरुष घोड़ेके समान हो जाता है । अव्वल दर्जेका नुसखा है । खर्च भी कुछ नहीं; पर जितना पचे उतना ही खाना चाहिये; क्योंकि गरिष्ठ है । २।३ महीनेमें ही अपूर्व चमत्कार दीखेगा । परीक्षित है ।

उड़दकी धोई दाल महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो । इसमेंसे चार तोले या दो तोले दालका चूर्ण बराबरके घीमें मिलाकर चाटने पर ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे बल-वीर्यकी खूब वृद्धि होती है ।

अथवा

घी और चीनीके साथ धोई हुई उड़दकी दालके चूर्णका हलवा बनाकर खानेसे पुरुष अनेक स्त्रियोंको भोग सकता है ।

“सुश्रुत”में लिखा है—

माषाणां पलमेकं तु सयुक्तं चौद्र सर्पिषा ।

अवलिह्य पयः पीत्वा तेन बाजी भवेन्नरः ॥

चार तोले उड़दोंका चूर्ण, शहद और घीमें मिलाकर, चाटने और ऊपरसे दूध पीनेसे पुरुष घोड़ेके समान हो जाता है ।

और भी—

त्रिपलं माषचूर्णं तु तत्समा श्वेतशर्करा ॥

आलोड्य मधुसर्पिर्म्यां पलाद्धं भक्षयेन्नरः ॥

बलवीर्यकरं शश्वद्वलीपतितनाशनम् ।



छिले हुए उड़दके बारह तोले चूर्णको कढ़ाहीमें डालकर जरासे "घी"में भून लो। फिर कढ़ाहीसे निकालकर, चूर्णके बराबर मिश्री मिला दो और रख दो। इसमेंसे २ तोले चूर्ण निकालकर, उसमें १ तोले घी और ६ माशे शहद मिलाकर चाटो और ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीओ। इससे बलवीर्यकी वृद्धि होती, शरीरकी गुलमट या झुर्रियाँ मिटतीं और बाल सफेद नहीं होते।

उड़दकी दालकी खीरमें भी यही गुण हैं।

नोट—उड़दकी दाल बलवीर्य बढ़ानेमें परमोत्तम है। जो लोग उचित रूपसे गरम मसाला डाली हुई उड़दकी दाल घी मिलाकर रोज खाते हैं; उनमें स्त्रो-भोगकी खासी ताकत रहती है। ऊपरके सभी नुसखे अनेक बारके परीक्षित हैं। जिसे जौन सी विधि पसन्द हो, वह उसे ही चुन लेवे। उड़दकी दालका हलवा बनाकर खाना या उड़दके चूर्णको भूनकर चाटना अच्छा है।

(८२) उड़दकी धुली दालमें कौंचके बीजोंकी गिरी मिलाकर दालकी तरह पकालो और खाओ। इससे भी खूब बलवीर्य बढ़ता है। परीक्षित है। "सुश्रुत" में लिखा है:—

स्वयं बीजोंकी गिरी माषसूपं पिवेन्नरः ॥

अर्थ वही है जोरो लेकर खा है।

(८३) पीपलके पेड़के फल, जड़की छाल, भीतरी छाल और फुनगी—इन सबको छायामें सुखाकर, पीस-कूटकर कपड़-छान कर लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १॥ तोले तक है। इसे सवेरे ही खाकर, ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीनेसे पुरुष चिड़ेके समान मैथुन करने लगता है; पर तीन-चार मास सेवन करना जरूरी है। परीक्षित है।

नोट—पीपलके पेड़के फल, जड़की छाल, भीतरी छाल और कोंपल—इन सबको एक-एक तोले लेकर और कूटकर, आध सेर दूध और दो सेर पानीमें पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, उतार कर कपड़ेमें छान लो। फिर अन्दाज़की मिश्री मिलाकर पी लो। इससे स्त्री-प्रसङ्गकी खूब शक्ति आती है। बड़ा ही उत्तम बाजीकरण है। खूब परीक्षित है।



अथवा  
पीपलके पेड़के फल, जड़की छाल, मोतरी छाल और कोंपलें लाकर छायामें सुखालो । सूखने पर कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो । इस चूर्णमें से एक तोले रोज़ खाकर, ऊपरसे मिश्री मिला पाव-आध सेर दूध पी लो । इस तरह भी ऊपरके लिखे मुताबिक फायदा होता है ।

सुश्रुतमें कहा है:—

अश्वत्थफलमूलत्वकछुङ्गासिद्धं पयो नरः ।

पीत्वा सशर्कराक्षौद्रं कलिंग इव हृष्यति ॥

अश्वत्थ वृक्ष यानी पीपलका फल, मूल, छाल और कोंपलोंको दूधमें औटाकर पीनेसे पुरुष बिड़ेकी तरह मैथुन करता है ।

( ८४ ) दो तोले ताजा विदारीकन्दको सिलपर पीसकर, लुगदीसी बनाकर खाने और ऊपरसे “घी-चीनी मिला दूध” पीनेसे बूढ़ा भी जवानकी तरह मैथुन कर सकता है । कम-से-कम ४ मास सेवन करना चाहिये । परीक्षित है ।

नोट—विदारीकन्दके चूर्णको विदारी <sup>इ उड़की दाल</sup> भवना देकर यानी विदारीकन्दके पिसे-छने चूर्णको विदारीकन्द <sup>येग सकता है</sup> भिगो और सुखाकर, नाबराबर घी और शहदके साथ चोटनेसे <sup>औरतोंसे</sup> मैथुन कर सकता है ।

इस नुसखे की विधि हम पीछे पृष्ठ २२२ में खूब समझाकर लिख आये हैं । निस्सन्देह अव्यर्थ महौषधि है । हमने स्वयं परीक्षा की है । पर कम-से-कम चार महीने लगातार पथ्यके साथ सेवन करना चाहिये । दस-बीस दिनमें पूरा आनन्द नहीं आता । प्रायः सभी आचार्योंने इस नुसखेकी खूब तारीफ़ की है—

चूर्णं विदार्याः सुकृतं स्वरसेनैव भावितम् ।

सर्पिर्मधुयुतं लीढ्वा दशस्त्रीरधिगच्छति ॥—सुश्रुत ।

चूर्णं विदार्याः स्वरसैर्भावितं भानुशोषितम् ।

सम्भाव्य मिश्रितं लीढ्वा भजते वनिता दश ॥—अनंगरम् ।



चूर्णं विदार्याः स्वरसेन तस्याः संभावितं भास्कररश्मिजाले ।  
मध्याज्यसम्मिश्रितमाशु लीढ्वा दशस्त्रियो गच्छति निर्विशंकः ॥

—पंचशायक ।

अर्थ वही है जो ऊपर लिख आये हैं । पीछेवालोंने स्वरसमें भिगो-भिगोकर धूपमें सुखानेकी राय दी है ।

( ८५ ) दो तोले गेहूँ और दो तोले कौंचके बीजोंकी गिरी लेकर दूधमें डालकर खोर बनाओ । जब खीर बन जाय, उसमें आधी छटाँक गायका घी और छटाँक भर मिश्री मिलाकर खाओ । इस खीरके २३ महीने खानेसे बल-वीर्य और स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा खूब बढ़ती है ।

( ८६ ) पुष्ट बछड़ेवाली गायके दूधमें गेहूँका सत्त या आटा, थोड़ा-सा जल मिलाकर, आटाओ और कलछीसे चलाते रहो । खोआ हो जाने पर, अन्दाजकी चीनी मिलाकर लड्डू बना लो । सवेरे ही बलाबल अनुसार लड्डू खाकर, ऊपरसे २ तोले घी, ६ माशे शहद और २ तोले मिश्री मिलाकर दूध पीओ । इन मोदकोंको कुछ दिन खानेवाला दस स्त्रियोंकी तृप्ति कर सकता है ।

( ८७ ) कौंचके बीजोंकी गिरी, बड़ा गोखरू और उटंगनके बीज— इन तीनों को छै-छै माशे लेकर पीस-कूट कर छान लो । यह एक मात्रा है । इस चूर्णको गायके तीन पाव दूध में डालकर मन्दी-मन्दी आगपर पकाओ । जब आधा सेर दूध रह जाय, आगसे उतारकर ठण्डा कर लो । इसके बाद, माठा बिलौनेकी धुली हुई साफ़ रईसे मथो और चार तोले मिश्री मिलाकर, सन्ध्या समय, ३ महीने पीओ । इसके सेवन करनेसे नामर्दको भी स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा होने लगती है । दिलमें बहुत उमंग आती है । परीक्षित है ।

“सुश्रुत” में कहा है—

गुप्ताफलं गोक्षुरकाच्च बीजं तथोच्चटां गोपयसा विपाच्य ।  
खजाहतं शर्करया च युक्तं पीत्वा नरो हृष्यति सर्वरात्रम् ॥

अर्थ ऊपर लिखा ही है ।



“वैद्यजीवनमें” लिखा है—

उच्चटामर्कटी गोक्षुरैश्चूर्णितः

शर्करादुग्धसंमिश्रितैः पाचितैः ।

सेवितैर्वार्धके मानवो मानिनी

मान-मुच्छेदयेत्किं पुनर्यौवने ॥

उटंगनके बीज, कौंचके बीज और गोखरू—इन तीनोंको समान-समान लेकर पीस-छान लो । फिर इस चूर्णमें मिश्री मिलाकर खाओ और ऊपरसे दूध पी लो । इस नुसखेके सेवन से बूढ़ा आदमी भी जवानीके घमण्डमें चूर स्त्रियोंका गर्व-खर्व कर सकता है । अगर जवानीमें इसे सेवन करे तब तो कहना ही क्या ?

नोट—इस नुसखेको चूर्णकी तरह फाँक सकते हैं अथवा चूर्णको दूधमें पकाकर खा सकते हैं अथवा चूर्णको खोये में सेककर और मिश्रीकी चाशनीमें मिलाकर बरफी बना सकते हैं । यह बात रुचिपर निर्भर है ।

( ८८ ) शुद्ध आमलासार गन्धक १० तोले और सूखे आमले १० तोले—इन दोनोंको पीस-कूटकर छान लो । फिर ताजा आमलोंके स्वरस या सूखे आमलोंके काढ़े में तीन भावनाएँ देकर छायामें सुखा लो और फिर सेमरके स्वरसमें सात भावना देकर छायामें सुखा लो । इसमें से डेढ़ या दो माशे चूर्ण लेकर, उसमें उतनी ही मिश्री और ६ माशे शहद मिलाकर चाटो और गायका दूध पीओ । इस नुसखेके २१३ मास सेवन करनेसे नामर्द भी मर्द हो जाता और चिड़ेकी तरह मैथुन करता है । यह चूर्ण बूढ़ेको जवान कर देता है, फिर जवानका तो कहना ही क्या । परीक्षित है ।

( ८९ ) सफेद गदहपूर्णाकी जड़ लाकर कूट-पीस-छान लो । फिर उस चूर्णको पुराने सेमलकी जड़के स्वरसमें भिगोओ, और सुखाओ । इस तरह सात बार भिगोओ और सुखाओ; जब सूख जाय, चूर्णमें “सेमलकी मूसली” पीस-छानकर



बराबरकी मिला दो । फिर चूर्णके बराबर ही “मोचरस” पीस-छानकर मिला दो । फिर सबको मिलाकर तोलो । जितना चूर्ण हो उतना ही “शुद्ध गन्धकका चूर्ण और मिश्री” पीसकर मिला दो । इसकी मात्रा चार तोलेकी है । एक मात्रा खाकर दूध पीनेसे खूब मैथुनेच्छा होती है ।

नोट—गन्धक शोधकर मिलानी चाहिये । गन्धक शोधनेकी विधि इसी भागके पृष्ठ ५१४-५१५ में देखिये ।

( ६० ) गायके दूधमें छुहारे पकाकर, छुहारे खालो और उस दूधको पी जाओ अथवा बकरे या भुर्गेका मांस खाओ । इतना बल-पुरुषार्थ बढ़ेगा, जिसकी हद नहीं । इसके सेवन करने वालेको स्त्री-प्रसङ्गकी अत्यधिक इच्छा होती है । परीक्षित है ।

( ६१ ) एक मोटा छुहारा लेकर, उसकी गुठली इस तरह निकालो कि छुहारेके टुकड़े न हों । फिर उस छुहारेमें १ रत्ती अफीम और १ रत्ती केशर भर दो और छुहारेका मुँह डोरेसे बाँध दो, ताकि भीतरसे कोई चीज न निकले । अब उस छुहारेको आध सेर दूधमें डालकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब आधा दूध रह जाय, छुहारेको दूधमें निचोड़कर बाहर फेंक दो और दूधको मिश्री मिलाकर पी लो । ऐसा दूध कुछ दिन लगातार पीनेसे खूब मैथुन-शक्ति बढ़ती है । अफीम खानेवालोंके लिये तो यह दूध अमृत ही है । जो अफीम नहीं खाते, वे भी इस दूधके पीनेसे मैथुनमें परमानन्द लाभ करते हैं । परीक्षित है ।

( ६२ ) आध सेर दूधको मन्दी-मन्दी आगसे औटाओ । औटाते समय उसमें एक या दो तोले ताजा घी और चार तोले मिश्री मिला दो । जब आधा दूध रह जावे, उतारकर शीतल करो और घीसे आधा शहद मिलाकर पी लो । यह दूध परम बाजीकरण है ।

अथवा

आध सेर दूधमें ४ छुहारे डालकर औटाओ । औटाते समय उसमें



१ रत्ती केशर और ४ तोले मिश्री मिला दो । जब आधा दूध रह जाय, पी लो । यह दूध भी बहुत ताकत लाता है ।

( ६३ ) कौंचके बीजोंकी सवा सेर गिरी “बड़के दूध”में मिलाकर सान लो । जब गुँधा आटासा हो जाय, तोले-तोले भरकी छोटी-छोटी टिकियाँ बना लो । फिर कढ़ाहीमें “जंगली सुअरकी चरबी” डालकर, चरबी गरम हो जानेपर, उसमें सब टिकियोंको पूरियोंकी तरह पका लो; पर आग मन्दी रखना, टिकियाँ जलने न पावें अन्यथा सब गुड़ गोबर हो जायगा । जब टिकियाँ सिक जायँ, निकालकर कौंच या चीनीके बर्तनमें रखो और ऊपरसे इतना “शहद” भर दो, जितनेमें टिकियाँ डूब जायँ । सवेरे-शाम एक-एक टिकिया खाकर ऊपरसे पाव आध पाव दूध, थोड़ी-सी मिश्री-या बताशे मिलाकर पी लो । इस नुसखे-के सेवन करनेसे परले सिरे का नामर्द भी मर्द हो जाता है ।

नोट—छिलकों समेत कौंचके बीजोंको चौगुने दूधमें उबालो । पीछे उन्हें छीलकर बड़के दूधमें पीस-सान लो ।

( ६४ ) गोखरू २ तोले, सिंघाड़ोंका आटा १ तोले, साँठी चाँवलोंका आटा १ तोले, कमलगट्टेके बीजोंकी गिरी १ तोले, तालमखानेके बीज १ तोले, मोचरस ८ माशे, समन्दरशोष ८ माशे और रूमी-मस्तगी ८ माशे,—इन सबको पीसकर कपड़ेमें छान लो । फिर जितना यह चूर्ण हो उतनी ही “मिश्री” पीसकर मिला दो । इसमेंसे एक तोले चूर्ण नित्य खाकर ऊपरसे दूध पीनेसे मैथुन-शक्ति खूब बढ़ती है । सुपरीक्षित है । कम-से-कम दो महीने तक खाना चाहिये ।

( ६५ ) सेमलकी मूसली और सफ़ेद मूसली—दोनोंको समान-समान लेकर पीस-छान लो । फिर इसमें “मिश्री” पीसकर मिला दो । इसमेंसे एक या दो तोले चूर्ण खाकर दूध पीनेसे बेतहाशा मैथुन-शक्ति होती है । सुपरीक्षित है ।

“पञ्चशायक”में लिखा है:—



लघुशाल्मलिमूलेन तालमूली सुचूर्णिताम् ।

सर्पिषा पयसा पीत्वा रतौ चटकवद् भवेत् ॥

सेमलकी मूसली और मूसलीका चूर्ण खाकर, घी मिला दूध पीनेसे पुरुष चिढ़ेकी तरह मैथुन करनेवाला हो जाता है ।

( ६६ ) एक सेर कौंचके बीज लाकर, उन्हें चार सेर दूधमें उबालो । जब छिलके फूल जायँ, बीजोंको निकालकर छिलके उतार लो और सुखा लो । सूखने पर पीस-छान लो । फिर उस चूर्णको दो सेर दूधमें पका लो । जब पकते-पकते आधा दूध रह जाय, तब उसी दूधमें उसे महीन पीस लो । फिर उसमें एक छटाँक “तीखुर” और एक छटाँक नीली भाईंका “बंसलोचन” पीसकर मिला दो । फिर उसकी रसगुल्लोंके समान गोलियाँ बनाकर घीमें तल लो और निकालकर शहदमें भिगो दो । जब तीनों <sup>खोआ दूध</sup> भीग लें, तब खाना शुरू करो और ऊपरसे मिश्री-मिला यह बहुत ही उत्तम बाजीकरण है । २।३ महीने खानेसे ) लौंग <sup>शक्ति</sup> बढ़ जाती है । सुपरीक्षित है ।  
के मिले

( ६७ ) स्मृतिवद् दूध एक छटाँक, तालमखानेके बीज आध पाव और गोखरू तो <sup>नक</sup> लोकर महीन पीस-छान लो । इसकी मात्रा ६ माशेसे एक तोल <sup>नक</sup> है । एक मात्रा चूर्णको पावभर दूधमें डालकर औटाओ । जब आधा दूध रह जाय, उसमें २ तोले मिश्री मिलाकर पी लो । इस तरहका दूध दो-तीन महीने पीनेसे खूब रतिशक्ति बढ़ती है । परीक्षित है ।



## अमीरी नुसखे ।

### रस-चिकित्सा ।

( ६८ ) एक रत्ती “अम्बर” शहदमें, सात दिन, देनेसे कम्पवायु दूर होती है । इससे कोठे, आँतों और सन्धियोंके सब रोग नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( ६९ ) स्थावर या जंगम विष वालेको रत्ती भर “अम्बर” जलमें घोलकर देनी चाहिये । परीक्षित है ।

( १०० ) सोने और चाँदीके वर्कमें मिलाकर खाता है । अथ, रत्तीभर “अभ्रक भस्म” खानेसे धातु खूब बढ़ती है । दूधमें उबालो ।

( १०१ ) भौंगके साथ रत्ती भर “अ” खानेसे वीर्य स्तम्भन होता है । परीक्षित है । टा १ तोले, र

( १०२ ) लौंग और शहदके साथ “अ १ तोले, खानेसे धातु बढ़ती है । परीक्षित है । प ८ ३

( १०३ ) दूध या जायफलके साथ, रत्ती दो रत्ती “वङ्गभस्म” खानेसे ताकत आती है । परीक्षित है ।

( १०४ ) पानके साथ अथवा भौंगके साथ अथवा कस्तूरीके साथ “वङ्गभस्म” रत्ती दो रत्ती खानेसे वीर्यस्तम्भन होता है । परीक्षित है ।

( १०५ ) तुलसीके रसमें “वङ्गभस्म” १ या २ रत्ती खानेसे शरीर पुष्ट होता है । परीक्षित है ।

( १०६ ) “रत्तीभर अम्बर” को घी और चीनीके साथ सेवन करने से नाताकती या नामर्दी जाती और शरीरकी कान्ति बढ़कर दिमाग शान्त होता है । परीक्षित है ।



नोट—अम्बरकी डली होती है। यह प्रायः समुद्र किनारे मिलता है। अम्बर पीला, काला और शुभ्र होता है। उस पर दागसे होते हैं। वह गोल और अरगजेकी तरह फीके रंगका होता है। असली अम्बर कीमती होता है; इससे नकली भी आता है। यदि अम्बर की दो डली एक दूसरे पर रख कर धिसें, तो वह गरम होकर सूक्ष्म पदार्थ खींचेगा। पीला अम्बर ऊँचा होता है और काला हलका होता है। अम्बर दाँतोंके नीचे कट सकता है, पर घुलता नहीं; हाँ, जरा नर्म हो जाता है—लस पैदा हो जाती है। आगपर डालनेसे उसके धूँएँ में सुगन्ध आती है—अम्बर धातुवर्द्धक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, कामोत्तेजक, इन्द्रियोंकी शक्ति बढ़ानेवाला और स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा करने वाला होता है। उससे कोठेकी सरदी-गरमी मिटती है। यह बूढ़े और जवान सबको लाभदायक है।

( १०७ ) खोयेमें एक या दो रत्ती “बंगभस्म” मिलाकर खानेसे शरीर में बे-हिसाब वीर्य बढ़ता और गाढ़ा होता तथा शरीर पुष्ट होता है। इसमें सन्देह नहीं।

नोट—खोआ दूधका कम-से-कम छट्क भर लेना चाहिये।

( १०८ ) लौंग १ माशे, पीपर १ माशे और छोटी इलायचीका चूर्ण २ माशे—इनके मिले हुए चूर्णके साथ, एक या दो रत्ती “बंग भस्म” खानेसे बल-वीर्य बढ़ता और नामर्द मर्द हो जाता है।

( १०९ ) जायफलके साथ “बंगभस्म” खानेसे धातु पुष्ट होती और शरीरकी कान्ति बढ़ती है।

( ११० ) दूध और मिश्रीके साथ “बंगभस्म” खानेसे धातु और बलवीर्य बढ़ते हैं।

( १११ ) भाँगके चूर्ण, दूध और शहदके साथ “बंगभस्म” खानेसे स्तम्भन-शक्ति बढ़ती है।

( ११२ ) अपामार्गकी जड़के चूर्णके साथ “बंगभस्म” खानेसे नपुंसकता नाश हो जाती है।

( ११३ ) खोआ, मिश्री, जायफल और पीपलके साथ—रत्ती दो रत्ती “बंगभस्म” खानेसे शरीर पुष्ट और बलवान होता है। इसके खानेवालोंका बल कम नहीं होता।



( ११४ ) पीपलके चूर्ण और शहदके साथ “लोहा भस्म” खानेसे शरीर पुष्ट होता और कफके रोग नाश होते हैं ।

( ११५ ) सोंठकी जड़को गायके दूधमें पीसकर, उसमें “लोहा भस्म” मिलाकर पीनेसे, शरीर पुष्ट होता और बल बढ़ता है ।

( ११६ ) पानके साथ “लोहा भस्म” खानेसे शरीर पुष्ट होता, कान्ति बढ़ती और वीर्यकी अधिकता होती है ।

( ११७ ) छोटी हरड़ और मिश्रीके साथ “लोहा भस्म” खानेसे शरीर फौलाद-जैसा हो जाता है और बल-पुरुषार्थ कभी कम नहीं होता ।

( ११८ ) जायफल, जावित्री, इलायची, मिश्री और गायके दूधके साथ “जस्ताभस्म” खानेसे नामर्द मर्द हो जाता, शरीर बली और पुष्ट होता और खानेवालेका बल कभी नहीं घटता ।

( ११९ ) गिलोयका सत्त १ माशे, “अभ्रक भस्म” १ रत्ती, हरताल भस्म १ रत्ती, इलायची ४ रत्ती, पीपल २ रत्ती और खाँड़ ६ माशे—इन सबको १ तोले “शहद”में मिलाकर सेवन करनेसे, ३१४ मासमें, नपुन्सक भी सौ स्त्रियोंसे मैथुन कर सकता है ।

( १२० ) भाँगरेके रसके साथ “सोनेकी भस्म” एकसे दो रत्ती तक खानेसे वीर्य खूब बढ़ता है; गायके दूधके साथ खानेसे बल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है । घीके साथ खानेसे बुढ़ापा नाश होता है; बड़ी इलायची, पीपर और शहदमें मिलाकर “सोनाभस्म” खानेसे नामर्दी जाती रहती है । बड़ी इलायची २ रत्ती, पीपर १ रत्ती और शहद ४ माशे तथा सोनाभस्म १॥ रत्ती—इन सबको मिलाकर खाने और ऊपरसे गायका “धारोष्ण दूध” पीनेसे कैसा भी नामर्द हो, मर्द हो जाता है ।

( १२१ ) पीपल १ रत्ती और इलायचीके चूर्ण ३ रत्तीमें, रत्ती भर “चाँदीकी भस्म” मिलाकर सेवन करनेसे शरीरमें खूब ताकत आती है । बल-वीर्य बढ़नेके अलावा नया खून पैदा होता और ज्वर हो तो वह भी आराम हो जाता है । दवा खाकर, ऊपरसे “धनियेक अर्क” तोले दो तोले पीना चाहिये ।



( १२२ ) पानके बीड़ेमें दो-चार चाँवल भर “चाँदीकी भस्म” रख कर खानेसे शरीर खूब पुष्ट होता है ।

( १२३ ) खोये और मिश्रीमें “चाँदीकी भस्म” रत्ती भर या आधी रत्ती खानेसे बल-वीर्यकी खूब ही वृद्धि होती है ।

नोट—मिश्री २ तोले और खोया ५ तोले लेना चाहिये ।

( १२४ ) पाँच तोले खोआ, दो तोले मिश्री और दो माशे छोटी इलायची, इनमें एक रत्ती “ताम्बा भस्म” मिलाकर खाने और ऊपरसे गायका दूध पीनेसे नामर्दी नाश होकर, वेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता है; पर २।३ मास खाना चाहिये ।

## ध्यान देने योग्य सूचना ।

धातु-पुष्टिकर चूर्ण, मदनानन्द चूर्ण अथवा बानरी चूर्ण अथवा और कोई बाजीकरण या मैथुन-शक्ति बढ़ानेवाली दवा, नामर्दी या धातु-रोगके सिवा और किसी रोगकी हालतमें न खानी चाहिए । मान लो, किसीको जीर्णज्वर या मन्दाग्नि हो, साथ ही धातु-रोग या नामर्दी भी हो, तो उसे पहले अपने जीर्णज्वर या मन्दाग्निकी चिकित्सा करानी चाहिए । जब शरीरमें ज्वरका अंश न रहे, हरागत न हो, खुलकर भूख लगे, खाया-पिया पचने लगे, तब किसी दस्तावर दवा द्वारा पेट साफ करके, ऊपर लिखी हुई धातु-पुष्टिकर दवाएँ खानी चाहिए । जिसे ज्वर है, जिसकी अग्नि मन्द है, अगर वह धातु-पुष्टिकर दवा खायेगा, तो बीमारी और बढ़ेगी । पहले ही अग्नि मन्दी है, इनसे और भी मन्दी होगी, भूख लगेगी नहीं और दस्त साफ होगा नहीं । जिसे मामूली रोटी और भात ही हजम नहीं होता, उसे ताकतवर दवा कैसे हजम होगी ? जिस तरह स्तम्भन-औषधि



निर्बल और दूषित वीर्यवालेको लाभके बदले हानि करती है, उसी तरह किसी भी रोगवालेको बाजीकरण दवा फायदा नहीं करती । दूध सबसे बढ़कर बाजीकरण है, पर प्रमेह पैदा करता है, इसलिए प्रमेहवालेको अगर दूध आदि बाजीकरण दवाएँ दी जायँ, तो नुकसान ही करेंगी । अगर दूषित वीर्यवाला भी बाजीकरण दवा खाता है, तो बाजीकरण दवासे तैयार हुआ नवीन वीर्य भी, पहलेके दूषित वीर्यमें मिलकर, दूषित हो जाता है; जैसे गन्दे जलमें अच्छा जल मिलनेसे गदला हो जाता है । इस तरह किसी भी रोगकी हालतमें बाजीकरण सेवनसे लाभ नहीं होता, उल्टी हानि होती है । बहुतसे अनाड़ी वैद्य प्रमेहमें—खासकर शुक्र-प्रमेहमें बाजीकरण औषधियाँ देकर रोगको बढ़ा देते हैं । इसलिए अगर रोगीको प्रमेह या ज्वर अथवा और कोई रोग हो, तो पहले उन्हें नाश करके, शरीरको निरोग करके, दस्तों द्वारा गिलाजत निकालकर, बाजीकरण दवा देनी चाहिए । प्रमेह और धातु-रोग या नामर्दीमें फर्क है । इसलिये समझकर दवा देनी चाहिए । प्रमेहमें धातु-पुष्टिकर दवा देना भारी नादानी है ।

एक बात और है, धातु-पुष्टिकर दवाएँ कमजोर अग्निवालोंको मुश्किलसे पचतीं और कब्ज कर लाती हैं । जिनका वीर्य पतला होता है, उन्हें और भी कब्ज करती हैं । अतः जहाँ तक हो, अग्निको तेज करके धातु-पुष्टिकर दवा सेवन करनी चाहिये । अगर फिर भी कब्ज करे या पेटको भारी रखे, तो पहले १०-२० दिन १ तोलेकी जगह ६ माशे और ६ माशेकी जगह तीन माशे दवा शुरू करनी चाहिये । जब उतनी दवा निर्विघ्न पच जाय, तब मात्रा धीरे-धीरे बढ़ा देनी चाहिए । जब दवाका असर होने लगेगा, तब कब्ज आप ही मिटने लगेगा । जिसे आध सेर दूध नहीं पचता,



वह १ छटाँक पीवे । जब १ छटाँक पच जाय, आध पाव पीवे ।  
इसी तरह बढ़ा दे । यही बात दवाके सम्बन्धमें भी समझिये ।

### १२५ धातुपुष्टिकर चूर्ण ।

शतावर	...	...	...	७ तोले
गोखरू	...	...	...	७ ”
कौंचके बीजोंकी गिरी	...	...	...	७ ”
तालमखानेके बीज	...	...	...	७ ”
सेमरकी मूसली	...	...	...	७ ”
जरियाराके बीज	...	...	...	७ ”
गुलसकरी	...	...	...	७ ”

इन सब दवाओंको बराबर-बराबर सात-सात तोले लेकर, कूट-पीसकर छान लो और वज्रन करो, जितना चूर्ण हो उतनी ही मिश्री पीसकर मिला दो और चौड़े मुँहकी शीशीमें भरकर रख दो । इस चूर्णके सेवन करनेसे पतले-से-पतला वीर्य गाढ़ा और बलवान हो जाता है । धातु-पुष्ट करनेमें यह दवा अव्वल दरजेकी है । अनेक बार परीक्षा की है । इसको यदि कोई पुरुष ५६ महीने तक लगातार सेवन करता रहे, तो उसकी स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा एकदम बढ़ जाय और स्त्रियाँ उसकी दासी हो जायँ; पर दस-बीस दिनमें यह फल नहीं हो सकता; कम-से-कम ६० दिन तो सेवन करना ही चाहिये । वीर्य कैसा ही पतला और कमजोर क्यों न हो, इस दवासे अवश्य गाढ़ा और पुष्ट हो जाता है । पहले इसे ३४ महीने खाकर, इसके बाद नीचे लिखा “मदनानन्द चूर्ण” खाना चाहिये ।

सेवन-विधि—एक तोले चूर्णको मुखमें रखकर, ऊपरसे गायका “धारोष्ण दूध” एक पाव पीना चाहिये । दवा दोनों समय, सबेरे-शाम खानी चाहिये । स्त्री-प्रसङ्गसे परहेज रखना बहुत जरूरी है ।  
सुपरीक्षित है ।



नोट—गोखरू बड़ा लेना चाहिये, शतावर पश्चिमी लेना, सेमरकी मूसली पुरानी न हो, कैंचके बीजोंकी गिरी निकालकर सात तोले तोल लेना । सब दवाओंको अलग-अलग कूटकर छान लेना और फिर ७/७ तोले तोलकर मिला लेना ।

## १२६ मदनानन्द चूर्ण ।

सकाकुल मिश्री	...	...	४ तोले
सालिम मिश्री	...	...	४ "
स्याह मूसली	...	...	४ "
सफेद मूसली	...	...	४ "
शतावर	...	...	४ "
बहमन सुर्ख	...	...	२ "
बहमन सफेद	...	...	२ "
दोतरी छोटी	...	...	२ "
दोतरी बड़ी	...	...	२ "
सुरवारीके बीज	...	...	१ "
इन्द्रजौ	...	...	१ "
जावित्री	...	...	१ "
जायफल	...	...	१ "
सोंठ	...	...	१ "
कुलींजन	...	...	१ "

बनानेकी तरकीब—इन सब दवाओंको अलग-अलग कूट-पीसकर छान लो । फिर चार-चार, दो-दो और एक-एक तोले तोलकर मिलाओ ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ६ माशेकी है । एक मात्रा १ तोले “शहद”में मिलाकर चाट लो; ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पी लो । अगर मौसम गरमीका हो, तो दूधमें दवा न खाकर, अर्क गावजुबाँमें “मिश्री” मिलाकर, उसीसे दवा खानी चाहिये ।

रोग नाश—इस “मदनानन्द चूर्ण”के सेवन करनेसे स्त्री-प्रसङ्गकी



इच्छा खूब ज़ियादा हो जाती है; धातुकी क्षीणता और थोड़े दिनोंकी नामर्दी जाती रहती है तथा वीर्यमें स्तम्भन-शक्ति आती है, इसलिए स्त्री-भोगमें बड़ा आनन्द आता है । इस चूर्णकी जितनी तारीफ़ करें थोड़ी है । कामको उत्तेजित करनेमें यह रामबाण है । जिनको स्त्री-प्रसंगकी इच्छा कम होती हो, वे इसे कम-से-कम तीन मास सेवन करें और देखें, क्या मज़ा आता है । अगर स्त्री-प्रसंगसे परहेज़ करके, ६ महीने, यह चूर्ण खा लिया जाय, तब तो कहना ही क्या ? सुपरीक्षित है ।

### १२७ बानरी चूर्ण ।

कौंचके बीजोंकी गिरी	...	...	३ तोले
तालमखानेके बीज	...	...	३ "
सफ़ेद मूसली	...	...	३ "
उटङ्गनके बीज	...	...	३ "
मोचरस	...	...	३ "
ऊँटकटारेकी जड़की छाल	...	...	३ "
बीजबन्द	...	...	३ "
बहुफली	...	...	३ "
कमरकस	...	...	३ "
शतावर	...	...	३ "
समन्दरशोष	...	...	३ "
सूखे सिंघाड़े	...	...	३ "

• सेवन-विधि—इन सबको महीन पीस-कूट कर छान लो । इस चूर्णके सेवन करनेसे थोड़े दिनोंका प्रमेह या धातु-क्षीणता आदि नाश होकर, धातु खूब पुष्ट होती है । यह चूर्ण कभी फेल नहीं होता । इसके खानेवाले को स्त्री-प्रसङ्गमें अत्यानन्द आता है ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा १॥ माशेसे ६ माशे तक है । हर मात्रा में, मात्रासे आधी, पिसी हुई "मिश्री" मिलाकर खाने और "शायक"



धारोष्ण दूध पीनेसे जो लाभ होता है, लिखा नहीं जा सकता । सवेरे-शाम, दोनों समय, सेवन करना चाहिये । सुपरीक्षित है ।

## १२८ किशमिशादि मोदक ।

किशमिश	...	...	...	८ छटाँक
स्याह मूसली	...	...	...	२ तोले
सफेद मूसली	...	...	...	२ "
सालम मिश्री	...	...	...	२ "
समन्दर-शोष	...	...	...	२ "
मोचरस	...	...	...	२ "
बादामकी मींगी	...	...	...	२ "
शतावर	...	...	...	२ "
कुलींजन	...	...	...	६ माशे
मिश्री	...	...	...	१ सेर

बनानेकी तरकीब—किशमिश, बादाम और मिश्रीको अलग रखो और बाकी सब दवाओंको अलग । किशमिशोंको पानीमें धोकर, काँटे वगैरः निकालकर, साफ़ करलो और सुखा दो । बादामोंको ज़रा उबालकर, चाकूसे कतर लो । मूसली प्रभृति सातों दवाओंको पीस-कूट कर छानलो । मिश्रीको कलईदार कढ़ाहीमें रख, थोड़ासा अन्दाजका फली डाल, गाढ़ी-गाढ़ी चाशनी बनालो । जब लड्डुओंके लायक चाशनी हो जाय, उतारकर नीचे रखलो । जब कुछ ठण्डी होजाय उसमें दवाओंका चूर्ण, जो तैयार रखा है, तथा किशमिश और बादाम सबको डालकर मिला लो और आधी-आधी छटाँकके लड्डू बनाकर चिकने भाँडमें रख दो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक लड्डू खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे वीर्य खूब गाढ़ा और पुष्ट होता तथा शरीर तैयार



होता है। इसको हमने अनेक रोगियोंको सेवन कराया। परमात्माने सभीको फायदा पहुँचाया। जाड़ेमें खाने योग्य चीज है। इसके सेवन करनेसे एक बूढ़ेको खूब फायदा हुआ। सुपरीक्षित है।

## १२६ हरशशांक चूर्ण

शुद्ध आमलासार गन्धक ५ तोले और सेमरकी जड़का चूर्ण ५ तोले, दोनोंको पीस-छानकर एकत्र करलो। फिर इसमें सेमरकी छालके “स्वरस”की तीन भावनाएँ देकर, छायामें सुखालो और बोटलमें काग लगाकर रख दो।

सेवनविधि—इसकी मात्रा १ माशेसे १॥ माशे तक है। इसकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे दूध पीनेसे, ३४ मासमें पुरुष घोड़ेके समान मैथुन करनेकी सामर्थ्य लाभ करता है। इसके सेवन करनेसे बूढ़ा भी जवानकी तरह दृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ हो जाता है। इस चूर्णकी जितनी तारीफ़ की जाय थोड़ी है। इसको हमें एक मित्रने बताया था। हमने इसकी अनेक बार परीक्षा की। उन्होंने इसकी जितनी तारीफ़ की थी, उससे कहीं अधिक फल देता है। सुपरीक्षित है।

## १३० माषादि चूर्ण

छिले हुए उड़दोंका चूर्ण	...	...	SI=
गेहूँका सत्त	...	...	SI=
जौका सत्त	...	...	SI=
साँठी चाँवलोंका चूर्ण	...	...	S=
छोटी पीपर (शोधी हुई)	...	...	S=11.
घी	...	...	S1=
चीनी	...	...	S21

बनानेकी विधि—पहले ऊपरकी पाँचों चीजोंको, घीमें, मन्दी-मन्दी आगसे भून लो; जब चूर्ण लाल हो जाय और सुगन्ध आने लगे,



उतार लो । फिर चीनीकी चाशनी गाढ़ी-गाढ़ी बनालो । जब लड्डू-योग्य चाशनी हो जाय, उसमें भुना हुआ चूर्ण डाल दो । ऊपरसे बादाम, पिस्ते और किशमिश आदि मेवे एक-एक पाव कतर कर डाल दो और एक-एक छटाँकके लड्डू बनालो । सबरे-शाम, एक-एक लड्डू खाकर, दूध पीनेसे बेइन्तहा बल-वीर्य बढ़ता और धातु पुष्ट होती है । अन्वल दर्जेकी रति-शक्ति बढ़ानेवाली चीज है । सुपरीक्षित है ।

### १३१ मदनानन्द मोदक ।

सोंठ	...	...	२ तोले
मिर्च	...	...	२ "
पीपर	...	...	२ "
हरड़	...	...	२ "
बहेड़ा	...	...	२ "
आमले	...	...	२ "
धनिया	...	...	२ "
कचूर	...	...	२ "
मीठा कूट	...	...	२ "
काकड़ासिंगी	...	...	२ "
कायफल	...	...	२ "
सेंधानोन	...	...	२ "
मेथी	...	...	२ "
नागकेशर	...	...	२ "
सफ़ेद जीरा	...	...	२ "
स्याह जीरा	...	...	२ "
तालीसपत्र	...	...	२ "
बीजों समेत धुली हुई भाँग	...	...	३४ "
मिश्री	...	...	६८ "



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

घी	...	...	४० तोले
शहद	...	...	२० „

वनानेकी विधि—सोंठसे तालीसपत्र तककी १७ दवाओंको कूट-पीसकर छान लो और जरा भून लो । उधर भाँगको, जो खूब धोकर सुखा लो हो, “घी”में भूँज लो; देखो जले नहीं । पीछे भाँग और ऊपरके चूर्णको खूब मिला लो । इसके बाद इसमें घी, मिश्री और शहद डालकर खूब सानो । खूब एक-दिल हो जायँ, आधी-आधी छटाँकके लड्डू बनालो और चीनी या काँचके साफ बर्तनमें इलायची, तेजपात और कपूरको अन्दाजसे पीसकर, थोड़ासा नीचे जमा दो और उस पर लड्डूओंकी एक तह रखकर, फिर इलायची आदिका चूर्ण छिड़क दो । इस तरह हर तहके नीचे-ऊपर इसे छिड़को और लड्डू रखो । ढक्कन देकर रखदो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम या एक ही समय, एक-एक लड्डू खाकर दूध पीनेसे बूढ़ा भी जवान हो जाता है । इतना बल-पुरुषार्थ बढ़ता है, कि लिख नहीं सकते । एक रातमें दस स्त्रियोंके भोगनेकी सामर्थ्य हो जाती है । इन लड्डूओंसे बल, वीर्य और सम्भोग शक्ति बढ़नेके अलावा संग्रहणी, आमवात, खँसी और वात-कफके विकार नष्ट हो जाते हैं । इन लड्डूओं को खाकर ही श्रीकृष्ण भगवान् १६१०८ स्त्रियोंसे भोग करते थे । परीक्षित है ।

## १३२ बानरी गुटिका ।

काँचके बीजोंकी गिरी सवा सेर लेकर पीस-कूट कर छान लो । फिर इस चूर्णको, गायके दूधमें, बेसनकी तरह सान लो और पकौड़ी बनाने लायक ढीला-गाढ़ा रखो । कढ़ाहीमें घी डालकर मन्दी-मन्दी आग लगाओ । जब घी आजाय, उसमें उसको पकौड़ी उतार लो । उधर मिश्रीकी गाढ़ी-गाढ़ी चाशनी बनाकर तैयार रखो । पकौड़ियोंको,



तैयार होते ही, चाशनीमें डाल दो । जब पकौड़ी खूब चाशनी पा ल, एक “शहदसे भरे बर्तनमें” उनको भर दो और मुँह बाँध दो ।

सेवन-विधि—मात्रा जवानको २ तोलेकी है । बलाबल-अनुसार मात्रा बढ़ा घटा लो । सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खानेसे, घोड़ेके समान मैथुन-शक्ति प्राप्त होती और परले सिरका नपुंसक भी पुरुषत्व लाभ करता है । प्रथम श्रेणीकी बाजीकरण दवा है । सुपरीक्षित है ।

नोट—“भावप्रकाश” में लिखा है, कौंचके बीजोंको चौगुने दूधमें पकाओ; जब दूध गाढ़ा हो जाय, उतार लो । बीजोंको छील कर, उन्हें खूब महीन पीस लो और घीमें पकौड़ी उतार लो इत्यादि । कौंचके बीजोंके छिलके बड़ी कठिनाईसे उतरते हैं; अतः उन्हें दूधमें पका लेनेसे बड़ा सुभीता होता है; छिलके भट उतर जाते हैं । आप चाहे गिरीको सुखाकर आटा कर लो और दूधमें सानकर पकौड़ी बनालो, और चाहे दूधसे निकालते ही छीलकर, गीली गिरीको ही पीसकर पकौड़ी बनालो ।

### १३३ कामिनी मदभञ्जन मोदक ।

शतावर	...	...	५ तोले
कौंचके बीजोंकी गिरी	...	...	५ ”
तालमखानेके बीज	...	...	५ ”
मुलहठी छिली हुई	...	...	५ ”
नागौरी असगन्ध	...	...	५ ”
नागबलाकी जड़की छाल	...	...	५ ”
अतिबलाकी जड़की छाल	...	...	५ ”
गायका दूध	...	...	५ सेर
चीनी	...	...	२॥ ”
घी	...	...	आधसेर

बनानेकी विधि—पहले दूधके ऊपरकी सातों चीजोंको पीस कूटकर छानलो । इसके बाद, दूधको मन्दाग्निसे आँटाओ; जब चौथाई दूध जल जाय, उसमें दवाओंके चूर्णको डालकर, कलछीसे बराबर चलाते रहो; जब खोया हो जाय, नीचे उतार लो ।



कढ़ाही साफ करके, उसमें आध सेर घी डालकर पकाओ । जब घी आ जाय, उसमें दवाओंके मिले मावेको डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे भूनो । जब सुगन्ध आने लगे, खोये पर सुर्खी आ जाय—पर जले नहीं—उतार लो ।

चीनीकी चाशनी गाढ़ी-गाढ़ी तैयार करो । जब चाशनी हो जाय, उसमें खोआ, जो भुना रखा है, डाल दो और खूब चलाकर उतार लो । आध-आध पाव बादाम, पिस्ता, चिलगोजा और किशमिश—जो पहले से ही कतरे हुये तैयार हों—मिला दो और ५-५ तोलेके लड्डू बनालो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक लड्डू खाकर, ऊपरसे गायका मिश्री-मिला दूध पीओ । जाड़ेके तीन-चार महीने इनके सेवन करने से इतना बल-पुरुषार्थ बढ़ता है, जिसकी हद नहीं । कितने ही दिनोंका नामर्द मर्द हो जाता है । परीक्षित है ।

### १३४ मदनविनोद वटिका ।

जायफल, जावित्री, समन्दर-शोष, अकरकरा, खुरासानी अजवायन और शुद्ध अफीम—इन सब दवाओंको छै-छै माशे लेकर महीन पीस लो । फिर इस चूर्णको नारियल के एक खोपरेमें भर कर, उसीसे मुँह बन्द करदो । इसके बाद दूध औटाओ और उसमें इस दवाओंसे भरे खोपरेको रखकर पकाओ । जब दूध खूब गाढ़ा हो जावे, खोपरेको निकालकर, खाँड़के साथ खरल करो और जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो ।

रातके समय, एक या दो गोली दूधके साथ खानेसे, वीर्यस्तम्भन होता और कामदेव उत्तेजित होता है । अगर कोई इन गोलियोंको लगातार खाता रहे, तो उसे बुढ़ापा और रोग न सतावें । परीक्षित है ।

### १३५ महापौष्टिक योग

कस्तूरी	...	...	४ माशे
अम्बर	...	....	४ ”



२६०

## चिकित्सा-चन्द्रोदय ।

मकरध्वज	४	माशे
सोनेके वर्क	८	"
चाँदीके वर्क	१	तोले
मोती भस्म	१	"
वज्रभस्म	१	"
लोहभस्म	१	"
मूँगा भस्म	१	"
जायफल	१	"
दालचीनी	१	"
अकरकरा	१	"
केशर	१	"
भीमसेनी कपूर	१	"
कूट	१	"
तेजपात	१	"
नागकेशर	१	"
जावित्री	१	"
सोंठ	१	"
वंसलोचन	१	"
छोटो इलायची	५	"
गिलोयका सत्त	१	"
सफेद मूसली पिसी	१	"
शुद्ध भाँगका घी	२	"
देशी खाँड़		अढ़ाई पाव

बनानेकी तरकीब—( १ ) पहले खाँड़की चाशनी अवलेहके समान यानी चाटने लायक बना लो ।

( २ ) चाशनीमें मूसलीका कपड़-छन किया हुआ चूर्ण डालकर मस्ते या कलछीसे खूब घोटो । फिर उस चाशनीको नीचे उतार लो ।



(३) चाशनी नीचे उरारकर उसमें कस्तूरी वगैरः दवाओंका चूर्ण मिला दो और खूब घोटो । सबके बाद भाँगका घी मिला दो ।

ध्यान रखकर, सोनेके बर्त, चाँदीके बर्त, कस्तूरी, अम्बर और मकरध्वज—इन सबको पानोंके रसमें अलग-अलग खरल कर लेना चाहिये । खरल करके ही चाशनीमें इनको मिला लेना चाहिये—बिना खरल किये न मिलाना चाहिये ।

जब चाशनीमें सब चीजें मिला दो और वह शीतल हो जाय, उसे घीके चिकने वासन या अमृतबानमें रख दो ।

सेवन-विधि—इसमेंसे छै-छै माशे अवलेह, सवेरे-शाम, गायके ताज्जा दूधके साथ, सेवन करनेसे बल बढ़ता, कामोद्दीपन होता, वीर्यकी वृद्धि होती, धातु पुष्ट होती, खाँसी, श्वास, क्षय, प्रमेह और नपुन्सकता आदि रोग नाश होते हैं । शरीरमें अपूर्व लावण्य, कान्ति और फुरती पैदा होती है तथा जठराग्नि प्रज्वलित होती है । इसपर जो भी खाया-पिया जाता है, सहजमें पच जाता है । भूख खूब लगती है । अनेक बारका परीक्षित नुसखा है । पर यह अमीरोंके लायक है, क्योंकि इसमें खर्च बहुत पड़ता है । सुपरीक्षित है ।

## १३६ दूसरा महापौष्टिक पाक ।

नये बिनौलोंकी गिरी	...	...	५ तोले
बादामकी गिरी	...	...	५ "
उड़दकी धुली दाल	...	...	५ "
काले तिल	...	...	३ "
शतावर	...	...	१ "
सफेद मूसली	...	...	१ "
काली मूसली	...	...	१ "
असगन्ध	...	...	१ "
कौंच के बीजोंकी गिरी	...	...	१ "



तालमखाना	...	...	१ तोले
गोखरू दक्खनी	...	...	१ ”
बीजबन्द	...	...	१ ”
सालम मिश्री	...	...	१ ”
सकाकुल मिश्री	...	...	१ ”
बहमन सफेद	...	...	१ ”
बहमन सुर्ख	...	...	१ ”
कूट	...	...	१ ”
मुलहठी	...	...	१ ”
कीकर का गोंद	...	...	१ ”
दालचीनी	...	...	१ ”
जायफल	...	...	१ ”
अकरकरा	...	...	१ ”
लौंग	...	...	१ ”
छोटी इलायची	...	...	१ ”
केशर	...	...	६ माशे
मुनी हुई धुली भाँग	...	...	२ तोले

बनानेकी तरकीब—( १ ) पहले बिनौलोंकी गरी, बादामकी गिरी, उड़दकी दाल और तिलोंको सिलपर पीसकर, अलग-अलग पिट्टी बना लो ।

( २ ) फिर शतावरसे छोटी इलायची तककी दवाओंको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो ।

( ३ ) केशरको गुलाबजलमें घोट लो ।

( ४ ) भाँगको खूब धोकर सुखा लो । सूखने पर पीस लो और आगपर भून लो ।

( ५ ) चारों तरहकी पिट्टियोंको पाव-भर घीमें भून लो ।

( ६ ) फिर सब दवाओंसे दूना—एक सेर देशी बूरा लेकर चाशानी



बना लो । चाशनीमें पहले भुनी हुई पिट्टियोंको मिला दो और मस्तेसे घोटो । इसके बाद सब दवाओंका चूर्ण, भुनी भाँग और घुटी हुई केशर भी मिला दो । फिर चाशनी जमाकर बरफ़ी उतारनी हों, तो घीसे घुपड़ी थालीमें उसे फैला दो अथवा दो-दो तोलेके लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि—इस पाककी मात्रा २ तोलेकी है । एक लड्डू या २ तोले पाक खाकर, ऊपरसे धारोष्ण दूध या चीनी मिला हुआ औटा दूध पीओ । यह पाक अत्यन्त पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, स्तम्भक, बलकारक और कामोद्दीपक है । सुपरीक्षित है ।

## १३७ मदनकान्ता गुटिका ।

( ५० बरसकी परीक्षित )

रससिन्दूर	...	...	...	४ तोले
शुद्ध कपूर	...	...	...	२ ”
कूट	...	...	...	२ ”
जायफल	...	...	...	१ ”
लौंग	...	...	...	१ ”
छोटी पीपर	...	...	...	१ ”
अकरकरा	....	...	...	१ ”
जावित्री	...	...	...	१ ”
केशर	...	...	...	१ ”
अगर	...	...	...	१ ”
तज	...	...	...	१ ”
शुद्ध वत्सनाभ विष	...	...	...	१ ”
शुद्ध अफीम	...	...	...	१ ”
सफ़ेद मूसली	...	...	...	१ ”
कौंचके बीज	...	...	...	१ ”
मिलोयका सत्त	...	...	...	१ ”



सोनेके वर्क	...	...	...	१ तोले
चाँदीके वर्क	...	...	...	२ ”
शुद्ध शिलाजीत	...	...	...	२ ”
अम्बर	...	...	...	६ माशे
कस्तूरी	...	...	...	६ माशे

बनानेकी तरकीब—( १ ) पहले रससिन्दूरको दो दिन तक खरलमें घोटो ।

( २ ) फिर कूटने लायक दवाओंको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो ।

( ३ ) फिर तैयार चूर्णमें घुटा हुआ रससिन्दूर और सोने-चाँदीके वर्क मिलाकर, एक दिन-भर “धतूरेके रस”में खरल करो । फिर दूसरे दिन “अदरकके रस”में खरल करो । फिर तीसरे दिन “अम्बर और कस्तूरी” डालकर “पके हुए पानोंके रसके साथ” खरल करो । जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो और शीशीमें रख दो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक गोली “शहद”में मिलाकर सेवन करो । इस पर घी-दूध इच्छानुसार खाओ । लालमिर्च और खटाई आदि त्याग दो ।

लाभ—इस अपूर्व दवासे बलवीर्य बढ़ता, पुष्टि होती और शरीरमें अत्यन्त कान्ति होती है । यथोचित अनुपानके साथ देनेसे ज्वर, सर्दी, वातरोग, श्वास, खाँसी, क्षय, मूच्छा, खंज, धनुर्वात जीर्णज्वर, अर्द्धाङ्गवात और हिस्टीरिया आदि रोग नाश हो जाते हैं । यह दवा ५० सालकी परीक्षित है । वैद्य धीरजराम दलपतरामजी, मन्त्री, वैद्य सभा, सूरत, लिखते हैं—जो वैद्य इस नुसखे को ठीक विधिसे बनाकर रोगियोंको देंगे वे यश और धन पायेंगे ।

## १३८ वीर्यवर्द्धक मोदक ।

(क) गेहूँका सत्त	...	...	...	सवा सेर
भावा या खोआ	...	...	...	सवा सेर



## नपुन्सकता और धातु-रोग-वर्णन ।

२६५

घी	...	...	...	सवा सेर
मिश्री	...	...	...	अढ़ाई सेर
❀	❀	❀	❀	❀
(ख) बादामकी गरी	...	...	...	१० तोले
चिलगोजेकी गिरी	...	...	...	५ "
पिस्ते	....	...	...	५ "
कहू की मींगी	...	...	...	२ "
नये बिनौलोंकी मींगी	...	...	...	२ "
❀	❀	❀	❀	❀
(ग) दालचीनी	...	...	...	२ "
सकाकुल मिश्री	...	...	...	२ "
सालम मिश्री	...	...	...	२ "
सफेद मूसली	...	...	...	२ "
सेमलकी मूसली	...	...	...	२ "
शतावर	...	...	...	२ "
कौंचके बीजोंकी गरी	...	...	...	२ "
सिलमिलीके बीज	...	...	...	२ "
बहमन सफेद	...	...	...	२ "
बहमन सुर्ख	....	...	...	२ "
सोंठ	...	...	...	५ "
अगर	...	...	...	१ "
तगर	...	...	...	१ "
कुलींजन	...	...	...	१ "
मीठा कूट	...	...	...	१ "
काली मिर्च	...	...	...	१ "
कपूरकचरी	...	...	...	१ "



छोटी इलायचीके बीज	...	...	६ माशे
बड़ी इलायचीके बीज	...	...	६ माशे

बनानेकी तरकीब—(१) (ख) की बादामकी गिरी वगैरः पौचों चीजोंको सिलपर अलग-अलग पीसकर पिट्टी बना लो ।

(२) (ग) की दालचीनी वगैरः दवाओंको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो ।

(३) (क) के गेहूँके सत्त और मावे को घीमें भून लो ।

(४) मिश्रीकी चाशनी बनाकर, उसमें भुना हुआ गेहूँका सत्त, मावा, पिट्टी और दवाओंके चूर्णको मिलाकर, तीन-तीन तोलेके लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक लड्डू, गायके दूधके साथ, खानेसे शरीर पुष्ट होता, बल-वीर्य बढ़ता और दिल-दिमागमें ताकत आती है । यह एक अत्यन्त वृष्य—बाजीकरण और स्तम्भनकारक है । कई बारका परीक्षित है ।

## १३६ पुष्टिकर और स्तम्भनकारक योग ।

सफेद मूसलीका चूर्ण	...	...	१ तोले
बंसलोचन पिसा हुआ	...	...	६ माशे
छोटी इलायचीका चूर्ण	...	...	६ "
गिलोयका सत्त	...	...	६ "
दालचीनीका चूर्ण	...	...	६ "
अकरकरेका चूर्ण	...	...	६ "
जायफलका चूर्ण	...	...	६ "
बंगभस्म	...	...	१ "
मूँगा भस्म	...	...	१ "
लोह भस्म	...	...	१ "



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

२६७

सोनेके वर्क	...	...	१ माशे
चाँदीके वर्क	....	....	१ माशे
शहद	....	....	५ तोले
भाँगका घी	...	...	१ तोले
मिश्री	...	...	५ तोले

बनानेकी तरकीब—( १ ) पहले मिश्रीकी चाशानी बनाकर नीचे उतार लो ।

( २ ) फिर इस चाशानीमें मूसली वगैरःका चूर्ण, बंग भस्म आदि, भाँगका घी और शहद मिलाकर मस्तेसे खूब घोटो और अमृतबानमें रख दो ।

सेवन-विधि—यह उत्तम अवलेह अत्यन्त पुष्टिकारक, काम-वर्द्धक, वीर्यस्तम्भक, प्रमेह और नपुंसकता-नाशक है । स्त्री और पुरुष दोनोंको हितकारी है । इसमेंसे तीन-तीन माशे दूधके साथ खाना चाहिये । परीक्षित है ।

## १४० पुष्टिकर चूर्ण ।

सालिम मिश्री	...	...	१ तोला
सकाकुल मिश्री	...	...	१ "
तोदरी सफेद	...	....	१ "
कौँचके बीजोंकी गिरी	...	....	१ "
इमलीके बीजोंकी गिरी	...	...	१ "
तालमखाना	...	...	१ "
सरवालीके बीज	...	....	१ "
सफेद मूसली	...	...	१ "
काली मूसली	...	...	१ "
सेमलकी मसली	...	...	१ "
चहमन सफेद	...	...	१ "



२६८

## चिकित्सा-चन्द्रोदय

बह्मन लाल	....	...	१ तोले
शतावर	...	....	१ ”
कीकरका गोंद	...	...	१ ”
कीकरकी कच्ची या सूखी फली		...	१ ”
कीकरका सत्व	....	...	१ ”
ढाककी नर्म कली	....	...	१ ”

इन सबको पीस-छानकर चूर्ण बना लो। फिर इस चूर्णमें १८ तोले “देशी मिश्री” पीसकर मिला दो। बस, चूर्ण तैयार है।

इसकी मात्रा १ तोलेकी है। सबेरे-शाम एक-एक मात्रा फाँककर, ऊपरसे पावभर धारोष्ण दूध पी लो। अगर ऐसा दूध मुआफ़िक न आवे या पसन्द न हो, तो आध सेर गायके दूधको इतना आँटाओ कि तीन उफान आ जावें। फिर, उसमें १ छटाँक सफेद देशी चीनी मिला दो। दवा फाँककर, ऊपरसे यही दूध पी लो।

इस पुष्टिकारक चूर्णसे नये-पुराने प्रमेह, धातु-क्षीणता, स्वप्नदोष, शीघ्र वीर्यपतन, सिरका दर्द, कमरका दर्द, दिल और दिमागकी कमजोरी, बातोंका याद न रहना वगैरः सारे ही रोग आराम होजाते हैं। पर इसे कम-से-कम ४० दिन तक लगातार पथ्य-सहित सेवन करना आवश्यक है। यह चूर्ण श्रीयुत पण्डित शम्भुदत्तजी कौशिक मिश्रका अनेकों बारका परीक्षित है। वास्तवमें, यह ऐसा ही है। हमने स्वयं चन्द रोगियोंपर परीक्षा कर ली है; अतः सुपरीक्षित है।

सेवन करनेवालेको इस दवाके खाते समय गुड़, तेल, खटाई और खी प्रभृतिसे परहेज रखना परमावश्यक है।

## १४१ पुष्टिकारक गोलियाँ।

बङ्गभस्म	...	....	१ तोले
प्रवाल या मूँगाभस्म	....	....	१ ”
चाँदीके कर्क	....	....	१ ”



भीमसेनी कपूर	...	...	३ माशे
गिलोयका सत्त	...	...	१ तोले
शुद्ध शिलाजीत	...	...	१ ,,

इन सबको एकत्र खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो ।

इनमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम धारोष्ण दूधके साथ खानेसे प्रमेह नाश होते, वीर्य बढ़ता तथा बल और शक्तिकी वृद्धि होती है ।  
परीक्षित है ।

नोट—शुद्ध शिलाजीतको ज़रासे जलके साथ घोटकर ऐसा कर लो कि, उसमें गुठले न रहें । फिर उसमें बाक्रीकी चीज़ें डालकर १२ घण्टे तक घोटो, जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जावे, गोलियाँ बनालो और छायामें सुखाकर शीशीमें भर दो । प्रमेह-रोगियों और वीर्य दोषवालोंको यह गोलियाँ अमृत हैं ।

## १४२ धातुविकार नाशक योग ।

अलसी एक पाव, कच्ची हल्दी एक पाव, बिनौलोंकी मींगी आध पाव, छोटे सेमलकी मूसली डेढ़ पाव और छुहारे एक पाव—इनको धूपमें सुखाकर पीस-छान लो ।

फिर कढ़ाहीमें तीन सेर दूध और यह चूर्ण डालकर पकाओ । जब खोआ हो जाय, उतार लो ।

फिर इस खोयेको आध सेर गायके घीमें भूनो । इसके बाद आध सेर चीनीकी चाशनी बनाकर, उसमें भुना हुआ खोआ मिला दो और हलवा-सा बनाकर अमृतबानमें रख दो ।

सवेरे-शाम एक-एक या दो-दो तोले हलवा खाकर, ऊपरसे आध सेर या कम-जियादा धारोष्ण दूध पी लो ।

जिसकी अग्नि मन्द हो, वह एक तोलेसे भी कम हलवा खावे । २१ दिन पथ्यके साथ, इस हलवेके खानेसे धातु-सम्बन्धी सब विकार नाश हो जाते हैं ।

रोगी गुड़, मिठाई, मिर्च, दही, तेल, साग, रुखा अन्न, भारी अन्न,



मद्य, मांस, प्याज, लहसन और गरम मसाले न खावे तथा क्रोध, हिंसा और द्वेष त्याग दे ।

घी, दूध, चिकने बलकारी फलमूल और हलके अन्न पध्य हैं ।  
सुपरीक्षित हैं ।

### १४३ सर्वरोगान्तक महौषधि ।

	सेर	छ०	तोले
शुद्ध भिलावे	१	८	८
गिलोय	१	४	०
बाराहीकन्द	१	०	०
चीतेकी जड़की छाल	०	८	०
काले तिल	१	१२	४
शतावर	०	६	२
विदारीकन्द	०	६	२
बड़ा गोखरू	०	६	२
सोंठ	०	२	१
गोल मिर्च	०	२	१
पीपर	०	३	१
मिश्री	३	८	०
शहद	१	१२	०
घी	०	१४	०

बनानेकी विधि—पहले भिलावे शोधकर रखो । इसके बाद भिलावोंसे लेकर पीपर तककी सब दवाओंको कूट-पीस-छानकर तथा घी, शहद और पिसी हुई मिश्री सबको मिलाकर, एक साफ चिकने बासनमें रख दो ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा तोले भरसे आधी छटाँक तककी है । इसे चाटकर, ऊपरसे दूध पीनेसे, ३ मासमें, महा नामर्द भी मर्द हो



जाता है। यह योग सचमुच ही बूढ़ों, जवान और जवानको महा बलवान और वीर्यवान बनानेवाला है। इस महौषधिके सेवनसे कोढ़, भगन्दर, सोजाक, सब तरहकी खाँसी, प्रमेह, छहों बवासीर, पीलिया, सन्निपात एवं वातके २० रोग, पित्तके ४० रोग और कफके २० रोग आराम हो जाते हैं। इसको “नरसिंह चूर्ण” भी कहते हैं। लिखा है—इसके सेवनसे संसारके सभी रोग जाते हैं। यह नुसखा भी हमने कई रोगियोंको दिया। इसके सेवन करनेसे कितने ही संसारके सुखसे निराश हुए सुखी हो गये। जिसे दिया उसे ही चमत्कार दीखा। दोचार रोगियोंको भी इसने कुछ लाभ दिखाया। इनके नोचे की मांस, शतपुटी, रोगोंपर जाँचनेका मौक़ा। हीकभी न आया। अन्य सारे रोगोंपर परीक्षा कर देखें—परीक्षासे ही मालूम होगा कि, लिखें—इसे ठीक सर्व रोगान्तक लिखा है या मुबालगा है। र तेल

नोट—पेड़से पक कर गिरे हुए भिलावोंको एक सेर लेकर, ईंटोंके कुकुएँमें खूब रगड़ो और नीचेकी ढिपुनी काट-काटकर फेंक दो। इसके बाद पानीमें मलकर धो डालो और सुखा लो। बस, भिलावे शुद्ध हो जायँगे।

### और शोधन-विधि

भिलावोंको पानीमें डालकर चार पहर तक पकाओ; फिर निकालकर टुकड़े-टुकड़े कर लो और उन टुकड़ोंको दिन भर दूधमें पकाओ। इसके बाद, उन्हें निकालकर, एक तोले सोंठ और चार तोले अजवायनके साथ खरल करो। ये भिलावे सब कामोंके योग्य हैं। इनके सेवनसे कोढ़, खाज, खुजली और श्वास आदि रोग नष्ट होते हैं।

भिलावे पकानेमें बड़ी होशियारीकी जरूरत है। इनका धुआँ शरीरमें लगना भला नहीं। भिलावे पकानेवालोंको अपने शरीरमें “काले तिलोंका तेल” पोतकर भिलावे पकाने चाहिएँ।

### १४४ कामेश्वर मोदक ।

कूट, बिलाईकन्द, सफ़ेद मूसली, शतावर, सूखा कसेरू,



अजवायन, ताड़कै, पेड़का अंकुर, काले तिल, सेंधानोन, भारंगी, काकड़ासिंगी, पीपर, कालीमिर्च, सफेद जीरा, तज, तेजपात, नागकेशर, गदापूर्णाकी जड़, मुनक्कड़े, गजपीपर, कपूरकचरी और त्रिफला—इन सब को अलग-अलग कूट-पीसकर छानलो और सबको एक-एक तोले चूर्ण तोलकर एकत्र करलो ।

गिलोयका सत्त, मोचरस, मुलहठी, गुलसकरी, छोटी इलायची, सेमरकी मूसली और कौंचके बीज—इन सबको भी अलग-अलग कूट-पीस-छानकर दो-दो तोले ले लो ।

मेथी १॥ तोला, धनिया १॥ तोला, सों १ माशे, काला जीरा ८ माशे, चीतेकी छाल ८ माशे, कायफल १० ठेंके, गन्धक २ तोले, धुली भाँग ६ तोले, अभ्रक भस्म निश्चन्द्र १ माशे, शुद्ध तेल और मिश्री आध सेर—इन सबको भी अलग-अलग शतपुटी ४ से और छानकर तोल लो ।

इन सब दवाओंको तथा पावभर “शहद” और आधसेर “घी” को एकमें मिलाकर, किसी चिकने या कौंचके बासनमें रख दो ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा १ तोलेकी है । १ मात्रा खाकर, मिश्री-मिला दूध पीनेसे बलवीर्य बढ़ता, प्रसङ्ग-शक्ति बहुत तेज होती, धातु गाढ़ी होती, शरीर पुष्ट होता, रुकावट होती, क्षत और क्षय नाश होते और स्त्री फौरन स्वलित होती है । इसकी जितनी तारीफ की जाय, थोड़ी है । मुपरीक्षित है ।

### १४५ नपुंसकत्वारि तैल ।

सफेद चिरमिटी, खिरनीके बीज और लौंग—इन तीनोंको आध-आध पाव लेकर, खूब कूट-पीस लो और सात कपरौटी को हुई एक पक्की विलायती शीशीमें भर दो । बोतलके मुँहमें बहुतसी सीकें या पतले तारके टुकड़े इस तरह भरदो, कि उनमें होकर तेल टपक सके, पर उसमें होकर पिसा हुआ मसाला न गिरे । इसके बाद एक



नाँदमें ऐसा छेद करो, जिसमें होकर बोतलकी नाली चली जाय । इस बोतलके मुँहको दूसरी बोतल नीचे खड़ी रखकर, उससे मिला दो और दोनोंकी सन्ध, कपड़-मिट्टी या रुई और मुलतानी-मिट्टीको पानीमें सानकर उसीसे बन्द कर दो । बोतल नाँदमें औंधी रहेगी और नाँद और ईंटों पर रखी रहेगी; तभी तो नीचेकी सीधी रक्खी हुई बोतलसे नाँदकी औंधी बोतल का मुँह मिलेगा । नाँदमें रखी बोतलके चारों ओर और कुछ ऊपर कढ़ाहीमें खूब गरम करके बालू भर दो, ताकि बोतल बालूमें डूबी रहे । बोतलपर चार-चार अंगुल बालू रहे । ऊपरसे कण्डे रखकर हल्की आग जला दो । इस तरह ऊपरकी औंधी शीशीसे तेल टपक-टपक कर नीचेकी शीशीमें गिरेगा । जब तेल टपकना बन्द हो जाय, नीचेकी बोतलसे, सन्ध खोलकर, अलग हटा लो । इस तेलको छान कर एक शीशीमें रखलो ।

इसमेंसे एक सीक-भर तेल पानपर लगाकर खाओ और ऊपरसे आधा पाव “घी” खाओ । कुछ दिन इस योगके सेवन करनेसे नामर्द मर्द हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—इसे एक सीकसे ज़ियादा न खाना चाहिये । “घी” इसकी शान्ति करेगा । यही नुसखा हम पीछे भी, संक्षिप्त रूपमें लिख आये हैं ।

इस तेलको वे आसानीसे निकाल सकते हैं, जो बादाम और लौंग वगैरहका तेल निकालना जानते हैं । नाँदकी बालूपर बहुत तेज़ आग लगा देनेसे तेल बोतलमें ही जल जाता है और एक कतरा भी नीचे नहीं गिरता; अतः आग ऐसी मोटी लगानी चाहिए, जिससे ममक लगकर तेल टपक पड़े और मसाला न जले ।

**और सहज तरकीब ।**

एक चीनीके प्यालेपर ज़रा ढीला कपड़ा बिछा दो । प्यालेके किनारों पर, कपड़ेके ऊपर, अश्रकके टुकड़े इस तरह बिछा दो, कि वे किनारोंपर ही जमे रहें और बीच खाली रहे । बीचमें कपड़ेपर, जिस चीज़का तेल निकालना है, उसे फैला दो । फिर उस प्यालेपर एक तवा रख दो और तवे पर थोड़े कोयले जलते हुए रख दो और उन्हें पंखा करते रहो, ताकि कोयले बुझें नहीं । ऐसा करनेसे, कपड़ेमें होकर, प्यालेमें तेल टपक जायगा । इस बातका



ध्यान रहे, कि कपड़े पर रखा हुआ मसाला तवेको न छुए, तवेको छूनसे मसाला जल जायगा और तेल न निकलेगा । इसलिये प्यालेपर जो कपड़ा बिछाओ, वह कुछ ढीला या लटकता हुआ बिछाओ, तभी मसाला आग-रखे तवेसे अलग रहेगा । अभ्रक इसलिये रखी गई है कि, तवेकी तपनसे कपड़ा न जल जावे और मसाला बिना तेल टपके प्यालेमें न गिर पड़े । इस तरह अनाड़ी भी तेल निकाल सकता है, पर तेल थोड़ा हाथ आता है ।

### १४६ बृहत् बानरी मौदक ।

कौंचके बीजोंकी गिरी	...	...	३ तोले	१॥ माशे
जटामांसी	...	...	३ "	१॥ "
तेजपात	...	...	३ "	१॥ "
नागकेशर	...	...	३ "	१॥ "
जायफल	...	...	३ "	१॥ "
जावित्री	...	...	३ "	१॥ "
दालचीनी	...	...	३ "	१॥ "
केशर	...	...	३ "	१॥ "
चव्य	...	...	३ "	१॥ "
सोंठ	...	...	३ "	१॥ "
कमलगट्टेकी गिरी	...	...	३ "	१॥ "
चिरौंजी	...	...	३ "	१॥ "
पिस्ते	...	...	० ०	६ "
बादाम	...	...	० ०	६ "
छुहारे	...	...	१ "	३ "
मिश्री	...	...		अढ़ाई सेर
घी	...	...		एक पाव
दूध	...	...		पाँच सेर

बनानेकी विधि—पहले ऊपरकी कमलगट्टे तककी—केशरको छोड़ कर, १० दवाओंको महीन कूट-पीसकर छान लो । पीछे केशरको



पीसकर रख लो । इसी तरह वादाम, पिस्ते, छुहारे और चिरौंजीको पीस लो । दूधका खोआ बना लो । खोयेको घीमें भूँज लो, जब सुख हो जाय, उतार लो । कढ़ाहीमें मिश्री और पानी डालकर गाढ़ी चाशनी बना लो । चाशनीमें खोआ मिलाकर एक-दिल कर लो, फिर उसे उतार कर, उसमें सब दवाओंका पिसा हुआ चूर्ण मिला दो और खूब एक-दिल कर लो । अन्तमें छटाँक-छटाँक भरके लड्डू बना लो ।

अगर मोदक बहुत ही ताकतवर बनाने हों, तो चाशनीमें, चूर्णके साथ ही, चार माशे निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म, ४ माशे बंग भस्म और ४ माशे फौलाद-भस्म भी मिला दो । इस दशामें एक-एक तोलेके लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि—इन लड्डूओंके खानेसे बेहद बल-वीर्य बढ़ता और शरीर पुष्ट होता है । नामर्द भी दस स्त्रियोंके भोगने-योग्य हो जाता है । एक-एक या दो-दो लड्डू, सबरे-शाम खाकर, ऊपरसे गायका मिश्री-मिला दूध पीना चाहिये ।

नोट—ये मोदक हमारे परीक्षित हैं । इतना पाक चार बार बनाने और खानेसे ठीक ऊपर लिखा फल मिलता है । एक बारका पाक चुके, फिर इसी तरह बना लो । इस तरह चार बार बनाओ और खाओ । मगर इतना गुण तभी मिलेगा, जब कि इसमें अभ्रक भस्म, बङ्ग भस्म और फौलाद-भस्म भी डाली जायेगी । अभ्रक भस्म १०० आँचकी हो, जिसमें ज़रा भी चमक न हो और फौलाद-भस्म ऐसी हो, जो पानी पर तैरने लगे । जिनको स्त्री-भोगका सुख देखना हो, वे इन मोदकोंको बनाकर खावें । ये मोदक अनेक ग्रन्थोंमें लिखे हैं, पर हमने जिस तरह आजमाये और प्रत्यक्ष फल पाया, उसी तरह नुसखा लिखा है ।

### १४७ आँवलोंका अवलेह ।

बढ़िया सूखे आमले एक सेर लाकर, पीस-कूटकर छान लो । फिर ताजा हरे आमले एक सेर लाकर (गुठली निकालकर) सिल-पर पीसो और कपड़ेमें रखकर निचोड़ लो । उस रसमें आमलोंके पिसे-छने चूर्णको डुबो दो और सूखने दो । जब सूख जाय, उसे एक



चिकने साफ बर्तनमें भर दो । ऊपरसे “आध सेर घी, पाव भर शहद और आध सेर मिश्री” पीसकर मिला दो ।

सेवन-विधि—इस अवलेहकी मात्रा दो तोलेसे तीन या चार तोले तक है । इसमेंसे एक खुराक, रोज सवेरे, खानेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता है; धातु-विकार नाश होकर शरीर पुष्ट होता है । इस अवलेहकी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है । परीक्षित है ।

नोट—इस अवलेहको भी इतना-ही-इतना बना-बनाकर, तीन-चार बार खाना चाहिये । एक बार खानेसे ही जब रोगीको चमत्कार दीख जायगा, तब वह आप ही खायगा । अगर आमलोंका मौसम न हो, तो आमलोंका काढ़ा बनाकर, उसी काढ़ेमें आमलोंका चूर्ण भिगो और मलकर सुखा लेना चाहिये ।

### १४८ नपुंसकरञ्जन अवलेह ।

असगन्ध	...	...	५ तोले
सफेद मूसली	...	...	५ ”
स्याह मूसली	...	...	५ ”
कौंचके बीज	...	...	५ ”
शतावर	...	...	५ ”
तालमखाना	...	...	५ ”
बीजबन्द	...	...	५ ”
जायफल	...	...	५ ”
जावित्री	...	...	५ ”
ईसबगोल	...	...	५ ”
नागकेशर	...	...	५ ”
सोंठ	...	...	५ ”
गोलमिर्च	...	...	५ ”
पीपर	...	...	५ ”
लौंग	...	...	५ ”



## नपुन्सकता और धातु-रोग-वर्णन

२७७

कमलगट्टेकी गिरी	...	...	५ तोले
छुहारे	...	...	५ ”
बादाम	...	...	५ ”
मुनक्के	...	...	५ ”
चिरौंजी	...	...	५ ”
मिश्री	...	...	२॥ सेर
घी	...	...	आध सेर

बनानेकी विधि—मिश्री और घीको छोड़, सब दवाओंको कूट-पीसकर कपड़-छन करलो और घीमें भूँज लो । पीछे मिश्रीको ढीली चाशनी, जो न जमे, बनाकर, उतार लो और सब दवा मिला दो । पीछे थोड़ेसे चाँदी-सोनेके वरक मिलाकर रख दो ।

सेवन-विधि—इसमेंसे एक या दो तोले लेह चाटकर, ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीनेसे नपुन्सकता जाती, वीर्य गाढ़ा और पुष्ट होता तथा अनेक स्त्रियोंसे भोग करनेकी सामर्थ्य होती—इनके सिवा पेशाबकी जलन, पथरी और वायु-रोग आदि अनेक रोग भी नाश होते हैं । परीक्षित है ।

## १४६ योगराज ।

त्रिफला, मुलहठी, महुएके फूल, कमलगट्टेकी गिरी, जायफल और दालचीनी—इन सबको एक-एक छटाँक लेकर, पीस-कूटकर छान लो और तीन छटाँक “मिश्री” पीसकर मिला दो और रख दो । इसमेंसे अपने बलाबल-अनुसार, तोले भर चूर्ण, १ तोले घी और ६ माशे शहद मिलाकर रोज़ खाओ । इससे रोग तो प्रायः सभी नाश होते हैं; पर बल बढ़ाने और शरीर पुष्ट करनेमें तो इसके समान और कोई नुसखा ही नहीं है । अनेक रोगियोंपर आजमाया है, जिसे दिया वही खुश हो गया ।



चित्र ५

## १५० पञ्चामृत चूर्ण ।

कौंचके बीज, असगन्ध, गोरखमुण्डी, विदारीकन्द और कमल-गट्टेकी गिरी—इनको आध-आध पाव लेकर पीस-छान लो ।

फिर; इस चूर्णमें ३ भावना “विदारीकन्दके स्वरस” की दो; इसके बाद तीन भावना “भौंगके रस” की, ३ भावना “जायफलके रस” की, ३ भावना “केसरके रस” की और ३ भावना “मुलहठीके रस” की दो । सूख जानेपर, ५० तोले “मिश्री” पीसकर मिला दो ।

सेवन-विधि—इसमेंसे तोले भर चूर्ण, एक तोले “शहद” में मिलाकर, सबेरे ही चाटो और गायका धारोष्ण दूध पीओ । शामको एक मात्रा खाकर, ऊपरसे गरम दूध जरा सी मिश्री मिलाकर पीओ । इसके सेवनसे महादुर्बल भी महाबली और वीर्यवान् हो जाता है । पुष्टि करनेवाले चूर्णोंमें यह राजा है । हमने इससे अनेक रोगी आराम किये हैं । परीक्षित है ।

## १५१ बलवीर्यवर्द्धक योगराज ।

असगन्ध	...	१ तोले
विदारीकन्द	...	१ ”
गोखरू	...	१ ”
इलायची	...	१ ”
जेठी मधु [मुलहठी]	...	१ ”
पीपल	...	१ ”
सोठ	...	१ ”
बड़-भस्म	...	१ ”
चौदीकी भस्म	...	१ ”
अन्नक भस्म	...	१ ”
सोना-भस्म	...	१ ”
लोहा-भस्म	...	१ ”
ताम्बा-भस्म	...	१ ”



बनानेकी विधि—असगन्धसे सोंठ तककी दवाओंको कूट-पीसकर छान लो। इसके बाद इसमें वज्रभस्म प्रभृति छहों भस्में मिला दो।

इसके बाद, बिदारीकन्दके स्वरस, मेंहदीके स्वरस, धतूरेके स्वरस, भाँगके स्वरस, केशरके रस, और अदरकके स्वरसमें इस चूर्णको डुबो-डुबो कर सुखा दो; यानी एक दिन बिदारीकन्दके स्वरसमें डुबो कर सुखा दो, दूसरे दिन मेंहदीके स्वरसमें डुबो कर सुखा दो। इस तरह, छै दिन तक, छहों तरहके रसोंमें भिगो-भिगो कर और मल-मल कर सुखा दो। जब सूख जाय तब चूर्णके वजन बराबर “मिश्री” पीसकर मिला दो और रख दो।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा २ रत्तीसे ३ रत्ती तक है। एक मात्रा ६ माशे “शहद”में मिलाकर चाटने और ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता है। इसके सेवन करनेवाला एक रातमें दस स्त्रियोंको प्रसन्न कर सकता है। इसके सेवन करनेसे प्रमेह, पाण्डु, श्वास और खाँसी आदि आराम होकर, शरीर भीमके समान बली हो जाता है। परोक्षित है।

## १५२ पाकराज ।

गोखरू	(क)	...	...	...	४ तोले
खिरेंटी		...	...	...	४ ”
कौंचके बीज छिले हुए		...	...	...	४ ”
गङ्गेरन		...	...	...	४ ”
शतावर		...	...	...	४ ”
तालमखाना		...	...	...	४ ”
बिदारीकन्द		...	...	...	४ ”
हरड़		...	...	...	१ ”
बहेड़ा		...	...	...	१ ”
आमला		...	...	...	१ ”



सोंठ	...	...	१ तोले
गोल मिर्च	...	...	१ "
पीपर	...	...	१ "
दालचीनी	...	...	१ "
छोटी इलायची	...	...	१ "
तेजपात	...	...	१ "
जमालगोटेकी जड़	...	...	१ "
सैधानोन	...	...	१ "
धनिया	...	...	१ "
कचूर	...	...	१ "
खस	...	...	१ "
कङ्कल	...	...	१ "
नागरमोथा	...	...	१ "
वंसलोचन	...	...	१ "
मुनक्का	...	...	१ "
जायफल	...	...	१ "
जटामौसी	...	...	१ "
नागकेशर	...	...	१ "
इन्द्रजौ	...	...	१ "
पीपरामूल	...	...	१ "
साल	...	...	१ "
जावित्री	...	...	१ "
अजवायन	...	...	१ "
कायफल	...	...	१ "
मेथी	...	...	१ "
मुलहठी	...	...	१ "
देवदारु	...	...	१ "



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

२८१

सौंफ	...	...	१ तोले
छुहारे	...	...	१ "
सफ़ेद चन्दन	....	....	१ "
तगर	...	....	१ "
जवाखार	...	....	१ "
केशर (ख)	....	....	१ "
कस्तूरी	...	...	१ "
शुद्ध पारा	...	...	१ "
शुद्ध गंधक	...	....	१ "
शुद्ध गुग्गुल	...	...	१ "
शुद्ध शिलाजीत	...	...	१ "
धुली भाँग (ग)	...	...	५६ "
अभ्रक गस्म (घ)	...	...	२ "
बंगभस्म	...	...	२ "
ताम्बा भस्म	...	...	२ "
लोहभस्म	...	...	२ "
शीशा भस्म	...	....	२ "
मोती भस्म	...	...	२ "
मूँ गा-भस्म	...	....	२ "
शतावरका रस (ङ)	...	...	५६ "
भुईं आमलोंका रस	...	...	५६ "
खोआ } (च)	...	....	दो सेर
घी }	...	....	आधसेर
घी (छ)	...	....	१ सेर
मिश्री	...	...	तीन सेर

बनानेकी विधि—पहले गोखरूसे लेकर जवाखार तककी, (क) नम्बरमें लिखी, दवाओंको कूट-पीस कर कपड़-छन कर लो। फिर (ख)में



लिखी केशरसे शिलाजीत तकको दवाओंको और (ग) में लिखी भाँगको भी इसी चूर्णमें पीसकर मिला दो । इसके बाद (ङ) में लिखे शतावर और भुईआमलेके रसमें, इस चूर्णको भिगो दो और धूपमें सुखा लो ।

(च) में लिखे खोयेको आधसेर घीमें भूँज लो; जब सुखीं आजाय और सुगन्ध आने लगे, उतार कर रख दो ।

दवाओंके सब चूर्णको (छ) में लिखे एक सेर घीमें भूँज लो । मंदा आगसे भूँजना; जलने न पावे ।

(ज) में लिखी मिश्रीमें पानी मिलाकर, आगपर चढ़ा दो और गाढ़ी चाशनी बना लो । उसमें खोआ और घीमें भुँजी हुई सारी दवायें तथा (घ) में लिखी अन्नक भस्मादि सब भस्मोंको डालकर मिला दो और उतार लो । शीतल होने पर, एक-एक तोलेके लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम एक-एक लड्डू खाकर, मिश्री-मिला दूध पीनेसे बल-वीर्यकी खूब वृद्धि होती है । इसके समान नामर्दको मर्द और बूढ़ोंको जवान करनेवाला नुसखा और नहीं है । यह पाक सब पाकोंमें श्रेष्ठ है ।

रोग-नाश—इस पाकके सेवन करनेसे ८० प्रकारकी वातव्याधि, २० प्रकारके प्रमेह, विषमज्वर, कमरका दर्द, मन्दाग्नि, खून-विकार, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और बौझपन आदि अनेक रोग नाश होते हैं । इसके सेवन करनेसे वीर्यमें खूब रुकावट पैदा हो जाती है; अतः इसके सेवन करनेवालेकी स्त्रियाँ दासी हो जाती हैं । अगर बौझ स्त्री इसे खाती है, तो सुन्दर पुत्र जनती है । अगर स्त्री-पुरुष दोनों इसे कुछ दिन खाकर प्रसङ्ग करते हैं, तो सिंहके समान बलवान पुत्र होता है ।

❁ केशर और कस्तूरीकी अलग महीन पीस लो । पारे और गन्धकको खरलमें घोटकर ऐसी कजली करलो, जिसमें चमक न रहे । पारे और गन्धकको मिलाकर ५६ घण्टे तक घोंटे बिना किसी भी दवामें न डालना चाहिये ।



यह पाक अमीरोंके लायक है । इसे सेवन करते समय तेल, लाल मिर्च, गुड़, खटाई, रंज-फिक्र एवं अन्य अपथ्य पदार्थोंसे परहेज रखना चाहिये । इसके सेवन करते समय, यदि गरीबोंको खैरात बाँटी जाय, तो उत्तम हो । हमने यह पाक जयपुरके ४१५ जौहरियोंको खिलाया । चार मास सेवन करनेसे अपूर्व आनन्द आया । परीक्षित है ।

### १५३ वीर्य स्तम्भनकारक बटी ।

अकरकरा, जायफल, सोंठ, केशर, लौंग, पीपल, उत्तम कस्तूरी, कपूर और अभ्रक भस्म—इन सबको दो-दो माशे लेकर, पीस-कूटकर छान लो । पीछे इनमें शोधी हुई अफीम १८ माशे मिला दो और आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो । इनमेंसे एक या दो गोली खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे अवश्य घण्टे-आधे घण्टे तक रुकावट होती है । परीक्षित है ।

### १५४ महाकन्दर्प चूर्ण ।

बङ्ग-भस्म	....	....	१ माशे १४ रत्ती
लोह-भस्म	....	....	१ " ४ "
अभ्रक-भस्म	....	....	१ " ४ "
रससिन्दूर	....	....	१ " ४ "
तामेश्वर	....	....	१ " ४ "
कस्तूरी	....	....	१ " ४ "
तज	....	....	१ " ४ "
तेजपात	....	....	१ " ४ "
छोटी इलायची	....	....	१ " ४ "
नागकेशर	....	....	१ " ४ "
कपूर	....	....	२ " ६ "



२८४

चिकित्सा-चन्द्रोदय ।

जावित्री	...	...	२ माशे ६ रत्ती
जायफल	...	...	२ " ६ "
लौंग	...	...	२ " ६ "
सफेद चन्दन	...	...	२ " ६ "

बनानेकी तरकीब—भस्मोंको छोड़कर, शेष दवाओंको अलग-अलग कूट-छान कर, ऊपर लिखे माफिक तोल लो और बङ्गभस्मादि भस्मों भी मिला दो । इस चूर्णकी मात्रा ३ से ४ माशे तक है । इसको खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गायका दूध पीनेसे नपुंसकता जाती, रुकावट बढ़ती, शरीर बलवान् होता और स्त्री-प्रसंगकी इच्छा बढ़ जाती है । इसके खाने वालेकी भूख बढ़ती है और वह अनेक स्त्रियोंको प्रसन्न कर सकता है । कम-से-कम ४० दिन इस चूर्णको खाना चाहिये ।

### १५५ मदनमञ्जरी बटी ।

अभ्रक-भस्म	...	...	२ तोले
बङ्ग-भस्म	...	...	१ "
पारेकी भस्म या रससिन्दूर	...	...	६ माशे
धुली सूखी भाँग	...	...	३॥ तोले
दालचीनी	...	...	२ "
तेजपात	...	...	२ "
छोटी इलायची	...	...	२ "
नागकेशर	...	...	२ "
जायफल	...	...	२ "
जावित्री	...	...	२ "
कालीभिर्च	...	...	२ "
पीपल	...	...	२ "
सोंठ	...	...	२ "
लौंग	...	...	२ "



**बनानेकी विधि**—भाँगसे लौंग तककी ग्यारह दवाओंको कूट-पीसकर छान लो । फिर इस चूर्णमें, तीनों भरम भी मिलाकर रख दो । इसके बाद, इसमें ५४ तोले “मिश्री”, सत्ताईस तोले “घी” और साढ़े तेरह तोले “शहद” डालकर मिलाओ और छै-छै माशे या आठ-आठ माशेकी गोली बनाकर साफ वर्तनमें रख दो ,

**सेवन-विधि**—सवेरे-शाम एक-एक या कम-ज्यादा गोली अपने बलाबल-अनुसार खाकर, मिश्री-मिला दूध पीओ । इन गोलियोंके सेवन करनेसे कामदेवके समान आनन्द तत्काल प्राप्त होता है । यह बाजीकरण योग सब रोगोंको नाश करनेवाला और ज्वर्दस्त-से-ज्वर्दस्त स्त्रियोंके गर्वको खर्व करनेवाला है । यह नुसखा भैरवानन्द योगीका ईजाद किया हुआ है । इसके उत्तम होनेमें ज़रा भी सन्देह नहीं; पर ३४ महीने सेवन करना चाहिये । बलवान पुरुष भी इतने मसालेको अढ़ाई-तीन महीनेमें खा सकेगा । परीक्षित है ।

## १५६ नरसिंह चूर्ण ।

शतावर	...	...	६४ तोले
गोखरु	...	...	६४ ”
बाराहीकन्द	...	...	८० ”
गिलोय	...	...	१०० ”
मिलावे ( शुद्ध )	...	...	१२८ ”
चीता	...	...	४० ”
शोधे हुए तिल	...	...	६४ ”
त्रिकुटा	...	...	३२ ”
विदारीकन्द	...	...	६४ ”
खाँड़	...	...	२८० ”
शहद	...	...	१४० ”
घी	...	...	७० ”



बनानेकी विधि—पहले भिलावोंको शोधकर सुखा लो । फिर शतावरसे विदारीकन्द तककी दवाओंको कूट-पीसकर कपड़-छन कर लो । इसके बाद, इस चूर्णमें घी, चीनी और शहद मिलाकर रख दो । बस, यह चूर्ण “नरसिंह चूर्ण” है । यह चूर्ण कई ग्रन्थोंमें लिखा है । हमने “चक्रदत्तसे” लिया है ।

सेवन-विधि—इसमेंसे दो तोले-भर चूर्ण खाकर, मनवांछित भोजन करनेसे, १ महीनेमें ही, बूढ़ा जवान हो जाता है । हमने इसको कई रोगियोंको दिया, बेशक लाजवाब चूर्ण है । पर महीने भरमें जवान कीई नहीं हुआ । हाँ, बल-पुरुषार्थ बेशक बढ़ा । जिन्होंने ३ महीने सेवन किया, खूब फल पाया । कामी पुरुषोंको इसे अवश्य सेवन करना चाहिये । “चक्रदत्तमें” लिखा है:—

स काञ्चनाभो मृगराजविक्रमस्तरंगमं चाप्यनुयाति वेगतः ।  
स्त्रीणां शतं गच्छति सोऽतिरेकं प्रकृष्टदृष्टिश्च यथा विहंगः ॥

इस ‘नरसिंह चूर्णको’ सेवन करनेवाला पुरुष सुवर्णके समान कान्तिवाला, सिंहके समान पराक्रमी, घोड़ेके समान बेगवान, सौ स्त्रियोंको भोग सकनेवाला और गरुड़की जैसी तेज नजरवाला होता है । और भी लिखा है, जो “विदारीकन्द” को सेवन करता है, उसका लिंग खूब सख्त रहता है । उसे हर समय स्त्री-भोगकी इच्छा बनी रहती है, इत्यादि ।

## १५७ रतिवल्लभ महारस ।

इन्द्रजौका चूर्ण २२ तोले, घी ६४ तोले, मिश्री ६४ तोले, गायका दूध ६४ तोले और बकरीका दूध २०८ तोले—इन सबको कलईदार कढ़ाहीमें डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ, जब खोआ-सा होजाय, उतार लो ।

ऊपरके खोयेको उतारते ही उसमें आमले, स्याह जीरा, सफ़ेद



जीरा, नागरमोथा, दालचीनी, इलायची, तेजपात, केशर, कौंचके बीजोंकी गिरी, गंगेरन, ताड़वृक्षकी कोंपलें, सूखे कसेरू, सिंघाड़े, सोंठ, मिर्च, पीपर, धनिया, हरड़, दाख, काकोली, क्षीरकाकोली, खजूरके फल, तालमखाना, छिली मुलहठी, मीठा कूट, लौंग, सेंधानोन, अजवायन, अजमोद, जीवन्ती और गजपीपल—इन सबके एक-एक तोले चूर्णोंको मिला दो । साथ ही १ तोले बंग-भस्म और १ तोले अभ्रक भस्म भी मिला दो । २ माशे कस्तूरी और १ माशे कपूर भी मिला दो और खूब चलाओ । जब सब एक-दिल हो जायँ, आठ तोले शहद भी मिला दो और दो-दो तोलेके लड्डू बना लो । यही “रतिवल्लभ महारस” है । एक लड्डू खाकर—मिश्री-मिला दूध पीना चाहिये ।

रोग नाश—इस चूर्णके सेवन करनेसे वल-पराक्रम बहुत ही बढ़ता है; लिङ्ग ढीला नहीं होता और बूढ़ा भी जवान हो जाता है । इसके सेवन करनेसे वायु-रोग, रक्त-पित्त, गुल्म, ज्वर और मन्दाग्नि प्रभृति भी नाश हो जाते हैं ।

नोट—दवा बनानेकी तैयारी करनेसे पहले, सब दवाओंको कूट-पीस और छानकर रख लेना चाहिये । साथ ही दूध, घी वगैरः चीजोंको भी पास रख लेना चाहिये, तब पाक बनानेकी तैयारी करनी चाहिये ।

## १५८ स्त्री रतिवल्लभ पूगी पाक ।

दक्खनी चिकनी सुपारी आध सेर लाकर, कतर-कतरकर जीरा बना लो । फिर इस सुपारीकी कतरनको पानीमें रात-भर भीगने दो । जब कतरन नरम हो जाय, सुखाओ और पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो ।

फिर बढ़िया गायके चार सेर दूधमें, १६ तोले-भर “घी” डालकर, सुपारीके चूर्णको भी उसमें डाल दो । जब खोआसा होनेपर आवे, उसमें अढ़ाई सेर बढ़िया सफ़ेद चीनी मिला दो और पकाओ । जब अच्छी तरहसे पक जाय, नीचे उतार लो और



नीचे लिखी हुई दवाओंके चूर्णको भी मिला दो—इलायची, गोंगेरन, खिरंटी, पीपल, जायफल, लौंग, जाबित्री, तेजपात, तालीसपत्र, दालचीनी, सोंठ, खस, सुगन्धवाला, नागरमोथा, हरड़, बहेड़ा, आमला, बंसलोचन, शतावर, कौंचके बीजोंकी गिरी, दाख, तालमखाना, गोखरूके बीज, बड़ी खजूर, तवाखीर, धनिया, कसेरू, सूखे सिंघाड़े, मुलहठी, जीरा, कलौंजी, अजवायन, कमलगट्टेकी गिरी, बालछड़, सौंफ, मेथी, विदारोकन्द, काली मूसली, असगन्धकी जड़, कचूर, नागकेशर, गोलमिर्च, नयी चिरौंजी, सेमलके बीज, गजपीपर, कमलगट्टा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन और लौंग—इन ४६ दवाओंको अलग-अलग कूट-छानकर, इनका चार-चार तोले चूर्ण एक थालीमें तोल-तोलकर रख लो और उस आगसे उतारे हुए खोयेमें सबको मिला दो और एक-दिल कर दो ।

साथ ही पारेकी भस्म १ तोले, बंग-भस्म १ तोले, शीशा-भस्म १ तोले, लोह-भस्म १ तोले, अभ्रक-भस्म शतपुटी १ तोले, बढ़िया कस्तूरी ४ माशे और भीमसेनी कपूर ३ माशे—इनको भी मिला दो और खूब एक-दिल करके, दो-दो तोलेके लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि—पहले पाँच-सात दिन आधा-आधा लड्डू खाना चाहिये, अगर सह जाय तो पूरा खाना चाहिये । मीठे और स्वादके लालचसे या एक-दम भीमसेन होनेके लिये बहुत ज़ियादा न खाना चाहिये । इस पाकको खाकर, मिश्री-मिला दूध पाव डेढ़ पाव पीना चाहिये । यह योग “भावप्रकाश” का है । हमने जिस तरह परीक्षा की है, उसी तरह लिख दिया है । रोगीको देखकर, भस्में कम भी ली जा सकती हैं । इसके सेवन करनेमें अपने अग्निबलका विचार कर लेना जरूरी है; जितना पचे उतना ही खाया जाय । पहलेका किया हुआ भोजन पच जाने पर, सवेरे ही या शामको, भोजनसे पहले, लड्डू

\* पारे की भस्मकी जगह “रससिन्दूर” ले सकते हो ।



## नपुंसकता और धातुरोग-वर्णन

२८६

खाना चाहिये। इन लड्डुओंके खानेवालेको खटाईसे कतई परहेज रखना जरूरी है।

इस पाकको जाड़ेके चार महीने सेवन करनेसे वीर्यकी खूब वृद्धि होती और प्रसंगेच्छा बलवती हो जाती है। सदा खानेवाला घोड़ेके समान मैथुन कर सकता है। उसकी जठराग्नि तेज रहती और शरीरमें झुर्रियाँ नहीं पड़तीं। बूढ़ा भी यदि इसे १५६ महीने सेवन करे और आहार-विहारमें पथ्य रखे, तो जवान हो सकता है।

## १५६ कामेश्वर मोदक।

इसी “पूगी रक्क” में अगर खुरासानी अजवायन, शुद्ध धतूरेके बीज, बालछड़, समन्तल-शोष, माजूफल और पोस्तके डोढ़े,—ये सब एक-एक तोले पीसकर, मिला दिये जायँ और धुलो हुई भाँग छै—सात तोले मिला दी जाय, तो “कामेश्वर मोदक” तैयार हो जाते हैं। ये लड्डू “पूगी पाक”से भी कुछ अधिक गुणकारी हैं। खासकर, स्त्री-द्रावणकी अधिक शक्ति पैदा करते हैं।

नोट—हम अपने आजमाये हुए “कामेश्वर मोदक” उधर लिख आये हैं। वे सब किसीको पच जाते और फायदा भी करते हैं। ऊपर लिखा “स्त्री-रतिवल्लभ पूगी पाक” भी बड़ी ही नामी और प्रत्यक्ष फल दिखानेवाली चीज है।

## १६० शतावरी घृत।

शतावरकी जड़का गूदा	...	...	४ सेर
गायका धी	...	...	४ सेर
गायका दूध	...	...	१ मन

बनानेकी विधि—शतावरकी जड़के गूदेको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। कढ़ाहीमें लुगदी, धी और दूध रखकर चूल्हेपर चढ़ा दो, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब सारा मन-भर दूध जल जाय, धी-सात्र रह जाय, उतारकर छान लो और साफ बर्तनमें रख दो।



सेवन-विधि—इसमेंसे १ तोले घी, ६ माशे मिश्री, ४ माशे शहद और ३ रत्ती पीपरका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे वीर्य बढ़ता, धातु पुष्ट होती है और अम्ल-पित्त नाश होता है। इन रोगोंके सिवा, अन्यान्य पित्तविकार भी नाश होते हैं। परीक्षित है।

नोट—यदि पच जाय तो “घी” की मात्रा बढ़ा लेना; यदि न पचे तो घटा देना। शहद, मिश्री और पीपरका चूर्ण, रोग और रोगीके बलका विचार करके, अधिक भी दिये जाते हैं।

सूचना—अगर कलईदार कढ़ाही छोटी हो, उसमें एक मन दूध एक साथ न आवे, तो पहले थोड़ा दूध चढ़ाना, पीछे ज्यों-ज्यों दूध जलने लगे, एक-एक सेर या आध-आध सेर डालते जाना; जब साँरा दूध पच जाय और जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर घीको छान लेना की फ

## १६१ फल घृत ।

	...	...	२ तोले
मेदा	...	...	२ ”
मंजीठ	...	...	२ ”
मुलहठी	...	...	२ ”
कूट	...	...	२ ”
त्रिफला	...	...	२ ”
खिरेंटी	...	...	२ ”
सफ़ेद बिलाईकन्द	...	...	२ ”
काकोली	...	...	२ ”
क्षीर काकोली	...	...	२ ”
असगन्ध	...	...	२ ”
अजवायन	...	...	२ ”
हल्दी	...	...	२ ”
होंग	...	...	२ ”
कुटकी	...	...	२ ”
नील कमल	...	...	२ ”



## नपुन्सकता और धातु-रोग-वर्णन ।

२६१

दाख	...	२ तोले
सफेद चन्दनका बुरादा	...	२ ”
लाल चन्दनका बुरादा	...	२ ”
शतावरका रस	...	१६ सेर
बछड़ेवाली गायका दूध	...	१६ सेर
बछड़ेवाली गायका घी	...	४ सेर

बनानेकी विधि—मेदासे लाल चन्दन तककी दवाओंको पीस-कूटकर छान लो और फिर इनको सिलपर, जलके साथ, पीसकर लुगदी बनालो ।

कढ़ाहीमें लुगदी रखकर, घी ४ सेर डाल दो और ऊपरसे शतावरका रस ४½ सेर डाल दो । आग मन्दी-मन्दी लगाओ । ज्यों-ज्यों शतावरका रस कम होता जाय और रस डालते जाओ । जब शतावरका रस खतम होजाय, दूध थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और पकाते रहो । जब दूध भी खतम होजाय, घीके साथ सेर आध सेर रस रह जाय, उतार लो और छानकर बोटलोंमें भर दो ।

सेवन-विधि—इस घीके बलाबल-अनुसार खानेसे बलवीर्य और खून बढ़ता है; क्योंकि यह घी अत्यन्त वृष्य या बाजीकरण है । यह घी स्त्रियोंके योनि-रोगों और हिस्टीरिया या उन्मादपर भी रामवाण है । इसके सेवन करनेसे बाँझके भी पुत्र होता है । मात्रा ४ माशेसे २ तोले तक है । परीक्षित है ।

## १६२ नपुन्सक वल्लभ मांस ।

शुद्ध पारा १० माशे और चाँदीके वर्क नग :११ लाकर, खरलमें डालकर, ऊपरसे “भाँगरेका रस” दे-देकर, ६ घण्टों तक खरल करो; फिर १ तीतर लाकर, एक दिन-भर उसे खानेको कुछ मत दो । दूसरे दिन, खरलकी द्वामें एक तोले गेहूँका मैदा मिलाकर, तीतरको खिला दो; इसके बाद तीतरको मार डालो । उसका मांस लेकर, उसमें सिरका



और मसाला ढालकर, घीमें मन्दी-मन्दी आगसे पकालो । जब लाल हो जाय, एक बासनमें रखदो । इसमेंसे, रोज, थोड़ा-थोड़ा मांस गेहूँकी रोटीके साथ खाओ । इस मांसके तीन दिन खानेसे ही नामर्द मर्द हो जाता है । कोई शिकायत नहीं रहती ।

नोट—जो लोग मांस खाते हैं और जीव मारनेमें बुराई नहीं समझते, वे ही इस नुसखेसे काम लें ।

### १६३ नपुंसकत्व नाशक पाक ।

बिनौलोंकी गिरी १ तोले, खरबूजेकी गिरी १ तोले, कड़ीकी गिरी १ तोले, चिरौंजी १ तोले, तिल १ तोले, खसखस १ तोले, सेमलका मूसला १ तोले, सफ़ेद मूसली १ तोले, शतावर १ तोले, असगन्ध १ तोले, सूखे सिंघाड़े १ तोले, केवड़ेके बीज १ तोले और इमलीके बीज १ तोले—इनको कूट-पीस कर छान लो ।

प्याजके बीज ६ माशे, शलगमके बीज ६ माशे, बहुफली ६ माशे और समन्दर-शोष ६ माशे, इन सबको पीस-छान कर रखलो ।

खोलझून ६ माशे, चुनिया गोंद ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, तज ६ माशे, कौंचके बीज ६ माशे, गोखरू ६ माशे, इन्द्रजौ ६ माशे, बबूलकी फली ६ माशे, कमलगट्टेकी गिरी ६ माशे, बीजबन्द ६ माशे और मोचरस ६ माशे,—इन सबको भी कूट-पीसकर छान लो ।

उटंगनके बीज ३ माशे, अकरकरा ३ माशे, सोंठ ३ माशे, पीपल ३ माशे और खुरासानी अजवायन ३ माशे लेकर पीस-कूट लो ।

इस्वन्द गुजराती ३ माशे और तालमखाना ६ माशे,—इन दोनोंको भूनकर रखलो ।

बनानेकी विधि—एक सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ । जब चाशनी पाक या कतलियोंके लायक हो जाय, उसमें उधरकी सब दवाओंके चूर्ण मिला दो और खूब चला दो । साथ ही धुली भाँग २ तोले, बादामकी गिरी १ तोले, पिस्ते कतरे हुए २ तोले, अखरोट कतरे हुए



२ तोले, चिलगोजे २ तोले और गोला कतरा हुआ २ तोले,—सबको डालकर, थालीमें घी चुपड़ कर, उसीपर कढ़ाहीका माल उड़ेलकर फैला दो । ऊपरसे चाँदीके वर्क लगा दो । शीतल होनेपर, कतली उतार कर एक साफ बर्तनमें रख दो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, एक-एक तोले खाकर, ऊपरसे ५ छुहारों के साथ पका हुआ दूध मिश्री मिलाकर पीओ । इस पाकसे दिल, दिमाग, गुरदे और जिगर इत्यादि ठीक होकर, इतना बल पुरुषार्थ बढ़ता है, कि लिख नहीं सकते । पर परीक्षित है ।

### १६४ स्त्री-मदभञ्जन अमृत रस ।

पारा एक पाव लेकर खरलमें डालकर १ दिन भर “काकमाची” के रसमें घोटो । एक दिन भर “सत्यानाशी” के रसमें घोटो । एक दिन भर “शिवलिंगी” के रसमें घोटो । एक दिन “जलकी काई” के रसमें घोटो । एक दिन “कमल” के रसमें घोटो । एक दिन “तीनपतिया” के रसमें घोटो । एक दिन “सन” के रसमें घोटो । एक दिन “फिटकरी” के साथ घोटो और एक दिन “सेधेनोन” के साथ खरल करो । इसके बाद गरम पानीसे पारेको धोकर साफ कर लो ।

धोये हुए पारेका जल सुखा-पोंछकर, उसे खरलमें डाल दो और शुद्ध आमलासार गन्धक पाँच तोले भी खरलमें डाल दो और ८१० घण्टे तक घोटो । जब कजली बन जाय, नीचेका काम करो:—

उसी कजलीमें “नीबूका रस” डाल-डालकर पाँच दिन तक खरल करो । इसके बाद, “मदारका रस” डाल-डाल कर पाँच दिन खरल करो । फिर “घीग्वारका रस” डाल-डाल कर पाँच दिन खरल करो । फिर “हल्दीके रस”में पाँच दिन खरल करो । शेषमें “मेंहदीके रस”में पाँच दिन खरल करो—इस तरह २५ दिन खरल होनेपर, उसे आतिशी शीशीमें भर दो और सात कपड़-मिट्टी करके सुखा लो ।

इस शीशीको एक बड़ी हाँड़ीके बीचमें रखो और उसके यानी



शीशीके चारों तरफ, कढ़ाहीमें गरम करके, बालू भरदो । बालू शीशीके मुँहके बराबर आवे, पर शीशीके भीतर न जावे । शीशीका मुँह खुला रहे । इसके बाद शिवजीका नाम लेकर, उस हाँडीको चूल्हेपर रखदो और नीचे आग जला दो । तीन दिन-रात यानी ७२ घण्टे अखण्ड आग लगाते रहो । आग तेज रहे; कभी मन्दी और कभी तेज न हो । बीच-बीचमें एक लोहेकी पतली सींक, आगमें लाल कर-करके, शीशीके मुँहमें दे दिया करो, ताकि शीशीके गलेमें जो मसाला उड़कर आवेगा उसके मैलसे राह न रुके । जब देखो कि नीली-नीली आगकी लपट निकलना बन्द हो गया, जलती हुई लोहेकी सींक देनेसे भी आगकी लौ नहीं उठती और ७२ घण्टे आग लग गई; तब हाँडीको उतार लो । शीशीके शीतल होनेपर, शीशीको फोड़कर, उसमें लगे मालको खुरच लो । पर देखो, काँचके टुकड़े न मिल जायँ; क्योंकि काँच आँतोंको काट देगा ।

शीशीसे निकले हुए मसालेको खरलमें ढालकर, “धीग्वारके रस” में ३ दिन खरल करो । फिर तीन दिन “मदारके दूध” में खरल करो । पीछे एक गोला सा बनाकर, एक मिट्टीकी सराईमें उसे रखकर, ऊपर से दूसरी सराई रखकर, कपड़-मिट्टीसे दोनों सराइयोंकी सन्ध बन्द करदो; जरा भी सॉस न रहे । इसके बाद एक सराई नीचे रखकर उसमें इन बन्द सराइयोंको रक्खो और ऊपरसे एक सराई रखकर “बज्रमुद्रा” लगा दो । सूख जानेपर, एक गज गहरा और उतना ही लम्बा-चौड़ा गढ़ा खोदकर, नीचे कण्डे जमाकर, उसपर सराई रखदो और फिर ऊपर-नीचे अगल-बगलमें कण्डे भरकर आग लगा दो । जब आग शीतल हो जाय, सराई निकालकर, उनके जोड़ खोल लो और भीतरका माल, जो अमृतके समान है—निकाल कर, एक शुद्ध साफ शीशीमें भरलो ।

सेवन-विधि—इस रसको एक रत्ती लेकर, पीपरके चूर्ण ६ रत्ती और शहद ३ माशेमें मिलाकर, लगातार, २३ महीने खानेसे इतना



बलवीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है कि, पुरुष १०० स्त्रियोंका गर्व खर्व कर सकता है। इस रसके खानेवालेका बल नहीं घटता। भिन्न-भिन्न अनुपानोंके साथ बदल-बदलकर देनेसे, प्रायः समस्तरोग इससे नाश हो जाते हैं।

नोट—तीनपतिया पानीमें छाई रहती है। वज्रमुद्रा—सराइयोंकी सन्ध बन्द करनेके लिये आप मिट्टी, लोहचूर, लूई और राख—इन चारोंको खूब कूट लें और इन्हींका कण्डोंपर लहेस-लहेसकर, लिहसे कण्डोंसे सन्ध बन्द कर दें।

### १६५ शतावरी पाक ।

शतावरकी जड़ ( क )	...	...	१० तोले
चकवड़की जड़	...	...	१० ”
खिरेंटीकी जड़ ❀	...	...	१० ”
खोआ	...	...	४५ ”
ची	...	...	२० ”
मिश्री	...	...	१०० ”
लौंग (ख)	...	...	१ ”
इलायची	...	...	१ ”
जायफल	...	...	१ ”
जावित्री	...	...	१ ”
गोखरू	...	...	२ ”
किशमिश (ग)	...	...	२० ”
बादामकी मींगी	...	...	२० ”

बनानेकी विधि—( क ) में लिखी शतावर, चकवड़ और खिरेंटी

❀ चकवड़को संस्कृतिमें चक्रमर्द और हिन्दीमें चकवड़, पवार, पमार, पमाड़ या पवाड़ कहते हैं। बंगालमें चाकुंदा या एढाँची कहते हैं। मरहठीमें यकला और गुजरातीमें कुवाडियो कहते हैं।



की जड़ोंको पीस-कूटकर छान लो और पाव-भर “घी” कढ़ाहीमें चढ़ा, इस चूर्णको उसमें तल लो । दूधका खोआ भूनकर, इसीमें मिला दो । मिश्रीकी चाशनी बनाकर, चाशनीमें खोयेमें मिली दवाओंको मिला दो और ऊपरसे लौंग आदिका चूर्ण भी इसमें मिला दो । शेषमें साफ की हुई किशमिश और कतरे हुये वादाम मिलाकर, एक थालीमें पाकको ढाल दो; पर पाक ढालनेसे पहले थालीमें घी चुपड़ दो, नहीं तो पाक चिपक जायगा । ऊपरसे चाँदीके वर्क लगादो । शीतल होनेपर, चाकूसे कतलियाँ काट लो और साफ बर्तनमें रख दो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, इसमेंसे दो-दो तोले पाक खाकर, उपरसे गायका धारोष्ण कच्चा दूध पीओ ।

रोगनाश—इसके सेवन करनेसे शरीर खूब पुष्ट और बलवान होता तथा खून साफ होता है । जिनके शरीरमें खून और धातु दोनों दूषित हों, वे इस “शतावरी पाक” को जरूर सेवन करें । परीक्षित है ।

## १६६ पुरुष वल्लभ चूर्ण ।

सफेद मूसली, स्याह मूसली, गिलोयका सत्त, सोंठ, पीपर, मुलहठी, ईसबगोल, तालमखाना, मुर्वा, बबूलका गोंद, रूमी मस्तगी, बीजबन्द, लौंग और जायफल—सब चार-चार तोले लेकर, कूट-पीसकर छान लो । फिर केशर ४ तोले और धुली भाँग १० तोले भी पीसकर छानकर मिला दो । शेषमें, ७० तोले मिश्री पीसकर मिला दो और रख दो ।

सेवन-विधि—इसमेंसे १ तोले चूर्ण गायके अघौटे दूधमें मिलाकर रातको, सोते समय, पी जानेसे शरीर खूब पुष्ट और बलिष्ठ हो जाता है । इस नुसखेसे बदनके सारे हिस्सोंमें ताकत आती और शरीर फौलाद-जैसा मजबूत हो जाता है । बल-वीर्य बढ़ानेमें यह नुसखा एक नम्बर है । परीक्षित है ।



अपथ्य—लालमिर्च, खटाई, गुड़, तेल, दही और खीसे परहेज रखना जरूरी है ।

## ११७ कूष्माण्ड पाक ।

( पेठा पाक )

पेठेका गूदा निकालो । फिर उसमेंसे अढ़ाई सेर गूदा पाँच सेरा पानीमें डालकर, मिट्टीके बर्तनमें पकाओ, जब अढ़ाई सेर जल रह जाय, उतारकर निचोड़ लो और ज़रा-ज़रा धूपमें सुखा लो । फिर उसे सिल पर पीसकर पिट्टी सी बनालो । बादमें, उसे आध सेर घीमें भूनो । जलने न पावे, इसलिये चलाते रहो । जब सुखीं आजाय, उतार लो ।

पीछे सोंठ दो तोले, पीपर दो तोले, सफ़ेद जीरा दो तोले, धनिया ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे, गोलमिर्च ६ माशे, तेजपात ६ माशे और दालचीनी ६ माशे—इन सबको पीस-छानकर उसी पिट्टीमें मिलादो ।

फिर अढ़ाई सेर मिश्री लाकर चाशनी बनाओ । चाशनी चाटने योग्य गाढ़ी हो जाय, तब उसमें पेठेकी पिट्टी मय मसालेके जो उसमें मिलाया है डालकर चलाओ और दस मिनटमें उतार लो । जब पाक शीतल हो जाय, एक पाव बढ़िया शहद और २ माशे चाँदीके वर्क उसमें डालकर मिला दो और एक बासनमें रख दो ।

सेवन-विधि—इस पाकमेंसे चार तोले पाक, सवेरे ही, खानेसे वीर्यके दोष दूर होकर नामर्दी चली जाती है । वीर्य-दोष नाश करनेमें यह पाक प्रथम श्रेणीका है । इस पाकसे धातु-क्षीणता, नामर्दी, रक्त-प्रदार आदि नाश होनेमें ज़रा भी शक नहीं । ४० सालसे परीक्षा कर रहे हैं । परीक्षित है ।

## १६८ विजया पाक

तज, तेजपात, नागकेशर, असगन्ध, मूर्वा, स्याह मिर्च, कौंचके बीजोंकी गिरी, गदापूर्नाकी जड़, बरियाराकी जड़, ककईकी जड़ और



कौआटांटीकी जड़—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो ।

छोटी इलायची चार तोले, सौंफ चार तोले, वंसलोचन चार तोले, सोंठ १ तोले, पीपर १ तोले, लौंग १ तोले, जायफल १ तोले और जावित्री १ तोले—इन सबको पीस-कूटकर छान लो । फिर ऊपरका तज तेजपात आदिका चूर्ण भी इसी चूर्णमें मिला दो ।

गायका दूध दस सेर लेकर औटाओ । जब आधा दूध रह जाय, उसमें धुली हुई सूखी भाँगका आधसेर चूर्ण डाल दो और चलाते रहो, जब खोआ हो जाय उतार लो । फिर आध सेर “घी” कढ़ाहीमें चढ़ाकर, उसीमें ऊपरके भाँगके खोयेको भून लो ।

फिर पाँच सेर मिश्रीकी चाशानी बनाओ । जब चाशानी कुछ ढीली सी रहे, उसमें भाँगका खोआ डालकर खूब मिलाओ । जब पाक जमने लायक चाशानी हो जाय ऊपरका पिसा-छना चूर्ण भी मिला दो और पाँच मिनट चलाकर उतार लो । काँसीकी थालीमें घी चुपड़ कर चाशानी फैला दो । ऊपरसे सोने-चाँदीके तवक लगा दो । जम जाने पर, बरफीकी सी कतली उतारकर, चिकने पर साफ बासनमें या काँचके भाँड़में रख दो । अगर कतली न बना सको, तो लड्डू बनालो ।

सेवन-विधि—पहले दिन १ तोले पाक खाकर, ऊपरसे पाँच छुहारोंके साथ औटाया और मिश्री-मिला गरम दूध पीओ । इस पाकको हमेशा सन्ध्या-समय खाओ । अगर आपको १ तोले पाकसे ज़रा भी ज़ियादा नशा न हो और आप सह सकें, तो फिर दो तोले पाक खाओ । इच्छा हो, सवेरे भी खाओ; पर शामको खाना अच्छा है । जिन लोगोंको भाँग बादी या जोड़ोंमें दर्द करती है—अक्सर जाड़ेके दिनोंमें सर्द-मिजाजवालोंको भाँगसे पैरोंमें फूटनी हो जाती है, वे इस पाकको बनाकर भर-जाड़ेमें खावें । हमने स्वयं कंटा—बलूचिस्तानमें, बर्फके मौसममें इसे सेवन करके बड़ा लाभ उठाया ।

इसके सेवनसे वीर्यके दोष नाश हो जाते हैं, प्रमेह आराम हो



जाते हैं और आँखोंमें तेज आ जाता है । खानेके बाद खूब भूख लगती है । जो खाया जाता है, हज्म हो जाता है । खूब बल बढ़ाता है ।

नोट—केवल कफ-प्रकृति वालोंको और भौँगेके अभ्यासियोंको यह पाक फायदा करता है; गरम मिर्जाजवालोंको लाभदायक नहीं है ।

## १६६ गोखरू पाक ।

गोखरू लाकर, पीस-कूट कर छान लो और रख दो । फिर अढ़ाई सेर गायके दूधमें उसे डालकर मन्दाग्निसे पकाओ । जब खोआ हो जाय, उतार लो ।

धुली भौँग अढ़ाई तोले, केशर ३ माशे, भीमसेनी कपूर ६ माशे, कौंचके बीजोंकी गिरी ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे, अजवायन ६ माशे, नागकेशर ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, सूखे आमले ६ माशे, सेमलका गोंद ६ माशे, छोटी पीपर ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, तेजपात ६ माशे, जायफल ६ माशे, जावित्री ६ माशे, लौंग ६ माशे, गोलमिर्च ६ माशे और लोध ६ माशे—इन सबको पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो ।

फिर कढ़ाहीमें एक सेर गायका घी डालकर ऊपरसे गोखरूके साथ पका हुआ खोआ डालकर भूनो । जब कुछ सुखी पर आवे, ऊपरका चूर्ण भी डाल दो और सबको भूनो । भुन जाने पर नीचे उतार लो ।

फिर पाँच सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ, उसीमें ऊपरका दवा-मिला खोआ डालकर खूब चलाओ और उतार कर घी-लगी काँसीकी थालीमें जमा दो । ऊपरसे चाँदीके वर्क भी लगा दो और बरफी काट कर रख दो ।

सेवन-विधि—इसमेंसे तीन या चार तोले पाक खाकर, ऊपरसे मिश्री मिला गायका दूध पीओ । इसके ३ मास खानेसे “प्रमेह” तो आराम हो ही जाता है; साथ ही धातुके दोष, क्षय, क्षीणता और बवासीर आदि भी आराम हो जाते हैं । यह प्रसिद्ध पाक है । परीक्षित है ।



## १७० मूसली पाक ।

पहिले सफेद मूसली तीन पाव लाकर पीस-कूट कर छान लो । बबूलका गोंद डेढ़ पाव दरदरा करके रखलो ।

लौंग १॥ तोला, छोटी इलायची १॥ तोला, नागकेशर १॥ तोला, सोंठ १॥ तोला, पीपर १॥ तोला, मिर्च १॥ तोला, तेजपात १॥ तोला, जावित्री १॥ तोला और जायफल १॥ तोला,—इन सबको पीस-कूटकर कपड़-छन कर लो ।

उत्तम बङ्गभस्म १॥ तोले, चाँदीके बर्क माशे और सोनेके बर्क ३ माशे—इनको भी रख लो ।

मिश्री चार सेर और घी आध सेर भी तैयार रखो । इतनी सब तैयारी कर लेने पर, कलईदार कढ़ाहीमें डेढ़ पाव “घी” डालकर, मूसलीके पिसे-छने चूर्णको भूनो । आग मन्दी रखो । चूर्ण जलने न पावे । जब वह सुख हो जाय, उतार लो । फिर “घी” चढ़ाकर, गोंदको भून लो । जब गोंद फूलकर लाल हो जाय, उतार लो ।

अब मिश्रीको कढ़ाहीमें डालकर पानीके साथ पकाओ । जब चाशानी होने पर आवे, उसमें खोआ और गोंद डालदो और चलाओ । जब चाशानी पाकके लायक होनेमें १० मिनटकी देर रहे, दवाओंका मसाला और बङ्गभस्म तथा बर्क मिलादो और उतारकर, घी लगी काँसी की थालीमें फैला दो । शीतल होने पर, चाकूसे बरफी काटकर अमृतबान या घीकी चिकनी हांडीमें भरकर, मुँह बाँधकर रख दो ।

सेवन-विधि—इस पाककी मात्रा २ तोलेकी है । बलवान इसे तीन तोले तक खा सकता है । पाक खाकर, मिश्री-मिला दूध पीओ । इसके सेवन करनेसे वीर्यकी कमीके कारणसे हुई नामर्दी निश्चय ही चली जायगी और खूब वीर्य बढ़ेगा । इससे प्रमेह, धातुक्षीणता और नाताकृती नाश होकर मैथुन-शक्ति खूब बढ़ेगी । कामियोंको यह पाक हर जाड़ेमें खाना चाहिये । अगर कोई सवेरे “गोखरू-पाक” और शाम



को “मूसली-पाक” खावे, तो क्या कहना ? चार महीने खानेसे ६० सालका बूढ़ा भी जवानी की तरह मैथुन कर सकेगा । परीक्षित है ।

### १७१ मृगनाभ्यादि बटी ।

बड़िया कस्तूरी ३ माशे, अबीध मोती ६ माशे, सोनेके वर्क १॥ माशे, चाँदीके वर्क ४॥ माशे, केशर ६ माशे, बंसलोचन १०॥ माशे, छोटी इलायचीके दाने ७॥ माशे, जायफल ६ माशे और जावित्री एक तोले—इन सबमेंसे मोतियोंको गुलाब-जलमें १२ घण्टे खरल करो । खरल होनेपर, सोने-चाँदीके वर्क भी डाल दो और ३ घण्टे घोटो । फिर बंसलोचन आदि बाक़ी दवाओंको पीस-कूटकर, कपड़ेमें छानकर, उसी खरलमें डाल दो और “नागरपानका स्वरस” डाल-डालकर ३६ घण्टे तक घोटो । हर शामको ढक दो और फिर सवेरे घोटो । पानोंका रस देते रहो । जब ३६ घण्टे हो जायँ, रस मत दो; गोला-सा बना लो और मटर-समान गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो और शीशीमें रख दो ।

सेवन-विधि—रोगीकी धातु कैसी ही कम हो गई हो या सूख गई हो, धातुकी कमीसे स्त्री-इच्छा न होती हो और वीर्यकी कमीसे जो नामर्द हो गया हो, इन गोलियोंसे अच्छा हो जायगा, इसमें सन्देह नहीं । अगर धातु सूख गई हो, तो “मलाई”के साथ एक या दो गोली रोज़ खाओ । अवश्य लाभ होगा । परीक्षित है ।

### १७२ मुक्तादि बटिका ।

अबीध मोती ६ माशे लेकर गुलाबजलमें १२ घण्टे तक घोटो । शोधे हुए कुचलेके १ दानेको कतर-कतरकर चाँवलसे बनालो और साथ ही घोट लो । इसीमें १ माशे सोनेके वर्क और ३ माशे चाँदीके वर्क भी घोट लो ।



फिर केशर १ तोले, जावित्री ६ माशे, जायफल १ तोले, अकर-करा २ तोले, छोटी इलायचीके बीज २ तोले, भीमसेनी कपूर ३ माशे और कंकोल १ तोले—इन सबको पीस-छान लो । पीछे इसे भी मोती और कुचलेके चूर्णमें मिलाकर घोटो, ऊपरसे १ तोले शहद मिला दो । फिर गुलाबका बड़िया अर्क डाल-डालकर ३ दिन घोटो । शेषमें रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो ।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा आधी गोलीसे दो गोली तक है । सवेरे-शाम एक या दो गोली खाकर, दूध-मिश्री पीनेसे नामर्द भी मर्द हो जाता है । इसके सेवनसे धातु कैसी ही कम हो गई हो, ताज्जा हो जाती है तथा खानेवाला खूब पुरुषार्थी हो जाता है । स्तम्भन-शक्ति बढ़ जाती है । कास, श्वास, लकवा प्रभृति रोग आराम हो जाते हैं । नपुंसकके लिए ये गोलियाँ अमृत हैं । हमने हजारों अमीरोंको ये गोलियाँ बनाकर सेवन कराईं जिनकी इच्छा हो वे खा देखें, पर शीतकालमें खावें और कम-से-कम ३४ महीने खावें ।

## १७३ च्यवनप्राश अवलेह ।

अरणी, खँभारी, पाटला, बेल, अरलू, गोखरू, छोटी पीपर, काकड़ासिंगी, दाख, गिलोय, हरड़ और खिरंटी—दो-दो माशे लेकर जौकुट कर लो ।

बाराहीकन्द, विदारीकन्द, मोथा, पोहकरमूल, वनउड़द, वनमूँम, असगन्ध, कमलफल, मुलहठी, इलायची, अगर और सफेद चन्दनका बुरादा—इन सबको भी चार-चार तोले लेकर जौकुट करलो ।

पके हुए आमले पाँच सौ लाओ । ऊपरके चूर्ण और आमलोंको, बीस सेर जल डालकर, एक मिट्टीके बर्तनमें पकाओ । जब अढ़ाई सेर जल बाकी रहे, काढ़ेको मलकर छान लो और आमलोंको अलग चुन लो ।



आमलोंकी गुठली निकालकर, सिलपर पीसकर लुगदी बनालो ।  
फिर तीन पाव गायके घी में आमलोंकी लुगदीको भून लो ।

उस छने हुए काढ़ेमें अढ़ाई सेर मिश्री डालकर चाशनी बनाओ ।  
फिर उसमें, घीमें भुनी आमलोंको पिट्टी मिला दो और नीचे उतार  
लो । चाशनी ढीली रखना जिससे जम न जाय । फिर शीतल होने पर,  
डेढ़ पाव “मधु” डालकर ऊपरसे तेजपात, छोटी इलायची और बंस-  
लोचन चार-चार माशे पीसकर मिला दो । बस, यही “च्यवनप्राश  
अवलेह” है । यह नुसखा प्रायः सभी ग्रन्थोंमें लिखा है । इसके सेवनसे  
च्यवन ऋषि बूढ़ेसे जवान हुए थे । इसको सेवन करके बूढ़ेसे जवान  
होते तो आज-कल किसीकी नहीं देखा, पर हाँ यह वीर्य-दोष मिटानेमें  
बहुत ही उत्तम चीज है । क्षय, राजयक्ष्मा और रक्तपित्तमें भी खूब  
लाभप्रद है ।

### १७४ खण्ड कृष्माण्ड अवलेह

पीपर आठ तोले, सोंठ आठ तोले, सफ़ेद जीरा आठ तोले,  
धनिया दो तोले, तेजपात दो तोले, छोटी इलायचीके बीज दो तोले,  
कालीमिर्च दो तोले और दालचीनी दो तोले,—इन सबको कूट-पीस  
कर कपड़ेमें छान कर रख लो ।

मिश्री पाँच सेर, घी १३ छटाँक, शहद साढ़े छैं छटाँक,—इनको  
भी तैयार रखो ।

बढ़िया, पुराना, मोटा पेठा लाकर छील लो । फिर उसमेंसे  
पेठेके बीज और बीजोंकी जगहको निकालकर फेंक दो । फिर उसमेंसे  
५ सेर गूदा अलग करलो । इस गूदेको मिट्टीकी बड़ी हाँडी या  
कलईदार कढ़ाहीमें रख, ऊपरसे १० सेर जल डाल, पकाओ । जब  
आधा जल रह जाय, उतार कर ठण्डा करो । उसमेंसे पेठेके टुकड़े  
निकाल लो और उन्हें एक गज्जीके मोटे कपड़ेमें रखकर खूब निचोड़ो,  
ताकि पानी न रहे । हाँडीमें जो पका हुआ पानी रहे, उसे फेंक मत दो,  
रक्खा रहने दो ।



पेठेके निचोड़े हुए टुकड़ोंको धूपमें सुखाकर, १३ छटाँक धीमें भूनो। जब भुनते-भुनते शहद जैसे हो जायँ, तब उस पेठेके निचोड़े हुए पानीको आगपर चढ़ा दो। उबाल आने पर, उसमें यह धीमें भुना हुआ पेठा डाल दो और ऊपरसे मिश्री पाँच सेर पीसकर डाल दो और पकाओ। पर चाशनी अवलेहकी सी रखना; जमने लायक न हो जाय। जब चाटने लायक चाशनी हो जाय, उसमें पीपर आदिका चूर्ण भी मिला दो और उतार लो। शीतल हो जाने पर, “शहद” मिला दो और अच्छे बर्तनमें रखकर मुख बाँध दो।

सेवन-विधि—इसमेंसे दो या चार तोले अवलेह चाटनेसे खूब बलवृद्धि होती और शरीर पुष्ट होता है। यह बाजीकरण योग खूब मैथुन-शक्ति बढ़ाता है। इसके सेवन करनेसे रक्तपित्त, दाह, प्यास, प्रदर, कमजोरी, दुबलापन, खाँसी, श्वास, वमन, हृदय-रोग, स्वर-भेद और क्षत-क्षय नाश होकर आनन्द की वृद्धि होती है। क्राबिल तारीफ चीज है।

### १७५ बृहत् कूष्माण्ड अवलेह

बढ़िया, मोटा, पुराना पेठा लेकर छील लो और बीज तथा बीजोंके घर फेंक कर, छोटे-छोटे टुकड़े करके रख लो। इसमेंसे पाँच सेर टुकड़े तोलकर ले लो। फिर पाँच सेर गायका दूध कलईदार कढ़ाहीमें चढ़ाकर, उसमें पेठेके टुकड़े डाल दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; पकते-पकते इसमें साढ़े चार सेर मिश्री मिला दो; धी तेरह छटाँक डाल दो, नारियलकी कतरी हुई गिरी १६ तोले, चिरौंजी ८ तोले और तवाखीर चार तोले भी डाल दो। फिर धीरे-धीरे ऐसा पकाओ, कि चाटने-लायक हो जाय। जब पक जाय, आगसे उतार लो। गरम रहते-रहते, नीचे लिखी चीजें कूट-पीस-छानकर इसमें और मिला दो:—

सौंफ १ तोले, सलोचन २ तोले, अजवायन २ तोले, गोखरू



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

३०५

२ तोले, हरड़ २ तोले, कौंचके बीजोंकी गिरी २ तोले, दालचीनी २ तोले, धनिया ४ तोले, पीपर ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, असगन्ध ४ तोले, शतावर ४ तोले, काली मूसली ४ तोले, गङ्गेरन ४ तोले, सुगन्धवाला ४ तोले, तेजपात ४ तोले, कचूर ४ तोले, जायफल ४ तोले, लौंग ४ तोले छोटी इलायचो ४ तोले, सूखे सिंघाड़े ४ तोले, पित्तपापड़ा ४ तोले, चन्दनका बुरादा ५ तोले, सोंठ ५ तोले, सूखे आमले ५ तोले, कसेरू ५ तोले, खसके बीज ४ तोले, तालमखाने ८ तोले और कालीमिर्च ८ तोले—इन सबको अलग-अलग पीसकर कपड़ेमें छानलो और जितना-जितना लिखा है उतना-उतना तैयार चूर्ण सबका एक जगह करलो । जब ऊपर की चाशानी नीचे उतार लो, उसमें गरम रहते-रहते यह चूर्ण मिला दो । शीतल होनेपर, साढ़े छः छटाँक “शहद” मिलाकर, एक साफ बर्तनमें, मुँह बाँध रखदो । यही “वृहत् कूष्माण्ड अवलेह” है ।

रोग नाश—इस अवलेहकी जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है । इसके सेवन करनेसे रक्त-पित्त, शीत-पित्त, अम्ल-पित्त, अरुचि, मन्दाग्नि, दाह, प्यास, प्रदर रोग, खूनी बवासीर, वमन, पाण्डु रोग, कामला, उप-दंश, विसर्प जीर्ण ज्वर और विषम ज्वर नष्ट हो जाते हैं ।

यह अवलेह मैथुन शक्ति बढ़ानेमें अठ्ठल दर्जेकी चीज है । इससे धातु की पुष्टि होकर खूब बल-पुरुषार्थ बढ़ता है ।

नोट—इसको काँच या मिट्टीके नवीन बर्तनमें रखना चाहिये । हमने कोई १००-२०० रोगियों को सेवन कराया, कमी इसकी शिकायत नहीं सुनी । परीक्षित है । “कूष्माण्डावलेह” से यह बलवान है ।

सेवन-विधि—अपने बलानुसार, दो से चार तोले तक, चाटना चाहिए ।

## १७६ आम्रपाक ।

वीर्य की कमीसे हुई नामर्दीपर ।

पके हुए आमोंका रस	...	...	४ सेर
मिश्री	...	...	१ सेर



घी	...	....	१ पाव
सोंठका चूर्ण	...	...	आध पाव
कालीमिर्चका चूर्ण	...	...	१ छटांक
पीपरका चूर्ण	...	...	आधी छटांक
पानी	...	....	१ सेर

इन सबको मिलाकर कलईदार कढ़ाही या मिट्टीकी कढ़ाहीमें मन्दाग्निसे पकाओ और आमकी लकड़ीसे चलाते रहो । जब रस गाढ़ा हो जावे, नीचे उतार लो ।

उतारकर धनिया, सफ़ेद जीरा, चीते की छाल, तेजपात, नागर-मोथा, दालचीनी, स्याह जीरा, पीपरामूल, नागकेशर, छोटी इलायची, लौंग और जावित्रीका महीन पिसा-छना चूर्ण एक-एक तोले मिला दो । जब एक दमसे शीतल हो जावे, आध पाव “शहद” मिला दो ।

इसकी मात्रा एक तोलेसे चार तोले तक है । इसे भोजनसे पहले खाना चाहिये और ऊपरसे मिश्री मिला गरम दूध पीना चाहिये ।

यह “आम्रपाक” बलवीर्य पैदा करने और रतिशक्ति बढ़ानेवाला है । इसके सिवा संग्रहणी, क्षय, दमा, अरुचि, अम्लपित्त, रक्तपित्त और पीलिया वगैरः अनेक रोग इससे आराम होते हैं । सदा खानेवाला रोग-रहित, पुष्ट और महाबलवान हो जाता है । वीर्यकी कमीसे जो नपुंसक हो गये हैं, वे इसे अवश्य खावें । सुपरीक्षित है ।

नोट—इसके बनानेकी और एक विधि हमारी लिखी “स्वास्थ्यरत्ना” में देखिये ।

## १७७ लवंगादि चूर्ण ।

सर्दिके श्वास, खांसी और जुकामपर ।

लौंग, शुद्ध कपूर, छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, जाय-फल, खस, सोंठ, कालाजीरा, काली अगर, बंसलोचन, जटामाँसी, नील-कमलके फलकी गिरी, छोटी पीपर, सफ़ेद चन्दनका बुरादा, सुगन्धवाला औरकंकोल—इन सबको छै-छै माशे बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर



कपड़-छन करलो; फिर सब चूर्णसे आधी—साढ़े आठ तोले “मिश्री” भी पीस छानकर इसमें मिलादो। यही “लवङ्गादि चूर्ण” है। यह राजाओंके योग्य है।

सेवन-विधि—इसकी मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक है। “शहद” में मिलाकर चाटो और ऊपरसे दूध १ पाब पीओ।

रोग नाशक—यह चूर्ण राजरोग या राजयक्ष्मापर तो प्रधान है ही, पर इसके सेवन करनेसे तमक श्वास, क्षय, छातीका दर्द, दिलकी घब-राहट, गलेके रोग, खाँसी, हिचकी, जुकाम, कफदायी, अतिसार, उरःक्षत यानी कफके साथ खून या मवाद आना, प्रमेह और अरुचि आदि रोग आराम होते हैं। इन रोगोंके नाश करनेके सिवा, यह चूर्ण भूख बढ़ाता, शरीरको पुष्ट करता, त्रिदोष नाश करता और बलको बढ़ाता है। यह चूर्ण दीपन, पाचन और वृष्य यानी वाजीकरण है। सभी गृहस्थों और वैद्योंको बनाकर रखना चाहिये। आजमूदा है। तासीरमें तर-गरम है।

नोट—इसको “प्रतमक श्वास” वालेकौ न देना चाहिये। क्योंकि प्रतमक श्वास गरमीसे होता है। इस श्वासमें कंठकी नली चौड़ी हो जाती है। अतः श्वासकी हँकनी सी लग जाती है। पर “तमक श्वास” में, जो सर्दीसे होता है, श्वासकी नली सुकड़ जाती है, अतः श्वास रुक-रुक कर आता है। गरमी-सर्दी के श्वासोंकी गह पहचान अच्छी है। गरमीके श्वासकी दवा ‘सर्द-तर’ और सर्दीके श्वासकी “गरम-तर” है। बहुधा श्वास सर्दीसे होता है और बूढ़ोंकी तो विशेषकर सर्दीसे ही होता है। जो बूढ़ा और कमजोर हो, जिसे प्रमेह हो, जिसे सर्दीका श्वास हो, कफ-क्षय और खाँसी हो—उसे यही चूर्ण अच्छा है।

## १७८ शतावरी पाक ।

वीर्यकी कमीसे हुई नामर्दी और पित्तके प्रमेहों पर ।

शतावरका चूर्ण आध सेर लेकर, दो सेर दूधमें डाल, खोआ बनाओ और अलग रख दो।

फिर जावित्री ६ माशे, लौंग ६ माशे, गोलमिर्च ६ माशे, नागरमोथा



६ माशे, सेमलका गोंद ६ माशे, सूखे आमले ६ माशे, छोटी पीपर ६ माशे, केशर ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, तेजपात ६ माशे, इलायची ६ माशे, नागकेशर ६ माशे, अजवायन ६ माशे और भीमसेनी कपूर १॥ माशे, इन सबको पीसकर कपड़ेमें छानलो ।

गायके सेर-भर “घी” में ऊपरका शतावरका खोआ और इस चूर्ण को ढालकर भूनो । जब लाल होजाय, उतारकर रखदो ।

अढ़ाई सेर “मिश्री” की चाशनी बनाकर, उसमें ऊपरके भुने हुए खोये और चूर्णको ढालकर मिला लो और लड्डू बनालो । ऊपरसे चाँदीके वर्क लपेट दो ।

इसमेंसे तीन-चार तोले पाक नित्य खानेसे वीर्यकी कमीसे हुई नामर्दी और “पित्तज प्रमेह” निश्चय ही नाश होजाते हैं । परीक्षित है ।

## १७६ असगन्ध पाक ।

सर्द मिजाजवालों और बूढ़ोंको, शोतकालमें ।

नागौरी असगन्ध एक सेर, सोंठ-बैतरा आध सेर, छोटी पीपर पावभर और गोलमिर्च आध पाव—इन सबको पीसकर कपड़ेमें छानलो ।

फिर १६ सेर दूधको औटाओ; आधा रहने पर, ऊपरके चूर्णको ढालकर चलाओ । जब खोआ हो जाय, कढ़ाहीमें दो सेर “घी” ढालकर गरम करो । घी आनेपर, उसमें खोआ ढालकर भूनो और लाल होनेपर उतार लो ।

तज, तेजपात, नागकेशर, इलायची, लौंग, पीपरामूल, जायफल, तगर, नेत्रबाला, बुरादा-सफेद चन्दन, नागरमोथा, सूखे आमले, बंसलोचन, खैरसार, चीतेकी छाल और शतावर—सबको एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छानलो ।

अब चार सेर सफेद बूरे या मिश्रीकी चाशनी बनाओ । उसमें भुने हुए खोयेको ढालकर मिलाओ । जब चाशनी लड्डू बाँधने योग्य



हो जाय, उसमें तज, तेजपात वगैरः का पिसा-छना चूर्ण मिला दो और चाशनी उतार लो। शीतल होने पर, आधी-आधी छटाँकके लड्डू बना लो।

सेवन-विधि—एक लड्डू रोज सवेरे ही, जाड़े के मौसम में, खाकर, गरम दूध-मिश्री मिलाकर पीओ। अगर दूध न मिले तो लड्डू ही खाओ।

रोग नाश—यह पाक गरम है। अतः इसे जाड़े में खाओ और वह भी सवेरे के समय। चूंकि यह गरम है, अतः आपकी प्रकृति सर्दी या बादी की हो तो खाओ। अगर आपका मिजाज गरम है, गरम चीजें आपको हानि करती हैं, तो मत खाओ। अगर बुढ़ापा है, कफ-वायु का जोर है, कमर और जोड़ों में दर्द तथा श्वास और खाँसी रहती है, तो आप अवश्य खाँयें। अगर आपकी प्रकृति गरम नहीं है तो आपके सब रोग नाश करके, यह पाक आपको जवान पढ़ा बना देगा, बशर्ते कि आप हर जाड़े में खाँयें और चार महीने खाँयें।

नोट—खूब ध्यान रखो। यह पाक गरम है। अगर आपका मिजाज गरम हो—आपको गरम चीजें हानि और सर्द चीजें फायदा करती हों, तो आप इसे न खाँयें। इसमें शक नहीं कि यह पाक बूढ़ों को अमृत है। परीक्षित है।

## १८० आमला पाक ।

गर्म मिजाज वालों को मौसम गरमी में ।

आध सेर सूखे आमले लाकर पीस-कूटकर छान लो। फिर इस चूर्ण को पाँच सेर दूध में भिगो दो और कलईदार कढ़ाही में चढ़ाकर खोआ बना लो। इसके बाद चार सेर मिश्री की चाशनी बनाकर उसमें इस खोये को डाल दो। फिर इसमें सौंठ, पीपर और सफेद जीरा चार-चार तोले और धनियाँ दो तोले, छोटी इलायची दो तोले, तेजपात दो तोले, गोलमिर्च दो तोले और दालचीनी दो तोले—इनको पीस-कूट कपड़-छन कर मिला दो और नीचे उतार लो। पीछे; इसमें



२५. चाँदीके बर्तन भी मिला दो । ध्यान रखकर, इसकी चाशनी ढीली रखना ।

सेवन-विधि—इसमेंसे आधी छटाँक पाक मौसम गरमीमें खाओ; क्योंकि यह शीतल है ।

रोग-नाश—यह पाक पित्त-प्रमेह, रक्तपित्त और दिलकी गरमीको नाश करके धातुको बढ़ाता, भूख लगाता और भोजन पचाता है । पित्त-प्रकृतिवालोंको यदि पित्त-प्रमेह हो, तो फागुन-चैत और जेठ-वैशाखमें इसके खाने से लाभ होता है । बहुतसे आदमी पाकके नामसे ही इसे गरम में खाना हानिकार समझते हैं, यह उनकी भूल है; क्योंकि यह शीतल है । इसकी तासीर गरम नहीं, जो गरमीमें हानि करे ।

## १८१ एलादि बटी ।

कामोद्दीपक और उरःक्षत नाशक ।

छोटी इलायची दो तोले, तेजपात दो तोले, दालचीनी दो तोले, मुनक्का बीज हीन दो तोले, छोटी पीपर दो तोले, मिश्री चार तोले, मुलहठी चार तोले, खजूर गुठली निकाले चार तोले, जायफल चार तोले, और किशमिश चार तोले—इन सबको पीस-कूट और छानकर, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो । यही “एलादि बटी” हैं ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, अपने बलानुसार, एक या दो गोली खाकर, ऊपरसे गाय या बकरीका धारोष्ण दूध पीनेसे कामोद्दीपन होता है । जिनकी मैथुनेच्छा घट गई हो, उनको यह परमोत्तम है । इसके सिवा, इन गोलियों से क्षत ( उरःक्षत—छातीमें घाव होनेसे कफके साथ खून या मवाद आना ) क्षय, ज्वर, खाँसी, श्वास, हिचकी, भ्रम, मूर्च्छा, मद, तृषा-प्यास, शोष पसलीका दर्द, अरुजि, तिल्ली, आमवात, रक्तपित्त और ज्वर—ये रोग भी नाश हो जाते हैं । उरःक्षत और नामर्दीपर परीक्षित है ।



## १८२ बालाईका हलवा ।

शीतकालमें, सवेरे, वीर्यवर्द्धक है ।

आधा पाव ताजा मलाई लाकर, कढ़ाहीमें आगपर चढ़ा दो । ऊपरसे पाव भर पिसी मिश्री मिला दो और कौंचेसे खूब चलाओ । दूसरी ओर, आध पाव “घी” कटोरीमें चूल्हेके अंगारोंपर पहिलेसे रख दो । जब मिश्री-मलाई एक-दिल हो जायँ, यह घी डाल दो और चलाओ । ज्योंही पकनेपर आवे, पहिलेसे कतरे हुए बादाम, पिस्ते, चिलगोज़े और चार चाँदीके वर्क भी मिला दो और उतार कर खाओ ।

सेवन विधि—अपने बलानुसार छटाँक या आधपाव हलवा खाओ ।

रोग नाश—यह हलवा खूब वीर्य बढ़ाता है । जिनका वीर्य सूख गया है या कम पड़गया है, वे इसे खावें । बड़ा लाभप्रद है । हमने बहुत खाया और खिलाया है । परीक्षित है ।

## १८३ बादाम का हलवा ।

शीतकालमें वीर्यवर्द्धक है ।

बादाम फोड़कर भिगो दो; नर्म पड़नेपर, छिलके उतारकर, सिल पर महीन पोस लो । आध पाव बादामकी पिट्टीको १ पाव मिश्रीकी चाशनीमें डालकर पकाओ । जब मिश्री और पिट्टी मिल जायँ, एक छटाँक गरम “घी” डालकर चलाओ । पीछे रत्ती दो रत्ती छोटी “इलायची पोसकर मिला दो और उतार लो । अगर चाँदीके वर्क भी दो-चार डाल दो तो और भी उत्तम हो ।

सेवन-विधि—जाड़ेमें अपने बलानुसार खाना चाहिए । इसके सेवनसे खूब बलवीर्य बढ़ता है । जिनका वीर्य कम हो गया है, वे इसे अवश्य खावें । हमने अनेक बार खाकर परीक्षा की है । परीक्षित है ।



## १८४ धातुवर्द्धक सुधा ।

दिल-दिमागकी कमजोरी और वीर्यकी कमीमें ।

असगन्ध आध पाव, शतावर पाव भर, सफेद मूसली डेढ़ पाव, तालमखाना आध सेर, मखाने ढाई पाव, सेमरका मूसला तीन पाव और चीनी एक सेर—सब दवाओंको कूट-पीस-छानकर चीनी मिला दो और हाँड़ीमें मुँह बाँधकर रख दो । सवेरे-शाम गेहूँके आध सेर आटेकी रोटी बनाकर, उसे चूर लो । उस चूरमेमें आध पाव चीनी और हाँड़ीमें की तीन तोले दवा भी मिला दो । इस चूरमेको, गायको ऐसे ही या जौकी भूसी और अलसीकी खलकी सानीमें मिलाकर ४० दिन खिलाओ । यह दवा खानेके दस दिन बाद, उस गायका धारोष्ण दूध मिश्री मिलाकर सवेरे-शाम पीओ । अगर ऐसा दूध ४० दिन पी लिया, तो फिर वह बल-पुरुषार्थ बढ़ेगा, जिसकी हृद नहीं । मज्जा यह कि फिर जल्दी-जल्दी धातुवर्द्धक दबाएँ न खानी होंगी । हमने हालमें ही एक धनी मारवाड़ीको, कलकत्तेमें, सेवन कराया, हड्डियोंका कङ्काल हृष्ट-पुष्ट हो गया; महाकुरूप चेहरा गुलाबका फूल बन गया । कलकत्तेमें तो ऐसा दूध पीना धनियोंका ही काम है; पर अन्य शहरोंमें, मध्यस्थितिके लोग भी, जिनके घरोंमें गायें हों, इसे आजमा सकते हैं ।

इसके सेवनसे क्षय, क्षीणता, प्रमेह, दिल-दिमागकी कमजोरी और सिरके रोग आराम होते हैं । जिनको वीर्यकी कमीसे नामर्दी या क्षयी रोग होता है, उनको तो अमृत ही है । परीक्षित है ।

## १८५ अमृतभस्मातक पाक ।

कोढ़ियों और बूढ़ों के लिये उत्तम ।

शुद्ध भिलावे ४ दो सेर लेकर, आठसेर जलमें पकाओ; जब दो सेर

\* दो सेर भिलावे पककर पेड़से गिरे हुए ईंटोंके चूर्णमें खूब रगड़ो और उनके



जल रह जाय, उतार कर मल-छान लो और पानी निकालकर मिलावे फेंक दो।

ऊपरके दो सेर भिलावोंके काढ़ेमें, चार सेर गायका दूध मिलाकर कढ़ाहीमें खोआ बना लो। खोआ होने पर उतार लो। फिर आध सेर घी कढ़ाहीमें डालकर, इस खोये को भून लो।

फिर चार सेर मिश्रीकी चाशनी बनाकर, उसमें ऊपरका भुना हुआ खोआ और नीचेकी दवाओंका चूर्ण मिलाकर उतार लो और छै-छै माशेकी गोलियाँ बनालो:—

पाकमें डालनेकी दवाएँ—

सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, पीपर ४ तोले, त्रिफला ४ तोले, तज ३ तोले, तेजपात २ तोले, छोटी इलायची ६ तोले, अड़ूसेके पत्ते ४ तोले, खैर ८ तोले, गिलोयका सत्त १० तोले, सफेद चन्दन ३ तोले, लौंग ३ तोले, सफेद मूसली ४ तोले, स्याह मूसली ४ तोले, कंकोल ४ तोले, मूर्वा २ तोले, अजवायन १ तोले, अजमोद १ तोले, खस ३ तोले, कसेरू ४ तोले, गजपीपर २ तोले, बिलाईकन्द ६ तोले, जायफल ३ तोले, जावित्री २॥ तोले, अगर ३ तोले, समन्दरशोष ४ तोले, मुलहठी ४ तोले और केशर २ तोले,—इन सबको पीस-छान कर, ऊपरकी चाशनीमें डाल दो। अगर असली “पारा भस्म” या “रससिन्दूर” भी १ तोले मिला दो, तो क्या कहना ? इसका मुँह बन्द करके, सात रात ओसमें और सात दिन ठण्डी जगहमें रख दो; बाद सात दिनके खाओ।

सेवन-विधि—बनानेके सात दिन बाद; इसमेंसे पहले एक-एक, फिर दो-दो या अधिक गोली रोज, सबेरे-शाम खाओ।

रोग नाश—इसके सेवन करनेसे कोढ़ आदि अनेक रोग नाश होते, आँखोंकी ज्योति और बल बढ़ता तथा हिलते हुए दाँत जम जाते हैं।

नीचेकी ठिपुनियाँ काट कर फेंक दो। अब यह शुद्ध हो गये। इन्हें पानीमें पका सकते हो।



कान और अँगुलियाँ—खराब होगये हों, तो ठीक हो जाते हैं । यह पाक निहायत उत्तम है । हमने अभी कोई ६ मास हुए, इसे दो तीनोंको दिया था । दोका हाल मालूम नहीं, पर एकके हिलते हुए दाँत जम गये, शरीर खूब तैयार हुआ, रंग खिल उठा; पर अब दो साल बाद, उसकी वैसी ही हालत होगई है । उसने ४२ दिन सेवन किया था । शायद अधिक दिन सेवन करनेसे और भी ज़ियादा-दिन-स्थायी लाभ करता । बूढ़ोंके लिये यह पाक “असगन्ध पाक” की तरह उत्तम है, क्योंकि दाँतोंको जमाता, बल बढ़ाता और नेत्र-ज्योतिको ठीक करता है; और बूढ़ोंको इन तीनों हीकी जरूरत होती है । हमने जिसे दिया, वह कोई ४० सालका है । शास्त्रमें यह पाक “कोढ़पर प्रधान” लिखा है ।

सावधानी—भिलावोंके पकानेमें धुएँसे बचना चाहिये । धुआँ लगनेसे शरीर सूज जाता है । अतः इसके बनानवाला, भरसक, भिलावोंकी धुआँसे दूर रह कर काम करे । सारे शरीरमें “तिलीका तेल” मल कर भिलावे पकावे, तो हानि न हो ।

## १८६ अफीम पाक ।

### सर्द मिजाजवालोंके लिये ।

छोटी इलायचीके बीज एक तोले, अकरकरा एक तोले, बंसलोचन दो तोले, छोटी पीपर दो माशे, बहमन सुर्ख छै माशे, भीमसेनी कपूर ३ माशे, जावित्री दो माशे, जायफल ३ माशे, कस्तूरी एक माशे, अवीध मोती तीन माशे, सोनेके वर्क नग ७ और चाँदीके वर्क नग ३१ लाकर रखो ।

मोती, कस्तूरी, कपूर और वर्कोंको अलग रखो । इनको छोड़कर, इलायची आदिको महीन पीसकर, कपड़ेमें छान लो । उधर मोतियोंको अर्क गुलाबमें १२ घण्टे खरल करो । पीछे इसमें कस्तूरी, कपूर और वर्क डालकर २ घण्टे घोटो । शेषमें, इसीमें इलायची आदिके पिसे-छने चूर्ण को भी मिला दो ।



अब दो तोले शुद्ध अफीमको, एक कलईदार कटोरीमें रखकर, ऊपरसे अन्दाज़का पानी डालकर, खूब मन्दी आगपर पकाओ । जब उसकी जेईसी गाढ़ी और पतली चाशनी हो जाय, नीचे उतार लो और गरम रहते-रहते, ऊपरका, मोती आदि दवाओंका चूर्ण इसमें मिला दो और खूब एक-दिल करलो । फिर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनालो ।

सेवन-विधि—जिसको जितनी अफीमका अभ्यास हो, वह उसी हिसाबसे एक, दो या अधिक गोली खाकर ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीवे । जिसको अफीमका अभ्यास न हो, पर जुकाम या खाँसी पीछा न छोड़ते हों, वह सन्ध्या-समय १ गोली खाकर मिश्री-मिला गरम दूध पीवे; फौरन ही खाँसी-जुकाम में फायदा होगा । रातको स्त्री-प्रसंग में आनन्द आवेगा । प्रमेहमें लाभ होगा । इसके सेवनसे शरीरका दर्द, लकवा, कानोंकी सनसनाहट, दिलकी कमजोरी और मसूढ़ोंकी सूजन प्रभृति रोग आराम होते हैं । परीक्षित है । पर यह पाक बात या कफ-प्रकृतिवालोंको ही लाभदायक है ।

एक बार हमें नजलेकी खाँसी हो गई, अनेक उपाय किये, तज्ञ आ गये, पर लाभ नहीं हुआ । हरदम जुकाम बना रहता, किसी तरह मिटता ही नहीं । इस पाकको बनाकर खाने से हमें खूब लाभ हुआ । रोग नाश होकर शरीर पुष्ट हो गया । पर अफीम का बढ़ाना खराब है । और यह बढ़ती है खूब जल्दी; अतः तोलकर गोलियाँ बनानी चाहियें । एक बाजरेके दाने-बराबर कम रहनेसे नशा नहीं आता, हाथ-पैर द्रुतते हैं, उबासियों-पर-उबासियाँ आती हैं । इसलिये इसे कम-ज़ियादा करके न खाना चाहिये, सदा एक समान मात्रा लेनी चाहिये । यह दस्त कब्ज करती है । पर ऊपरसे दूध पी लेनेसे कब्ज कम करती है । इसकी कम मात्रा लाभदायक है और अधिक सर्वनाश करने वाली है । भूलकर भी इसे बढ़ाना भला नहीं । ऊपर का नुसखा बहुत ही उत्तम है । अफीम



अच्छे मर्द को नामर्द बना देती है, पर इस नुसखेसे ज़रा भी हानि नहीं होती, उल्टा शरीर पुष्ट होता और मैथुनमें आनन्द आता है । प्रमेहादि रोग दूर भागते हैं ।

नोट—जो मोती और कस्तूरी न मिला सकें, शेष चीजें मिलाकर ही खायें । जिनकी पित्तकी प्रकृति हो, मिज़ाज गरम हो और साथही मौसम भी गरम हो, वे 'कस्तूरी' न डालें; बदलेमें खूब छना हुआ काजल-सा "सफ़ेद-चन्दनका बुरादा" २ तोले मिला दें । अगर इतनेपर भी गरमी मालूम हो तो पीपर, जायफल और जात्रित्री आदिको भी नुसखे से निकाल दें । केवल बंस-लोचन, इलायची, सफ़ेद चन्दन, कपूर और चाँदीके वर्क मिलावें । ऊपरका नुसखा अमीरोंके लायक है । नशे के साथ ही ताकत देता है । जो इतना भी खर्च न कर सकें, वे केवल बंसलोचन, इलायची और कपूर मिलाकर ही गोली बना लें ।

अफीम शोधवे की तरकीब—अफीमको पानीमें घोल कर, कपड़े की दो तहों या ब्लाटिंग पेपरोंमें छान लेनेसे पानी निकल जाता है और मिट्टी ऊपर रह जाती है । पानीमें ही अफीम चली जाती है । आगपर औटानेसे, वह पानी फिर अफीमके रूपमें बदल जाता है । आजकल बिना शोधी अफीम न खानी चाहिये । १ तोले अफीममें ६ माशे मिट्टी रहती है, जो कलेजेपर जमकर नाड़ियोंकी रोकती और अनेक रोग पैदा करती है । बाज़ारू अफीम चार तोले लाकर शोधनेसे असल शुद्ध दो तोले रहती है ।

## १८७ अफीम पाक ।

गर्म मिज़ाजवालोंके लिए ।

बंसलोचन ३ तोले, सफ़ेदचन्दनका कपड़ेमें छना हुआ बुरादा १॥ तोले, छोटी इलायचीके बीज १॥ तोले, कपड़ेमें छनीहुई कबाब-चीनी ४ माशे, कपड़ेमें छनी हुई खसकी जड़ १ तोले, शुद्ध कपूर ४॥ माशे और चाँदी के वर्क ४१ ताव—इन सबको पसारीकी दूकानसे लाकर, पीस-छानकर तैयार रखो । चाँदीके वर्क अलग रखे रहने दो ।

अब चार तोले अफीम लाकर, अर्क गुलाब डेढ़ पाव और अर्क केवड़ा डेढ़ पावमें घोलदो और मोटे कपड़े या ब्लाटिंग पेपरमें होकर छान लो । मिट्टी कपड़े या ब्लाटिंग पेपरपर रह जायगी और असल



शुद्ध अफीम, पानीके रूपमें, कपड़ेमें, होकर, नीचे निकल जायगी। उस अफीमके पानीको बहुत-ही मन्दी आगपर रखकर पकाओ। जब वह अवलेहके समान चाटने लायक गाढ़ा हो आवे, तब उसे नीचे उतार कर, उसमें ऊपरकी दवाओंके पिसे-छने चूर्ण और चाँदीके वर्क मिला दो और रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो।

यह अफीम-पाक उन लोगोंके लिए परम हितकारी है, जिनका मित्राज गरम है, यानी जिनकी पित्त प्रकृति है। सवेरे-शाम या शामको ही एक गोली, दो गोली या आधी गोली अथवा चौथाई गोली खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला हुआ गरम दूध पीनेसे जुकाम, नजला, सरदी, लकवा, सारे शरीरका दर्द, मृगी, कम्पवात, मुँहमें बदबू आना, मसूड़े फूलना, मुँहसे लार गिरना, स्त्री-प्रसङ्गमें रुकावट न होना-जल्दी ही खलास हो जाना और लिवर या यकृतकी कमजोरी आदि रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। जिनकी नजलेकी खाँसी किसी भी दवासे नहीं जाती, वह इन गोलियोंसे अवश्य चली जाती है। प्रमेह वालों और स्वप्नदोष रोगियोंको भी “अफीम-पाक” अमृत है।

### १८८ एरण्ड पाक ।

दस्त साफ लाकर, वात रोग नाशक और पुष्टिकारक ।

छिले हुए अरण्डीके बीज आधसेर, दूध चार सेर, मिश्री दो सेर और घी पाव-भर तैयार रखो। इनके सिवाब सौंफ, पीपर, लौंग, छोटी इलायची, दालचीनी, सोंठ, हरड़, जावित्री, जायफल, तेजपात, नागकेशर, असगन्ध, रास्ना, षडगन्धा\* और पित्तपापदा—इन सबका एक-एक तोले पिसा-छना चूर्ण तैयार रखो। साथ ही लोह-भस्म ६ माशे और अदरकका स्वरस ६ माशे—इन दोनोंको भी तैयार रखो।

बनानेकी तरकीब—पहले दूधको कढ़ाहीमें डालकर औटाओ। जब आधा दूध जल जाय, उसमें अरण्डीकी मोंगियोंकी—जलके साथ

\* जायफल, लौंग, कपूर, सुपारी सुगन्धवाला और कंकोल—ये छै सुगन्धित पदार्थ हैं।



सिलपर पिसी हुई—लुगदी ढाल दो । जब खोआ हो जाय, उतार लो । फिर कड़ाहीमें “घी” ढालकर गरम करो । घी आनेपर, उसमें ऊपरके तैयार खोयेको भूँज लो । फिर कड़ाही चढ़ाकर, मिश्रो और पानी ढालकर, चाशनी बनाओ । जब चाशनी होनेपर आवे, उसमें खोआ मिला दो और उतार लो । गरम-गरममें ही ऊपरका चूर्ण, लोह-भस्म और अदरकका रस मिला दो और ऊपरसे बादामकी कतरी हुई गिरी आध पाव, मुनक्का बीज निकाले हुए आध पाव और किशमिस आध पाव मिला दो और आधी-आधी छटाँकके लड्डू बनालो ।

सेवन-विधि—सवेरे-शाम, एक-एक लड्डू खाकर, ऊपरसे बकरीका एक पाव गरम दूध चीनी मिलाकर पीनेसे समस्त वायु-रोग, पित्त-रोग, उदर-रोग, प्रमेह-रोग, पाण्डु रोग, क्षय रोग, श्वास रोग और नेत्र-रोग आदि रोग आराम होते हैं । सबसे बड़ी खूबी यह है कि, दस्त साफ होता है । हमने इस पाककी गठिया, लकवा, शरीरके दर्द, कब्ज और अन्त्रवृद्धिमें कई बार परीक्षा की है । परीक्षित है । पाक क्या है अमृत है ।

## १८६ नोश दारू ।

शीतकालमें, बलवीर्य-वर्द्धक परम कामोत्तेजक ।

एक सेर सूखे आमले लेकर, चार सेर गायके दूधमें ढालकर भिगो दो । २४ घण्टे बाद, उस दूधको निकाल दो । फिर चार सेर दूध ऊपरसे ढाल दो । दूसरे दिन उस दूधको भी निकाल दो । तीसरी बार फिर चार सेर दूध ढाल दो और अगले दिन उस दूधको भी निकाल दो, खाली आँवले निकालकर सिलपर पीस लो और चार सेर दूध ढालकर आमलोंकी लुगदीको दूधमें घोल लो । इसके बाद रेजीके कपड़ेमें होकर रस छान लो ।

फिर मिट्टीकी कोरी हाँडीमें उस रसको ढालकर पकाओ । जब गाढ़ा हो जाय, रससे चौगुनी “मिश्री” पीसकर मिलादो, और साथ



ही नीचे लिखी दवाओंका पिसा-छाना चूर्ण भी डाल दो और भट आगसे उतारकर दो-दो तोलेके लड्डू बनाकर रख लो । यही “नोशदारू” है ।

चाशनीमें मिलाने की दवायें:—

दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जायफल, जावित्री, जटामाँसी, धनिया, तज, तगर, सफ़ेद जीरा, स्याह जीरा, कमलगट्टेकी गिरी, गुलहठी, शीतलचीनी, केशर और नागरमोथा—ये सब अलग-अलग लेकर पीस-छान लो और दो-दो तोले तोल कर एकमें मिला लो । फिर इसमें बङ्ग-भस्म एक तोले, अम्रक-भस्म एक तोले, कस्तूरी एक माशे और अम्बर २ माशे भी मिला दो—शेषमें, सब चूर्णको ऊपरकी चाशनीमें मिला, फौरन नीचे उतार लो ।

रोग-नाश—यह नोशदारू बल-वीर्य बढ़ानेवाली, कामको जगाने वाली, चालीस प्रकारके पित्त-रोग और आठ प्रकारके उदर-रोग नाश करनेवाली है ।

सेवन विधि—एक या आधा लड्डू खाकर, ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पीओ । बलाबलका विचार करके, मात्रा बढ़ा भी सकते हो, पर खूब शक्ति देखकर ।

## १६० पीपल पाक ।

जाड़ेमें प्रमेहहारक, वातनाशक, वीर्यवर्द्धक ।

एक सेर छोटी पीपर पीसकर चारसेर दूधमें पकाओ । जब खोआ हो जाय, उसे दो सेर गायके “घी”में भून लो । फिर चार सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ । चाशनी पतली हो, तब उसमें ऊपरवाले पीपलोंके खोयेको डाल दो और चलाओ । चूल्हे से उतारते समय, नीचे लिखी दवायें उसमें मिलाकर उतार लो । शीतल होने पर, १६ तोले “शहद” ओर मिला दो और रख दो ।

चाशनी में डालनेकी दवायें:—



छोटी इलायची, तज, तेजपात, लौंग, खस, सोंठ, पीपल, नागर-  
मोथा, लाल चन्दन, गोलमिर्च, तगर, भीमसेनी कपूर, जायफल, केशर,  
मुलहठी, तिल, वङ्ग-भस्म और लोह-भस्म, ये सब दो-दो तोले लेकर,  
पीस कूटकर छान लो और चाशनीमें मिलाकर, फौरन उतार लो ।

नोट—कपूर ६ माशे लोगे तो अच्छा होगा, क्योंकि ज़ियादा कपूरसे पाक  
कड़वा हो जाता है । वङ्ग-भस्म और लोह-भस्मको कुटनेवाली दवाओंसे अलग  
रखो । जब सब दवाओंको कूट-छानकर दो-दो तोले ले लो, तब इन्हें मिला दो  
ये आप ही काजल सी होती हैं । दवाओंके साथ कूटने छाननेसे छीजेंगी । इस  
पाकको ढीला या कड़ा रखना, अपनी मरज़ी पर मुनहसिर है ।

सेवन-विधि—इसे १ तोले खाकर ऊपरसे दूध-मिश्री पीओ । पीछे  
ज्यों ज्यों पचता जाय, तीन तीन माशे बढ़ाकर, दो-दो तोले रोज तक  
खाओ; पर अधिक नहीं ।

रोग नाश—यह बल-पुष्टिकारक, रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी,  
उम्र बढ़ानेवाला, वीर्य बढ़ाने वाला और वमन, मूर्च्छा, भ्रम आदि  
नाशक है । इसके सम्बन्धमें लिखा है:—

यह “पिप्पली पाक” इन्द्रियोंका बोधक, बीस प्रमेह नाशक,  
वातका अन्त करनेवाला, हृदयको हितकारक और आठों ज्वरोंको नाश  
करने वाला है । इनके सिवा यह आठारह प्रकारके कोढ़ नाश करके  
बालको पुत्र देनेवाला है । यह पिप्पली-पाक बालकों को भी हितकर है ।

## १६१ कैंवाछ पाक ।

शीतकालमें, नपुंसकोंके लिए अमृत ।

कौंचके बीजोंकी गिरी चार सेर लेकर, बीस सेर गायके दूधमें  
पकाओ । पकाने का बासन मिट्टीका या कलईदार हो । जब खोआ  
हो जाय, चूल्हेसे उतार लो ।

फिर एक कलईदार कढ़ाहीमें, आध सेर गायका “घी” डालकर,  
उसमें खोयेको भून लो । जब खोआ लाल हो जाय, नीचे उतार लो ।



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन

३२१

फिर आठ सेर भित्री या सफेद बूरेकी चाशानी करो और उसमें खोआ डालकर मिला लो। पीछे उसे उतार कर, गरमागर्म रहते, नीचेकी दवाओंका चूर्णभी उसमें मिला दो:—

चाशानीमें मिलाने की दवाएँ:—

जायफल, जावित्री, कंकोल, नागकेशर, लौंग, अजवायन, अकर-करा, ससन्दरशोष, सोंठ, मिर्च, पीपर, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, सफेद जीरा, प्रियंगू और गजपीपल—इन सबको एक-एक तोले ले कर, कूट-पीसकर, छान लो। फिर ऊपरकी चाशानीमें मिला दो। बस, कौंचका पाक बन जायगा।

सेवन विधि—इसमेंसे २ तोले या ज़ियादा खाकर, ऊपरसे धारोष्ण दूध या दूध-भित्री पीनेसे प्रमेह, क्षीणता, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, गोला, शूल और वायु रोग नाश हो जाते हैं। इसके सेवन करनेसे स्त्री को गर्भ रह जाता और नपुंसकोंका वीर्य बढ़ता है। प्रसूता स्त्रियोंको भी यह पाक हितकारक है। यह पाक खून-विकारको नष्ट करता और नेत्रोंको हितकारक है। यह पाक अत्यन्त काम-वर्द्धक और स्त्रियोंका घमण्ड नाश करनेवाला है। शास्त्रमें लिखा है:—

नरस्त्यनेन समो योगोदस्त्राभ्यां निर्मितः शुभः ।

कपिकच्छूबीजपाको दीपनः पाचनः परः ॥

इसके समान और योग—नुसखा—नहीं है। यह पाक परम दीपन और पाचन है। इसको अश्विनीकुमारोंने निकाला था।

## १६२ मेथी मोदक ।

जाड़ेमें मध्यस्थितिके बूढ़ोंके लिए परम लाभदायक ।

मेथी-दाने डेढ़ पाव और सोंठ डेढ़ पाव लाकर, पीस-कूटकर छान लो। फिर तीन सेर दूध, डेढ़ पाव घी और अढ़ाई सेर चीनी तैयार रखो।



सोंठ, गोल मिर्च, पीपर, चीतेकी छाल, धनिया, पीपरामूल, अजवायन, सफेद जीरा, कलौजी, सौंफ, कचूर, तेजपात, दालचीनी, जायफल और नागरमोथा—इनको भी पीस-छानकर रखलो ।

दूधको औटाओ; जब आधा दूध रह जाय, उसमें मेथी और सोंठका चूर्ण डालकर खोआ बनालो । पीछे कड़ाहीमें “घी” डाल, उसे आगपर रखो और खोयेको उसीमें भूँज लो । इसके बाद चीनीकी चाशनी बनाओ । चाशनी तैयार होने पर, उसमें खोआ डालकर मिलाओ और फिर सोंठ, मिर्च आदिके चूर्णको, जो पहलेसे पिसा-छना तैयार रखा हो, चाशनीमें डाल फौरन उतार लो और तीन-तीन तोलेके लड्डू बना लो ।

सेवन-विधि—एक या दो लड्डू अपने बलावलका विचार करके नित्य खाओ । इनके सेवन करनेसे समस्त बादीके रोग, शरीरका दर्द, जोड़ोंका दर्द, सिर दर्द, विषमज्वर, प्रदर रोग, नेत्र-रोग, नाकके रोग और मृगी आदि रोग नाश होते हैं तथा बल-वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ता है । जाड़ेमें यह लड्डू खाने-योग्य हैं । पुराने जमानेके लोग, जाड़ेमें मेथीके लड्डू बना-बनाकर बहुत खाते थे और खूब पुष्ट रहते थे । दिहातवाले तो अब भी खाते हैं । बड़ी अच्छी चीज है । परीक्षित है ।

## १६३ उच्चटा पाक ।

दारा गर्वहारी ।

सफेद चिरमिट्टी, कौंचके बीजोंकी गिरी और गोखरू—इन तीनोंको पाव-पाव भर लेकर और कूट-पीसकर, मेथी-मोदककी तरह दूधमें औटाकर खोआ कर लो और उसे घीमें भून लो; फिर मिश्रीकी चाशनीमें खोआ मिलाकर दो-दो तोलेके लड्डू बनालो । सवेरे-शाम एक-एक लड्डू खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे बूढ़ा भी जवान स्त्रियोंके अभिमानको खण्डन कर सकता है ।



नोट—मिश्री और घी “मेथी मोदक”के मुताबिक ले लो । अगर यह न होसके, तो चिरमिट्टी आदि तीनों चीजोंको पीस-छानकर, बराबरकी मिश्री मिला लो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण खाकर, दूध पीओ । परीक्षित है ।

## १६४ रसाला या श्रीखण्ड ।

### तरम वाजीकरण सुस्वादु शिखरन

गाढ़ा मीठा मलाईदार दही	...	...	२ सेर
सफेद चीनी	...	...	१ सेर
गायका घी	...	...	१ छटाँक
शहद	...	...	१ ”
कालीमिर्च	...	...	६ माशे
छोटी इलावची	...	...	६ ”
दालचीनी	...	...	६ ”
नागकेशर	...	...	६ ”
तेजपात	...	...	६ ”
सोंठ	...	...	६ ”

कालीमिर्च आदि छहों चीजोंको महीन पीसकर दहीमें मिला दो । फिर चीनी, घी और शहदको मिला दो । इसके बाद, सब चीज मिले हुए दहीको महीन कपड़े या तारोंकी महीन चलनीसे मथकर छान लो और कपूरसे सुगन्धित किये हुए मिट्टीके नये वासनमें रख दो । इसको भोजनके पदार्थ पूरी और भात वगैरहके साथ खाना चाहिये । यह रसाला भी परम वाजीकरण है । कहा है:—

एषा वृकोदरकृता सुरसा रसाला ।

या स्वादिता भगवता मधुसूदनेन ॥

वृकोदर—भीमसेनने यह सुस्वादु रसाला बनाई और भगवान् कृष्णने चाट-चाटकर खाई थी ।



## १६५ शतावरी घृत ।

बल-वीर्यवर्द्धक और परम पुष्टिकारक ।

गायका घी	...	...	१ सेर
शतावरका स्वरस	...	...	१० सेर
गायका दूध	...	...	१० सेर
पीपर	...	....	१० तोले
शहद	...	...	१० तोले
सफेद बूरा	...	...	२० तोले

गायके घी, शतावरके रस और दूध—तीनोंको कलईदार कढ़ाहीमें ढालकर चूल्हे पर रख दो और मन्दी-मन्दी आग लगने दो । जब रस और दूध जलकर “घी” मात्र रह जावे, उतार कर छान लो । पीछे इस घीमें पीस-छानकर पीपर मिला दो, इसके बाद बूरा और शहद मिला दो और साफ चीनी या काँचके बर्तनमें रख दो । इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है । इस घीको अपने बलानुसार खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे बलवीर्य बढ़ता और पुष्टि होती है ।  
परीक्षित है ।

## १६६ आमलोंका हलवा ।

रति-शक्तिवर्द्धक ।

आमले १ तोले, चीनिया गोंद १ तोले, गेहूँका सत्त १ तोले, चीनी ३ तोले और घी ४ तोले तैयार रखो । पहले गेहूँके सत्तको घीमें भून लो । फिर उसमें गोंद और आमले पीसकर मिला दो । शेषमें, चीनीको पानीमें घोल कर मिला दो और हलवा पका लो । मात्रा—२ तोले । समय—सवेरे । यह हलवा भी अच्छा वाजीकरण है ।



## १६७ पुष्टिकर पूरी ।

बलवर्द्धक और पुष्टिकारक ।

काले तिल, असगन्ध, कौंचके बीज, विदारीकन्द और मुलहठी—इनको समान-समान लेकर कूट-पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णको बकरीके दूधमें गूँधकर छोटी-छोटी पूरियाँ बनालो और बकरीके घीमें तल लो। अपने बलके अनुसार एक या दो तोले पूरी खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे वीर्य पुष्ट होकर शरीरमें बल आता है।

## १६८ वीर्यवर्द्धक खाद्य ।

समस्त धातु-वर्द्धक ।

मिश्री ४ सेर, गायका उत्तम घी १३ छटाँक, विदारीकन्दका चूर्ण १३ छटाँक, पीपरोंका चूर्ण एक सेर दस छटाँक और बड़िया शहद एक सेर दस छटाँक—इन सबको एक चीनी या कौंचके बासनमें मिलाकर रख दो। इसमेंसे दो तोले या पाँच तोले, जितना पच सके, निकालकर, नित्य सवेरे ही खानेसे वीर्य बढ़ता, कण्ठ साफ होता तथा रस, रक्त आदि धातुएँ बढ़ती हैं।

नोट—उपरोक्त दोनों नुसखे हमारे परीक्षित नहीं हैं, परन्तु इनके उत्तम होनेमें शक नहीं।

## १६९ अश्वगन्धादि घृत ।

प्रथम श्रेणीका वीर्य-विकार और वात-विकार नाशक ।

असगन्धका पिसा-छना चूर्ण	...	...	१ सेर
गायका दूध	...	...	८ ”



गायका घी	...	...	१ सेर
सोंठका चूर्ण	...	...	४ तोले
कालीमिर्चका चूर्ण	...	...	४ "
पीपरका चूर्ण	...	...	४ "
चतुर्जातका चूर्ण (छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर)	...	...	४ "
बायविडंगका चूर्ण	...	...	४ "
जावित्रीका चूर्ण	...	...	४ "
बलाका चूर्ण	...	...	४ "
अतिबलाका चूर्ण	...	...	४ "
गोखरूका चूर्ण	...	...	४ "
विधाराका चूर्ण	...	...	४ "
लोह-भस्म	...	...	४ "
बङ्ग-भस्म	...	...	४ "
अभ्रक-भस्म	...	...	४ "
शहद	...	...	३२ "
मिश्री	...	...	३२ "

बनानेकी विधि—असगन्ध, दूध और घीको कलईदार वर्तनमें डालकर, मन्दी मन्दी आगसे पकाओ। जब दूध जलकर घी मात्र रह जाय, उसमें सोंठसे लेकर विधारा तकके चूर्ण, तीनों भस्म और मिश्री मिलाकर उतार लो। कुछ शीतल हो जानेपर उसमें “शहद” मिला दो और चिकने वर्तनमें भरकर रख दो।

अपने अग्नि-बलानुसार, दोनों समय, इसमेंसे खानेसे अर्दित-वात, लकवा, हनुस्तम्भ—मुँहका बन्द रह जाना या खुला रह जाना, सन्धिगत वायु—गठियाँ, कमरकी पीड़ा, गर्भ-सन्बन्धी रोग, बच्चा जननेके रोग, वीर्यके सभी विकार और सब तरहके वात रोग—इस तरह आगते हैं, जिस तरह मतवाले सिंहको देखकर हिरन भागते हैं।  
यह घी परम वाजीकरण है।



## २०० वृहत् अश्वगन्धादि घृत ।

शुक्रदोष नाशक और नपुंसकता हारक ।

असगन्ध तीन सेर आधपाव लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ । जब चार सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो ।

बकरेका मांस सवा छै सेर लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ । जब आठ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो ।

गायका उत्तम घी एक सेर और गायका उत्तम दूध ३ सेर अलग तैयार रखो ।

काकोली, क्षीरकाकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, कौंचके बीज, छोटी इलायचीके बीज, मुलहठी, बीज निकाले मुनक्के, मुगवन, मषवत्त, जीवन्ती, पीपर, बरियारा, शतावर और विदारीकन्द—इन उन्नीस चीजोंको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी कर लो ।

अब असगन्धके काढ़े, मांसके काढ़े, घी, दूध और दवाओंकी लुगदी—सबको कलईदार कढ़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब काढ़े और दूध जल कर, थोड़े-थोड़े रह जायँ, उतारकर कपड़ेमें छान लो । इसके बाद छने हुए पतले प्रदार्थको फिर कढ़ाहीमें डालकर औटाओ । जब घी मात्र रह जाय, उतार कर घीको छान लो । जब शीतल हो जावे, इसमें आध पाव मिश्री मिला दो और बर्तनमें रखदो । इसमेंसे ६ माशसे १ तोले तक घी खाकर, गरम दूध पीनेसे शुक्रके समस्त रोग और नामर्दी वगैरः व्याधियाँ आराम हो जाती हैं ।



## उत्तमोत्तम रस ।

### २०१ लक्ष्मी विलास रस ।

प्रमेहादि नाशक और मैथुन-शक्ति-वर्द्धक ।

शुद्ध पारा एक तोले और शुद्ध गन्धक २ तोले—दोनोंको बारह घण्टे घोटकर कजली बनालो । फिर इसीमें काले अभ्रककी निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म चार तोले और भीमसेनी कंपूर एक तोले भी मिला दो और ३ घण्टे घोटो ।

जायफल, जावित्री, विधायरेके बीज, धतूरेके शोथे हुए बीज, भाँग के बीज, विदारीकन्द, शतावर, गुलसकरी, गंगेरन, गोखरू और समन्दरफल—इन सबको बराबर-बराबर दो-दो तोले लेकर, महीन पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो ।

अब पारे आदिके और जायफल आदिके चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे “पानोंका रस” दे-दे कर, बारह घण्टे तक खरल करो । जब मसाला गाढ़ा हो जाय, तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बनालो और छाया में सुखा लो ।

सेवन-विधि—अपने बलाबल-अनुसार एक या आधी गोली खाकर दूध-मिश्री पीओ ।

रोग-नाश—इन गोलियोंसे सन्निपातके घोर रोग, वायु-रोग, १८ कोढ़, २० प्रकारके प्रमेह, नासूर, गुदाके घोर रोग, भगन्दर, कफ और बादीके रोग, हाथी-पाँव, गलेकी सूजन, आँतोंका बढ़ना, अतिसार खाँसी, पीनस, चूथी, बवासीर, मुटाफा, देहमें बदबू आना, आमवात,



जिह्वास्तम्भ, गलग्रह, अर्दित रोग, गलगण्ड, उदर-रोग, वातरक्त, कान, नाक और नेत्रोंके रोग, मुखकी विरसता, शरीरका दर्द, शिरका दर्द और स्त्रियोंके रोग—नाश होते हैं। इस रसके सेवनसे बूढ़ा भी तरुण और कामदेवके समान हो जाता है। उसका वीर्य कभी क्षय नहीं होता और बाल सफेद नहीं होते। वह मस्त हाथी की तरह, १०० स्त्रियों से भोग कर सकता है। एक खूबी यह है, कि इसमें आहार-विहारकी क़ैद नहीं। अगर कोई इसे नियमानुसार खाय और मांस, मिष्ठान्न, दूध, दही, जल, माठसे बने पदार्थ और मद्य सेवन करे; तो भी ऊपरके फल मिल सकते हैं।

शास्त्रमें लिखा है:—

प्रोक्तः प्रयोगराजोऽयं नारदेन महात्मना ।

नास्ना लक्ष्मीविलासस्तु जगन्नाथे जगदगुरौ ॥

अस्य संसेवनात्कृष्णो लक्ष नारीषु वल्लभः ॥

यह प्रयोगराज महात्मा नारदने श्रीकृष्ण भगवान्से कहा था, इसीके प्रभावसे श्रीकृष्ण लाख स्त्रियोंके प्यारे हुए थे।

## २०२ महालक्ष्मी विलास रस ।

प्रथम श्रेणीका वीर्य और मैथुन-शक्ति वर्द्धक ।

( १ ) सहस्रपुटी अभ्रक-भस्म	...	४ तोले
बङ्गभस्म	...	१ ”
चाँदीकी भस्म	...	६ माशे
सोना मक्खीकी भस्म	...	६ ”
ताम्बा भस्म	...	३ ”
सोनेकी भस्म	...	६ ”





( २ ) शुद्ध पारा	...	...	२ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	२ "
✽	✽	✽	✽
( ३ ) भीमसेनी कपूर	...	...	२ तोले
जाबित्री	...	...	२ "
जायफल	...	...	२ "
विधायरेके बीज	...	...	२ "
शुद्ध धतूरेके बीज	...	...	२ "
✽	✽	✽	✽

बनानेकी विधि—पहले पारे और गन्धकको खरलमें डालकर, १२ घण्टों तक, खरल करो। जब जरा भी चमक न रहे, काली स्याह कजली हो जाय, अलग रख दो।

कपूरको खरल करके कपड़ेमें छानो और दो तोले तोलकर एक प्यालीमें रखो। फिर जाबित्रीको पीस-छानकर दो तोले तोलो और उसी प्यालीमें डाल दो। फिर जायफलको पीस-छानकर दो तोले तोलो और उसी प्यालीमें रख दो। फिर विधायरेके बीजोंको पीस-छानकर दो तोले तोलो और उसी प्यालीमें रख दो। अन्तमें धतूरेके बीजोंको पीस-छानकर दो तोले तोलो और उसी प्याली में रख दो। इस प्यालीके पाँचों चूर्णोंको एकमें मिला दो। यह वजनमें मिलाकर १० तोले होंगे।

अब एक साफ खरलमें, अभ्रक आदि छहों भस्मोंको, पारे-गन्धककी कजलीको और कपूरादि पाँचों बीजोंके पीसे-छने चूर्णोंको मिला दो। नागर पानोंको-कूट-पीसकर और कपड़ेमें निचोड़कर रस निकालो। इस रसको उसी खरलमें थोड़ा-कोड़ा डालो और घोटो। २४ घण्टे तक घोटते रहो और पानोंका रस सूखनेपर डालते रहो। जब चौबीसवें घण्टेमें मसाला गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय और रस मत डालो। उस मसालेकी दो-दो रत्तीकी गोलियाँ



बना लो और छायामें सुखा लो । “यही महालक्ष्मी विलास रस” है । यह “महालक्ष्मी विलास रस” ऊपरवाले ‘लक्ष्मी विलास रस’ से बहुत ज़ियादा बलवान है ।

सेवन विधि—इस रसको बलाबल-अनुसार, पानोंके रसके साथ नित्य सेवन करनेसे प्रमेह, शुक्रक्षय, लिङ्गका ढीलापन, वीर्य-सम्बन्धी सारे रोग और सन्निपात ज्वर—ये सब निश्चय ही नाश होते हैं । मरनेके समय, जब हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं, तब इस रसकी एक-दो मात्रा पानोंके रसमें देनेसे अपूर्व चमत्कार दीखता है । जिसका बोल बन्द हो जाता है वह बोलने लगता है और होशमें आ जाता है, पीछे चाहे मर जावे । प्रमेह और वीर्यके रोगोंमें रोगीका मित्राज और मौसमका खयाल करके इसे और अनुपानोंके साथ सेवन करा सकते हैं । गर्म मित्राज वालोंको दूध-मिश्रीका अनुपान अच्छा है ।

जितनी इन रसोंकी तारीफ लिखी है, आजकल ये उतना लाभ क्यों नहीं दिखाते ? अगर ये रस ठीक इसी विधिसे तैयार किये जावें, इनमें पड़नेवाली भस्म और दवाएँ ठीक हों, निर्दोष हों तथा रोगी दो चार महीने लगातार सेवन करे, तो ठीक उतना ही फल दीख सकता है । पहलेके लोग जब कि इन रसोंकी दो-दो माशेकी मात्रा खाकर पचा सकते थे, आज-कलके लोग मुश्किलसे १ रत्ती पचा सकते हैं, बस इसी वजहसे ये फायदा दिखानेपर भी जल्दी फायदा नहीं दिखाते । इसमें इन रसोंका क्या दोष ? दोष है, सेवन करने वालोंका । उनमें पहलेके मनुष्योंके समान पचानेकी शक्ति तो नहीं है, पर चाहते हैं उतना ही फल । पहलेके आदमी मथुरासे दिल्ली ६० कोस—दो दिनमें पहुँचते थे । आज-कलके १६ दिनमें पहुँचते हैं, क्योंकि ये उतना चल नहीं सकते । यही बात दवाओंके सम्बन्धमें समझनी चाहिये । आजकलके लोग कम दवा पचा सकते हैं; इसलिये धीरे-धीरे, बहुत दिनों में लाभ दीखता है ।



## २०३ चन्द्रोदय रस क्रिया ।

यौवनमदोन्मत्ता नारी गर्वनाशक ।

सोनेके वर्क चार तोले, शुद्ध पारा ३२ तोले और शुद्ध गन्धक ६४ तोले,—इन तीनोंको खरलमें डालकर, कजली करो । फिर इस कजलीमें “कपासके नरम फूलोंका रस” डाल-डालकर घोटो । फिर “वीग्वारका रस” दे-देकर घोटो । शेषमें, कजलीको सुखा लो । एक बड़ी आतिशी पक्की शीशी पर सात कपरौटी करके सुखा लो, उस शीशीमें इस सूखी कजलीको भर दो । एक हाँडीके पैंदेमें छेद करके, उस छेदपर शीशीको, बीचमें, जमा दो । शीशी और हाँडीकी सन्धोंपर चारों ओर, चिकनी मिट्टीमें राख, लोहचूर और रूई सानकर लगा दो । इस हाँडीमें शीशीके चारों ओर, शीशीके गले तक, गरम करके, बालू भर दो । ( हाँडी पर भी सात कपरौटी कर लेना । ) बालू शीशीमें न जाय, इसलिये कागसे शीशीको बन्द करदो । फिर हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा दो । इस समय शीशीका काग निकालकर, मुँह खोल दो । पहले मन्दी आग दो, फिर मध्यम आग दो और शेषमें आगको तेज कर दो । जब शीशीसे धूआँ निकल जाय, एक ईंटका टुकड़ा शीशी के मुँहपर रख दो । इस तरह, रात-दिन, ७२ घण्टे आग दो, आग बन्द न हो । बीच-बीचमें, लोहेकी सींक आगमें तपात-पाकर शीशीमें पैंदे तक पहुँचाते रहो । सींकके डालनेसे आगकी लपट उठेगी और शीशीके मुँहमें जो मैला आ जायगा वह हट जायगा । जब देखो कि शीशीकी नाली काली-स्याह हो गई है; शीशीके भीतर लाल रङ्ग चमक रहा है; लोहेकी सींक डालनेसे आगकी लौ नहीं उठती; तब समझ लो, कि “चन्द्रोदय” तैयार हो गया । फिर आग मत दो । शीतल होनेपर, शीशी फोड़कर, गलेमें लगा हुआ “चन्द्रोदय रस” निकाल लो । गलेपर पत्रसे जमे हुए मिखेंगे । जरा सा पत्तर पीसनेपर “चन्द्रोदय” लाज सुख दीखेगा ।



नोट ( १ )—अगर चन्द्रोदयके चमकदार पत्तर न जमें, पत्तर काले या मैले हों; तो आप पारेसे आधी शुद्ध गन्धक और उस शीशीके भीतरके मसाले को फिर खरल करो और फिर उसी तरह कपरोटी की हुई शीशीमें रख शीशी को पहले कहीं विधिसे हाँडीमें रख, बालू भर, आगपर चढ़ा दो और फिर ७२ घण्टे आग दो। इस बार ठीक साफ चमकदार “चन्द्रोदय” मिलेगा। शीशीसे निकालते समय ध्यान रखो कि चन्द्रोदयमें काँचके टुकड़े न मिलें, नहीं तो जो खायगा वही मरेगा; मरेगा नहीं तो आँतें तो कट ही जायेंगी।

( २ )—पत्थरके कोयलेके चूल्हेपर हाँडी रखकर पकानेसे प्रायः २० घण्टोंमें चन्द्रोदय तैयार हो जाता है। सवेरे ६ बजे चढ़ानेसे रातके तीन या चार बजे उतर जाता है। १२ घण्टे बाद, शीशीको घण्टेमें चार-चार या छै-छै बार देखते रहो, ज्योंही धूआँ बन्द हो, सीक डालनेसे आगकी लपट शीशीमें से न निकले—भीतर शीशीके पैदेमें लाल-लाल रंग नजर आवे, आग बन्द कर दो। यहाँकें बंगाली कविराज शीशीका धूआँ निकल जानेपर भी, शीशी का मुँह ईंटके टुकड़े आदिसे बन्द नहीं करते। हमने भी कई बार ऐसा ही किया। कुछ कम माल निकला और कोई हानि नहीं हुई; रस ठीक बन गया।

### चन्द्रोदय रसकी सेवन-विधि ।

जब चन्द्रोदय रस तैयार हो जाय, उसमेंसे चार तोले चन्द्रोदय, १६ तोले भीमसेनी कपूर, ६४ माशे जायफल, ६४ माशे काली मिर्च, ६४ माशे लौंग और ४ माशे कस्तूरी—इन सबको खरलमें डालकर घोटो, फिर शीशीमें रख दो।

सेवन-विधि—इसमेंसे १ माशे रस पानमें रखकर, कुछ दिन खानेसे, पुरुष सैकड़ों मदमाती स्त्रियोंका घमण्ड नाश कर सकता है। जो एक वर्ष तक इस रसको सेवन करता है, उसे स्थावर और जङ्गम विष तथा जलके विषसे कभी कोई तकलीफ नहीं होती। इसके लगातार दस-पाँच वर्ष सेवन करनेसे बुढ़ापा और मृत्यु दूर आगते हैं।



## २०४ नपुन्सक वल्लभ रस ।

नपुन्सकके लिये सच्चा अमृत—

पहले चार तोले पारेको मुर्गीके अण्डेके भीतर भर दो, फिर अण्डेको बन्द करके, उसपर कपड़-मिट्टी कर दो ।

फिर एक कोरी हाँडीमें पाँच सेर “अर्क आकाशबेल” का भर दो और उसीमें उस कपरौटी किये हुए अण्डेको रख दो । फिर उस हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा दो और नीचे आग लगाओ । जब चौथाई अर्क बाकी रहे, उसी हाँडीमें पाँच सेर “छाछ” या माठा भी डाल दो । जब चौथाई छाछ रह जाय, हाँडीको चूल्हेसे उतार लो और शीतल होनेपर पारेको निकालकर साफ कर लो ।

उस साफ किये हुए पारेको खरलमें डालकर, उसमें चार तोले सेंधानोन पीसकर मिला दो और १२ घण्टे तक लगातार खरल करो । इसके बाद पारेको निकालकर साफ कर लो ।

अब ऊपरके पारेमेंसे दो तोले पारा लेकर और उसमें दो तोले शुद्ध गन्धक मिलाकर खरलमें घोटो और कजली करो । जब चिकनी और काली कजली हो जाय, उसमें २ तोले शुद्ध संखिया और चार तोले शुद्ध मैन्सिल और मिला दो और खूब खरल करो ।

खरल होनेपर, इस मसालेको कपरौटी की हुई आतिशी शीशीमें भर दो और शीशीका मुख बन्द कर दो । फिर एक हाँडीके बीचमें शीशीको रखकर, उस शीशीके चारों ओर बालू गरम करके भर दो । बालू शीशीके गले तक आनी चाहिए । इस हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा दो और नीचे “बेरकी लकड़ी” जलाओ । २४ घण्टे आग बराबर लगाओ । इसके बाद लकड़ी निकाल लो, पर कोयले जलते हुए चूल्हेमें भरे रहने दो । जब आग शीतल हो जाय, शीशीको निकाल लो ।

शीशीको ऐसी युक्तिसे तोड़ लो, कि रसमें काँचके टुकड़े न मिलें । अथवा युक्तिके साथ एक छुरीसे—जो शीशीमें घूम सके—शीशीके



गलेमें लगे हुए फूलसे पदार्थको निकाल लो । इसके बाद शीशीकों तोड़ लो । उसके गलेमें जो और फूल मिलें, उन्हें अलग रखो; पहले फूलोंमें न मिलाओ । इनमें खूब नज़र करके काँचके टुकड़े देख लो । दोनोंको अलग अलग रख लो । अगर काँचका ज़रा भी शक न हो, तो दोनों फूलसे पदार्थोंको एकमें मिला सकते हो । पैदेमें कीट मिलेगा, उसे अलग धर दो । फूल ही मतलबके हैं ।

सेवन-विधि—इस रसमें से १ रत्ती रस लेकर, उसमें एक-एक माशो सफ़ेद इलायची और बंसलोचन तथा ६ माशो “शहद” मिलाकर चाटो । यह रस निस्सन्देह नामर्दको मर्द करता है । परीक्षित है ।

नोट—हाँडीमें बालू भरते समय शीशीपर काग लगा देना और जब बालू शीशीके गले तक आ जाय, काग निकाल लेना । ऊपरके “चन्द्रोदय” रसकी ही तरह और सब बातोंका खयाल रखना ।

## २०५ लघु चन्द्रोदय रस ।

( चन्द्रोदय-यकरध्वज )

शीतकालमें, कामियोंके लिए सच्ची सुधा ।

जायफब	...	...	१ तोलें
लौंग	...	...	१ ”
भीमसेनी कपूर	...	...	१ ”
कालीमिर्च	...	...	१ ”
सोनेके वर्क	...	...	१ माशो
कस्तूरी	...	...	१ ”
रससिन्दूर	...	...	४॥ तोलें

इन सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे पानोंका रस दे-देकर ४८ घंटों तक घोटो; जब घुट जाय, चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बनालो ।

अपने बलानुसार एक या आधी गोली भलाईमें रखकर खाने और ऊपरसे दूध-मिश्री पीनेसे सब रोग नाश होकर बलवीर्य, कान्ति



और जठराग्नि आदि बढ़ते हैं । मक्खन-मिश्री या पानोंके रसके साथ भी खाते हैं । बड़ा ही उत्तम रस है । शीतकालमें हरएक मनुष्य को बराबर सेवन करना चाहिये ।

नोट—जिनको उत्तम रस-सिन्दूर दरकाद हो, हमारे यहाँ से मँगा लें ।

## २०६ मकरध्वज रस ।

नपुंसकता नाश करनेमें अद्वितीय ।

सोने के पतले पत्तर शोधे हुए	....	४ तोले
शुद्ध पारा	...	४ "
शुद्ध गन्धक	...	६६ "

इन तीनोंको मिलाकर खरल करो और कज्जली बनाओ । फिर इस कज्जलीको “लाल कपासके फूलोंके रसमें” ४ पहर या १२ घण्टे घोटो । फिर चार पहर या १२ घण्टे “घींग्वारके रसमें” घोटो । फिर पृष्ठ ३३२-३३३ में लिखी चन्द्रोदयकी विधिसे फूँक लो ।

फिर मकरध्वज १ तोले, कपूर ४ तोले, लौंग ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, जायफल ४ तोले और कस्तूरी ६ माशे मिलाकर खरल कर लो और रख दो । इसकी मात्रा २ रत्तीकी है । पान के रसके साथ एक-एक मात्रा खानेसे ध्वजभंग—नामर्दी आदि रोग निश्चय ही चले जाते हैं ।

नोट—इस मकरध्वज रस और उस चन्द्रोदय रसमें कोई विशेष भेद नहीं है, पारे और गन्धककी तोलमें ही, फर्क है ।

## २०७ सिद्धसूत रस ।

चौर्यवर्द्धक एवं शिश्नशिथिलता नाशक ।

शुद्ध मोती	...	...	१ तोला
शुद्ध पारा	...	...	१ "
सुवर्ण-भस्म	...	...	१ "



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

३३७

चाँदीकी भस्म	...	...	...	१ तोला
जवाखार	...	...	...	१ " "
शुद्ध गन्धक	...	...	...	१ " "
लाल कमलके पत्तोंका स्वरस				

पहले मोतीसे जवाखार तककी पाँचों चीजोंको कमलके पत्तोंके रसमें ३ घण्टे तक खरल करो। इसके बाद इस चूर्णके बराबर शुद्ध गन्धक मिला दो और बारह घण्टे तक खरल करो। फिर इस मसालेको चन्द्रोदयकी तरह, कपरोटी की हुई शीशीमें भरकर, शीशीको बालुका-यन्त्रमें रखकर, १२ घण्टे तक आग दो। जब स्वाँग शीतल हो जावे, सिद्ध सूत—पारेको शीशीसे निकालकर उत्तम साफ शीशीमें रख दो।

इसमेंसे पाँच रत्ती लेकर, मूसली और मिश्रीमें मिलाकर सेवन करो। इससे वीर्य बढ़ता, इन्द्रियोंका ढीलापन मिटता और दुर्बल बलवान होता है।

इस रस को सेवन करते समय घी, दूध, मूँग, साँठी चाँवल, भैंसका दूध और मक्खन हितकारी हैं। लाल मिर्च, तेल, गुड़ और खटाई आदि अपथ्य हैं।

नोट—इसकी सब चीजोंको खरल करके चन्द्रोदय रसकी विधिसे, जो पृष्ठ ३३२-३३३ में लिखी है, १२ घण्टे तक फूँको। मसाले और खरल करनेकी विधिमें ही भेद है। शीशीकी कपरोटी करने, बालूकी हॉडीमें रखने और फूँकनेकी विधिमें भेद नहीं है। “चन्द्रोदय”में ७२ घण्टे आग लगानी होती है और “सिद्धसूत रस”में १२ घण्टे आग लगानी होती है।

## २०८ पूर्णचन्द्र रस ।

अत्यन्त पुष्टिकारक और रति-शक्तिवर्द्धक ।

रससिन्दूर	...	...	...	१ तोले
अभ्रक भस्म	....	...	...	१ " "
शुद्ध शिलाजीत	...	...	...	१ " "



बायबिडंग ... १ तोले

सोना मक्खीकी भस्म ... १ ॥

इनको खरल करके रख लो । इसमें से अपने बलाबल अनुसार एक, दो या चार रत्ती रस १ तोले घी और ६ माशे शहदमें मिलाकर खाने से अत्यन्त पुष्टि होती है ।

नोट—हमारे यहाँ रससिन्दूर, अभ्रक भस्म, शुद्ध शिलाजीत और सोनामक्खीकी भस्म मिलती हैं । अभ्रक भस्म निश्चन्द्रलेनी चाहिये ।

२०६ वृहत्पूर्णचन्द्र रस ।

प्रमेह, नपुंसकता और मन्दाग्नि आदि नाशक परम रसायन

और वाजीकरण ।

शुद्ध पारा	...	...	४ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	४ ॥
लोह भस्म	...	...	५ ॥
अभ्रक भस्म	...	...	५ ॥
चाँदीकी भस्म	...	...	२ ॥
वज्रभस्म	...	...	४ ॥
सोना भस्म	...	...	१ ॥
ताम्बा भस्म	...	...	१ ॥
कौंसी भस्म	...	...	१ ॥
जायफल	...	...	२ ॥
लौंग	...	...	२ ॥
इलायची ( छोटी )	...	...	२ ॥
दालचीनी	...	...	२ ॥
जीरा, सफेद	...	...	२ ॥
कपूर	...	...	२ ॥
प्रियंगुफल	...	...	२ ॥
नागरमोथा	...	...	२ ॥



इन सबमेंसे जायफल आदि आठों चीजोंको पीस-छानकर दो-दो तोले लो । फिर सारी चीजोंको एकमें मिलाकर “धोग्वार”के रसमें खरल करो और सुखाओ । फिर “त्रिफलेके काढ़े”में खरल करके सुखाओ । इसके बाद “अरण्डीकी जड़के रस”में खरल करके गोला बना लो और रेंडीके पत्तेमें गोलेको लपेटकर, तीन दिन-रात, धानोंके ढेरमें दबा रहने दो । तीन दिन बाद निकालकर चने-समान गोलियाँ बना लो । एक-एक गोली पानोंके रसमें या पानमें खानेसे बल-वीर्य और आयुकी वृद्धि होती है ।

इस रसको काशीनाथ आचार्यने समस्त रोग-नाशार्थ कहा है, यह रस बलकारी, रसायन, वीर्य बढ़ानेवाला और उत्तम बाजीकरण है । इससे बढ़कर और बाजीकरण नहीं है । इसके सेवनसे मनुष्य रोग-रहित होता है । समस्त शास्त्र जानने योग्य बुद्धि होती है । कामदेवके समान बल, कान्ति और देह होती है । कमजोरोंको, थोड़े वीर्यवालोंको, बूढ़ोंको और वातरेतसोंको यह रस ओज और तेज देता है । अगर इसका अभ्यास किया जावे, तो अकाल मृत्यु नहीं होती और बुढ़ापा नहीं आता । यह बूढ़ोंको भी स्त्री-प्रसङ्गकी शक्ति देता है । यह रस आज्ञामूढ़ा है । राजाओंके लायक है । इससे प्रमेह, श्वास, खाँसी, अरुचि, आमशूल, हृदयशूल, पित्तशूल, मन्दाग्नि, पुरानी संग्रहणी, आमवात, अम्लपित्त, भगन्दर, कामला, पीलिया और वातरक्त आदि रोग आराम होते हैं ।

नोट—इसके लिए पारा और गन्धक खूब शुद्ध लेने चाहिएँ । लोहभस्म पानीपर गेहूँ या चावल तैरानेवाली, अभ्रक-भस्म निश्चन्द्र तथा और भस्में निरुथ ( जो कच्ची न हो ) लेनी चाहियें ।

## २१० श्रीमन्मथरस ।

अनेक स्त्रियोंवाले राजाओंके योग्य ।

शुद्ध पारा

...

...

१ तोले



शुद्ध गन्धक	...	...	१ तोले
अभ्रक भस्म	...	...	२ "
भीमसेनी कपूर	...	...	८ माशे
बंग भस्म	...	...	८ "
ताम्बा भस्म	...	...	४ "
लोहा भस्म	...	...	१ "
विधायरेके बीज	...	...	४ "
विदारीकन्द	...	...	४ "
शतावर	...	...	४ "
तालमखाना	...	...	४ "
खिरेंटी	...	...	४ "
कौंचके बीज	...	...	४ "
गंगेरन	...	...	४ "
जायफल	...	...	"
जावित्री	...	...	४ "
लौंग	...	...	४ "
भाँगेके बीज	...	...	४ "
सफेद राल	...	...	४ "
अजवायन	...	...	४ "
जीरा ( सफेद )	...	...	४ "

विधि—पहले शुद्ध पारे और शुद्ध गन्धककी निश्चन्द्र कजली करो। फिर उसमें सारी भस्में मिलाकर खरल करो, ताकि एक दिल हो जावें। इसके बाद विधायरेके बीज वगैरहके पिसे-छने चूर्ण मिला दो और पानोंका रस दे-देकर खरल करो। खरल हो जानेपर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

एक-एक गोली खाकर; ऊपरसे गरम दूध पीनेसे ध्वजभंग-नामर्दी आदि रोग नाश होते हैं। जिसके घरमें बहुत-सी स्त्रियाँ हों, वह अगर



इसे खावे, तो कभी भोगसे न थके । कहते हैं, इसके सेवन करने वाला १६ बरसके जवानके समान रूपवान और बलवान हो जाता है ।

## २११ वृच्छंगाराभूक ।

### बलवीर्यवर्द्धक परम वाजीकरण ।

यह रस भी परम वाजीकरण है । मूसली, और नाबराबर घी-शहदके साथ खानेसे बलवीर्य बढ़ता है । दालचीनी और शहदके साथ चाटनेसे खॉसी आदि रोगोंको नाश करता है । इसकी तरकीब चिकित्सा-चन्द्रोदय छठे भागके पृष्ठ ५६ में लिखी है ।

## २१२ पुष्पधन्वा रस ।

### अनेक स्त्री भोगनेकी शक्ति देनेवाला ।

शुद्ध पारा	...	...	१ तोले
शीशा-भस्म	...	...	१ ”
लोहा-भस्म	...	...	१ ”
अभ्रक-भस्म	...	...	३ ”

बनानेकी विधि—इन सबको खरलमें डालकर एक दिन “धतूरेके रसमें” खरल करो और सुखा दो । फिर एक दिन “भाँगके रसमें” खरल करो और सुखा दो । फिर एक दिन “मुलहठीके काढ़ेमें खरल करो और सुखा दो । फिर एक दिन “सेमलकी छालके रसमें” खरल करो और सुखा दो । फिर एक दिन “पानोंके रसमें” खरल करो और सुखा दो । यही “पुष्पधन्वा रस” है ।

सेवन विधि—इस रसमेंसे एक या दो रत्ती लेकर,—मिश्री, शहद और घीमें मिलाकर चाटने और दूध पीनेसे वीर्य बढ़ता और अनेक स्त्री भोगनेकी सामर्थ्य होती है ।

नोट—शहद और घी नाबराबर लेने चाहियें । शहद ६ माशे तो घी १ तोले ।



## २१३ श्रीकामदेव रस ।

अनुपान-भेदसे वीर्यवर्द्धक और वातादि रोग नाशक ।

शुद्ध पारा	...	...	४ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	८ "

विधि—दोनोंकी निश्चन्द्र कजली करलो । फिर लाल फूलोंकी कपासके रसमें ६ घण्टे तक खरल करके, सात कपरौटी की हुई शीशी में भरकर, शीशीका मुँह सुहागेसे बन्द कर दो । फिर शीशीको बालुकायन्त्रमें रखकर २४ घण्टे आग लगाने दो । जब स्वांग शीतल हो गानी आग ठण्डी हो, शीशीसे शिंगरफके समान लाल रसको निकाल लो ।

इस रसको वीर्य बढ़ानेवाले पदार्थोंके साथ खानेसे बूढ़ा भी जवानकी तरह भोग कर सकता है । इसकी मात्रा १ रत्तीकी है । नाबराबर घी और शहदके साथ खानेसे और पथ्यमें घी, चीनी, दूध, कालीमिर्च, छुहारे और महुआ आदि खानेसे खूब लाभ होता है । त्रिफला और शहदके साथ इस रसको खानेसे पित्तके रोग शान्त होते हैं । निगुंडीके रसके साथ खानेसे कठिनतासे जानेवाली वातकी पीड़ा

आराम होती और नवीन देह होती है । कहा हैः—

कामदेवमथो सूतं कामिनां कामवृद्धये ।

यस्य प्रसादतो बल्यो रम्यश्च रमते स्त्रियम् ॥

कामदेव और पारा—यही दोनों कामी पुरुषकी काम वृद्धि करते हैं । इनकी कृपासे निर्बल बलवान और सुन्दर होकर स्त्रियोंसे रमण करता है ।

नोट—शीशीपर कपरौटी करने और बालूकी हॉडीमें रखनेकी विधि के लिए चन्द्रोदय रसकी विधि जो पृष्ठ ३३२ में लिखी है देखिये । उसकी तरह इसकी शीशीपर ईंटका टुकड़ा नहीं रखना होगा । लोहेकीकी सीक न चलानी होगी । २४ घण्टे आग लग चुकनेपर, आग बन्द कर देनी होगी और आग वगैरः एक दम शीतल हो जानेपर शीशीमेंसे रस निकाल लेना होगा ।



## २१४ कन्दर्प सुन्दर रस ।

अनेक स्त्री भोगनेकी शक्ति देनेवाला ।

शुद्ध पारा, हीरेकी भस्म, शीशेकी भस्म, मोतीकी भस्म, चाँदीकी भस्म और सफेद अभ्रक भस्म—इनको चार-चार तोले लेकर, “कपासके फूलोंके रस”में खरल करो और सुखा दो। इसके बाद “खैरके काढ़े”में खरल करो और सुखा दो।

अब उस सूखे हुए मसालेमें मूँगेकी भस्म २ तोले और शुद्ध गन्धक १ तोले मिला दो और “असगन्धके रस”में खरल करके, हिरनके सींगमें भर दो। दूसरे सींगसे मुँह बन्द करके, सींगपर सात कपड़-मिट्टी कर दो और “लघु सम्पुट”में फूँक दो।

स्वांग शीतल होनेपर, सींगसे दवाको निकालकर, नीचे लिखी हुई दवाओंके रसों या काढ़ोंमें अलग-अलग खरल कर सुखाते रहो।  
 धायके फूल, काकोली, मुलहठी, जटामासी, बला, अतिबला, नागबला, भसीड़ा, हिंगोट, दाख, पीपल, बाँदा, शतावर, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, माषपर्णी, मुद्गपर्णी, फालसा, कसेरु, महुआ, कौंच के बीज और बरना।

जब ऊपरकी दवाओंमें खरल करके सुखा लो, तब उसमें छोटी इलायची, तज, तेजपात, जटामासी, लौंग, अगर, केशर, नागरमोथा, कस्तूरी, पीपल, नेत्रवाला और भीमसेनो कपूर—पीस-छानकर अन्दाजसे डालो। यही “कन्दर्प सुन्दर रस” है।

इसमेंसे चार माशे रस लेकर, एक तोले आमले, एक तोले विदारीकन्द और एक तोले मिश्रीके चूर्णमें मिलाकर, रातके समय खाओ और ऊपरसे आध पाव दूध पीओ। जितने दिन यह रस खाओ उतने दिन खुश रहो, रंज और शोकको पास मत आने दो। पथ्य-सहित इस रसके सेवन करनेसे पुरुष अनेक स्त्रियोंको वृष्ट कर सकता है।



## २१५ वसन्त कुसुमाकर रस ।

### प्रमेह नाशक, कामशक्तिवर्द्धक और सोमरोग हारक ।

इसकी विधि इसी भागके पृष्ठ ७८-८० में लिखी है । इसे हमने “प्रमेह” पर लिखा है । पर यह कान्ति तथा कामशक्तिको बढ़ाता तथा शरीरको पुष्ट भी करता है; वली-पलितको नाश करता, बहरेपनको दूर करता और वीर्यको पुष्ट करता है; बल तथा आयुको बढ़ाता, सन्तान देता एवं साध्य और असाध्य सोम रोगको नाश करता है ।

इसकी मात्रा २ चाँवलसे २ रत्ती तक है । ताकतवर और सर्द मिर्जाजवालेको दो रत्ती भी पच जाता है, गरमी नहीं करता । गरम मिर्जाजवालेको २ चाँवलकी मात्रासे शुरू करना चाहिये ।

( १ ) शहदके साथ सेवन करनेसे कफ वातज प्रमेह और मधुमेह नाश होते हैं ।

( २ ) शर्वत चन्दनके साथ सेवन करनेसे पित्तज प्रमेह नाश होता है ।

( ३ ) शर्वत चन्दनके साथ सेवन करनेसे अम्लपित्त नाश होता है ।

( ४ ) मिश्री, शहद और घीके साथ सेवन करनेसे सब तरहके प्रमेह नाश होते, बलवीर्य और कामशक्तिकी वृद्धि होती है, आयु बढ़ती एवं साध्यासाध्य सोम रोग नाश होते हैं ।

## २१६ कामिनी विद्रावण रस ।

### दाराओंको द्रवित करनेकी शक्ति देनेवाला ।

अकरकरा	...	...	२ तोले
सौंठ	...	...	२ ”
लौंग	...	...	२ ”
केशर	...	...	२ ”
पीपर	...	...	२ ”
जायफल	...	...	२ ”
जावित्री	...	...	२ ”



## नपुंसकता और धातु-रोग-चर्णन ।

३४५

लाल चन्दन	...	...	२ तोले
शुद्ध हिंगुल	...	....	६ माशे
शुद्ध गन्धक	...	...	६ माशे
शुद्ध अफीम	...	...	८ तोले

बनानेकी विधि—अक्रूरकरासे चन्दन तककी दवायें कूट-छानकर दो-दो तोले ले लो । इन सबके चूर्णों, हिंगुल, गन्धक और अफीमको खरलमें डालकर, पानी दे-देकर खरल करो और तीन-तीन रत्तीकी गोलियाँ बना लो । सोने से पहले एक गोली नित्य खाकर दूध पीनेसे वीर्यमें स्तम्भन शक्ति आती और मैथुन-शक्ति बढ़ती है । सुपरीक्षित है ।

## २१७ नपुंसकता नाशक गुटिका ।

### नामर्दी नाशक ।

कटेरीके बीज, कनेरके बीज, विधाधरेके बीज, कौंचके बीज और मूलीके बीज—इन सबको बारीक पीस-छानकर, खरलमें डालो और बंगला पानोंका रस दे-देकर घोटो और एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो । एक गोली नित्य खाकर, दूध पीनेसे नपुंसकता नाश होकर बल-वीर्य बढ़ता है ।

## २१४ शुक्र वर्धक रस ।

### मैथुन और स्तम्भन-शक्ति वर्धक ।

शुद्ध पारा	...	...	६ माशे
शुद्ध गन्धक	...	...	६ "
लोहा भस्म	...	...	६ "
अन्नक भस्म	...	...	६ "
चाँदीकी भस्म	...	...	६ ६
सोनेकी भस्म	...	...	६ "



सोनामक्खीकी भस्म	...	...	६ माशे
वंसलोचन	...	...	२ तोले
भाँगके बीजोंका चूर्ण	...	...	८ तोले

बनानेकी विधि—इन सबको एकत्र खरलमें डालकर, ऊपरसे भाँग-का काढ़ा दे-देकर घोटो और एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो । एक गोली खाकर, दूध पीनेसे वीर्यमें रुकावट आती और मैथुनशक्ति बढ़ती है । परीक्षित है ।

## २१६ कामेश्वर रस ।

### बल वीर्य-स्तम्भन शक्ति वर्धक ।

जायफल	...	...	१ तोले
अकरकरा	...	...	१ ”
काले धतूरेके बीज ( शुद्ध )	...	...	१ ”
जावित्री	...	...	१ ”
शुद्ध अफीम	...	...	१ ”
शीशा भस्म	...	...	१ ”
शुद्ध शिंगरफ	...	...	१ ”

विधि—अफीम, शीशा भस्म और शिंगरफको छोड़कर, शेष जाय-फल आदि चारों चीजोंको अलग-अलग पीस-छानकर तोले-तोले भर ले लो । इनको और अफीम आदि तीनों चीजोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे खसखसका काढ़ा दे-देकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो । इनमेंसे एक गोली “मिश्रीके साथ खाने” से परम आनन्द होता है । स्तम्भनशक्ति बढ़ती, वीर्य रुकता और बल बढ़ता है ।

नोट—खसखसका काढ़ा बनाकर पहले ही रख लेना, तब दवा घोटनी शुरू करना । अफीमको जलमें भिगोकर कपड़ेमें छान लेना, शीशा भस्म उत्तम लेना और शिंगरफ शुद्ध लेना । गोली खाकर मिश्री-मिला गरम दूध पीना जरूरी है । यह गोली स्तम्भन या रुकावट चाहनेवालेके लिए परम आनन्द-दायिनी है ।



## २२० केशादि बटो ।

कामियोंको कल्पवृक्ष ।

केशर	...	...	४	माशे
लौंग	...	...	४	"
जायफल	...	...	४	"
जावित्री	...	...	४	"
मिश्री	...	...	४	"
सेमलकी मूसली	...	...	४	"
माजूफल	...	...	४	"
काला जीरा	...	...	४	"
मूसली	...	...	४	"
अकरकरा	...	...	४	"
समन्दर शोप	...	...	४	"
बबूलकी कच्ची फलियाँ	...	...	४	"
राल	...	...	४	"
पाद	...	...	४	"
रूमीमस्तगी	...	...	४	"
शुद्ध शिंगरफ	...	...	४	"
शुद्ध अफीम	...	...	४	"
इन्द्रजौ	...	...	४	"
कस्तूरी	...	...	२	"
भीमसेनी कपूर	...	...	२	"

विधि—केशर, शिंगरफ, अफीम, कस्तूरी और कपूरको अलग रखकर तथा लौंग जायफलादि को पीस-छानकर एक खरलमें तैयारी चार-चार माशे तोल लो। फिर केशर, शिङ्गरफ आदि बाकीकी दवाएँ मिलाकर बराबरके शहद के साथ घोटो। घुट छानेपर,



एक-एक या दो-दो माशेकी गोलियाँ बना लो । कमजोरको १ माशेकी गोली ही काफी होगी । रातको, सोते समय, एक गोली खाकर ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीने से खूब स्तम्भन होता है । यह गोली खाली स्तम्भनके ही कामकी नहीं हैं । इनसे बलवीर्य बढ़ता, रति-इच्छा होता और मैथुनके समय वीर्य देरसे खलित होता है ।

## २२१ कस्तूरी गुटिका ।

### स्तम्भनशक्ति-वर्द्धक ।

कस्तूरी	...	...	१ माशे
केशर	...	...	२ "
जायफल	...	...	२ "
लौंग	...	...	२ "
शुद्ध अफीम	....	...	४ "
शुद्ध भाँग	...	...	२ "

विधि—इन सबको अलग-अलग कूट-छानकर, पानी डाल-डालकर खरलमें घोटो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । कामी पुरुषको चाहिये, कि रातको सोते समय एक गोली “शहद”के साथ खाकर, “घी-मिश्री मिलाकर गरम दूध” पीवे । ताकतवर आदमी एक-दो रोज एक गोली खाकर, दो गोली भी खा सकता है । इन गोलियोंसे मैथुनेच्छा पैदा होती, वीर्य रुकता और परम आनन्द आता है ।

## २२२ जातीफलादिबटी ।

### मैथुनमें परमानन्ददायिनी ।

जायफल	...	...	६ माशे
लौंग	...	...	६ "
जावित्री	...	...	६ "
केशर	...	...	६ "



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

३४६

छोटी इलायची	...	...	६ माशे
शुद्ध अफीम	...	...	६ "
अकरकरा	...	...	६ "
भीमसेनी कपूर	...	...	२ "

विधि—केशर, अफीम और कपूरको अलग रखकर, जायफयादिको पीस-झानकर और तोलकर खरलमें डालो । साथही केशर वगैरः को भी मिला दो । फिर नागरपानोंका रस दे-देकर खूब घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो । यह गोली वीर्यको रोकती, बलवीर्य और जठराग्नि को बढ़ाती है । रातको, सोते समय, एक गोली खाकर मिश्री मिला दूध पीनेसे मैथुनमें बड़ा आनन्द आता है ।

## २२३ कस्तूरी गुटिका ।

बलवीर्य और स्तम्भनशक्ति वर्द्धक ।

सोनेके वर्क	...	...	१ माशे
कस्तूरी	...	...	२ माशे
चाँदीके वर्क	...	...	३ "
केशर	...	...	४ "
छोटी इलायचीके बीज	...	...	५ "
जायफल	...	...	६ "
बंसलोचन	...	...	७ "
जावित्री	...	...	८ "

विधि—इनको अलग-अलग पीस-झानकर खरलमें तोल-तोलकर डालो । पीछे, १८ घण्टे बकरीके दूधमें घोटो और १८ घण्टे पानोंके रसमें घोटो । घुटने पर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । “मलाई” के साथ गोली खानेसे धातुक्षीणता जाती है; “शहद”के साथ खानेसे अमेह जाता और “पान”में रखकर खानसे शिथिलता नाश होती है ।



नोट—उधर लिखी “मृगनाभ्यादि बटी” और इन गोलियोंमें यही मेह है कि इनमें मोती नहीं गिरते । जो मांती नहीं खरीद सकते, वे इन्हें बनावें ।

## २२४ अष्टावक्र रस ।

नपुंसकोंके लिए कल्पवृक्ष ।

शुद्ध पारा	...	६ माशे
शुद्ध गन्धक	...	१ तोले
सोनाभस्म	...	६ माशे
चाँदीकी भस्म	...	३ ”
शीशाभस्म	...	१॥ ”
ताम्बाभस्म	...	१॥ ”
शुद्ध खपरिया	...	१॥ ”
वङ्गभस्म	...	१॥ ”

विधि—इन सबको ३ घण्टे तक बड़के अंकुरोंके रसमें खरल करो । फिर ३ घण्टे तक धीग्वारके रसमें खरल करो । इसके बाद कपराँटी की हुई शीशीमें भरकर, पृष्ठ ३३२-३३३ में लिखी तरकीबसे, मकरध्वज या चन्द्रोदयकी तरह, पाक करो । तैयार होने पर इस रसका रङ्ग अनारके फूलके जैसा होगा ।

इसकी मात्रा २ रत्तीकी है । पानके रसमें यह दवा खानेसे वीर्य और बल बढ़ता है; पुष्टि होती तथा मेधाशक्तिकी वृद्धि होती है एवं वालोंका सफेद होना बन्द हो जाता है ।

## २२५ शुक्र मातृका बटी

वीर्यका पतलापन, प्रमेह और अन्य वीर्यदोष नाशक ।

गोखरूके बीज	...	६ माशे
त्रिफला	...	६ ”
तेजपात	...	६ ”



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

३५१

छोटी इलायची के बीज	...	...	६ मासे
रसौत	...	...	६ "
धनिया	...	...	६ "
चव्य	...	...	६ "
सफ़ेद जीरा	...	...	६ "
तालीसपत्र	...	...	६ "
मुना सुहागा	....	...	६ "
अनारके बीज	...	...	६ "
शुद्ध गूगल	...	...	६ "
शुद्ध पारा	...	...	२ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	२ "
लोहाभस्म	....	...	२ "
अभ्रक भस्म	...	...	२ "

विधि—सबको कूट-छानकर खरलमें डालो । फिर पारे और गन्धककी कजली तथा अभ्रक और लोह-भस्म डालो । इसके बाद अनारके रसमें ३ घण्टे तक खरल करके शीशीमें रख दो ।

इसकी मात्रा २ रत्ती से ३ रत्ती तक है । अनुपान-अनारका रस या बकरीका दूध अथवा पानी । इसके सेवनसे वीर्यका बहना, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र आदि पेशाबके अनेक रोग नाश होते हैं ।

## २२६ कामाग्नि सन्दीपक मोदक ।

नामदी, सुस्ती और शीघ्रपतत नाशक ।

शुद्ध पारा	...	...	१ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	१ "
अभ्रक भस्म ( १ )	...	...	१ "
जवाखार	...	....	१ "



सज्जीखार	...	...	१	”
चीतेकी छाल	...	...	१	”
पाँचों नमक	...	...	१	”
कपूर	...	...	१	”
अजवायन	...	...	१	”
अजमोद	....	...	१	”
बायबिडंग	...	...	१	”
तालीसपत्र (२)	...	....	१	”
सफेद जीरा	...	....	२	”
दालचीनी	....	...	२	”
तेजपात	....	....	२	”
छोटी इलायची	....	...	२	”
नागकेशर	...	...	२	”
लौंग	...	...	२	”
जायफल	...	...	२	”
विधारे के बीज	...	...	३	”
त्रिकुटा	...	...	३	”
धनिया	...	...	४	”
मुलहठी	...	...	४	”
सौंफ	...	...	४	”
कसेरू	...	...	४	”
शतावर	...	...	५	”
विदारीकन्द	...	...	५	”
त्रिफला	...	...	५	”
हस्तिकर्ण	...	...	५	”
मलासकी छाल	...	...	५	”
गुलसकरी	...	...	५	”



## नष्टसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

४३३

कौंचके बीज	...	...	...	३३३ तोले
गोखरूके बीज	...	...	...	३३३ " "
बीजों समेत भाँगका चूर्ण	...	...	...	३३३ " "
चीनी	...	...	...	१७६ " "

विधि—पारे, गन्धक और अभ्रकको अलग रख कर, बाकी सभी चीजोंको अलग-अलग कूट-पीसकर छानो और ऊपर लिखी तोलके मुताबिक तोल-तोलकर सबको मिला दो । फिर चीनी भी मिलादो और अन्दाजका नाबरावर घी और शहद मिलाकर तथा १ तोले कपूर मिलाकर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बनालो ।

सेवन-विधि—एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे गरम दूध पीनेसे बेइन्तहा बलवीर्य और मैथुन-शक्ति बढ़ती है । इसके सिवा प्रमेह, संग्रहणी, खौँसी, अम्लपित्त, शूल, पसलीका दर्द, मन्दाग्नि और पीनस रोग नाश हो जाते हैं ।

## २२७ मदनानन्द मोदक ।

नष्टसकता और शीघ्रपतनपर रामवाण ।

शुद्ध पारा	...	...	६ माशे
शुद्ध गन्धक	...	...	६ " "
लोह भस्म	...	...	६ " "
अभ्रक भस्म	...	...	१॥ तोले
कपूर	...	...	१ " "
सैधानोन	...	...	१ " "
जटामासी	...	...	१ " "
आमले ( सूखे )	...	...	१ " "
छोटी इलायचीके बीज	...	...	१ " "
सोंठ	...	...	१ " "



पीपर	...	...	१ तोले
काली मिर्च	...	...	१ "
जावित्री	...	...	१ "
जायफल	...	...	१ "
तेजपात	...	...	१ "
लौंग	...	...	१ "
सफेद जीरा	...	...	१ "
काला जीरा	...	...	१ "
मुलहठी	....	....	१ "
बच	....	...	१ "
कूट ( मीठा )	...	....	१ "
हल्दी	...	...	१ "
देवदारु	...	....	१ "
हिंजल बीज	...	...	१ "
भुना सुहागा	....	....	१ "
बरंगी	...	...	१ "
सोंठ	...	...	१ "
नागकेशर	...	....	१ "
काकड़ासिंगी	...	...	१ "
तालीसपत्र	....	...	१ "
मुनक्का	...	...	१ "
चीतेकी छाल	....	...	१ "
दन्तीबीज	....	...	१ "
बरियारा	....	...	१ "
गुलसकरी	....	...	१ "
दालचीनी	....	...	१ "
धनिया	...	...	१ "



## नपुंसकता और धातु-रोग-वर्णन ।

३५५

गजपीपर	...	...	१ तोले
कचूर ( शठी )	...	...	१ ”
नेत्रवाला	...	...	१ ”
नागरमोथा	...	...	१ ”
गंधाली	...	...	१ ”
विरारीकंद	...	...	१ ”
शतावर	...	...	१ ”
आककी जड़	....	....	१ ”
कौंचके बीज	....	....	१ ”
गोखरूके बीज	...	...	१ ”
विधारेके बीज	....	....	१ ”
भाँगके बीज	...	...	१ ”

**विधि**—इनमेंसे पारे और गन्धकको खरल करके कजली कर लो । इस कजली और लोहा-अभ्रकको अलग रखो । कपूरसे भाँगके बीज तककी चीजों को अलग-अलग कूटकर एक-एक तोले रखो । फिर कजली, भस्म और इन चूर्णोंको मिला दो । फिर इस इमिले हुए चूर्णको “शतावरके रस”में खरल करके सुखा लो । फिर यह चूर्ण तोलमें जितना हो उसका चौथाई सेमरकी मूसलीका पिसा-छना चूर्ण मिला दो । अब सेमरकी मूसली समेत जितना चूर्ण हो, उसका आधा भाँगका चूर्ण इसमें मिला दो । फिर सारे चूर्णकी दूनी चीनी लेकर, बकरीके दूधमें मिलाकर चाशनी करो । जब चाशनी हो जावे, सब चूर्ण उसमें मिला दो । जब पाक हो जावे, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, कपूर, सैंधानोन और त्रिकुटा थोड़ा-थोड़ा पीस-छानकर मिला दो । जब शीतल हो जावे, नाबराबर घी और शहद मिला दो । इससे रति-शक्ति बढ़ती है । वीर्यकी वृद्धि होती है । मन्दाग्नि, सूतिका रोग और खाँसी आराम होती है । मात्रा—३ माशेसे ६ माशे तक ।

**अनुपान**—दूध ।



## २२८ बलवीर्य वद्धक फुटकर नुसखे ।

(१) मैथुनके बाद, ६ तोले ८ मांशे गुड़ खा लेनेसे कभी कमजोरी नहीं आती । परीक्षित है ।

(२) सिंघाड़ा हर रोज गायके दूधके खाथ खानेसे वीर्य खूब बलवान होता है । सूखे सिंघाड़ोंका आटा रख लो । उसमेंसे १ तोले से ३ तोले तक नित्य खाओ ।

(३) दूध-भात या दूध-चाँवलोंकी खीर रोज खानेसे नया वीर्य बनता है । परीक्षित है ।

(४) एक बताशेमें बड़का दूध भरकर, रोज सवेरे ही खानेसे धातु बढ़ती और पुष्ट होती है । परीक्षित है ।

(५) दो तोले बिनौले गायके आध सेर दूधमें पकाकर खानेसे खूब बलवीर्य बढ़ते हैं ।

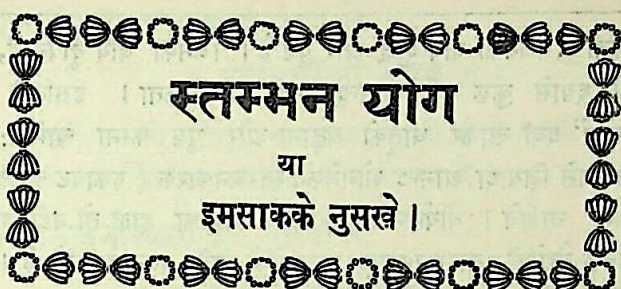
(६) खिरनीके बीजोंकी गिरी सुखाकर पीस-छान लो । इसमेंके ३॥ मांशे चूर्णमें १॥ मांशे मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम खाने और गायका दूध पीनेसे खूब बलवीर्य बढ़ता है ।

(७) सवेरे ही दूधमें दो-तीन खुरमें और ६ मांशे सोंठ मिलाकर दूध औटाओ । पहले बढ़िया पके हुए मीठे आम खाकर, इस दूधको पीलो । खूब बलवीर्य बढ़ेगा । परीक्षित है ।

नोट—गरमीके मौसममें या तो “आम-पाक—जो हम पीछे लिख आये हैं—बनाना चाहिये । अथवा आम खाकर यह दूध पीना चाहिये ।

(८) पके हुए ताजा सरीफे या सीताफल रोज खानेसे वीर्य खूब बढ़ता है । परीक्षित है ।





## संसारमें स्त्रीभोग सार है ।

संसारे तु धरासारं धरायां नगरं मतम्  
आगारे नगरं तत्र सारं सारंगलोचना ।  
सारंगलोचनायाश्च सुरतं सारमुच्यते  
नातः परतरं सारं विद्यते सुखदं नृणाम् ।  
सारभूतन्तु सर्वेषां परमानन्द सोदरम्  
सुरतं ये न सेवन्ते तेषां जन्मैव निष्फलम् ॥

अर्थात् संसारमें पृथ्वी सार है । पृथ्वीपर नगर सार है । नगरमें घर सार है । घरमें मृगनयनी कामिनी सार है । इससे बढ़कर सुख मर्दोंको और नहीं है । सब सुखोंका सार—परमानन्दका दूसरा भाई “सुरत” या स्त्री-भोग है । जो पुरुष इस सुखको नहीं भोगते, उनका इस जगत्में जन्म लेना ही बृथा है ।

पर; स्त्रीको भोगना, उसे खुश करना, अच्छे-अच्छे बलवानोंको भी कठिन है । हाँ, जो लोग बूढ़े, विद्वान् और अनुभवी वैद्योंकी तजवीज की हुई “वाजीकरण” दवाएँ जाड़ेमें खाते और लगाते हैं, वे निस्सन्देह औरतोंसे घोड़ोंकी तरह मैथुन कर सकते हैं । बाज़ारू विशापनवाज़-वैद्योंकी ऊटपटाँग दवाओंसे तो लोग जन्मभरको बेकाम हो जाते हैं ।

## स्तम्भन या रुकावट ।

बहुत लोग स्तम्भनबटी या देरतक वीर्य रखलित न होनेकी दवाओंके लिए खोज करते रहते हैं । जानना चाहिये, स्तम्भनकी दवा उन्हें ही आनन्द



दिखा सकती है, जिनका वीर्य शुद्ध और पुष्ट है। जिनका वीर्य दूषित है, उन्हें स्तम्भनकी दवासे कुछ भी आनन्द नहीं आ सकता। इसलिये पहले “वाजीकरण” दवा खाकर धातुको बढ़ाना और पुष्ट करना चाहिये; पीछे, अपनी ताकतसे ज़ियादा आनन्द भोगनेको, स्तम्भनकारक (रुकावट करनेवाली) दवा खानी चाहिये। वीर्यहीन लोग अपने वीर्यका हाल तो नहीं जानते—उल्टा अच्छे वैद्योंकी स्तम्भनकारक दवाओंको भी बदनाम करते हैं। काम-शास्त्रमें लिखा है:—

**शक्तेरभावात् स्तम्भादि सर्वमेवाप्रयोजकम् ।**

**अतः शरीर पुष्ट्यर्थं वाजीकरणमुच्यते ॥**

शरीरमें बल-पुरुषार्थ न रहनेसे जो भी स्तम्भनकी दवाएँ सेवन की जाती हैं, वे कुछ भी काम नहीं देतीं; अतः शरीरकी पुष्टिके लिए पहले वाजीकरण औषधियाँ (वह दवाइयाँ जिनके सेवनसे वाजी यानी घोड़ेके समान प्रसङ्ग करनेकी सामर्थ्य हो जाय) सेवन करनी चाहियें।

भाइयो ! आप जब तक जाड़ेमें चार महीने वाजीकरण—धातुको पुष्ट और गाढ़ा करनेवाली तथा बढ़ानेवाली दवाएँ खाकर शरीरको तैयार न कर लें, तब तक किसी भी स्तम्भनकी दवाईको काममें न लेवें, क्योंकि शरीरमें शुद्ध और बलवान् वीर्य हुए बिना वे काम न देंगे। उन्हें सेवन करनेपर भी, आप एक-दो मिनटसे ज़ियादा न रुक सकेंगे।

स्त्रीको स्थलित कर देना पुरुषका पहला कर्त्तव्य है। “कामशास्त्र”में लिखा है—

**प्रागेव पुंसः सुरते न यावन्नारी द्रवेद् ।**

**भोगं फलं न तावत् ॥**

**अतः बुधैः कामकलाप्रवीणैः ।**

**कार्यः प्रयत्नो बनिता द्रवत्वे ॥**

मैथुनके समय जबतक मर्द औरतको स्थलित नहीं कर देता, तब तक मैथुनसे कोई लाभ नहीं; इसलिये चतुर कामकला जानने वालोंको स्त्रीको स्थलित करनेकी भरपूर कोशिश करनी चाहिये। शास्त्रमें लिखा है—

**यद्यप्यष्ट गुणाधिको निगदितः**

**कामोऽङ्गनानां सदा ।**



नो याति द्रवतां तथापि ऋटिति

व्यायामिनां संगमे ॥

यद्यपि स्त्रियोंमें पुरुषोंसे अठगुना काम रहता है; तो भी वे बलवानके साथ मैथुन करनेसे भी जल्दी स्खलित नहीं होतीं और भी कहा है—

पतनान्मदनाम्भसो द्रुतं परितोषो

न भवेद विलासिनीनाम् ॥

मर्दका वीर्य जल्दी गिर जानेसे स्त्रियों को संतोष नहीं होता ।

स्त्रीको स्खलित कर देना और आप पीछे स्खलित होना, यही पुरुषका धर्म है । जो पुरुष स्त्रीको स्खलित नहीं कर सकता, वह स्त्रीको खुश नहीं कर सकता । ऐसे ही लोगोंकी औरतें, अपना दिल खुश करनेको, दूसरे पुरुषोंकी चाहना करने लगती हैं । इसीलिये “कामशास्त्र”में लिखा है, कि जो मर्द औरतको पहले स्खलित नहीं करता, उसे धिक्कार !

अगर आप चाहते हैं, कि हम स्त्रीको खुश रखें, वह हमारी दासी बनी रहे, तो आप बाजीकरण दवाएँ खाइये । इसके बाद स्तम्भनकारक बटी या चूर्ण आदि खाकर तथा लिंगपर आनन्ददायक लेपादि लगाकर स्वर्गका आनन्द लूटिये । ऐसे-ऐसे लेप हैं, जिनको लगाकर मैथुन करनेसे औरत वाह वाह करने लगती है, पर कोरे लेपोंसे कुछ नहीं हो सकता ।

पहले वीर्यको निर्दोष, गाढ़ा और पुष्ट कोजिये ।

सारांश ।

स्त्री-भोगका आनन्द अधिक स्तम्भनशक्तिमें है और अधिक स्तम्भन तभी हो सकता है, जब कि वीर्य निर्दोष, पुष्ट, बलवान और अधिक हो । इसीलिये जो इस आनन्दको भोगना चाहते हों, उन्हें हमारे पहले लिखे हुए नुसखोंसे प्रमेहादि रोग दूर करके, वीर्यको बलवान और पुष्ट करना चाहिये; तभी उन्हें स्तम्भनकारी औषधियोंसे लाभ होगा, अन्यथा नहीं ।

आगे हम चन्द ऐसे स्तम्भनकारक टोटके लिखते हैं, जिनपर आज कलके पढ़े-लिखे लोगोंको जरा भी विश्वास न होगा, पर मनुष्य जब तक किसी चीज़की परीक्षा न कर ले, तब तक बिना परीक्षा किये ही, उसे मिथ्या न ठहरा दे । ऐसा करना घोर अन्याय है ।



ज्वर चढ़नेसे ४ घण्टे पहले हुलहुलके पत्तों का रस सूँघने और हाथ पाँवके नाखूनोंपर लगानेसे ज्वरका वेग रुक जाता है । यह योग परीक्षित है । जब हुलहुलके रस में इतनी करामात है कि, सूँघने और नखोंपर लगानेसे ज्वर नहीं चढ़ता, तब कैसे कह सकते हैं कि आगे लिखा हुआ नं० १० नुसखा भूठा है ।

रविवारके दिन सफ़ेद धतूरा उखाड़कर दाहने हाथमें बाँधनेसे पारीका ज्वर उड़ जाता है । यह योग भी परीक्षित है । जब इस योगसे ज्वर चला जाता है, तब नं० ११ नुसखेसे स्तम्भन क्यों न होगा ?

हमने आगे लिखे हुए १५।२० योग अनेक शास्त्रोंमें देखे, इसलिये अपने पाठकोंके परीक्षार्थ लिख दिये हैं । हमें तो अपने जीवनमें इनके आजमानेका मौक़ा नहीं मिला, अब हमारे नौजवान मनचले पाठक इनकी परीक्षाएँ करें और कृपया अपनी परीक्षाओंका फल हमें भी लिखें ।

### स्तम्भनकारक टोटके ।

( १ ) छिपकलीकी पूँछका अगला भाग काटकर, सफ़ेद धागेमें लपेटो और अँगूठीमें मढ़ाकर, उस अँगूठीको छोटी अँगुलीमें पहन लो, जब तक अँगूठी न उतारोगे वीर्य स्वलित न होगा ।

( २ ) दुमुँहे साँपकी हड्डी और काले साँपकी हड्डी—इन दोनोंको कमरमें बाँधनेसे वीर्य रुका रहेगा । जब हड्डियाँ खोली जायँगी, तभी वीर्य स्वलित होगा ।

( ३ ) गायके ऊँचे सींगकी त्वचा छीलकर, उसे आगपर छिड़को और कपड़ेमें उसकी धूनी दो । धूनी दिये हुए कपड़ेको पहनकर, मैथुन करने से वीर्य स्वलित नहीं होता ।

( ४ ) ऊँटकी हड्डी में छेद करके पलंग पर सिरहानेकी तरफ़ रख लो, जब तक हड्डी हटाई न जायगी, वीर्य न गिरेगा ।



( ५ ) जब कुत्ते-कुत्ती, कातिकमें, मैथुन करते समय जुड़ जायँ, नर-कुत्तेकी दुम काट लो और ४० दिन तक ज़मीनमें गाढ़े रहो । पीछे देखो, जब दुम गलजाय और हड्डी मात्र रह जाय, उसे डोरेमें पोक़र अपने सिरके बालोंमें बाँधलो और भोग करो, वीर्य जल्दी स्खलित नहीं होगा ।

( ६ ) सूखी ज़मीनमें रहने वाले मैँडकको लाकर मार डालो और छायामें सुखा लो । उसके सिर और पैर काटकर ले लो और उन्हें महीन पीसो । फिर एक जायफल और दो माशे केशर मिलाकर घोटो और गोलियाँ बना लो । मैथुनके समय, एक गोलीको थूकमें घोलकर, लिङ्गपर लेप करो, पर सुपारी छोड़ देना । बड़ा आनन्द आवेगा और बड़ी देर लगेगी ।

( ७ ) एक बड़ा-सा कुएँका मैँडक लाकर, उसकी गुदाको सूई-डोरेसे सींदो और उसके मुँहमें नौ माशे “पारा” भरकर, उसे अलग रख दो । इस तरह रखो, कि पारा नीचे न गिरे । जब मैँडक सूख जाय, उसका पेट फाड़कर पारेकी गोली निकाल लो । जो पारा मैँडकके मुँहमें रखा जायगा, वह गोलीके रूपमें बदल जायगा । उस गोलीको रख लो । जब मैथुन करना हो, उस गोलीको मुँहमें रखलो । जब तक मुँहमें गोली रहेगी, वीर्य स्खलित न होगा ।

( ८ ) ऊँटके बालों की रस्सी बनाकर, भोगके समय, जाँघपर बाँध लो । जब तक रस्सी अलग न करोगे । वीर्य न छुटेगा ।

( ९ ) कमरमें “फिटकिरी” बाँधकर भोग करनेसे वीर्य जल्दी स्खलित नहीं होता ।

( १० ) रविवारके दिन घोड़े और खच्चरकी पूँछोंका एक-एक बाल लाकर, पीली कौड़ीमें छेद करके पोदो और दाहिनी भुजामें बाँधकर भोग करो, वीर्य न गिरेगा ।

( ११ ) छछूँदरका खुसिया चमड़ेकी थैलीमें रखकर, यन्त्रकी तरह



सिलवाओ । इस यन्त्रको कमरमें बाँधकर मैथुन करो । जब तक यन्त्रको करकाकर सामने न लाओगे, वीर्य स्वलित न होगा ।

( १२ ) काले बिलावके बाँयें पैरकी हड्डी, स्त्री-भोगके समय, दाहिने हाथमें बाँधनेसे वीर्य स्वलित नहीं होता ।

( १३ ) चिड़ियाके अण्डे नौनी घीमें पीसकर, दोनों पैरोंके तलवोंमें उसका लेप करके स्त्री-प्रसंग करनेसे वीर्य तबतक नहीं छुटता, जब तक ज़मीन पर पाँव नहीं रखे जाते ।

( १४ ) स्त्री-पुरुष दोनों बायें स्वरमें प्रसंग करें, तो आनन्द आता है । अगर पुरुषका स्वर दाहिना होगा, तो स्त्री जीतेगी । अगर स्त्रीका स्वर बायाँ हो, तो पुरुष अपनी नाक को स्त्रीकी नाकसे मिलाकर, उसके बाँयें स्वरको तीन या सात बार खींचे । इस तरह दोनोंमें प्रीति बढ़ेगी ।

( १५ ) खरगोशके आँडोंमें छेद करके, कमरमें बाँध लेनेसे, खूब स्तम्भन होता है ।

( १६ ) काला तीतर लाकर, उसे ७ दिन तक केवल दूध पिलाओ और आठवें दिन उसे एक तोले पारा खिलाओ । इसके खानेसे वह बँधी हुई बीट करेगा । उस बीट को गरम जलसे धोकर रख लो । इस बीटको मैथुनके समय मुँहमें रखनेसे पुरुषको थकान नहीं आती, लिंगेन्द्रिय बलवान रहती है । अगर इसे कोई राह चलते समय मुँहमें रखकर चले, तो कभी थकान न आवे ।

( १७ ) ज़मीकन्द और तुलसीकी जड़,—दोनोंको पानमें रखकर खानेसे वीर्य स्वलित नहीं होगा ।

( १८ ) नील कमल और सफ़ेद कमलकी केशर एवं शहद और खौड़को पीसकर, नाभि या सूँडीपर लेप करके मैथुन करनेसे लिंगेन्द्रिय कड़ी हो जाती और मैथुनमें देर लगती है । चक्रदत्त ।

( १९ ) सिद्ध किये हुए कसूमके तैलमें भूमिलता या शंखपुष्पीका



चूर्ण मिलाकर, पैरोंपर लेप करने और मैथुन करनेसे वीर्य स्खलित नहीं होता और लिङ्ग कड़ा बना रहता है । चक्रदत्त ।

( २० ) बकरेके पेशाबमें इन्द्रायणकी जड़ पीसकर, लिङ्गपर ७ दिन तक खूब मालिश करनेसे लिङ्ग कड़ा बना रहता है । चक्रदत्त ।

( २१ ) असगन्ध, अकरकरा, जायफल, जावित्री, चीनिया कपूर, खुरासानी बच, धुली भाँग और रससिन्दूर—इन सबको सात-सात माशे लेकर, कूट-पीसकर छान लो और ५६ माशे मिश्री मिलाकर, ज़रासे जलके साथ चार-चार माशेकी गोली बना लो और छायामें सुखा कर, ऊपरसे चाँदीके वर्तक लपेट लो । गन्धक और चार या साढ़े चार माशे चूर्ण या गोली, सन्ध्या-समय, पहरोंसे “मूली” खानेसे इतनी रुकावट होती है, कि लिखने और पढ़नेसे “नीबू” खाये वीर्य स्खलित नहीं होता ।

( २२ ) जायफल, लौंग, उटंगनके बाज, केशर, कपूर, जावित्री और मस्तगी, इनको ६६ माशे लेकर, कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो । अफीम शोधकर ६ माशे ले लो । हिंगलूसे निकाला या शोधा हुआ पारा ६ माशे और शोधी हुई गन्धक भी ६ माशे ले लो । पहले पारे और गन्धकको इतना घोटो कि, काजलसे हो जायँ और चमक न रहे । इस कजलीमें दवाओंका चूर्ण और अफीम भी मिला दो । फिर सबको घोटो, जब एक-दिल हो जायँ रख लो । इसकी मात्रा आधे माशेसे २ माशे तक है । अपना बलाबल देख कर मात्रा लेना । पहले कम मात्रा लेना; अगर सह जाय तो बढ़ा लेना । इसकी एक मात्रा, मैथुनसे दो घण्टे पहले, “शहद” में मिलाकर खानेसे खूब स्तम्भन होता है ।

नोट—आधे माशेमें तीन चॉवल-भर अफीम या पारेका अंश होगा । अगर मसाला सूखा रहे और गोली बनानी हों, तो घोटते समय ज़रा-ज़रासा पानी डालकर घोटलो । जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, गोली बना लो । चूर्णसे गोली ज़ियादा दिन ठहरती है ।



( २३ ) जायफल १ तोले, अकरकरा १ तोले, लौंग १ तोले, सोंठ १ तोले, केशर १ तोले, पीपर १ तोले, कस्तूरी १ तोले, भीमसेनी कपूर १ तोले, अन्नक भस्म १ तोले और शोधी हुई अफीम ६ तोले—इन सबको कूट-पीस कर छान लो । शेषमें, अफीमको जरासे जलमें घोलकर मिला दो और खूब घोटो । घुट जाने पर, मूँग-बराबर गोलियाँ बना लो । एक या दो गोली साँझको खाकर, ऊपरसे दूध-मिश्री पीकर, दो घण्टे बाद मैथुन करनेसे वीर्य बहुत देर तक रुकता और बल नहीं घटता । परीक्षित है । २५

( २४ ) शुद्ध दो इसमेंसे, तो आमलासार गन्धक ६ माशे, दोनोंको चार घण्टे के खाने और पीने की बनी बना लो । पीछे उस कजली में जायफल, लौंग, नहीं सकते । भिजी, केशर, कपूर, मस्तगी और जावित्री—छै-छै नारा खल-छान कर मिला दो । शेषमें, शुद्ध अफीम ६ माशे जरासे जलमें घोलकर डाल दो और ३ घण्टे घोटो । घुट जानेपर, मटर-समान गोलियाँ बना लो । एक गोली साँझको “शहद” के साथ खाकर दूध-मिश्री पीलो । मैथुनमें खूब आनन्द आयेगा ।

( २५ ) हीरा हींग “शहद” में पीसकर लिङ्गपर लेप करनेसे खूब रुकावट होती है ।

( २६ ) करंजकी पत्तियोंका रस निकालकर, हाथकी हथेलियों और पैरोंके तलवोंमें मलकर, डेढ़ दो घण्टे बाद मैथुन करनेसे वीर्य स्वलित नहीं होता ।

( २७ ) सफेद चमेलीकी पत्तियोंका स्वरस चार तोले और तिलीका तेल १ तोले—दोनोंको कटोरीमें रखकर आगपर पकाओ । जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार लो । मैथुन करनेके समयसे एक घंटे पहले, इस तेलको लिङ्गपर मलकर पान बाँध दो; पीछे खोलकर मैथुन करो; वीर्य जल्दी स्वलित न होगा और तेजी बनी रहेगी ।



( २८ ) अकरकरा १ तोले, सोंठ १ तोले, केशर १ तोले, पीपर १ तोले, लौंग १ तोले, सफ़ेद चन्दनका बुरादा १ तोले और शुद्ध अफीम १ माशे—सबको पीस-छान कर रख लो इसमेंसे दो माशे चूर्ण ६ माशे शहदमें मिलाकर साँझको खाओ और मिश्री-मिला गरम दूध पीओ । इसके सेवन करनेसे पुरुषत्व बढ़ता और स्तम्भन होता है । इसे रोज़ भी खा सकते हो और मनचाहे जब छी-प्रसङ्ग कर सकते हो ।

नोट—चूर्ण बनानेके बाद, अगर चूर्णके बराबर खोंड भी मिला ली जाय और रोज़ ६ माशे चूर्ण मिश्री-मिले गरम दूधके साथ खाया जाय, तो कामी पुरुषको बड़ा लाभ हो । स्तम्भन-शक्ति बढ़ जाय । परोक्षित है ।

( २९ ) पारा ५ तोले, गायके वारह पित्ते और भाँगरेका रस आध सेर—इन सबको लोहेकी कढ़ाहीमें रक्खो । लोहेकी मूसलीमें एक पैसा जड़वाकर, उसीसे बराबर छै दिन तक घोटो । जब मसाला खूब गाढ़ा हो जाय, जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बना लो । इसमेंसे एक गोली लेकर, थूकमें घिसकर, सुपारी छोड़ शेष लिङ्गपर लगाओ । कुछ देर बाद मैथुन करो, बड़ा आनन्द आवेगा ।

( ३० ) असगन्ध, गजपीपल और कड़वा कूट चार-चार तोले लाकर पीस-कूटकर कपड़-छन कर लो और गायके मक्खनमें मिला लो । सवेरे-शाम, सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिङ्गपर पन्द्रह दिन तक मलो । हर दिन, लेप लगानेसे पहले, गरम पानीसे लिङ्गको धो लो—शीतलसे नहीं । इस लेपसे लिङ्ग तेज और कठोर हो जाता है ।

नोट—गजपीपलकी जगह कोई-कोई “दालचीनी” भी डालते हैं ।

( ३१ ) जङ्गली कबूतरकी चरबी, जङ्गली कबूतरकी बीट, नमक और शहद—इनको बराबर-बराबर लेकर मिला लो और भोग करनेके समय, सुपारी छोड़कर बाक़ी लिङ्गपर मलो । ऐसा आनन्द आवेगा, कि लिख नहीं सकते ।



( ३२ ) मारु बैंगन मिट्टीमें लपेटकर भूभलमें दबा दो । फिर मिट्टी हटाकर उसका रस निचोड़ लो । उस रसमें ८१० पीपल तीन दिन भीगने दो चौथे दिन, पीपर निकालकर सुखा लो । मैथुनसे पहले, कुछ पीपर महीन पीस कर “शहद” में मिला लो और सुपारी छोड़ कर शेष लिङ्गपर लेप कर लो । वह आनन्द आयेगा, जिसको हम लिख नहीं सकते ।

( ३३ ) कौंचकीजड़, उँगलीके सिरे-पोरवेके बराबर लेकर, मुँहमें रख लो और मैथुन करो । जब तक जड़ मुँहमें रहेगी, वीर्य न छुटेगा ।

( ३४ ) ६ माशे कुचला दुआतिशी शराबमें पीसकर, उसका गाढ़ा-गाढ़ा लेप नाखूनोंपर करो । जब सूख जाय, मैथुन करो । खूब स्तम्भन होगा ।

( ३५ ) अजवायन ५ माशे, कद्दूके बीजोंकी गिरी ६ माशे, इस्बन्द ६ माशे, भाँगके बीज ८ माशे, मुने-चने ७ माशे, अफीम ३ माशे, केशर ४ रत्ती, इलायचीके दाने १ माशे और खसके डोडे नग २ इन सबको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो । पोस्तके डोडे कूट कर एक प्यालेमें भिगो दो । पीछे उनको मलकर पानी निकाल लो । उस पानीके साथ ऊपरके पिसे-छने चूर्णको खूब घोटो । जब गाढ़ा मसाला हो जाय, जङ्गली छोटे बेरके समान गोलियाँ बनाकर, चाँदीके वर्क लपेट दो और छायामें सुखा लो । स्त्री-प्रसङ्गके समयसे एक या डेढ़ घण्टे पहले, एक गोली खाकर एक पाव दूध पीलो । अगर आपका वीर्य गाढ़ा है, तब तो इतना आनन्द आयेगा, कि लिख नहीं सकते । अगर वीर्य पतला है, तो भी मामूलीसे बहुत अधिक समय लगेगा । परीक्षित है ।

नोट—अगर गरमी मालूम हो, तो शर्बत सफ़ेद चन्दन या कद्दूके बीज, खुरफेके बीज और तरबूजके बीजोंका रस पीओ ।

( ३६ ) अकरकरा २० माशे, रिहॉके बीज २४ माशे और मिश्री २७ माशे—इनको पीस-कूट और छान कर रख लो । इसमेंसे ३ माशे चूर्ण



खाकर, दो घण्टे बाद मैथुन करनेसे वीर्य तब तक न छुटेगा, जब तक आप नीबूका रस न पियेंगे । परीक्षित है ।

( ३७ ) भुनी हुई इसबन्द, कपूर, मुरमकी और अजवायन,— इन चारोंको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर छान लो । फिर “अद-रखके स्वरस”में मसालेको घोटकर, चने-समान गोलियाँ बना लो । मैथुनसे पहले १ गोली खाकर दूध पीलो । मामूलीसे अधिक देर लगेगी ।

( ३८ ) जलानेका इसबन्द दो तोले, पोस्तका आधा टुकड़ा कच्चा और आधा पक्का, काले तिल ६ माशे और गुड़ ५ तोले—इन सबको पीस-कूट और छानकर सात भाग कर लो । एक भाग यानी कोई १४ माशे दवा मैथुनसे पहले खाकर, घण्टे-भर बाद स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे वीर्यका खूब स्तम्भन होता है । यह नुसखा “इलाजुलगुर्बा”में लिखा है । आजमूदा है ।

( ३९ ) अकरकरा ४॥ माशे, केशर ६ माशे, जायफल १३॥ माशे, लौंग १३॥ माशे, शुद्ध शिंगरफ २१ माशे और शुद्ध अफीम ६ माशे ले लो । इन सबको कूट-पीस और छानकर स्वरलमें डालो । ऊपर से “शहद” दे-देकर पूरे ६ घण्टे घोटो । घुट जानेपर, चने-समान गोलियाँ बना लो । सन्ध्या-समय १ गोली खाकर, ऊपरसे गायका अधौटा दूध पीलो । २ घण्टे बाद मैथुन करनेसे वीर्यमें खूब रुकावट होगी । परीक्षित है ।

( ४० ) बूढ़ी स्त्रीके कुछ सफेद बाल जला लो । उन बालोंकी राखमें “सुहागा” पीसकर मिला दो । पीछे इन दोनोंके चूर्णमें “शहद” मिला लो और इन्द्रियपर लेप करके प्रसङ्ग करो, स्त्री शीघ्र ही द्रवित हो जायगी ।

नोट—पानमें ज़रा-सा सुहागा रखकर खिला देनेसे स्त्री-द्रवित होजाती है ।

( ४१ ) कौंचकी जड़ एक अंगुल-बराबर मैथुनके समय मुँहमें रखने और रस चूसते रहनेसे खूब स्तम्भन होता है । जब तक रस पेटमें जाता है, वीर्य स्थलित नहीं होता ।



(४२) पका हुआ बैंगन लाकर उसके बीज निकाल लो । फिर उसमें पीपर ६ माशे भर दो और ऊपर से मिट्टी लगाकर, उसे भूभलमें पकाओ । जब पक जाय, पीपल निकालकर छायामें सुखा लो । फिर ज्वररत के समय, पीपरोंके बराबर दालचीनी मिला लो और पीसकर दो माशे “शहद”में गोली बना लो । इस गोलीको थूकमें घिसकर, मैथुनसे पहले, इन्द्रियपर लेप करनेसे खूब स्तम्भन होता है ।

(४३) मुर्दासंग और चूहेकी लेंडी मिलाकर, पानीमें पीसकर, लिंगपर लेप करनेसे स्तम्भन होता है ।

नोट—मैथुनके बाद शहद, पुराना गुड़ या दूध पी लेने से बल बढ़ता है—घटता नहीं ।

(४४) लौंग ८ माशे, जायफल १२ माशे, अफीम १६ माशे और कस्तूरी २ रत्ती—इनको पीस-कूट कर “शहद”में मिलाकर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । विषय-भोगसे पहले, एक या दो गोली बँगला पानमें रखकर खानेसे इतनी रुकावट होती है कि, बिना खटाई खाये निजात नहीं मिलती ।

(४५) दालचीनी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । पीछे “शहद”में मिलाकर सात-सात माशेकी गोलियाँ बना लो । मैथुनके समय, एक गोली खा लेनेसे मैथुनके भी चार घण्टे बाद तक शहवत बनी रहती है ।

(४६) कस्तूरी १ माशे, केशर १ माशे, जायफल ४ माशे, जावित्री ६ माशे, ऊद ३ माशे, शुद्ध शिलाजीत ४ माशे, सोनेके वर्क १ माशे, चाँदीके वर्क २ माशे और अबीध मोती ३ माशे—लाकर रखो । पहले मोतियोंको पाँच छटाँक गुलाब जलमें घोटकर सूखी मसम कर लो । जायफल, जावित्री और ऊदको पीस-छान लो । फिर सारी चीजोंको खरलमें डालकर और ऊपरसे हरी भाँगका स्वरस या काढ़ा दे-देकर १५ घण्टों तक खरल करो और उसके बाद शहद डाल-डालकर ६ घण्टे तक खरल करो और चने-समान गोलियाँ बनाकर सुखा लो ।



स्त्री-भोगसे १ घण्टे पहले १ गोली खाकर, ऊपरसे छोटी इलायची डाला हुआ मिश्री-मिला गरम दूध पीओ । इनसे खूब रुकावट होती है । अमीरी चीज है । परीक्षित है ।

( ४७ ) अकरकरा १ तोला, वन तुलसीके बीज ३ माशे और मिश्री २॥ तोले—इनको पीसकर ३ गोलियाँ बनालो । समय पर एक गोली खाकर दूध पीनेसे रुकावट खूब होती है ।

( ४८ ) सफेद फूलकी कनेरकी जड़ पानीमें घिसकर, लिंगका अगला भाग या सुपारी छोड़कर, बाकी भागपर लगाओ । १५।२० मिनट बाद उसे धो डालो और प्रसंग करो—खूब रुकावट होगी ।

## लिंगको बढ़ाने और मोटा करनेके उपाय ।

( १ ) कपूर, सुहागा, पीपल, जमीकन्दका रस, धतूरेका रस, अगस्तका रस, शहद और घी—इन आठोंको समान-समान लेकर और मिलाकर खूब घोटो, जब एक दिल होजायँ, इसमेंसे रोज लिंगपर लेप करो । कोई एक महीने इस लेपके लगानेसे लिंग बहुत कुछ बढ़ जाता और स्त्री-खलास करनेकी सामर्थ्य हो जाती है ।

( २ ) कालीमिर्च, सैधानोन, पीपर, तगर, भटकटैयाके फल, चिर-चिरेकी जड़, काले तिल, कड़वा कूट, जौका गूदा यानी छिले हुए जौ, उड़दकी धोई दाल, सरसों और असगन्ध—इन सबको समान-समान लेकर और महीने पीसकर बारीक कपड़ेमें छान लो । फिर इस चूर्णमें से थोड़ा लेकर “शहद और बकरीके दूध”में खरल करो, और गरम करके निवाया-निवावा—लिंगपर लगा दो । इस लेपके १ या १॥ महीने तक बराबर लगाते रहनेसे लिंग निश्चय ही कुछ मोटा और लंबा हो जाता है । स्तनोंपर लगानेसे स्तन भी बढ़ जाते हैं । यह लेप हमारा आज्ञामूदा है, पर हथेली पर सरसों नहीं जमती, धीरे-धीरे अवश्य लाभ दिखाता है । हमने इस कामके लिए जितने नुसखे आज्ञमाये—उन सबमें यही अच्छा निकला । जो लिंग बढ़ाना चाहें, वे इसे



१ महीने नियमसे लगाकर देखें । अगर उन्हें लिंगमें कुछ भी बढ़ती दीखे, इसे और १ महीने लगावें । परीक्षित है ।

( ३ ) दूब, असगन्ध और सैधानोन—प्रत्येक दो-दो तोले लेकर पीस लो और कढ़ाहीमें रखकर, ऊपरसे पाँच छटाँक “घी” और सवा सेर “बकरीका दूध” डालकर पकाओ । जब दूध जलकर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और शीशीमें रखदो । इस घीके लगातार महीने भर लगानेसे इन्द्रिय अवश्य बढ़ती है ।

( ४ ) सूअरकी चरबी और शहद मिलाकर रोज़ लिंगपर मलनेसे लिंग अवश्य मोटा होता है ।

## स्त्रीको द्रवित करनेवाले नुसखे ।

( १ ) शहद और गन्धक मिलाकर पीसलो और भोगसे पहले लिंगपर लेप करलो । इस लेपको लगातार भोग करनेसे औरत पहले स्वलित होती है ।

( २ ) भोगके समय, दो चाँवल-भर भुना हुआ सुहागा पानमें खिला देनेसे स्त्री स्वलित होजाती है ।

( ३ ) कपूर और पारा घोटकर इन्द्रिय पर लेप करो और फिर भोग करो । स्त्री स्वलित हो जावेगी ।

( ४ ) पहले सुहागा और पारा घोटकर लेप करो और फिर भोग करो, स्त्री पहले स्वलित हो जावेगी ।

( ५ ) कपूर, सुहागा और पारा समान-समान लेकर, अगस्तके पत्तोंके रसमें खरल करके लिंगपर लेप करो और फिर भोग करो, औरत जल्दी ही छुट जायगी ।

( ६ ) सिन्दूर और शहद मिलाकर लिंगपर लेप करनेसे भी औरत पहले छुट जाती है ।

नोट—संसारमें तीन तरहकी औरतें होती हैं—(१) सुरिधा, (२) बता, और (३) मुतबस्सिता । सुरिया औरत डील-डोलमें लम्बी होती है । इसकी योनिका



बाहरका भाग खुला हुआ औरभीतरवाला तंग होता है, यह जल्दी ही खलित होती है ।

बता औरत कदमें नाटी या ठिंगनी होती है । इसकी योनि आदिसे अन्त तक एकसी होती है । यह देरमें खलित होती है ।

मुतबस्सिता औरत डील-डौलमें न बहुत लम्बी होती है न नाटी या ठिंगनी । यह भोग करते-करते बीचमें ही खलित हो जाती है ।

जब स्त्री खलित होती है, तब किसीको तो बड़ा हर्ष होता है । किसीकी आँखोंमें आँसू भर आते हैं, कोई वेहोस हो जाती है और कोई शर्मके मारे नेत्र बन्द कर लेती है । यही खलित होनेकी पहचान है ।

हस्त-मैथुन प्रभृति कुकर्मोंसे खराब हुई लिंगेन्द्रियको  
दुरुस्त और ठीक करनेवाले  
नाना प्रकारके लेप, सेक और तिले ।  
ही होगी

( १ ) चार न मैथुन लहसनको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो । फिर एक देगर्च और किसी बासनमें तीन छटाँक अलसी का तेल और तीन पाव पानी डालकर, उसीमें लहसनकी लुगदी रख दो, और उस बर्तनको चूल्हेपर चड़ा दो । जब पानी जल जाय, तेलको उतारकर छान लो । फिर राई, अकरकरा, नीबूके बीज और माल-काँगनी एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो और उसी लहसनके पके तेलमें डालकर बहुत ही मन्दी आगसे पकाओ । जब आधा तेल रहजाय, उतारकर छान लो । इस तेलको सुपारी और सोंवन छोड़कर, बाक़ी लिङ्गपर मलनेसे सुस्ती दूर होकर तेज़ी आती है । कम-से-कम २१ दिन मलना चाहिये । परीक्षित है ।

( २ ) २ तोले ३ माशे मीठा तेल खूब मन्दी आगपर गरम करके



उतार लो । पीछे उसमें सवा दो माशे “लाल हरताल” महीन पीसकर मिला दो । इसके बाद साढ़े चार माशे “सुहागा” और साढ़े चार माशे “कड़वा कूट” भी-पीसकर मिला दो । “फिर चमेलीकी पत्तियोंका दो तोले स्वरस” भी उसीमें मिला दो और फिर आगपर रख दो । जब पत्तियों का रस जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो । इस तेलको साँवन-सुपारी छोड़कर, शेष लिङ्गपर, २१ दिन मलनेसे लिङ्गकी सुस्ती जाकर खूब ही तेजी आती है ।

( ३ ) ग्यारह बरोंको आध पाव मोठे तेलमें डालकर जलाओ और फिर तेलको छानकर शीशीमें रख लो । इस तेलको लिङ्गपर मलनेसे लिङ्ग बहुत जोर करता है ।

नीट—वर् एक जन्तु है, जो गुड़ या मिठाई पर बैठता है । हलवाईयोंकी दुकानों पर बहुत होता है । कोई पीला और कोई लाल-पीला होता है । उसके काटनेसे भयानक पीड़ा होती है । उसे कहीं बर, कहीं भिरद और कहीं ततैया भी कहते हैं । अंग्रेजी में उसे वास्प ( wasp ) कहते हैं ।

( ४ ) पतला महीन कपड़ा लेकर, “धूहर सुद्धमें” तीन दफा भिगोकर सुखा लो । फिर उस कपड़ेको तीन “अजके रस”में भिगोकर सुखा लो । इसके बाद, उस कपड़े को उसीके तेल”में २४ घंटे तक भीगने दो । सुपारी छोड़कर, बाकांलि, “मक्खन मलो और ऊपर से “यही कपड़ा” कोई डेढ़ घण्टे तक, लिङ्गपर, सुपारी बचाकर, लपेट रखो । ऊपर से कच्चा डोरा लपेट दो । कुछ देर बाद उसे खोल डालो । अगर खूब तेजी न आजाय । तो दूसरे दिन भी उसी कपड़े को लपेट दो; पर पहली बार खोलनेके बाद ही उसे “अलसीके तेल” में डुबा देना । लपेटनेके समय, तेलसे निकाल कर लपेट लेना । इस उपायसे एक, दो या तीन दिन में खूब तेजी आजाती है । दूसरे दिन भी जब कपड़ा लपेटो, पहले इन्द्रिय पर “मक्खन लगा लेना ।

( ५ ) आमाहल्दी पानीमें घोलकर, एक कपड़ेको उसमें रंगलो और सुखा लो । इसके बाद उसी कपड़ेको “धतूरेके रस”में तीन बार भिगो-



भिगोकर सुखा लो । फिर इसी तरह मदार या “आकके दूध” में तीन बार भिगो-भिगोकर सुखा लो । भिगोये हुए कपड़ेको हरबार छायामें सुखाओ । जब एक बार आमाहल्दीमें, तीन बार धतूरेके रसमें और तीन बार आकके दूधमें कपड़ेको भिगोकर सुखा लो; तब एक बासन में “भैंसका घी” डालकर आगपर रखो और कपड़ेको उसीमें डाल दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ । फिर कपड़ेको निकालकर, उसपर “शहद” लीप दो और ऊपरसे “हीरा होंग” एक रत्ती महीन पीसकर बुरक दो । इस कपड़ेको सुपारी छोड़कर, लिङ्गके शेष भागमें तीन दिन तक बाँधो । लिङ्गकी सारी सुस्ती नाश होकर, बेहिसाब तेजी आवेगी ।

( ६ ) जिस मुर्गेने मुर्गीका संग न किया हो उसे काट डालो और उसका थोड़ा-सा खून एक प्यालेमें ले लो ! उतना ही खून जवान गधेका उस खूनमें मिला दो । इन दोनों खूनोको मिलाकर, सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिङ्गपर मलो और पंखेसे हवा करो । पहले दिन जलन होगी । दूसरे दिन फिर लगानेसे, पहले दिनसे कम जलन होगी और तीसरे दिन लगानेसे जलन ज़रा भी न होगी; पर स्त्री-प्रसङ्गकी इच्छा बहुत ही होगी । लेकिन उस दिन मैथुन न करना चाहिये । चौथे-पाँचवें दिन मैथुन करनेसे दिल खुश हो जायगा ।

( ७ ) मूलीके बीज ३ माशे, विनौले ३ माशे, अकरकरा १॥ माशे और कड़वा कूट १॥ माशे—इनको खूब महीन पीस-छानकर लिङ्ग पर लगानेसे खूब तेजी होती है । ११ दिन लगाना चाहिये ।

( ८ ) अकरकरा २ माशे और जङ्गली प्याजका रस १० माशे,—इन दोनोंको पीसकर लिङ्गपर लगानेसे लिङ्ग सख्त हो जाता है । ११ या २१ दिन तक, यह नुसखा काममें लाना चाहिये ।

( ९ ) लौंग १ और समन्दरफलकी गिरी १—दोनोंको “शहद”में मिलाकर २१ दिन लगानेसे लिङ्ग कड़ा हो जाता है ।

( १० ) तिलीका तेल आध सेर और रैडीकी गिरी १ पाव,—दोनों



को आगपर रखकर औटाओ । जब पाव-भर तेल रह जाय, उतारकर एक शीशीमें भर दो । इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा तेल रोज रातको लिङ्गपर, सुपारी छोड़कर, ४० दिन तक आध घण्टे रोज मलो । अगर हथरससे लिङ्ग सुस्त या टेढ़ा हो गया होगा, तो आराम हो जायगा ।

( ११ ) जङ्गली कबूतरकी बीटकी सफेदी २ माशे लाकर, असली चमेलीके तेलमें खूब पीसकर लिङ्गपर मलो । ३१ दिनमें हथरसके दोष जड़से दूर हो जायँगे ।

( १२ ) चमेलीके तेलमें “इसबन्द” पीसकर, रोज लिङ्गपर लगानेसे लिङ्गमें तेजी और सख्ती आ जाती है । २१ दिन तक यह काम करना चाहिए ।

( १३ ) चमगीदड़का खून लिङ्गपर मलनेसे लिङ्गमें खूब तेजी आ जाती है । कम-से-कम २५ दिन तक मलना चाहिये ।

( १४ ) काले साँपकी चरबी, मछलीकी चरबी और जङ्गली सूअर की चरबी, इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, खरलमें डालकर, ऊपरसे बकरीका पेशाब डाल-डालकर, तीन दिन तक घोटो । इस लेपके लिङ्ग पर लगानेसे लिङ्गमें निश्चय ही खूब तेजी और सख्ती आ जाती है ।

( १५ ) चूहेकी मैंगनी “शहद”में पीसकर, २१ दिन तक, लिङ्ग पर लगानेसे तेजी बढ़ जाती है ।

( १६ ) मूलीके बीज चार तोले पीसकर, १६ तोले मीठे तेलमें मिलाकर औटाओ और रख लो । इसमेंसे कुछ तेल लेकर रोज २१ या ३१ दिन तक, लिङ्गपर मलनेसे लिङ्गमें बड़े जोरकी तेजी आती है ।

( १७ ) औरतके सिरके बाल १ छटाँकमें आग लगा दो और राख को उठा लो । उस राखमें अन्दाजसे थोड़ीसी “कबूतरकी बीटकी सफेदी” मिलाकर, उसे “चमेलीके तेल”में हल कर लो यानी घोट लो । मैथुनके समय, इस लेपको लिङ्गपर, सुपारी छोड़कर, लगा लो और मैथुन करो, इतना आनन्द आयेगा, कि लिख नहीं सकते ।



( १८ ) थूहरका दूध १ तोले और गायका दूध १ तोले—दोनोंको दिन-भर धूपमें रखो । रातको उसमें थोड़ासा तेल मिलाकर लिङ्गपर मलो । जब लेप सूख जाय, १ घण्टे बाद मैथुन करो; .खूब आनन्द आवेगा और वीर्य देर तक न गिरेगा ।

( १९ ) काले धतूरेकी पत्तियोंका रस टखनों पर लगाओ, जब रस सूख जाय, मैथुन करो । वीर्य जल्दी स्खलित न होगा और .खूब आनन्द आवेगा ।

( २० ) हाथी-दाँतका चूरा चार तोले, मछलीके दाँतोंका चूरा चार तोले, लौंग ८ माशे, जायफल नग २ और जंगली प्याजकी १ गाँठ—इन सबको कूट-पीसकर छान लो और आधी-आधी दवा दो कपड़ेकी पोटलियोंमें रखकर पोटली बाँध लो ।

एक छोटीसी हाँडी और उसपर ठीक बैठता हुआ ढक्कन लाओ । ढक्कनके बीचमें, छोटी उँगली समावे जितना छेद कर लो । पारी या ढकनेको हाँडीपर रख कर, हाँडी और ढक्कनकी सन्धियोंमें कपड़मिट्टी कर दो, ताकि साँस न रहे । इसके बाद, हाँडीमें भेड़का आध पाव दूध भर दो और हाँडीके नीचे आग लगा दो । आग मन्दी रहे । तपत पहुँचनेसे ढकनेके छेदमें होकर भाफ निकलेगी । उस भाफ पर एक पोटली रख दो । जब पोटली भाफसे गरम हो जाय, उतार लो और उससे जाँघ, पेड़ू और इन्द्रिय सब जगह सेक करो । पहली पोटलीको छेदसे हटाते ही, दूसरीको छेदपर रख दो । जब हाथ वाली ठण्डी हो जाय, उसे छेदपर रख दो और छेदवालीको उठा कर, उससे फिर सेक करो । इस तरह कोई घण्टे डेढ़ घण्टे तक सेक करो । इसके बाद वज्रला पान आगपर सेककर, इन्द्रियपर बाँध दो । दूसरे दिन पान खोलकर, फिर सेक करो और नया पान सेक कर बाँध दो । जब तक सेक करो, बिल्कुल स्नान मत करो । यह सेक चार दिन करना होगा ।

जब चार दिन तक सेक कर लो । तब सफेद कनेरकी जड़,



जायफल, अफीम, इलायची और सेमरकी छाल—इन सबको महीन कूट-पीस और छान कर, १ तोले तिलीके तेलमें मिलाकर गरम करो । सुपारी छोड़ कर, शेष इन्द्रियपर इस तेलका लेप कर दो । तीन दिन तक इस लेपको करते रहो । पहला लेप सुहाते-सुहाते गरम जलसे धो लेना । शीतल जल कभी मत लगाना । हवा भी मत लगाने देना । स्त्री-प्रसंगका तो नाम भी मत येना । इस उपायसे इन्द्रिय खूब तेज हो जाती है । कई रोगी आराम हुए हैं । परीक्षित है । इसके साथ-साथ कोई ताकतवर दवा भी खाते रहना चाहिये ।

( २१ ) तेलिया विष, अमाहल्दी और मैदा-लकड़ी—इन तीनोंको दस-दस माशे लेकर अलग-अलग कूटकर छान लो और मिला दो । इसके तीन भाग कर लो । एक भागको ताजा पानीमें मिलाकर लेपसा कर लो । सीवन-सुपारी छोड़कर, लिङ्गके बाकी हिस्सेमें इसे लगाओ और पान बाँध कर कच्चा डोरा लपेट दो । इसे सारे दिन-रात बँधा रहने दो । दूसरे दिन रात को, फिर तीसरा भाग पानीमें मिलाकर लेप करो और पान बाँध दो । तीसरे दिन फिर ऐसा ही करो । चौथे दिन गायका घी १०१ बार धोकर, लिङ्गपर उसका लेप करदो । इस लेपसे तीन दिनमें ही लिङ्गके सारे दोष निकल जायँगे । बड़ा अच्छा नुसखा है । परीक्षित है ।

( २२ ) गायका घी एक पाव, लोहेकी छोटी कड़ाहीमें डालकर, आग पर रखो । जब घी गरम हो जाय, उसमें तालावकी एक बड़ी जौंक जीती हुई डाल दो । जब जौंकका पेट फट जाय और उसकी आवाज आप सुन लो । कड़ाहीको उतार लो और सेमलका गोंद, काजल जैसा, महीन पिसा हुआ उसमें मिला दो और नीमके सोटेसे १२ घण्टे तक लगातार रगड़ो । इस घीके लिंगपर लगानेसे लिंगके सब दोष नाश होकर खूब तेजी होती है ।

नोट—अगर बड़ी जौंक न मिले तो ७ छोटी जौंके घी में डाल दो ।



( २३ ) एक तोले कैचुए गायके २ तोले घीमें मिलाकर खरलमें डालकर, ६ घण्टे तक खरल करो । इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा घी लेकर लिङ्गपर ( सुपारी-सौवन छोड़ कर ) मलने और ऊपर “कनेर या अरण्डके पत्ते” बाँधनेसे लिङ्गके सब दोष नष्ट हो जाते और खूब तेजी आती हैं ।

( २४ ) इस्थन्द ५ तोले, रेंडीके बीजोंकी गिरी ५ तोले और पीली सरसों ५ तोले—इनको कूट-पीस-छानकर काजलसा करलो । पीछे इस चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे चमेलीका असली तेल ५ तोले छोड़कर, खूब खरल करो । इस लेपको सबेरे धूपमें और रात को बिना हवाके स्थानमें, सुपारी छोड़कर, शेष लिङ्गपर धीरे-धीरे मलो । अगर जाड़ेका मौसम हो, तो जलते हुए कोयलोंकी अँगीठी पास रख लो । लेप लगा कर, अँगीठीपर हाथ गरम कर-करके, नाभिसे लेकर रानों तक पूरे दो घण्टे सेक करो । एक हकीम साहब इसे लिङ्गके रोगोपर अपना आज्ञमूदा बताते हैं ।

( २५ ) ताज्जा बीरबहुट्टी तीन तोले और बरोंका छत्ता तीन तोले खरलमें डालकर, ऊपरसे तिलोंका तेल छै तोले मिलाकर खूब खरल करो । जब लगाने योग्य कज्जली हो जाय, इसमें से थोड़ीसी लेकर, सुपारी छोड़, लिंगके शेष भागपर उसका लेप करो । इस तरह कई दिन करनेसे लिंग बड़ा आनन्द देता है ।

( २६ ) सफ़ेद कनेरकी जड़की छाल महीन पीस कर, भटकटैयाके रसमें खरल करके २१ दिन तक लिङ्गपर, सुपारी छोड़कर लेप करो; बेतहाशा तेजी बढ़ जायगी ।

( २७ ) पहले तिलीका तेल लिंगपर मलो । फिर “हालों” दो तोले पानीमें पीसकर, आगपर गरम कर लो । इसको सुहाता-सुहाता गरम लिङ्गपर लगा दो और ऊपरसे पान या अरण्डका पत्ता बाँध दो । लिङ्गके दोनों तरफ, लकड़ीकी पतली खपच्चियाँ लगाकर, यथोचित रूपसे, पट्टीसे कसकर बाँध दो । ३ घण्टे बाद



खोल कर निवाये पानीसे लिङ्गको धो लो । इस तरह ७ या ११ दिन करनेसे हथरसकी वजह से हुआ लिङ्गका टेढ़ापन जाता रहेगा ।

( २८ ) असगन्धकी जड़ जौकुट करके, “काले घतूरेके रस”में भिगो दो और छायामें सुखा लो । फिर ताजा रस घतूरेका निकाल कर, उस सूखे हुए चूर्णको फिर भिगो दो और सुखा लो । इस तरह २० बार ताजा घतूरेके रसमें भिगो-भिगो कर सुखा लो । जब मैथुन करना हो, इसमेंसे थोड़ा-सा लेकर खूब महीन पीस लो “अपने थूकमें मिलाकर” लिङ्गपर, सुपारी बचाकर, मलो और ३ घण्टे बाद मैथुन करो, लिङ्ग लकड़ी-सा शक्ति हो जायगा और वीर्य देर बाद स्खलित होगा । मैथुनके बाद, लिङ्गपर “गायका घी” मलना बहुत जरूरी है ।

( २९ ) चमेलीके तेलमें “राई” पीसकर लिङ्गपर मलनेसे लिङ्ग सख्त हो जाता है ।

( ३० ) बीरबहुट्टी, सूखा केंचुआ, नागौरी-असगन्ध, जरबचोप, आम्राहल्दी और भुने चने—इन सबको पीसकर कपड़ेमें छान लो और खरलमें डालकर, ऊपरसे “रौमानगुल” दे-देकर घोटो । फिर दो पोट-लियोंमें यह मसाला बाँध लो । अंगीठीमें कोयले जलाकर, उसपर तवा रख लो । तवेपर पोटली तपान्तपाकर, नाभि और पेड़ू से जाँघों तक ( इन्द्रियको लेकर ) एक घण्टे रोज़ सेक करो ! जब एक पोटली गरम हो जाय, उससे सेक करो और दूसरी को तवे पर रख दो । आग लिल्कुल मन्दी रहे, नहीं तो पोटली जल जायगी । पोटली इन्द्रियपर सुहाती गरम लगाओ, बहुत गरम न हो । इस सेकके बाद बङ्गला पान गरम करके इन्द्रियपर लपेट दो और कच्चा डोरा बाँध दो । सेकके चार दिनों तक नहानेका नाम भी मत लो और हवा भी इन्द्रियको न लगने दो । इस सेकके चार दिन बाद नीचे लिखा लेप करो:—

अकरकरा दक्खनी २ माशे, बीरबहुट्टी २ माशे और २० लौंग



तथा बकरेका मांस आध पाव,—इन चारोंको खूब महीन पीसलो और एक लकड़ी ऐसी बनाओ जो ठीक तुम्हारी इन्द्रियके जितनी ही लम्बी और मोटी हो। लम्बाईमें सुपारीको छोड़ दो। उस लकड़ीपर इस मसालेको लपेट दो और आगपर सेको। जब मसाला कड़ा हो जाय, उसे बिना टूटे उतार लो। अगर न उतरे, तो बीचसे एक फाँक करके उतार लो और अपनी इन्द्रियको सुपारी छोड़कर पहना दो। पीछे पतला-सा कपड़ा लपेट कर, कच्चा डोरा बाँध दो। पानी भूलकर भी इन्द्रियके न लगने दो। यह सेक और लेप लिङ्गकी सुस्ती, ढिलाई और दुबलेपनको नाश करते हैं। परीक्षित है।

( ३१ ) एक मारु बैंगन ऐसा लाओ, जो अपने पेड़में ही पीला पड़ गया हो। उसमें “सात पीपर” खोंसकर उसे लटका दो। जब बैंगन सूख जाय, उसे आध सेर “मीठे तेल”में डालकर औटाओ। जब तेल खूब गरम हो जाय, उसमें “सात तोले केंचुए” पीसकर मिला दो। इसके बाद, उसमें अढ़ाई तोले “लहसन” भी छील कर मिला दो और आगसे उतार लो। बादमें, उस तेल और मसालेको खरलमें डालकर खरल करो और शीशीमें भरकर रख दो। इसमेंसे १ माशे भर, सुपारी-सीवन छोड़कर, बाक्री लिङ्गपर, १५ दिन तक मलो और ऊपरसे बड़के या ल्हिसोड़ेके पत्ते लपेटकर, कच्चे डोरेसे बाँध दो। परमात्माकी दयासे, इस नुसखेसे हथरस या लौंढेबाजीके कारणसे खराब हुआ लिङ्ग फिर निर्दोष हो जायगा और टेढ़ापन भी दूर हो जायगा। इसको “शाहलेप” कहते हैं। यह लेप लिङ्गके लेपोंका बादशाह है। परीक्षित है।

( ३२ ) सफ़ेद चिरमिट्टी, अकरकरा, बीरबहुट्टी सवा तीन-तीन माशे और संखिया एक माशे—इन चारोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे “दुआतिशी शराब” डाल-डालकर, तीन दिन तक खरल करो और शीशीमें भर दो। इसको रातके समय, सुपारी बचाकर, लिङ्गपर लगाओ और पान लपेट कर, कच्चा डोरा बाँधकर सो रहो। सबेरे खोल



डालो, पर लिङ्गको हवा न लगे । इस तरह सात दिन करनेसे लिङ्गकी कमजोरी निश्चय ही नाश हो जायगी । लिङ्ग एक-दम कड़ा और तेज हो जायगा ।

( ३३ ) आदमीके कानका मैल १ तोले लेकर, तोले-भर सूअरकी चरबी मिलाकर, तीन दिन तक खरल करो । इसके बाद इसे, सुपारी छोड़, लिङ्गके बाकी हिस्सेमें लगाओ । ७ दिनमें इच्छा पूरी होगी । खूब तेजी होगी ।

( ३४ ) सफेद कनेरकी जड़की छाल १ तोले, गधेका पेशाब १ तोले और शिंगरफ ३ माशे—सबको पीसकर एक-दिल कर लो । इस लेपको ७ दिन तक लिङ्गपर मल कर, “अरण्डके पत्ते” लपेटो । इससे लिङ्गकी कमजोरी निश्चय ही जाती रहती है ।

( ३५ ) हरताल, पारा और नागौरी-असगन्ध,—ये तीनों अठारह-अठारह माशे, सुहागा नौ माशे, सोमलखार ६ माशे और मैनसिल ३ तोले—इन सबको महीन पीस-कूटकर छान लो और इस चूर्णके बजनके बराबर “गायका धी” मिलाकर खूब खरल करो । इस धीको सुपारी छोड़कर, बाकी लिङ्गपर धीरे-धीरे रोज मलो । इस लेपसे निश्चय ही नामर्दी नाश हो जाती है ।

( ३६ ) बच, असगन्ध, पीपरामूल, कड़वा कूट और धतूरेके बीज—इनको बराबर-बराबर ले लो । पीछे कूटकर-कपड़-छन कर लो । इसमेंसे १ माशे दवा, १ तोले गायके धीमें मिलाकर, इन्द्रियके अगले भाग या सुपारीको छोड़कर, बाकी भागपर रोज मालिश करो । लगातार २१ या ४१ दिन लगानेसे नामर्द भी मर्द हो जाता है ।

( ३७ ) सूअरकी चरबी, बड़िया ज्राण्डी और शहद—इन तीनोंको, रोज, सबेरे-शाम लिङ्गके अगले भागको छोड़ शेष भागपर मलने और ऊपरसे बालूकी पोटली आगपर तपा-तपाकर सुहाता-सुहाता सेक करनेसे नामर्द मर्द हो जाता है । इसके लगाते समय शीतल हवा, शीतल जल और नहानेसे बचो तथा स्त्री-प्रसंग



मत करो । इसके साथ-साथ कोई ताकतवर दवा भी खाओ ।  
परीक्षित है ।

( ३८ ) भटकटैयाकी पत्तियाँ ६ तोले ८ माशे, सरसोंका तेल ६ तोले ८ माशे और काला बिच्छू एक "लाकर रखो । भटकटैयाकी पत्तियोंको पीसकर टिकिया बनालो । तेलको आग पर गरम करो । जब तेल उबलने लगे, उसमें वह टिकिया और बिच्छू डाल दो और जलाओ । जब खूब जल जाय, छानकर शीशीमें रख लो । इसमेंसे एक रत्ती भर तेल पानपर चुपड़कर, पानको लिङ्गपर लपेट दो और ऊपरसे डोरा बाँध दो । सुपारीसे पान दूर रहे । इस उपायसे लिङ्ग बहुत तेज हो जाता है ।

( ३९ ) विनौलोंकी मींगी बकरीकी चरबीमें मिलाकर पीस लो और इन्द्रियपर मलो । इस लेपके लगानेसे लिङ्गका बाँकपन मिटता और मुटाई बढ़ती है ।

( ४० ) सुहागा, कड़वा कूट और मैनसिल—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । फिर इसमें चमेलीके पत्तोंका स्वरस २० माशे मिला दो । शेषमें, कढ़ाहीमें तिलोंका तेल और ऊपरका मसाला रखकर, मन्दी-मन्दी आगपर पकाओ । जब चमेलीका रस जल जाय और तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो । इस तेलके इन्द्रियपर मलनेसे बाँकपन मिटकर इन्द्रिय सख्त और मोटी होती है ।

( ४१ ) समन्दर फल, दारुहल्दी, मुलहठी और शहद—बराबर-बराबर लेकर गधे के मूत्रमें घिसो और इन्द्रियपर मलो । इससे लिङ्ग बढ़ता और स्थूल होता है ।

नोट—छोटी माई, माजूफल, बड़ी हरड़, कपूर, समन्दर-शोष और फिट-करी—इन सबको दो-दो माशे लेकर, पानीमें पीसकर, योनिमें लेप करनेसे योनि संकुचित हो जाती है ।

कुछ लौंगोंको थोड़ीके दूधमें भिगोकर पीस लो और योनिमें रखो । योनि संकुचित हो जायगी ।



अनारके छिलके, माजूफल और लौंग बराबर-बराबर लेकर, शराबमें पीस कर, योनिमें लगानेसे, योनि संकुचित हो जाती है ।

जायफल, माजूफल, अफीम, छोटी माई और बड़ी हरड़का छिलका—ये सब चार-चार माशे तथा लौंग और जावित्री दो-दो माशे—इनको बराण्डोंमें पीसकर, दो-दो माशेकी गोली बना लो । मैथुनसे पहले १ गोली योनिमें रहनेसे पानी आना बन्द हो जाता है ।

( ४२ ) एक माशे हींग शहदमें पीसकर, जीरे-जितनी पतली-मोटी-लम्बी बत्तियाँ बना लो । एक बत्ती लिङ्गके छेदमें रखकर, एक घण्टे बाद मैथुन करो । वीर्य रुकेगा और आनन्द आयेगा ।

( ४३ ) एक कपड़ेको आकके दूधमें २४ घण्टे तक भिगो रखो । फिर निकाल कर उसको सुखा लो । सूख जानेपर, उसपर “घी” लपेटो और उसकी दो बत्तियाँ बना लो । पीछे उन बत्तियोंको लोहेकी एक ढण्डीपर रखकर, दियासलाईसे जलाओ और नीचे काँसीकी थाली रखो । जो चिकनाई टपके, थालीमें टपके । जब बत्तियाँ जल जायँ, टपके हुए तेलको प्याली या शीशीमें रख दो । इस तेलको, सुपारी छोड़कर, लिङ्गपर ३० मिनट तक मलो और “पान या अरण्ड का पत्ता” बौंधकर, कच्चा धागा लपेट दो । इससे हथरसके दोष दूर हो जायँगे । परीक्षित है ।

( ४४ ) ऊँटकटारेका वृक्ष मय जड़-टहनी और पत्तोंके लाकर बकरीके दूधमें भिगो दो और “पाताल यन्त्र”से तेल खींच लो । पीछे उसे शीशीमें रख दो । इस तेलके लिङ्गपर मलनेसे लिङ्गकी सुस्ती जाती रहती है ।

( ४५ ) चमेलीकी पत्तियोंका रस ३ तोले ४ माशे, धतूरेकी पत्तियोंका रस ३ तोले ४ माशे, मीठा तेलिया २० माशे, कड़वा कूट २० माशे, मैनसिल १० माशे, सुहागा २० माशे और तिलोंका तेल ११ तोले ८ माशे—तेलको अलग रखकर, बाकी सब दवाओंको पीस कर टिकिया बना लो । फिर कढ़ाहीमें तेल डालकर, टिकियाको



बीचमें रख दो और आध सेर पानी डाल दो । मन्दी-मन्दी आगसे तेल पकाओ । जब पानी जल जाय, तेलको उतार लो; उसमें टिकियाको खूब खरल कर लो और रख दो । इस मसालेको लिङ्गपर, सुपारी बचाकर, एक दिन बीचमें देकर एक दिन मलो । कुछ दिनोंमें खूब तेजी बढ़ जायगी ।

( ४६ ) भाँग, आककी जड़ और अकरकरा—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर, धतूरेके रसमें पीसकर, इन्द्रियपर लगानेसे लिङ्ग खूब सख्त हो जाता है ।

( ४७ ) महीन कपड़ा एक बालिशत लेकर, धतूरेके आध सेर रसमें, २१ दिनों तक भिगो रखो । जब सब रस कपड़ेमें सूख जाय, एक कटोरीमें २ तोले तिलीका तेल डालकर, उसमें उस कपड़ेको छोड़ दो । फिर कपड़ेको कटोरीसे निकालकर, एक लम्बी लोहेकी सीकमें लटका लो और नीचे काँसीकी थाली रख लो । कपड़ेमें आगेकी ओर दियासलाई दिखाओ । कपड़ेमेंसे थालीमें तेल टपकेगा । उस तेलको शीशीमें रख दो । उसमेंसे २ बूँद तेल सुपारी छोड़कर, बाक़ी लिङ्गपर मलो । ईश्वर चाहेगा, तो चार या आठ दिनोंमें लिङ्गमें बेतहाशा तेजी आ जायगी ।

( ४८ ) मालकॉंगनी ६ तोले ८ माशे, कुचलेका चूरा ६ तोले ८ माशे, ढाकके बीज ६ तोले ८ माशे, जंगली कबूतरकी बीट ६ तोले ४ माशे, सफ़ेद कौड़ी ६ माशे और अकरकरा ६ माशे—इन सबको रातको बकरीके दूधमें भिगो दो और सवेरे ही “पातालयन्त्र”से तेल निकालकर रख लो । इस तेलके लिङ्गपर लगानेसे नामर्द मर्द हो जाता है ।

( ४९ ) नागौरी-असगन्ध, कैचुआ, बीरबहुट्टी, आमाहल्दी और भुने-छिले चने—इने सबको दो-दो तोले लेकर, पीस-कूटकर छान लो और गुलाबके तेलमें खूब घोटो । फिर दो पोटली बनाकर, चूल्हेपर तवा चढ़ाकर, पोटलीको तवेपर रखकर उठा लो और नाभिसे लेकर



रानों तक, मथ इन्द्रियके, सर्वत्र सेक करो । जब एक पोटलीसे सेक करो, दूसरीको तवेपर गरम होने दो । आग मन्दी रखो, ताकि पोटली जल न जाय । इस तरह चार दिन सेक करो । आपकी इन्द्रियमें खूब तेजी आ जायगी । अगर तेजी आ जाय, पर पूरी तेजी न आवे; तो फिर ताजा दवाएँ लाकर, गुलाबके तेलमें घोटकर, पोटली बनाकर, ऊपरकी तरकीबसे फिर चार दिन सेक करो । परीक्षित है ।

( ५० ) कौड़िया लोबान चार तोले लाकर, करौंदोंके रसमें खूब खरल करो । फिर उसमें चार तोले गायका घी मिलाकर गोला बना लो । उस गोलेको एक सात कपरौटी की हुई आतिशी शीशीमें भरकर, शीशीका मुँह तारोंके टुकड़ों या सीकोंसे बन्द कर दो । तेल टपक सके, इतने छेद तारोंके बीचमें रखो फिर “चिकित्सा-चन्द्रोदय” दूसरे भागके पृष्ठ ५६५ में लिखी विधिसे “पातालयन्त्र” द्वारा तेल निकाल लो ।

सेवन-विधि—पहले लिङ्गपर “हल्दी”का बारीक चूर्ण मलो । इसके बाद, ऊपरका निकाला हुआ तिला २० मिनट तक मलो और गरम करके बँगला पान बाँध दो । हवा और शीतल जल इन्द्रियके मत लगने दो । इस तेलसे २।३ सालका नामर्द २१ दिनमें मर्द हो जाता है । कई बार परीक्षा की है ।

( ५१ ) एक ऐसा बैंगन लाओ, जो खेतमें अपने पेड़में ही पीला हो गया हो । उसमेंसे बीज निकालकर ५ तोले तोल लो । फिर कंटकारीके बीज ५ तोले, पीपल ५ तोले, सूखे कैंचुए ५ तोले, सफ़ेद चिरमिटी ५ तोले और वीरबहुट्टी ५ तोले—इन सबको पीस-कूटकर एक पाव तिलीके तेलमें खरल करो । जब खरल हो जाय, आतिशी या पक्की विलायती शीशीमें कपरौटी करके, इस मसालेको भर दो । फिर शीशीके मुँहमें तारोंका गुच्छा देकर, “पातालयन्त्रकी विधिसे” तेल निकाल लो ।

सेवन-विधि—सीवन-सुपारी छोड़कर, बाक़ी जगहमें इस तिले



को आध घण्टे तक मलो । इसको दो मास तक मलने और साथ ही कोई ताक़्तवर दवा खानेसे जन्मके नामर्द और नस-कटे हुए नामर्दको छोड़कर, हथरस इत्यादिसे हुए नामर्द अवश्य आराम हो जाते हैं । ढीलापन और सुस्ती दूर हो जाती है । परीक्षित है ।

( ५२ ) मूलीके बीज २ तोले, पीपल २ तोले, अकरकरा २ तोले, लौंग २ तोले, जावित्री २ तोले, जायफल २ तोले और शुद्ध जमालगोटा १ तोले—इन सबको पीस कर, तिलीके तेलमें डाल, मन्दाग्निसे पकाओ । जब सब दवाएँ जल जायँ, तेलको छानकर शीशीमें भर लो ।

इसको लिङ्गके पिछले भागपर मलकर, बँगला पान सेक कर बाँधने और कोई पुष्टिकर दवा खानेसे, ३१ दिनमें, नामर्द मर्द हो जाता है और शिथिलता या ढीलापन नाश होकर, इन्द्रिय सख्त हो जाती है । परीक्षित है ।

( ५३ ) बीरबहुट्टी १ माशे, लौंग ४ माशे, जायफल ७ नग, पान १५ नग, शराब १ पाव; कानका मैल १० माशे और कबूतरकी बीट ४ माशे तैयार करो । सबको शराबमें घोटकर रख लो । इसमेंसे इन्द्रिय पर लेप करो । इससे लिंगकी सुस्ती चली जाती है ।

( ५४ ) बीरबहुट्टी, हाथी-दाँत, लौंग, जायफल, मीठा तेलिया, मछलीका पित्ता, लाल चिरमिटी, सफ़ेद चिरमिटी और सूअरकी चरबी प्रत्येक बत्तीस-बत्तीस माशे और ऊसर-साँडे नग १० लाकर रख लो ।

बनानेकी विधि—सब दवाओंको पीसकर, उसमें “ऊसर-साँडे” डाल दो और चिकनी हाँडीमें भर दो । हाँडीके तलेमें छेद करके, उसमें सीकें भर दो । छेदके नीचे कोई वर्तन रख दो । हाँडीके ऊपरसे आरने कण्डोंकी आग दोगे, तो तेल टपकेगा । इस तेलको लगाकर, पान बाँधनेसे नामर्द मर्द हो जाता है ।

( ५५ ) सफ़ेद कनेरकी छाल १॥ तोले, सफ़ेद गुंजा ( चिरमिटी ) ३॥ तोले, संखिया ३ माशे और गायका दूध ४ सेर सबको तैयार रखो ।



बनानेकी विधि—दूध औटाकर, उसमें तीनों दवायें पीस कर मिला दो और दहीका जामन देकर जमा दो। पीछे रईसे मथकर “घी” निकाल लो। इस घीका लेप करके, सात दिन-रात बँगला पान बाँधो। इससे ढोलापन मिट जायगा और लिङ्गेन्द्रिय कढ़ी हो जायगी और हर समय खड़ी रहेगी।

### अजीबो गरीब मुजर्रब तिला ।

सफेद संखिया, मैनशिल, तपकी हरताल, आमलासार गन्धक, कड़वा कूट, कुचला, मिलावे, सुहागा, मीठा तेलिया, सफेद सज्जी, माल-कांगनी, खुरासानी अजवायन, धतूरेके बीज, जमालगोटेकी मींगी, सूसनकी जड़, गाजरके बीज, मुरमकी, तुख्म-तरमरह, जंगली प्याजके बीज और जन्दबेदस्तर—इनको दो-दो तोले लेकर कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो।

शेरकी चरबी, रीछकी चरबी, मगरमच्छकी चरबी, मुर्गाबीकी चरबी, सफेद कवूतरकी बीट और मुर्गीके अण्डोंकी जर्दी—इन छहोंको दो-दो तोले लेकर खरलमें डालो, ऊपरसे ऊपरकी दवाओंका छना हुआ चूर्ण डालो और २४ घण्टे लगातार घुटने दो।

जब घुट जाय, एक कपरौटी की हुई काली मोटी विलायती पक्की शीशीमें भर दो। उसके मुँहमें लोहेके तारों या नारियलकी सीकोंको इस तरह बैठा दो कि, बोतल औंधी करनेसे दवा न गिरे। फिर उस बोतलको नाँदके छेदमें औंधी रखकर, उसके मुँहके सामने, नीचे जमीन पर एक प्याला रख दो। बोतलके अगल-बगल और ऊपर बालू भर दो और बालूके ऊपर थोड़ेसे कण्डे रखकर आग लगा दो। आग बहुत तेज न हो, नहीं तो बोतलमें ही मसाला जल जायगा और तिला न निकलेगा। आग बोतलको तपाने लायक होगी, तो बोतलमें से प्यालेमें तेल बूँद-बूँद टपकेगा। यही तिला है।

इस तिलेके लगानेसे लिङ्ग पर फफोला या आवला हो जाता है,



उसमें तकलीफ होती है, पर सारा खराब पानी निकलकर पक्का आराम हो जाता है। आबलेपर, १०० बारका धोया हुआ धी, दिनमें कई दफा, लगानेसे ठण्डक पड़ जाती और आबला आराम हो जाता है। जो लोग आबलेसे डरें, वह इस तिलेमें तिलेसे दूना मीठा बादामका तेल मिला लें। फिर आबला नहीं पड़ेगा, पर देर लगेगी। काम हो जायगा। इस तिलेको हमें एक मित्रने बताया और हमन आज-माया, ठीक है।

लगानेकी विधि—ऊपरकी उभरीहुई नसोंपर, रातके समय यह तिला लगाकर, बँगला पान लपेट दो और उसे कच्चे सूतसे बाँध दो। रोज इसी तरह तिला लगाना चाहिये। जब फफोला वगैरह जावें, तिला बन्द कर दो और मक्खन या १०० बारका धोया हुआ “धी” लगाओ।

( ५६ ) जमालगोटेका तेल १ तोले, कड़वे बादामका तेल १ तोले, नागकेशरका इत्र १ तोले, पीले फूलकी कनेरकी जड़की छाल ६ माशे और कस्तूरी २ माशे—इन सबको खूब खरल करो और शीशीमें भरकर रख दो। इसके सुपारी बचाकर लिङ्गपर लगानेसे नामर्दी जाती है।

( ५७ ) जिसकी लिंगेन्द्रिय मैथुनमें काम न देती हो, उसे चाहिये कि वह, नित्य दिनमें दो-तीन बार, लिङ्गपर और उसके इर्द-गिर्द उस्तरेसे सफाई किया करे। ऐसा करनेसे थोड़े ही दिनोंमें बड़ी उत्तेजना होने लगती है। नामर्दी नाशक अच्छा उपाय है।

नोट—अगर किसीकी स्त्री को बहुत ही ज़ियादा शहवत होती हो—मर्दकी ख्वाहिश रहती हो और मर्द कमजोर हो तो औरतको फिटफूरीकी खील १॥ माशे और लजवन्तीकी जड़ डेढ़ माशे, दोनों सवेरेही खिलाकर, पावभर बकरीका दूध पिलाओ। इससे आठ-दस दिनमें मस्ती कम हो जावेगी। काहूका साग पकाकर खानेसे भी उत्तेजना कम हो जाती है।

( ५८ ) बीरबहुट्टी, सफेद चिरमिटी और अकरकरा तीन-तीन माशे



तथा संखिया १ माशे—इन सबको “तेज शराब या ब्राण्डी” में खरल करके रख लो। इसको साँवन-सुपारी बचाकर, लिङ्गपर लगाओ और पान लपेटो। इस तरह सात दिन तक, इस लेप को लगानेसे लिङ्गका ढीलापन दूर होकर तेजी बढ़ जाती है।

( ५६ ) दो तोले सफ़ेद कनेरकी जड़का छिलका लाकर खूब कूटो और दो सेर दूधमें डालकर पकाओ। जब दूध आँट जाय, उसमें दहीका जामन देकर जमा दो। सवेरे ही रई से मथकर घी निकाल लो। इस घीमें जमालगोटा, जायफल और संखिया अन्दाजका मिलाकर मल्हम-सी बना लो। इस मल्हमको साँवन-सुपारी बचाकर लिङ्गपर लेप करो और ऊपरसे पान सेककर बाँध दो। इस तरह सात दिन करो। अगर इसके लगानेसे सूजन या फुन्सी हो जावें, लेप लगाना बन्द करके, धुला हुआ मक्खन लगाओ। इस लेपसे हस्तमैथुन या गुदामैथुनसे हुई लिङ्गकी खराबी मिट जाती है।

( ६० ) विनौलों की मीर्गी, अफीम, जायफल, साँगिया-विष और अकरकरा, हरेक दो-दो तोले—लेकर पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो। फिर इसे खरलमें डालकर ऊपरसे “जङ्गली सूअरकी चरबी” २० तोले डाल दो और ८६ घण्टे तक घोटो। फिर इसको सुपारी और साँवन बचाकर लिङ्गपर लेप करो। ऊपरसे बँगला पान लपेटकर, कपड़ेकी पट्टी बाँध दो। इस लेपके १४ दिन लगानेसे लिङ्गका ढीलापन नाश होकर, लिङ्ग लकड़ीसा कड़ा और तेज हो जाता है।

( ६१ ) रीठोंके छिलके और अकरकरा लेकर तेज शराबमें खरल करो। इसमेंसे ले-लेकर, २१ दिन तक, साँवन-सुपारी बचाकर, लिङ्गपर लगाने और पान बाँधनेसे हस्तमैथुन और गुदामैथुनसे हुई नपुंसकता नाश हो जाती है।

( ६२ ) सफ़ेद कनेरकी जड़के छिलकोंको बड़ी कटेलीके रसमें खरल करके, साँवन-सुपारी बचाकर, लिङ्गपर लगानेसे काम-शक्ति बहुत बलवान हो जाती है।



( ६३ ) बिनौलोंकी गिरी २ तोले, मूलीके बीज २ तोले, अकरकरा १ तोले और कड़वा कूट १ तोले—इनको महीन पीसकर खरलमें डालो और शराब दे-देकर घोटो । इसको २१ दिन तक, सीवन-सुपारी बचाकर, लिंगपर लगानेसे लिंगका ढीलापन आराम हो जाता है ।

( ६४ ) चूहेकी मैंगनी शहदमें १२ घण्टे घोटकर, सीवन-सुपारी बचाकर, लिङ्गपर लगानेसे लिंगका ढीलापन आराम हो जाता है ।

( ६५ ) इन्द्रियको बढ़ानेवाले लेप वगैरः करनेसे, इन्द्रियको हाथसे मलनेसे अथवा इन्द्रियके बड़ी होनेकी वजहसे लिंगेन्द्रियका स्पर्श-ज्ञान जाता रहा हो, तो “लोबानका तेल” लगाइये ।

( ६६ ) दालचीनी और लौंगका तेल मिलाकर अथवा किसी एक का तेल लिंगपर मलनेसे लिंगका सूखना एक महीनेमें बन्द हो जाता है ।

( ६७ ) गायका घी, आकका दूध और शहद—इन तीनोंको समान-समान लेकर, काँसीके बर्तनमें, काँसीकी कटोरीसे खूब रगड़ो । फिर इसमेंसे नित्य इन्द्रियपर मलो । इससे इन्द्रियका ढीलापन और हथरसके दोष आराम होते हैं ।

( ६८ ) आदमीके कानका मैल, जंगली सूअरकी चरबीमें खरल करके, ४७ दिन तक, सीवन-सुपारी बचाकर, लिंगपर मलनेसे हस्त-मैथुनसे पैदा हुई नपुन्सकता जाती रहती है ।

( ६९ ) अकरकरा, कड़वा कूट, जायफल, जावित्री हरेक छै-छै माशे, पुराना गुड़, रेंडीके बीज, बिनौलोंकी गिरी और तिल एक-एक तोले तथा शहद दो तोले—सबको कूट-छानकर वकरीके पावभर दूधमें भिगो दो । फिर पृष्ठ ३७५ के नम्बर २० के मुताबिक हाँडीमें भर कर, गरम करो और पोटलियोंसे लिंग, पेड़ू और बंछणपर सेक करो । इस सेकसे लिंगके सारे विकार दूर होकर लिंग खूब तेज हो जाता है ।

( ७० ) सोंठ, लोंग और अकरकरा—तीनोंको समान-समान लेकर पीस-छान लो । फिर शहदमें मिलाकर लिङ्गपर लेप करो और ऊपरसे



पान लपेटो । पानपर कपड़ा लपेटो । एक महीने तक इस लेपक करनेसे लिङ्ग लकड़ी-जैसा सख्त हो जाता है ।

( ७१ ) मालकाँगनी १ पाव, जमालगोटेकी गिरी आधपाव, जायफल १ छटाँक, जावित्री १ छटाँक, दालचीनी १ छटाँक और लौंग १ छटाँक लेकर—सबको कूटो और पाताल यन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लो । इस तेलको साँवन-सुपारी छोड़कर लिङ्गपर मलो । अगर लगाते-लगाते फुन्सियाँ हो जावें, तो तेल लगाना बन्द करके, घाव भरनेवाली मरहम लगाओ । इस तेलसे इन्द्रियका ढीलापन नाश हो जाता है, क्योंकि इससे नसोंको ढीला करनेवाला पानी नष्ट हो जाता है ।

( ७२ ) बड़ी कटेलीकी जड़, फूल, पत्ते, फल और छाल लेकर कूट लो । फिर बकरीके दूधमें खरल करके छायामें सुखा लो । इस तरह सुखने पर, फिर बकरीके दूधमें खरल करो और छायामें सुखा लो । इसी तरह तीसरी बार फिर बकरीके दूधमें खरल करो और छायामें सुखा लो । इस तेलको २१ दिन तक लिङ्गपर मलनेसे, हस्तमैथुनसे पैदा हुई, शिथिलता नाश हो जाती है ।

( ७३ ) लहसन, राई, अकरकरा, चमेलीकी पत्ती, मालकाँगनी, नीबूके बीज, भटकटैयाके पत्ते, मैन्शिल और कड़वा कूट—इनको एक-एक तोले लेकर कूट-पीस लो । फिर पिसी हुई दवाको पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो । फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको कढ़ाहीमें रख कर मन्दाग्निसे पकाओ और तेल मात्र रहनेपर उतार कर छान लो और शीशीमें रख दो । इसके लिङ्गपर मलनेसे कुछ दिनमें हस्तमैथुनकी वजहसे पैदा हुआ टेढ़ापन दूर हो जाता है और सुस्ती नाश होकर तेजी आती है । पर-परीक्षित है ।

( ७४ ) काले तिल, सुहागा, कड़वा कूट, तपकी हरताल, असगन्ध, पठानी लोध और सफ़ेद चिरमिटी—सबको बराबर-बराबर लेकर,



बकरी के दूध में खरल करके, पाताल यन्त्र से तेल निकालो । इस तेल के लगाने से लिङ्ग की सुस्ती और टेढ़ापन दूर होता है ।

( ७५ ) अकरकरा, मूलीके बीज, बिनौले, कड़वा कूट और अस-गन्ध—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, भैंस के दूध में पीसकर, लिंग पर लेप करनेसे लिंगकी सुस्ती जाती और टेढ़ापन नाश होता है ।

( ७६ ) हरड़को पानीमें घिसकर रसौतके साथ लिंगपर लेप करनेसे इन्द्रियके दोष नाश होजाते हैं ।

नोट—हरड़ को पत्थर पर पानी के साथ घिसो । फिर उसमें थोड़ी-सी रसौत डालकर भी घिसो । जब एकदिल हो जावें, लेपको लगाओ ।

( ७७ ) दारुहल्दी, तुलसीकी जड़, मुलहठी, घरका धूआँ और हल्दी—सबको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, एक पाव तिलके तेल और एक सेर पानीके साथ पकाओ । तेल मात्र रहनेपर छान लो । इसके लगानेसे समस्त इन्द्रिय-दोष नाश हो जाते हैं । “दाव्यादि तैल” है ।

( ७८ ) कायफल, इसबन्द, रेंडीकी गरी और भुनी पीली सरसों—सबको समान-समान लेकर पीस लो और चमेलीके तेलमें फेंटकर इन्द्रियपर लगाओ । इसके कई बार लगानेसे लिंग-सम्बन्धी दोष नाश हो जाते हैं ।

( ७९ ) लौंग, कायफल, इन्द्रजौ, समन्दरफेन और असगन्धको समान-समान लेकर भैंसके दूधमें पीसो और लिंगपर लेप करो । कई दिन लेप करनेसे इन्द्रिय-सम्बन्धी दोष दूर हो जाते हैं ।

( ८० ) सफेद फूलकी कटेरीके बीजोंको पानीके साथ पीसकर, लिंगपर लेप करने और अरण्डके पत्ते बाँध देनेसे ध्वजभङ्ग या नामर्दी चली जाती है । तीन पट्टी या ३ लेपमें ही भला हो जाता है ।

नोट—सुपारी या अगले भागको बचा कर, शेष इन्द्रियपर लेप लगाना चाहिये । सुपारीपर कोई लेप या तिला वगैरः न लगाना चाहिये ।

( ८१ ) तुलसी की जड़ का चूर्ण, घी में मिलाकर, सवेरे-शाम नित्य



खाने से ध्वजमङ्ग या नामर्दी जाती रहती है; क्योंकि तुलसी से बिजली की क्रिया सञ्चालित होने लगती है ।

(८२) गरम तेलों में “अम्बर” मिलाकर लिंगपर मलने से ढीली और कमजोर नसें पुष्ट हो जातीं, मैथुन-शक्ति बढ़ती और आनन्द आता है ।

नोट—अम्बर की मात्रा १ से ३ रत्ती तक है । प्लेग वगैरह की जहरीली हवा में अम्बर खाने और धूप सेवन करने से कोई डर नहीं रहता । बूढ़ों के लिये “अम्बर” अमृत है ।

## ८३ राक्षस तैल ।

असगन्ध	...	...	१ तोले
चोक	...	...	१ ११
सफेद कनेर की जड़	...	...	१ ११
जावित्री	...	...	१ ११
दालचीनी	...	...	१ ११
जायफल	...	...	१ ११
ढाक के बीज	...	...	१ ११
कुचला	...	...	१ ११
मालकांगनी	...	...	१ ११
लौंग	...	...	१ ११
कौंच के बीज	...	...	१ ११
अकरकरा	...	...	१ ११
सफेद चन्दन	...	...	१ ११
देवदारु	...	...	१ ११
बड़ी कटेली	...	...	१ ११
आक की जड़	...	...	१ ११
रेंबीके बीज	...	...	१ ११



## नपुन्सकता नाशक तिले और लेप वगैरहः ।

३६३

अफीम			१ तोले
धतूरा			१ ”
तेलिया बिष	...	...	१ ”
केशर	...	...	१ ”
कस्तूरी	...	...	१ ”
चमगीदड़का मांस या चरबी		...	३ ”
साण्डेका	”	”	३ ”
बीरबहुटीका	”	”	३ ”
कैकड़ेका	”	”	३ ”
खरगोशका	”	”	३ ”
सेहका	”	”	३ ”
स्यारका	”	”	३ ”
गोधाका	”	”	३ ”
शेरका	”	”	३ ”
चीतेका	”	”	३ ”
रीछका	”	”	३ ”
कबूतरका	”	”	३ ”
जङ्गली कबूतरका	”	”	३ ”
कैचुएका	”	”	३ ”
गीधका	”	”	३ ”
जंगली सूअर	”	”	३ ”

बनाने की विधि—पहिले असगन्ध वगैरहः कूटने-पीसने योग्य चीजोंको कूट-पीस कर छान लो और तोल-तोलकर एक-एक तोले खरलमें डालो । केशर-कस्तूरीको कूटनेकी दरकार नहीं—योंही खरलमें डाल दो । फिर जिन जानवरों और पक्षियोंकी चरबी मिली हो उनकी चरबी और जिनका मांस मिला हो उनका मांस उसी खरल में डाल दो और ऊपरसे भेड़का दूध डाल-डालकर खूब खरल करो । कम-से-कम

५०



लगातार २४ घण्टे घुटाई करो । इसके बाद घुटे हुए मसालेको पक्की काली मोटे दलकी सात कपरौटी की हुई विलायती बोतलमें भर दो । बोतलके मुँहमें कुछ तारोंके टुकड़े या नारियलकी भाड़ू की सीकें कोई दो-दो गिरह लम्बी इकट्ठी मिलाकर भर दो । सीकें इतनी भरों कि, बोतलको उल्टी करनेसे, सीकें दवाके बोम्बसे बाहर न गिरें और इतनी ज़ियादा भी न हों कि, उनके अन्दरसे तेल टपकनेको राह न रहे । अगर सीक थोड़ी होंगी, तो दवाके बोम्बसे सीकें बाहर निकल आवेंगी और दवा गिर जायगी । अगर बहुत ही ज़ियादा होंगी, तो तेल बाहर तो निकल न सकेगा और भीतर-का-भीतर जल जावेगा । एक नाँदमें छेद करके, उस छेदमें इस बोतलको औंधी घुसा दो । यानी बोतलका मुँह नीचेकी तरफ रहे । फिर नाँदमें बोतलके चारों तरफ और बोतलके ऊपर आग या भाड़में गरम की हुई बालू भर दो । ऊपरसे थोड़े आरने कण्डे रखकर आग लगा दो । आग बहुत मत लगाना, क्योंकि बहुत आग लगनेसे तेल जल जायगा । बोतलके मुँहसे मिलाकर एक चौड़ी शीशी रख दो और सन्धोंमें गीला कपड़ा ठूँस दो, ताकि हवा न जा सके । अगर यह भी न हो सके, तो एक काँच या चीनीका प्याला ही रख दो । जब शीशीको बालू या आगकी तपत लगेगी, तब शीशीमें से, सीकोंके दमर्यान होकर, तेलकी बूँदें गिरेंगी और घण्टे दो घण्टे या चार-छै घण्टेमें खासा तेल टपक आवेगा । इस तेलको साफ शीशीमें भर कर काग लगा दो ।

इस तेलको, सीवन-सुपारी बचाकर, शेष इन्द्रियपर एक उँगलीसे धीरे-धीरे मलना चाहिये । ऊपरसे बँगला पान गरम करके सुहाता सुहाता लपेट देना चाहिये । पानपर पतला कपड़ा लपेटकर कच्चा डोरा लपेट देना चाहिये, ताकि तेल न छूटे और रात भर लगा रहे । जितने दिन यह तेल लगाया जावे, लिङ्गको शीतल पानीसे न धोना चाहिये, अतः स्नान भी न करना चाहिये । अगर स्नान करना ही हो, तो लिङ्गपर पानीकी बूँद भी न लगे, अथवा गरम जलसे स्नान



करना चाहिये । अगर इस तेलके लगानेसे फफोले या फुन्सी हो जावें अथवा और कोई उपद्रव हो, तो धराना नहीं चाहिये । तेलको बन्द करके, लिंगपर सौ बारका धोया हुआ “मक्खन” लगाना चाहिये । जब फफोले, फुन्सी वगैरः आराम हो जावें, तब फिर यही तेल लगाना चाहिये । अगर फिर फफोले वगैरः हों, तो तेलको बन्द करके फिर लूनी घी या धोया हुआ मक्खन लगाना चाहिये । जब देखें कि रोग आराम हो गया, लिंगमें यथेष्ट शक्ति और तेजी आगई, नीली-नीली नसें दब गईं, तब तेल न लगाना चाहिये । जब-तक पूरा फायदा न हो जावे, तब तक तेल लगाते रहना चाहिये और तेल लगाते समय भूलकर भी स्त्री-प्रसङ्ग न करना चाहिये । मिर्च, खटाई, तेल तथा अत्यन्त गरम, अत्यन्त शीतल आर बादी पदार्थोंसे परहेज रखना चाहिये । मूँग, घी, गेहूँ, दूध और चाँवल प्रभृति पथ्य पदार्थ खाने चाहिएँ ।

इस तिलेकी हमने कभी परीक्षा नहीं की; पर जान पड़ता है, कि यह निहायत फायदेमन्द होगा; क्योंकि इसके अन्दर पड़ने-वाली सभी दवाएँ इस कामके लिये परमोत्तम हैं । इसको अमीर लोग ही तैयार करा सकते हैं, क्योंकि इसमें जो सत्रह जानवरोंकी चरबी पड़ती है, उन्हें अमीर ही मँगा सकते हैं । इतने जानवरोंकी चरबी या मांसका प्रबन्ध न हो सकनेकी वजहसे ही, हम, इसे न बना सके । इसकी तारीफमें लिखा है :—

नाना योगप्रयोगैश्च शैथिल्यं यन्न निर्गतम् ।

उद्दण्डं जायते सोऽपि कोटि योगैर्विसर्जितः ॥

जिस पुरुषकी इन्प्रिय तरह-तरहकी दवायें खाने और तिले लगाने से ठीक न हुई हो, उसका ढीलापन न गया हो, अनेक वैद्योंने इलाज कर-कर रोगीको छोड़ दिया हो, आराम होनेकी ज़रा भी उम्मीद न हो, उस रोगीकी इन्द्रिय भी इस तेलसे खड़ी रहती है और वह अनेक स्त्रियोंसे भोग कर सकता है ।



यह भी लिखा है कि, इस तेलको सभीको न बताना चाहिये, छिपाकर रखना चाहिये । किसी धनीके यहाँ ही इसको काममें लाना चाहिये और इस्तेमाल करनेसे पहिले बनानेका प्रायश्चित्त करना चाहिये । जो वैद्य इस तेलको हर किसीको देता या बताता है, वह नरकमें जाता है ।

## नामर्दी नाशक तिला ।

चोक	...	...	३ तोले
कुचला	...	...	३ ”
असगंध	...	...	३ ”
मालकॉंगनी	...	...	३ ”
दालचीनी	...	...	३ ”
लौंग	...	...	३ ”
जावित्री	...	...	३ ”
जायफल	...	...	३ ”
सफेद चिरमिटी	...	...	३ ”
ढाकके बीज	...	...	३ ”
जंगली सुअरकी विष्टा	...	...	३ ”
तेलिया विष	...	...	३ ”
कैचुए सूखे	...	...	६ ”
बीरबहुट्टी सूखी	...	...	६ ”
सांडेका मांस	...	...	६ ”
बाघ या शेरकी चरबी	...	...	६ ”
केशर	...	...	३ ”
कस्तूरी	...	...	३ ”
आदमीके कानका मैल	...	...	३ ”

विधि—इन दवाओंको अलग-अलग कूट-पीसकर छानो और



तोल-तोल कर खरलमें डालो । सूखे मांसोंको भी कूट-पीसकर छान लो और तोल कर डालो । ऊपरसे चरबी और कस्तूरी-केशर भी डाल दो । फिर भेड़का दूध डाल-डालकर खूब खरल करो । जब कम-से-कम २४ घण्टे घुटाई हो जावे, मसालेको बोटलमें भरकर पाताल यन्त्रकी विधिसे ( वही विधि जो राक्षस तेलमें लिखी है ) तेल निकाल लो और शीशी में भरकर काग लगा दो ।

इस तेलको, लिंगकी सुपारी और साँवन छोड़कर, २१ दिन तक धीरे-धीरे उँगलीसे मलो । ऊपरसे बंगला पान गरम करके लपेट दो । पानपर कपड़ा लपेट कर कच्चा डोरा लपेट दो । रोज रातको यह तेल लगाओ और पान बाँधो । शीतल पानी लिंगसे लगाने न दो । अगर तेल लगाते-लगाते फुन्सियाँ हो जावें, तो तेल लगाना बन्द कर दो । जब फुन्सी मिट जावें, फिर यही तिला लगाना शुरू करो । जब कतई आराम हो जावे, तब इसके लगानेकी दरकार नहीं ।

इस तेलके लगानेसे लिंग लकड़ीकी तरह सख्त हो जाता है और दस स्त्रियोंसे मैथुन करने पर भी ढीला नहीं होता । हस्त-मैथुन और गुदामैथुनसे पैदा हुई नामर्दी इससे निश्चय ही चली जाती है । परन्तु यह तेल नामर्दोंको ही देना चाहिये—प्रमादी पुरुषोंको कभी भूल कर भी न देना चाहिए । यह तेल भी उत्तम है, पर हमारा आज्ञा-मूदा नहीं । इसे साधारण लोग भी बना सकते हैं ।

नोट—कैचुए और वीरबहुट्टी अत्तारोंके यहाँ मिलती हैं । शेरकी चर्वीमें धोखेबाज़ी होती है, इसे खोजकर असली लाना चाहिए । साखड़े बाजारों और मेलोंमें जंगली लोगोंके पास मिलते हैं । वे बैठे हुए बेचा करते हैं । पर उन अनाड़ियोंकी बातोंमें आकर उनसे उनके बनाये हुए तेल न खरीदने चाहिएँ । पैसा पैदा करने वाले पापी अपना मतलब देखते हैं, उन्हें पराई हानिकी परवा नहीं ।

## कन्दर्प तैल ।

जायफल

लौंग

...

...

...

...

... ३३ तोले

...



सफेद चिरमिटी	...	...	३ तोले
जावित्री	...	...	३ "
अकरकरा	...	...	३ "
दालचीनी	...	...	३ "
सफेद कनेरकी जड़की छाल	...	...	३ "
मालकाँगनी	...	...	३ "
कैचुए (सूखे)	...	...	६ "
बीरबहुट्टी (सूखी)	...	...	६ "
कुचला	...	...	१ "
बुरारा हाथी-दाँत	...	...	१ "

विधि—इन सबको अलग-अलग पीसकर कपड़ेमें छानो और फिर तोल कर खरलमें डालो । ऊपरसे बकरीका दूध डाल-डाल कर घोटो । २४ घण्टे घोटकर, पाताल-यन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लो (देखो, राक्षस तेलकी विधि) ।

इस तिलेको भी सीवन-सुपारी छोड़ कर, बाक्री इन्द्रियपर धीरे-धीरे मलो और बंगला पान सेककर लपेट दो । ऊपरसे कपड़ा लपेट दो । २१ दिन इस तिलेके लगाने और शीतल जलसे इन्द्रियको दूर रखनेसे हस्तमैथुन और गुदामैथुनसे पैदा हुई नामर्दी जाती रहती है । यह तेल उन्हींको देना चाहिए, जिनकी इन्द्रिय हथरस या लौंडेबाजी वगैरः कुकर्मोंसे खराब हुई है । जिन्हें कोई रोग नहीं है, उन्हें न देना चाहिए । इसके लगानेसे स्त्री-भोगकी बड़ी सामर्थ्य हो जाती है । यह भी हमारा आज्ञामूदा नहीं है; पर फायदा अवश्य करेगा ।

## ८४ तिला नामर्दी ।

१-पारा	...	...	६ माशे
२-गन्धक आमलासार	...	...	६ "
३-मालकाँगमी	...	...	६ "



## नपुंसकता नाशक तिले और लेप वगैरः ।

३६६

४-अकरकरा	...	...	६ माशे
५-बीरबहुट्टी	...	...	६ "
६-सोंठ	...	...	६ "
७-जावित्री	...	...	६ "
८-कुचला	...	...	६ "
९-दालचीनी	...	...	४ "
१०-कौड़िया लोबान	...	...	६ "
११-लौंग	...	...	६ "
१२-बच्छनाग विष	...	...	६ "
१३-तबकी हरताल	...	...	६ "
१४-जायफल	...	...	६ "
१५-जमालगोटा	...	...	४ "
१६-बुरादा हाथी-दाँत	...	...	६ "
१७-भटकटैयाके फल	...	...	६ "
१८-सफेद चिरमिटी	...	...	६ "
१९-कैचुए सूखे	...	...	६ "
२०-सफेद कनेरकी जड़की छाल	...	...	६ "
२१-खुरासानी अजवायन	...	...	४ "
२२-प्पाजके बीज	...	...	६ "
२३-सफेद संखिया	...	...	६ "
२४-इसबन्द	...	...	६ "
२५-अरण्डी या रेंडीके बीज	...	...	६ "
२६-काला जीरा	...	...	६ "
२७-सिंहकी चरबी	...	...	५ तोले
२८-मुर्गाके अण्डोंकी जर्दी	...	...	५ "
२९-जंगली सूअरकी चरबी	...	...	५ "
३०-असली चमेलीका तेल	...	...	४ "



३१-कड़वे बादामोंका तेल असली

....

२ तोले

बनानेकी विधि—पहिले पारे और गन्धकको खूब खरल करके बिना चमकका काजलसा बना लो । इसके बाद नं० ३ मालकाँगनीसे नं० २६ काला जीरा तक की दवाओंको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो । इसके बाद पारे-गन्धककी कजली, दवाओंके छने हुए चूर्ण, चरबी, तेल तथा अण्डोंकी जर्दीको मिलाकर २४ घण्टों तक घोटो । घुट जानेपर, सारे लुगदेको एक काली मोटी बोतलमें भर दो । बोतलपर सात-कपड़ मिट्टी करके सुखा लो । बोतलके मुँहमें तारोंके टुकड़े इस तरह भर दो, कि बोतल औंधी करनेसे मसाला न गिरे, पर तारोंके छेदोंमें होकर तेल टपक सके । अगर छेद न होंगे, तो तेल न टपकेगा और छेद चौड़े होंगे, तो मसाला गिर पड़ेगा । इतना काम हो जानेपर, एक नाँदमें, बोतलका चार अंगुल गला निकल जाय इतना छेदकर दो । और उसीमें बोतलकी नलीको औंधी रखकर बोतलके चारों ओर बालू भर दो । बोतलके पैदेपर भी बालू चार-चार अंगुल ऊँची रहे । बालूके ऊपरसे कण्डे जमाकर आग लगा दो । बोतलके मुँहको नीचे एक काँचके गिलासमें थोड़ा घुसा दो और बोतल तथा गिलासकी सन्धियोंके बीचमें कपड़ा भिगो-भिगोकर ढ़ँस दो, ताकि साँस न रहे । आगकी तपत लगनेसे तेल नीचेके प्यालेमें टपकेगा । इसे एक शीशीमें भरकर और काग लगाकर रख दो ।

खुलासा—पहले पारे और गन्धकको ८१० घण्टे खरल करो । जब चमक न रहे, उसे अलग रख दो ।

फिर मालकाँगनीसे काले जीरे तककी दवायें डेढ़-डेढ़ तोले लेकर अलग-अलग कूटें-छानें और छः-छः माशे तोल-तोलकर एक प्यालेमें रखते जावें ।

अब पारे-गन्धककी कजली, सारी सूखी दवाओंके छने हुए चूर्ण, शेर-सूअरकी चरबी, अण्डोंकी जर्दी और दोनों तेल सबको मिलाकर



२४ घंटे खरल करो। जब खूब घुटाई होजावे, इस मसालेको एक काली पक्की दलदार विलायती बोतल में, जिसपर सात कपरौटी हो रही हों, भरदो।

बोतलमें भरकर, बोतलके मुँहमें सीकें या मोटे तारोंके टुकड़े इस तरह भरो कि, उनके बीचमें साँस रहे, पर वे बोतल ओंधी करनेसे दवाके भारसे, नीचेको न आवें। अगर साँस न रहेगी, तो तेल कैसे टपकेगा ? अगर ढूँस कर तार भर दोगे तो तेल भीतर ही जल जायगा और टपकेगा नहीं। इसमें थोड़ी चतुराई चाहिए।

अब एक नाँदमें ऐसा छेद करो, जिसमें बोतलकी गर्दन आ जावे। उस छेदमें होकर बोतलको ओंधी रख दो। बोतलका मुँह नीचे रहे और पैदी ऊपर। बोतलके मुँहके नीचे एक चीनीका प्याला रख दो, ताकि तेल टपक-टपककर उसीमें गिरे।

नाँदमें, बोतलके चारों तरफ, गरम की हुई बालू भर दो। बोतलकी पैदीपर भी चार-चार अंगुल बालू जमा दो। अब बालूपर जंगली कण्डे थोड़ेसे रखकर आग लगा दो। अगर कण्डे बुझने लगें तो और कण्डे धरते जाओ, पर बहुत तेज आग मत देना। बालू गरम करके रखनेसे, थोड़ी आगसे ही बोतलका मसाला गरम हो जाता और तेल सेहकी बूँदोंकी तरह टपकने लगता है। अगर तार ज़ियादा हों, तेल न टपके, तो एकाध तार धीरेसे खींच लो, पर होशियारीसे, ऐसा न हो कि, तार ढीले होकर, सारा मसाला नीचे गिर पड़े, अतः नीचे बर्तन रखना। पहले ही वाजिब तार लगाना अच्छा, पीछेकी खींचा-खाँची अच्छी नहीं। जो तेल टपकेगा, वह पहले लालसा होगा। पीछे जमकर भूरा या पीलासा हो जायगा। उसे शीशीमें भरकर रख दो।

इस तिलेके लगानेमें इस बातका खयाल रखो कि सुपारी, सीवन और फोतोंपर यह न लगे। १५-२० मिनट या आध घण्टा धीरे-धीरे एक डँगलीसे लिंगपर मलो। फिर बँगला पान गरम करके सुहाता-सुहाता लपेट दो। ऊपरसे पतला कपड़ा लपेट कर, कच्चा ढोरा लपेट दो।



रोज आठ घण्टे बाद, सवेरे ही, पट्टी खोल दो। इस तिलेके लगानेसे छोटी-छोटी फुन्सी, फफोला या खाज वगैरः हो, तो तिला बन्द करके बादामका मीठा तेल या मक्खन लगाओ। जब २३ दिनमें फुन्सी वगैरः आराम हो जावें, फिर तिला लगाओ। जब २० या ४० दिनमें आराम हो जावे, तिला लगाना बन्द कर दो।

गुण—इस तिलेसे, जन्मके नामर्दके सिवा, २० साल तकके नामर्द आराम हो जाते हैं। हस्तमैथुन, गुदामैथुन, या बे-क्रायदे मैथुनसे खराब हुई लिंगेन्द्रिय निर्दोष हो जाती है। नीली-नीली नसोंका चमकना, लिंग का ढीलापन और सुस्ती आदि समी दोष आराम होते हैं। नसोंके दोष आराम करनेमें यह तिला रामवाण है। हमारा अनेक बारका आज्ञमूदा है। इसके साथ-साथ कोई ताकतवर दवा भी खाई जावे, तब तो क्या कहना।

नोट—हमारे कारखानेमें यह तिला और इससे भी उत्तम तिले मिलते हैं। मूल्य ७॥) ६० शीशी।

## शिश्रवृद्धिकारक नुसखे ।

( लिङ्गको बढ़ाने और मोटा करनेके उपाय )

( १ ) सफेद सरसों, कड़वा कूट, बड़ी कटेरीका फल और अस-गन्धकी जड़—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पीस-कूटकर कपड़छन कर लो। इसमेंसे चौथाई चूर्ण लेकर, पानीमें मिलाकर, लेपसा बनालो और सुपारी छोड़ बाक्री लिंगपर धीरे-धीरे मलो। जब लेप सूखने लगे, लेपको छुड़ाकर फेंक दो। दूसरे दिन फिर इसी तरह करो। चार दिन इस तरह करनेसे लिंग पहलेसे बड़ जायगा।

नोट—सफेद सरसों न मिले तो पीली ही ले लो।



( २ ) इक्कीस रोज तक, रातको, ताजा दूध लिङ्गपर मलो । दूध मलनेके बाद, हर रोज सूखे कैंचुओंका चूर्ण उसपर १ घण्टे तक मलो । पहलेसे लिङ्गकी मुटाई बढ़ जायगी ।

( ३ ) “कायफल” भैंसके दूधमें पीसकर, लिङ्गपर लेप कर दो और सारी रात ऊपरसे पान बाँध रखो । सवेरे ही गरम जलसे धो लो । इस उपायसे २१ दिनमें लिङ्ग मोटा हो जायगा ।

( ४ ) रीठेकी छाल और अकरकरा समान-समान लेकर, तेज शराब में खरल करो । पीछे सुपारी छोड़कर शेष लिङ्गपर मलो । ऊपरसे पान लपेट कर कच्चा डोरा बाँध दो । २१ दिनमें लिङ्ग मोटा हो जायगा ।

( ५ ) नौ माशे इन्द्रजौ, भैंसके ताजा दूधमें भिगो कर, १२ घण्टे तक खरल करो और आगपर गरम करके, गुनगुना-गुनगुना लेप, सुपारी बचाकर, लिङ्गपर करो । ऊपरसे लिङ्गपर कपड़ा लपेट दो और सो रहो । सवेरे ही गरम पानीसे लिङ्गको धो डालो । रातको फिर उसीमें से लेप लेकर गरम करो और गुनगुना-गुना लगाकर कपड़ा बाँधकर सो रहो । सवेरे ही गरम पानीसे धो लो । २१ या ३१ दिन इस तरह करनेसे लिङ्ग पहलेसे बड़ा, कड़ा और आनन्ददायी हो जाता है ।

( ६ ) उटंगनके बीज कूटकर कपड़ेमें छान लो । इसीमेंसे कोई ६ माशे चूर्ण लेकर, जलमें पीसकर, गरम कर लो और सुहाता-सुहाता लेप, सुपारी बचाकर, लिङ्गपर करो । लेप सवेरे-शाम करो । नया लेप लगानेसे पहले लिङ्गको गरम जलसे धो लो । २१ दिनमें लिङ्ग लकड़ी-जैसा हो जायगा ।

( ७ ) समन्दरफैन, देवदारु, हल्दी, मुलहठी और शहद,—इन सबको दो-दो माशे लेकर पीस लो और ऊपरसे गधेका पेशाब डाल-डालकर घोटो । घुट जानेपर, सुपारी बचाकर, लिङ्गपर इसका लेप कर दो । इस लेपके २१, ३१ या ४१ दिन करनेसे इन्द्रिय निश्चय ही बड़ी हो जाती है ।



( ८ ) “चक्रदत्त” में लिखा है—भिलावे, कूट, बड़ी कटेहलीका फल, कमलिनीके पत्ते, सैधानोन, नेत्रवाला, सूक और असगन्धकी जड़—इन सबको पीस-कूट और छानकर “नौनी घी” मिलाकर सात दिन तक, लिङ्गपर मज्जने और लगानेसे लिङ्ग गधेका जैसा हो जाता है। लेकिन इस लेपके करनेसे पहले “भैंसके गोबर” का लेप लिङ्गपर करना चाहिये ।

( ९ ) “चक्रदत्त” में ही लिखा है—असगन्ध, शतावर, कूट, बाल-छड़ और बड़ी कटेहलीका फल—इन सबको सिलपर, पानीके साथ, पीसकर लुगदी बना लो । पीछे इस लुगदीको, चौगुने दूधके साथ, तिलोंका तेल डालकर पकाओ; जब दूध जल कर तेल मात्र रह जावे, उतार कर छान लो । इस तेलके लिङ्गपर चुपड़ने या मलनसे लिङ्ग स्तन और कानकी पाली—ये बढ़ जाते हैं ।

( १० ) “योगचिन्तामणि” में लिखा है—गोलमिर्च, सैधानोन, बड़ी पोपर, तगर, बड़ी कटेरी या भटकटैयाका फल, ओंगा, काले तिल, कड़वा कूट, छिलकेहीन जौ, छिलके रहित उड़द, पीली सरसों और असगन्ध—इन सबको समान-समान ले, पीस-कूट-कपड़छन करके और “शहद” में मिलाकर लिङ्गपर लेप करनेसे, लिङ्ग बढ़कर घोड़ेके समान हो जाता है ।

इस चूर्णको असली “शहद” में ४८ घण्टे तक खरल करो; जितना “शहद पिला सको उतना अच्छा । गोलिएँ सूखेंगी कम—गीली ही रहेंगी; कोई हर्ज नहीं—एक चौड़े मुँहके बासनमें ढक्कन लगा कर रख दो ।

जब लगाना हो, इसमेंसे एक या दो गोली लेकर, भेड़ या बकरीके दूधमें पत्थर पर रगड़ो । फिर उसे जरा गरम कर लो और सुहाता-सुहाता, १० मिनट तक लिङ्गपर मलो—सुपारीपर मत मलना या लगाना । इस तरह एक या दो महीने तक इस लेपके लगानेसे, वह लिङ्ग धातुकी कमीसे या नसकी कमजोरीसे अथवा फोतोंकी



सूजनसे दुबला-पतला हो गया होगा, अवश्य मोटा और लम्बा हो जावेगा । यह लेप आज्ञामूदा है । गंधेके समान होनेकी बात तो मिथ्या है, पर इससे लिङ्ग कुछ बढ़ता जरूर है । इस नुसखेको हम पहले लिख आये हैं ।

नोट—कूट, धायके फूल, बड़ी हरड़, फुलाई हुई फिटकरी, माजूफल, हाऊ-वेर, लोंध और अनारकी छाल—इन सबको कूट-पीस और छानकर, शराबमें मिलाकर स्त्रीकी योनिमें लेप करनेसे योनि सुकड़ जाती है । “योगचिन्तामणि ।”

( ११ ) लौंग, समन्दरफल और नागरपानके रसमें “वंगभस्म” घिसकर लिंगपर लेप करनेसे लिंग कुछ बढ़ जाता है । परीक्षित है ।

## धातुओंका शोधन-मारण ।

### अभ्रक-भस्मकी विधि ।

अभ्रकके भेद ।

○\*:\*:\*○ अभ्रक चार तरहकी होती है:—(१) सफेद, (२) काली, (३) लाल, और (४) पीली । इनमेंसे सफेद और काला अभ्रक-भस्म बनाने और खानेके काममें आती है । सफेद और कालीमें भी, “काली अभ्रक” गुणोंमें सबसे उत्तम होती है, क्योंकि काली अभ्रकमें पारा होता है और सफेदमें नहीं होता ।

काली अभ्रक भी चार तरहकी होती है—(१) पिनाक, (२) ददुर्, (३) नाग, और (४) वज्र ।



आगमें डालनेसे जिस अभ्रकके पत्ते खिल जाते हैं, उसे “पिनाक” अभ्रक कहते हैं। जो अभ्रक आगमें डालनेसे मैडकके समान आवाज देती है, “वही “दुर्दुर” है। जो अभ्रक आगमें डालनेसे फुट्टार मारती है, वह “नाग” है। जिस अभ्रकका आगमें डालनेसे रूपान्तर नहीं होता और आवाज भी नहीं होती, किन्तु जो जुरा फूल जाती है, उसे “वज्र” कहते हैं। पिनाक, दुर्दुर और नाग अभ्रक खानेसे मृत्यु होती है।

दवाके लिए “काली बज्र अभ्रक” लेनी चाहिये, क्योंकि यह मृत्यु और बुढ़ापेका नाश करनेवाला है।

### अभ्रककी पहचान प्रभृति ।

दक्षिण भारतके पहाड़ोंमें सूरजकी गरमी ज़ियादा होती है, इसलिए दक्खनके पहाड़ोंकी अभ्रक अल्प-सत्त्व और हीनगुण होती है; यानी ज़ियादा कामकी नहीं होती, लेकिन हिमालय प्रभृति उत्तरके पहाड़ोंमें होनेवाली अभ्रक अधिक सत्त्व और अधिक गुणोंवाली होती है।

अभ्रक सफ़ेद, लाल, पीली और काली होती है। केवल रंग देखनेसे अभ्रककी पहचान नहीं होती। तेज आगसे परीक्षा करनेपर पिनाक, दुर्दुर, नाग और वज्र अभ्रक जानी जाती हैं। इसलिये अभ्रक की आगके द्वारा परीक्षा करनी चाहिये।

आगमें जलनेसे जो अभ्रक चट-चट आवाज करे, उसे “पिनाक” समझना चाहिये। कोई-कोई कहते हैं, पिनाक अभ्रकको आगमें डालनेसे उसके पर्त अलग-अलग हो जाते हैं।

दुर्दुर अभ्रक आगमें डालनेसे मैडक-कीसी तरह आवाज करती है। कोई-कोई कहते हैं, दुर्दुर अभ्रक आगमें डालनेसे एकदम ऊपरकी तरफ फूल जाती है और क्षण भर भी स्थिर नहीं रहती।

नाग अभ्रक आगमें डालनेसे साँपके समान फुट्टार मारती है।



वज्राभ्रकको आगमें डालनेसे, पहले लिखे हुए पिनाक और ददुर आदिकी तरह, उसमें किसी तरहका रूपान्तर या फेरफार नहीं होता । यह वज्रकी तरह स्थिर रहती है ।

पिनाक अभ्रकके सेवनसे कोढ़ रोग, ददुरके सेवनसे मृत्यु और नाग अभ्रकके सेवनसे भगन्दर आदि रोग होते हैं ।

वज्राभ्रक पारेके ग्रास-कार्यमें और नाना प्रकारके रोग नाश करनेके काम आती है । वज्राभ्रक आगमें और चीजोंके साथ कुछ फूलकर सत्व छोड़ती है; लेकिन और अभ्रक काँच या मैल प्रभृति छोड़ती हैं, इसलिये सब तरहकी अभ्रकोंमें “वज्राभ्रक” ही सर्वश्रेष्ठ है ।

लाल और पीले रंगकी अभ्रक सुवर्णके साथ जारण करनेके लिए काममें लाई जाती है । सफेद अभ्रक आँखोंके लिये हितकारी है ।

**सबसे अच्छी अभ्रककी पहचान ।**

जो अभ्रक छूनेमें चिकनी और देखनेमें चमकदार हो तथा जिसके पत्र या पत्ता मोटे हों और वे सहजमें खुलजाते हों एवं जो तोलमें भारी हों, वह अभ्रक सबसे अच्छी होती है ।

**अभ्रकको शोधना जरूरी है ।**

बिना शोधी अभ्रक कोढ़, क्षय, पीलिया, हृदय-पीड़ा, पसलीका दर्द, देहका जकड़ना और मन्दाग्नि रोग पैदा करती है । अतः अभ्रकको बिना शोधे काममें न लाना चाहिये ।

**अभ्रक शोधनेकी पहली विधि ।**

अभ्रकके टुकड़ोंको, कोयलोंकी तेज आगमें रखकर, खूब लाल करो । जब वह आगकी तरह लाल हो जाय, उसे “गायके दूध” में बुझा दो । इसके बाद, एक पत्थरकी कूँडीमें चौलाईका रस ३ भाग और नीबूका रस १ भाग मिलाकर रखदो । पीछे उस अभ्रकको दूधमेंसे निकालकर उसमें डाल दो और २४ घण्टे पड़ी रहने दो । दूसरे दिन उसे साफ पानीमें धोओ और हाथोंसे खूब मलो और फिर



धोओ। इसके बाद, उसके पत्र अलग-अलग कर लो; अब यह शुद्ध अभ्रक “धान्याभ्रक” करनेके लायक होगी ।

### अभ्रक शोधनेकी दूसरी विधि ।

काली अभ्रकको आगमें खूब तपाकर, गायके दूधमें बुझाओ । फिर त्रिफलेके काढ़ेमें बुझाओ । इसके बाद नीबूके रस और चौलाईके रसमें बारह घण्टे तक भीगने दो । बस, अभ्रक शुद्ध हो जायगी ।

नोट—नीबूका रस १ भाग और चौलाईका रस तीन भाग लेकर मिला लो और उसीमें अभ्रकको भिगो दो ।

### अभ्रक शोधनेकी तीसरी विधि ।

वज्राभ्रकको तेज आगमें तपा-तपाकर, सात बार, त्रिफलेके काढ़ेमें बुझाओ । इसके बाद तपा-तपाकर, सात बार, गोमूत्रमें बुझाओ । शेषमें, तपा-तपाकर, सात बार, काँजीमें बुझाओ, अभ्रक शुद्ध हो जायगी ।

### अभ्रक शोधनेकी चौथी विधि ।

अभ्रकको आगमें खूब तपा-तपाकर सूखे बेरोंके काढ़ेमें सात बार बुझाओ । फिर उसे धूपमें सुखाकर महीन चूरा करलो । इस तरह शोधो हुई अभ्रकको धान्याभ्रक करनेकी दरकार नहीं रहती ।

### अभ्रक शोधनेकी पाँचवीं विधि ।

पहले पत्थरकी चार बड़ी बड़ी कूँडियोंमें दूध, त्रिफलेका काढ़ा, काँजी और गोमूत्र—भरकर रख दो । कोयलोंकी आगपर अभ्रकको रखकर, अङ्गारके समान लाल करो । जब लाल हो जाय, उसे “दूध”में बुझा दो । फिर आगपर रखकर तपाओ, जब लाल हो जाय, दूधमें बुझा दो । इस तरह सात बार आगमें लाल कर-करके, अभ्रक को दूधमें बुझाओ । तब दूधका काम शेष हो जायगा, इसके बाद, फिर अभ्रकको तपाओ, जब लाल हो जाय, “त्रिफलेके काढ़े”में बुझा दो । जब त्रिफलेके काढ़ेमें भी सात बार बुझा लो; तब



फिर गरम कर-करके सात बार “काँजी”में और फिर गरम कर-करके सात बार “गोमूत्र”में बुझाओ । इस तरह २८ बार आगमें गरम करके, “दूध, त्रिफलाके काढ़े, काँजी और गोमूत्रमें बुझानेसे अभ्रक शुद्ध हो जायगी । अब यह शुद्ध अभ्रक “धान्याभ्रकके योग्य” होगी ।

नोट—अभ्रक शोधनेकी तीसरी और इस पाँचवीं विधिमें सिर्फ “दूध”का भेद है ।

### धान्याभ्रककी विधि

ऊपरकी तरकीबोंमेंसे किसी भी तरकीबसे शुद्ध की हुई अभ्रक को धूपमें फैलाकर सुखालो । सूखने पर, उसे खरलमें डालकर खूब कूटो, ताकि महीन हो जाय । कुटी हुई अभ्रक को तोल लो । जितनी अभ्रक हो, उसका चौथाई भाग “समूचे धान” ले लो । अभ्रक और धान दोनोंको, एक कम्बलके टुकड़ेमें बाँधकर, तीन दिन-रात अर्थात् ७२ घण्टों तक, एक पानीके टब या बाल्टी या अन्य वर्तनमें भीगने दो । चौथे दिन उस पोटलीको पानीमें छेदी खूब मलो अधवाः मोगरीसे कूटो, जिससे सारी अभ्रक, महीन होकर कम्बलके छेदोंमें से छन-छनकर, पानीमें गिर जाय । इस तरह मसलनेसे अभ्रकके कंकर-पत्थर बगैर खराब पदार्थ धानोंके साथ कम्बलमें रह जायँगे और अभ्रक पानीमें चली जायगी । उस पानीको होशियारीसे नितारकर बहादो, पर अभ्रक न जाने पावे; जो अभ्रक मिले उसे धूपमें सुखालो । यही “धान्याभ्रक” है । अब यह अभ्रक मारने या फूँकनेके कामकी हुई ।

नोट ( १ )—शोधी हुई अभ्रकको आगपर तपाकर सूखे बेरोके काढ़े में बुझाओ और हाथसे मसलो । इस तरह सात बार तपा-तपाकर बुझाओ । फिर सारा पानी निकालदो और अभ्रकको धूपमें सुखालो । इस तरह तैयार की हुई अभ्रक धान्याभ्रकसे भी अक्छी होती है । इस तरह अभ्रकके शुद्ध हो जानेपर धान्याभ्रक की ज़रूरत नहीं होती, पर प्रायः सभी वैद्य अभ्रकका “धान्याभ्रक” करते हैं ।

\* अभ्रक पानीके वजाय “काँजी”में भी भिगोई जाती है ।



यह अपनी-अपनी इच्छाकी बात है। याद रखो, छिलकों-सहित आँवलोंको “धान” कहते हैं।

( २ )—अभ्रक मारनेके लिये आग नीचे लिखी चीजें तैयार कर लें; तब काम शुरू करें:—

( १ ) आकका दूध ।

( २ ) आकके पत्ते ।

( ३ ) बड़की जटाओंका काढ़ा ।

( ४ ) सराइयोंका जोड़ा ।

( ५ ) खरल ।

( ६ ) गज भर लम्बा-गहरा-चौड़ा खड्डा ।

( ७ ) आरने उपले या जंगली कण्डे ।

### अभ्रकको मारनेकी तरकीब ।

( दशपुटी अभ्रक भस्म )

( १ ) धान्याभ्रक को हुई अभ्रकको साफ खरलमें डालकर, ऊपर से “आकका दूध” डाल-डालकर खूब घोटो। घुटाई चार पहरसे कम न हो। चार पहर बाद, उसकी गोल टिकियासी बनाकर सुखालो। इसके बाद, उस टिकियाको “आकके पत्तों”में लपेट दो; यानी टिकिया पर आकके पत्ते लपेटकर डोरा बाँध दो। फिर उस टिकियाको एक मजबूत सराईमें रखकर, ऊपरसे दूसरी सराई रखकर, दोनोंकी सन्धें मिला दो। सराइयोंके ऊपर पाँच-छः कपरौटी कर दो; यानी मुल्तानी मिट्टी पानीमें पीसकर, उसमें कपड़ा लहेसकर, सराइयों की सन्धोंपर चढ़ा दो। जब सन्ध ढक जायँ, सराइयोंपर चारों ओर भी, वैसा ही कपड़ा तीन-चार तह लपेट दो और सराइयोंको सुखालो। इसके बाद गज-भर गहरा, गज-भर लम्बा और गज-भर चौड़ा गड्ढा खोदकर, उसमें थोड़े जंगली—आरने कण्डे नीचे भर दो। उनपर सराइयोंको रखकर ऊपरसे और कण्डे भर दो; पीछे आग लगा दो। जब आग ठण्डी हो जाय, सराई निकाल लो और खोलकर, मसालेको खरलमें डालकर, “आकका दूध” दे-देकर फिर चार पहर घोटो।



घुटनेपर गोल टिकिया बनाकर, उसपर “आकके पत्ते” लपेट दो और उसे सराईमें रखकर, दूसरी सराई ऊपर रखकर, कपड़-मिट्टी करके सुखालो और उसी खड्डेमें जंगली कण्डे डालकर सराई रख कर, फिर ऊपरसे कण्डे भरके आग लगा दो। आग शीतल होने पर, सराई निकाल लो। सराइयोंसे मसाला निकाल कर खरलमें डालो और आकके दूधमें घोटकर टिकिया बना लो। उसे फिर आकके पत्तों से लपेट, सराईमें रख, कपड़-मिट्टी कर सुखा लो और पहले की तरह खड्डेमें रख कर फूँक दो। मतलब यह है कि, इसी तरह आकके दूधमें घोट-घोटकर, उसे सात बार फूँको; तब एक काम हुआ समझो।

जब ऊपरकी तरकीबसे अभ्रक सात बार फूँक चुके, तब उसे निकाल कर, खरलमें डाल कर, उसमें “बड़की जटाओंका काड़ा” डाल-डालकर चार पहर घोटो और टिकिया बनाकर सुखा लो। सूखनेपर टिकियाको सराईमें रख, ऊपरसे दूसरी सराई रख, कपड़ मिट्टी कर सुखा लो और उस खड्डेमें फूँक दो। यह आठ आँच हो गईं। शीतल होनेपर फिर “बड़की जटाओंके काड़े” में घोट, टिकिया बना सुखा लो और सराईमें रख, कपड़-मिट्टी कर, उसी तरह फूँक दो। यह नौ आँच हुईं। शीतल होने पर, मसाले को निकाल फिर बड़की जटाओंके काड़े में घोट, टिकिया बना, सुखा, सराईमें रख, कपड़-मिट्टी कर, उसी तरह, उसी खड्डेमें फूँक दो। तीन पुट बड़की जटाके साथ देकर फूँकनेसे अभ्रककी “निश्चन्द्र भस्म हो जायगी। इसे “दश आँचकी अभ्रक-भस्म” कहते हैं।

### अभ्रककी एक पुटी भस्म ।

(१) धान्याभ्रक १ भाग और ‘सुहागा’ दो भाग लेकर मिलालो और खरलमें डालकर “नीबू के रस” के साथ बारह घण्टों तक खरल करो और टिकियाँ बनाकर धूपमें सुखा लो। फिर उन टिकियोंको



सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटसे फूँक दो। बस, एक आँचमें ही अभ्रक-भस्म तैयार हो जायगी।

नोट ( १ )—“सराव-सम्पुट का अर्थ है—एक सरावे या सराईमें टिकिया रखकर, उसपर दूसरी सराई ढकना और फिर उन सराइयों पर कपड़-मिट्टी करना। “गजपुट” का अर्थ है—गज-भर गहरा, चौड़ा, लम्बा गड्ढा जिसमें दवायें फूँकी जाती हैं।

( २ )—साधारण रोगों के दूर करनेके लिये अभ्रक में एकसे दस आँच तक दी जाती हैं। बड़े रोगोंके नाशार्थ १० से १०० पुट तक देते हैं। विशेष रोग नाशार्थ और रसायन-कार्यके लिये १०० से १००० पुट तक देते हैं। अभ्रक में जितनी ही अधिक पुटें दी जाती हैं, वह उतनी ही गुणकारी होती है।

( सुभीता ) एक पुटी अभ्रक-भस्मके लिये नीचे लिखी हुई चीजोंकी दरकार होती है:—

धान्याभ्रक, ( २ ) सुहागा, ( ३ ) नीबुओंका रस, ( ४ ) दो सरावे या सराइयाँ, और ( ५ ) गज भर गहरा-लम्बा-चौड़ा गड्ढा।

तीन पुटी अभ्रक भस्म ।

( १ ) शुद्ध अभ्रकको पहले “अरण्डी या रैंडीके पत्तोंके रस” में खरल करो। इसके बाद उसे “पुराने गुड़” में खरल करो। पीछे उसकी टिकियाँ बनाकर धूपमें सुखा लो। फिर एक शकोरेमें नीचे बड़के पत्ते बिछा कर, पत्तोंपर उन टिकियोंको रख दो और फिर टिकियोंपर बड़ के पत्ते बिछा दो। इसके बाद शकोरेपर दूसरा शकोरा औँधा रख कर, कपड़-मिट्टी करो और सुखा लो। सूखनेपर शकोरोंको गजपुटमें फूँक दो। आग शीतल होने पर, शकोरे निकालकर, उनके भीतरसे भस्म निकाल लो।

( २ ) उस भस्मको फिर पहलेकी तरह “रैंडीके पत्तोंके रस” में और फिर “पुराने गुड़” में खरल करके टिकियाँ बनालो और सुखालो। फिर पहलेकी तरह शकोरेमें बड़के पत्ते बिछाकर, उनपर टिकियाँ रखकर



ऊपरसे बड़के पत्ते बिछा दो और दूसरे शकोरोंसे बन्द करके कपड़-मिट्टी ऊपर और सुखा लो । सूखने पर गजपुटमें फूँक दो । यह दो पुट हुईं । जब आग शीतल हो जाय, पहलेकी तरह भस्मको निकालो ।

अब तीसरी बार, फिर उसे “रैंडीके पत्तोंके रस” और “पुराने गुड़” में खरल करो और सारे काम ऊपरकी तरह करके फूँक दो । यह तीसरी पुट हुई । इस बार उत्तम “तीन-पुटी अभ्रक-भस्म” तैयार हो जायगी ।

नोट—वही एक तरकीब तीन बार करनेसे भस्म बनती है ।

(सुभीता) तीन पुटी अभ्रक भस्म तैयार करनेके लिए नीचे लिखी हुई चीजें तैयार रखनी पड़ती हैं :—

(१) धान्याभ्रक, (२) अरण्डी या रैंडीके पत्तोंका रस, (३) पुराना गुड़, (४) दो शकोरे या सराइयाँ, (५) बड़ या बरगदके पत्ते, और (६) गजभर गहरा-चौड़ा-लम्बा गड्ढा ।

नोट—पुराना गुड़—एक वर्षका पुराना गुड़ अच्छा होता है और तीन वर्षका पुराना गुड़ तो सर्वश्रेष्ठ ही होता है । तीन सालसे ऊपरका पुराना गुड़ कामका नहीं होता । नया गुड़ कफ, श्वास, खाँसी, कीड़े और अग्निको बढ़ाता है ।

### दशपुटी अभ्रक भस्म ।

(१) धान्याभ्रकको “आकके दूध” में, बारह घण्टे तक खरल करके टिकियाँ बना लो और धूपमें सुखा लो । फिर उन टिकियोंको मूष या शकोरोंमें बन्द करके गजपुटमें फूँक दो । आग शीतल होने पर, मूषसे अभ्रकको निकाल लो ।

(२) अब ऊपरकी तरहसे “आकके दूध” में बारह-बारह घण्टे, खरल करके टिकियाँ बना और सुखाकर, मूषमें बन्द करो और फूँक दो । इस तरह छै बार और करो, तब सात पुट होंगी ।

(३) सात बार फूँकनेके बाद, अभ्रकको “बड़की दाढ़ी या जटाओंके काढ़े” में बारह-बारह घण्टे खरल करके, टिकियाँ बनाकर, सुखा लो और मूषमें रखकर फूँक दो । इस तरह तीन बार करो, यानी



तीन बार बड़की दाढ़ीके काढ़ेमें घोट-घोटकर फूँको । तब दस आँच पूरी होंगी और आपकी “दस-पुटी अभ्रक भस्म” तैयार होजायगी ।

नोट ( १ )—“दशपुटी अभ्रक भस्मकी विधि” खूब समझाकर पहले ही लिख आये हैं । यहाँ सिलसिला मिलानेको संक्षेपमें, फिर लिख दी है ।

( २ ) दशपुटी अभ्रक भस्म बनानी होती है, तो “धान्याभ्रक” को सात बार “आकके दूधमें” खरल करके फूँकते हैं और शेष तीन बार “बड़की दाढ़ी या जटाओंके काढ़े” में खरल करके फूँकते हैं ।

(सुभीता) दशपुटी अभ्रक भस्म तैयार करनेके लिये नीचे लिखी हुई चीजोंकी जरूरत होती है :—

(१) धान्याभ्रक, (२) आक या मदारका दूध, (३) बड़की जटाओंका काढ़ा, (४) दो शकोरे या सराइयाँ अथवा सुनारकी सी मूष, और (५) गजपुट—खड्डा ।

बीस पुटी अभ्रक भस्म ।

( १ ) शोधी हुई अभ्रकको “बड़की दाढ़ीके काढ़े” में बारह घण्टे खरल करके टिकियाँ बना लो और धूपमें सुखा लो । सूखनेपर, शराब-सम्पुटमें बन्द करके, रातके समय, गजपुटमें फूँक दो । सवेरे ही, आग शीतल होनेपर, सराइयोंमेंसे अभ्रकको निकाल लो । अब इसे बड़की जटाओंके काढ़ेमें बारह घण्टे घोटकर, सुखाकर, शराब-सम्पुटमें रखकर फूँक दो । यह दो पुट हुई ।

( २ ) अब उसी अभ्रकको “पानोंके रस” में १२ घण्टे घोटो और टिकियाँ बनाकर सुखा लो । फिर शराब-सम्पुटमें रखकर गजपुटमें फूँक दो । आग शीतल होनेपर निकालकर, फिर पानोंके रसमें घोट कर, गजपुटमें फूँक दो । इसी तरह, फिर तीसरी बार पानोंके रसमें घोटकर गजपुटमें फूँक दो । इस तरह तीन पुट पानोंकी हुई ।

( ३ ) अब ठीक इसी तरह, अभ्रकको “अड़ूसेके रस” में खरल करो, टिकियाँ बनाओ, सुखाओ और शराब-सम्पुटमें रखकर गजपुटमें



फूँक दो । इसी तरह अड़-सेके रसमें दो बार और घोटो और फूँको, तब तीन पुट अड़-सेके रसकी होगी ।

( ३ ) अब उसी अभ्रकको “हुलहुलके रस” में तीन बार घोटो और ऊपरकी विधिसे तीन बार फूँक दो ।

( ३ ) अब उसी अभ्रकको “करेलेके रस” में तीन बार, बारह-बारह घण्टे खरल करके फूँको ।

( ३ ) अब उसी अभ्रकको “ब्राह्मीके रस” में तीन बार, बारह-बारह घण्टे घोटो और फूँको ।

( ३ ) अब उसी अभ्रकको “बड़के दूध” में तीन बार, बारह-बारह घण्टे घोटो और फूँको ।

इस तरह दो बार बड़की दाढ़ीके रसमें, तीन बार पानोंके, तीन बार अड़-सेके, तीन बार हुलहुलके, तीन बार करेलेके, तीन बार ब्राह्मीके और तीन बार बड़के दूधमें खरल करके, आग देनेसे २० पुट हो गईं ! बीस पुट होनेके बाद, अभ्रक भस्म सिन्दूरके समान लाल हो जावेगी ।

नोट—बारह घण्टे घोटने, ठिकिया बनाने, धूपमें सुखाने, सराइयोंमें बन्द करने और गजपुटमें फूँकनेकी क्रिया एक समान रूपसे बीस बार करनी होगी । बड़की दाढ़ीके काढ़ेमें दो बार और पान वगैरह के रसोंमें तीन-तीन बार घुटाई होगी ।

(सुभीता) बीस पुटी अभ्रक-भस्मके लिए नीचे लिखी हुई चीजोंकी जरूरत होगी :—

( १ ) बड़की दाढ़ीका काढ़ा, ( २ ) नागरपानोंका रस, ( ३ ) अड़-सेके पत्तोंका रस, ( ४ ) हुलहुलके पत्तोंका रस, ( ५ ) करेलेके पत्तोंका रस, ( ६ ) ब्राह्मीके पत्तोंका रस, ( ७ ) बड़ या बरगदका दूध, ( ८ ) धान्याभ्रक, ( ९ ) दो शकोरे, और ( १० ) गजपुट—खड़ा ।



## इकतालीस पुटी अभ्रक भस्म ।

पहले शुद्ध अभ्रकको नीचे लिखे हुए बारह प्रकारके काढ़ों और रसोंमें, तीन-तीन बार, बारह-बारह घण्टे तक, खरल करो और हर बार खरल करके गजपुटमें फूँको, तब ३६ पुट होंगी। उन बारह काढ़ोंके नाम ये हैं:—

- ( १ ) नागरमोथेका काढ़ा ।
- ( २ ) पुनर्नवाका रस ।
- ( ३ ) कसौंदीका रस ।
- ( ४ ) नागर-पानोंका रस ।
- ( ५ ) आकका दूध ।
- ( ६ ) बड़की दाढ़ीका काढ़ा ।
- ( ७ ) मूसलीका रस या काढ़ा ।
- ( ८ ) गोखरूका काढ़ा ।
- ( ९ ) कौंचके बीजोंका काढ़ा ।
- ( १० ) केलेके खंभेका रस ।
- ( ११ ) तालमखानेका काढ़ा ।
- ( १२ ) लोधका काढ़ा ।

जब आप ऊपरके हरेक काढ़ेमें, तीन-तीन बार, बारह-बारह घण्टे, घोट-घोटकर फूँकलो, तब नीचेकी पाँच चीजोंमें एक-एक बार, खरल करो और फूँको, इस तरह  $३६ + ५ = ४१$  पुट पूरी हो जायँगी। वे पाँच चीजें ये हैं:—

(३) दूध, (२) दही, (३) घी, (४) शहद, और (५) चीनी ।

यह भस्म सभी रोगों और दवाओंमें व्यवहार करने लायक होती है। इस तरह तैयार की हुई भस्मका “अमृतीकरण” नहीं हो सकता ।



## धातुओंका शोधन-मारण—अभ्रक ।

४१७

नोट—अभ्रकको पहले बारह घण्टे तक, “नागरमोथेके काढ़े” में खरल करना, टिकिया बनाना और सुखाना । सूखनेपर टिकिया सराईमें रखकर सराईसे मुँह बन्द करके कपरौटी करना और सुखाना; सूखनेपर सराईयोंको गजपुटमें रखकर फूँक देना । बस, इसी तरह कुल तीन बार नागरमोथेके काढ़ेमें खरल करके अभ्रकको फूँकना । जब तीन बार हो जावे, पुनर्नवाके रसमें खरल करना और फूँकना । हर चीज़में तीन-तीन बार खरल करके फूँकना; किन्तु अन्तके दूध, दही वगैरहमें एक-एक बार ही खरल करना और फूँकना । हमने विधि इस तरह समझा दी है, कि महामूर्ख भी “अभ्रक-भस्म” बना सकें । इससे सरल राह समझाने की और नहीं है ।

## साठ पुटी अभ्रक भस्म ।

शोधी हुई अभ्रकको, नागरमोथेके काढ़े” में तीस बार, बारह-बारह घण्टे, खरल करो, टिकियाँ बनाओ, उन्हें सुखाओ, फिर उन्हें सराईयोंमें रख, बन्दकर, गजपुटमें फूँक दो । जब नागरमोथेके काढ़ेकी तीस पुट पूरी हो जावें, तब—

उस अभ्रकमें, उसके वजनका सोलहवाँ भाग “सुहागा” मिला दो और “चौलाईके रस” में, तीस बार, बारह-बारह घण्टे, घोटकर गजपुटमें फूँको ।

इस तरह नागरमोथेके काढ़ेमें ३० बार और चौलाईके रसमें ३० बार खरल करने और फूँकनेसे “साठ पुटी अभ्रक भस्म” तैयार हो जायगी । यह भस्म सिन्दूरके समान लाल होगी और कुष्ठ तथा क्षय आदि रोगोंमें अमृत-समान फल देगी ।

नोट—पहली बार जब अभ्रकको नागरमोथेके काढ़ेमें खरल करोगे, तब उसमें कुछ मिलाना नहीं होगा । दूसरी बार जब उसे चौलाईके रसमें खरल करोगे, तब उसमें खरल करनेसे पहले ही, अभ्रकका १६वाँ भाग “सुहागा” मिलाना होगा ।

( सुभीता ) साठ पुटी अभ्रक-भस्मके लिये नीचे लिखी हुई चीजें दरकार होंगी :—

(१) शुद्ध अभ्रक, (२) नागरमोथेका काढ़ा, (३) चौलाईका रस, (४) सुहागा, (५) दो शकोरे, और (६) गजपुट—खड्डा ।



## सौ पुटी अभ्रक भस्म ।

धान्याभ्रकको “कसौंदीके पत्तोंके रस” में बारह घण्टे खरल करके टिकियाँ बना लो और उन्हें धूपमें सुखा लो । सूखनेपर, सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटमें फूँक दो । यह एक पुट हुई । ठीक इसी तरह, ६६ बार और उसी अभ्रकको कसौंदीके पत्तोंके रसमें घोट-सुखाकर, गजपुटमें फूँको । १०० पुट होते ही निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म तैयार हो जायगी । यह भस्म समस्त रोगों और दवाओंमें काम आवेगी ।

नोट—सौ पुटी अभ्रक भस्मके लिए, अभ्रक १०० बार ही कसौंदीके पत्तोंके रसमें, बारह-बारह घण्टे खरल होगी और फूँकी जायगी; अन्य किसी चीज़की दरकार न होगी ।

## शतपुटी अभ्रक भस्मकी और विधि ।

अगर १०० आँचकी या शतपुटी अभ्रक-भस्म बनानी हो तो अभ्रकको पहले “आकके दूध” में ७ बार खरल करके, सात बार गजपुटमें फूँक दो; फिर तीन बार “बड़की जटाके काढ़े” में खरल कर-करके, तीन बार गजपुटमें फूँक दो । इस तरह जब दस आँच लग जायँ; ११वीं बार, “धीग्वारके रस” में खरल करके, टिकिया बनाकर सुखा लो । फिर सराईमें रखकर, ऊपरसे दूसरी सराई धरकर, कपड़-मिट्टी करके, उसी खड्डे या गजपुटमें फूँक दो । फिर निकाल-कर, “धीग्वारके रस” में खरल करके, टिकिया बनाकर सुखा लो और सराव-सम्पुट यानी सराईमें रख, ऊपरसे दूसरी सराई रख, कपड़-मिट्टी कर, गजपुट या उसी खड्डेमें फूँक दो । इस तरह सात बार आकके दूधमें, तीन बार बड़की जटाके काढ़ेमें और नब्बे बार धीग्वारके रसमें खरल कर-करके; यानी कुल १०० बार खरल कर-करके, प्रत्येक बार गजपुटमें फूँको; तब १०० आँचकी अभ्रक भस्म तैयार हो जायगी ।

नोट—खुलासा यह है कि, अभ्रकको आकके दूधमें खरल करके, टिकिया बना लो और सुखा लो । फिर उस टिकियाको सराईयोंमें बन्द करके कपड़ौटी करो



और सुखालो । सूखनेपर गजपुटमें फूँक दो । इस तरह आकके दूधमें छै बार और खरल करो और फूँको । यही विधि बड़की जटाके काढ़ेमें तीन बार करो; तब दस आँच होगी । बाकी ६० दफा घीग्वारके रसमें खरल करो और फूँको ।

### सहस्र पुटी अभ्रक भस्म

( १ ) पहले वज्राभ्रकको आंगमें तपाकर “गायके दूध”में बुझा दो । इस तरह सात बार तपा-तपाकर, दूधमें बुझाओ । बस, अब अभ्रक शुद्ध हो जायगी ।

( २ ) अब इस शुद्ध अभ्रकको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर, ऊपरसे “घी” डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ ।

( ३ ) इसके बाद उसका धान्याभ्रक बनाकर, उसे धूपमें सुखाओ ।

( ४ ) अब उस धान्याभ्रकको नीचे लिखी हुई ६३ मारक दवाओंके रसों या काढ़ोंमें, अलग-अलग, बारह-बारह घण्टों तक, सोलह-सोलह बार, खरल करो । टिकियाँ बनाकर धूपमें सुखाओ । फिर उन्हें सराइयोंमें बन्द करके, गजपुटकी आग दो । जिन चीजोंमें अभ्रक सोलह-सोलह बार खरल होगी, वे ये हैं:—

( १ ) आकका दूध ।

( २ ) बड़का दूध ।

( ३ ) थूहरका दूध ।

( ४ ) घीग्वारका रस ।

( ५ ) अरण्डी या रैडीके पत्तोंका रस ।

( ६ ) नागरमोथेका काढ़ा ।

( ७ ) गिलोयका काढ़ा या रस ।

( ८ ) भांगका काढ़ा ।

( ९ ) छोटी कटेरीका काढ़ा ।

( १० ) गोखरूका काढ़ा ।

( ११ ) बड़ी कटेरीका काढ़ा ।

( १२ ) शालिपर्णीका काढ़ा ।



- ( १३ ) पृष्ठपर्णिका काढ़ा ।
- ( १४ ) सफेद सरसोंका काढ़ा ।
- ( १५ ) चिरचिरेके पत्तोंका रस ।
- ( १६ ) बड़की दाढ़ीका काढ़ा ।
- ( १७ ) बेलके पत्तोंका रस या काढ़ा ।
- ( १८ ) अरनीकी छालका काढ़ा ।
- ( १९ ) चीतेकी जड़का काढ़ा ।
- ( २० ) तैदूकी छालका काढ़ा ।
- ( २१ ) हरड़का काढ़ा ।
- ( २२ ) पाटलका काढ़ा ।
- ( २३ ) गोमूत्र ।
- ( २४ ) आमलोंका रस या काढ़ा ।
- ( २५ ) बहेड़ोंका काढ़ा ।
- ( २६ ) पीपरीका काढ़ा ।
- ( २७ ) तालीसपत्रका काढ़ा ।
- ( २८ ) मूसलीका काढ़ा या रस ।
- ( २९ ) अड़ूसेका काढ़ा या रस ।
- ( ३० ) असगन्धका काढ़ा ।
- ( ३१ ) मौलसरीके पत्तोंका काढ़ा ।
- ( ३२ ) भांगरेका रस ।
- ( ३३ ) केलेके डण्डेका रस ।
- ( ३४ ) सतवनकी छालका काढ़ा ।
- ( ३५ ) धतूरेके पत्तोंका रस ।
- ( ३६ ) लोधका काढ़ा ।
- ( ३७ ) देवदारुका काढ़ा ।
- ( ३८ ) हरी और सफेद दूबका रस ।
- ( ३९ ) कसौंदीके पत्तोंका रस ।



- ( ४० ) काली मिर्चोंका काढ़ा ।  
 ( ४१ ) अनारका रस ।  
 ( ४२ ) मकोयका रस ।  
 ( ४३ ) शंखपुष्पीका रस या काढ़ा ।  
 ( ४४ ) अगरका काढ़ा ।  
 ( ४५ ) पानोंका रस ।  
 ( ४६ ) पुनर्नवाका रस ।  
 ( ४७ ) गोरखमुण्डीका काढ़ा ।  
 ( ४८ ) इन्द्रायणकी जड़का काढ़ा ।  
 ( ४९ ) भारङ्गीका काढ़ा ।  
 ( ५० ) बड़ी तोरईका रस ।  
 ( ५१ ) शिवलिङ्गीका काढ़ा ।  
 ( ५२ ) कुटकीका काढ़ा ।  
 ( ५३ ) ढाकके बीजोंका काढ़ा ।  
 ( ५४ ) बन्दालके पत्तोंका रस या काढ़ा ।  
 ( ५५ ) मूषाकानीके पत्तोंका रस ।  
 ( ५६ ) जवासेका काढ़ा ।  
 ( ५७ ) ब्राह्मीका रस या काढ़ा ।  
 ( ५८ ) काले जीरेका काढ़ा ।  
 ( ५९ ) अगस्तका रस ।  
 ( ६० ) शतावरका काढ़ा या रस ।  
 ( ६१ ) मछेछीका काढ़ा ।  
 ( ६२ ) घी ।  
 ( ६३ ) दूध ।

इन ६३ चीजोंमें, सोलह-सोलह पुट देनेसे  $६३ \times १६ = १००८$  पुट होंगी; यानी १००८ बार अभ्रक खरल होगी और उतनी ही बार, सराव-



सम्पुटमें रख, गजपुटमें फूँकी जायगी। यह “सहस्र-पुटी अभ्रक”, अनुपान विशेषके साथ, समस्त रोग नाश करती और शरीरमें अतुल बलवीर्य पैदा करती है। यह पृथ्वीका अमृत है।

## अभ्रक भस्मकी और तरकीबें ।

### पहली विधि ।

काली अभ्रकको शोध लो, फिर धान्याभ्रक कर लो इसके बाद उसके दो तोले चूरेको घोट कर, एक-दम महीन मैदासा करलो। फिर काले “कुकरौंधेके स्वरस” में ३ घण्टे या जब तक चमक न मिट जाय घोटो। फिर दो तोलेकी टिकिया बनाकर सुखा लो। फिर भाँगको, सिल पर, जलके साथ, काजल-जैसी महीन पीस कर, उस अभ्रककी टिकिया पर उसका कागज-जैसा पतला लेप कर दो और फिर सुखा लो।

फिर एक सराईमें नीचे “आकका पत्ता” रखकर उसपर उस टिकियाको रख दो और ऊपरसे फिर एक “आकका पत्ता” रख दो। पत्ता रखकर दूसरी सराईसे ढक दो, पर सराव-सम्पुटकी तरह जोड़-बन्द मत करो। एक गज गहरे-लम्बे-चौड़े खड्डेमें कण्डे भर कर, कण्डों के बीचमें ढक्कन-समेत सराई रख कर आग लगा दो। आग शीतल होने पर सराई निकाल लो। अगर आप खड्डेपर एक लोहेकी ऐसी चादर ढक दें, जिसके बीचमें हाथ चलाजाय जितना छेद हो, तो और भी अच्छा हो; आग बँधकर लगेगी, छेदसे धूआँ निकलेगा और हवा भीतर जायगी, जिससे आग न बुझेगी; आग शीतल होनेपर धीरेसे सराइयोंको निकालना। यह भस्म १०० आँचकी अभ्रकके समान ही गुणकारी होगी।

नोट—काले कुकरौंधेके काली डंडी होती है।

### दूसरी विधि

धान्याभ्रक करके, जिसकी विधि उधर लिख आये हैं, अभ्रकके चूरे को (१) नागबला, (२) भद्रमोथा, (३) बड़के दूध या बड़की जट्टाओंके



काढ़े, (४) हल्दीके पानी, और (५) मंजीठके काढ़ेमें भावना देकर, सराब-सम्पुटमें बन्द करके, गजपुटमें फूँक दो; यानी अभ्रकमें पहले नागवालाकी भावना देकर टिकिया बना लो और सुखा लो, फिर सराईमें रख कर ऊपरसे दूसरी सराई रखकर, कपड़-मिट्टी करके, कण्डोंसे भरे गड्ढेमें सराई रखकर आग लगा दो । आग शीतल होने पर, अभ्रकको निकालकर, भद्रमोथेकी भावना दो या घोटो और टिकिया बना, सराई में बन्द कर फूँक दो । इसके बाद बड़के दूधकी भावना देकर, और वही सब काम करके फूँक दो । इसके भी बाद, हल्दीके पानीकी भावना देकर और वही सब काम करके फूँक दो । इसके बाद, मंजीठके काढ़ेकी भावना देकर फूँक दो । ऐसा न करना, कि पाँचोंकी पहले भावना दे लो और फिर फूँको; बल्कि प्रत्येक चीज़की क्रम-क्रमसे भावना दे-देकर फूँको । इस तरह भावनायें दे-देकर, अच्छी तरह गजपुटमें फूँकने से “लालरंग” की उत्तम अभ्रक-भस्म तैयार होती है ।

नोट—दो सराइयों ( सरावा भी कहते हैं ) या शकोरोंके बीचमें अच्छी तरह पकानेके लिये, दवाको रखते हैं और फिर उन दोनोंकी सन्धियोंको मुद्रासे यानी मुल्तानी मिट्टी-लिहसे कपड़ोंसे बन्द कर देते हैं । इसीको “सराब-सम्पुट” कहते हैं ।

डेढ़ हाथ या गज-मर लम्बे, उतने ही गहरे और उतने ही चौड़े गड्ढेको “गजपुट” कहते हैं ।

### तीसरी विधि ।

धान्याभ्रक एक हिस्सा और हागा दो हिस्सा लेकर मिला लो और खरलमें घोट कर, बन्धभूषमें रख कर, खूब तेज आग लगा कर पकाओ । इसके बाद निकाल कर, फिर खरलमें डालो और दूध दे-देकर खरल करो और टिकिया बना कर सुखा लो । टिकियाको, ऊपर कही तरकीबसे, दो सराइयोंमें बन्द करके, उनपर कपड़-मिट्टी



कर लो, सराइयोंको गजपुट या पहले लिखे जैसे खड्डेमें रखकर, कण्डे ढालकर आग लगा दो और शीतल होनेपर निकाल लो । इस तरकीबसे निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म तैयार हो जायगी । यह भस्म तासीरमें शीतल होती है, अतः प्रत्येक रोगमें दी जा सकती है ।

### अभ्रक-सत्व पातन-विधि ।

( १ )

धान्याभ्रकका चूरा जितना हो, उसका दसवाँ भाग सज्जीखार, दसवाँ भाग सफ़ेद चिरमिटी और दसवाँ भाग जवाखार लेकर, सबको मिला लो । फिर इसे भैंसके दूध, दही; घी, गोबर और गोमूत्रमें खूब खरल कर लो और छोटी-छोटी टिकियाएँ बनाकर धूपमें सुखा लो । पीछे इन टिकियोंको 'कोष्टिक यन्त्र' में रखकर फूँक दो । उन टिकियोंमेंसे "अभ्रकका सत्व" निकल आवेगा ।

( २ )

शोधी हुई अभ्रकके चूर्णमें उसका चौथाई "मुहागा" मिला दो और 'मूसलीके रस' में अच्छी तरह खरल करके, छोटी-छोटी टिकिया बनाकर धूपमें सुखा लो । फिर उन्हें "कोष्टिक यन्त्र" में रखकर फूँक दो । अभ्रकका सत्व" निकल आवेगा ।

( ३ )

धान्याभ्रक २७ तोले लो । फिर उसमें लाख, सफ़ेद चिरमिटी, भेड़का दूध, शहद, छोटी मछलीका छिलका, सरसों, तिलकी खली, सैधानोन और हिरनका सोंग—इन नौ चीजोंको तीन-तीन तोले लेकर मिला दो । अब इन सबको अड़सेके पत्ते चौलाई, कसौंदी, हंसपदी, हुलहुल और करेलेके पत्तोंके रसमें, अलग-अलग, बारह-बारह घण्टे, खरल करो ।

जब छहों चीजोंमें अलग-अलग खरल कर चुको, तब एक तोले "गेहूँका आटा" ढालकर बड़ियाँ बनालो और उन्हें धूपमें सुखालो । फिर



## धातुओंका शोधन-मारण—अभ्रक ।

४२५

उन बड़ियोंमें खैरके कोयलोंकी तेज आग दो और धौंकनी धमाते रहो । इस तरह उन बड़ियोंमेंसे “अभ्रक-सत्व” निकल आवेगा, जिसका रंग काँसी-जैसा होगा ।

नोट—सत्व-सत्व आप लेलें; अब जो मैल या किट्ट रहे उसे, गोबरमें खरल करके बड़ियाँ बना लें । पीछे उन बड़ियोंमें, ऊपरकी तरह आग दो और धौंकनी धमाओ; इस तरह रहा-सहा सत्व भी निकल आवेगा । अगर निकला हुआ सत्व बहुत ही कड़ा हो, तो उसमें शहद, तैल, चरबी और धीकी दस पुट दो । वह नर्म हो जायगा ।

( ४ )

शुद्ध अभ्रकके चूर्णको, एक दिन, काँजीमें खरल करो और सुखालो । फिर केलेके डण्डेके रसमें एक दिन खरल करो और सुखा लो । फिर एक दिन जमीकन्दके रसमें खरल करो और सुखालो । शेषमें “सूखो मूलीके काढ़े”में खरल करो और सुखा लो । सबके अन्तमें, बराबर भाग “सुड़ागा और छोटी मछलीके छिलके” मिला दो और भैंसके गोबरके साथ खरल करके, छोटे-छोटे गोले बना लो । उन गोलोंको धूप में सुखाकर, मूषमें रखकर, तेज आग लगाओ और धौंकनीसे धमाओ । काँसीके समान “अभ्रक-सत्व” निकल आवेगा । यह अभ्रक-सत्व शीतवीर्य, त्रिदोष नाशक, रसायनमें हितकारी और अवस्था-स्थापक होता है । इसके समान पुरुषत्व बढ़ाने वाली और दवा नहीं है ।

## अभ्रक-सत्व शोधन-विधि ।

अभ्रक सत्वका चूर्ण करके, उसे गायके घीके साथ तब तक भूँनो जब तक कि, वह आगके समान लाल न हो जावे ।

अथवा

अभ्रकके सत्वको पहले खूब महीन कर लो । फिर उसे गायके घीके साथ खूब खरल करो । इसके बाद उसे गायके घीमें भूँनो । फिर उसे आमलंके रसमें मिलाकर भूँनो । शेषमें पुनर्नवा, अड़सा



और काँजीमें अलग-अलग खरल करके पुट दे दो; यानी पुनर्नवामें चार बार खरल करके पुट दो, अड़ूसेके रसमें तीन बार और काँजीमें तीन बार खरल करके पुट दे दो । इस तरह दस पुट लगनेसे अभ्रक-सत्व शुद्ध हो जाता है ।

### अभ्रक-सत्व मारण-विधि ।

शुद्ध अभ्रकका सत्व लो । उसमें उसका दसवाँ भाग “शुद्ध आमलासार गन्धक” मिला दो । फिर “बड़की जड़के काढ़े” की बीस पुट दो । फिर “सूखी मूलीके काढ़े” की बीस पुट दो । फिर “गोरख-मुण्डीके काढ़े” की बीस पुट दो । फिर “त्रिफलेके काढ़े” की बीस पुट दो और शेषमें “भाँगरेके रस” की बीस पुट दो । इस तरह १०० पुट खानेसे अभ्रक-सत्वकी उत्तम भस्म तैयार हो जाती है । यह सब रोगोंमें काम देती है ।

### अभ्रक-भस्मकी अमृतीकरण-विधि ।

आठ तोले गायका घी लोहेकी कढ़ाहीमें चढ़ाकर, उसमें दस तोले अभ्रक भस्म डाल दो और अच्छी तरह भूँनो । इसके बाद उसीमें १६ तोले “त्रिफलेका काढ़ा” डालकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ और अन्तमें उसे धूपमें सुखा लो । लघु पुट द्वारा मारी हुई अभ्रकका अमृतीकरण इसी तरह करना चाहिये ।

### अभ्रक-भस्मके अमृतीकरणकी और विधि ।

मरी हुई अभ्रक-भस्मका अमृतीकरण कर लेना चाहिये । इससे गर्मी निकल जाती है ।

अभ्रक-भस्म जितनी हो उतना ही गायका घी लेकर, दोनोंको साफ लोहेकी छोटी कढ़ाहीमें डालकर, आगपर चढ़ाकर पकाओ । आग इतनी तेज लगाओ कि, घी जल उठे । जब घी सब सूख जाय, भस्मको निकाल लो । यह भस्म सब रोगोंपर देने योग्य है ।



## श्वेत अभ्रक बनाने की विधि ।

सफेद अभ्रकको पहले “गोमूत्र” द्वारा शुद्ध कर लो । फिर उसमेंसे १२ तोले सफेद अभ्रक लेकर, आगमें तपाओ और सात बार “थूहरके दूध”में बुझाओ । फिर सातबार “आकके दूध”में बुझाओ । फिर सात बार “बड़के दूधमें बुझाओ ।

इसके बाद, उस अभ्रकको चालीस दिन “सिरके”में भिगो रखो । फिर ४१ वें दिन निकालकर खरल करो और महीन चूर्ण करलो ।

अब अभ्रकके चूर्णमें “शुद्ध पारा ६ माशे और वबूलके फूल १ तोले” खरल करके, उसके बड़े बना लो ।

अब उन बड़ोंको सिरकेमें डालकर, खरलमें हर दिन एक बार घोटो । इस तरह तीन दिन घुटनेपर, जब वह गाढ़ा हो जावे, उसकी छोटी-छोटी टिकियाँ बनाकर धूपमें सुखा लो ।

शेषमें, उन टिकियोंको सिरकेमें खरल करके, तीन पुट दो; यानी तीन बार अलग-अलग खरल करके तीन पुट दो । अब श्वेत अभ्रक तैयार हो जावेगी ।

इसको “अमृतीकरण करके रख दो । इसमेंसे १ रत्ती, हर सवेरे खानेसे अन्धा भी सूझता हो जाता है ।

## अभ्रककी द्रुति या अभ्रकका द्रावण ।

( अभ्रकको पानीसा पतला करना )

शुद्ध अभ्रकका सत्त्व और कालानोन दोनों बराबर-बराबर लेकर, हत्ताजोड़ीके रसमें खरल करो । पीछे उसे सराई रख कर पुट दो । इस तरह बारम्बार पुट देनेसे अभ्रक द्रवीभूत हो जायगा; पानीसा पतला हो जायगा ।

और विधि ।

अभ्रकके चूर्णको “अगस्तके रस” में खरल करके, सूरन या जमीकन्दके बीचमें रखकर, उसे वहाँ १ महीने तक गाढ़े रहो, जहाँ कि गाय बाँधी जाती हो । महीने-भर बाद, पारं-जैसा पतला पदार्थ मिलेगा ।



खुलासा ।

धान्याभ्रकको पहले “अगस्तके रस”में खरल करो । फिर उसे “सूरन”के बीचमें रख कर, ऊपरसे मिट्टी लहेसकर, ऐसी जमीनमें जहाँ पशु रहते हों, एक हाथ गहरा-लम्बा-चौड़ा खड्डा खोदकर, उसे रखदो और ऊपरसे मिट्टी जमा दो । एक महीने तक मत देखो । अगर भाग्य अच्छा होगा, तो महीने भर बाद पारे-जैसा पदार्थ मिलेगा ।

उत्तम अभ्रक-भस्मकी पहचान ।

जो अभ्रक-भस्म काजल-जैसी चिकनी और महीन तथा निश्चन्द्र हो, यानी उसमें चमक न हो, वह अमृतके समान है । अगर सचन्द्र हो, यानी उसमें चमक हो, तो वह विषकी तरह प्राणनाशक और रोग पैदा करनेवाली है ।

अभ्रकसे रोग-नाश ।

ऊपरकी विधियोंसे तैयार की हुई अभ्रक-भस्म उत्तम होती है । अभ्रक-भस्मके अलग-अलग अनुपानों के साथ सेवन करनेसे समस्त रोग नाश होते और अकाल मृत्यु दूर होती तथा बाल काले हो जाते हैं । अभ्रक-भस्म जैसे अनुपानोंके साथ दी जाती है, वैसे ही रोग नाश करती है । शास्त्रमें लिखा है :—

अभ्रं कषायं मधुरं सुशीतमायुष्करं धातु विवर्द्धनं च ।  
हन्यात्त्रिदोषं ब्रणमेहकुण्ठं प्लीहोदरं ग्रन्थिविषं कृमींश्च ॥  
रोगान्हन्यात् दृढयति अपुर्वीर्यवृद्धिं विधत्ते ।  
तारुण्याढ्यं रमयति शत योषितां नित्यमेव ॥  
दीर्घायुष्कान् जनयति सुतान् सिंहतुल्यप्रभावान् ।  
मृत्योर्भीति हरति सुतरां सेव्यमानं मृताभ्रम् ॥

“अभ्रक-भस्म कषैली, मीठी, सुशीतल, उम्र बढ़ानेवाली, धातु बढ़ानेवाली, त्रिदोष, फोड़े, प्रमेह, तिल्ली, मांसकी गांठ, विष और



कीड़े—इनको नाश करनेवाली, शरीरको पुष्ट करनेवाली और इतना वीर्य बढ़ानेवाली है, कि १०० स्त्रियोंको नित्य भोगनेकी सामर्थ्य हो जाती है। इसके सेवनसे सिंहके समान प्रभावान और दीर्घायु पुत्र होते हैं एवं मृत्युका भय नहीं रहता। इस अमृत रूपी अभ्रकके, लगातार कितने ही बरसों तक, सेवन करनेसे ये फल हो सकते होंगे। हाँ अभ्रक-भस्म अनेक रोग नाश करती है, इसमें जरा भी शक नहीं।

नोट—१००० आँचकी अभ्रक-भस्मसे जो लाभ होते हैं, सौ आँचवालीसे नहीं होते। फिर भी १०० आँचवाली या १० आँचवालीसे उपरोक्त रोग और अनेक रोग नाश हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं। वह सन्निपात रोगी जो खतम हो गया है, जिसका गला रुक गया है, जो बोल नहीं सकता, उसे यदि १००० आँचकी अभ्रककी मात्रा दीजाय, तो एक बार बोलेगा और जरूरी बातें बता देगा। हमने अभ्रक-भस्म बनाने की विधि बहुत ही अच्छी तरह समझा-समझाकर लिख दी है।

सावधानी—इसकी मात्रा एक रत्तीसे चार रत्ती तक है। रोगीकी उम्र, बलाबल, ऋतु और देश प्रभृतिका विचार करके मात्रा और अनुपान देना चाहिये। ४ रत्तीसे ज़ियादा मात्रा किसीको भी न देनी चाहिये। अनुपान हमने लिख दिये हैं। अब रही तोलकी बात सो देने या लेनेवाले बलाबल, काल और देश आदिका विचार करके अनुपानकी तोल मुकर्रर कर सकते हैं।

## अभ्रक सेवनके लिये अनुपान और मात्रा ।

मात्रा—अभ्रक-भस्मकी मात्रा एकसे चार रत्ती तक है।

वाजीकरण ।

( १ ) सेमलकी मूसलीके चूर्ण, भाँगके चूर्ण, चीनी और शहदके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( २ ) असगन्ध, शतावर, सेमलकी मूसली, चीतेकी जड़, सफेद मूसली, तालमखानेके बीज, बिदारीकन्द, कौंचके बीज और कमलकन्द—सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर जितना यह चूर्ण हो, उतनी ही निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म मिला दो। इस मिली हुई



दवाकी उचित मात्रा, मिश्री और दूधके साथ, सेवन करनेसे बेहद बल, वीर्य और रति-शक्ति बढ़ती है ।

क्षय ।

( १ ) सुवर्ण भस्मके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( २ ) त्रिकुटा, त्रिफला, दालचीनी, तेजपात, बड़ी इलायची, नाग-केशर, मिश्री और मधुके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( ३ ) बंसलोचन, इलायची और सत्त गिलोय वगैरहके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो । बवासीर, पित्त और खूनविकारके रोगोंमें भी यह अनुपान ठीक है ।

प्रमेह ।

( १ ) हल्दीके चूर्ण और शहदके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( २ ) गिलोयके सत्त और मिश्रीके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( ३ ) शुद्ध शिलाजीत, पीपरके चूर्ण और सोनामक्खीकी भस्मके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( ४ ) हल्दी और त्रिफलेके चूर्णके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करो ।

( ५ ) इलायची, गोखरू, भुई आमले, मिश्री और शहदके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करनेसे प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र, दोनों जाते हैं ।

मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और पथरी ।

( १ ) जवाखार प्रभृति दारोंके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और पथरी रोग नाश होते हैं ।

हृदय रोग ।

हज्जारपुटी अभ्रक-भस्मको अर्जुन वृक्षकी छालके चूर्णके साथ—अर्जुनकी छालके काढ़ेमें सात बार भावना देकर सेवन करनेसे हृदय-रोग जाता रहता है ।



## बवासीर ।

( १ ) शुद्ध भिलावोंके चूर्णके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करनेसे बवासीर जाती है ।

( २ ) त्रिफला, दालचीनी, बड़ी इलायची; तेजपात, नागकेशर, चीनी और शहदके साथ अभ्रक-भस्म सेवन करनेसे बवासीर रोग नाश हो जाता है ।

संग्रहणी, आमामशय, पेटके रोग, श्वास, खाँसी, पेटके कीड़े,

अरुचि और मन्दाग्निमें ।

( १ ) त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग, गायका घी और शहदके साथ अभ्रक भस्म सेवन करनेसे उपरोक्त संग्रहणी, मन्दाग्नि और उदर रोग आदि रोग नाश होते हैं ।

नोट—और रोगोंके अनुपान हमने नीचे लिखे हैं ।

अभ्रक सेवनके लिये और अनुपान और मात्रा ।

## दूसरा दंग

मात्रा—अभ्रक-भस्मकी मात्रा जवानके लिए साधारणतया दो रत्तीकी है । बलवानको चार रत्तीकी मात्रा है । कमजोरको एक रत्तीकी मात्रा है ।

## अनुपान—

( १ ) धातुवृद्धिके लिए लौंग और शहदके साथ “अभ्रक” खाओ ।

( २ ) धातु-स्तम्भनको भाँगके साथ “अभ्रक” खाओ ।

( ३ ) धातु-पुष्टिके लिए शहद और घी या त्रिफलाके चूर्णके साथ खाओ ।

( ४ ) धातु बढ़ानेको सोने और चाँदीके वर्कमें, पानके साथ, अथवा केवल चाँदीके वर्कमें ।

( ५ ) वीर्य बढ़ानेको बायबिड़ङ्ग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णमें ।

( ६ ) प्रमेह नाशार्थ—गिलोय और मिश्रीके साथ ।



( ७ ) सर्वप्रमेह नाशार्थ—शहद, पीपर और शिलाजीतमें ।

( ८ ) प्रमेहमें इलायची, गोखरू, भुई-आमले, मिश्री और गायके दूधमें ।

( ९ ) प्रमेहमें बायबिडङ्ग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णके साथ ।

( १० ) क्षय रोगमें सोनेके वर्कमें ।

( ११ ) रक्तपित्तमें इलायची और मिश्रीके साथ या छोटी हरड़ और गुड़में ।

( १२ ) मूत्रकृच्छ्रमें इलायची, गोखरू, भुई आमले, मिश्री और गायके दूधमें ।

( १३ ) नेत्ररोगमें त्रिफलेके चूर्ण या घी और शहदमें ।

( १४ ) बवासीर में शुद्ध भिलावोंके साथ ।

( १५ ) पाण्डुरोगमें बायबिडङ्ग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णमें ।

( १६ ) पाण्डु रोगमें, त्रिफला, त्रिकुटा, चतुर्जात, मिश्री और शहदमें ।

( १७ ) बवासीरमें त्रिकुटा, त्रिफला, चतुर्जात, मिश्री और शहदमें ।

( १८ ) क्षयमें त्रिकुटा, त्रिफला, चतुर्जात, मिश्री और शहदमें ।

( १९ ) क्षयमें बायबिडङ्ग, सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णमें ।

( २० ) जीर्णज्वरमें शहद और पीपरके साथ ।

( २१ ) वायुरोगमें सोंठ, पोहकरमूल, भारंगीकी जड़, असगन्ध और मधुमें ।

( २२ ) कफके रोगोंमें, कायफल, पीपर और मधुमें ।

( २३ ) पित्तके रोगोंमें गायके दूध और मिश्रीमें ।

( २४ ) जठराग्नि तेज करनेको सब दारोंके साथ ।

( २५ ) मूत्रकृच्छ्र या मूत्राघातमें सब दारोंके साथ ।



- ( २३ ) संग्रहणीमें त्रायविडंग, सोंठ, मिर्च और पीपलके चूर्णमें ।
- ( २७ ) शूलमें                   "                   "                   "
- ( २८ ) आगमें                   "                   "                   "
- ( २९ ) कोढ़में                   "                   "                   "
- ( ३० ) श्वासमें                   "                   "                   "
- ( ३१ ) खाँसीमें                   "                   "                   "
- ( ३२ ) अरुचिमें                   "                   "                   "
- ( ३३ ) मन्दाग्निमें                   "                   "                   "
- ( ३४ ) समस्त उदर रोगोंमें                   "                   "                   "
- ( ३५ ) बुद्धि बढ़ानेको                   "                   "                   "
- ( ३६ ) प्रमेहमें शहद और पीपलके चूर्णके साथ खाओ ।
- ( ३७ ) श्वासमें                   "                   "                   "
- ( ३८ ) विषरोगमें                   "                   "                   "
- ( ३९ ) कोढ़में                   "                   "                   "
- ( ४० ) वायु-रोगोंमें                   "                   "                   "
- ( ४१ ) पित्तके रोगोंमें                   "                   "                   "
- ( ४२ ) कफके रोगोंमें                   "                   "                   "
- ( ४३ ) कफक्षयमें                   "                   "                   "
- ( ४४ ) संग्रहणीमें                   "                   "                   "
- ( ४५ ) पाण्डुरोगमें                   "                   "                   "
- ( ४६ ) भ्रममें                   "                   "                   "
- ( ४७ ) वीर्य और उन्न बढ़ानेको—लौंगोंके चूर्ण और मधुके साथ ।
- ( ४८ ) रक्त-विकारमें घीके साथ ।
- ( ४९ ) पाँचों प्रकारके श्वासोंमें घीके साथ ।
- ( ५० ) क्षयमें घीके साथ ।
- ( ५१ ) १३ सन्निपातोंमें अदरकके रस और पीपलके चूर्णके साथ ।
- ( ५२ ) माहेश्वर ज्वरमें पीपल और शहदमें ।



( ५३ ) विषम ज्वर, हड्डीके पुराने ज्वर और दाह ज्वरमें पीपल, बड़ी इलायची और शहदमें ।

( ५४ ) वात ज्वरमें मिश्री और पीपलके साथ ।

( ५५ ) वातरोग, कफरोग, मुखशोष, जड़ता और अरुचिमें मातलिङ्गी के बीज, केशर, सेंधानोन और गोलमिर्चमें ।

( ५६ ) पित्तज्वरमें धनिया, छोटी इलायची और मिश्रीमें ।

( ५७ ) कफ ज्वरमें अदरक, गोलमिर्च और शहद में ।

( ५८ ) सब तरहके ज्वरोंमें तुलसीके पत्तोंके रस और पीपलके चूर्णमें ।

( ५९ ) चौथैया ज्वरमें गायके दूध और त्रिफलाके चूर्णके साथ ।

( ६० ) सर्वज्वरोंमें पीपर, सोंठ और गदहपूर्णाकी जड़के साथ ।

( ६१ ) आठों उदर रोगोंमें सोंठ और गदहपूर्णाकी जड़के साथ ।

( ६२ ) अतिसारोंमें राल और मिश्रीके साथ ।

( ६३ ) अतिसारोंमें बड़के अंकुरोंके साथ ।

( ६४ ) रक्तातिसारमें बकरीके औंटाये हुए दूधमें शीतल होने पर शहद मिलाकर ।

( ६५ ) सर्वातिसारमें अनारदाने और शहदके साथ ।

( ६६ ) आम्रातिसारमें सोंठ और घीके साथ ।

( ६७ ) सोजाक, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें गन्दे-विरोजेका सत्त, छोटी इलायची और मिश्री प्रत्येक तीन-तीन तोले एवं शुद्ध कपूर ६ माशे—इन सबके चूर्णमेंसे ६ माशे चूर्ण लेकर, उसमें २ रत्ती “अभ्रक-भस्म” मिला लो और खाओ । इस तरह सोजाक, मूत्रकृच्छ्र, कड़क-जलन और पेशाबमें खून गिरना,—ये सब नाश हो जाते हैं ।

( ६८ ) खूनी बवासीरमें बड़ी गोदनदूधी, बड़ी इलायची और गोल-मिर्चको पानीमें पीस-छानकर दो रत्ती “अभ्रक-भस्म” मिलाकर पीओ ।

( ६९ ) दस्तोंमें , ,

( ७० ) कलेजेकी गरमीमें , ,



( ७१ ) कलेजेकी जलन, प्यास और पेशाबकी जलनमें पीपलके पेड़की छाल और गोलमिर्चको पीसकर जलमें छान लो और “अभ्रक-भस्म” दो रत्ती मिलाकर पीओ ।

( ७२ ) बिच्छू प्रभृतिके विषमें भाँगे चूर्ण और धीमें मिल कर खासकर गोमूत्र द्वारा बनाई अभ्रक ❀ खाओ ।

( ७३ ) उन्मादमें बचके चूर्णमें “अभ्रक-भस्म” मिलाकर ऊपरसे गायका दूध पीओ ।

( ७४ ) अपस्मार या मिरगीमें ,, ,, ,,

( ७५ ) वात-वेदनामें ,, ,, ,,

( ७६ ) सिर दर्दमें पुराने धीमें “अभ्रक-भस्म” मिलाकर खाओ ।

( ७७ ) उदर-पीड़ामें ,, ; ,,

( ७८ ) नेत्र-पीड़ामें ,, ,, ,,

( ७९ ) श्वास-खाँसीमें अदरखके रस, पीपलके चूर्ण और शहदमें मिलाकर “अभ्रक-भस्म” खाओ ।

( ८० ) उपदंशमें कण्टकारीकी जड़ और गोलमिर्चोंके साथ “अभ्रक” खाओ । अपथ्य—नोन । पथ्य पालन बहुत जरूरी है ।

( ८१ ) मासिक खूनका जोरसे बहना रोकनेको चौलाईकी जड़ और पीपल-वृक्षकी छालको चाँवलोंके धोवनमें पीसकर छान लो ।

❀ धन्याभ्रकको “गोमूत्र” में खरल करके सराब-सम्पुटमें बन्द करो और गजपुटमें फूँक दो । अभ्रककी भस्म तैयार हो जावेगी । अगर एक आँचमें अभ्रक भस्मकी चमक न जाय, तो उसे फिर गोमूत्रमें खरल करके गजपुटमें फूँक दो । जब तक चमकीला अंश न चला जावे, तब तक अभ्रक भस्मको काममें मत लाओ ।

अमृतीकरण-विधि—त्रिफलेका काढ़ा आध सेर, गायका धी एक पात्र और अभ्रककी भस्म सवा पाव यानी पाँच छुट्कको मिलाकर एक लोहेकी कढ़ाहीमें मन्दी आगसे पकाओ । जब काढ़ा और धी जलकर सूखा चूर्ण रह जावे, तब समझो कि काम होगया । फिर उसे कढ़ाहीसे निकाल कर खरल करो और कपड़ेमें छानकर शीशीमें रखदो ।



शहदमें मिलाकर “अभूक” चाट जाओ । ऊपरसे यही छना हुआ पानी पीओ । मास्तिक खूनका नदीकी तरह बहना बन्द हो जायगा ।

( ८२ ) समस्त प्रदर रोगोंमें ” ” ”

( ८३ ) सोम रोगमें ” ” ”



## भस्मके लिये राँगा कैसा लेना ?

बंग राँगेका दूसरा नाम है । राँगा दो तरहका होता है:—( १ ) हिरन खुरी या खुरक, और ( २ ) मिश्रक ।

दूकानदारोंके यहाँ दोनों तरहके राँगे होते हैं । हिरनखुरी पशुके से खुरके रूपमें होता है । यह नरम, चिकना और रंगमें सफेद होता है । इसको मोड़नेसे आवाज नहीं होती और गल भी जल्दी जाता है, यही इसकी पहचान है । मिश्रक राँगेके लक्षण ऐसे नहीं होते । फूँकने और दवा बनानेके लिए हिरनखुरी राँगा ही अच्छा होता है । राँगेमें बहुतसे दूषित पदार्थ मिले रहते हैं । उनसे राँगेको अलग करनेके लिए उसे शोधते हैं । शोधनेसे राँगा निर्दोष हो जाता है । अशुद्ध राँगा रोग करता है, अतः जब “बङ्ग-भस्म” बनानी हो, पहले हिरनखुरी राँगेको शोध लो ।

## राँगा शोधनेकी तरकीब ।

एक हाथ लम्बे और इतने ही चौड़े दो-तीन मनके भारी पत्थरमें एक रुपया समा जाय उतना चौड़ा छेद करालो । छेदके चारों तरफ जरा-जरा



पत्थर छिलवा कर ऐसी ढाल करा लो, कि जो पानी भी ढाला जाय तो बहकर छेदमें ही चला जाय । एक कलछा लोहेका लाओ, जिसमें १ सेर पानी तक भर जाय । उस कलछेकी डण्डी तीन हाथ लम्बी हो । उस डण्डीके बीचमें लकड़ीका या बाँसका बेंटा लगवा लो । क्योंकि राँगा गलाते समय कलछा तपने लगेगा । कलछेको हाथमें लेनेसे हाथ जलेंगे । अगर समयपर, कलछेमें लकड़ीका बेंटा न हो, तो कपड़े लपेट लो । चूल्हा या अँगोठी ऐसी रखो, जिसमें तेज आग रहे । पत्थरके कोयलोंका चूल्हा या अँगोठी इस कामको ठीक होती है । ऐसा चूल्हा सब काम देता है । हिरनखुरी राँगा, कलछा, छेदवाला पत्थर, चीनी का गहरा टीनपाट और चूल्हा—इनकी राँगा शोधनेके समय जरूरत होती है । उनके सिवा, जिन चीजोंमें राँगा शोधा जाता है, उनकी दरकार होती है । उनके नाम ये हैं—

- ( १ ) सरसोंका तेल, ( २ ) माठा, ( ३ ) काँजी,  
 ( ४ ) गोमूत्र, ( ५ ) कुल्थीका काढ़ा, ( ६ ) हल्दीका काढ़ा  
 ( ७ ) आक या मदारका दूध ।

अब रही यह बात, कि ये कितने-कितने रखने चाहियें, यह बात बताना कठिन है । यह राँगेके वजनपर मुनहसिर है । जितनेमें गला हुआ राँगा डूब जाय, उतने ही तेल माठे आदि लेने चाहिएँ । एक पाव राँगे को ये सब आध-आध सेर काफी होंगे ।

### शोधन आरम्भ ।

राँगेको कलछे में रखकर, जलते चूल्हेपर रख दो । उसकी डण्डीको, जहाँ बेंटा या कपड़ा है वहाँसे, पकड़ लो या उसे किसी ऐसी चीजपर रख दो, जो चूल्हेके समान ऊँची हो और जिसपर रखनेसे राँगा कलछेसे गिर न जाय । थोड़ी देरमें राँगा गल जायगा । उसपर मलाई सी आवेगी । उसे कौंचेसे हटा-हटाकर किनारे कर दो और निकालकर अलग रख दो । जब राँगा पानीसा हो जाय, चीनीके टीनपाट



पर वही पत्थर इस तरह रख दो, कि छेद टीनपाटके बीचमें रहे । टीनपाटमें तेल भर दो । कलछेको पकड़कर, धीरेसे राँगेको उस छेदमें डाल दो । इसके बाद पत्थरको हटाकर, राँगेको निकालकर, फिर कलछे में रखो और पहलेकी तरह आगपर रखकर गलाओ । जब गल जाय, फिर कलछा पकड़कर, राँगेको उसी तेलके टीनपाटमें डाल दो । हर बार राँगा निकालकर, टीनपाटपर पत्थर पहले ही रख दो । फिर टीनपाटमें से राँगेको निकालकर, कलछे में रखकर गलाओ । जब पानी हो जाय, उसी तरह तेलसे भरे टीनपाटमें—पत्थरके छेदमें होकर—राँगेको तेलमें छोड़ दो । जब इस तरह ३ बार “कड़वे तेल” में राँगेको बुझा चुको, तब इसी तरह राँगेको गला-गलाकर तीन-तीन बार माछे, काँजी, गोमूत्र, कुल्थी-काथ, हल्दीके काढ़े और आकके दूधमें बुझाओ । २१ बार गलाकर, इनमें तीन-तीन बार बुझानेसे राँगा शुद्ध हो जायगा । यही शुद्ध राँगा-भस्म बनाने लायक होगा ।

नोट (१)—राँगा पिघलाकर तेल, माछा इत्यादिमें डालनेसे ऊपर उछलता है; इसीसे छेददार भारी पत्थर बर्तनपर रखते हैं । पत्थरके छेदमें होकर डालनेसे शोधनेवालेके शरीरको तकलीफ नहीं हो सकती । अगर पत्थर न रखा जाय, तो शोधकके आँख-नाकको राँगा नष्ट कर सकता है । तेलके सिवा सबमें पत्थरकी दरकार है, क्योंकि राँगा सबमें उछलता है, जिसमें भी गोमूत्र, काँजी और कुल्थीके काढ़ेमें तो बहुत ही उछलता है । भट-भटका शब्द हरबार करता है । इस तरह पत्थर रखकर बुझानेसे ज़रा भी भय न हो, सो बात नहीं है । अगर राँगा पाव आध पाव गलाया जाता है, तब तो उतना डर नहीं होता, मन भरके पत्थरको भी वह ऊँचा उठाता है, पर ज़ियादा नहीं उठा सकता । अगर सेर या दो सेर राँगा गलाया जाता है, तब तो वह दो मनके पत्थरको भी बाज़-बाज़ औकात हाथ भर ऊँचा उठा देता है । पत्थरके ऊँचा उठते ही, टीनपाट और पत्थर के बीचमें रास्ता पाते ही, वह नीचेसे चारों तरफ तीरकी तरह भागता है । आदमीके

\* आकका दूध बड़ी मुश्किलसे हाथ आता है । अगर आकका दूध न मिले तो आकके पत्तोंके स्वरससे काम ले सकते हो । पत्तोंको पीसकर कपड़ेमें होकर स्वरस निचोड़ लो ।



लग जाता है, तो घाव कर देता है । अगर राँगा डालनेका कलछा पत्थरके छेदपर फौरन ही उलट नहीं दिया जाता तो वह पत्थरके छेदमें होकर फव्वारेके पानीकी तरह ऊँचा उठता और दस-दस हाथ दूरकी दीवारोंमें जा लगता है । इसलिए अगर राँगा सेर दो सेर गलाना हो तो पत्थर तीन मनका भारी लेना चाहिये । पत्थर और टीनपाटके चारों तरफ कपड़ा लगा देना चाहिये । अगर पत्थरके उठनेसे राँगा भागेगा भी, तो कपड़ेमें रह जायगा; दूर-दूर तक जाकर मिट्टीमें नहीं मिलेगा और शोधने वालेके पैरोंको चोट न लगावेगा । इसके सिवा कलछेको पत्थरके छेदपर ले जाते ही इस तरह फुरतीसे उलट देना चाहिये कि राँगा छेदमें झोकर निकलना चाहे तो कलछेको अपनी राहमें पाकर, उसीसे टकरावे और फिर नीचे जा गिरे । राँगेके शोधनेमें बड़ा खतरा रहता है, पर होशियारीसे काम करनेपर कोई डर नहीं रहता ।

गत वैशाखमें, हमारा एक नोकर राँगा शोध रहा था । उसने माठेमें बुझाया हुआ राँगा टीनपाटसे निकालकर, फिर गलानेको कलछेमें रखा । आग तेज थी, राँगा गलने लग गया । उसने माठेमेंसे ज़रासा रहा हुआ राँगेका चूरा और निकालकर उसी कलछेमें डाल दिया । उस गले हुए राँगेपर उस पानी या माठा मिले हुए राँगेके गिरते ही, सारा राँगा उछला और उसके कुरते, टोपी सुहपर राँगेके हज़ारों कण हो गये, क्योंकि वह कलछेके ऊपर सिर करके उसमें और राँगा डालता था । भगवानने ख़ैर की, उसके आँख, नाक वग़ैरः अंग बच गये । मतलब यह कि गलते या गले हुए राँगेमें शीतल जलकी बूँद भूलकर भी न गिरे, पिघला हुआ राँगा ठण्डा जल पाते ही चारों तरफ मेहकी बूँदोंकी तरह उछलता है । हमने सारी बातें अपने अनुभवकी समझा दी हैं । इस तरह समझाकर आजतक किसी भी ग्रन्थकारने नहीं लिखा । हमारी बातें ध्यानमें रखकर काम करना चाहिये । जिन्हें यहीं काम करना है, उन्हें डरना न चाहिये, होशियारीसे काम करना चाहिये । अगर सभी डरेंगे, तो काम कैसे होगा ?

नोट ( २ )—कोई राँगेको गला-गलाकर त्रिफलेके काढ़े, तेल, काँजी, माठा, गोमूत्र और आकके दूधमें सात-सात बार बुझाते हैं । अगर कहीं कुलथी प्रभृति कोई चीज़ न मिले, तो इस तरह भी राँगा शोधा जा सकता है । कोई भेद नहीं है । हमने ऊपरकी विधिसे बहुत बार शोधा है; इसीसे वह विधि पहले लिखी है ।



## बिना शोधे राँगेके दोष ।

बिना शोधा हुआ राँगा फूँककर खाया जाय, तो आक्षेपकवात, कम्पवात, गुल्म, किलासकोढ़, शूल—दर्द, वात सम्बन्धी सूजन, पाण्डु, प्रमेह, भगन्दर, विषके जैसे भयंकर खून-विकारके रोग, क्षय, मूत्रकृच्छ्र, कफज्वर, पथरी, विद्रधि और फोतोंके रोग पैदा करता है । बिना शोधा हुआ “शीशा” भी यही सब रोग करता है ।

“रसायन सार”—कर्त्ता स्वर्गवासी पं० श्यामसुन्दर आचार्य वैश्य महोदय लिखते हैं:—

शुद्धेहीनं मृतेहीनं बंगं यः सेवते नरः ।

पाण्डुमेहाऽपचीगुल्मोऽनिलरक्तादिमान्भवेत् ॥

जिस बंगका शोधन और मारण अच्छी तरह नहीं किया जाता, वह बंगभस्म पाण्डुरोग, प्रमेह, अपची रोग, गोला और वात-रक्त आदि अनेक रोग करती है ।

अशुद्ध बङ्ग-भस्मके विकारोंकी शान्तिका उपाय ।

अगर कोई गलतीसे अशुद्ध या कच्ची बंग खाले और ऊपरके रोग हो जायँ, तो उसे तीन दिन तक “मिश्रीके साथ मेढ़ासिंगी” खानी चाहिये । इस नुसखेसे खराब बंगके दोष नष्ट हो जायँगे ।

बङ्ग-भस्मके गुण ।

बंगं लघु सरं रुक्षं कुष्ठम मेह कफ कृमीन् ।

निहन्ति पाण्डु सश्वासं नेत्रमीषत्तु पित्तलम् ॥

सिंहो गजौघं तु यथा निहन्ति तथैव बंगो अखिल मेहवर्गम् ।  
देहस्प-सौख्यं प्रबलेन्द्रियत्वं नरस्य पुष्टिं विदधाति नूनम् ॥

बंगभस्म—हल्की, दस्तावर, रूखी, आँखोंको हितकारी, किसी क्रूर पित्तकारक एवं कोढ़, प्रमेह, कफ, कीड़े, पीलिया और श्वासको नाश करनेवाली है । सिंह जिस तरह हाथियोंके मुण्ड को मार



भगाता है, बंग उसी तरह समस्त प्रमेहोंको मार भगाती है । बंग देहमें सुख करती, इन्द्रियोंको बलवान् करती और निश्चय ही पुष्टि करती है ।

## राँगा मारने की तरकीब ।

### पहली विधि ।

( १ ) शोधा हुआ राँगा आध पाव लेकर, एक मिट्टीके ठीकरे या खपरे पर रखकर तेज आगसे चूल्हेपर गलाओ । जब गल जाय, दो तोला “कलमीशोरा” पिसा हुआ, उस गले हुए राँगे पर डालकर, छुरी या कलछीसे चलाओ । जब राँगा और शोरा दोनों मिलकर कीच-जैसे हो जाँय, तब दो तोला कलमीशोरा फिर डाल दो और छुरीसे चलाते रहो । छुरी या कलछीसे रगड़ना बन्द मत करो । जब फिर शोरा और राँगा मिलकर कीचसे हो जायँ; फिर २ तोला शोरा डाल दो और रगड़ो । इस तरह ६ दफा, दो-दो तोले कलमीशोरा डालो और रगड़ो । जब छठी बार शोरा डालनेपर राँगा और शोरा फिर कीचसे हो जायँ और शोरा मत डालो । उस समय चूल्हेमें खूब लकड़ी लगाकर, आगको तेज कर दो । जब ठीकरेपर आग जल उठे, जिस तरह कभी-कभी कढ़ाही या तवेपर घी जल उठता है, तब जरा देखते रहो । ज्योंही ठीकरेके ऊपरकी आग जलकर बुझ जाय, आप ठीकरेको आगसे नीचे उतार लो ।

ठीकरेको नीचे उतारनेपर आप देखेंगे, कि राँगा ठीकरेमें चिपट गया है । उसे आप छुरी या चाकूमे खुरच-खुरचकर एक प्यालेमें रखते जाओ । जब सब राँगा खुरच लो, उसे सिलपर डालकर महीन पीसो । पीछे एक बड़े प्यालेमें पानी भरकर, उसीमें पीसे हुए राख-जैसे राँगेको घोल दो और एक घण्टे-भर मत छेड़ो । सारा राँगा नीचे बैठ जायगा । तब आप ऊपरके पानी और मलाई सीको नितार कर फैक दो, पर राँगा न जाने पावे । इसलिये अच्छा हो,



आप प्यालेका पानी एक थालीमें नितारो । अगर राँगा चला भी जायगा, तो आप फिर उठा ले सकेंगे । जब एक बार प्याले का पानी फेंक दो, तब फिर प्यालेमें पानी भरकर घोल दो । कुछ देर होने पर जब राँगा नीचे बैठ जाय, फिर पानी निकाल दो । तीसरी बार फिर प्यालेमें पानी भरकर घोल दो और कुछ देर बाद पानी निकाल दो । इस बार प्यालेमें आपको राँगेकी सफ़ेद भस्म मिलेगी, उसे आप एक थालीमें फैलाकर धूपमें सुखा लो । अब यह राँगा फूँकने लायक होगा ।

नोट—कलछीसे चलानेपर राँगा कलछीसे चिपट जाता है, यह ठीक नहीं । इसलिये छुरीसे चलाना और रगड़ना ठीक होगा । अगर हिमामदस्तेकी मूसलीके पेंदे-जैसी कोई हलकी, पर नीचेसे रुपयेसे जरा अधिक चौड़ी चीज़ बनवाली जाय और उसीसे शोरा डालकर राँगा रगड़ा जाय, तो सुभीता होगा । छठी बार शोरा डालनेके बाद, आग तेज़ करनेसे आग लगती है और उसका ठीकरेपर लगना ज़रूरी है । अगर आग न लगे, तो आप जलती लकड़ी ज़रा शोरेको दिखा दें, फौरन आग लग उठेगी और राँगेकी सफ़ेद खिलसी ठीकरे पर जम जायेंगी ।

### मरे हुए राँगेको फूँकने की तरकीब ।

यह मरा हुआ राँगा जितना तोलमें हो, उतनी ही शुद्ध तपकी हरताल लो । फिर दोनोंको खरलमें डालकर, कागज़ी नीबुओंका रस दे-देकर, तीन घण्टों तक लगातार खरल करो । जब कुछ खुश्क हो जाय, तब एक गोला बनाकर, उसे एक बड़ी सी मिट्टीकी सराईमें रखो । ऊपरसे दूसरी सराई रखकर सन्ध मिला दो । इसके बाद उन सराइयों पर चार-पाँच बार कपड़-मिट्टी करो और सराइयोंको सुखा दो ।

गजभर गहरा, गजभर लम्बा और उतना ही चौड़ा गड्ढा खमीनमें खोदो । उसमें तीन भाग आरने कण्डे भरकर, उन पर ऊपर की सूखी हुई सराइयाँ अथवा सराब-सम्पुट रख दो । फिर कण्डे ऊपर तक भर दो और आग लगा दो । जब-स्वाँग शीतल हो जाय; यानी आग



ठण्डी पड़ जाय, तब सराइयोंको निकाल लो और जोड़ तथा कपरौटी खोलकर, भस्मको निकाल लो ।

इस एकबार फूँकी हुई राँगा भस्मको खरलमें डालकर, ऊपरसे इसका दसवाँ भाग शुद्ध तपकी हरताल डाल कर, पहलेकी तरह, नीबुओं का रस डाल-डालकर घोटो। घुट जाने पर, गोला बना लो और सराइयों में रख, कपड़-मिट्टी कर सुखा लो । सूखने पर पहलेकी तरह गड्ढेमें कण्डे भर कर, बीचमें सराई रखकर आग लगा दो । आग ठण्डी पड़ने पर, सराई निकाल कर खोल लो और राँगा भस्म निकाल लो ।

अब तीसरी बार भी ऊपरकी तरह राँगेका दशवाँ भाग शुद्ध तपकी हरताल लेकर, दोनोंको खरलमें नीबुओंके रसके साथ खरल करो । फिर गोलासा बना, सराईमें रख, कपरौटी कर सुखालो और उसी गड्ढेमें आरने कण्डे भर बीचमें सराई रख आग लगा दो ।

चौथी बार बंग भस्मको निकाल कर, फिर दशवाँ भाग हरताल डालकर नीबूके रससे घोटो और सराईमें रख, बन्द कर, उसी तरह कण्डे भरकर फूँक दो । यह चार आग होगईं । आप इसी तरह छै बार और करें । हरबार दसवाँ भाग हरताल मिलावें । केवल पहली बार राँगेके वजनके बराबर हरताल डाली जाती है । दूसरी बारसे राँगेके वजनका दसवाँ भाग हरताल डाली जाती है । इस तरह दस बार हरतालके साथ मरे हुए राँगेको नीबूके रसमें घोट-घोट कर, सराईमें रख-रख कर, उसी तरहके गड्ढेमें दस बार फूँकने से निरुत्थ भस्म हो जायगी, यानी वह “मित्र पञ्चक” से भी न ज़ीयेगी । निरुत्थ भस्म ही खाने योग्य होती है । कच्ची भस्म भयानक रोग करती है ।

### बंग भस्मकी परीक्षा ।

धातुके कच्चे पक्केपनकी परीक्षा “मित्र पञ्चक” से होती है । धी, शहद-सुहागा, चिरमिटी और गूगल—इन पाँचोंको “मित्रपञ्चक”



कहते हैं। जिस तैयार की हुई धातु-भस्मकी परीक्षा करनी हो, उसमें से कुछ लेकर, उसके बराबर ही तोलमें घी, शहद, सुहागा प्रभृति पाँचों लेलो। सबको एकमें मिलाकर, एक मूष या कलछीमें रख लो और कोयलोंकी तेज आगपर रख कर आग लगाओ। अगर आपकी बनाई भस्म कच्ची होगी, निरुत्थ न होगी, तो इस तरह करनेसे जी उठेगी; यानी फिर उसी रूपमें परिणत हो जायगी। जैसे—राँगा भस्म को मित्र पञ्चकके साथ मिलाकर, मूष या कलछीमें रखकर, नीचेसे आग दो। यदि राँगा भस्म कच्ची होगी तो उस राँगा-भस्मका फिर राँगा हो जायगा।

**कच्ची भस्मको फिर भस्म करनेकी विधि ।**

अगर आपकी बनाई हुई भस्म निरुत्थ न हो—कच्ची हो, तो निराश मत हो। आप सारी भस्मके बराबर शोधी हुई “आमलासार-गन्धक” उसमें मिलाकर खरलमें डालो और “घोग्वारका रस” ऊपरसे डाल-डालकर १२ घण्टे तक खरल करो। जब गोला बनाने योग्य हो जाय; उसका गोला बनाकर, उसे ऊपरकी तरकीबसे सराईमें रख दूसरी सराई उसपर ओंधी मार, चार कपरौटी करके सुखा लो। फिर उसे उसी गज-भर गहरे-लम्बे-चौड़े गड्ढेमें, आरने कण्डोंके बीचमें रख आग लगा दो। आग शीतल होने पर निकाल लो। इस बार निरुत्थ भस्म मिलेगी।

अगर फिर परीक्षा करनी हो, तो भस्मके बराबर “मित्र पञ्चक” फिर मिलाकर, कलछीमें रखकर, आगपर गलाओ। मित्र पञ्चक जल जायेंगे—नाम भी न रहेगा, जितनी भस्म ली थी, वही भस्मके रूपमें रह जायगी। उसमें ढलियाँ न होंगी। ऐसी भस्म बेखटके खाने लायक है।

**इस बंग भस्मके सेवन करने की विधि ।**

इस बंग भस्मका रङ्ग भूरा होता है। इसकी मात्रा ४ चाँबलसे, ३ रत्ती तक, सलोचन, छोट्टी इलायची, अबीध मोती और चाँदीके



वर्कोंके साथ शहदमें एकमात्रा वज्रभस्म मिलाकर खानेसे प्रमेह नाश होकर खूब धातु-पुष्टि होती है ।

नोट—वज्र भस्म और मोतियोंको बढ़िया गुलाब-जलमें पहले तीन दिन तक खरल करना चाहिये । तब बंसलोचन आदिको हर मात्रामें मिलाकर शहदके साथ चाटकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गायका दूध पीना चाहिये । अगर इतना न हो सके, तो वज्रकी एक मात्रा शहदमें मिलाकर, चाट जानी चाहिये और गायका दूध मिश्री मिलाकर ऊपरसे पीना चाहिये । १ मात्रामें हरेक चीज ११ या २१ रत्ती लो ।

## बंग भस्मकी और तरकीबें ।

( दूसरी तरकीब )

( २ ) पहले पत्थरके कोयलों या लकड़ीका चूल्हा जलाओ । उस पर लोहेकी औंड़ी-गहरी कढ़ाही रखो । उसमें शोधा हुआ राँग डालदो । जब राँग गल कर पानीसा पतला हो जाय, उसपर राँगका चौथाई अपामार्ग या चिरचिरेका बारीक चूर्ण डालो और आमकी लकड़ीके मोटे ढण्डेसे घोटो । घुटाई राँगेपर होनी चाहिये । चिरचिरेका चूर्ण एक साथ मत डालना, थोड़ा-थोड़ा मुट्ठी भर-भरके डालना और घुटाई करते रहना । जब तक राँगकी भस्म न होजाय, चिरचिरा डालना और राँगको उसी ढण्डेसे घोटना बन्द मत करना । जब भस्म हो जाय, उसे बीचमें इकट्ठी करके, उसपर मिट्टीका सरावा औंधा मार दो, ताकि वज्र ढक जाय । इस समय आगको और भी तेज कर दो । जब वज्र-भस्मपर ढका हुआ सरावा आगकी तरह लाल हो जाय, छोड़ दो । जब सरावा ठण्डा हो जाय, कढ़ाहीको उतार कर भस्मको निकाल लो, यही उत्तम वज्र-भस्म है ।

इस भस्मको तैयार करनेके लिये, नीचे लिखी चीजें, तैयार रखनी चाहियें :—

( १ ) चिरचिरेका चूर्ण ।

( २ ) आमकी लकड़ीका ढण्डा ।



(३) लोहेकी साफ कढ़ाही ।

(४) अच्छी भट्टी या बड़ा चूल्हा ।

### तीसरी विधि ।

(३) शुद्ध राँगेको खपरे या मजबूत ठीकरेपर रखकर चूल्हेपर रखो और गल जानेपर, शमी वृत्त (छोंकरे) के ढण्डेसे उसे घोटो, बङ्ग-भस्म बन जायगी ।

### चौथी विधि ।

(४) शोधे हुए राँगेको गलाकर थालीमें फैला दो; इस तरह पतले-पतले पत्तर हो जायेंगे। एक सरावेमें दो-दो अंगुल पिसी हल्दी फैलाकर बिछा दो। उसपर राँगेके पत्तर बिछा दो और फिर ऊपरसे पिसी हल्दीकी मोटी तह जमा दो। इस सराईको तेज आग पर रख दो; भस्म हो जायगी ।

इस भस्मको तोलो, जितनी भस्म हो उसका चौथाई भाग शोरा पीसकर इसमें मिला दो। फिर एक सराईमें इस चूर्णको रखकर, ऊपरसे दूसरी सराई रख, कपड़-मिट्टी करके सुखा लो और ८१० सेर कण्डोंकी मन्दी आगमें रखकर फूँक दो। शीतल होने पर निकाल लो। यह भस्म शङ्ख या कुन्द फूलके समान निकलेगी। यह सब रोगोंपर देने लायक है।

नोट—राँगेको गलाकर, उसके पत्तर जितने भी पतले कर सको उतना अच्छा। कागजसे पतले पत्तरोंको कैची या सुनारकी कतरनी से काट-काटकर चाँदीकी दुअन्नी जितने-जितने टुकड़े कर लो। इन टुकड़ोंके नीचे-ऊपर पिसी हल्दीकी खूब मोटी-मोटी तहें जमा दो। फिर चूल्हेपर रखकर २४ घण्टे तक खूब तेज आग लगाते रहो। २४ घण्टे बाद आग लगाना बन्द कर देने पर भी उसे २४ घण्टे मत छेड़ो। जब हल्दीकी ठण्डी राख हो जावे, उसे किसी चौड़े बासनमें निकाल लो और सफेद-सफेद खीलें चुनकर, खरलमें पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर आगे लिखे अनुसार शोरेके साथ फूँक दो।



### पाँचवीं विधि ।

( ५ ) पहले तिल और इमलीकी छाल बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो । राँगके पतले-पतले पत्तर कर लो । एक टाट पर तिल और इमलीकी छालका चूर्ण आध-आध अंगुल ऊँचा बिछा दो । उसपर राँगके पत्तर बिछा दो । पत्तरोंपर फिर तिल और इमलीकी छालका चूर्ण आध-आध अंगुल ऊँचा बिछा दो । ऊपर एक टाटका टुकड़ा रखकर, इसे रस्सीसे बाँध दो । फिर इस टाटपर गीली मिट्टीका गाढ़ा लेप कर दो और गज भर गहरे-लम्बे-चौड़े गड्ढेमें कण्डे भरकर, बीचमें इस टाटकी पोटलीको रखकर आग लगा दो । जब आग ठण्डी हो जाय, चतुराईसे उस पोटलीको उठा लो । बहुत हिलानेसे सब माल नष्ट हो जायगा । पोटलीमें आपको धानकी सी खिलें मिलेंगी, जो मलनेसे महीन हो जायँगी । यह बड़ी बढ़िया चीज है । सब काममें आती है ।

### छठी विधि

( ६ ) शोधा हुआ राँगा जितना हो, उसका दसवाँ भाग शुद्ध पारा लेकर दोनोंको खरलमें डालो और “आकका दूध” डाल-डालकर ३ घण्टे तक खरल करो । फिर इसे ठीकरेमें रखकर आगपर चढ़ा दो और आगको खूब तेज कर दो । साथही अनारकी लकड़ीके डण्डेसे घाटते रहो । कुछ देरमें भस्म हो जायगी ।

### सातवीं विधि ।

( ७ ) एक मिट्टीके बर्तनमें शोधा हुआ राँगा रखकर, आगपर चढ़ाकर गलाओ । जितना राँगा हो, उसका चौथा भाग इमलीकी छालका चूर्ण तथा पीपल-वृक्षकी छालका चूर्ण डाल-डालकर ६ घण्टे तक कलछीसे घोटो । बस, भस्म हो जायगी ।

इसके बाद इस भस्मको खरलमें डालकर, भस्मके बराबर “शुद्ध हरताल” मिलाकर, नीबूका रस डाल-डालकर, ३ घण्टे खरल करो ।



बीछे टिकिया बनाकर, सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटकी एक आँचमें पकाओ ।

सराईमेंसे भस्मको निकालकर, इस बार भस्मका दसवाँ भाग “शुद्ध हरताल” डालो और नीबूके रसके साथ ३ घण्टे खरल करके, सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटमें फूँक दो । यह दो आँच या दो पुट हुई । इसी तरह, दसवाँ भाग शुद्ध हरताल मिला-मिलाकर, पहर-पहर भर खरल कर करके, सराव-सम्पुटमें रखकर आठ बार गजपुट की आगमें और भी पकाओ । दस आग खानेसे उत्तम भस्म हो होजायगी ।

नोट—ध्यान रखो, पहली आँच देनेके समय भस्मके बराबर हरताल ली जाती है, पर शेष नौ आँचके समय भस्मका दसवाँ भाग हरताल मिलाई जाती है । पर घुटाईमें हरबार नीबूका रस ही पड़ता है और घुटाई हरबार तीन-तीन घण्टे होती है ।

### बंग भस्मकी आसान तरकीब ।

( आठवीं विधि )

सबसे पहले जितने राँगीकी भस्म करनी हो उतना राँगा तोलकर पास रख लो । राँगेके वजनके बराबर ही हल्दीका चूर्ण, अजवायनका चूर्ण, सफ़ेद जीरेका चूर्ण, इमलीकी छालका चूर्ण और पीपल-वृक्षकी छालका चूर्ण अलग-अलग थालियोंमें पास रखलो ।

लोहेकी एक ऐसी कढ़ाही लो जिसका पैदा खूब मोटा हो । उस कढ़ाहीको भट्टीपर चढ़ाकर, उसमें शोधा हुआ राँगा डाल दो और नीचे तेज़ आग लगाकर उसे गलाओ । जब वह पानीसा पतला हो जावे, तब—

उसमें पास रखा हुआ “हल्दीका चूर्ण” थोड़ा-थोड़ा डालो और लोहेके कलछेसे राँगे और हल्दीको दबा-दबाकर घोटते रहो, जब सारी हल्दी खपा चुको, तब—

उसमें पास रखा हुआ “अजवायनका चूर्ण” थोड़ा-थोड़ा डालो



और लोहेके कलछेसे घोटते रहो, जब सारी अजवायन खप जावे, तब—

उसमें पास रखा हुआ “सफेद जोरेका चूर्ण” थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और कलछेसे घोटते जाओ, जब सारा जोरा खत्म हो जावे, तब—

उसमें पास रखा हुआ “इमलीकी छालका चूर्ण” थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और घोटते जाओ, जब इमलीका चूर्ण शेष हो जावे, तब—

उसमें पास रखा हुआ “पोपरके पेड़की छालका चूर्ण” थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और कलछेसे घोटते रहो। इस बार भस्म हो जायगी। भस्म हो चुकते ही, भस्मको कढ़ाहीमें एक जगह करके, उसके ऊपर मिट्टीका ऐसा सरावा ढक दो, जिससे सारी भस्म ढक जाय और आगको तेज करते रहो। इस बार सारे राँगेकी भस्म हो जायगी। जब देखो कि, सफेद रंगका साफ चूर्ण हो गया, तब समझो कि बंगभस्म तैयार हो गई। कढ़ाहीको नीचे उतार लो और बंगको कपड़े में छान लो।

इस तरह भस्म बनाते समय, कलछेसे घोटना बन्द मत करो। अगर घुटाई खूब होगी, तो भस्म जल्दी तैयार होगी, नहीं तो कुछ भस्म बन जायगी और बहुतसा राँगा बच रहेगा। अगर शेषमें, सेर-भर राँगे में से छटाँक-भर या कुछ कम राँगा रह जावे, तो चिन्ता मत करना। भस्मको निकालकर महीन कपड़ेमें छान लेना; राँगा अलग निकल जावेगा। उस राँगेको रख देना। उसकी भस्म फिर तबोयत चाहे तब बना सकोगे।

इस बंगको बनाते समय, कढ़ाहीमें हल्दी और अजवायन वगैरः डालते समय बड़ा धूआँ होता है, इसजिए लोहेका कछला ऐसा लेना, जिसका घेरा चारों तरफसे एक फुट हो और डण्डो चार हाथ लम्बी हो। डण्डोपर, पकड़ने की जगह, लकड़ी चढ़वा लेना; नहीं तो हाथ



जलेगा, क्योंकि कलछेकी डन्डी आगकी तरह तपने लगती है। अगर लकड़ी न चढ़ सके, तो चीथड़े लपेटकर रस्सीसे कस देना।

इस तरह बङ्ग-भस्म बनानेमें घुटाईकी कारीगरी है। क्षणभर भी घुटाई बन्द न होनेसे उत्तम भस्म जल्दी तैयार होगी।

नोट—ऊपरकी तरकीब बड़ी आसान है। छोटेसे स्थानमें भी एक मात्र कढ़ाही और कलछा होनेसे बङ्ग-भस्म बन जाती है। कलकत्तेमें स्थानका आभाव है। शहरमें खट्ठा खोदने योग्य ज़मीन मिलना महा कठिन है, इसलिये कलकत्तेके अनेक कविराज इसी तरह बङ्गभस्म बना लेते हैं।

इस तरह बंग-भस्म बनानेके लिये नीचे लिखी हुई चीज़ोंकी दरकार होती है:—

- ( १ ) शोधा हुआ राँगा ।
- ( २ ) पिसी हुई हल्दी ।
- ( ३ ) पिसी हुई अजवायन ।
- ( ४ ) पिसा हुआ सफ़ेद जीरा ।
- ( ५ ) पिसी हुई इमलीकी छाल ।
- ( ६ ) पिसी हुई पीपरके पेड़की छाल ।

उपरोक्त सभी चीज़ें राँगेके बराबर लेनी चाहियें, यानी राँगा एक सेर हो तो हल्दी और अजवायन वगैरह में एक-एक से होनी चाहिएँ।

सूचना—ठीक इसी तरकीबसे आप शुद्ध जस्तेकी भस्मभी बना सकते हैं। इस तरह बनाई जस्ता भस्म सफ़ेद मटमैले रंगकी होती है।

बंगभस्मके अनुपान ।

मात्रा—इसकी मात्रा २ चाँवलसे ३ रत्ती तक है।

अनुपान ।

( १ ) मुखकी बदबू नाश करनेको शुद्ध कपूरके साथ बङ्गभस्म खाओ ।



- ( २ ) बलवृद्धिके लिये दूधके साथ बङ्ग-भस्म खाओ ।
- ( ३ ) बल बढ़ानेको जायफलके साथ बङ्ग-भस्म खाओ ।
- ( ४ ) धातु-रोग नाश करनेको जायफल, जावित्री और लौंगके साथ बङ्ग खाओ ।
- ( ५ ) धातु-वृद्धि और शरीर-पुष्टिके लिये दूधके खोयेके साथ ।
- ( ६ ) शरीरकी कान्ति-बढ़ानेको जायफलके साथ ।
- ( ७ ) नामर्दी नाश करनेको लौंग, पीपर और इलायचीके चूर्ण के साथ ।
- ( ८ ) वीर्यस्तम्भनके लिये पानमें, भाँगमें या कस्तूरीमें ।
- ( ९ ) वीर्य और बल बढ़ानेको दूध और मिश्रीके साथ ।
- ( १० ) वीर्यस्तम्भनके लिये भाँगके चूर्ण, दूध और शहद के साथ ।
- ( ११ ) नजुन्सकता नाश करनेको चिरचिरेकी जड़के चूर्णके साथ ।
- ( १२ ) प्रमेह नाशार्थ तुलसीके पत्तोंके साथ ।
- ( १३ ) प्रमेह और धातु गिरना बन्द करनेको गोखरूके चूर्ण और मिश्रीके साथ ।
- ( १४ ) समस्त प्रमेह नाशार्थ जड़-सहित गोरखमुण्डीके रस और गोखरूके रसमें चीनी मिलाकर, उसीमें बङ्ग मिलाकर पीओ ।
- ( १५ ) प्रमेह नाशार्थ शहद और मिश्रीके साथ बङ्ग खाओ ।
- ( १६ ) पाण्डुरोगमें घीके साथ बङ्ग खाओ ।
- ( १७ ) रक्तपित्तमें हल्दीके साथ अथवा हल्दी और शहदके साथ ।
- ( १८ ) उर्ध्वश्वासमें हल्दीके साथ ।
- ( १९ ) बलवृद्धिको शहदके साथ ।
- ( २० ) पित्त शान्त करनेको चीनीके साथ ।
- ( २१ ) वायु शान्त करनेको लहसनके साथ । ( लहसनको घीमें भूँजकर, उसमें बङ्ग मिला दो । )
- ( २२ ) वायु नाशार्थ अजवायन या असगन्धमें ।



- ( २३ ) अग्निमांश रोगमें—पीपरके चूर्णमें मिलाकर ।
- ( २४ ) दाह-नाशार्थ नीबूके रसमें ।
- ( २५ ) पलकोंके रोगोंमें खैरकी छालके काढ़ेमें ।
- ( २६ ) अजीर्णमें आमले या सुपारीके साथ ।
- ( २७ ) हड्डीके पुराने ज्वरमें मक्खनके साथ ।
- ( २८ ) कोढ़ नाशार्थ समन्दरफल या निर्गुण्डीके रसमें ।
- ( २९ ) लिङ्ग बढ़ाने और कड़ा करनेको लौंग, समन्दरफल, पानों के रस और शहदमें बङ्ग भस्म मिलाकर लिङ्गपर लगाओ ।
- ( ३० ) गुल्म रोगमें सुहागेके साथ बङ्ग खाओ ।
- ( ३१ ) बशीकरणके लिये लौंग और गोरोचनके साथ बङ्ग पीस कर तिलक करो ।
- ( ३२ ) शिर दर्दमें बङ्गको रेंडीकी जड़के साथ पीसकर सिरपर लगाओ ।
- ( ३३ ) तिल्ली-रोगमें सुहागेके साथ बङ्ग खाओ ।
- ( ३४ ) जलोदरमें बकरीके दूधमें बङ्ग खाओ ।
- ( ३५ ) सिरके रोगमें चिरचिरेके साथ बङ्ग खाओ ।
- ( ३६ ) कमरके रोगमें जायफल और असगन्धके साथ ।
- ( ३७ ) नासूरमें नागबलीके साथ ।
- ( ३८ ) पेटके दर्दमें छोटी हरड़के साथ ।
- ( ३९ ) वायुगोलामें माठेके साथ ।
- ( ४० ) मिरगीमें लहसनके तेलमें बङ्ग-भस्म मिलाकर नस्य दो ।
- ( ४१ ) श्वासमें जायफल, लौंग, और शहदके साथ ।
- ( ४२ ) शरीर-पुष्टिको तुलसीके रसमें ।
- ( ४३ ) जीर्णज्वरमें पीपरके चूर्ण और शहदके साथ ।
- ( ४४ ) पित्तज्वर और पित्त-रोगमें मिश्रीके साथ ।



( ४५ ) उर्ध्वश्वासमें आधी कच्ची और आधी भूँजी हुई हल्दीके चूर्ण और शहदमें ।

( ४६ ) शरीरकी दुर्गन्ध नाशार्थ चमेलीके रसके साथ बङ्गभस्म खाओ ।

( ४७ ) चर्म-रोगमें खैरके चूर्णके साथ बङ्गभस्म खाओ ।

( ४८ ) शरीरकी गरमी शान्त करनेको नौना धीके साथ ।

( ४९ ) सिरका दर्द, पेशाबकी जलन और पेटकी हवा नाश करने को काकमाचीके रसके साथ ।

( ५० ) सोमरोगमें नागकेशर, मिश्री और गायके दूधके साथ ।

( ५१ ) चर्म-रोग या दाद नाश करनेको मुर्दासङ्ग और गौरी-बीज या गन्धकमें बङ्गभस्म मिलाकर लगाओ ।

( ५२ ) सब तरहके सिर-दर्दमें पुराने घी और पुराने गुड़के साथ खाओ ।

( ५३ ) अतिसारमें—बराबर-बराबर अफीम और केशरमें बङ्गभस्म मिलाकर, गोलमिर्च-समान गोली बनाकर खाओ और ऊपरसे माठा पीओ । इस उपायसे अमातिसार और नाश हो जायेंगे ।

( ५४ ) गँगभस्मको अबीध मोतियोंके साथ अर्क गुलाबमें खरल करके रख लो । पीछे १ खुराक बङ्ग, बंसलोचन, छोटी इलायची और चाँदीके वक्त्रोंके साथ “शहद”में मिलाकर खानेसे बेइन्तहा फायदा करती है । प्रमेहमें तो रामवाण हीका काम करती है; खासकर शोरेके साथ मारी हुई बङ्गभस्म, जिसकी विधि हमने उधर लिखी है ।

नोट—बङ्ग एक या दो रत्ती, बंसलोचन और इलायचीका चूर्ण दो या तीन रत्ती और चाँदीके वक्त्र एक या दो—इन सबको छै माशे शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीओ ।



## शीशाभस्मकी विधि ।

### शीशा कैसा लेना चाहिए ?

जो शीशा बाहरसे काला हो, भारी हो तथा काटनेसे काले रङ्गका चमकदार निकले और जिसमें बदबू आती हो, वही भस्म करनेको लेना चाहिए । जिसमें ये सब गुण न हों, वह शीशा दवा के कामका नहीं होता ।

### शीशा शोधनेकी तरकीब ।

शीशा शोधनेकी इच्छा हो, तो पहले एक गहरे और चौड़े बासन में अङ्गोलका रस, दूसरेमें त्रिफलेका काढ़ा, तीसरेमें गोमूत्र, चौथेमें काँजी, पाँचवेमें आकका दूध और छठेमें धीग्वारका रस तैयार करके भर दो । इन सबको तैयार किये बिना, शीशा शोधनेको बैठ जाना भूतकी बात है । हमने जैसा कलछा वङ्ग शोधनेके लिये बताया है, वैसे ही कलछेमें शीशा रखो और गलाओ । जब शीशा गल जाय, उसे पहले “अङ्गोलके रस”में बुझा दो । फिर निकालकर उसी कलछेमें रखो और गलाओ । गल जाने पर फिर उसी अङ्गोलके रसमें बुझाओ । इस तरह गला-गला कर सात बार अङ्गोलके रसमें बुझाओ । जब सात बार हो चुके, अङ्गोलके रसको हटा दो । उसकी जगह त्रिफलेके काढ़ेका बासन रख लो । इसमें भी शीशेको गला-गला कर सात बार बुझाओ । बस, ठीक इसी तरह गोमूत्र, काँजी, आकके दूध और धीग्वारके रसमें सात-सात बार बुझाओ । इस तरह ६ चोजोंमें सात-सात बार शीशा बुझाने यानी ४२ बार शीशा गला-गलाकर उपरोक्त चोजोंमें सात-सात बार बुझानेसे निर्दोष, शुद्ध और गरमी रहित जायगा ।



नोट—शीशा भी रंगेकी तरह उछलता है, पर गलता रंगेसे जल्दी है। रंगे और शीशेके उछलनेके कारण शोधनेवालेके आँख-नाकको मय रहता है; अतः बासनपर छेद किया हुआ भारी पत्थर रखकर, उसीमें होकर शीशा पिघला-पिचलाकर बुझाना चाहिये ।

शीशा शोधनेकी ग्रन्थोंमें बहुत सी विधियाँ लिखी हैं। उनको देखनेसे मनुष्य चक्करमें पड़ जाता है। शीशे और रंगे में एक समान दोष होते हैं, अतः शीशा रंगेकी तरह शोधा जा सकता है। कहा है—

तस्य साहजिका दोषा रंगस्येव निदर्शिताः ।

शोधनञ्चापि तस्येव भिषग्भिर्गदितं पुरः ॥

रंगेमें जो दोष हैं, वही शीशेमें भी स्वाभाविक रूपसे हैं। शीशेका शोधन भी रंगेकी तरह ही करना चाहिये,—ऐसा प्राचीन वैद्योंने कहा है ।

नोट—( १ ) तेल, माठा, गोमूत्र, कौंजी और कुल्थी-काथ,—इन पाँचोंमें सात सात बार बुझानेसे, और धातुओंकी तरह, शीशेकी सामान्य शुद्धि होती है। इसकी विशेष शुद्धि भी करनी चाहिये; यानी सामान्य शुद्धि करके त्रिफलेके काढ़े, घोघ्वारके रस, और हादीके पेशाबमें सात-सात बार बुझानेसे शीशा खूब शुद्ध हो जाता है। यह विधि निश्चय ही उत्तम है। सामान्य और विशेष दोनों शुद्धियाँ की जाँय तो क्या कहना ?

( २ ) शीशेको शोधते समय भट्टीमें खैरकी लकड़ी जलाना अच्छा। अगर वह न मिले तो बबूल, नीम, पीपल या ढाककी लकड़ी भी अच्छी हैं। इनके कोयलोंसे भी काम निकल सकता है ।

## शीशा मारनेकी विधि ।

पहली विधि ।

( १ ) पहले आप केवड़े और तुलसीका चूर्ण पीस-कूट कर तैयार करलो और पास रख लो। इसके बाद बबूलके कोयलोंकी आग जलाकर उसपर ताम्बेका बर्तन रख दो। जब ताम्बेका बासन आगकी तरह लाल हो जाय, उसमें शोधा हुआ शीशा डाल दो। जब वह गल जाय, उस पर मुट्ठोसे थोड़ा-थोड़ा केवड़े और तुलसीका चूर्ण, जो पास रखा



है, डालते जाओ और कलछीसे पिघले हुये शीशेको रगड़ते जाओ । बारबार चूर्ण डालो और कलछीसे रगड़ो । इस तरह, कोई आध घण्टेमें, हल्दीकेसे रङ्गकी भस्म तैयार हो जायगी । यह भस्म अभी खाने योग्य नहीं होगी । नीचेकी क्रिया करने यानी गजपुटकी आग देनेसे खाने लायक होगी । उस समय उसका रंग “सिन्दूर-जैसा लाल” हो जायगा ।

### ऊपरकी भस्मका शोधन ।

ऊपरकी भस्मको खरलमें डाल, ऊपरसे “नीबूका रस” दे देकर खरल करो; फिर टिकियासी बनाकर, सराब-सम्पुटमें रखकर दो गजपुटकी आग दो ।

जब नीबूके रसमें खरल कर-करके दो गजपुटकी आग दे चुको, तब “बन-तुलसीके रस”में भस्मको खरल करो । फिर टिकिया-सी बनाकर सुखालो और सराब-सम्पुटमें रख, कपड़-मिट्टी कर, गजपुटकी दो आँच दो ।

जब बन-तुलसीके रसमें खरल करके दो गजपुटकी आग दे लो तब “जसवन्तीके रस”में खरल करके, टिकिया सी बनाकर सुखालो । फिर सराब-सम्पुटमें बन्दकरके, कपरौटी करो और गजपुटकी दो आग दो ।

अब “जसवन्तीके रसमें खरल कर-करके दो गजपुटकी आँच दे चुको; तब उस भस्मको “भांगरेके रस”में खरल करो और टिकिया बना-सुखाकर, सराब-सम्पुटमें रख, गजपुटकी दो आँच दो ।

जब भांगरेके रसमें खरल कर-करके दो आँच दे चुको, तब “गोदनदुद्धीके रस”में खरल करके, टिकिया बना लो और सराब-सम्पुटमें रखकर, गजपुटकी दो आग दो ।

जब गोदनदुद्धीके रसमें खरल कर-करके दो आग दे लो, तब “धीग्वारके रस”में खरल करके, टिकिया बना लो । फिर सराब-सम्पुटमें रख, गजपुटकी दो आग दो ।



इस तरह हरेक चीजमें दो-दो बार खरल करके; यानी नीवूके रस, बनतुलसीके रस, जसवन्तीके रस, भाँगरेके रस, गोदनदुद्धीके रस और धीग्वारके रसमें दो-दो बार खरल करके और हर बार गजभर गहरे-लम्बे-चौड़े गड्ढेमें भस्म-वाली सराइयोंको रख, आरने कण्डोंकी आग देकर फूँकनेसे—बारह आँचमें शीशेकी सिंदूरके रङ्गकी भस्म तैयार हो जाती है ।

### शीशा भस्मकी दूसरी विधि ।

( १ ) शोधा हुआ शीशा एक सेर, एक मिट्टीके ठीकरेमें रखकर, आगपर रखो । जब शीशा गल जाय, उसपर “केवड़ेका डण्डा” रखकर चलाओ । जब शीशा गल जाय, डण्डेसे घोटना बन्द न करो । जब भस्म हो जाय, उसपर “कलमी शोरा” ( जो एक सेर पीस कर पास रखा हो ) मुट्ठीसे थोड़ा-थोड़ा डालते जाओ और लोहेक कलछीसे चलाते जाओ । जब सारा शोरा खतम हो जाय, जरा दूर हट कर घोटो, क्योंकि अब शोरा एक-दमसे जल उठेगा । जब शोरा जल उठे, ठीकरेको उतार लो और चाकूसे छील-छीलकर भस्मको एक बासन में रख लो और पानी भर दो । फिर धोकर ठीकरे अलग करलो और भस्म अलग कर लो ।

इसके बाद, उस भस्मको खरलमें डालकर, ऊपरसे “बड़की जटाका अर्क और केवड़ेकी जड़का अर्क” दे-देकर घोटो और टिकिया बना लो । पीछे, उसे धूपमें सुखालो । इसमें से पाव भर दवाकी टिकियाको सराव-सम्पुटमें रख, चार सेर कण्डोंकी आगमें फूँक दो । फिर देखो कि किसी क्रूर पीली भस्म हो गई हो तो ठीक है । अगर कसर हो, तो फिर उसी तरह बड़की जटा और केवड़ेके अर्कमें घोटकर और टिकिया बनाकर फिर फूँक दो ।

यह विधि शास्त्रमें नहीं है । किसी खूबचन्द हकीमकी ईजाद की हुई है । इस भस्मकी मात्रा ४ चाँवल भरकी है ।



## सेवन-विधि ।

एक मात्रा शीशा-भस्म, मीठे अनारके आध-पाव अर्कमें देनेसे बवासीरका खून बन्द हो जाता है ।

एक खुराक शीशा-भस्म, दो तोले अर्क गिलोय और १ तोले शहदके साथ, देनेसे सोजाक आराम हो जाता है ।

एक मात्रा शीशा भस्म, बिहीदानेके लुआबके साथ, खानेसे सोजाक नाश हो जाता है ।

## शीशा भस्मकी तीसरी विधि ।

पीली भस्मकी विधि ।

लोहेकी कढ़ाहीमें शुद्ध शीशा और कुछ जवाखार मिलाकर चढ़ा दो । आग मन्दी रखो । एक कलछेसे चलाते रहो; जब तक शीशेकी भस्म न हो जावे, बारम्बार “जवाखार” डालो और चलाओ । जब लाल-पीले रंगकी भस्म हो जावे, कढ़ाहीको नीचे उतार लो और भस्मको एक कटोरेमें रखकर पानी डालो और धोओ । उस समय भस्मका रंग और ही तरहका गुलाबी-सा हो जावेगा । इसके बाद उस गीली भस्मको किसी बर्तनमें रखकर आगपर सुखा लो । सूखते ही भस्मका रंग सुन्दर पीला हो जावेगा ।

## काली-भस्मकी विधि ।

शीशेको कढ़ाहीमें रख कर, नीचे मन्दी-मन्दी आग लगाओ । जब शीशा गल जावे, उसमें “शुद्ध मैनसिल” डालो और चलाओ । जब तक भस्म न हो जावे, “मैनसिल” डालो और चलाओ । जब धूलके जैसी भस्म हो जावे, उसे उतार लो । अब उसे खरलमें डालकर, “शुद्ध गन्धकका चूर्ण” मिला दो और नीबुओंका रस दे-देकर खरल करो । इसके बाद गोला बनाकर, सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटमें फूँक दो । जब आग शीत हो जाय, सराइयोंमें से भस्मको निकाल लो । यह शीशा-भस्म का ।



## शीशा-भस्मके गुण ।

शीशेमें राँगके समान ही गुण हैं । यह विशेष करके प्रमेहको नष्ट करता है । जो शीशेको सदा सेवन करता है, वह सौ हाथियोंके समान बलवान होता है । इससे रोग नाश होते, जीवन बढ़ता, अग्नि प्रदीप्त होती, काम-शक्ति बढ़ती और मृत्यु दूर होती है ।

“रसायन-सार”में लिखा है:—

चातश्लेष्मविकार गुल्मगुदजाञ्छूल प्रमेहक्षयान् ।

कासश्वासकृमिभ्रमान् ग्रहणिकांमन्दाग्नि पाण्चामयान् ॥

विधिना निर्मित नागभस्म संतत संसेवनाद निर्जयेत ।

नीचेत्तत्प्रतियोगिकारि कुरुते कुष्ठादिकांश्चामयान् ॥

अच्छी विधिसे बनाई हुई नागभस्म—शीशाभस्मके सेवन करनेसे चातरोग, कंफरोग, गुल्मरोग, बवासीर, शूल, प्रमेह, क्षय, खाँसी, श्वास कृमि-रोग, भ्रम, संग्रहणी, मन्दाग्नि और पाण्डुरोग नाश होजाते हैं । अगर शीशाभस्म अच्छी नहीं होती, तो उसके सेवन करनेसे ये सब

दूषित शीशा-भस्मके दोष-शांतिका उपाय ।

स्वर्णभस्मसितायुक्तां सेवेत त्रिदिनं शिवाम् ।

नागदोषानपाकृत्य जायते सुखितो नरः ॥

एक रत्ती सोनाभस्म, एक तोला मिश्री और एक तोला बड़ी हरड़—इन तीनों को मिलाकर, सवेरे-शाम खानेसे, तीन दिनमें शीशेकी दूषित या खराब भस्मके दोष शान्त हो जाते हैं ।

दूषित शीशा-भस्मको शुद्ध करने की विधि ।

दूषित नाग-भस्ममें, हाथीके पेशाब और मन्दारके दूधकी सात भावना देकर, बराह पुटमें फूँक देनेसे उत्तम भस्म हो जाती है, उसके सेवनसे कोई विकार नहीं होता; पर वह कुछ कम गुणवाली होती है ।



मात्रा—चार चाँवलसे २ रत्ती तक ।

### अनुपान—

(१) सब तरहके अजीर्णोंमें शीशा भस्म सोंठ और सौंफके चूर्णके साथ खाओ ।

(२) आमातिसारमें शीशा भस्म सोंठ और सौंफके चूर्णके साथ खाओ ।

(३) गुल्म रोगमें सोंठ और संचर नोनके चूर्णके साथ शीशा-भस्म खाकर, ऊपरसे “अर्क मकोय” पीओ।

( ४ ) आमवातमें सोंठ और संचर नोनके चूर्णके साथ शीशा-भस्म मिलाकर खाओ और ऊपरसे 'अर्क मकोय' पीओ ।

(५) नवीन ज्वरमें गोलमिर्च और बताशोंके साथ शीशा-भस्म खाओ ।

(६) पुराने ज्वरमें                ”                ”

( ६ ) विषम ज्वरमें

( ढ ) त्रिदोष ज्वरमें                      ”                      ”

( ६ ) शरीर पुष्टिको मिश्री, जायफल, पीपल और खोयेमें शीशा-

भस्म खात्रो ।

( १० ) कमजोरीसे दम फूलनेमें               ”               ”               ”

( ११ ) सिरदर्दमें सोंठके चूर्ण और पुराने गुड़में शीशाभस्म खाओ ।

( १२ ) कमरके दर्दमें                      ”                      ”                      ”

( १३ ) क्रय होने या छर्दि रोगमें            ,        "        "

(१४) तिल्ली और यकृतमें शहद और पीपलके चूर्णमें शीशा-भस्म खाओ।

( १५ ) वात ज्वरमें पीपलके चूर्ण और काकमाचीके रसमें शीशा-  
भस्म खाओ ।

( १६ ) प्रसूत ज्वरमें

( १७ ) घोर प्रदर रोगमें

( १८ ) विषम ज्वरमें



## जस्ता-भस्मकी विधि ।

### जस्ता कैसा लेना ?

जो जस्ता भारी हो, सफेद रंग का हो, चमचमाहट करने वाला हो और जिसमें दाँतोंके जैसे मोटे-मोटे रवे हों, वही खाने और आँखोंमें आँजने लायक है ।

### जस्ता-भस्म शोधन-विधि ।

सामान्य शुद्धि ।

पहले जस्ते को गला-गलाकर, सात-सात बार तेल, माठा, गोमूत्र, काँजी और कुजथीके काढ़ेमें बुझाओ-तब जस्तेको सामान्य शुद्धि हो जायगी । इसके बाद विशेष शुद्ध कर लो ।

विशेष शुद्धि ।

जस्तेको गला-गलाकर २१ बार गायके दूधमें बुझानेसे विशेष शुद्धि हो जाती है ।

### और शोधन-विधि ।

जस्तेको आगपर गला-गलाकर २१ बाद “गायके दूधमें” बुझाओ । फिर गला-गलाकर २१ बार “त्रिफलेके काढ़ेमें बुझाओ । इस तरह ४२ बार गला-गलाकर बुझा लेनेपर, फिर गला-गलाकर तीन बार “आकके दूध”में बुझाओ । इस तरह तीनों चीजोंमें ४५ बार बुझानेसे जस्ता शुद्ध हो जायगा ।

नोट—सामान्य और विशेष शुद्धिमें  $३५ + २१ = ५६$  बार गला-गलाकर बुझाना होता है और इसमें ४५ बार । केवल ११ बार की मिहनत का फर्क है । तरकीब दोनों ही ठीक हैं । इच्छा हो, जैसे शुद्धि करो । फिर भी सामान्य और विशेष शुद्ध अच्छी हैं ।



## जस्ता मारनेकी तरकीबें ।

पहली विधि ।

( १ ) एक लोहेके तवे या कढ़ाहीमें जस्ता ( शोधा हुआ ) रखकर आग लगाओ । जब जस्ता गल जाय, उसपर “बथुएका रस” डालते जाओ । और “नीमके सोंटे”से घोटते जाओ । बारम्बार रस डालो और घोटना बन्द मत करो । आगको खूब तेज रखो । ३० मिनटमें सफ़ेद भस्म हो जायगी । यह भस्म खाने योग्य नहीं । इसको अभी शुद्ध करना होगा; यानी फूँकना होगा ।

## ऊपरवाली जस्ता भस्मके शोधनेकी विधि ।

पहले त्रिफलेके रसकी इस भस्ममें ३२ भावना दो । इसके बाद टिकिया बनाकर, सराईयोंमें रख, कपरौटी कर, गजपुटमें फूँक दो ।

फिर सराईमेंसे भस्म निकालकर, भाँगरेके रसकी ३२ भावना दो; फिर टिकिया बना, सराव-सम्पुटमें रख, गजपुटमें फूँक दो ।

फिर सराईमेंसे भस्म निकालकर, घीग्वारके रसकी ३२ भावना दो । फिर टिकिया बना, सराव-सम्पुटमें रख, गजपुटमें फूँक दो ।

चौथी बार भस्मको निकालकर, “पञ्चामृत”की एक भावना दो और गजपुटमें फूँक दो । इस बार यह उत्तम भस्म हो जायगी । यह खाने लायक होगी ।

नोट—इस भस्ममें आग तेज देना अच्छा होगा । ( १ ) गिलोय, ( २ ) मूसली, ( ३ ) सोंठ, ( ४ ) गोखरू, और ( ५ ) शतावर—इन पाँचोंको “श्रीषधि-पञ्चामृत” कहते हैं ।

## दूसरी विधि ।

( २ ) एक सेर शोधे हुए जस्तेको कढ़ाहीमें रखकर, कढ़ाहीको तेज आगकी भट्टी पर रख दो और आगको खूब तेज रखो । लोहेके कलछेसे इसे चलाते रहो । जब इसमें आगकी लपटें उड़ने लगें, तब



इसमें “नीमके पत्तोंका स्वरस” जो पहलेसे एक बर्तनमें भरा रखा हो, डालते जाओ और चलाते जाओ । जब एक सेर नीमका स्वरस खप जाय और नीमका स्वरस मत डालो, पर आग क्रम मत करो, लगाते रहो । जब देखो कि भस्म हो गई, आग मत दो । आग शीतल होने पर, भस्मको निकाल लो और कपड़ेमें छान लो । यह भस्म उत्तम है ।

और भी उत्तम ।

इस भस्मको काममें लासकते हो, पूरा गुण करेगी, पर यदि आप इस तैयार भस्मको “धीग्वारके रसमें” खरल करके टिकिया बनालो । और सराव-सम्पुटमें रख कर, गजपुटकी एक आग देदो, तो और भी उत्तम भस्म हो जायगी ।

नोट—नीमकी पत्तियोंको सिलपर पीसकर, मोटे कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ लो । अगर रस न निकले, तो ज़रा सा पानी डालकर पत्तियोंको पीसो, पर बहुत पानी मत डालना । इस रसके कढ़ाहीमें डालते ही गला हुआ जस्ता जम जायगा । उसपर कलछा खड़खड़ करेगा और चलेगा नहीं । आप थोड़ी देर ठहर जाना, ज्योंही जस्ता फिर गलने लगे कलछा जोरसे चलाना शुरू कर देना । कुछ देर बाद कढ़ाहीके भीतरसे नीले पीले हरे लाल रंग चमकेंगे और भस्म होने लगेगी ।

### तीसरी विधि ।

( ३ ) शोधे हुए जस्तेमें चौथा भाग “शोधी हुई गन्धक” मिला कर एक कढ़ाहीमें रखो और कढ़ाहीको भट्टीपर रखकर आग जला दो । उसी समय “अरण्डोका तेल” इतना भर दो, जितनेमें जस्तेके चूर्ण और गन्धकका चूर्ण डूब जाय । फिर लोहेके कलछेसे जस्ते चूर्ण को घोटते रहो और आग तेज देते रहो । कुछ देरमें, तेल और गन्धक जल जायँगे । इसके बाद, जस्तेकी भस्म हो जायगी । आग शीतल होने पर भस्मको निकाल कर कपड़ेमें छान लो ।

इस भस्मको “धीग्वारके रस” में खरल करके, टिकिया बनालो और उसे धूपमें सुखाकर, एक हाँडीमें रख दो । ऊपरसे ढक्कन देकर,



ढक्कनको सन्ध करड़-मिट्टीसे बन्द कर दो । फिर इस हॉडोको गजपुटमें रख कर फूँक दो । जब स्वाँग शीतल हो जाय, टिकियाको निकाल लो । अब यह भस्म उत्तम हुई । इसकी मात्रा २ रत्तीकी है ।

नोट—रैडीका तेल डालते ही जल जायगा । आप कलछा चलाते रहना थोड़ी देरमें कढ़ाहीका लोह आगके माफिक हो जावेगा और उसके भीतरसे मनोमोहक लाल पीले प्रभृति रंग दीखेंगे, कुछ देर बाद भस्म हो जायगी ।

### जस्ता-भस्मके गुण ।

जस्ता-भस्म खट्टी, कड़वी, शीतल और कफपित्त नाशक है । “भाव-प्रकाश” में लिखा है, जस्ता दस्तावर, कड़वा, शीतल, कफपित्त नाशक, आँखोंको हितकारी, प्रमेह तथा पाण्डु और श्वास-नाशक है । अन्यत्र लिखा है, इससे शरीरकी पुष्टि होतो और यह ज्वर प्रभृति रोगोंको भी नाश करती है ।

### खराब जस्ता-भस्मके दोष ।

जस्तेको ठीक तरहसे शीधे बिना भस्म करके सेवन करनेसे प्रमेह, अजीर्ण, वमन, भ्रू और वायु रोग हो जाते हैं, अतः बिना ठीक तरहसे शोधे भस्म न करनी चाहिए ।

### दूषित जस्ता-भस्मके विकारोंको शान्तिका उपाय ।

अगर अशुद्ध जस्ता-भस्मसे उपरोक्त विकार हो भी जायँ, तो तीन दिन तक बराबर, “दो तोले हरड़के चूर्णमें दो तोले मिश्रीका चूर्ण” मिलाकर खाओ, समस्त विकार शान्त हो जायँगे ।

### जस्ता-भस्म सेवनके अनुपान ।

मात्रा—१ रत्तीसे २ रत्ती तक ।

### अनुपान—

( १ ) नेत्र-रोगमें—गायके पुराने—दस सालके—बोमें जस्ता-भस्म खाओ ।



- ( २ ) प्रमेहमें—पानके रसके साथ जस्ता-भस्म खाओ ।  
 ( ३ ) मन्दाग्निमें—अरणीके साध जस्ता-भस्म खाओ ।  
 ( ४ ) मन्दाग्निमें—पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठके चूर्णके साथ जस्ता-भस्म खाओ ।  
 ( ५ ) सन्निपातमें—दालचीनी, इलायची और तेजपातके चूर्णके साथ जस्ता भस्म खाओ ।  
 ( ६ ) विषम ज्वरमें—शहद और पीपलोंके चूर्णके साथ खाओ ।  
 ( ७ ) पित्त ज्वरमें—छुहारे और चाँवल्लोंके धोवनके साथ खाओ ।  
 ( ८ ) नपुनस्कतामें—जायफल, जावित्री, इलायची, मिश्री और गायके दूधके साथ खाओ ।  
 ( ९ ) रक्तातिसारमें—छुहारे और चावल्लोंके साथ खाओ ।  
 ( १० ) शीत ज्वरमें—लौंग और अजवायनके चूर्णके साथ खाओ ।  
 ( ११ ) वमनमें—जीरे और मिश्रीके साथ खाओ ।  
 ( १२ ) अतिसारमें—सफेद जीरे और मिश्रीके साथ खाओ ।

## लोहा-भस्मकी विधि

### लोहा कैसा लेना ?

लोह-भस्म करनेके लिये पहले फौलाद-लोहा या कान्तसार-लोहा लाना चाहिये । फौलादकी तलबारें, सोने-चाँदीके तार खींचनेकी जन्ती, लोहा रेतनेकी रेती अक्सर फौलादकी बनती हैं । कलकत्तेमें तो ऐसी चीजें पुरानी बहुत मिलती हैं, अन्य शहरोंमें भी मिल सकती हैं । अगर जन्ती वगैरः पुरानी न मिलें, तो नयी ही ले लेनी चाहियें । जितना फौलाद अच्छा होगा, फौलाद-भस्म भी उतनी ही अच्छी बनेगी । कान्तसार लोहेके हिमामदस्ते वगैरः बहुत मिलते हैं ।



फौलादी-लोहा बाजारोंमें मिल सकता है । न मिले तो तलवार या जन्ती वगैरहसे काम निकालना चाहिये ।

फौलादी कान्तसार—जैसे लोहेकी भस्म बनानी हो उसे लाकर, लोहा रेतनेकी रेतीसे रितवालो । रेतनेसे जो लोहेका चूरा गिरता जाय, उसे इकट्ठा कर लो । अगर बिना चूरा किये लोहा शुद्ध किया जायगा, तो उसके भीतरी अंशोंकी शुद्धि न होगी । बस, इसीसे रेतीसे रितवा लेना जरूरी है । हमने अनेक बार इसी तरीकबसे काम लिया है । पर स्वर्गवासी श्यामसुन्दर आचार्य लिखते हैं:—कान्तसार लोहेको आगमें खूब तपा-तपाकर, “त्रिफलेके काढ़े” में बार-बार बुझानेसे चूरा गिरता है, उसे उठा-उठाकर रखते जाना चाहिये । हमने इस तरीकबसे काम नहीं लिया । हमारी रायमें रितवा लेना अच्छा है, क्योंकि इसमें कष्ट बहुत है; पर उसमें एक रेतनेका कष्ट है । उसे मजदूर बैठा-बैठा रेटा करता है ।

### लोहा शोधनेकी तरीकब ।

अशुद्ध लोहा लूलापन, कोढ़, मृत्यु, हृदय-रोग, शूल, पथरी और उबाकी आना प्रभृति अनेक रोग पैदा करता है, इसलिए उस नीचेकी विधिसे पहले शोध लेना चाहिये:—

रेते हुए लोहेके चूरेको एक कलछेमें भरकर, उसे खूब तेज आगकी भट्टीपर तपाओ । जब लाल हो जाय, नीचे लिखी चीजोंमें चार-चार बार बुझाओ:—

( १ ) त्रिफलेके काढ़ेमें चार बार ।

( २ ) नीबूके रसमें चार बार ।

( ३ ) गोमूत्रमें चार बार ।

( ४ ) बथुएके रस में चार बार ।

( ५ ) इमलीके रसमें चार बार ।

( ६ ) माठामें चार बार ।

( ७ ) आकके दूधमें चार बार ।



मतलब यह है, कि लोहेके चूरेको चार बार आगपर लाल करके, पहले “त्रिफलेके काढ़े”में चार बार बुझाओ । इसके बाद, लाल कर-करके “नीचूके रस”में चार बार बुझाओ । फिर “गोमूत्र आदि”में चार-चार बार बुझाओ । इस तरह सातोंमें, २८ बार बुझानेसे लोहा शुद्ध और निर्दोष हो जायगा ।

### लोहा शोधनेकी और विधि ।।

दूध, काँजी और गोमूत्र लोहेसे दूने तैयार रखो और त्रिफलेका काढ़ा लोहेसे अठ-गुना रखो । लोहेके पत्तर गरम कर-करके क्रमशः दूध, काँजी, गोमूत्र और त्रिफला-क्वाथमें तीन-तीन बार बुझाओ । इस तरह लोहा शुद्ध हो जायगा ।

नोट—त्रिफलेको चोगुने जलमें औंटाओ, जब चौथाई पानी रह जाय छान लो । यही त्रिफलेका काढ़ा है । यह शोधन-विधि सहज है । बहुतसे वैद्य इस तरह ही लोहेको शोध लेते हैं, किन्तु पिछली तरकीब बढ़िया है ।

### लोहा मारनेकी विधियाँ ।

पहली विधि ।

( १ ) दो सेर त्रिफलेके काढ़ेको इतना पकाओ—कि चौथाई रह जाय या ऐंसा गाढ़ा हो जाय, कि कलछीके लगने लगे । फिर शोधे हुए लोहेके चूरेको कपड़ेमें छानकर, खरलमें रखो और इस त्रिफलेके गाढ़े काढ़ेको भी उसीमें डालकर खरल करो । फिर टिकिया बनाकर, धूप में सुखालो । पीछे इस टिकियाको सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटकी एक आग दो; यानी गजपुटमें एक बार फूँको । बस, भस्म हो जायगी । यह भस्म नुसखोंमें मिलानेके लिये बहुत अच्छी होती है ।

दूसरी विधि ।

( २ ) शोधे हुए लोहेका चूर्ण जितना हो, उसका दसवाँ भाग “शुद्ध शिंगरफ” उसमें मिलादो और खरलमें डालकर, ऊपरसे “धींगवारका रस” दे-देकर ६ घण्टे तक खरल करो । फिर सराव-सम्पुटमें रखकर गजपुटमें फूँक दो । इसी तरह सात बार निकाल-निकालकर और



दसवाँ भाँग “शिङ्गरफ” मिला-मिलाकर, उपरसे “घीग्वारका रस” दे-देकर, छै-छै घण्टे खरल करके, फिर सराब-सम्पुटमें रख-रखकर, गजपुटमें फूँको । मतलब यह है, कि इस तरह सात बार आगमें फूँकनेसे उत्तम लोह-भस्म तैयार हो जायगी ।

### तीसरी विधि ।

( ३ ) फौलादके रेतें हुए आठ तोले चूरेको खरलमें डालो । ऊपरसे आठ माशे शुद्ध पारा डालो और खरल करो । फिर ऊपरसे “शराब” दे-देकर, ६ घण्टे तक खरल करो; ज़रा भी मूसली बन्द न हो । जब गाढ़ा हो जाय, टिकिया बनाकर सराइयोंमें रख, कपरौटी कर, दो सेर कण्डोंमें फूँक दो । ठण्डा होनेपर सराईसे निकाल लो ।

सराईसे लोहेको निकालकर खरलमें डालो और फिर आठ माशे “शुद्ध पारा” डालकर, ऊपरकी तरह शराबके साथ घोटो और टिकिया बना, सराइयोंमें बन्दकर, कपरौटी करके सुखा लो और कण्डोंमें फूँक दो; कण्डे दो सेर लो । इस तरह अस्सी बार निकाल-निकाल कर, आठ-आठ माशे पारा डाल-डालकर, शराबके साथ घोट-घोटकर, दो-दो सेर कण्डोंमें अस्सी बार फूँको । हर दस दफा फूँक लेने पर, सराइयाँ नई बदल दो ।

जब अस्सी बार फूँक जाय, तब निकालकर फिर खरलमें डालो । और चार माशे “शुद्ध संखिया” मिलाकर, शराब-दे-देकर घोटो । फिर टिकिया बना, सराइयोंमें बन्दकर, दो सेर कण्डोंमें फूँक दो । इस तरह इक्कीस बार संखिया और शराबके साथ घोट-घोटकर इक्कीस बार फूँको ।

इस तरह  $८० + २१ = १०१$  आँच लग जानेपर, लोह-भस्मको निकालकर, आतिशी शीशीमें भरकर मुँह बन्द कर दो और शीशीको गेहूँके भरे कोठेमें गेहूँके ढेरमें २१ दिन दबा रखो । २१ दिन बाद निकालो । इस समय भस्मका रङ्ग “नारङ्गी-सा” होगा ।

फिर इस फौलाद भस्मको, जिस चूल्हेमें रोज़ आग जलती हो,



उसके नीचे २ साल तक गढ़ी रहन दो, बस फिर यह अमृत होजायगी ।

मात्रा—चाँवल-भरकी है । इसे माघ-पौषमें खाना चाहिये । सात रोज़ खाने से खूब बल बढ़ेगा ।

नोट—यह फौलाद-भस्म जितनी ही पुरानी होगी, उतनी ही अच्छी होगी ।

### चौथी विधि ।

( ४ ) शोधे हुए लोहेका चूर्ण १२ तोले लो । उसमें “शुद्ध शिंगरफ” १ तोले मिलाकर खरलमें ढालो और “धीग्वारके रस”में ६ घण्टे तक खरल करो । फिर चार टिकिया बनालो और सुखा लो । पीछे उन्हें सराव-सम्पुटमें बन्द कर, चार सेर कण्डोंकी आगमें फूँक दो ।

आग ठण्डी होने पर, उन्हें फिर निकाल लो और खरलमें ढाल दो । ऊपरसे १ तोले भर “शुद्ध शिंगरफ” फिर ढालकर, “धीग्वारके रस”के साथ ६ घण्टे तक घोटो । घुटनेपर, चार टिकिया बनाकर सराव-सम्पुटमें रख, चार सेर कण्डोंमें फूँक दो ।

इस तरह पाँच बार और निकाल-निकालकर, एक-एक तोले भर “शिंगरफ” ढाल-ढालकर, “धीग्वारके रस”में घोटो और टिकिया बनाकर सराव-सम्पुटमें रख फूँक दो । मतलब यह, कि कुल सात बार फूँको । हर बार शिंगरफ तोले भर मिला लो और ग्वारपाठेमें घोटकर, सराइयोंमें बन्द कर, चार-चार सेर कण्डोंमें फूँको । लोहा-भस्म तैयार हो गायगी । यह सार दवाओंमें मिलाया जा सकता है; क्योंकि खाने-योग्य है ।

### पाँचवीं विधि ।

( ५ ) लोहा बारह पैसे भरमें “शुद्ध मैनसिल” १ पैसे भर मिलाकर, “धीग्वारके रस”में ६ घण्टे खरल करके, सात टिकिया बनालो । फिर सराव-सम्पुटमें रखकर, चार सेर कण्डोंमें फूँकदो । इस तरह बारह बार, एक-एक पैसे-भर मैनसिलके साथ, धीग्वार के रसमें घोट-घोटकर, बारह बार चार-चार सेर कण्डोंमें फूँकनेसे उत्तम भस्म बन जायगी ।

नोट—मैनसिल १ पैसे-भर हर बार मिलाना मत भूलो । १ पैसा = १ तोलेके ।



## लोहा-भस्मकी सहज विधि ।

लोहेके पत्तरोँका महीन चूरा करके, उसे दिन भर गोमूत्रमें खरल करो, फिर गौला बनाकर, सराव-सम्पुटमें रखो और गजपुटमें फूँक दो । इसी तरह बीस दफा गोमूत्रमें खरल कर-करके गजपुटमें फूँकनेसे लोहा-भस्म हो जावेगी ।

नोट—हर बार लोहेको गोमूत्रमें दिन-भर खरल करो और गजपुटमें फूँको; इस तरह २० दफा करना होगा, यानी २० दिन घुटाई होगी और २० बार आग दी जावेगी । अगर १००० या १०० बार गोमूत्रमें घुटाई हो और उतनी ही आग दी जावें, तो बहुत बढ़िया भस्म बने ।

## लोहे-भस्मके गुण ।

लोहा-भस्म सेवन करनेसे बलवीर्ध और आयु बढ़ती है । वात पित्त और कफके अनेक रोग नष्ट होते हैं । बहुत दिन सेवन करनेसे कामदेव खूब जोर करता है । इसके सेवन करने वालेके पास रोग नहीं आते । बड़ी ताकतवर चीज है । जो रोग हो, उसी रोगके नाश करने वाले अनुपानके साथ देनेसे, यह सभी रोगोंको नाश करती है ।

## अशुद्ध लोह-भस्मके विकारोंकी शान्तिके उपाय ।

अगर कोई अशुद्ध लोह-भस्म खाकर रोगी हो जाय, तो उसे बिडङ्गके चूर्णमें अगस्तियाके रसकी भावना देनी चाहिये । फिर उस चूर्णको, अगस्तियाके रसके साथ, गलेसे उतार कर धूपमें बैठना चाहिए । पसीनोंके द्वारा सारे विकार निकल जायँगे ।

## लोह-भस्म सेवन करनेके अनुपान ।

मात्रा—लोहा-भस्मकी मात्रा २ चाँवलसे दो रत्ती तक है ।

## अनुपान ।

( १ ) शरीर पुष्टिको—पीपलके चूर्ण और शहदके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( २ ) कफ-रोग नाशार्थ—

( ३ ) रक्तपित्तमें—मिश्रीके साथ लोहा-भस्म सेवन करो ।



( ४ ) बल-वृद्धिके लिये—साँठीकी जड़ गायके दूधमें पीसकर, उसमें लोहा-भस्म मिलाकर खाओ ।

( ५ ) पाण्डु रोगमें—साँठीके रसके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( ६ ) प्रमेहमें—हरी पीपलोंके चूर्ण और शहदके साथ खाओ ।

( ७ ) मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें—शिलाजीतके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( ८ ) वात ज्वरमें—अदरकके रस, घी और शहदके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( ९ ) सन्निपात ज्वरमें—अदरकके रस और गोलमिर्चके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( १० ) पित्त ज्वरमें—अदरकके रस, लौंगके चूर्ण और शहदके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( ११ ) तेरह सन्निपातमें—अदरकके रसमें पीपर पीसकर, उसमें लोह-भस्म मिलाकर खाओ ।

( १२ ) ८० वायु रोगोंमें—निगुण्डीके रस और सोंठके चूर्णके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( १३ ) ४० पित्तके रोगोंमें—मिश्रीके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( १४ ) २० कफके रोगोंमें—पीपलके चूर्णके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( १५ ) सन्धि-रोगोंमें—दालचीनी, इलायची और तेजपातके चूर्णके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( १६ ) प्रमेहमें—त्रिफलाके चूर्ण के साथ लोह-भस्म खाओ ।

( १७ ) वात रोगोंमें—तुलसीकी पत्ती, मिर्चके चूर्ण और धीके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( १८ ) पाँचों खाँसियोंमें—अड़ूसेके रसके सङ्ग लोह-भस्म सेवन करो ।



( १६ ) मन्दाग्निमें—दाख-पीपलके चूर्ण और शहदके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २० ) वीर्य और कान्तिकी वृद्धिको—नागरपानके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २१ ) शरीर निरोग करनेको—त्रिफला और शहदके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २२ ) शरीर-पुष्टिको—छोटी हरड़ और मिश्रीके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २३ ) ८० शूल वात नाशार्थ—घी और हींगके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २४ ) जीर्णज्वरमें—पीपल और शहदके साथ लोह भस्म खाओ ।

( २५ ) श्वासमें—लहसन और घीके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २६ ) शरीरके शीत रोग नाशार्थ—सोंठ, मिर्च और पीपलके चूर्णके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( २७ ) प्रमेह रोगमें—पान और मिर्चके साथ लोह-भस्म सेवन करो ।

( २८ ) सन्निपातज शिरो रोगमें—त्रिफलेके चूर्ण और मिश्रीके साथ लोह-भस्म खाओ ।

( २९ ) कफकी खाँसीमें—लोह-भस्म पीपल या पान या शहदमें लो ।

( ३० ) जाड़ेके ज्वरमें—मुनक्का भूनकर, उसमें लोहा-भस्म रखकर ज्वर चढ़नेसे एक घण्टा पहले खाओ ।

नोट—अगर खुश्की हो, तो कासनीके पत्ते फाड़कर, उसमें शिकंजीबीन दारमी डालकर, उसके साथ लोहा-भस्म लो ।

( ३१ ) साँसमें लोह-भस्म पीपलके साथ खाओ ।

( ३२ ) बुखार और खुश्कीमें—लोहा-भस्म शर्बत नीलोफरके साथ सेवन करो ।



# **स्वर्ण भस्मकी विधि ।**

## सोना कैसा लेना ?

पन्नेका, बटरका या वर्कका सोना अच्छा होता है। फिर भी; जिस सोनेकी भस्म बनानी हो, उसे आगमें तपाकर देख लो। यदि तपानसे काला पड़ जाय, तो उसमें दोष समझो। उसको भस्मके लिये मत लो। ऐसा सोना लो, जो आगमें तपानेसे काला न हो।

## सुवर्ण शोधनेकी विधि ।

( पहली विधि )

सोना शोधनेके लिये चौड़े मुँहके आठ बासनोंमें अलग-अलग नीचेकी चीजें भर कर रखो:—

- ( १ ) जम्बीरी नीबूका रस ।
- ( २ ) काँजी ।
- ( ३ ) सेंधानोन जलमें घोला हुआ ।
- ( ४ ) तिलीका टेल ।
- ( ५ ) गोमूत्र ।
- ( ६ ) माठा ।
- ( ७ ) गायका दूध ।
- ( ८ ) त्रिफलेका काढ़ा ।

ऊपरकी आठों चीजें तैयार करके, भट्टीमें आग जलाओ। फिर सोनेके पतले-पतले पत्रोंको कलछेमें रख कर, कलछेको आगपर रखदो। जब पत्तर लाल हो जायँ, खूब तप जायँ, उनको 'नीबूके रसमें'



बुझाओ । पत्रोंको बासनसे निकाल कर फिर कलछेमें रखो और तपाओ, जब लाल हो जायँ, फिर नीबूके रसमें बुझा दो । इस तरह सोनेके पत्रोंको आगपर लाल कर-करके, सात बार “नीबूके रसमें” बुझाओ ।

बस, ठीक इसी तरह सोनेको तपा-तपाकर, काँजी आदि बाकी की सातों चीजोंमें सात-सात बार बुझाओ । आपको सोना  $७ \times ८ = ५६$  बार तपा-तपा कर, ऊपरकी आठों चीजोंमें—प्रत्येकमें सात बार—बुझाना होगा । इस तरह सोना शुद्ध और मारने लायक हो जायगा ।

### सोना शोधनेकी दूसरी विधि ।

सामान्य शुद्धि ।

सोनेके पत्रोंको, ऊपरकी विधिसे, आगमें तपा-तपा कर, नीचेकी पाँच चीजोंमें, सात-सात बार, बुझाओ ।

( १ ) तिलीका तेल, ( २ ) गायका माठा, ( ३ ) गोमूत्र, ( ४ ) काँजी, और ( ५ ) कुलथीका काढ़ा ।

इस तरह, तेल आदिमें सात-सात बार बुझानेसे, मामूली सफाई हो जाती है । इसके बाद, विशेष शुद्धि या खास तौरसे सोनेकी सफाई करनी चाहिये; तब वह शुद्ध और मारने योग्य होगा । सोनेमें ताम्बे प्रभृतिकी तरह दोष नहीं होते, इसलिये एक विशेष शुद्धिसे भी काम चल सकता है; पर दोनों तरहकी शुद्धि करनेसे भस्म में अधिक गुण आयेंगे ।

विशेष शुद्धि ।

सोनेके पत्रोंको, नीचेकी चीजोंमें, और भी सात-सात बार बुझानेसे विशेष शुद्धि हो जाती है :—

( १ ) काँजी, ( २ ) नीबूका रस, ( ३ ) माठा, और ( ४ ) गायका दूध । इसका मतलब यही है कि, सोनेके पत्रोंको तपा-तपा कर सात बार काँजीमें, सात बार नीबूके रसमें, सात बार माठामें और सात बार गायके दूधमें भाओ ।



## सोना मारने की विधि ।

पहली विधि

( १ ) शुद्ध मैनसिल और सिन्दूर, दोनों, बराबर-बराबर लेकर, पीस लो । पीछे आकके दूधकी भावना देकर यानी उस चूर्णको “आक के दूध”में घोटकर सुखा लो । सूखने पर, ताजा आकके दूधकी उस चूर्णमें फिर भावना दो और सुखालो । इस तरह सात बार आकके दूध की भावना दो और सुखालो । आकका दूध हर दिन ताजा लो और एक दिनमें एक भावना दो । यह काम सात दिनमें करो, यानी हर दिन आकके दूधमें चूर्णको खरल करो और हर दिन सुखाओ । सूखने पर, फिर आकके दूधमें खरल करो और सुखाओ ।

अब आप शोधे हुए सोनेको गलाओ । जब गल जाय, उसमें सोने के बराबर ही, भावना दिये हुए “मैनसिल और सिन्दूरके चूर्णका कल्क” डाल दो और आगको धमाओ, जिससे कल्क जल जाय । इसके बाद, फिर सोनेके बराबर ही मैनसिल और सिन्दूरका कल्क डालकर धमाओ । जब फिर कल्क जल जाय, तीसरी बार फिर यही कल्क डालो और धमाओ—इस बार सोना मर जायगा ।

नोट—मैनसिल और सिन्दूरको पानीके साथ सिलपर पीसनेसे जो लुगदी होगी, उसे ही कल्क समझो ।

( सुभोता )—इस विधिसे सोनेकी भस्म करनेके लिये नीचे लिखी चीजोंकी दरकार होती है :—

( १ ) शुद्ध मैनसिल और सिन्दूर बराबर ।

( २ ) आकका दूध सात दिन तक नित्य ताजा ।

( ३ ) आग धमानेकी धौकनी ।

( ४ ) सोना गलाने की बर्तन ।



## सोना मारनेकी दूसरी विधि ।

( २ ) दो तोले सोना, कबिस मिट्टीमें लपेट कर, आगमें लाल करके, केलेकी जड़के अर्कमें या अगस्तके फूलोंके अर्कमें बुझाओ । इस तरह, लाल कर-करके, सात बार बुझाओ ।

इसके बाद, जितना सोना हो उतना ही शुद्ध पारा उसमें मिलाकर खरल करो, यानी दो तोले सोनेमें दो तोले पारा मिलाकर खरल करो । जब दोनों एक हो जायँ, चार तोले “गन्धकका तेल” भी उसमें मिला दो और थोड़ी देर घोट कर, सराव-सम्पुटमें बन्द करके, कपरौटी कर दो । फिर एक फुट गहरा-चौड़ा लम्बा गड्ढा खोदकर उसमें तीस आरने कण्डे भर कर और सराव सम्पुटको कण्डोंके बीचमें रखकर फूँक दो ।

दूसरी बार; फिर सोनेको सम्पुटमेंसे निकाल कर, खरलमें डालकर, ऊपरसे “शुद्ध पारा २ तोले” डालकर खरल करो और “गन्धकका तेल” चार तोले डालकर, जरा घोट कर, ऊपरकी तरह सराव-सम्पुटमें रख, कपरौटी कर, सुखा, ३० आरने कण्डे गड्ढेमें भर, सराव सम्पुट को उनके बीचमें रख, फूँक दो ।

बस, ठीक इसी तरह, हर बार सोना निकाल कर, उसमें “दो तोले पारा और चार तोले गन्धकका तेल” दे-देकर घोटो और ऊपरकी तरह फूँको । इस तरह १४ बार घोटने और १४ आँच देनेसे सोनेकी भस्म हो जायगी ।

( सुमीता )—इस विधिसे सोनेकी भस्म करनेके लिये नीचे लिखी चीज़ोंकी दरकार होती है:—

( १ ) कबिस मिट्टी ।

अगस्तको अगथिया अगस्तिया और हथिया भी कहते हैं । यह इसकी साफ़ पहचान है, कि जब अगस्त मुनिके तारेका उदय होता है, तब इसके फूल खिलते हैं, अगस्तके पेड़ बगीचोंमें होते हैं । फूल लाल और सफ़ेद होते हैं ।



- ( २ ) केलेकी जड़का अर्क या अगस्तके फूलोंका अर्क ।  
 ( ३ ) दो तोले सोना ।  
 ( ४ ) २८ तोले शुद्ध पारा ।  
 ( ५ ) ५६ तोले गन्धकका तेल ।  
 ( ६ ) सरावोंका जोड़ा ।  
 ( ७ ) एक फुट गहरा-लम्बा-चौड़ा गड्ढा ।  
 ( ८ )  $३० \times १४ = ४२०$  आगने करण्डे ।

### सोना मारनेकी तीसरी विधि ।

( ३ ) सोनेका चूर्ण करके, “कुकुरौंधेके अर्क”में १२ घण्टे तक लगातार घोटो, जिससे सोना अर्कमें मिलजाय । फिर इसीमें सोनेकेसमान “शुद्ध पारा” भी मिला दो और खूब खरल करो । अब उसकी एक टिकिया बना लो और कुछ कुकुरौंधोंको पीसकर लुगदी बनालो । उस टिकियाको कुकुरौंधेकी लुगदीमें रख दो और उसे पिसे हुए कुकुरौंधेसे ही बन्द कर दो । फिर उस लुगदीको सराव-सम्पुटमें रख, एक कपरौटी कर, कपरौटीको सुखा, गजपुटमें फूँक दो; बस सोना मर जायगा ।

**सुभीता—**इस विधिसे भस्म करनेके लिये नीचे लिखी चीजोंकी जरूरत होगी :—

- ( १ ) कुकुरौंधेके वृक्ष एक सेर अन्दाजन ।  
 ( २ ) दो तोले सोना ।  
 ( ३ ) दो तोले शुद्ध पारा ।

❀ कुकुरौंधे को वङ्गलामें, ‘कुकुरमुता’ और मरहठीमें “कुकुरवन्दा” कहते हैं । जमना आदि नदियोंकी सजल भूमिके पास, ठण्डी जगहमें, कुकुरौंधा आप-से-आप पैदा हो जाता है । इसके पत्ते छोटे होते हैं, पर सूरतमें तमाखूके पत्तेजैसे होते हैं । फल पीले होते हैं । दवाके काममें जड़, पत्ते, फल आदि सभी अङ्ग लिये जाते हैं ।



( ४ ) सराइयोंका जोड़ा ।

( ५ ) गजपुट—गड्ढा ।

सोना-भस्मकी चौथी विधि ।

( ४ ) दो तोले सोनेके पत्तोंको, कैचीसे काट-काटकर, खूब छोटे-छोटे कर लो । फिर सोनेके बराबर दो तोले “शुद्ध पारा” लेकर दोनों को खरलमें डालकर, ५।६ घण्टे घोटो । जब सोना पारेमें मिल जाय, दो तोले “शुद्ध गन्धक” भी खरलमें डाल दो और तीन घण्टे तक घोटो; इसके बाद कपड़-छन किया “शुद्ध मैनसिल” भी दो तोले मिला दो और दो घण्टे घोटो । जब कजली बन जाय, उसे कपरौटी की हुई बिलायती पक्की शीशीमें भर दो !

फिर एक पक्की हाँडी ऐसी लो, जो शीशीके गले तक पहुँची हो । उस हाँडीके पैदेमें एक छेद कर दो । उस छेद पर अबरखका टुकड़ा रखकर, उस पर शीशी रख दो । शीशीके चारों ओर बालू खूब गरम करके भर दो । बालू शीशीके ठीक गले तक आ जाय, शीशी ज़रा भी बाहर न रहे, पर इतनी ऊँची न आवे कि, शीशीके भीतर बालू भर जाय । बालू भरते समय, शीशीका मुख कागसे बन्द कर दो । जब बालू भर जाय, मुँह खोल दो । फिर हाँडीके नीचे, पत्थरके कोयलोंकी आँच, तेज़ीके साथ कोई ६ घण्टे तक देते रहो । पहले मन्दी आग दो, फिर मध्यम आग दो और शेषमें आगको तेज़ कर दो ।

६ घण्टे बाद आग मत लगाओ । आग शीतल होने पर, शीशीको हाँडीसे निकालकर ऐसी कारीगरीसे तोड़ो, कि काँचके टुकड़े दवामें न मिलें । आपको शीशीके गलेमें “शिला सिन्दूर” और पैदेमें “सोनेकी भस्म” मिलेगी ।

नोट—अगर आप कजलीमें मैनसिल न मिलाकर, “हरताल” मिलावेंगे तो शीशीके गलेमें “ताल सिन्दूर” और पैदेमें “सोना-भस्म” मिलेगी ।

अगर आप मैनसिल या हरताल न मिलाकर “संखिया” मिलावेंगे, तो शीशीके गलेमें “मल्ल सिन्दूर” और पैदेमें “साना-भस्म” मिलेगी ।



भावमिश्रने भी लिखा है—“मैनसिल और गन्धक” को आकके दूधमें महीन पीसकर, उस लेपसे सोझा-चाँदी आदि किसी धातुके पत्रको बारम्बार लीप दो और फिर अग्निकी १२ पुट दो । इस तरह सोना आदि सभी धातुओंकी भस्म हो जायगी । मालूम नहीं, कि यह विधि कहाँ तक ठीक है । भावमिश्रजी कहते हैं—“सत्य गुरुवचो यथा । अर्थात् गुरुके वचनपर विश्वास रखकर कहता हूँ ।” जिन वैद्योंने हमारी तरह इस विधि की परीक्षा नहीं की है, कर देखें ।

सुभीता—इस विधिसे सोना-भस्म बनानेके लिये नीचे लिखी चीजोंकी दरकार होती है:—

- ( १ ) दो तोले सोनेके पत्र कैचीसे महीन काटे हुए ।
- ( २ ) दो तोले शुद्ध पारा ।
- ( ३ ) दो तोले शुद्ध गन्धक ।
- ( ४ ) दो तोले शुद्ध मैनसिल ।
- ( ५ ) कपरौटी की हुई काली दलदार बोटल ।
- ( ६ ) बालुका यन्त्रकी हाँडी और बालू ।
- ( ७ ) पत्थरके कोयलोंकी भट्टी ।
- ( ८ ) बोटलका कार्क और अबरखका टुकड़ा ।

अशुद्ध सुवर्णके दोष ।

अशुद्ध यानी बिना शोधे हुए सोनेकी भस्म बलवीर्य-नाशक, अनेक रोग-वर्द्धक, दुःख देनेवाली और मृत्यु करनेवाली होती है । अतः सोनेको खूब शोध कर मारना या भस्म करना चाहिए । साथ ही सोनेको तपाकर पहले ही देख भी लेना चाहिये । तपानेसे काला पड़ जाय, वह सोना भस्मके लिये न लेना चाहिये ।

अशुद्ध सुवर्ण-भस्मकी शान्तिका उपाय ।

आमलोंका चूर्ण दो तोले लेकर, शहदमें मिलाकर, तीन दिन तक चाटो । सोनेकी खराब भस्मसे हुए विकार नष्ट हो जायँगे ।



“भावप्रकाश”में लिखा है—मारा हुआ सोना शीतल, कामीके लिये कल्पवृक्ष, बलदायक, भारी, वद्धता तथा रोग नाशक, मधुर, कड़वा, कषैला, पाकमें मधुर, गिलगिला, पवित्र, पुष्टिकारक, नेत्रोंको हितकारी, बुद्धिको उत्तम करनेवाला, स्मरण-शक्ति बढ़ानेवाला, बल-वृद्धि करनेवाला, हृदयको प्रिय, आयुवर्द्धक, कान्तिकारक, वाणीको शुद्ध करने वाला यानी हकलाना—मिनमिनाना मिटानेवाला, स्थिरता करनेवाला, स्थावर-जङ्गम विष-नाशक, क्षय, उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोष नाशक है ।

### सुवर्ण-भस्मके अनुपान ।

मात्रा—२ चाँवलसे २ रत्ती तक ।

## अनुपान ।

- (१) शरीरके दाहमें—मिश्रीके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 (२) क्षयमें—त्रिकुटाके चूर्ण और घाँसें मिलाकर :सोना-भस्म ,  
 खाओ ।
- |  |   |   |   |   |
|--|---|---|---|---|
| (३) मन्दाग्निमें                                       | " | " | " | " |
| (४) श्वासमें   | " | " | " | " |
| (५) खाँसीमें   | " | " | " | " |
| (६) शरीरपुष्टिको—सोना-भस्म भाँगरेके स्वरसके साथ चाटो । |   |   |   |   |







- ( २३ ) शरीर-पुष्टिको—कमलकी केशरके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( २४ ) शरीरके दाहमें—नौनीं घीके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( २५ ) आयु-बढ़ानेको—शंखपुष्पीके रसके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( २६ ) शिरो रोगमें—मिश्री और घीके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( २७ ) पुत्र पैदा करनेको—बिदारीकन्दके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( २८ ) सोजाक और मूत्रकृच्छ्रमें—बड़ी इलायची, कपूर और मिश्रीके चूर्णके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( २९ ) तेरहों सन्निपातज्वरोंमें—अदरक और पीपरके रसके साथ सोना-भस्म सेवन करो ।  
 ( ३० ) प्रदरमें—काकमाचीके अर्कके साथ सोना-भस्म खाओ ।  
 ( ३१ ) आम्रातिसारमें—त्रिफलेके साथ सोना-भस्म सेवन करो ।  
 ( ३२ ) संग्रहणीमें—                   "                   "                   "  
 ( ३३ ) रजोधर्म शुद्ध करनेको—काकमाचीके अर्कके साथ सोना-भस्म सेवन करो ।  
 ( ३४ ) खूनी बवासीरमें—नागकेशर और गोदनदुद्धीके रसमें सोना-भस्म सेवन करो ।  
 ( ३५ ) बोल बन्द हो जानेपर बुलानेको—एक चाँवल-भर सोना-भस्म तीन चम्मच चायके साथ पिलाओ; आदमी बोल उठेगा ।



# चाँदी की भस्म की विधि।

चाँदी कैसी लेनी ।

“भावप्रकाश”में लिखा है:—भारी, चिकनी, कोमल, सफेद, घनकी चोट सहनेवाली, सुवर्ण आदिके मेलसे रहित और साफ चाँदी अच्छी होती है। मतलब यह है कि, जो चाँदी खूब सफेद, हथौड़ेकी चोटोंसे न टूटनेवाली और नर्म हो, वही दवाके कामको अच्छी होती है। सुवैद्य ऐसी चाँदी दवाके लिए चुनते हैं, जो रंगमें खूब सफेद होती है, मोड़नेसे मुड़ जाती है, छूनेसे चिकनी मालूम होती है, तपाने या टाँकी लगाने पर भी सफेद रहती है और तोलमें कम नहीं होती तथा हथौड़ेकी चोटसे फटती नहीं। आजकल जिसे ईटकी चाँदी कहते हैं, वह अच्छी होती है। पर लेनेसे पहले हर तरह परीक्षा कर लेना जरूरी है।

जो चाँदी कड़ी, बनाई हुई रूखी, लाल पीले पत्थरवाली और हल्की होती है तथा तपाने या कूटनेसे फट जाती है, वह चाँदी खराब होती है। वैसी चाँदी भूलकर भी न लेनी चाहिये।

चाँदी शोधनेकी तरकीब ।

“भावप्रकाश”में लिखा है—तेल, छाछ, काँजी, गोमूत्र और कुल्थीके काढ़ेमें, चाँदीके पतले-पतले पत्रोंको आगपर तपा-तपाकर, तीन-तीन बार बुझानेसे चाँदी शुद्ध हो जाती है।

चाँदीको तैल आदिमें तीन-तीन बार बुझानेसे ही चाँदीके शुद्ध हो जानेकी बात इसलिए लिखी है कि, चाँदीमें ताम्बे, पीतल या काँसीकी तरह दोष नहीं होते। पर, “शुद्धस्यशोधनं गुणाधिक्याय, मृतस्य



मारणं गुणाधिकाय” के वचनानुसार कितने ही वैद्य चाँदीको तैल और छाछ प्रभृति पदार्थोंमें सात-सात बार बुझानेकी सलाह देते हैं। श्याम-सुन्दर आचार्य इसे “सामान्य शुद्धि” लिखकर, विशेष शुद्धि करनेकी भी राय दे गये हैं। हमारी रायमें भी, चाँदीको उपरोक्त तैल आदिमें सात-सात बार बुझा लेनेसे ही काम चल जायगा। पर यदि कोई सज्जन उत्तम-से-उत्तम भस्म बनाना चाहें, वह ‘विशेष शुद्धि’ भी कर लें तो हर्ज नहीं; लाभ ही है। हाँ, मिहनत और खर्च जरूर है।

विशेष शुद्धि—चाँदीके पतले-पतले पत्रोंको आगमें तपा-तपाकर, नीचेके तीन पदार्थोंमें सात-सात बार बुझानेसे “विशेष शुद्धि” हो जाती है:—

( १ ) दाखोंका काढ़ा ।

( २ ) इमलीके पत्तोंका काढ़ा ।

( ३ ) अगस्तियाके पंचांगका काढ़ा ।

आप जब चाँदीकी सामान्य और विशेष दोनों शुद्धि कर लें, तभी भस्म करनेकी तैयारी करें। बिना शोधी हुई चाँदी हरगिज काममें न लावें। न हो तो “भावप्रकाश” के मतानुसार तीन-तीन बार ही तैल, छाछ आदिमें बुझा लें। तैलादि पाँचों पदार्थोंमें प्रायः सभी धातुओंकी शुद्धि हो जाती है।

### चाँदी-भस्मकी विधियाँ ।

चाँदी भस्मकी पहिली विधि ।

( १ ) चाँदी मारनेके लिए आप “शुद्ध तपकिया हरताल”को नीबूके रसमें, तीन घण्टे तक, खरल करो। फिर तीन तोले चाँदीके पत्तरोंपर, एक तोले हरतालका, जो खरल की गई है—लेप कर दो, यानी ऊपर नीचे उस खरल की हुई हरतालको लहेस दो। इसके बाद हरताल, लहेसे हुए पत्रोंको सुनारकीसी मूसमें रखकर, दूसरी मूस उसपर लगाकर, मुँह बन्द कर दो और पोछे कपड़मिट्टी करके सुखाओ।



सूखनेपर, तीस कण्डोंके बीचमें, कपड़मिट्टी की हुई मूसको रखकर आग लगा दो । जब आग शीतल हो जाय, उसे निकाल लो ।

निकाल कर, पत्तरोँपर फिर नीबूके साथ घुटी हुई हरतालका लेप करो और ऊपरकी विधिसे सब काम करके ३० कण्डोंमें फूँक दो ।

इस तरह १४ बार करो, यानी बार-बार आग ठण्डी होने पर, मूसमेंसे चाँदीको निकाल लो और नीबूके साथ घुटी हरतालका पत्तरोँपर लेप करो । इसके बाद उन्हें मूसमें रखकर बन्द करो और ३० कण्डोंमें फूँक दो । चौदह बारमें, उत्तम चाँदीकी भस्म बन जायगी ।

नोट—( १ ) हर बार हरतालका लेप करना ज़रूरी है ।

( २ ) हरतालकी जगह सोनामक्खी लेकर, उसको “थूहरके दूध”में तीन घण्टे तक खरल कर लो । फिर, हरतालकी तरह, ३ तोले चाँदीके पत्रोंपर एक तोले सोनामक्खीका लेप करके—ठीक ऊपरकी विधिसे—चौदह आँच देकर, चाँदीकी भस्म कर सकते हैं । और कोई भेद नहीं है, केवल हरतालकी जगह “सोनामक्खी” लेनी होगी और थूहरके दूध में खरल करनी होगी ।

**सुभीता**—इस विधिसे चाँदी फूँकनेके लिये नीचे लिखी चीजें दरकार होती हैं :—

( १ ) नीबूके रसमें, पहरभर, घुटी हुई शुद्ध तपकी हरताल ।

( २ ) सुनारकी दो मूस—ऊपर नीचेको ।

( ३ ) १४ आँचके लिये  $१४ \times ३० = ४२०$  कण्डे ।

**चाँदीकी भस्मकी दूसरी विधि ।**

( २ ) पहले पाँच तोले शुद्ध चाँदीको गला लो । फिर उस गली हुई पतली चाँदीमें पाँच तोले “शुद्ध पारा” मिला दो और खरल करो । इसमें देर न करो, फौरन घोटना शुरू करो । जब चाँदी और पारा एक हो जायँ, तब उसीमें पाँच तोले “शुद्ध गन्धक” डाल दो और घोटो । इसके बाद, कपड़-छन किया “शुद्ध हरताल” पाँच तोले और मिला दो और घोटो । जब कजली हो जाय, सानो कपरौटी पक्की की हुई



विलायती शीशीमें उसे भर दो । फिर “बालुका यन्त्र”में रखकर १२ घण्टे आग दो । स्वाँग शीतल होने पर, शीशीको निकाल लो । शीशाको चतुराईसे तोड़ कर, पेंदेसे “चाँदी-भस्म” और गलेसे “लाल-सिन्दूर” निकाल लो ।

नोट—बालुका यन्त्रकी विधि हमने चन्द्रोदय रसकी क्रिया में, पृष्ठ ३३२ में समझाई है, वहाँ देखलो ।

इस विधिसे चाँदीकी भस्म बनानेमें नीचे लिखी चीजोंकी जरूरत होती है :—

- ( १ ) पाँच तोले शुद्ध चाँदी ।
- ( २ ) पाँच तोले शुद्ध पारा ।
- ( ३ ) पाँच तोले शुद्ध गन्धक ।
- ( ४ ) पाँच तोले शुद्ध हरताल ।
- ( ५ ) सात कपौटी की हुई शीशी ।
- ( ६ ) बालुका यन्त्र ।

### चाँदीकी भस्मकी तीसरी विधि ।

( ३ ) आप किसी देशी राज्यका विशुद्ध चाँदीका एक रुपया लेलो । उसे तपा-तपाकर तैल, छाड़, काँजी आदिमें तीन-तीन बार बुझालो ।

फिर थोड़ासा गोबर लेकर, उसपर तीन तोले “अजवायन”—रुपयेकी चौड़ाई जितनी जगहमें—एक जगह रख दो । अजवायनपर रुपया रख दो । रुपयेके ऊपर, फिर तीन तोले “अजवायन” रख दो । ऊपरसे गोबर रख कर गोला सा बना दो; यानी चाँदी और अजवायन न दीखें, इस तरह बन्द कर दी; पर अजवायन रुपयेके नीचे ऊपरसे न हटे । उस गोबरके गोलेको सुखा लो । फिर चार सेर कण्डे लेकर उनके बीचमें गोबरके गोलेको रखकर फूँक दो । इस तरह करके फिर रुपयेको निकाल लो और ऊपर की विधिसे, उसके नीचे-ऊपर तीन तोले “अजवायन” बिछाकर, गोबरमें बन्द कर और सुखाकर,



चार-चार सेर कण्डोंमें बारह बार फूँको; अजवायन नीचे-ऊपर हर बार रखो । बारहवाँ बारमें रुखा फूँत जैसा हो जायगा । इसी तरह आप शोधे हुए चाँदीके रुपये-जितने मोटे पत्तरको भी फूँक सकते हैं ।

नोट—इस कुश्तेकी मात्रा १ रस्तीकी है । “शहद”के साथ खानेसे खूब ताकत लाता और शरीर पुष्ट करता है ।

**सुभीता**—इस विधिसे चाँदी फूँकनेके लिए इन चीजोंकी दरकार होती है:—

- ( १ ) देशी राज्य का एक रुपया ।
- ( २ ) बहत्तर तोले अजवायन । ६ तोले हरबारके हिसाबसे, बारह बारके लिए ।
- ( ३ ) गोबर ।
- ( ४ ) १२ बार फूँकनेको  $४ \times १२ = ४८$  सेर कण्डे ।

**चाँदीकी भस्मकी चौथी विधि ।**

( ४ ) एक बर्तनमें नीबूका रस खूब भर दो । चूल्हेपर आग जलाकर, एक पक्के मिट्टीके शकोरेमें चाँदीके पत्तर रख लो और उन्हें आग पर तपाओ । जब वे लाल हो जायँ, उन्हें “नीबूके रस”में बुझाओ । इस तरह तिरेसठ बार तपा-तपाकर, नीबूके रसमें ६३ बार बुझानेसे चाँदीकी भस्म हो जायगी । हर बार बुझानेसे भस्म हो-होकर गिरेगी, उसे जमीनपर मत गिरने देना । जब भस्म हो जाय, उसे खरलमें ढालकर नीबूके रसके साथ ३ घण्टे तक घोटो । घुट जानेपर, टिकिया सी बना लो और धूपमें खूब सुखा लो । खूब सूख जानेपर उसे सराइयोंमें बन्द करके, कपड़-मिट्टी करो और सुखा लो । इसके बाद एक फुट गहरा और उतना ही लम्बा-चौड़ा खड्डा खोदकर, उसमें जंगली कण्डे भरकर, बीचमें कपरौटी की हुई सराई रखकर, आग लगा दो । आग शीतल होनेपर, सराइयोंको खोलकर भस्मको निकाल लो । यह भस्म खूब सफेद और खाने योग्य होगी ।



सुभीता—इस विधिसे चाँदीकी भस्म बनानेमें नीचे लिखी चीजोंकी दरकार होती है:—

- ( १ ) नीबुओंका रस—आधसेर-तीन पाव ।
- ( २ ) मिट्टीका पका शकोरा ।
- ( ३ ) सराइयोंका जोड़ा ।
- ( ४ ) एक फुट गहरा-चौड़ा-लम्बा खड्डा ।

### चाँदीकी भस्मके गुण ।

चाँदीकी भस्म—शीतल, कषैली, पाक और रसमें मधुर, दस्तावर, जवानीको ठहरानेवाली, चिकनी, लेखन, वात और पित्त-नाशक एवं प्रमेह आदि रोगोंको नाश करनेवाली है ।

वैद्योंने इसे “प्रमेह” पर खास तौरसे सेवन करनेकी सलाह दी है । यह खूब ताकत लाती और वीर्य बढ़ाती है । यह शीतल है, अतः दाह-नाशक है । मन्दाग्नि, क्षय, पाण्डुरोग, तापतिल्ली, खाँसी, मृगी, दर्द, नवीन ज्वर, विषम ज्वर, यकृत और मदात्यय आदिको नाश करती है । उम्र, वीर्य, बल और बुद्धि बढ़ानेमें अव्वल दर्जेकी चीज है । यह भूख लगाती और विषको फौरन नाश करती तथा कमजोरीको मार भगाती है ।

### अशुद्ध चाँदीकी भस्मके उपद्रव ।

बिना शोधी या बेक्कायदे बनाई हुई चाँदीकी भस्म खुजली, पीलिया, सिर-दर्द, कमजोरी और वीर्य-नाश आदि रोग करती है ।

### उपद्रव-शान्तिका उपाय ।

सवेरे-शाम, दो या तीन तोले मिश्री और शहद, तीन दिन, घाटनेसे दूषित चाँदीकी भस्म खानेके उपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

### चाँदीकी भस्म सेवन करनेके अनुपान ।

मात्रा—४ चाँवलसे २ रत्ती तक ।



## अनुपान—

( १ ) बीसों प्रमेहोंमें बबूलकी छाल, महुएकी छाल और कटहलकी छालको जलमें पीस-छानकर, उसमें “चाँदीकी भस्म मिलाकर पीओ ।

( २ ) प्रमेहोंमें—दालचीनी, इलायची और तेजपातके चूर्णमें चाँदीकी भस्म मिलाकर खाओ ।

( ३ ) वातपित्तके रोगोंमें—त्रिफलेके चूर्णके साथ चाँदीकी भस्म खाओ ।

( ४ ) पाण्डुरोगमें—सोंठ, मिर्च और पीपरके चूर्णके साथ चाँदीकी भस्म खाओ ।

( ५ ) क्षयमें ” ” ”

( ६ ) बवासीरमें ” ” ”

( ७ ) श्वासमें ” ” ”

( ८ ) खाँसीमें ” ” ”

( ९ ) उदर रोगोंमें ” ” ”

( १० ) तिमिर रोगोंमें ” ” ”

( ११ ) पित्तके रोगोंमें ” ” ”

( १२ ) नवीन ज्वरमें—पीपल और शहदेके साथ चाँदी-भस्म खाओ ।

( १३ ) विषम ज्वरमें ” ” ”

( १४ ) पित्त ज्वरमें ” ” ”

( १५ ) इकतरामें ” ” ”

( १६ ) तिजारीमें ” ” ”

( १७ ) सर्व ज्वरोंमें—पीपल और इलायचीके चूर्णके साथ चाँदीकी भस्म खाकर, ऊपरसे धनियेका दो तोले अर्क पी लो । ज्वर नाश होकर, नया खून पैदा होगा और बल बढ़ेगा ।

( १८ ) बुद्धि बढ़ानेको—बबके साथ चाँदी-भस्म खाकर गायका दूध पीओ ।



( १६ ) वायु-शूलमें—बचके साथ चाँदीकी भस्म खाकर गायका दूध पीओ ।

( २० ) उन्मादमें—बच, ब्रह्मदण्डीके चूर्ण और धीके साथ चाँदीकी भस्म खाओ ।

( २१ ) मृतीमें                   "                   "                   "

( २२ ) बाँझपना नाश करनेको—बछड़ेवाली गायके दूधमें "अस-गन्धकी जड़" पीसकर, उसमें "चाँदीकी भस्म" मिलाकर, १ मास सेवन करनेसे बाँझ पुत्र जनती है ।

( २३ ) शरीर-पुष्टिको—पानमें रखकर चाँदीकी भस्म खाओ ।

( २४ ) वीर्य-वृद्धिको—खोये और मिश्रीमें चाँदीकी भस्म खाओ ।

( २५ ) बन्ध्यापन नाश होनेको—मातलिंगीका बीज बच्चेवाली गायके दूधमें पीसकर, उसमें चाँदी-भस्म मिलाकर ४० दिन खाओ ।

( २६ ) हिचकीमें—आमले और पीपरके चूर्णमें चाँदी-भस्म खाओ ।

( २७ ) बाँझपना नाश करनेको—शिवलिंगीके बीजके साथ चाँदी-भस्म खाओ ।

( २८ ) जीर्णज्वर और तिल्लीमें—शिवलिंगके बीजके साथ चाँदीकी भस्म खाओ ।

( २९ ) खाँसीमें                   "                   "                   "

( ३० ) वायुगोलेमें                   "                   "                   "

( ३१ ) आनन्द बढ़ानेको—शहद और अदरकके रसमें चाँदीकी भस्म खानेसे अनेक रोग नाश होकर सुख होता है ।

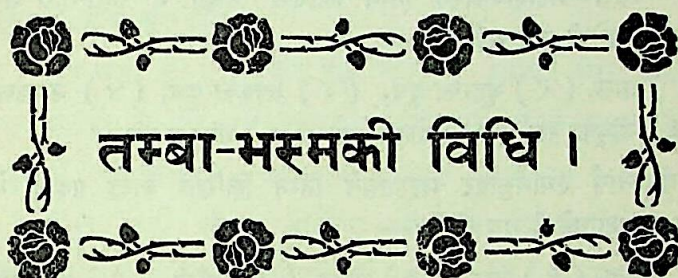
( ३२ ) धातुपुष्टिको—छोटी इलायची, बंसलोचन और सत्त-गिलोय एक-एक रत्तीके साथ, शहदमें मिलाकर चाँदीकी भस्म खाओ । ऊपर से मिश्री-मिला दूध पीओ ।

( ३३ ) बल-वीर्यवृद्धिको—बंसलोचन, छोटी इलायची, केशर, और गुलाबजलमें घुटेमोती—ये सब रत्ती-रत्तीभर और चाँदीकी



भस्म १ या २ रत्ती—इन सबको “शहद”में मिलाकर चाटो और ऊपर से दूध-मिश्री पीओ ।

( ३५ ) धातु पुष्टिको—शहदमें मिलाकर चांदीकी भस्म खाओ ।



### ताम्बा कैसा लेना ?

“भावप्रकाश”में लिखा है—जो ताम्बा गुड़हरके फूलकी सी कान्ति वाला, चिकना, भारी, घनकी चोट सहन करनेवाला और लोहा तथा शीशा आदिसे रहित हो—वह ताम्बा मारने योग्य है । नैपाली ताम्बा, जिसके बासन वाजारोंमें बहुत मिलते हैं, इस कामके लिये अच्छा होता है ।

### ताम्बा शोधनेकी विधि ।

ताम्बेका शोधन अच्छी तरह करना चाहिये, क्योंकि ताम्बा विष से भी बुरा है । विषमें तो केवल एक ही दोष है, पर अशुद्ध ताम्बे भ्रम, वमन, विरेचन, पसोना, उत्क्लेद, मूर्च्छा, दाह और अरुचि—ये आठ दोष हैं । कहा है—

न विषम विषमित्याहुस्ताम्रन्तु विषमुच्यते ।

एको दोषेविषे ताम्रे त्वष्टौ दोषाः प्रकीर्तिताः ॥

जिसको विष कहते हैं, वह विष नहीं है, वास्तवमें ताम्बा ही विष है; क्योंकि विषमें तो एक ही दोष है, ताम्बेमें आठ दोष हैं ।

ताम्बेके पतले कंटकवेधी पत्रोंको अग्निमें तपाओ और लाल होनेपर उन्हें नीचे लिखी चीजोंमें तीन-तीन बार बुझाओ :—



( १ ) तेल, ( २ ) छाछ, ( ३ ) काँजी, ( ५ ) गोमूत्र, और ( ५ ) कुल्थी-काच—इन पाँचोंमें सभी धातुएँ शुद्ध होजाती हैं। “भावप्रकाश” कर्त्ताने इन्हीं पाँचोंमें ताम्बेको शुद्ध करनेकी राय दी है।

नोट—रसरज-महोदधिकारने निम्न लिखित चीज़ों में सात-सात बार बुझाने या शोधनेकी बात कही है:—

( १ ) छाछ, ( २ ) थूहरका दूध, ( ३ ) आकका दूध, ( ४ ) नमकका जल, ( ५ ) नीबूका रस, ( ६ ) गोमूत्र, और ( ७ ) गायका दूध ।

रसायनाचार्य श्यामसुन्दर महाशयने निम्न लिखित बारह पदार्थों में सात-सात बार शोधनेकी राय दी है:—

( १ ) तेल, ( २ ) माठा, ( ३ ) गोमूत्र, ( ४ ) काँजी, ( ५ ) कुल्थीका काढ़ा, ( ६ ) इमलीकी छालकी पत्तियोंका काढ़ा, ( ७ ) नीबूका रस, ( ८ ) ग्वार-पाठेका रस, ( ९ ) जमीकन्दका स्वरस, ( १० ) गायका दूध, ( ११ ) नारियल के भीतरका पानी, और ( १२ ) शहद ।

हमारी रायमें उपरोक्त बारह पदार्थोंमें ताम्बेको शोधना सबसे अच्छा है । जितना ही परिश्रम अधिक होगा, फल भी उतनाही अच्छा होगा । और धातुओं की शुद्धिमें कमी रहनेसे उतनी हानि नहीं, पर ताम्बेकी शुद्धिमें कसर रहनेसे मयानक हानि है । इसलिये ताम्बेकी शुद्धिमें आनाकानी अच्छी नहीं ।

नोट—( १ ) तेल तिलीका लें, चाहे सरसोंका ( २ ) दूध गायका लें, चाहे भैंसका ( ३ ) नारियलका पानी न मिले, तो नारियलके तेलसे काम हो सकता है, ( ४ ) यदि जमीकन्दका स्वरस न मिले, तो ताम्बेके पत्रोंको जमीकन्द में रखकर, तीन बार गजपुटकी आग देनेसे काम चल सकता है, ( ५ ) इमली की छाल न मिले तो, पत्तियोंसे भी काम निकल सकता है ।

### ताम्बा मारनेकी विधि ।

पहली विधि ।

( १ ) ताम्बेके छोटे-छोटे पत्रे करके, तीन दिन तक, नीबूके रसमें स्वेद दो; पीछे पत्रोंको खरलमें डालकर, ताम्बेका चौथाई “शुद्ध पारा” डालकर तीन घण्टे तक खरल करो । फिर निकाल कर, तीन घण्टे तक, “नीबूके रसमें” खरल करो ।

पीछे ताम्बेसे दूनी “शुद्ध गन्धक” लेकर, पत्रोंपर लपेटकर, गोला



बना लो । फिर पुनर्नवाको पानी के साथ, भाँग की तरह, पीसकर, उसका गोलेपर दो-दो अंगुल मोटा लेप करो ।

फिर इस गोले को एक सरावेमें रखकर, खाली जगह में बालू भर दो और ऊपरसे दूसरा सरावा ढककर, सन्धियोंको राख और नोन से बन्द कर दो ।

सब काम हो जाने पर, उसे चूल्हेपर रखकर आग जला दो । फिर हलकी, मध्यम और तेज आग लगाओ; यानी अनुक्रमसे आग बढ़ाओ । यह आग १२ घण्टे तक बराबर लगती रहे ।

फिर आग शीतल होनेपर, ताम्बेको निकाल लो । खरलमें डालकर ३ घण्टे तक “जमीकन्दका रस” दे-देकर खरल करो । खरल किये हुए ताम्बेका गोला बनाकर, उसे जमीकन्दके पेटमें रखलो उस जमीकन्दका मुँह जमीकन्दके टुकड़ेसे बन्द करके, उसपर एक अँगूठे जितना ऊँचा-मोटा मिट्टीका लेप कर दो । फिर फौरन ही उसे गजपुटमें रखकर फूँक दो । इस तरह ताम्बा मर जायगा और उसमें वमन, विरेचन और उत्क्लेद आदि कोई दोष न रहेगा ।

सुभोता—इस विधिसे ताम्बा-भस्म बनानेके लिये नीचे लिखी चीज़ोंकी दरकार होती है:—

- ( १ ) ताम्बेके छोटे-छोटे पत्तर ।
- ( २ ) नीबुओंका रस ताम्बा औटाने और खरल करनेको ।
- ( ३ ) ताम्बेसे दूनी शुद्ध गन्धक ।
- ( ४ ) पुनर्नवा ।
- ( ५ ) सराइयोंका जोड़ा ।
- ( ६ ) बालू ।
- ( ७ ) राख और नमक—सन्ध बन्द करने को ।
- ( ८ ) चूल्हा ।



( ६ ) जमीकन्दका रस और साबत जमीकन्द ।

( १० ) गजपुट-गजभर गहरा-लम्बा-चौड़ा गड्ढा ।

दूसरी विधि ।

( २ ) बन-गोभीको सिलपर पीसकर लुगदी बनालो । लुगदी वज्रन में एक सेर हो । उसमें दो तोले शुद्ध ताम्बा रख दो और ऊपरसे लुगदीके मसालेसे ही मुँह बन्द करके, मुलतानी मिट्टी और कपड़ेकी सात तह लपेट दो और सुखा लो । फिर दो मन आरने कण्डोंके बीचमें उस गोलेको रखकर आग लगा दो, भस्म हो जायगी । इसे सब काम में ले सकते हो । मात्रा—आधे चाँवलसे एक चाँवल तक ।

नोट—“सागवीत्र” नामक जड़ीके पत्तोंकी लुगदीमें अथवा “काकजंघा”की लुगदीमें ताँबा रखकर, ठीक ऊपरकी विधिसे काम करनेसे सर्वोत्तम ताम्बा-भस्म बनती है । इस भस्मकी वेइन्तहा तारीफ है । ताम्बा खूब शोधकर लेना चाहिये; क्योंकि इसमें विष बहुत है । इन दोनों बूटियोंसे बनी भस्म ज्यादा से ज्यादा १ रत्ती तक खा सकते हैं, पर बन-गोभी वालीकी मात्रा एक चाँवल मर है । एक रत्ती भस्म पानमें रखकर, सवेरे-शाम खाने और दूध पीने तथा केवल दूध और भातका आहार करनेसे सात दिनमें खूब पुरुषार्थ बढ़ता है ।

सुभीता—इस विधिसे ताम्बा-भस्म बनानेके लिये नीचे लिखी चीजोंकी दरकार होती है:—

( १ ) बनगोभी २ सेर ।

( २ ) तो तोले शुद्ध ताम्बा ।

( ३ ) मुलतानी मिट्टी और कपड़ेके चीथड़े ।

( ४ ) दो मन जंगली कण्डे ।

ताम्बेकी भस्मकी सहज तरकीब ॥

तीसरी विधि ।

शुद्ध पारा और गंधक मिलाकर खूब खरल करो । अब इस कज्जलीमें बड़े नीबूका रस डालो और घोटो । जब लेप-सा हो जाके



इसे शुद्ध ताम्बेके पत्तरोपर लहेस दो । इस ल्हिसे पत्तरोको एक मजबूत कपरौटी किये हुए मिट्टीके वर्त्तनमें रखो । ऊपरसे ढक्कन बन्द करके गजपुटमें फूँक दो ।

अमृतीकरण—ताम्बा-भस्मको नीबू प्रभृतिके खट्टे रसमें खरल करके एक गोला बना लो । इस गोलेको जमीकन्द या सूरनमें रखकर सूरनके टुकड़ोंसे मुँह बन्द कर दो । अब सूरन—जमीकन्दके चारों तरफ मिट्टी लहेस कर सुखा लो । सूखने पर सूरनको गजपुटमें फूँक दो । बस, यही ताम्बेका अमृतीकरण है । ताम्बेकी भस्मका अमृतीकरण कर लेनेसे ताम्बेसे होने वाले वमन, भ्रम और दस्त आदि उपद्रव नहीं होते ।

नोट—पारे और गन्धककी कजली न हो, तो हिंगुलको बड़े नीबूके रसमें घोटकर, पत्तरोपर इसीका लेप कर दो ।

सुभीता—इस विधिसे ताम्बा-भस्म बनानेके लिये नीचे लिखी चीजोंकी दरकार होती है:—

- ( १ ) शुद्ध पारे और गन्धककी कजली ।
- ( २ ) बड़े नीबूओंका रस ।
- ( ३ ) शुद्ध ताम्बेके पत्तर ।
- ( ४ ) कपरौटी किया हुआ मिट्टीका बासन मय ढक्कनके ।
- ( ५ ) गजपुट—गड्ढा ।
- ( ६ ) जमीकन्द या सूरन—अमृतीकरणको ;

सूचना ।

“काँसी और पीतलकी भस्म” भी ठीक इसी तरकीबसे तैयार हो सकती है ।

ताम्बा-भस्म सेवनके अनुपान

( १ ) हिचकी रोगमें—नीबूके रस और नीबूके बीजोंके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।



(३) आँवके दस्तोंमें—आमले और पीपलके चूर्णके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।

(४) संग्रहणीमें—सोंठके चूर्ण और घीके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।

( ५ ) अतिसारोंमें—कच्चे बेलको भूँजकर निकाले हुए रसके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।

( ६ ) नामर्दामें—मिश्री २ तोले, खोआ ५ तोले, छोटी इलायची दो माशे और ताम्बा-भस्म १ रत्ती,—इन सबको मिलाकर ३ मास खाओ और ऊपरसे गायका दूध पीओ ।

( ७ ) समस्त प्रमेहोंमें—गूलरके फलके चूर्णके साथ ताम्बा भस्म खाओ ।

( ८ ) कलेजेके दाह और पीड़ामें—अनारके दानोंसे रसमें ताम्बा-  
भस्म खाओ ।

( ६ ) वात-पित्त-कफके नाशार्थ—बड़ी इलायची और मिश्रीके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।

(१०) अजीर्ण न होने देनेको—अदरकके स्वरस, छोटी हरड़ और सैधे नोनके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।

( ११ ) पित्तज्वरमें—बताशेके साथ ताम्बा खाओ ।

( १२ ) वातज्वरमें पीपलके चूर्णके साथ ताम्बा-भस्म खाओ ।

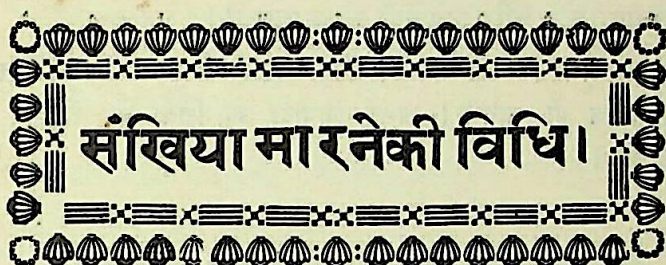
(१३) कफज्वरमें                "                "                "

( १४ ) १३ सन्निपात में—अदरकके रस और मिर्चोंके साथ ताम्बा-  
-भस्म खाओ ।

( १५ ) पेटके फूलनेमें—१ रत्ती ताम्बा-भस्म टेसूके फूलोंके काढ़ेमें खाओ ।

( १६ ) पेशाब बन्द होनेमें—टेसूके फूलोंके काढ़ेमें तम्बा-भस्म





### संख्या मारनेकी पहली विधि ।

संख्या दो तोले लेकर रख लो । फिर “मूलीकी एक सेर राख” तैयार करो । एक हॉडीमें मूलीकी राख आध सेर रख दो, उसपर संख्या रख दो । फिर ऊपरसे शेष मूलीकी राख रखकर हाथसे दबा दो । हॉडी के मुँहको पारीसे बन्द करके कपरौटी कर दो ।

चूल्हेमें चिरागाकी लौ जितनी आग जलाकर, उसपर हॉडी रख दो और दिन-भर वैसी ही मन्दी-मन्दी आग लगने दो । इस तरह संख्या शुद्ध हो जायगा ।

संख्या की मात्रा आधे चाँवलकी है । इससे अधिक मत लेना । यह मारक विष है । थोड़ा खानेसे रोग नाश करता और अधिकसे मार डालता है । इससे खाँसी, श्वास, शीतज्वर, कोढ़, लकवा और नामर्दी आदि रोग नाश होते हैं ।

इसका अनुपान “दूध, मिश्री और घी” है ।

### संख्या मारने की दूसरी विधि ।

पापड़खार चार तोले लेकर, उसमेंसे आधा एक मिट्टीकी सराईमें रखो । उस पर एक तोले संख्या रख दो । ऊपरसे बाक्रीका पापड़खार रख दो । फिर पारी या सराईपर दूसरी पारी या सराई रखकर, कपड़मिट्टी करके सुखा लो और बीस सेर कण्डोंमें रखकर फूँक दो । संख्या मर जायगा ।



खुराक—आधा चाँवल । अनुपान—दूध, मिश्री और घी । यह कुम्बतेबाह, कोढ़ और लकवेकी खास दवा है ।

नोट—अगर किसीको संखियेका विष चढ़ा हो तो उसे गरम घी पिलाओ । विषकी शान्ति हो जायगी । अगर ज़ियादा खा लिया हो, तो क्रय और दस्त कराओ ।

## हरताल-भस्मकी विधि ।

### हरताल की शोधन-विधि ।

इस कार्यके लिए तपकी हरताल ही लेनी चाहिये । इसको

- ( १ ) त्रिफलेके काढ़े,
- ( २ ) काँजी,
- ( ३ ) पेठेके रस, और
- ( ४ ) तिलीके तेल

में तीन-तीन घण्टे तक, दोला यन्त्र की विधिसे पचाओ । इसके बाद १२ घण्टे तक “चूनेके पानी”में स्वेदन करो । इतना काम करनेपर, हरताल शुद्ध और सब काम लायक हो जाती है ।

### पहली विधि ।

( १ ) आप तोले-भर शुद्ध हरतालको एक इन्द्रायणके फलमें रख दो, फिर उसपर उसका टुकड़ा रखकर छेद बन्द कर दो और ऊपरसे चार कपरौटी करके सुखा लो । सवा सेर आरने कण्डोंके बीचमें उस गोलेको रखकर, आग लगा दो । इस तरह २१ इन्द्रायणके फलोंमें हरतालको रखो और २१ ही बार सवा-सवा सेर कण्डोंकी आगमें फूँक दो । २१ वीं बारमें उत्तम भस्म हो जायगी ।



## दूसरी विधि

( २ ) छटाँक-भर हरतालको पहले दहीमें डालकर सात रोज तक रखी रहने दो । सात रोज बाद निकालकर, धीग्वारके अर्कमें खरल करके टिकिया बना लो ।

इसके बाद पीपलके वृक्षकी लकड़ियाँ जलाकर, अढ़ाई सेर राख करलो और उसे कपड़ेमें छान लो ।

एक हाँडीपर पाँच-सात पक्की कपरौटी करके सुखा लो । फिर उस हाँडीमें सवा सेर राख—यही पीपलकी राख—भर दो और उसपर हरतालकी घुटी हुई टिकिया रख दो । टिकिया पर बाक्री बची हुई सवा सेर पीपलकी राख रखकर हाथसे दबा दो । फिर चूल्हेमें बेरकी लकड़ी जलाकर, चूल्हे पर हाँडी रख दो । आग खूब मन्दी रखो । अगर राख में दर्ज हो जाय, तो थोड़ी सी वही पीपलकी राख और डालकर दबा दो । इसके लिये हाँडीकी बराबर देखते रहो । राखमें दराज आवे, तो राख डालकर दबा दो और आगको और भी मन्दी कर दो । इस तरह लगातार १८ घण्टे मन्दी-मन्दी आग लगने दो ।

१८ घण्टे बाद, आग शीतल होनेपर हाँडीको उतारकर टिकियाको निकाल लो । टिकियापर कुछ राख जमी होगी, उसे चाकूसे छील-छील कर उतार लो । नीचे सफेद हरताल-भस्म मिलेगी । अगर कुछ पीलापन हो, तो दूसरे दिन फिर ऊपरकी विधिसे पीपल-वृक्षकी राख ऊपर-नीचे रखकर, बीचमें टिकिया रखकर, दिन-भर आग लगाओ । इस बार कसर मिट जायगी—हरताल सफेद हो जायगी ।

नोट ( १ )—अगर आप हाँडीकी ओर न देखेंगे, हरतालपर रखी राखमें दराज हो जायगी और आप तत्काल और राख डालकर दराजको बन्द न कर देंगे, तो हरताल उड़ जायगी । यह हरताल बड़ी गुणकारक है । लाला खूब-चन्द की पोथी देखकर हमने कई बार काम लिया, वास्तवमें काबिल तारीफ है ।

( २ )—ठीक यही तरकीब संखिया तैयार करनेकी है; फर्क इतना



ही है, कि हरतालको पीपलकी राख लेनी होती है, पर संख्याको “आधाभारे” की राख लेनी होती है ।

## हरताल मानने की विधि ।

शुद्ध तबकिया हरताल को खरलमें डाल, ऊपरसे पुनर्नवाका या सांठो-का रस दे-देकर १२ घण्टे तक खरल करो और फिर पूरी जैसी गोल टिकिया बनाकर तेज धूपमें सुखा लो ।

फिर एक हाँडीमें—उसके आधे पेट तक—पुनर्नवाका खार या उसकी राख भर दो । राखपर हरतालकी टिकिया रख दो और ऊपरसे फिर वही पुनर्नवाकी राख या खार दाब-दवाकर भरदो । हाँडीके मुँह पर पारी ढक दो और सन्ध्योंको कपड़-मिट्टीसे बन्द करके चूल्हे पर चढ़ा दो । पहले मन्दी, फिर मध्यम और फिर तेज आग करदो । इस तरह पाँच दिन तक अखण्ड—लगातार आग लगाओ । परमात्मा की दयासे हरताल मर जायगी । यह भस्म खानेके लिये उत्तम है । मात्रा १ रत्तीकी है ।

## हरताल भस्मकी परीक्षा ।

इस तरह बनाई भस्म सफ़ेद होती है । अगर इसमें कुछ भी पीलापन दीखे, तो कच्ची समझो । इसकी सहज परीक्षा-विधि यह है कि आप एक लोहेके बर्तनको आगमें खूब लाल करलें । उस पर थोड़ीसी हरताल-भस्म डाल दें । अगर कुछ भी धूआँ दीखे, तो भस्मको कच्ची समझें । जिस भस्मके डालनेसे धूआँ न उठे, उसे उत्तम समझें ।

नोट—अगर भस्म कच्ची हो, तो टिकियाको फिरसे उसी रीतिसे हाँडीमें पुनर्नवाकी राखके बीचमें रखकर, मुँह बन्द करके, २४ घण्टे आग देनी चाहिये । इस तरह वह सफ़ेद और निर्धूम हो जावेगी—गरम लोहपर डालनेसे धूआँ न उठेगा ।



## अशुद्ध हरताल भस्मकी विकार-शान्तिके उपाय ।

नीचेके उपायोंमेंसे कोई एक उपाय करने से अशुद्ध हरताल-भस्म के दोष दूर हो जाते हैं:—

- ( १ ) पेठेके रसमें शक्कर मिलाकर सेवन करो ।
- ( २ ) कटसरैयाके रसमें शक्कर मिलाकर पीओ ।
- ( ३ ) नाकुलीके स्वरसमें शक्कर मिलाकर पीओ ।
- ( ४ ) जीरा और शक्कर एक हफ्ते तक खाओ ।

## हरताल सेवनमें पथ्यापथ्य ।

हल्का और कम भोजन, थोड़ा पानी, गायका दूध, दूध-लपसी, दूध-भात, शक्कर-भात, मिश्री, मीठे पदार्थ, [शामको अलोनी खिचड़ी, और सोते समय धन्वन्तरिका ध्यान, ये पथ्य हैं ।

खारे, खट्टे, चरपरे पदार्थ एवं स्त्री-प्रसंग आदिसे परहेज करना चाहिये ।

## हरताल की सेवन-विधि ।

मात्रा—१ से २ चॉवल तक । बहुत ही ज़ियादा दी जाय, तो ४ चॉवल तक । बस, आगे न बढ़ाना चाहिये ।

## अनुपान—

( १ ) रोज़ आने वाले ज्वरमें—बुखार आनेके समयसे डेढ़ घण्टे पहले, कच्चे दूधमें १ या २ चॉवल-भर हरताल-भस्म दो ।

( २ ) तिजारी ज्वरमें—नं० १ के मुताबिक ।

( ३ ) चौथेयामें—नं० १ के मुताबिक ।

( ४ ) जाड़ेके वा विना जाड़ेके टाइमपर आने वाले ज्वरोंमें, नं० १ में लिखी विधिसे काम करो ।

( ५ ) सोजाकमें—भेड़के दूधके खोथमें १ मात्रा हरताल-भस्म मिलाकर लो । ऊपरसे कच्चा दूध पीओ; मीठा मत मिलाओ और गुड़, तेल, लाल मिर्च, खटाईसे परहेज करो ।

3087



( ६ ) लिंगेन्द्रियकी ताकतको—गरगौंटा चिड़ियाके मांसको मसाला बलकर भूनो और उसके साथ १ मात्रा खाओ । ऊपरसे बिना मीठा दूध पीओ । केवल दूध-भात खाओ ।

( ७ ) नामर्दी नाश करनेकी—यही विधि है, जो नं० ६ में ऊपर है ।

( ८ ) पतली धातु ठीक करनेको—गायके कच्चे दूधमें १ मात्रा हरताल-भस्म रोज सात दिन तक खाओ । ऊपरसे घी, भात, मलाई खाओ; और भोजन कुछ मत करो ।

( ९ ) सन्निपात ज्वरमें—अदरखके रसमें १ मात्रा हरताल-भस्म देकर, ऊपरसे घी पिलाओ ।

( १० ) श्वासमें—बजरिया मछलीको मसाला डालकर घीमें पकाओ । उसीमें १ मात्रा हरताल-भस्म मिलाकर खाओ । ऊपरसे चने की रोटी और मछली खाओ ।

( ११ ) फालिजको—मुराँके कच्चे अण्डेमें १ मात्रा हरताल-भस्म रखकर खाओ । ऊपरसे बिना मीठा मिला कच्चा दूध पीओ ।

( १२ ) बुखारको—अदरख ३२ माशे और अजवायन ४ माशे दोनोंको पीसकर अर्क निकाल लो और १ मात्रा इसी अर्कके साथ खाओ । ऊपरसे कच्चा दूध बिना मीठेके पीओ ।

( १३ ) शरीरके दर्दमें—भेड़के दूधके खोयेमें १ मात्रा हरताल-भस्म लो, ऊपरसे घी पीओ । पथ्य—दूध, अरहरकी दाल बिना नमककी ।

नोट—ये सब विधियाँ उत्तम हैं । शीतज्वर और नामर्दीमें हमारी भी परीक्षित हैं । कदाचित लाला खूबचन्दकी सभी परीक्षित हों ।

( १४ ) भगन्दर, फिरंगरोग, उपदंश, बिसर्प, मंडल, खुजली, पामा, विस्फोटक, वातरक्त और वात रोगोंमें—हरताल-भस्मको देवदाली के रसके साथ सेवन करो ।

( १५ ) पाण्डु, क्षय और ज्वरमें—हरताल-भस्मको मिश्रीके साथ सेवन करो । गायका दूध और मिश्री-मिला भात खाओ ।



( १६ ) वातरोग, शूल और सूतिका रोगमें—हरताल-भस्मको अदरखके रसके साथ सेवन करो । घी-खिचड़ी या दूध-भात खाओ ।

( १७ ) कमजोरी, सन्निपात, वातगुल्म, वातरोग और अर्द्धाङ्ग वातमें—हरताल भस्मको अधौटे दूधके साथ सेवन करो ।

( १८ ) रुधिर-विकारमें—हरताल-भस्मको आम्राहल्दीके साथ सेवन करो ।

( १९ ) अपस्मार या मृगीमें—हरताल-भस्मको शुद्ध वत्सनाभ विष और जीरेके चूर्णके साथ सेवन करो ।

( २० ) बलवृद्धिको—जायफलके साथ हरताल-भस्म सेवन करो ।

( २१ ) रक्तपित्तमें—हरताल-भस्मको हल्दीके साथ सेवन करो ।

( २२ ) वीर्यस्तम्भनके लिये—हरताल-भस्मको पानमें खाना चाहिये ।

( २३ ) उर्ध्वश्वासमें—हरताल-भस्मको हरीतकीके साथ सेवन करो ।

( २४ ) जलन्धरमें—हरताल-भस्मको समन्दरफलके साथ अथवा बकरीके मूत्रके साथ सेवन करो ।

( २५ ) भगन्दरमें—हरताल-भस्मको देवदाली के रसमें सेवन करो ।

( २६ ) मुखकी बदबू नाशार्थ—हरताल-भस्मको तज, तेजपात और छोटी इलायचीके साथ सेवन करो ।

( २७ ) जुकाममें—हरताल-भस्मको जावित्रीके साथ सेवन करो ।

( २८ ) उपदंश या गरमी रोगमें—हरताल-भस्मको मधुके साथ सेवन करो ।

( २९ ) गठियामें—हरताल-भस्मको चोपंचीनीके चूर्णके और मधु साथ खाओ ।



## मूँगा-भस्मकी विधि

मूँगेके वृक्ष होते हैं। यह वृक्ष लंकाद्वीप और मालद्वीप प्रभृति टापुओं के पासके समुद्रमें होते हैं। वहाँके लोग मूँगेके वृक्षोंको निकाल कर लाते हैं। फिर इटली आदि यूरोपियन देशोंमें मूँगा साफ होता और उसपर रङ्ग होता है।

बहुतसे वैद्य मूँगेको इसी रूपमें—जिसमें वे उसे देखते हैं—पैदा हुआ समझते हैं। पर असलमें इसकी गुलाबी या लाल रङ्गकी डालियाँ होती हैं। कलकत्तेमें इसकी साफ की हुई डालियाँ आती हैं। लोग समझते हैं, कि मूँगेका फल अलग होता है और डालियाँ अलग। हमने करोड़पति मूँगेकी फलों से इसका पता लगाया, तो उन्होंने कहा कि, इन डालियों के ही मूँगे बनते हैं। हमने वैसी ही डाली लेकर कई बार मूँगा-भस्म बनाई; बनी भी उत्तम और फल भी दिया।

शास्त्रोंमें लखा है—पके हुए कुँदरुके फलके समान, लाल, गोल, चिकना, चमकदार, बिना छेदवाला मूँगा उत्तम होता है। ऐसा ही मूँगा पहनने और खाने योग्य है। लेकिन जो मूँगा रंगमें पीतलके जैसा, फीके रङ्गका, टेढ़ा-भेढ़ा, छेदवाला, रुखा और कलाई लिए होता है, वह न पहनने-योग्य है और न खाने-योग्य।

आज-कल बहुतसे ठग मूँगेकी डाली एक आने या दो आने तोलेमें लाकर, आगमें जलाकर राख कर लेते हैं और उसे प्रवाल या



मूँगा-भस्मके नामसे बेचते हैं । वह काम की नहीं होती । इसी से बहुतसे लोगोंका प्रवाल या मूँगा भस्म पर विश्वास नहीं रहा ।

संस्कृतमें मूँगेको प्रवाल, विद्रुम, अङ्गारकमणि, भौम-रत्न, रक्ताङ्ग, लतामणि, रक्तकन्द प्रभृति कहते हैं । हिन्दीमें मूँगा, बंगलामें पला या मूँगा, गुजरातीमें परवाली, फारसीमें मिरजान, अरबीमें वसद और अंगरेजीमें रेड कोरेल ( Red Coral ) कहते हैं

### मूँगा-भस्मकेगुण ।

मूँगा-भस्म—मधुर, खट्टी, दीपन, हल्की, वीर्य और कान्ति-वर्द्धक है । स्त्रियोंको पहननेसे मूँगा मङ्गल करनेवाला होता है । मूँगा-भस्म सेवन करनेसे त्रिदोष, कफ, पित्त, राजयक्ष्मा, खाँसी, विषदोष और उन्माद आदि दूर होते हैं इसके सेवन करनेसे महीने डेढ़ महीनेमें ही मनुष्य मोटा-ताजा हो जाता है । और रङ्ग मूँगेका-सा होने लगता है । क्षय और खाँसीमें इस भस्मसे बड़ा उपकार होता है । हमने अनेक बार परीक्षा की है ।

### मूँगा शोधनेकी तरकीब ।

मूँगोंको एक पक्के शकोरेमें रखकर आगपर तपाओ । जब खूब तप जायँ, सात बार घीग्वारके रसमें बुझाओ । तपा-तपाकर, सात बार घीग्वारके रसमें बुझानेसे ही मूँगा और मोती शुद्ध होजाते हैं । अगर विशेष शुद्ध करनी हो, तो सात बार चौलाईके रसमें भी तपा-तपाकर बुझाओ । अगर चौलाई न मिले, तो ग्वारपाठेमें ही बुझाओ । कोई दोष न रहेगा ।

नोट—अबीध मोती आगपर तपानेसे बर्तनमेंसे उछल-उछल कर भागते हैं, असावधानीसे आगमें या ज़मीनपर गिर जाते हैं; अतः मोतियोंके लिये गहरा बर्तन लेना ठीक होगा । मोती महँगी चीज़ है और अबीध मोतियोंका बूका या छोटे मोती बाजरे-समान होते हैं । उनका आग या ज़मीनसे खोज



निकालना कठिन होता है । तपानेसे मोती और मूँगाँ का रंग बदल जाता है । लाल मूँगे पीलेसे या मटमैले-से हो जाते हैं । उनका ऊपरका रंग उतर जाता है ।

### मूँगा-भस्मकी पहली विधि ।

( १ ) शुद्ध मूँगा आठ तोले, शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध आमलासार गन्धक १ तोले लेकर रखो ।

पहले गन्धक और पारेको खरल में ढालकर कज्जली करो; यानी उन्हें खूब घोटो, घोटनेसे काला काजल-सा हो जायगा । पर ध्यान रहे, पारा उछलता बहुत है; अतः धीरे-धीरे खरल करना चाहिये । जब काजलसी चिकनी और काली कज्जली होजाय, तब उस कजलीमें शोधे हुए मूँगे मिला दो और घोटो । ऊपरसे धीगवारका रस ढालते जाओ । इस तरह रस ढाल-ढालकर पूरे १२ घण्टे तक घोटो । इसकेबाद गोला या टिकिया बनालो और सुखालो । जब सूख जाय, उसे सराव-सम्पुटमें रख, कपरौटी कर सुखालो और एक गजपुटकी, आगमें फूँक कर निकाल लो । घोटनेके समय आपके मूँगे स्याह हो जायँगे, उनका निशान भी न दीखेगा; पर सराव-सम्पुट या सराइयोंको खोलकर निकालने पर, सुन्दर सफेद गुलाबी रंग माइल मूँगा-भस्म मिलेगी ।

नोट—इस तरह हमने अनेक बार मूँगे-मोतियोंकी भस्म बनाई है । इस विधिमें ज़रा भी तकलीफ़ और दिक्कत नहीं ।

### मूँगा-भस्मकी दूसरी विधि ।

शुद्ध मूँगे लेकर “बिछिया बूटो” के रसमें खरल करके सराव-सम्पुटमें रखकर गजपुट में फूँक दो । सम्पुटसे निकालकर, फिर इसी बिछिया बूटोके रसमें घोटो और सराव-सम्पुटमें रख, गजपुटमें फूँक दो । इस तरह दो गजपुटकी आग देनेसे भस्म तो होजायगी, पर कसर रहेगी । अतः आगेके काम और भी करोः—

सराव-सम्पुटसे मूँगा-भस्म निकाल कर, गोदनदुद्धीके रसकी



पाँच भावनायें दो। सूखने पर घीग्वारके रसकी पाँच भावनायें दो। फिर टिकिया बनाकर, सराव-सम्पुटमें रख, एक गजपुटकी आग दो। इस बार निर्दोष भस्म हो जायगी।

### मूँगा-भस्मकी तीसरी विधि।

शुद्ध मूँगे पाँच तोले लेकर रखो। पहले एक सरावमें घीग्वारका गूदा नीचे रखो। उसपर शोधे हुए मूँगे रखो, मूँगेके ऊपर फिर घीग्वारका गूदा आध पाव रख दो और ऊपरसे दूसरा सरावा ढककर, सन्ध बन्द करके कपरौटी कर दो और सुखा लो। शेषमें सराव-सम्पुटको गजपुटमें रखकर फूँक दो। मूँगा-भस्म हो जायगी।

### मूँगा-भस्मके अनुपान।

मात्रा—१ चाँवलसे २ रत्ती तक।

#### अनुपान—

- ( १ ) खाँसीमें—१ रत्ती मूँगा-भस्म “शहद”में मिलाकर खाओ।
- ( २ ) बुखारमें न० १ के मुताबिक खाओ।
- ( ३ ) जीर्णज्वरमें—सितोपलादि चूर्णमें १ रत्ती मूँगा-भस्म “शहद”में मिलाकर चाटो।

नोट—अगर इस नुस्खेको और भी ज़ोरदार करना हो, तो मोती और चाँदीके वर्क भी इसमें मिला दो। इससे ज्वर भी जायगा और बल भी बढ़ेगा।

- ( ४ ) खाँसी और कफ-सहित शीतज्वरमें—१ रत्ती मूँगा-भस्म और १ रत्ती अभ्रक-भस्म दोनों मिलाकर, पानमें रखकर खाओ।

- ( ५ ) कफकी खाँसीमें—मूँगा-भस्म आधी रत्ती और अभ्रक-भस्म आधी रत्ती मिलाकर पानमें खाओ।

- ( ६ ) प्रदर में—१ रत्ती मूँगा-भस्म १ तोशे च्यवनप्राशमें मिला कर चाटो और गरम दूध पियो।

- ( ७ ) प्रमेह और दिल की कमजोरी में—एक-एक रत्ती मूँगा भस्म शहदमें मिलाकर चाटो और गाय का औटाया दूध पियो।



# मोती भस्मकी विधि ।

## मोतीकी उत्पत्ति ।

मोती आठ तरहके होते हैं:—(१) सीपसे, (२) शंखसे, (३) सूअरसे, (४) हाथीसे, (५) मैदकसे, (६) बाँससे, (७) मछलीसे और (८) साँपसे । पर आजकल प्रायः सीपके ही मोती मिलते हैं ।

जो मोती रंगमें फीका, चपटा, मछलीकी आँख-जैसी ललाई लिये, टेढ़ा मेढ़ा खड्डेवाला, रूखा और ऊँचा-नीचा होता है, वह न खानेके कामका होता है और न पहननेके ।

जो मोती तारोंके समान चमकदार, मोटा, चिकना, गोल, चन्द्रमा-जैसा सफ़ेद, तोलमें भारी और बिना छेदवाला होता है, वही खाने और पहननेके कामका होता है ।

मोतीके संस्कृतमें मौक्तिक, शौक्तिक, मुक्ता, इन्द्र, रत्न, शशिप्रभा, शुभांशुरत्न, लक्ष्मी, हिम और शुक्तिमणि आदि बहुतसे नाम हैं । इसकी प्रभा चन्द्रमाके जैसी होती है, इसीसे इसे शशिप्रभा कहते हैं । मोती चन्द्रमाको प्यारा है, अतः चन्द्रमाकी पीड़ा-शान्तिके लिए “मोती” और मङ्गल ग्रहकी शान्तिके लिये “मूँगा” पहनना अच्छा है ।

## मोतीकी परीक्षा ।

यों तो अनुभवी पुरुष मोतीकी चन्द्रमा-जैसी सफ़ेदी, गुलाई, मुटई, भारीपन और चिकनाईसे समझ लेते हैं कि यह मोती अच्छा है । जिसमें मछलीकी आँखकी-सी ललाई, टेढ़ा-मेढ़ापन,



ऊँचा-नीचापन, गदमैली रंगत, रुखाई और रंगका फीकापन देखते हैं, उसे निकम्मा समझते हैं। फिर भी शास्त्रमें एक ऐसी परीक्षा लिखी है, जिससे मोतीकी परख न जाननेवाला भी उसकी बुराई-भलाई समझ सकता है।

जब आप मोतीकी परीक्षा करना चाहें, तब एक हाँडीमें एक सेर “गोमूत्र” और छटाँक भर “साँभर नमक” पीसकर डाल दें। उस हाँडी पर एक आड़ी लकड़ी रख दें। मोतियों को एक पोटलीमें बाँधकर, पोटलीको हाँडीमें इस तरह लटका दें कि, पोटली गोमूत्रमें डूबी रहे और कुछ ऊँची भी रहे, यानी भूलेकी तरह बना दें। इसी तरहके यन्त्र को “दोलायन्त्र” भी कहते हैं, क्योंकि दोलाका अर्थ भूलना है। हाँडीको चूल्हेपर चढ़ाकर नीचे आग लगा दें। ६ घण्टे तक आग लगावें। बाद ६ घण्टेके पोटलीको निकाल लें और मोती या मोतियोंको धान यानी चावलोंकी भूसीमें रखकर मलें। अगर मोती असली होगा, तो उसका रंग-रूप जरा भी न बदलेगा। यदि खराब होगा, तो रंग-रूप बदल जायगा। जिन मोतियोंका रूप-रंग न बदले, उन्हें ही भस्मको ले लो।

### मोती-भस्मकी विधि ।

मोती और मूँगेका शोधन और मारण एकसा ही है। मोतियोंको एक औँड़े बासनमें रखकर, आग पर गरम कर-करके, घीग्वारके रसमें सात बार बुझाओ। इस तरह उनके दोष निकल जायेंगे ॥

पीछे, जितने मोती हों, उसका आठवाँ भाग “शुद्ध पारा” और उसनी ही “शुद्ध गन्धक” ले लो। पहले गन्धक और पारेकी कजली

॥ मोती या मूँगा जो शोधने हों उन्हें एक कपड़ेमें बाँध लो। एक घड़ेमें आधा घड़ा “इन्द्रायणका रस” भर दो और घड़े पर एक आड़ी लकड़ी रखकर, उस लकड़ीमें, ऊपरकी मोती-मूँगेकी पोटलीको बाँधकर, भीतर रसमें लटका दो और घड़ेको चूल्हेपर चढ़ा दो। नीचेसे ३ घण्टे आग लगाओ। मोती-मूँगा शुद्ध हो जायेंगे।



करके, उसीमें मोती डालकर, घीग्वारके रसमें १२ घण्टे घोटो । पीछे टिकिया बनाकर, सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटमें फूँक दो । स्वांग शीतल होने या आग ठण्डी होनेपर, मोती-भस्म निकालकर शीशीमें रख लो ।

### मोती-भस्मकी दूसरी विधि ।

( २ ) शोधे हुए एक तोले अबीध मोती लेकर, घीग्वारके के चार तोले गूदेके बीचमें उन्हें रख दो । फिर उसको सराव-सम्पुटमें रखकर, कपरौटी करके सुखा लो और चार सेर कण्डोंमें फूँक दो । सुन्दर भस्म हो जायगी ।

### मोती-भस्मकी तीसरी विधि ।

( ३ ) शुद्ध मोती लेकर, पाताल नीमकी, पानीके साथ सिलपर पीसी हुई, लुगदीके बीचमें उन्हें रखकर, उस लुगदीको सराव-सम्पुटमें बन्द करके गजपुटमें फूँक दो । एक आगमें ही भस्म हो जायगी ।

उस भस्मको फिर सम्पुटसे निकालकर, खरलमें डालकर, नीबूके रसके साथ घोटो और सराव-सम्पुटमें रखकर, १० सेर कण्डोंमें फूँक दो ।

उसे फिर निकालकर, घीग्वारके रसमें खरल करो और सराव-सम्पुटमें रखकर गजपुटमें फूँक दो । इस तरह २ गजपुटकी आग खानेसे मोती-भस्म सब कामके लायक हो जायगी ।

### मोती-भस्मके गुण ।

मोती-भस्म—मधुर और ठण्डी है । यह राजयक्ष्मा, उरःक्षत, नेत्र-रोग, वीर्यकी कमजोरी और नाताकृती आदि रोगोंको नाश करती है । खाँसी, श्वास, कफक्षय और अग्निमान्द्य प्रभृतिको नाश करके शरीरको हृष्ट-पुष्ट और बलवान करती है । और भी लिखा है—मोती-भस्मसे नेत्ररोग, खाँसी, प्रमेह, सोजाक, ज्वर और मूत्रकृच्छ्र, ये सब आराम होते हैं । मोती-भस्म शीतल और समस्त रोग-नाशक है ।



## मोती-भस्म सेवन करनेके अनुपान ।

मात्रा—आधी रत्तीसे २ रत्ती तक । कमजोरको २ चाँवल-भर ही काफ़ी है ।

( १ ) ताक़तके लिये— १ रत्ती मोती-भस्म “सितोपलादि चूर्ण” और चाँदीके वर्कोंमें सेवन करो ।

( २ ) हिचकी रोगमें भी ऊपरकी तरह ही सेवन करो ।

( ३ ) अधिक वीर्यपातके कारणसे हुए ज्वरमें—जिसमें खुश्की हो, बार-बार ग़श आते हों, कमजोरी हो, अन्तकाल मालूम होता हो, १ रत्ती मोती भस्म, १ वर्क चाँदीका, १ रत्ती सत्त-गिलोय, १ रत्ती वंसलोचन, एक छोटी इलायची, १ रत्ती बंग-भस्म और १ रत्ती सार—मैनसिलके साथ फूँका हुआ,—इन सबको मिलाकर, “शहद या शर्बत अनार”में फ़ौरन खिलाओ, पन्द्रह मिनटमें आराम होगा । अगर दवा देनेमें देर होगी तो रोगी मर जायगा ।

## मकरध्वज ।

शुद्ध सोनके पत्तर कैचीसे काटे हुए ४ तोले, शुद्ध पारा ४ तोले—इन दोनोंको खरल करो । जब एक दिल हो जावें, तब ८ तोले “शुद्ध गन्ध” भी मिला दो और खरल करो । जब बिना चमककी कज्जली हो जावे, उसमें “घोग्वारका रस” ढाक-डालकर खूब खरल करो ।

फिर एक काले काँचकी दलदार मोटी बोतलका सिर ज़रा काट लो । फिर उस बोतलपर तीन-चार दफ़ा मिट्टीमें लिहसा हुआ कपड़ा लपेटो यानी कपरौटी करो और सुखा लो ।

सूखी बोतलमें ऊपरकी कज्जली भर दो । एक हाँडीके पेंदेमें छोटी उँगली चली जावे, इतना बड़ा छेद करो । छेदपर अबरखका पत्तर रखकर, उसपर बोतल जमा दो । बोतलके चारों तरफ़-गले तक—बाल भर दो ।



इस हाँडीको मय बोतलके चूल्हेपर चढ़ा दो और नीचे आग जलाओ। चार दिन तक बराबर आग लगने दो। पहले बोतलसे धुआँ निकलेगा और नीली-नीली आगकी शिखा या लौ निकलेगी। इसके बाद धुआँ प्रभृति बन्द हो जायँगे और लाल रंगकी आगकी शिखा या लौ निकलेगी। इस समय पाक शेष समझो, अथवा बीच-बीचमें, लोहेकी सींक आगमें तपा-तपाकर शीशीके पेंदे नक पहुँचाते रहो। सींकके बोतलमें डालनेसे आगकी लपट उठेगी और शीशी के मुँहमें जो मैल आ जायगा, वह दूर हो जायगा। जब देखो कि शीशीकी नाली काली स्याह होगई है—शीशीके भीतर लाल सुर्ख रंग चमक रहा है—लोहेकी सींक डालनेसे आगकी लौ नह उठती तब समझ लो कि, “मकरध्वज” तैयार हो गया।

इस समय आग लगाना बन्द करो, और हाँडीको शीतल होने पर उतार लो। उसमेंसे बोतल निकाल कर बोतलको ऐसी कारीगरीसे तोड़ो कि काँचका चूरा न हो। फिर बोतलके गलेमें लगा हुआ “सिन्दूरके समान लाल पदार्थ” निकाल लो। यही “मकरध्वज” है।

### षड्गुण बलिजारित मकरध्वज ।

बालू भरी हाँडीमें एक मिट्टीका बर्तन रखो। पहले उस बर्तनमें चार तोले गन्धक डालो। जब गन्धक पिघल कर तेलके समान हो जावे, तब उसमें चार तोले पारा डाल दो। फिर थोड़ी देरमें चार तोले पाग डाल दो। इस तरह कुल छै बार चार-चार तोले पारा डाल दो। जब गन्धकसे छै गुना पारा—छै बारमें डाल चुको, तब बालू भरी हाँडीको चूल्हेसे नीचे उतार लो। फिर उसमेंसे पारे-गन्धकके बर्तनको निकाल लो। अब उस बर्तनमें नीचेकी तरफ एक छेद करके उस छेदमें होकर पारेको निकाल लो। इसी पारेको “षड्गुण बलिजारित पारा” कहते हैं।

जब षड्गुण बलिजारित मकरध्वज तैयार करना हो, इस पारेको काममें लो। इस पारेसे जो मकरध्वज तैयार होता है वह “षड्गुण



वलिजारित मकरध्वज” कहलाता है । ध्यान रखो, जो विधि मकरध्वज की है वही षड् गुण वलिजारित मकरध्वजकी है । उसी नियमसे सोनेके पत्तर ४ तोले, यह पारा ४ तोले और शुद्ध गन्धक ४ तोले लेकर खरल करो । कज्जली होनेपर बोतलमें भरो—आगे सब वही विधि ।



चन्द उपधातु और विष-उपविषोंकी

## शोधन-विधि ।

### गन्धकका वर्णन ।

#### गन्धक की पैदायश ।

कहते हैं, पहले श्वेत द्वीपमें पार्वतीजी क्रीड़ा करती थीं । उनके कपड़े मासिक धर्म होनेसे रजसे भीग गये । तब उन्होंने कपड़ों-समेत क्षीर-सागरमें स्नान किया । उनके कपड़ोंसे जो रज गिरा, उसीसे “गन्धक” बन गयी ।

#### गन्धकके गुण आदि ।

संस्कृतमें गन्धकको, गन्धक, गन्ध-पाषाण, सौगन्धिक, गौरी-बीज, पामात्र, पामारि, गन्धमोदन और रसगन्धक प्रभृति कहते हैं । हिन्दी, बँगला, मरहटी और गुजरातीमें “गन्धक” कहते हैं । फ़ारसीमें गोदीर्द और अँगरेज़ीमें सल्फ़र ( Sulphur ) कहते हैं ।

गन्धक चार ११तरहकी होती है—( १ ) लाल, ( २ ) पीली, ( ३ ) काली, और ( ४ ) सफ़ेद । सोना बनानेवालोंके काममें लाल, रसायनके काममें पीली या सफ़ेद, धावोंपर लगानेके काममें सफ़ेद, और



सोना बनाने आदि सब कामोंमें काली गन्धक उत्तम है। परन्तु यह मिलती नहीं।

लोकमें दो तरहकी गन्धक मशहूर हैं:—(१) लूनिया, और (२) आमलासार। आमलासार गन्धकके तीन भेद हैं:—(१) शुक्रतुण्ड, (२) सूआ-पल्ली और (३) प्रसिद्ध आमलासार गन्धक। शुक्रतुण्ड—तोतेकी चोंच जैसी लाल होती है। यह सोना बनानेके काम आती है। यह शरीरको खूब बलवान कर सकती है, पर मिलती नहीं। सूआपाखी तोतेकी पूँछके रङ्गकी होती है। यह कुछ खोजसे मिल जाती है। इसके योगसे सभी रस अच्छे बनते हैं; पर कठिनाईसे मिलनेके कारण वैद्य लोग तीसरी “आमलासार” गन्धकको ही लेते हैं, जो पीली, चमकदार और अतीव चिकनी होती है। लूनिया गन्धक कोई कामकी नहीं होती। हाँ, खुजली प्रभृतिके लेप आदिमें बरती जा सकती है।

गन्धक—चरपरी, कड़वी, उष्णवीर्य, कषैली, दस्तावर, पित्तकारक, पाकमें चरपरी, रसायन; विसर्प, कृमि, कोढ़, खुजली, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको नष्ट करनेवाली है।

### अशुद्ध गन्धकके दोष

बिना शोधी हुई गन्धक—कोढ़, विषम ज्वर, सूजन और रक्त-विकार करती एवं बल-वीर्य और रूपको नष्ट करती है, अतः शोधी हुई गन्धक ही लेनी चाहिये। बिना शोधी हुई गन्धकको काममें न लाना चाहिये।

### शुद्ध गन्धकके गुण ।

शुद्ध गन्धक दस्तावर, बुढ़ापा और मृत्यु-नाशक तथा खुजली, विसर्प, कृमि, कोढ़, क्षय, तिल्ली, कफ तथा वात-नाशक है।

### गन्धक शोधने की विधियाँ ।

पहली विधि ।

(१) एक मिट्टीकी हाँडीमें कच्चा दूध आधे-पेट भर दो। ऊपरसे एक पतला कपड़ा—मन्नासा उस पर बांध दो। फिर एक लोहेकी कलझीमें



गन्धकके बराबर “घी” लेकर गरम करो । उसीमें गन्धक डाल दो और आगपर पिघलाओ । जब गंधक पिघल जाय, दूधमें डाल दो । कपड़ेमें होकर गंधक निकल जायगी और फिर वह शुद्ध समझी जायगी । पर यदि उसकी जर्दी न जाय, तो जब तक जर्दी खूब कम न हो जाय, दो तीन दफा ऐसा ही करो, यानी गन्धकको दूधसे निकाल कर, फिर दूसरा दूध हाँडीमें भर कर, नये घीमें गन्धक पिघला कर दूधमें डालो ।

दूसरी विधि ।

( २ ) एक और सीधी तरीका यह है—आप हाँडीमें दूध भर कर ऊपर कपड़ा बाँध दो । कपड़ेके ऊपर, हाँडीके किनारोंपर, आटेकी चार अंगुल ऊँची दीवार बना दो । उस कपड़ेपर गन्धक पीसकर रख दो और दीवारपर एक तवा रखकर, तवेपर कोयले सिलगा दो । गरमी पाकर गन्धक दूधमें जा गिरेगी और खील-सी हो जायगी । बहुत लोग गन्धकको इस तरह भी शुद्ध करते हैं, पर घीमें शोधना इससे अच्छा है । मामूली कामोंके लिये, इस तरह भी शोध सकते हो ।

तीसरी विधि ।

( ३ ) गन्धकको कितने ही वैद्य अच्छी तरह बिलोई हुई छाछमें भी शांथते हैं । एक हाँडीमें, गन्धकके अनुमानसे, बिलोई हुई छाछ भरदो । उसपर भलासा पतला कपड़ा बाँध दो । एक कलछी या बड़े बर्तनमें एक भाग घा और चार भाग आमलासार गन्धक पीसकर मिला दो और आगपर तपा-तपाकर, उसी छाछके बासनमें उसे छोड़ो । बर्तनमें नाचे गन्धकके ढेले-से मिलेंगे । अगर आप और भी पाँच-सात बार इसी तरह घीमें पिघला-पिघलाकर दूध या छाछमें शोधेंगे, तो गन्धक और भी उत्तम हो जायगी । शोध लेने पर, गन्धकको गरम जलसे धोकर, गुलाबके अर्क या नीबूके रसमें २४ घण्टे तक भिगो रखो । यह सबसे अच्छी गन्धक होगी ।



## चौथी विधि

( ४ ) चौथी विधि यह है—गन्धकको घीमें, ऊपरकी विधि से, पिघला-पिघलाकर, चार बार दूधमें बुझाओ और फिर घीमें पिघला-पिघला कर, दो बार भोंगरेके स्वरसमें बुझाओ । इस तरह परमोत्तम शुद्धि होती है ।

## पाँचवीं विधि ।

( ५ ) पाँचवीं विधि—गन्धकको घीमें गला-गलाकर, कपड़ेमें होकर ३ बार “गायके दूधमें” छोड़ो । फिर घीमें पिघला-पिघलाकर, ६ बार “भोंगरेके रसमें” डालो । फिर १२ घण्टे तक गन्धकको “आकके दूधमें” खरल करो । इसके बाद घीमें पिघलाकर, एक बार दूधमें छोड़ो । शेषमें गन्धकको खरलमें डालकर, पाँच दिन तक “घोंग्वारके रसमें” खरल करो और फिर सुखाकर रख लो । यह गन्धक अमृत-समान है । खानेके लिए सर्वोत्तम है । इसके सेवनसे समस्त रोग नाश हो जाते हैं ।

## अशुद्ध गन्धकके दोषोंकी शान्तिका उपाय ।

अगर अशुद्ध गन्धक सेवन करनेसे कुछ विकार हो जायँ, तो आप रोगीको “गायके दूधमें गायका घी” मिलाकर पिलावें और भोजन न दें । एक सप्ताहमें सब दोष शान्त हो जायेंगे ।

## गन्धक की सेवन-विधि

( १ ) अमेहमें—दो से छै मासे तक शुद्ध गन्धक १ तोले पुराने गुड़में मिलाकर खाने और ऊपरसे दूध पीनेसे बीसों प्रमेह नष्ट हो जाते हैं ।

( २ ) मन्दाग्निमें—शुद्ध गन्धक शहदमें मिठाकर लगातार कुछ दिन खानेसे मन्दाग्नि नष्ट हो जाती है ।

( ३ ) नेत्र रोगमें—शुद्ध गन्धक छै महीने तक सेवन करनेसे गिद्धकी सी नजर होती है ।



## हिंगुल-वर्णन ।

### हिंगुलके नाम और लक्षण

संस्कृतमें हिंगुलके दरद, म्लेच्छ, इंगुल, चूर्ण-पारद; रस-स्थान, हंसपाद और शुक्तुण्डक आदि बहुतसे नाम हैं। इसे हिन्दीमें हिंगुल और शिगरफ कहते हैं, बंगलामें हिगुल, गुजरातीमें हिङ्गलो, मरहटीमें हिंगुल, फारसीमें सिंगरफ, अरबीमें जब्जफर और अङ्गरेजीमें “सल्फ्रेट आफ मरकरी” कहते हैं।

शिगरफ सफेद, पीला और जवा-कुसुमके रङ्गका,—इस तरह तीन तरहका होता है। सफेद रङ्गवालेको चर्मार, पीलेको शुक्तुण्डक, और लालको हंसपाद कहते हैं। इनमें पहलेसे दूसरा और दूसरेसे तीसरा उत्तम है। ‘हंसपाद हिंगुल’ ही बहुधा दवाके काममें आता है। यही सबसे उत्तम है।

### हिंगुल के गुण

शिगरफ कड़वा, कषैला, चरपरा; नेत्र-रोग, व.फ, पित्त, हुल्लास, कोढ़, ज्वर, कामला, तिल्ली, आमवात और विष-नाशक है। इस हिंगुलको नीबू या नीमके पत्तोंके रसमें खरल करके, “डमरुयन्त्र”में रख कर, आग लगाने और ऊपरकी हाँडी शीतल जलसे तर रखनेसे ऊपरकी हाँडीमें विशुद्ध पारा आ लगता है। उस पारेमें धूआँकी कालौस होती है। उसमेंसे पारा निकालकर, साफ कर लेना चाहिये। हिंगुलसे निकला हुआ पारा शुद्ध होता है। इसको शोधनेकी दरकार नहीं। यह प्रायः सब कामोंमें लिया जा सकता है।

### हिंगुलसे पारा निकालनेकी विधि ।

हिंगुलको नीमके पत्तोंके रसमें अथवा नीबूके रसमें ३ घण्टे



तक खरल करके, एक कपपौटी की हुई हाँडीमें रखकर, ऊपर से दूसरी हाँडी औंधी मारकर, सन्धोंको खूब अच्छी तरहसे बन्द कर दो । राख, लोहकीट, रुई और मिट्टीको पानी के साथ पीसकर, लुगदी-सी बनाकर, उसे चिथड़ोंमें मिलाकर, उसीसे हाँडियोंकी दराजोंको बन्द कर दो और कई तह इस तरह के मिट्टी में लहेसे कपड़ों की ऊपर चढ़ा दो । जरा भी सांस रहने से, आग पर हाँडी रखने से पारा निकल जायगा । फिर हाँडी को सुखाकर, चूल्हेपर चढ़ा दो और ऊपरकी हाँडी पर रेजीके कपड़े की २० तह करके और पानी में भिगोकर रख दो । बीच-बीचमें कपड़े पर शीतल जल डालते रहो, पर नचे की हाँडी पर पानी न पड़े वरना हाँडी फूट जायगी । एक सेर हिंगुल में प्रायः तीन पाव पारा निकल आवेगा । यह पारा शुद्ध है । इसे शोधने की दरकार नहीं । इसे हर काम में ले सकते हो ।

### हिंगुल शोधनेकी विधि ।

( १ ) नीबूके रसकी या भेड़के दूधकी सात भावना देनेसे शिंगरफ़ शुद्ध हो जाता है ।

( २ ) कोई-कोई शिंगरफ़को ६ घण्टे तक नीबूके रसमें खरल करते हैं और फिर ६ घण्टे तक भेड़के दूधमें खरल करते हैं; तब शुद्ध मानते हैं । यह विधि भी सुभीतेकी है । एक दिनमें ही काम हो जाता है और कोई दोष नहीं रहता ।

नोट—किसी दवाके रस या काढ़ेमें किसी चीजको डालकर खरल करो और सुखा लो,—बस यही “भावना” है । इसी तरह जितनी भावना देनी हों उतनी ही बार दवाको रस या काढ़ेमें मर्दन करके या खरल करके सुखालो । एक दफा सूख जानेपर दूसरी बार फिर ताज़ा रसमें घोटकर सुखानेसे, दूसरी भावना होती है । इसी तरह दूसरी बार सूखने पर तीसरी बार फिर ताज़ा रसमें घोटकर सुखानेसे तीसरी भावना होती है । बस, इसी तरह और आगे समझ लो । बहुत बार एक दिनमें एक ही भावना दी जा सकती है । कभी-कभी जल्दी सूख जानेसे दो-तीन भी ।



## शिलाजीत-वर्णन ।

शिलाजीतके सम्बन्धमें हमने इसी भागके पृष्ठ ५०-५३ में बहुत कुछ लिखा है । इसके शोधनेकी तरकीबें भी लिखी हैं । फिर भी, दो-एक सरल शोधन-विधि और भी लिखते हैं :—

( १ ) शिलाजीतको एक दिन त्रिफलेके काढ़ेमें खरल करो । इसके बाद, एक दिन गायके दूधमें खरल करो । इस तरह शिलाजीत शुद्ध हो जाता है ।

( २ ) आध सेर त्रिफला जौ-कुट करके बत्तीस सेर पानीमें औटाओ । जब चौथाई जल रह जाय, उतारकर छान लो । इस छने हुए पानीमें तीन पाव शिलाजीत दरदरा सा कूटकर डाल दो और २४ घण्टे भीगने दो । इसके बाद, पानीको नितार लो; गाद न आने पावे । इस नितरे हुये शिलाजीतके जलको कड़ाहीमें औटाओ । जब राब सा गाढ़ा हो जाय, आगसे उतार लो । इसके बाद, इस गाढ़ी रबड़ी सी को एक दिन गायके दूधमें घोटो; फिर एक दिन त्रिफलेके काढ़ेमें घोटो और फिर एक दिन भाँगरेके स्वरसमें घोटो । इतने काम होनेपर, शिलाजीत शुद्ध हो जायगा । इसमें कष्ट अधिक है; पर काम अच्छा ही होगा । अगर जल्दी न हो, तो इसी विधिसे शिलाजीत शोधना चाहिये ।

## मैनसिल-वर्णन ।

मैनसिलके नाम और गुण ।

संस्कृतमें मैनसिलको मनःशिला, शिला, नागजिह्विका, नागमाता और रक्तनेत्रिका आदि कहते हैं । हिन्दीमें मैनसिल, बङ्गलामें मण-गाछ, मरहठीमें मनशिल, गुजरातीमें मणशील, अङ्गरेजीमें रेलजर ( Realgar ) और लैटिनमें आरसेनिकम सल्फीडम कहते हैं ।



शुद्ध मैनसिल—भारी, रङ्गको सुधारनेवाला, दस्तावर, गरम, लेखन, चरपरा, कड़वा और चिकना है तथा विष-विकार, श्वास, खाँसी, भूतवाधा, कफ और खून-विकार नाशक है ।

मैनसिल हरतालका ही एक भेद है । हरताल बहुत पीली होती है और मैनसिल रक्त वर्णका होता है ।

### अशुद्ध मैनसिलके दोष ।

बिना शोधा मैनसिल—बलको कम करता, दस्त रोकता, मूत्र-रोग और शर्करायुक्त मूत्रकृच्छ्र करता है ।

### मैनसिल शोधनेकी विधि ।

मैनसिलको, तीन दिन तक दोलायन्त्रसे बकरीके दूधमें पकाओ; फिर बकरीके पित्तेकी सात भावना दो । बस, मैनसिल शुद्ध हो जायगा ।

खुलासा यह है कि, मैनसिलको एक पोटलीमें बाँध लो ! एक हाँडीमें बकरीका दूध—आधे पेट तक—भर दो और उसपर एक लकड़ी आड़ी रख दो । उस पोटलीको लकड़ीमें बाँधकर हाँडीमें लटका दो ॥ इस तरह लटकाओ, कि पोटली दूधमें लटकती रहे । हाँडीको चूल्हेपर चढ़ा दो और नीचे आग जला दो । इस तरह तीन दिन तक पकाओ ॥ चौथे दिन, उसे पोटलीसे निकालकर, बकरीके पित्तेके साथ खरल करो और सुखाओ । सुखनेपर, फिर पित्तेके साथ खरल करो । इस तरह सात बार सुखाओ और सात बार पित्तेके साथ खरल करो ।

दूसरी विधि—बहुत लोग मैनसिलको बकरीके मूत्रमें तीन दिन औटाकर शुद्ध कर लेते हैं । बाजे तीन दिन तक कुम्हड़ेके रसमें औटाकर शुद्ध कर लेते हैं ।

तीसरी विधि—कितने ही वैद्य मैनसिलको केवल अदरखके स्वरसमें अथवा अगस्तके रसमें घोटकर शुद्ध मान लेते हैं और सब कामोंमें बर्तते हैं ।



नोट ( १ )—तीनों विधियाँ उत्तरोत्तर एक दूसरेकी अपेक्षा जल्दीकी हैं । अगर जल्दी न हो, तो पहिली ही विधिसे काम लेना चाहिये ।

( २ )—जहाँ ‘मैनसिल’ शब्द आवे, वहाँ आप शोधा हुआ मैनसिल काममे लावें ।

## हरताल का वर्णन ।

### हरतालके नाम और गुण ।

संस्कृतमें हरिताल, ताल, गोदन्त, कांचनरस, हरिबीज, सिद्धिधातु, कनक-रस, गौरी, ललित और विडारक आदि कहते हैं । हिन्दी, बङ्गला, मरहटी और गुजराती सबमें “हरताल” कहते हैं अंगरेजीमें ओरपी-मेण्ट ( Orpement ) और लैटिनमें यलो आर्सेनिकम सल्फीडम ( Yellow Arsenicum Sulphidum ) कहते हैं !

हरताल दो तरहकी होती है—(१) तबकिया, जिसे पत्राख्य भी कहते हैं । इसमें से तबक या अभ्रकके से पत्र निकलते हैं । इसका रङ्ग सोनेका सा होता है । यह भारी और चिकनी तथा रसायन है; यानी बुढ़ापे और मृत्यु को जीतने वाली है । मतलब यह, तबकिया हरताल सर्वोत्तम होती है । ( २ ) दूसरे प्रकारकी हरताल गोले सी होती है । इसमें पत्रे नहीं होते और ताकत कम होती है । यह अल्प गुणवाली और स्त्रीके पुष्पकी नाशक है ।

### शुद्ध और मारी हुई हरताल के गुण ।

हरताल—चरपरी, चिकनी, कपैली, गरम; विष, खुजली, कोढ़, मुखरोग, रक्त विकार, कफ, पित्त, केश और व्रण नाशक है । शुद्ध हरतालके सम्बन्धमें कहा है—

तालकं हरते रोगान् कुष्ठमृत्युज्वरापहम्  
शोधितं कुरुते कान्ति वीर्यवृद्धि तथायुषम् ॥



शुद्ध हरताल—रोग नाशक, कोढ़, मौत तथा ज्वर हरने वाली, कान्तिको सुन्दर करनेवाली एवं वीर्य और आयु बढ़ानेवाली होती है ।

अशुद्ध हरताल के दोष ।

अशुद्ध हरताल—आयु नाशक, स्फोट, तप, अङ्गसंकोच, कफ-वात और प्रमेह पैदा करनेवाली है । अतः हरतालको बिना शोधे खानेके काममें न लेना चाहिये ।

हरताल शोधने की विधि ।

तबकिया हरतालके टुकड़े-टुकड़े करके, दोलायन्त्रकी विधिसे—जिस तरह हम मैन्सिलके शोधनेमें समझा आये हैं—नीचे लिखी चार चीजों में तीन-तीन घण्टे पकाओः—( १ ) काँजी, ( २ ) पेटेका रस, ( ३ ) तिलीका तेल, और ( ४ ) त्रिफलेका काढ़ा ।

पहले काँजीमें पकाओ, फिर पेटेके रसमें, फिर तिलीके तेलमें और शेषमें त्रिफलेके काढ़ेमें । हरेकमें तीन-तीन घण्टे पकानसे हरताल शुद्ध हो जायगी ।

तूतिया-वर्णन ।

तूतियाके नाम और गुण ।

संस्कृतमें तूतियाको तुत्थ, शिखिग्रीव, तुत्थक, ताम्रगर्भ, मयूरतुत्थ, ताम्रोपधातु, नील और हेमसार आदि कहते हैं । हिन्दीमें तूतिया और नीलाथोथा, बङ्गलामें तूतिया, मरहठीमें मोरथुथु, गुजरातीमें मोरथूथू, फारसीमें इदिया, अरबीमें तूतिया-अकजर, अंगरेजीमें सल्फेट ऑफ़ कापर ( Sulphate of copper ) कहते हैं । तूतिया ताम्बेकी उपधातु है । इसमें कुछ तांबेका मिलाव होता है ।

तूतियाके गुण ।

नीलाथोथा—चरपरा, खारी, कषैला, वमनकारक, हल्का, लेखन, अलभेदक—दस्तावर, शीतल, नेत्रोंको हित, कफ, पित्त, विष, कोढ़,



और खुजली नाशक है। इसको जलमें घोलकर, पिचकारी लगानेसे सोचाकमें बहुत जल्दी लाभ होता है।

### तूतिया शोधन-विधि ।

( १ ) तूतियामें दसवाँ भाग सुहागा डालकर खरलमें रक्खो, ऊपरसे बिल्ली और कबूतरकी विष्ठा डाल-कर खरल करो। फिर गोला बनाकर, सराईमें बन्द कर, १ पुटकी आग देदो। फिर दहीमें खरल करके १ पुटकी आग दो। शेषमें शहदमें खरल करके १ पुटकी आग दो, इस तरह तूतिया शुद्ध होकर मर जायगा।

( २ ) सिरके में नीलाथोथा ३ घण्टे तक खरल करके, टिकिया बनाकर, सराइयों बन्द कर, आग में फूँक दो; तूतिया शुद्ध हो जायगा।

( ३ ) खानका तूतिया, ( क ) गायके मूत्र, ( ख ) भैंसके मूत्र और ( ग ) बकरीके मूत्रमें तीन-तीन घण्टे तक पकानेसे शुद्ध होजाता है।

नोट—बनावटो तूतियाको मिट्टीके वासन में डालकर ऊपरसे नोसादरका पानी भर कर घोलदो। जब पानी नितर जाय, तूतिया पैदेमें जम जाय, पानीको निकाल दो। फिर उसे धूपमें सुखा लो। बस, शुद्ध हो गया।

### तूतिया मारण ।

एक भाग शुद्ध पारा, एक भाग शुद्ध गंधक और दो भाग शुद्ध तूतिया तीनों को खरलमें खरल करो। पीछे पारे या गंधकका आधा “शुद्ध सुहागा” मिला दो और घोटो। ऊपरसे “बड़हरका काढ़ा” भी डालते जाओ। शेषमें सुखा लो। इस मसालेको कपरौटी की हुई शीशीमें रख, बालुका यन्त्रकी विधिसे, चूल्हेपर चढ़ा कर, ४८ घण्टे आग दो। आग आरम्भसे ही तेज रहे। समय पूरा होते ही आग बन्द कर दो। शीतल होनेपर, शीशीके गलेमें “सिन्दूर रस” और पैदेमें “तूतिया भस्म” मिलेगी। यह भस्म ताम्र-भस्मके समान गुणकारी होती है।



## मुर्दासंग-वर्णन ।

### नाम और गुण ।

कंकुष्ठ या मुर्दासङ्ग हिमालयकी चोटियोंपर होता है । इसे संस्कृतमें कंकुष्ठ, काक-कुष्ठ, शोधक और कालमालक आदि कहते हैं । हिन्दी में कंकोष्ठ, मुर्दासङ्ग; बङ्गलामें पार्वतीय मृत्तिका विशेष; मरहटी में मुरदाङ्गसिङ्ग; गुजरातीमें पीलियो और फारसीमें मुर्दासंग कहते हैं ।

यह दो तरहका होता है—( १ ) रक्तकाल, और ( २ ) अण्डक । इनमेंसे भारी, चिकना और पीली कान्तिवाला पहला अच्छा होता है । श्याम, पीला और हल्का “अण्डक” नामका अच्छा नहीं होता ।

मुर्दासङ्ग—दस्तावर, कड़वा, चरपरा, गरम, वर्णकारक, क्षुमि, शोथ, उदर-रोग, अफारा, गुल्म और कफ नाशक हैं ।

### शोधन-विधि ।

( १ ) हिमामदस्तेमें मुर्दासङ्गको कूटकर कपड़-छन कर लो और अदरखके रसमें तीन बार घोट-घोट कर सुखा लो ; बस, मुर्दासङ्ग शुद्ध हो जायगा ।

### मारनेकी तरकीब ।

शुद्ध मुर्दासङ्गको पीसकर, ग्वारपाठे के रसमें घोट कर, टिकिया सी बना लो । फिर सुखाकर, सराव-सम्पुटमें रख, नौ अंगुल गहरे-चौड़े और लम्बे गड्ढेमें कण्डे भर कर, उसके बीचमें सराई रख कर फूँक दो । मुर्दासङ्गकी उत्तम खाने-योग्य भस्म हो जायगी ।

## सिन्दूर-वर्णन ।

संस्कृतमें सिन्दूरके सिन्दूर, रक्तरेंगु, शिव, शृङ्गार-भूषण, रङ्गज, वङ्गज, रक्त, गणेश-भूषण, सौभाग्य और सन्ध्या राग आदि नाम हैं ।



हिन्दीमें सिन्दूर, बङ्गलामें सिन्दूर, मरहटो में शेंदुर और अँगरेजीमें ओरिनोटो ( Orinotto ) कहते हैं ।

सिन्दूर—गरम, दूटे हाड़को जोड़नेवाला, घावको शोधने और भरनेवाला, विसर्प, कोढ़, खाज खुजली तथा विषको नष्ट करता है ।

### शोधन-विधि ।

सिन्दूरको ६ घण्टे तक दूधमें खरल करो । इसके बाद नीबूके रसमें ६ घण्टे तक खरल करो । बस, सिन्दूर शुद्ध हो जायगा ।

### मण्डूर-वर्णन ।

लोहेको आगमें धमानेसे जो मैल निकलता है, उसे मण्डूर, लोह, सिंहानिका, किट्टी और सिंहान कहते हैं । बोल-चालमें इसे “लोह-कीटी” या “कीटीसार” कहते हैं ।

जिस लोहेका कीट होता है, उसमें उसीकेसे गुण होते हैं ।

नोट—मण्डूर शोधनेकी विधि और उसके सम्बन्धकी कितनी ही जानने योग्य बातें हमने “चिकित्सा-चन्द्रोदय” तीसरे भागके पृष्ठ ४०४ में लिखी हैं ।

### मण्डूर-शोधन-विधि ।

चूल्हेमें बहेड़ेकी लकड़ियाँ जलाओ । एक बर्तनमें मण्डूर रखकर, आगपर लाल करो । जब लाल हो जाय, गोमूत्रमें बुझा दो । इस तरह तपा-तपाकर सात बार गोमूत्रमें बुझानेसे मण्डूर शुद्ध हो जाता है । बुझानेसे वह टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाता है । शेषमें, मण्डूरको पानीमें धोकर सुखा लो और खरलमें कूट-पीसकर कपड़-छनकर लो और शीशीमें भर दो ।

अगरुईसे और भी उत्तम बनाना हो, तो इसे गोमूत्रमें भिगोकर और सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटकी तीन आँच दे लो ।



### मण्डूर-भस्म-विधि ।

मण्डूरको मण्डूरसे चौगुने त्रिफलेके काढ़ेमें मिला दो । दोनोंको कढ़ाहीमें ढालकर पकाओ । जब त्रिफलेका काढ़ा एक-दम सूख जायगा, तब मण्डूरकी भस्म हो जायगी । जब मण्डूर और कढ़ाही दोनोंका रङ्ग लाल हो जाय, तब आग मत दो । जब कढ़ाही आप ही शीतल हो जाय, मण्डूर-भस्मको निकालकर पीस लो ।

नोट (१)—जहाँ तक हो, बहेड़ेकी लकड़ी लगाकर मण्डूर शुद्ध करना चाहिये । अगर बहेड़ेकी लकड़ियाँ न मिलें, तो बबूलकी लकड़ियोंसे काम लो और हो सके तो दस-पन्द्रह सेर बहेड़ेके फल भी चूल्हेमें बबूलके साथ जलाओ ।

(२)—मण्डूर-भस्म बनानेके लिए मण्डूरसे दूना त्रिफला लेकर अठगुने जलमें काढ़ा बनाओ और चौथाई पानी रहने पर उतार लो ।

(३)—मण्डूर ६० या १०० सालका पुराना अच्छा होता है । ४० सालसे कमका तो ज़हरके समान होता है ।

### मण्डूर-भस्म के गुण ।

मण्डूर-भस्म अनुपान विशेषके साथ देनेसे पाण्डु, कामला, हलीमक, यकृत-शोथ, तिल्ली और पेटके रोग नाश करती हैं । इनके अलावा ज्वर, खाँसी, शूल, अफारा, बवासीर, कृमिरोग और गोलैको नाश करती है ।

### सेवन-विधि ।

(१) पाण्डु रोगमें—चार रत्ती शुद्ध मण्डूर, ६ माशे शहद और ३ माशे घीमें मिलाकर चाटनेसे पाण्डु रोग निश्चय ही नाश हो जाता है ।

(२) पेटके भयानक दर्दमें—ऊपरकी विधिसे मण्डूर खिलानेसे अवश्य आराम होता है ।

(३) सूजन सहित पाण्डुमें—१ चनेभर मण्डूरको, ऊपरकी तरह, घी और शहदमें चाटो ।



(४) पाण्डु रोगमें—१ माशे मण्डूर ६ माशे गुड़में मिलाकर ११ दिन खाओ ।

(५) कामला में—चने भर मण्डूरको माशे-माशे भर हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी और त्रिफलेके चूर्णमें मिलाकर, ६ माशे शहद और ३ माशे घीके साथ चाटो ।

## सोनामक्खी-वर्णन ।

जिस तरह सोना, चाँदी, ताम्बा, राँगा, जस्ता, सीसा और लोहा सात धातु हैं; उसी तरह सोनामक्खी, रूपामक्खी, तूतिया, काँसी, पीतल, सिन्दूर और शिलाजीत ये सात उपधातु हैं ।

संस्कृतमें सोनामक्खीके स्वर्णमाक्षिक, माक्षिक, धातु, मधुधातु, सुवर्ण माक्षिक, पीत माक्षिक, क्षौद्रधातु औद स्वर्ण-वर्ण आदि नाम हैं । हिन्दीमें सोनामक्खी, बँगलामें स्वर्ण-माक्षिक, गुजरातीमें सोनामक्खी, अँगरेजीमें आयर्न पाइराटीस और लैटिनमें फेरियाई सल्फरेटम कहते हैं ।

सोनामक्खीमें थोड़ा-सा सोना होता है । इसीलिये सोनेके अभावमें सोनामक्खी देते हैं यानी सोना न होनेसे सोनामक्खी देते हैं; अतः यह सोनेसे कम गुणवाली है । इसमें सोनेके सिवाय और पदार्थोंके गुण भी रहते हैं । जिसमें सोनेकी सी मलक हो और जो भारी हो, वही सोनामक्खी अच्छी होती है ।

## शुद्ध सोनामक्खीके गुण ।

शुद्ध सोनामक्खी—स्वादु, कड़वी, वीर्यवर्द्धक, रसायन, नेत्रोंको हितकारी, वस्ति रोग, कोढ़, पाण्डु, प्रमेह, उदररोग, विष, बवासीर, सूजन, खुजली और त्रिदोष नाशक है ।

हिकमतमें लिखा है—सोनामाखी प्रकृतिमें गरम और रूखी है; फैंफड़ोंको हानि करती है । “रोगन बादाम” इसके दर्पको नाश करता है । इसका प्रतिनिधि “तूतिया” है । मात्रा एक जौके बराबर है । इसमें



विष नहीं है। इसका रंग पीला और स्वाद कषैला होता है। यह नेत्रोंके जाले-माड़े, नाखूनोंके रोग, सिरके रोग और तिल्लीको नाश करती एवं हृदयको मजबूत करती है।

### अशुद्ध सोनामक्खीके दोष ।

अशुद्ध सोनामक्खी—अग्निमांघ, बलहानि, नेत्र-रोग, विष्टंभ, कोढ़ और अनेक प्रकारके घाव कर देती है; अतः इसे बिना शोषे काममें न लेना चाहिये ।

### शोधन-विधि ।

एक लोहेकी कढ़ाहीमें ३ भाग सोनामक्खी, एक भाग सेंधा नोन और ५ भाग बिजौरे नीबूका रस ( जितनेमें चूर्ण खूब डूब जाय ) तीनोंको डालकर, खूब तेज आगपर पकाओ और कलछीसे चलाते रहो । जब तक कढ़ाही लाल—सुर्ख न हो जाय, उसे चलाते रहो । सुर्ख होनेपर आग मत दो और शीतल होने पर उतार लो । बस, सोनामक्खी शुद्ध हो गई ।

नोट—बिजौरे नीबूकी जगह “जँभीरी” नीबूका रस भी ले सकते हो ।

### और शोधन विधि ।

शोधनेकी और विधि—२० तोले सोनामक्खी, १० तोले सेंधा नोन और ३० तोले अरण्डीका तेल,—तीनोंको कढ़ाही में डालकर तेज आगपर चढ़ाकर पकाओ और कलछीसे चलाओ । जब तेल बिल्कुल जल जाय, ३० तोले त्रिफलेका काढ़ा डालकर पकाओ । जब काढ़ा भी जल जाय, ३० तोले केलेकी जड़का रस डाल दो और पकाओ । जब तेल, काढ़ा और केलेका रस तीनों जल जायँ, तब नीबूका रस ३० तोले डालकर खूब आग लगाओ और चलाओ । जब नीबूका रस भी जल जाय, ३ घण्टे तक खूब तेज आग लगाते रहो, फिर आग बन्द करो । शीतल होने पर, सोनामक्खीका निकालकर, पानी भरे मिट्टीके बासनमें डालकर खूब मजो और पानी बहा दो, ताकि नमक न रहे । इसके



## धातुओंका शोधन-मारण—शोधन-विधि ।

५२६

बाद, फिर एक बार पानी देकर मलो और पानीको निकाल दो । जब तक पानीका स्वाद खारा रहे, धोओ और पानी निकाल दो । शेषमें, सोनामक्खीको सुखाकर कूट-पीसकर छानलो । यह विधि श्याम-सुन्दर आचार्यकी है । इस तरह शोधी हुई सोनामक्खी सबसे उत्तम होती है ।

### सोनीमक्खीकी भस्मकी विधि ।

सोनामक्खीको नीचेकी चीजोंमेंसे किसी एकमें खरल करके आँचकी एक पुट दो; यानी एक बार फूँक दो, तो भस्म हो जायगी:—

( १ ) कुलथीका काढ़ा, ( २ ) माठा, ( ३ ) तेल, और ( ४ ) बकरेका पेशाब । जैसे कुलथीके काढ़ेमें घोटकर टिकिया बनालो और सराव-सम्पुटमें रखकर, गजपुटमें फूँक दो, भस्म हो जायगी ।

### दूसरी विधि

सोनामक्खीको नीबूके रसमें सात बार घोट-घोटकर टिकिया बनाकर, सराव-सम्पुटमें रखकर, सात बार गजपुटमें फूँकनेसे सोनामक्खीकी भस्म हो जाती है । कुलथीके काढ़े वगैरः में से किसी एकमें घोटकर, एक गजपुटकी आग देनेसे भी भस्म हो जाती है । सात बार अग्निमें फूँकनेसे और भी अच्छी भस्म हो जाती है ।

नोट—नीबूके रसमें घोट-घोटकर, सात बार फूँकनेसे रूपामाखी और कांस्यभाक्षिककी भी भस्म हो जाती है ।

### उत्तम भस्म की पहचान ।

सोनामक्खीकी भस्मको धूपमें रखकर देखो, अगर उसमें चमक हो तो अशुद्ध समझो । यदि चमक न हो तो शुद्ध भस्म समझो ।

### अशुद्ध भस्मसे हानि ।

सोनामक्खीकी अशुद्ध भस्म—मन्दाग्नि, कमजोरी और नेत्ररोग प्रभृति अनेक बीमारियाँ पैदा करती है । अगर किसीने वैसी भस्म सेवन की हो, तो वह नीचेका नुसखा सेवन करे:—



## अशुद्ध सोनामक्खीकी शान्तिका उपाय ।

अगर अशुद्ध भस्मसे रोग उठे हों, तो लगातार कुछ दिन “अनारके छिलकोंका काढ़ा” पीओ । “कुल्थीका काढ़ा” भी अच्छा है ।

## रूपामक्खी-वर्णन ।

रूपामाखी चाँदीके जैसी होती है, और उसमें किसी क्रूर चाँदी होती है, इसीसे उसे रूपामाखी कहते हैं । इसे संस्कृतमें तारमाक्षिक, माक्षिक-श्रेष्ठ और रौप्य माक्षिक आदि कहते हैं । हिन्दीमें रूपामाखी, बंगलामें रौप्यमाक्षी, मरहठीमें रौप्यमाक्षिक और गुजरातीमें रूपामाखी कहते हैं ।

चाँदीके अभावमें रूपामाखी देते हैं । यह चाँदीसे कुछ कम गुणवाली होती है । रूपामाखीमें चाँदीके सिवा और पदार्थोंके भी गुण रहते हैं ।

## शुद्ध रूपामक्खीके गुण ।

रूपामाखी—पाकमें मीठी, रसमें जरा कड़वी, वीर्यवर्द्धक, रसायन, बुढ़ापा जीतने वाली, नेत्रोंको हितकारी, वस्तिरोग, प्रमेह, कौढ़, पाण्डु, विष, उदर-रोग, धवासीर, सूजन, क्षय, खुजली और त्रिदोष-नाशक है ।

हिकमतमें लिखा है—रूपामाखी कालाई लिये सफेद होती है, इसकी प्रकृति शीतल और रूखी है । यह देहकी चिकनाईको सोखती और आँखोंकी ज्योतिषको बढ़ाती है । सिरके रोग, नेत्रके घाव, नाखूनोंके रोग और मोतियाबिन्दको गुणकारक है । यह तिल्लीकी कठोरताको मिटाती है । इसमें विष नहीं है । इसका प्रतिनिधि “मुर्दा-संग” है । इसके दर्पको “बादामका तेल” नाश करता है । मात्रा २ माशेकी है ।



### अशुद्ध रूपामाखीके दोष ।

अशुद्ध रूपामाखी—मन्दाग्नि, बलनाश, विष्टम्भ, नेत्ररोग, कोढ़, गण्डमाला और अनेक तरहके घाव आदि करती है; अतः शोधकर लेना उचित है ।

### शोधन-विधि ।

रूपामाखीको १२ घण्टे तक ककोड़े, मेढ़ासिंगी और नीबूके रसमें पीसकर, धूपमें सुखा लो । बस, शुद्ध हो जायगी ।

### रूपामाखीकी भस्मकी विधि ।

रूपामाखीके मारनेकी वही विधि है, जो सोनामाखीकी है । आप इसे बकरेके पेशाबमें खरल करके, सराव-सम्पुटमें रखकर १ गजपुटकी आग दे दो । अगर धूपमें चमक दीखे, तो फिर खरल करके फूँक दो । कोई-कोई सोनामाखी और रूपामाखीको सात-सात बार खरल करके सात-सात आग देते हैं ।

### अशुद्ध रूपामाखीके विकारोंकी शान्तिका उपाय ।

“मिश्रीमें मिलाकर मेढ़ासिंगी” खानेसे रूपामाखीके विकार शान्त हो जाते हैं ।

## विष और उपविषोंकी शोधन-विधि

### विषके नाम और लक्षण ।

संस्कृतमें विषको—विष, गरल, हालाहल, रक्तशृङ्गिक, नील, आदि कहते हैं । हिन्दीमें बचनाग विष, बँगलामें काट विष, मरहठीमें बचनाग, गुजरातीमें विष, फ़ारसीमें जहर और अंगरेज़ीमें पाइजन (Poison) कहते हैं ।



विषके नौ भेद हैं—( १ ) वत्सनाभ, ( २ ) हारिद्र, ( ३ ) सक्तुक, ( ४ ) प्रदीपन, ( ५ ) सौराष्ट्रिक, ( ६ ) शृङ्गिक, ( ७ ) कालकूट, ( ८ ) हाजाहल और ( ९ ) ब्रह्मपुत्र ।

### वत्सनाभ विष ।

जिसके पत्ते सम्हालूके जैसे हों, आकृति—स्वरूप बछड़ेकी नाभि-जैसा हो, जिसके नज्दीक दूसरे वृक्ष न ठहरें और न बढ़ें उसे “वत्सनाभ” विष जानना चाहिये ।

हिक्मतमें लिखा है—बच्छनाग विषको संस्कृतमें वत्सनाभ, फ़ारसीमें ज़हर और अरबीमें विष कहते हैं । इसका स्वरूप ऊपरसे काला, पर भीतरसे कुछ सफ़ेद और स्वादमें कड़वा होता है । इसकी कुछ जातोंको संख्या कहते हैं । यह निर्विषी-जैसे एक पहाड़ी वृक्षकी जड़ है । इसकी प्रकृति चौथे दर्जेकी गरम और रूखी है । यह प्राण-नाशक है । इसका दर्प “निर्विषी और दायुलमिस्क” से नष्ट होता है । इसकी मात्रा दो माशे की है । शुद्ध किया हुआ बचनाग कोढ़, सफ़ेद दाग और श्वासनाशक है; पर इसे होशियारीसे सेवन करना चाहिये, क्योंकि घातक विष है ।

### हारिद्र विष ।

जिसकी जड़ हल्दीके पेड़के जैसी हो, वही हारिद्र विष है ।

### सक्तुक विष ।

जिसकी गाँठमें सत्तू-जैसा चूर्ण भरा हो, वह सक्तुक विष है ।

### प्रदीपन विष ।

जो लाल रंगका, दीप्त, अग्निकी-सी कान्तिवाला और अत्यन्त दाहकारक हो, वह प्रदीपन विष है ।

### सौराष्ट्रिक विष ।

जो सौराष्ट्र देशमें पैदा होता है, वह सौराष्ट्रिक विष है ।



**शृङ्गिक विष ।**

जिसको गायके सींगके बाँधनेसे दूध लाल हो जाय, उसे “शृङ्गिक” या सींगिया विष कहते हैं ।

**कालकूट ।**

यह विष एक पेड़का गोंद है । कोकन और मलयाचल आदिमें होता है ।

**हालाहल विष ।**

जिसके फल दाखोंके गुच्छोंके समान हों, पत्ते ताड़के पेड़-जैसे हों, जिसके पास वृक्षादि भस्म हो जायँ, वह “हालाहल” विष है । यह हिमालय, दक्खन समुद्र, किष्किन्धा और कोंकन देशमें होता है ।

**ब्रह्मपुत्र ।**

जिसका रंग पीला हो, वह “ब्रह्मपुत्र विष” है । यह मलयाचल पर होता है ।

रसायनके काममें सफेद विष लिया जाता है । शरीर-पुष्टिके लिए लाल विष, कोढ़ नाश करनेको पीला और किसीके मारनेके लिए काला विष लेते हैं ।

**विषके गुण ।**

विष प्राणनाशक, सारे शरीरमें फैलकर पचनेवाला, ओजको सुखाकर सन्धियोंको ढीला करनेवाला, अग्निके अधिक अंशवाला, अपने साथीके गुण करनेवाला, वात और कफनाशक तथा मदकारक है । यदि यह विष चतुराई और नियमसे सेवन किया जाता है, तो यह प्राणदायक, रसायन, योगवाही, त्रिदोषनाशक पुष्टिकारक और वीर्य-वर्द्धक होता है ।

**अशुद्ध विष हानिकारक ।**

अशुद्ध विष परम-हानिकारक है, शुद्ध करनेसे इसके दुर्गुण दूर हो जाते हैं । इसलिये विषको शुद्ध करके दवाओंमें डालना चाहिये ।



### विष-शुद्धिकी विधि ।

विष—बच्छनाभ विषको ३ दिन तक गोमूत्रमें भिगो रखो । इसके बाद, मूत्रसे निकालकर, लाल राईके तेलसे तर किये हुए कपड़ेमें दबा-कर रख दो । बस, विष शुद्ध हो जायगा ।

### सींगिया विषकी शुद्धि ।

सींगिया विषको दो-तीन तोले लेकर, भैंसके गोबरमें मिलाकर आगपर पकाओ । इसके बाद निकालकर, उसमें एक सींक घुसाओ । अगर सींक पार हो जाय, तो ठीक हो गया । उसे धोकर साफ कर लो और दूधमें डालकर पकाओ । फिर निकालकर सुखा लो और रख दो । अब, यह सब कामका हो गया ।

### उपविष शोधन-विधि ।

( १ ) आकका दूध, ( २ ) थूहरका दूध, ( ३ ) कलियारी, ( ४ ) कनेर, ( ५ ) चिरमिटी—घुँघची, ( ६ ) अफीम, और ( ७ ) धतूरा—ये सब उपविष या गौण विष हैं । अगर किसी चीजमें ये डालने हों, तो इन्हें शोध लेना चाहिये ।

### आकका दूध ।

आपको संस्कृतमें अर्क, फ़ारसीमें खुरग, अरबीमें उशर और अँगरेज़ीमें कैलोट्रोपीसजाइगाटिया कहते हैं । इसका वृक्ष सफेदी लिये हरा होता है । छोटा सा वृक्ष होता है । इसका दूध तीसरे दर्जेका गरम और रुखा होता है । आकका दूध यकृत और फेफड़ोंको हानिकारक है । “घी” इसका मार है । इसका प्रतिनिधि “शबरम” है । मात्रा ३ माशेकी है । इसका दूध मांस-भक्षक है, अतः चमड़ेमें घाव कर देता है । इसके पत्तोंसे सरदीकी सूजन नाश होती है, शीतकी पीड़ा शान्त होती है और पेटके कीड़े भी नाश हो जाते हैं ! इसके



फूल के खानेसे भोजन फौरन ही पचता है । यह पकाशयके रोगोंको गुणकारक है । इससे कोढ़, खुजली, तिल्ली, बवासीर और गोला आदि भी नाश होते हैं ।

### आककी शोधन-विधि ।

आकका दूध खरल करनेसे ही शुद्ध हो जाता है ।

### कलियारीका वर्णन ।

कलियारीको करिहरी भी कहते हैं । संस्कृतमें कलिकारी, मर-हठीमें कललानी और गुजरातीमें कलगारी कहते हैं । इसका वृक्ष पहले मोटी घासकी तरह होता है, फिर बेलकी तरह फैलता है । पत्ते अदरकसे होते हैं । इसका पेड़ प्रायः बाढ़ या भाड़ीके सहारे लगता है । पुराना पेड़ केलेके वृक्ष जितना मोटा होता है । गरमीमें पेड़ सूख जाता है । फूलकी पंखड़ियाँ लम्बी और फूल गुड़हलके फूल-जैसा होता है । फूलोंका रङ्ग लाल, पीला, सफेद और गेरुआ सा होता है । फूलोंसे वृक्ष बड़ा सुन्दर दीखता है । इस वृक्षकी गाँठमें विष होता है ।

यह दस्तावर, कड़वा, तोखा, खारा, पित्तकारक, गरम, कषैला और हल्का तथा वायु, कफ, कीड़े, वस्तिशूल, कोढ़, बवासीर, खुजली, ब्रण, सूजन, शोष, शूल और गर्भनाशक है ।

### शोधन-विधि ।

कलियारीके टुकड़े-टुकड़े करके एक दिन “गोमूत्र”में भिगोदो, वह शुद्ध होजायगी ।

### कनेरका वर्णन ।

संस्कृतमें कर्णिका और करवीर, हिन्दीमें कनेर, गुजरातीमें कराहेर और मरहठीमें कराहेर कहते हैं । कनेरका पेड़ मशहूर है और सर्वत्र होता है । यह मनुष्यके कद-बराबर प्राय २ गज ऊँचा होता है ।



कनेरका। पेड़ चार तरहका होता है: — ( १ ) सफ़ेद, ( २ ) लाल, ( ३ ) गुलाबी, और ( ४ ) पीला ।

इन चारोंमेंसे सफ़ेद कनेर दवाओंके काममें आता है । इसकी जड़में विष होता है । पत्ते लम्बे होते हैं । फूलोंमें सुगन्ध होती है न दुर्गन्ध । कनेरके पेड़के पास साँप नहीं आता । गधा इसे हरगिज नहीं छूता ।

कनेर की प्रकृति गरम और रुख्सी है । यह फैंफड़ोंको हानि करता है । “शहद और घी” इसके दर्पको नाश करते हैं । बाबूना और मुनका इसके बदल या प्रतिनिधि हैं । मात्रा ३ माशेकी है; पर इसे खाना उचित नहीं ।

यह कठोर सूजनको नाश करता, कान्ति करता, रूखापन करता, पोथकी पुरानी पीड़ाको शान्ति करता, चूतड़से पाँवकी उँगली तकके दर्दको नाश करता और ओजको बल देता है । इसका लेप खुजली और भाँईको नाश करता है । इसके सूखेपत्तोंको पीस-छानकर घावों पर बुरकनेसे घाव आराम हो जाते हैं । इसकी जड़का लेप करनेसे असाध्य गरमीके घाव भी आराम हो जाते हैं । बवासीर पर भी इसकी जड़का लेप बहुत फायदेमन्द है । सिरके रोगोंमें सफ़ेद कनेरकी सूखी जड़ दरदरे पत्थरपर घिसकर लगानेसे लाभ होता है । साँप या बिच्छूके काटने पर, काटे स्थानमें सफ़ेद कनेरकी जड़ घिसकर लेप करनेसे बड़ी जल्दी फायदा होता है । यद्यपि इसका खाना-पीना मना है, पर साँप और बिच्छूके काटनेपर इसकी जड़को घिसकर या पत्तोंका रस निकालकर, शक्ति-अनुसार पीना चाहिये । अगर ग्लानि हो, तो ऊपरसे “घी” पीना चाहिये । सफ़ेद कनेरकी जड़ रविवारको कानपर बाँधनेसे जाड़ेके ज्वर भाग जाते हैं । विसर्पसर लाल कनेरके फूल और बराबरके चाँवल, रातको पानीमें डालकर, ओसमें रखकर, सबेरे ही पीसकर लेप करनेसे लाभ होता है । ये सब प्रयोग हमारे आजमूदा हैं । सफ़ेद कनेरके सूखे फूल, उनके बराबर ही कड़वी



तमाखू और जरासी इलायची—इनके चूर्ण को कपड़-छन करके सूँघनेसे साँप का जहर उतर जाता है ।

### कनेर की शोधन-विधि ।

कनेर की जड़ के छोटे-छोटे टुकड़े करके, गाय के दूध में दोलायन्त्र की विधि से पकाने से कनेर शुद्ध हो जाती है ।

### चिरमिटी-वर्णन ।

नोट—एक हॉडीमें आधे पेट दूध भर कर, उसपर आड़ी लकड़ी रखकर एक कपड़ेमें कनेरकी जड़के टुकड़े होंधकर झूलेकी तरह उस लकड़ीमें लटका दो । पोटली दूधमें डूबी रहे । हॉडीको चूल्हेपर चढ़ा दो और आग दो । यही दोलायन्त्र है ।

चिरमिटी को संस्कृत में उच्चटा, हिन्दी में घुंघुची या चिरमिटी कहते हैं । फ़ारसी में चरम खरूस कहते हैं । इसे सब जानते हैं । इसके बीजों से रत्ती का काम लिया जाता है । काले मुँह और लाल शरीर वाली चिरमिटी तोलने के काम में आती है । देहातिन औरतें इनकी मालायें भी बनाती हैं ।

चिरमिटी दो तरह की होती है— (१) लाल, और (२) सफेद । चिरमिटी के पत्ते हरे और बीज लाल और सफेद होते हैं । यह स्वाद में कड़वी और फीकी होती है । प्रकृति में तीसरे दर्जे की गरम और दूसरे दर्जे की रूखी है । गरम मिजाज वालों को हानिकर और सिर दर्द पैदा करनेवाली है । इसका दर्प “सूखे धनिये और ताज़ा दूध” से नाश होता है । मात्रा १ माशे की है ।

यह चित्त को प्रसन्न करती, स्नायुओं में बज देती, बल की रक्षा करती, जरा-व्याधि को दूर करती, ओज को बलवान करती और शुक्र पैदा करती है । लाल और सफेद चिरमिटियों में “सफेद चिरमिटी” उत्तम होती है ।

### चिरमिटीके शोधने की विधि ।

चिरमिटी तीन घन्टे तक कांजी में पकाने से शुद्ध हो जाती है ।



## चिरमिटी के विष की शान्ति के उपाय ।

चौलाई के रस में मिश्री मिलाकर पीओ और ऊपर से दूध पीओ। इससे चिरमिटी का विष शान्त हो जाता है ।

### अफीम-वर्णन ।

अफीमको संस्कृतमें अहिफेन, फारसीमें अफयून, अरबीमें लुबनुल खशखाश और अंग्रेजी में ओपियम (Opium) कहते हैं। यह स्वरूपमें काली होती है, पर तत्काल की पैदा हुई सफेद होती है। स्वाद में कड़वी होती है। भारतवर्ष में पोस्ते में सूई चुभा देते हैं, उससे दूध निकलता और जम जाता है। प्रकृति में चौथे दर्जे की शीतल और रूखी होती है। बाहरी और भीतरी नसों को हानिकारक है। “केशर और दालचीनी” इसके दर्प को नाश करते हैं। “खुरासानी अजवायन प्रतिनिधि या बदल है। मात्रा — १ रत्ती ।

अफीम शिथिलता-कारक, वर्द्धक, रुद्धक, निद्रा लानेवाली, शोथ या सूजन को नष्ट करनेवाली, सारी पीड़ाओं को शान्ति देने वाली, वीर्य को स्वलित होनेसे रोकने वाली, नजला, कफ, खाँसो, कानका दर्द और नेत्रके सब रोगों को खाने-लगाने से नाश करनेवाली है। इसबगोल के लुआब” में अफीम घिसकर लगाने से बाल नहीं निकलते ।

### अफीम के शोधनेकी विधि ।

( १ ) अफीममें अदरख के रस की बारह भावना देने; यानी बारह बार अदरखके रस में खरल कर-करके सुखाने से अफीम शुद्ध हो जाती है ।

(.२ ) अफीम को जल में घोलकर, ब्लाटिङ्ग पेपरमें या चार तहके कपड़े में छान लेने से मैल ऊपर रह जाता है और पानी नीचे चला जाता है। उस पानी को मन्दी आगपर औटाने से अफीम गाढ़ी हो जाती है। उसमें मैल माकड़ कुछ भी नहीं रहता ।



## अफीमके विषकी शान्ति के उपाय ।

( १ ) बड़ी कटेरीके रसमें दूध मिलाकर पीनेसे अफीम का जहर उतर जाता है ।

( २ ) हींग घोलकर पीनेसे भी अफीमका जहर उतर जाता है ।

## कुचला-वर्णन ।

कुचले को संस्कृतमें तिन्दुक, फारसीमें कुचला, अरबीमें इजराकी और कातिलुलकलब तथा अँगरेजीमें पॉइजननट या नक्सवोमिका कहते हैं । इसका स्वरूप कालापन लिये पीला और स्वाद कड़वा होता है । कुचला एक वृक्षका प्रसिद्ध बीज है । प्रकृतिमें तीसरे दर्जेका गरम और रूखा होता है । यह मद करनेवाला—नशा लानेवाला और घातक विष है । इसके जहरकी शान्ति क्रय कराने और घी-मिश्री पिलानेसे होती है । मात्रा २ रत्तीकी है ।

इसको शोधकर सेवन करनेसे पक्षवध, स्तम्भ, आमवात, कमरका दर्द, चूतड़से पैरकी अँगुली तककी झनझनाहट और दर्द तथा वायुशूल प्रभृति आराम होते हैं । कुचला स्नायुरोगोंकी अनुभूत दवा है । कुचला पथरीको नाश करता है । इसका लेप चेहरेपर करनेसे मुँहकी कलाई, व्यंग, भौँई और खुजली तथा दाद नाश हो जाते हैं ।

## कुचला शोधनेकी तरकीबें ।

( १ ) कुचलेको घीमें भून लो, शुद्ध हो जायगा ।

( १ ) कुचलेको गोमूत्रमें दस दिन तक भिगो रक्खो; पर मूत्र रोज बदलते रहो । फिर उसे १० दिन बाद निकाल लो और छील कर या बीचों-बीचसे चीर-चीरकर, उसके भीतरकी जिभली निकाल-निकाल कर फेंक दो और टुकड़े-टुकड़े करके दूधमें डालकर पकाओ; कुचला शुद्ध हो जायगा ! यह दूसरी तरकीब है ।

( ३ ) छद्दोंक भर कुचला डेढ़ सेर दूधमें औटाओ । जब दूध रबड़ी



सा हो जाय, उतार लो और कुचलेको निकालकर धोलो और सुखाकर रख लो । बस, कुचला शुद्ध हो गया । यह तीसरी विधि है ।

नोट—कुचलेके बीजोंको बीचसे चीर-चीर कर, उनके अन्दरकी जिमली हर हालतमें निकाल फेंकनी चाहिये । धीमें भूनते समय, इस बातका ख्याल अवश्य रहना चाहिये कि बीज जलने न पावें ।

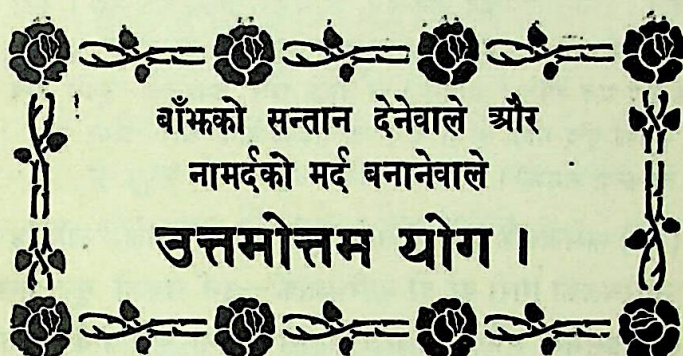
### धतूरेका वर्णन ।

धतूरेका वृक्ष प्रसिद्ध है । धतूरा एक छोटेसे काँटेदार वृक्षका फल है । इसका पेड़ बैंगनके पेड़-जैसा होता है । संस्कृतमें इसे धतूर, फारसीमें तातूर और अंग्रेजीमें इस्तेमुर्नियम कहते हैं । इसका स्वरूप हरा और काला होता है, स्वाद कड़वा होता है । प्रकृतिमें चौथे दरजेका शीतल और रूखा है । यह अत्यन्त मादक, उन्माद और चिन्ताजनक है । “सौंफ, काली मिर्च और शहद”—इसके दर्पको नाश करते हैं । मात्रा ३ रत्तीकी है । अधिक लेनेसे घातक है । अवयवोंमें और विशेष कर मस्तिष्कमें अत्यन्त शिथिलता करनेवाला, अत्यन्त मादक, अत्यन्त निद्राप्रद, पित्तज, रुधिरकी तेजी और सिर-दर्दको शान्त करनेवाला है, शोथ या सूजनके भीतरी मलको पकाता है । चिकनाईको सुखानेवाला और वीर्यको स्तम्भन करनेवाला है । इसके पत्तों का लेप अवयवोंको गुणकारक है । वैद्यकमें धतूरा गर्म, अग्नि बढ़ानेवाला, नशा लानेवाला, एवं ज्वरादि सब रोगोंका नाशक लिखा है ।

### धतूरा शोधन-विधि ।

( १ ) धतूरेके बीजोंको कूटकर १२ घण्टे गाय के मूत्रमें भिगोकर निकाल लो और धो डालो; फिर काम में लाओ ।





( १ ) सोंठ, छुहारेका छिलका, बंसलोचन और नागौरी असगन्ध, इन चारोंको कूट-छानकर रख लो । इसमेंसे २ माशे चूर्ण स्त्री-धर्मके पीछे, बारह दिन तक, खानेसे उसको गर्भ रहता है, जिसके एक पुत्र होकर रह गया हो ।

( २ ) चमेलीकी जड़का छिलका ४ माशे, काली गायके दूधमें स्त्री उस जगह पीवे, जहाँ गाय दुही जाती हो और सूरजके सामने मुँह करके सन्तान माँगे, ईश्वर-कृपासे इच्छा पूर्ण होगी ।

( ३ ) लड़केका नाल मिश्रीमें मिलाकर, खानेसे गर्भ रहता है ।

( ४ ) कसौदीकी जड़ बकरीके दूधमें पीसकर खानेसे गर्भ रहता है ।

( ५ ) नागकेशर ३ माशे और जीरा ३ माशे इन दोनोंको गायके १ तोला घीमें ऋतु-स्नानके चौथे दिनसे तीन दिन तक पीनेसे गर्भ रहता है ।

( ६ ) छुहारे नग १५ और धनियेकी जड़ एक पैसे-भर, दूधमें औटाकर, सात दिन खानेसे गर्भ रहता है ।

( ७ ) सफेद काँगनी बछड़ेवाली गायके दूधमें, रजोधर्मके बाद खानेसे गर्भ रहता है ।

नोट—गर्भ रहा कि नहीं, इसके जाननेकी तरकीबें:—स्तनोंका मुँह काला हो जाय, ( २ ) मुँहमें पानी भर-भर आवे, मुख सूख जाय, शरीर मारी



रहे, आलस्य आवे और सिरपर गुरभट पड़े। (३) शहदको सिरकेमें मिला कर खावे। अगर पेटमें दर्द होने लगे, तो गर्भके होनेमें शक नहीं। (४) स्त्रीका हाथ लाल हो, तो बेटा होगा। अगर हाथ सफेद हो, तो लड़की होगी। स्त्रीके दूधकी बूँद एक शीशे (आइने) पर डालो और आइनेको धूपमें रख दो। अगर दूधकी बूँद मोती सी हो जाय, तो लड़का होगा और अगर दूध बिखर जाय तो कन्या समझो।

(८) खसखसके दाने दो तोले, भुने चने दो तोले, खाँड ४ तोले और नारियलकी गिरी पूरे दो नारियलोंकी—इन सबको कूट-पीस कर रख लो। इसमेंसे ६ पैसे भर रोज खानेसे जितना बल-वीर्य बढ़ता है लिख नहीं सकते। पर स्त्रीसे बचना जरूरी है।

(९) ग्वारपाठेका गूदा, घी, गेहूँकी मैदा और सफेद चीनी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर हलवा बनाकर खानेसे २१ दिनमें नामर्द भी मर्द हो जाता है; पर स्त्री और खटाईसे परहेज रहना चाहिये।

(१०) चोपचीनी आध पाव और दालचीनी, कबाबचीनी, लौंग, कालीमिर्च, रूमीमस्तगी, सालम मिश्री, जावित्री, इन्द्रजौ मीठा कूट, नरकचूर, अकरकरा, बादामकी मीगी, पिस्ता और केशर—ये सब चार-चार माशे और कस्तूरी २ माशे लाकर रखो।

कस्तूरीके सिवा, सब दवाओंको कूट-पीसकर रख लो। शेषमें, कस्तूरी भी मिला दो। इसके बाद कलईदार कढ़ाहीमें आध सेर शहद डालकर चूल्हेपर रखो। आग एक-दम मन्दी रखो। जब शहदमें भाग आने लगें, तब उन्हें उतार-उतार कर फेंक दो। फिर दवाओंके पिसे-छने चूर्णको शहदमें मिलाकर चटपट कढ़ाही नीचे उतार लो। शीतल होनेपर, तोले-तोले भरकी गोलियाँ बाँध लो। इसे “माजून चोपचीनी” कहते हैं; एक गोली रोज सबेरे ही खाने और खटाई तथा बादी पदार्थों से परहेज करनेसे बूढ़ा भी जवान हो जाता है। नमक लाहौरी खाना चाहिये।



( ११ ) असगन्ध आध सेर, सफेद मूसली आध सेर और स्याह मूसली आध सेर —सबको पीस-कूट कर छान लो । फिर इस चूर्णको चूर्णसे दस गुने दूधमें पकाओ और चलाते रहो, जिससे दूध या दवा जलने न पावे । जब दूध जल जाय, खोया-सा रह जाय, उतार कर छाया में सुखा दो । खूब सूख जानेपर, इस चूर्णके बराबर मिश्री पीस कर मिला दो और एक बर्तनमें मुँह बाँध कर रख दो ।

इसमेंसे २१ माशे चूर्ण रोज़ खाकर ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता और रंग निखर कर गोरा हो जाता है ।

( १२ ) ढाकका गोंद, तालमखाना, बीजबन्द, समन्दरशोष, सफ़ेद मूसली, बड़ा गोखरू और तज—इन सबको पीस-कूट कर छान लो । पीछे चूर्णके वजनके बराबर मिश्री पीसकर मिला दो और रख दो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण सवेरे ही खाकर, ऊपरसे धारोष्ण दूध पीनेसे खूब बल-वीर्य बढ़ता है ।

( १३ ) कबाबचीनी, लौंग, अकरकरा, सोंठ, ऊद-खालिस और इस्पन्द जलानेका,—ये सब बराबर लेकर पीस-छान लो । फिर इस चूर्णमें चूर्णके वजनसे दूना पुराना गुड़ मिलाकर, बेर-समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके २१ दिन खानेसे मैथुन-शक्ति खूब बढ़ जाती है ।

( १४ ) सिरसके बिना घुने बीज दो माशे रोज़ २१ दिन तक खानेसे खूब बल-वीर्य और नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है ।

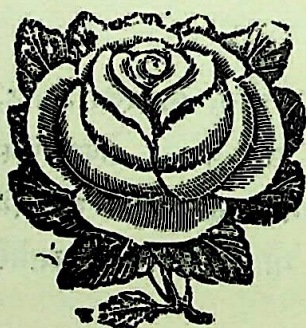
( १५ ) धनिया पीस कर, उसमें बराबरकी खाँड़ और घी मिलाकर रख दो । इसमेंसे ६ पैसे भर रोज़ खानेसे बल-वीर्य बढ़ता है ।



( १६ ) जिसने पुत्र जना हो, पर पुत्री चाहे, उसे कड़वी तोरई साफ करके और छिलका दूर करके योनिमें रखनी चाहिये । मैथुनसे पहले, योनिको पानीसे धोकर प्रसङ्ग करना चाहिये । इसके बाद मेथीके लड्डू खाने चाहिएँ और चिकनी सुपारी दूधमें पीसकर पीनी चाहिएँ ।

नोट—( १ ) शराबमें बाजकी बीट एक तोले-भर खानेसे गर्भ नहीं रहता । जो शराबमें न खाय, वह अन्य चीज़में भी खा सकती है ।

( २ ) गजपीपल और पिस्तेका छिलका बराबर-बराबर पीस-छान लो । इसमेंसे १ पैसेभर चूर्ण रोज़ एक मास तक खानेसे गर्भ नहीं रहता ।





## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके सुभीतेके लिए कुछ नई-नई बातें ।

आजकल इस देशमें हस्तमैथुन, गुदामैथुन एवं नेचरके कानूनके खिलाफ कुकर्मोंकी खूब वृद्धि हो रही है। हमारे पास इस मर्जके मरीजोंके जितने पत्र आते हैं, उतने और मर्जके मरीजोंके नहीं। इस लिहाजसे नहीं, कि लोग हमें नपुंसक-चिकित्सामें विशेषज्ञ (Specialist) या एक्सपर्ट समझते हैं; बल्कि इस लिहाजसे कि देशमें इस रोगके रोगी ही बहुतायतसे हैं। बाज-बाज औकात, किसी-किसी रोगीका रोना पढ़ कर हम स्वयं रो पड़ते हैं। बहुत लोग गरीबीसे अपना इलाज करा नहीं सकते, क्योंकि वैद्य-डाक्टरोंका स्वभाव है कि, वे जिस से जियादा पैसा मिलता है, उसीकी तरफ जियादा ध्यान देते हैं। गरीब इतना पैसा कहाँसे लावे ? दूसरी बात यह है, कि हमारे अधिकांश देशी वैद्योंको ज्वर, खाँसी और संग्रहणी प्रभृतिकी चिकित्साका अच्छा अनुभव रहता है, क्योंकि ऐसे ही रोगी अक्सर उन्हें मिलते हैं। प्रमेह और नपुंसकताका इलाज वे सफलतापूर्वक बहुत कम कर सकते हैं। मेरे कहनेका यह मतलब नहीं कि, ऐसे वैद्य भारतमें हैं ही नहीं। हैं अवश्य, पर उँगलियोंपर गिनने योग्य। जो योग्य हैं, वे उतना ध्यान नहीं देते, क्योंकि उन्हें टाइम बहुत कम मिलता है। जिन्हें काफी समय मिलता है, उन्हें अनुभव नहीं। वे प्रमेह, सोजाक, उपदंश, फिरङ्ग और नपुंसकताके रोगीको देखते ही मन ही मन बहुत धबराते और एक आफत सी आई समझते हैं, पर अपनी शानमें बट्टा लगानेके भयसे और आई हुई लक्ष्मी वापस जानेके



खयालसे ऊटपटाँग बकने लगते हैं। मर्ज और होता है और दवा और देते हैं, इसीसे बेचारे रोगियोंका उपकार नहीं होता और उनका विश्वास आयुर्वेदसे उठता चला जाता है। हिन्दीमें कोई ऐसी पुस्तक नहीं, जिसे पढ़-समझकर नातजुर्बेकार वैद्य इन रोगियोंका इलाज करके यश लूट सकें अथवा रोगी खुद ही, अपने रोगका निदान करके, अपने लिए उपयुक्त दवा तजवीज कर सकें। इन्हीं बातोंको ध्यानमें रखकर, मैंने “चिकित्सा-चन्द्रोदय” का चतुर्थ भाग लिखा है। मुझे इस बातसे बड़ी खुशी है, कि सैकड़ों-हजारों मरीजोंने इस ग्रन्थकी सहायतासे, बिना किसी वैद्यकी मददके, अपने-अपने रोगोंका पता लगाया और उचित नुसखा चुनकर आरोग्य लाभ किया। ऐसे अनेक प्रशंसापूर्ण पत्र हमारे पास आये हैं; लेकिन ऐसे भी लोग हैं जो इतना साफ समझकर लिखनेपर भी अनेक बातें नहीं समझते—गलतियाँ करते हैं। इसलिए हम नीचे चन्द ऐसी बातें लिखते हैं, जिनसे साधारण पाठक ही नहीं, नांतजुर्बेकार वैद्योंको भी मदद मिलेगी; उन्हें अपनी मंजिल मकसूद तक पहुँचनेके लिए, सीधी शाह राह मिल जायगी :—

( १ ) जब किसी रोगका इलाज करने बैठो, तब पहले रोगको समझो। बिना रोगको समझे, बिना मर्जकी तशखीश हुए, आबे-हयात या अमृत भी फायदा नहीं करता। जो सिपाही अच्छी तरह शिश्त बाँध कर गोली चलाता है, उसकी गोली निशाने पर लगती है। इसी तरह जो वैद्य रोगको अच्छी तरह समझकर, निःसंशय होकर, दवा देता है, उसे सफलता मिलती है। अगर वैद्य खूब अच्छी तरह निर्णय किये बिना, जीर्ण ज्वर रोगीकी चिकित्सा नवीन ज्वर रोगीकी तरह करे, तो रोगी कैसे आराम होगा ? जीर्ण ज्वर रोगीका शरीर ज्वरकी गरमीसे रूखा हो जाता है, क्योंकि इस ज्वरमें वायुका कोप विशेष रूपसे होता है। इस अवस्थामें जब तक वायुकी शान्ति न की जायगी, रोगकी शान्ति कैसे होगी ? वायुकी शान्तिके लिए ही



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५४७

जीर्णज्वरीको “घी-दूध” पिलाते हैं। क्योंकि जलते हुए घरमें पानी डालनेसे जैसे आगकी शान्ति होती है उसी तरह वायुसे रूखे हुए शरीरमें “घी-दूध” डालनेसे वातकी शान्ति होती है। कहा है—

लवणेन कफं हन्ति, पित्तं हन्ति सशर्करा ।

घृतेन वातजान् रोगान्, सर्वं रोगान् गुडान्विता ॥

नमकसे कफका नाश होता है, मीठी चीजोंसे पित्तकी शान्ति होती है, बादीसे पैदा हुए रोग घीसे शान्त होते हैं और पुराने गुड़में मिली हुई दवाओंसे सारे रोग नाश होते हैं। मतलब यह है कि पुराने बुखार या तपेकोनः अथवा क्रानिक फीवर (Chronic Fever) में “घी” पिलाना परम श्रेष्ठ है। बिना घी पिलाये आराम होना कठिन है। लेकिन नये बुखारमें “घी-दूध” पिलाना और विष पिलाना समान है। जीर्णज्वरमें घी-दूधसे आराम होता और नवीन ज्वर घी-दूधसे बिगड़ता है। कहा है—

जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम् ।

तदेव तरुणे पीते विषवद्वन्ति मानवम् ॥

जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमें “दूध” अमृतकी तरह गुणकारी है, परन्तु वही दूध तरुण ज्वर—नये बुखारमें, विषकी तरह मनुष्यको मार डालता है।

इसलिये रोगका ठीक निर्णय करके दवा देना ही सफलताकी कुञ्जी है।

( २ ) अनेक अनुभव-शून्य वैद्य खाँसी-रोगीको गरम या शीतल दवा दिये जाते हैं और खाँसी बढ़ती जाती है। अन्तमें रोगी वैद्यजीको आशीर्वाद देता हुआ परम धामको चला जाता है। खाँसी रोग पाँच तरहसे होता हैः—( १ ) वातसे, ( २ ) पित्तसे, ( ३ ) कफसे, ( ४ ) उरःक्षतसे, और ( ५ ) क्षय या धातुक्षयसे। बहुतसे वैद्य पिछली धातुक्षयसे होनेवाली खाँसीका खयाल भी नहीं करते। नतीजा यह होता है कि, दवापर दवा देनेपर भी खाँसी बढ़ती जाती है।



असमयमें धातु नाश करनेसे धातुपर गरमी पहुँच जाती है । जिसकी धातुपर गरमी पहुँच जाती है, उसे अक्सर जुकाम होता रहता है । जुकामका इलाज न होनेसे खांसी हो जाती है । कुछ दिनों तक खांसीका इलाज न होनेसे क्षय रोग हो जाता है । क्षयके बाद शोष हो जाता है; फिर तो रोगी सूख-सूखकर मरजाता है । जुकाम की खांसीके इलाजमें असफलता इसीलिये होती है कि, वैद्य लोग धातु को शुद्ध नहीं करते—वीर्यकी तरफ ध्यान नहीं देते । जिसकी वजहसे खांसी पैदा हुई है, उसकी ओर नज़र नहीं दौड़ाते, कारणका नाश नहीं करते । बिना कारणका नाश हुए, कार्य कैसे हो सकता है ? धातुक्षय से पैदा हुई खांसी धातुको दुरुस्त किये बिना आराम हो नहीं सकती । जब तक धातु नहीं ठीक होती, जुकाम या नजला जा नहीं सकता । जब तक नजला या जुकाम नहीं जाता, गलेमें कफका आना बन्द नहीं होता । जब तक छातीपर कफ बना रहता है, खांसी नहीं जा सकती । कहा है—

न वातेन विना श्वासः कासनि श्लेष्मणा विना ।

न रक्तेन विना पित्तं न पित्त रहितः क्षयः॥

वायुके कोपके बिना श्वास रोग नहो होता, कफके छातीपर अमे बिना खांसी नहीं होती; रक्तके बिना पित्त नहीं बढ़ता और बिना पित्त-कोपके राज्यदमा या क्षय नहीं होती ।

ऐसे केसोंमें, वैद्यजी खांसी रोगको तो जान लेते हैं, पर खांसी क्यों हुई, उसकी जड़ क्या है, उसका निदान-कारण क्या है—इस बातके ठीक न जाननेसे ही उन्हें सफलता नहीं होती । मतलब यह है कि, चिकित्सा-कर्म बड़ा कठिन है । इसमें बड़ी अक्ल, विचार और शान्तिचित्तताकी दरकार है ।

( ३ ) कलकत्तेमें, एक पुराने ढाँचेके वृद्ध वैद्यके पास एक धनी मारवाड़ी खांसीका इलाज कराने आया करता था । वैद्यजीने बिना सोचे-समझे उसको चिकनाई खानेसे रोक दिया और आज यह रस कल



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५४६

बह रस देते रहैं । कोई चार महीने तक इलाज हुआ, पर खाँसी न गई । एक दिन वैद्यजीने हमसे भी कहा । हमने रोगीका हाल सुना-समझा । मालूम हुआ, उसे वातज—सूखी पुरानी खाँसी है । क्योंकि रोगीने कहा कि मेरे पेट, सिर, पसली और कनपटियोंमें दर्द होता है । मैं खाँसते-खाँसते हैरान होजाता हूँ, पर कफ नामको भी नहीं निकलता । हमने कहा—“पण्डितजी ! आप इसे रस देना बन्द कीजिये । दवाओंसे बने हुए घी पिलाइये ।- बिना घी-तेल पिये यह खाँसी न जायगी । आप इसे “पिप्पल्यादि घृत” पिलाइये और घी चुपड़कर गोबरमें लपेटकर, आगकी भूभलमें पकाये हुए “बहेड़ेके छिलके” चूसने को कहिये । साथ ही जल्दी मत कीजिये, परमात्मा चाहेगा तो १ महीने में आराम हो जायगा ।” ईश्वरकी दयासे, कोई १॥ महीनेमें रोगी चंगा होगया । इतना ही नहीं, उसका रंग-रूप भी सुधर गया और बल आगया । रोगी और वैद्यजी, दोनोंकी हममें श्रद्धा बढ़ गई ।

( ४ ) एक बार एक वैद्यजी, जयपुरमें, हमारे पास आये और कहने लगे, ‘बाबूसाहब ! मेरे हाथमें अमुक धनी जौहरीका इलाज है, उसे खाँसी है । हमने उसे तालीसादि मोदक, वासावलेह और कासकुठार रस आदि बहुत सी उत्तमोत्तम औषधियाँ दीं, पर लाभ नहीं होता । आराम हो जानेसे हज़ार रुपयेकी प्राप्ति होगी । क्या करें, कुछ समझमें नहीं आता ।’ हमने उनसे नीचे लिखे हुए सवालोंके जवाब पूछे:—

- ( १ ) रोगीकी अवस्था कितनी है ?
- ( २ ) खाँसी कितने दिनसे है ?
- ( ३ ) शीतल स्थानमें रहने और शीतल पदार्थ खानेसे खाँसी बढ़ती तो नहीं ?
- ( ४ ) खाँसी आनेसे कफ बहुत गिरता है या थोड़ा ?
- ( ५ ) अगर बहुत कफ गिरता है, तो भीतर जलन तो नहीं होती ?
- ( ६ ) उसे गरम चीजें खानेसे फ़ायदा मालूम होता है या नुक़सान ?

वैद्यजी हमारे प्रश्न सुनकर चुप होगये । हमने कहा, “क्या आप रोगीके सम्बन्धमें इतना भी नहीं जानते ? फिर आप इलाज़ कैसे



कर रहे हैं ?” जवाब दिया, ‘उम्र तो ५० सालके नजदीक होगी और बातोंका पता नहीं । आपको कल इन सवालोंनेका जवाब दूंगा ।’ दूसरे दिन आप आये और कहने लगे:—

- ( १ ) रोगीकी उम्र ४७ बरसकी है ।
- ( २ ) खाँसी ११ महीनेसे है । ५ महीनेसे तो हमीं इलाज कर रहे हैं ।
- ( ३ ) सर्द जगहमें रहने और सर्द चीजें खानेसे खाँसी बढ़ती है ।
- ( ४ ) खाँसी आनेसे कफ बहुत गिरता है ।
- ( ५ ) भीतर दाह या जलन नहीं होती ।
- ( ६ ) गरम चीजोंसे फ़ायदा जान पड़ता है ।

हमने कहा, ‘महाराज ! हमें आपकी बातोंपर बड़ा अचम्भा आता है । आप बिना समझे-सोचे-पूछे अंधाधुन्ध इलाज कर रहे हैं । ऐसी बातोंसे रोगी बिना मौत मर जाते हैं । खैर, अब आप उसे “पारदकी कजली” सेवन करावें और पथ्य पदार्थोंपर चलावें ।’ एक महीने बाद आप हमारे पास खूब खुश होते हुए आये और बोले, ‘बाबू साहब ! आपको अनेकानेक धन्यवाद है । रोगीको चौदह आने आराम है । अब हज़ार रुपये सीधे हैं ।’ हमने कहा, ‘महाराज ! चिकित्सा-कर्म बहुत विचार चाहता है ।’ इसके बाद, कोई १५ दिन पीछे वह फिर पेट पकड़े आये और कहने लगे,—‘पहले तो उसे चौदह आने क्या, पौने सोलह आने आराम था, पर अब फिर वही हाल है । खाँसीका बड़ा जोर है, आई लक्ष्मी हाथ से जाना चाहती है !’ हमें भी बड़ा आश्चर्य हुआ । हमने पूछा, ‘आपके रोगीने कोई बदपरहेजी तो नहीं की ।’ बोले—‘नहीं साहब ! मैंने उसे खूब समझा दिया है ।’ हमने कहा—‘आप उससे पूछिये , कि क्यों भाई, तुम दही तो नहीं खाते, स्त्री-प्रसंग तो नहीं करते अथवा बहुत नमकीन चीजें तो नहीं खाते ?’ आपने दूसरे दिन जवाब दिया—‘वह कहता है, मैं १०।१२ दिनसे दही खाता हूँ, नमकीन बड़े-पकौड़ी खाता हूँ और तीसरे चौथे दिन स्त्री-प्रसंग करता हूँ ।’ हमने कहा—‘महाराज ! बिना पथ्य सेवन किये कहीं केवल दवासे



लाभ हो सकता है ? वह रत्ती-रत्ती भर कजली सवेरे-शाम खाता है और आध पाव दही तथा डेढ़ पाव बड़े-पकौड़ी खाता एवं खाँसी बढ़ानेमें सर्वोपरि स्त्री-प्रसङ्ग करता है। कहिये, कजलीसे क्या लाभ हो सकता है ? आप उसे अचार, दही, नमकीन पदार्थ, खटाई, जाल मिर्च और स्त्रीप्रसंगसे रोकिये। कह दीजिये, अगर आप इन अपथ्योंको नहीं त्याग सकते, तो हम आपका इलाज भी नहीं कर सकते।' उन्होंने रोगीसे सारी बातें कहीं। रोगीने फिर पथ्यके साथ एक महीने वही कजली सेवन की। नतीजा यह हुआ कि, रोगी रोगमुक्त होकर हृष्टपुष्ट हो गया। रोगीसे वैद्यजीने हमारी बात भी कह दी। वैद्यजी सीधे-सादे थे। चालाक वैद्य तो न कहता। रोगीने वैद्यजीको हजार रुपये दिये और उनके साथ हमारे पास आया और एक क्रीमती घड़ी हमारी भेंट करने लगा। हमने कहा—“हमारा हक नहीं। जो भी दीजिये, वैद्यजीको दीजिये। सलाह देनेमें हमने कोई बड़ा काम नहीं किया। रोगीने बहुत जिद की पर हमने उसकी नहीं मानी, अन्त में वह खिन्न-सा होकर चला गया। फिर किसी भी तकलीफके होनेपर वह हमारे पास आता और इलाज कराता।

(५) एक बार एक खाँसीका रोगी हमारे पास आया। उस रोगीको खाँसते समय बड़ी तकलीफ होती थी, गलेमें कफ घरघर-घरघर करता था। कफ बड़ी कठिनतासे निकलता था और जब निकलता, तब उसकी छातीमें दर्द होता था। उसने कहा कि, मुझे यह खाँसी १ महीनेसे है। फलों कविराजका इलाज कराता हूँ। जिस दिनसे उनकी दवा शुरू की है, खाँसी बढ़ती ही जाती है। हमने उससे कविराज महाशय की दी हुई दवाओंके नाम और पथ्यकी बाबत पूछा। मालूम हुआ कि कविराज महाशय सर्दीकी खाँसी समझकर दमादम गरम रस और गरम पथ्य दे रहे हैं। इसीसे इसकी छातीपर कफ सूख-सूखकर जमता जाता है। हमने उसे अलसी और बिहीदानेके लुआबमें मिश्री मिलाकर, दिनमें २०।३० बार एक-एक चम्मच पीनेको कहा। साथही



कपूर और कत्थे प्रभृतिकी गोलियाँ चूसनेको दीं । सवेरे-शाम पीनेको एक यूनानी जुशांदा बताया । ईश्वरकी कृपासे, वह आराम हो गया ।

याद रखो, जबतक खांसीवालेका कफ छातीसे छूटकर मुँह या दस्त द्वारा बाहर न निकल जाय, गरम दवा देनेसे वह मर जाता है । इस विषयपर हमने छठे भागमें बहुत-कुछ लिखा है । चिकित्सामें हर पहलूपर ध्यान न रखनेसे रोगी बिना मौत मर जाते हैं । हमें ऐसे सैकड़ों केस याद हैं । अगर हम उन सबको लिखें, तो एक पोथा बन जाय । यद्यपि उस पोथेसे नवीन वैद्योंको फायदा पहुँचेगा, पर इस जगह हम अपने अनुभवकी सभी बातोंको लिख नहीं सकते । यहां हमें सिर्फ प्रमेह और नजुंसकताके इलाजमें होनेवाली गलतियों-पर अपने पाठकोंका ध्यान खींचना है :—

प्रमेहको पहचानना बड़ा कठिन है क्योंकि इस रोगके सभी चिह्न एक साथ ही नमूदार नहीं होते । ज्यों-ज्यों बीमारी बढ़ती है त्यों-त्यों प्रमेहके चिह्न नजर आने लगते हैं । प्रमेहके जितने लक्षण लिखे हैं, उतने सब नजर न आनेसे लोग धोखा खाते हैं । प्रमेह रोगसे रोगी जल्दी ही नहीं मरता और यह रोग जल्दी ही असाध्य भी नहीं होता । हमने देखा है, कि अनेक प्रमेह-रोगी अपने सारे काम-धंधे करते रहते हैं, स्त्री-भोग भी करते हैं, उनके औलाद भी होती है । जब ये रोग पुराना हो जाता है, तब हालत बिगड़ती है । उसी समय इसकी खबर पड़ती है । लेकिन असाध्य हो जानेपर तो इसका आराम होना कठिन ही नहीं, असम्भव हो जाता है । इसलिए प्रमेहके कुछ भी (आधे, तिहाई, चौथाई) लक्षण नजर आनेसे सावधान हो जाना चाहिये । इसकी परीक्षा बड़ी सावधानीसे करनी चाहिये । क्योंकि प्रमेहके चन्द चिह्न ऐसे सूक्ष्म हैं कि, जल्दी समझमें नहीं आते । जब आदमी कमजोर होता जाता है, अच्छेसे अच्छा खानेपर भी शरीर तैयार नहीं होता, तब नादान लोग कमजोरी समझकर, बल बढ़ानेके लिए, दूध, घी, मलाई, मक्खन आदि खाने लगते हैं; लेकिन नतीजा उल्टा होता है । इन



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५५३

धातुवर्द्धक और बलवर्द्धक पदार्थोंके खाने पर भी वे जब उल्टे कमजोर होते जाते हैं और स्त्रीप्रसङ्ग अच्छा नहीं लगता, तब उन्हें कुछ होश होता है और वे किसी वैद्यके पास जाते हैं। अगर वैद्यजी अनुभवी हुए, तो समझकर, जाँचकर, मूत्र-परीक्षा करके, कह देते हैं, तुन्हें “प्रमेह” हुआ है। दूध, मलाई, घी, दही प्रभृतिसे तो तुम्हारा रोग उल्टा बढ़ता है। क्योंकि कहा है—प्रमेहहेतुः कफकृच्चसर्वम्। अर्थात् समस्त कफकारी पदार्थोंसे प्रमेह बढ़ता है। आप प्रमेहको बढ़ानेवाले घी, दूध, दही, मलाई, मक्खन आदि कफकारक पदार्थ त्याग दो। पर ऐसे वैद्य बहुत कम हैं। जहाँ रोगीने कहा, कि हममें ताकत नहीं है, दिन-दिन कमजोर होते जाते हैं, तहाँ फौरन फरमा देते हैं, कि कोई ताकतवर दवा खाओ। दूध घी पीओ। इस तरह लाखों रोगी हर साल अपना रोग बढ़ाकर अकाल मृत्युसे मरते हैं। अतः प्रमेहमें प्रमेहका ही इलाज करना चाहिये। प्रमेहवालेको धातुवर्द्धक बाजीकरण औषधियाँ कभी न देनी चाहिये।

यह भी याद रखना चाहिये, कि प्रमेह भी नपुंसकताके कारणोंमें से एक है; यानी प्रमेह होने से भी पुरुष नपुंसक—नामर्द हो जाता है। प्रमेहसे नपुंसकता कैसे होती है? सुनिये, जो लोग अमीरों की तरह गद्दे तकियोंके सहारे पड़े रहते हैं, मिहनत नहीं करते, खूब सोते हैं, सुपनेमें रूखती स्त्रियोंके साथ मैथुन करके स्वलित हो जाते हैं, दूध-दही ज़ियादा खाते हैं, उनके वातादि दोष कुपित होकर, शरीरकी आधारभूत धातुओं मेद-रक्त, वीर्य, रस, चरबी, लसीका, मज्जा, ओज और मांसको दूषित करते हैं, यानी वातादि दोष, पुरुषकी वस्ति या पेड़ूमें पहुँचकर वीर्य और मूत्रको दूषित करते हैं। वीर्य के दूषित होनेसे वीर्यक्षय होता है और शुक्र या वीर्यके क्षय होनेसे नपुंसकता हो जाती है, पुरुषार्थ नष्ट हो जाता है, क्योंकि जब वीर्यही नहीं, तब पुरुषार्थ कहाँ? खुलासा यह कि, प्रमेह होनेसे शरीरकी वीर्य आदि धातुएँ, खराब होकर, मूत्रनली द्वारा, मूत्रके साथ बाहर



निकलती हैं। जब शरीरमें धातुएँ ही न रहेंगी, तब पुन्सकत्व कहाँसे रहेगा ? नपुन्सकता होगी ही होगी। क्योंकि पुरुषत्व की जड़ तो वीर्य है। अब साफ हो गया कि, प्रमेहसे भी नपुन्सकता होती है। अगर प्रमेहसे नपुन्सकता हुई हो अथवा प्रमेह और नपुन्सकता दोनों ही के बिह्न नज़र आवें, तो पहले प्रमेहका इलाज करना चाहिये। प्रमेह और नपुन्सकतामें प्रमेहको भूलकर उसका इलाज न करके, बाजीकरण औषधियाँ देनेसे रोग निश्चय ही बढ़ेगा। क्योंकि जो चीज़ें नपुन्सकता की नाशक हैं, वे ही प्रमेहवर्द्धक हैं। नारङ्गी, अमरुद, केला, घुइयाँ, दूध, घी, मलाई, मक्खन, उड़दकी दाल, मिष्ठान, खीर, हलवा वगैरा खाना तथा स्त्रियोंसे हँसना-बोलना, उन्हें प्यार करना, गहने पहनना और पान खाना वगैरः अहार-विहार बाजीकरण या मैथुनशक्ति बढ़ाने वाले हैं। पर यही सब आहार-विहार प्रमेहको बढ़ाते हैं—प्रमेहवाले को अपथ्य हैं। एक बात और है, वह यह कि, प्रमेह होनेसे वीर्य दूषित हो जाता है। अगर उस रोगीको बाजीकरण—धातुवर्द्धक आहार-विहार सेवन कराये जाते हैं, तो उनसे नया वीर्य पैदा तो होता है, लेकिन पहलेके दूषित वीर्यमें मिलकर वह भी दूषित हो जाता है, इस तरह प्रमेह और भी बढ़ता है। प्रमेहके बढ़नेसे नपुन्सकता भी बढ़ती है। क्योंकि रसरक्त आदि धातुएँ तो प्रमेहोंमें खराब हो ही जाती हैं, वीर्यके दूषित होनेसे वीर्यकी शक्ति स्वयं नष्ट हो जाती है। जब वीर्यकी ही शक्ति नहीं, तब पुरुषार्थ कहाँसे होगा ? नपुन्सकता अपना दौर-दौरा जमा ही लेगी। इसके सिवा जब प्रमेह भयंकर रूप धारण कर लेता है, तब दारुण पिड़िकायें पैदा हो जाती हैं, उनका विकार इन्द्रियमें पहुँचकर ध्वजभङ्ग नपुन्सकताको जन्म देता है। इस तरह प्रमेह-राक्षसका चक्र चलनेसे पुरुषका जीवन ही निरर्थक हो जाता है।

बहुतसे सज्जन लिखा करते हैं कि, हमने अनेक तरहकी दवाएँ सेवन कों, पर हमारा प्रमेह न गया। इसमें शक नहीं कि, प्रमेह बढ़ा



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५५५

भयङ्कर रोग है। इसके जन्म लेते ही अगर इसका इलाज नहीं किया जाता तो इसका आराम होना कठिन ही नहीं असम्भव हो जाता है। असाध्य हो जाने पर मनुष्य तो चीज क्या है, स्वयं विधाता भी इसे भगा नहीं सकता। सभी प्रमेह कष्टसाध्य होते हैं, बड़ी दिक्तोंसे आराम होते हैं। चिकित्सकको कफज प्रमेहोंके इलाजमें बहुत ज़ियादा तकलीफ नहीं उठानी पड़ती, पित्तजोंके इलाजमें घोर कष्ट होता है और वातजोंकी चिकित्सामें तो चोटीका पसीना एड़ी पर आ जाता है और फिर भी कोई भाग्यवान् ही आराम होता है। मधुमेह, पिड़िका-मेह और माँ-बापके दोषसे पैदा हुए प्रमेह असाध्य ही होते हैं। सभी प्रमेह, आरम्भमें ही, मधुमेहमें परिणत नहीं हो जाते। प्रमेहके होते ही इलाज न करनेसे, राफलतमें दिन निकालनेसे, पेशाबमें चीनी आने लगती है और फिर सभी प्रमेह मधुमेह हो जाते हैं, पेशाबमें चींटियाँ लगने लगती हैं। इसलिए बुद्धिमान और जीवन चाहनेवालोंको प्रमेहके दिखाई देते ही उसे मार भगाना चाहिये। थोड़े दिनोंके पैदा हुए प्रमेह, यद्यपि देर लगती है, पर, कम खर्च और कम दिक्तोंसे आराम हो जाते हैं। लोग प्रमेह होते ही नहीं जान पाते कि हमें प्रमेह हो गया है। वह काम-धन्धा करते रहते हैं। यहाँ तक कि मैथुन भी किया करते हैं और औलाद भी होती रहती है, इसलिये उन्हें प्रमेहका शक नहीं होता। जब पेशाबकी राहसे धातुओंका बाहर जाना जोरसे जारी हो जाता है; मावा, मलाई, दूध, घी, हलवा और मोती खानेपर भी जब बदन कमजोर हो जाता है; काम-धन्धेमें मन नहीं लगता, हर समय पड़े रहनेको दिल चाहता है, तब शक होता है। उस अवस्थामें भी अगर उत्तम वैद्य मिल जाता है, तब किसी न किसी तरह आराम हो जाता है। अगर कोई अनाड़ी मिल जाता है और मामूली कमजोरी समझकर घी-दूध आदि ताकतवर पदार्थ खानेको कह देता है, तो अवस्था और भी भयंकर हो जाती है, फिर आराम हो जाना ही आश्चर्य की बात है। इसके सिवा, अनेक



वैद्यजिस तरह प्रमेहमें बाजीकरण—वीर्यवर्द्धक पदार्थ देकर रोगीका रोग बढ़ाते हैं; उसी तरह कुछ अनाड़ी प्रमेहवाले जीर्ण ज्वर, खाँसी आदि होने पर भी, रोगीके कहनेमें आकर या अपनी समझसे ज्वर आदिकी चिकित्सा पहले न करके, उसे अनेक तरहकी प्रमेह-नाशक वीर्यवर्द्धक दवाएँ खिलाकर रोग बढ़ाते हैं।

अभी हाल हीकी बात है, एक बिहारी महाराजकुमारने हमें अपना हाल लिखा। उन्होंने लिखा, हमें शामको हरारत सी हो जाती है, भूख नहीं लगती, हाथ-पैरके तलवे जलते हैं, दस्त साफ़ नहीं होता, स्त्री-प्रसंगको दिल नहीं चाहता, वीर्य एक दम पतला है इत्यादि। हमने अनेक वैद्य-डाक्टरोंसे इलाज कराया, हजारों रुपये के क्रीमती नुसखे तैयार कराये, पर हमारी धातु पुष्ट नहीं होती, स्तम्भनशक्ति और रतिशक्ति नहीं आती। आपकी चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथा भाग पढ़कर हमारी इच्छा अब आपसे दवा कराने की है। आप हमारे लिए क्रीमती से क्रीमती दवा तजवीज कीजिये। कुछ परवा नहीं। वगैरः। हमने उन्हें लिखा है कि आप जल्दी न करें, २-४ महीने दिल लगाकर हमारा इलाज करें, तो परमात्माकी दयासे आराम हो सकते हैं। हमने आपकी सबेरे सितोपलादि चूर्ण, दोपहरको द्राक्षारिष्ट, शामको लवंगादि चूर्ण, भोजनमें हिंगाष्टक चूर्ण और नारायण तेलकी मालिश की सलाह दी। सितोपलादि चूर्णमें मूंगा भस्म भी मिलाने की सलाह दी। भगवान् की दयासे उन्हें बहुत आराम हुआ। महाराजकुमार लिखते हैंः—हमने किसीकी दस-बीस रुपये रोजकी दवासे जरा भी लाभ न देखा, पर आपकी दवासे हमें बारह आने आराम है। हम अत्यन्त सुखी हैं। हमें पूरी उम्मीद हो गई है कि, आपकी चिकित्सासे हमारी मनोकामना सफल होगी। हम अभी अपने तई निरोग समझने लगे हैं, इत्यादि।

पाठक ! अगर कोई दूसरा वैद्य होता तो महाराजकुमारको हाथमें आया देखकर और उनके क्रीमती से क्रीमती दवा देनेकी बात पढ़कर



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५५७

हजार दो हजारका नुसखा तैयार करवानेकी राय देता—और ऐसा ही पहलेके चिकित्सकोंने किया भी है, तो कैसे लाभ होता ? वैद्य अमीर आदमीको हाथमें आया देखकर, रोगीकी तन्दुरुस्तीका खयाल नहीं करते, अपना उल्लू सीधा करनेकी फिक्र करते हैं, इसीसे उन्हें सफलता नहीं होती। वैद्यको चाहिये, पहले उन रोगोंका इलाज करे, जिनकी वजहसे रोगीको जरा भी चैन नहीं होता, जिनकी वजहसे भूख नहीं लगती, खाने पर दिल नहीं चलता। जब रोगी एक तरफसे निरोग सा हो जावे, तब उसे प्रमेह, धातु रोग या नपुन्सकता नाश करनेकी इच्छानुसार कम या जियादा कीमती दवा दे। हाँ, ऐसे केसोंमें प्रमेहादि बढ़ने न पावें, ऐसा उपाय अवश्य करदे। हमने ऐसी दवाएँ चुनी हैं, जिनसे ज्वरादि नाश हों और प्रमेहमें लाभ हो। सितोप-लादि और लवंगादि ये दोनों ही काम करते हैं।

हमारे पास अनेक धनी मारवाड़ी आते हैं, और कितने ही रोगोंमें फँसे रहने पर भी, धनका लालच दिखा कर, दस-पाँच रोजमें अत्यधिक रतिशक्ति बढ़ानेकी प्रार्थना करते हैं; पर हम उनकी नहीं सुनते। हमारी समझमें जो उचित जँचता है वही करते हैं। अनेक रोगी जो हमारी बात मान लेते हैं, आराम हो जाते हैं। जो नहीं मानते, वे लालची कविराज वैद्योंके फन्देमें फँस कर, अपना धन और स्वास्थ्य नाश करते हैं। उनके मुँहसे हम उन चिकित्सकोंकी बातें सुनकर बहुत कुछ दुःखी होते हैं। ऐसे चिकित्सकोंने ही, जो धनके लिए रोगियोंके गुलाम हो जाते हैं, उनकी हाँ में हाँ मिलाते हैं, आयुर्वेदका नाम बदनाम कर दिया है, संसारकी सारी चिकित्साओंके जनक इस बूढ़े आयुर्वेदसे लोगोंका विश्वास उठा दिया है। अनेक वैद्य-डाक्टरों की देखा-देखी दो-तीन घण्टेमें बीसियों रोगियोंके रोगोंका निर्णय कर देते हैं, क्योंकि जितने ही अधिक रोगी देखे जाते हैं, उतने ही ठके ज्यादा हाथ आते हैं। पर इस जल्दबाजीकी रोग-परीक्षासे किसी भाग्यवान रोगीका ही भला होता होगा। हमें तो अवकाश नहीं होता या हमारा



मन स्वस्थ नहीं होता, तो हम रोगीको देखते ही नहीं, चाहे कितने ही रुपये क्यों न मारे जायँ । रोगकी तशखीश करनेमें अनेक मौकोंपर बड़ा समय लगता है । कितनी ही बार तो आठ-आठ दिन तक रोगका निर्णय नहीं होता । यह बात हमारी ही नहीं, बड़े-बड़े नामी और अनुभवी डाक्टरों की है ।

एक बार एक सेठजी हमारे पास आये और कहने लगे, हमें पेशाब की तकलीफ है, कई महीने हो गये, पर आराम नहीं होता । हमने कई डाक्टर और कविराजोंके इलाज करा लिये । हमने पूछा, कविराजोंने रोग क्या बताया । उन्होंने कहा—“मूत्रकृच्छ्र” । हमने पूछा—“क्या तुम्हारे पेशाब करते समय जलन होती है, दर्द होता है और पेशाब बूंद-बूंद होता है ?” उन्होंने कहा—नहीं साहब ! पेशाब रुक-रुककर होता है, पर जलन नहीं होती । हमने पूछा—क्या जुकाम रहता है ? सिरमें दर्द होता है ? भोजन अच्छी तरह पचता है ? काम-धन्धेमें मन लगता है ? उन्होंने कहा—हां साहब, जुकाम तो बना ही रहता है । सिरमें टपक-टपक दर्द रहता है । भोजनपर रुचि नहीं होती । अगर खा लेता हूँ, तो पेट भारी रहता है । पड़े रहना या सोना अच्छा लगता है । काम-धन्धेको जी नहीं चाहता । सेठजी का शरीर मोटा था और वे हमारे सामने ही गद्दीपर लेट गये और ऊंघने लगे । जब हमने कहा, कहिये क्यों आये हैं, तब उपरोक्त बातें हुई । हमने समझ लिया कि इन्हें मूत्रकृच्छ्र नहीं, शनैः मेह है । उपद्रव भी कफज मेहके हैं । हमने कहा—भाई ! आपको प्रमेह है और कफज मेह है ।

सेठ साहब ! आप सवेरे ही दो रत्ती बंग-भस्म ६ माशे मधुमें मिलाकर चाटें और ऊपरसे सेमलकी छालका स्वरस २ तोले, शहद १ तोले और हल्दी २ माशे—इन तीनोंको मिलाकर पीवें । शामको दो माशे शुद्ध शिलाजीत मिश्री मिले दूधके साथ खावें । रोज सवेरे मैदानमें जोरसे चलें, ताकि खूब पसीनोंमें नहा जावें । पानी जितना



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५५६

ही कम पी सकें उतना ही भला । १॥ महीने यह नुसखा सेवन करनेसे उन्हें आराम हो गया । बेदन भी हलका हो गया, भूख भी लगने लगी, पेशाब तो दुरुस्त हो ही गया । इसके बाद हमने उन्हें इस पुस्तकमें लिखा हुआ “रतिवल्लभ चूर्ण” सेवन कराया । इसने उनकी काया-पलट ही कर दी । जिसे स्त्रीके नामसे नफरत होती थी और स्तम्भन-शक्तिका नाम भी नहीं था, वही स्त्रीके लिए छटपटाने लगा और उसे प्रसंगमें आनन्द भी आने लगा ।

देखिये, रोगकी पहचानमें गलती होनेसे ही इन सेठजी को कई महीने भटकना और वृथा रुपया नष्ट करना पड़ा ।

एक बार एक मारवाड़ी महाशय आये और कहने लगे, मैंने हजारों रुपया खर्च कर लिया, हजार-हजारके नुसखे बनवा लिये, पर मेरा रोग नहीं जाता । अब आराम होनेकी आशा नहीं । पर लोग कहते हैं कि एक बार आपका भी इलाज कर लिया जाय, इसीलिए आया हूँ ।

हमने पूछा—क्या हाल है ? उन्होंने कहा—मेरा पेशाब खून-जैसा लाल होता है । उसमें ऐसी दुर्गन्ध आती है कि, पास रहा नहीं जाता, और वह अत्यन्त गरम होता है । मेरे नाक, आँख और मुँहसे धूआँ निकलता है । गरमी के मारे बेचैन रहता हूँ, प्यास इतनी लगती है कि हृद नहीं । लिंगकी नलीमें कुछ गड़ता-सा जान पड़ता है । पेड़ों में पीड़ा होती है । खट्टी खट्टी डकारें आया करती हैं । हरारत सी बनी रहती है । उठा-बैठा नहीं जाता, पड़ा रहता हूँ । दस्त कभी ही बँधा होता है, नहीं तो पतले दस्त होते हैं । हमने पूछा—क्या आप सेवन की हुई दवाओंके नाम बता सकते हैं ? उन्होंने कहा—बाबूजी ! पूर्णचन्द्र रस, मकरध्वज रस, लक्ष्मी विलास रस और वसन्तकुसुमाकर रस वगैरः कितनी ही दवाएँ खा लीं । कितने नाम गिनाऊँ ? हमने पूछा—आपने वसन्तकुसुमाकर कितना और किसके साथ सेवन किया ? उन्होंने कहा—दो रत्ती वसन्तकुसुमाकर ६ माशे शहदके साथ । उसने तो मुझे बड़ी तकलीफ दी । मारे गरमीके मेरा माथा



चकराता था । जमीन-आसमान एक दीखते थे । उसको तो मैं अब कभी देखूँगा भी नहीं ।

हमने कहा--अगर आपको हमारा इलाज करना है, तो हम जो कहें वही करना होगा । आप एक सप्ताह दवा खावें, अगर जरा भी तकलीफ हो, तो हमारा इलाज बन्द कर दें । हम आपको महीनों अपने हाथोंमें नहीं रखेंगे । अगर हफ्ते भरमें कोई तकलीफ न बढ़ेगी, तो इलाज करते ही रहेंगे अन्यथा छोड़ देंगे । खैर, हमारी बात पर राजी हो गये ।

रोगीका मिजाज गरम था, उधर प्रमेह भी गरमीका यानी पित्तज था, अनुपान भी गरम ही था, मात्रा भी जियादा थी--ये बातें हमने समझ लीं और उनसे कहा--

( १ ) आप चार दिन तक खिचड़ी खावें और हर रातको, सोते समय, दो तोले गुलकन्द गुलाब, १५ दाने मुनक्के और ६माशे उदरशोधन चूर्ण आधसेर पानी में, मिट्टीकी हॉडीमें औटावें, जब तीन छटाँक जल रह जाय, मलछान कर पीलें ।

( २ ) पाँचवें दिनसे तीन-तीन माशे कन्नाबोनी पिसी-छनी, आप दिनमें छै दफा, हर दो-दो घण्टेपर फांकें और एक-एक गिलास शीतल जल पीवें ।

( ३ ) ग्यारवें दिनसे, सवेरे-शाम आधी-आधी रत्ती वसन्तकुसुमाकर रस, एक तोले शर्बत चन्दनमें मिलाकर चाटें ।

( ४ ) ८-९ बजे, भोजनसे पहिले, भूख लगने पर, आध पाव दूध, आध पाव पानी और चार माशे ईसबगोलको पकावें । जब पानी छीजने पर आवे, उसमें ४ रत्ती सेलखड़ी पीसकर मिला दें और दूध मात्र रहने पर उतार लें । फिर १ तोले मिश्री मिलाकर उस खीरको खावें । इस तरह रोज करें । इसके घण्टे दो घण्टे बाद पथ्य पदार्थ भोजन करें ।

( ५ ) दोपहरको दो बजे १॥ तोले प्रमेहारि शर्बत चाटें ।



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६१

बहुत क्या—एक हफ्ते बाद, उसे कुछ फायदा मालूम होने लगा और महीने भरमें वह आराम हो गया । उसने हमारी दवा २॥ महीने तक सेवन की । बीस दिन बाद, हमने वसन्तकुसुमाकरकी मात्रा १ रत्ती कर दी थी ।

कुछ दिन बाद “प्रमेहारि शर्बत” बन्द कर दिया और “शतावरी-पाक” खिलाया । अन्तमें, सारी ही दवाएँ बन्द करके “बृहत्कूष्माण्ड अवलेह” चढाया । इन दोनोंने बेतहाशा फायदा किया ।

देखा पाठक ! वही “वसन्तकुसुमाकर रस” और वैद्योंने दिया और वही हमने । हमने केवल मात्रा और अनुपानमें ही करामात करके रोगीको आराम कर दिया । उन वैद्योंने अनुपान गरम रखा और मात्रा ज़ियादा बताई, इसीसे लाभ नहीं हुआ । चिकित्सा-कर्म बड़ा कठिन है । ज़रासी भूलसे अच्छी-से-अच्छी दवा उल्टी हानि करने लगती है ।

एक दफ़ा एक पंजाबी रोगी आया । उसने भी बहुतसे इलाज करा लिए थे । उसने कहा कि मेरा पेशाब वैद्योंने बोतलमें रखकर देखा है । गाढ़ा हो जाता है । वैद्य “कफज-सान्द्र प्रमेह” कहते हैं । हमने भी पेशाब रातको बोतलमें रखवाया । देखा, तो पेशाब नीचेसे गाढ़ा और ऊपरसे पतला था तथा उसका रंग मटमैला-सुर्ख था । रोगी बहुत मोटा तो न था, पर कुछ मोटा ही था । दिन-दिन शरीर मोटा होता था । जुकाम उसे बहुत परेशान करता था ।

हमने उसे २१ दिन तक नीमकी अतरङ्गालका काढ़ा पिलाया । उससे उसे थोड़ा लाभ हुआ । पेशाबका रंग बदला । उसने बढ़िया दवा देनेको जोर दिया, तब हमने उससे कहा:—

सवेरे-शाम दो-दो रत्ती चन्द्रप्रभा बटी शहदमें मिलाकर चाटो और ऊपरसे १ माशे शिलाजीत आध पाव दूधमें मिलाकर पीओ ।

परमात्माकी दयासे वह रोगी आराम हो गया । और वैद्योंने



पेशाबको बोटलमें गाढ़ा देख कर “सान्द्र प्रमेह” समझ लिया; क्योंकि “सान्द्र प्रमेही” का मूत्र गाढ़ा हो जाता है; पर सुरामेहीका नीचेसे गाढ़ा और ऊपरसे पतला रहता है; और रंग मटमैला या लाल-सा होता है । उन्होंने सिर्फ पेशाबके गाढ़ेपनपर ध्यान दिया । ऊपरसे पतला है और नीचेसे गाढ़ा है, इसपर ध्यान नहीं दिया । बंस रोग पहचाननेमें तो इतनी ही भूल हुई । दवा उन्होंने क्या दी, सो रोगी बता न सका । हमने “चन्द्रप्रभा बटी” इसलिए दी, कि प्रमेह कफज था और कफ-वातज प्रमेहोंमें “चन्द्रप्रभा बटी” रामवाण है ।

एक बार एक अमीर ऐसे मिले, कि वह दवा खाना ही न चाहते थे । उन्होंने पहले बहुतसे डाक्टरोंकी, फिर वैद्य-हकीमोंकी दवाएँ कीं; पर उन्हें लाभ न हुआ । अन्तमें, उन्होंने प्रतिज्ञा करली, कि हम मर जायेंगे, पर दवा न खायेंगे । उनकी स्त्री और माता-पिता बड़े हैरान थे । सबके शेषमें हमारी बारी आई । हमने कहा, हम बिना दवा खिलाये ही आराम कर देंगे । उनके घरके लोग बड़े चकराये । हाँ, उन्हें रोग क्या था, वह भी सुन लीजिये । उन्होंने इतना ज़ियादा मैथुन किया था कि, सुननेवाले दङ्ग हो जाते थे । एक-एक रातमें चार-चार बार और दिनमें भी एक-दो बार । इस समय उनमें मैथुन-शक्ति नहीं थी, सिरमें हर समय दर्द रहता था, दिल धड़कता था और स्मरण-शक्तिका तो नाम ही न था । हमने कहा, दो गाय हृष्ट-पुष्ट काले रंगकी लाइये और उन्हें फलों दबा खिलाइये । १० दिन बाद, उनमें से किसी भी गायका धारोष्ण दूध इन्हें सवेरे-शाम पिलाइये । जलपान और कलेवेके समय बादामका हलवा या मलाईका हलवा खिलाइये । दिल खुश रखिये । कोई तीन महीने ऐसा ही किया गया और वे आराम हो गये । जब उन्हें यह बात मालूम हुई, वे बड़े खुश हुए । चिकित्सकमें तीव्र बुद्धिकी बड़ी दरकार है । बिना बुद्धि और युक्ति इस काममें काम नहीं चलता । कहाँ तक सुनावें, ऐसे-ऐसे सैकड़ों केस हमारे हृदय-पटपर लिखे हैं । अब चूँकि हमारी खुदकी तबीयत



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६३

किसी काममें नहीं लगती, संसार बुरा मालूम होता है, इसलिए १०।१२ सालसे चिकित्सा-कर्म त्याग दिया है। जब हमें अवकाश नहीं है, रोगियोंका काम अच्छी तरह दिल लगाकर कर नहीं सकते, तब धनवृद्धिके लिए ढोंग करना घोर पाप है।

एक बार एक स्त्री बच्चा जननेके बाद ही सख्त बीमार हो गई। महीने भर तक ज्वर चढ़ा रहा। दस्तोंपर दस्त होते रहे। नींद तो महीने-भरमें एक क्षणको भी न आई। नगरके बड़े से बड़े डाक्टरोंने इलाज किया, पर अन्त तक महीने-भरमें उन्हें रोगका पता ही न लगा। कभी रोगका नाम कुछ और कभी कुछ बता देते। अन्तमें दो एम० डी० और एक एम० बी० ने कह दिया कि, मरीजाके शरीरमें खून नहीं, यह मर जायगी। महीने-भरमें कोई अढ़ाई हजार रुपया खर्च होगया और यह नतीजा निकला। अन्तमें हमने इलाज अपने हाथमें लिया। रातको चिकित्सा-चन्द्रोदय तृतीय भागके ३४० पृष्ठमें लिखी “कपूरादि बटी” दी। सवेरे ही मरीजा कहने लगी, मुझे रातको कुछ नींद भी आई, दस्त भी कम हुए, ज्वर भी कम है। इसके बाद हम उसे सवेरे-शाम “कपूरादि बटी” और बीचमें “वित्वादि चूर्ण,” जो पृष्ठ २७० में लिखा है देने लगे। ५६ दिनमें बहुत फायदा हो गया, लेकिन दोपहर बाद उसका टेम्परेचर ६८।। हो जाता, तब मरीजाको तकलीफ जान पड़ती। तब हमने चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागके पृष्ठ ४०८ का नं० ३६ नुसखा सात दिन सेवन कराया। रोगिणी चंगी हो गई। इसके भी बाद हमने उसे “सितोपिलादि चूर्ण” में “प्रवाल भस्म” मिलाकर १ महीने खिलाई। अब तो वह मोटी-ताजी हो गई। मतलब यह कि, जो काम पचास-पचास रुपये रोजकी दवासे न हुआ, वह काम कौड़ियोंकी दवासे होगया। इस केसको लिखनेका हमारा यह मतलब है कि, रोग पहचानना बड़ा कठिन है और जहाँ कीमती दवाएँ कुछ भी लाभ नहीं दिखातीं, वहाँ कौड़ियोंकी दवाएँ अमृतका काम कर जाती हैं।



अगर प्रमेहके सभी लक्षण न मिलें कुँछ भी मिलें, तो आप समझ लीजिये कि प्रमेह है। अगर प्रमेह नया हो, थोड़े दिनोंका हो, तो आप नीचे लिखे हुए नुसखोंमें से किसीसे भी काम लीजिये; अवश्य सफलता होगी:—

(१) दो रत्ती निश्चद्र अन्नक भस्म, ६ माशे त्रिफलेका चूर्ण, २ माशे हल्दीका चूर्ण और १ तोले शहद मिलाकर सबेरे-शाम चटाइये ।

(२) दो या तीन रत्ती शीशा भस्म, एक तोले आमलोंका स्वरस, दो माशे हल्दीका चूर्ण और एक तोले शहद मिलाकर चटाइये । अगर आमले ताजा न मिलें तो सूखे आमले पीसकर चूर्ण बना लीजिये ।

(३) शुद्ध शिलाजीत, बंग भस्म, छोटी इलायचीके बीज और बंसलोचनको समान-समान लेकर शहदमें घोटकर गोलियाँ बना लीजिये और रोगीको सबेरे-शाम खिलाइये ।

(४) ६ माशे शुद्ध गन्धक और ६ माशे मिश्री मिलाकर रोगीको खिलाइये और पाव-भर धारोष्ण दूध पिलाइये ।

(५) त्रिफलेका चूर्ण, शुद्ध शिलाजीत और शहद मिलाकर चटाइये ।

(६) गिलोय के स्वरसमें शहद मिलाकर चटाइये । अवश्य आराम होगा ।

(७) दो रत्ती बंग भस्म ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटने और ऊपरसे सेमलकी मूसली या छालका रस २ तोले, हल्दीका चूर्ण २ माशे और शहद १ तोले मिलाकर पीनेसे प्रमेह बाजी बद कर जाता है ।

(८) त्रिफलेका चूर्ण और शुद्ध शिलाजीत शहदमें मिलाकर चाटनेसे बीसों प्रमेह चले जाते हैं ।

(९) आमलोंके स्वरसमें शहद और हल्दीका चूर्ण मिलाकर पीनेसे प्रमेह चले जाते हैं ।



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६५

नोट—ग्रामलोका रस, गिलोयका रस, सेमलकी मूसली, शिलाजीत, त्रिफला और बज्र भस्म प्रभृति प्रमेहकी रामवाण दवाएँ हैं ।

( १० ) शतावरका रस और दूध मिलाकर पीनेसे शुक्र प्रमेह— जिसमें पेशाबके साथ वीर्य जाता है या पेशाबमें वीर्य मिला रहता है— इस तरह भागता है, जिस तरह सूरजको देखकर अन्धकार ।

हमने ऐसे-ऐसे कोई ४०।५० परीक्षित नुसखे प्रमेहपर लिखे हैं । वे सभी रामवाणका काम करते हैं । जिसकी इच्छा हो वह उपरोक्त नुसखोंको आजमा देखे । एक गन्धकके योगकी बात ही आपको सुनाते हैं:—पौरी-गढ़वालके एक सम्पन्न रोगीने हमें लिखा कि मुझे प्रमेह है, पेशाब कड़वा तेल है । अनेक वैद्य-डाक्टरोंसे इलाज कराया, हजारों रुपये नाश किये, पर लाभ नहीं होता । अब आपसे इलाज कराना चाहता हूँ । हमने उसे ३ माशे शोधी हुई गन्धकमें उतनी ही पिसी मिश्री मिला कर सवेरे-शाम खाने और ऊपरसे धारोष्ण दूध पीनेको लिखा । उसे एक महीनेमें बहुत फायदा मालूम हुआ । उसने लिखा, मुझे सैकड़ों दवाओंकी अपेक्षा इसी गन्धकसे कुछ लाभ नज़र आया है । पेशाब बहुत साफ है; पर अभी कसर भी बहुत है । हमने उसे आगे ६ माशे गन्धक और ६ माशे मिश्रीकी सलाह दी । नतीजा यह हुआ कि, अनेक वैद्य-डाक्टरोंसे जो प्रमेह आराम न हुआ था, वह गन्धकसे आराम हो गया । देखी, मामूली नुसखेकी करामात ।

अगर प्रमेह पुराना हो, ऐसे नुसखोंसे न जाय, तो आप “वसन्त-कुसुमाकर रस” और “मेहमिहिर तेल” सेवन कराइये । अथवा एक समय “वसन्तकुसुमाकर” और दूसरे समय “चन्द्रप्रभा बटी” सेवन कराइये और “मेह मिहिर तेल”की मालिश कराइये, अवश्य आराम होगा । हमने अनेक केसोंमें इस तरह लाभ उठाया है; पर वसन्त-कुसुमाकर रसकी मात्रा विचारपूर्वक दीजिये । जो ताकतवर और सर्द मिजाज हो, उसे आप दो रत्ती तक दे सकते हैं; गरमी नहीं करेगा । अगर मरीज़ कमजोर हो और मिजाज भी कुछ गरम हो, तो एक या आधी



रत्ती दीजिये, क्योंकि यह गरमी करता है । एकदम जियादा दवा देनेसे लाभ नहीं होता, पर उचित मात्रासे लाभ होता है । रोगीका बलाबल और प्रकृति आदिका विचार करके मात्रा और अनुपान तजवीज करने चाहिएँ । अगर कफ-वातज प्रमेह हो, तो शहदमें चटाइये; अगर प्रमेह पित्तज हो, तो शर्बत चन्दन या खमीरा सन्दलमें खिलाइये । ना-बराबर घी, शहद और मिश्रीमें मिलाकर चटानेसे भी वसन्तकुसुमाकर पुराने प्रमेहोंको मार भगाना है । पिछला अनुपान हर हालतमें अच्छा है । अगर गरमीके अंश जियादा होंगे, तो शर्बत चन्दनमें जियादा फायदा करेगा । ऐसी बातें वैद्यकी विचार-बुद्धिसे सम्बन्ध रखती हैं । वात-कफ जनित प्रमेहोंमें “देवदार्वारिष्ट” और पित्तकफजमें “लोधासव” अच्छे प्रमाणित हुए हैं । मेह कुलान्तक रस, बंगेश्वर, महाबंगेश्वर, वृहत् बंगेश्वर, मेदमुद्गर गुटिका, पञ्चानन बटी, सोमनाथ रस, स्वर्ण-बङ्ग, त्रिफलापाक, सुधारस, प्रमेह-सुधा और प्रमेहान्तक बटी ये महौषधियाँ प्रमेह-रोगियोंको सेवन कराई जाती हैं और अच्छा चमत्कार दिखाती हैं । हमने इनमेंसे प्रायः सभीकी परीक्षा की है । वसन्त-कुसुमाकर रस, चन्द्रप्रभा बटी, मेहमिहिर तेल, त्रिफलापाक, सुधारस और प्रमेह-सुधासे हमने अधिक बार काम लिया है ।

प्रमेह-रोगी अक्सर पूछा करते हैं, कहिये, कसरत या मिहन्त करें या नहीं । प्रमेह दो तरहके होते हैं—( १ ) रोगीके कुपथ्य आहार-विहारोंसे यानी बदपरहेजीसे अथवा प्रमेह पैदा करनेवाले पदार्थोंसे, और ( २ ) कुलपरम्परागत या माता-पिताके दोषसे । अगर प्रमेह अपथ्य-सेवनसे हुआ हो तो कसरत कर सकते हैं । डण्ड-बैठक करना, मुद्गर फिराना और राह चलना—ये कसरतमें ही दाखिल हैं । इनसे अपथ्यजनित प्रमेहमें लाभ होता है, बशर्ते कि, रोगी मोटा-ताजा और ताकतवर हो । कमजोर रोगी को कसरतकी इजाजत नहीं । कुलपरम्परा या माँ-बापसे होने वाले प्रमेहमें भी कसरत करना मना है । सारांश यह, कि अगर प्रमेह बदपरहेजी या अपथ्य सेवनसे हुआ हो और रोगी



मोटा-ताजा हो, शरीरमें मेद या चरबी बढ़ रही हो, तो उस मेदके घटानेको वह कसरत कर सकता है। कफ और मेद जिससे भी घटें, वही प्रमेहमें लाभदायक है।

प्रमेहमें पथ्यापथ्यका ध्यान रखनेकी सख्त-से-सख्त जरूरत है। जो रोगी अपथ्य नहीं त्यागता अथवा जिन कारणोंसे प्रमेह हुआ है उन्हें नहीं त्यागता, उसका प्रमेह जा नहीं सकता; चाहे वसन्तकुसुमाकर खाया जाय और चाहे मेहकुलान्तक रस वगैरः। प्रमेहवालेकी धातुएँ पेशाबके साथ बाहर निकलती रहती हैं, इसलिए रोगीका मुँह सूखता और प्यास बहुत लगती है। बहुत पानी पीनेसे प्रमेह बढ़ता—मधुमेह हो जाता और पेशाब बहुत ही अधिक होने लगते हैं। जितने ही पेशाब जियादा होते, उतनी ही धातुएँ अधिक निकलतीं और रोगी कमजोर होता जाता है। इसलिए, और अपथ्य—रोग बढ़ानेवाले पदार्थों की अपेक्षा भी पानीकी कमी करना—उसमें रोक लगाना बहुत ही जरूरी है। बहुतसे अनुभव-विहीन वैद्य प्रमेहवालेको दवा तो अच्छी दे देते हैं, पर पथ्यापथ्यपर जियादा जोर नहीं देते। रोगी बेचारा क्या जाने, कौनसी चीज मुझे जियादा नुकसान करेगी। इसलिए रोगीको पथ्यापथ्य पदार्थों का छपा हुआ पर्चा दे देना चाहिये और कह देना चाहिये, कि अगर आराम होना चाहते हो, तो इस पर्चेके विरुद्ध काम मत करना।

एक बार देखा कि, एक वैद्य महाशयने अपने प्रमेहके रोगीको वसन्तकुसुमाकर, मेहकुलान्तक, मेहमुद्गर बटिका, वृहत्बंगेश्वर आदि अनेक उत्तमसे उत्तम दवाइयाँ खिला दीं, पर रोगीका वही हाल हुआ “ज्यों-ज्यों दवाकी मर्ज बढ़ता गया।” हमारे पास भी वही रोगी आया, दवाओंके नाम सुनकर हम भी चकराये, हमारे दिलमें भी कचाई आने लगी; पर होनहार अच्छी थी, यश मिलना था, इसलिए हम पूछ बैठे, महाशय ! आप दही या रायता तो नहीं खाते, दूध तो नहीं पीते, पानी के लोटे-के-लोटे तो नहीं झुकाते, दिनमें सोते तो नहीं, बाजारू मिठाई



तो नहीं खाते ? रोगी बोला—“बाबू साहब ! मैं ये सब काम करता हूँ । रायते या दही बिना मुझे रोटी नहीं भाती, पानी मैं इच्छा-नुसार पीता हूँ; रोटी खा चुकते ही एक लोटा—जिसमें सेर सवा सेर पानी आता है—पिये बिना मुझे कल नहीं पड़ती । दो-तीन बजे भूख लगने पर दोपहरा करता हूँ—बरफी, पेड़े, कचौड़ी आदि खाता हूँ । भोजन करके आलस्य आता है, इसलिए ३-४ घण्टे सोता हूँ । रातको बारह एक बजे तक ताश खेलता हूँ, क्योंकि नींद नहीं आती । महीनेमें एक-दो बार स्त्री-प्रसङ्ग भी करता हूँ । नित्य मैथुन नहीं करता, पर सोता एक पलङ्ग पर हूँ । वैद्यजीने मुझे इन सबकी मनाही नहीं की । लालमिर्च, गुड़, तेल, खटाई और स्त्री-प्रसङ्गकी मनाही की थी । जब मैंने बहुत जोर दिया, तब महीनेमें एकाध बार प्रसङ्गकी भी आज्ञा देदी । दूध-घी इसलिए जियादा खाता हूँ, कि दवाएँ गरमी न करें ।’ सुनते ही, हम समझ गये कि रोगी इसलिए आराम नहीं होता । हमने कहा—“सेठजी ! आप इन कामोंको करते हुए इस जन्ममें आराम नहीं हो सकते ।” बहुत क्या—सेठजी बोले, अगर वैद्यजी मुझे इन चीजोंसे रोकते, तो मैं जरूर इनसे परहेज करता । मेरा अपराध नहीं । खैर, अब आप दवा दीजिये और पथ्य-अपथ्य लिख दीजिये । हमने उन्हें पहले तो हल्का जुलाब दिया । इसके बाद डेढ़ महीने तक शिलाजीत, बङ्ग, इलायची और बंसलोचनकी गोलियाँ जो नं० १२में लिखी हैं, खिलाई । इन गोलियोंसे आठ आने उपकार हुआ । इसके बाद धनी होनेकी वजहसे वे बढ़ियासे बढ़िया दवा पर जोर देने लगे । हमने उन्हें शहदमें “वसन्तकुसुमाकर रस” सेवन कराया, पर उसका नाम नहीं बताया । रातको त्रिफला और मिश्री फँकाते रहे और “मेहमिहर तेल” की मालिश कराते रहे । ३॥ महीनेमें सेठजी आराम हो गये । पीछे हमने उन्हें “वसन्तकुसुमाकर”का नाम बताया । सेठजी कहने लगे, यह तो हमने तीन महीने तक खाया था, पर दमड़ी भर लाभ न हुआ । हमने कहा—“सेठजी ! आप दवा जरूर अच्छी खाते थे, पर दूसरी तरफ



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । - ५६६

अपथ्य सेवन करके रोगको बढ़ाते थे । दवासे अपथ्यका बल अधिक रहता था, इसीसे दवाने काम नहीं किया । पाठक ! हमारी इस कथासे समझ लें, कि दवाकी अपेक्षा पथ्य जियादा काम करता है । जहाँ अपथ्य सेवन किया जाता है, वहाँ दवा हार जाती है । किसीने बहुत ठीक कहा है :—

पथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणैः ।

अपथ्ये सति गदार्तस्य किमौषध निषेवणैः ॥

अर्थात् पथ्य सेवन करे तो दवाकी क्या जरूरत ? अर्थात् हितकारी आहार-विहार सेवन करनेवालेको दवा खानेकी दरकार नहीं, वह तो पथ्य सेवन करनेसे बिना दवाके ही आराम हो जायगा । इसी तरह अपथ्य सेवन करनेवालेको दवासे कोई लाभ नहीं । जो अपथ्य सेवन करता है, वह हजारों दवाओंसे भी आराम नहीं हो सकता ।

पथ्यापथ्यके मामलोंमें भी, एक ही राहपर नहीं चलना चाहिये । जैसे प्रमेह रोगीको आम तौरसे पुष्टिकारक आहार दूध-घी आदिकी मनाही है; पर शुक्र प्रमेहीको, जिसका पेशाब वीर्य-जैसा या वीर्य मिला होता है, पुष्टिकर आहार-विहारकी मनाही नहीं है । शुक्र-प्रमेह रोगीके अग्निबलका विचार करके, दिनके समय, पुराने चाँवलोंका भात, कबूतर और भेड़ आदिका मांस-रस, मूँग, मसूर और चनेकी दाल, हंसके अण्डे, परवल, गूलर, गोभी, गाजर आदिकी घीमें पकी हुई तरकारी; रातको रोटी, दाल, साग और कम चीनी मिला दूध दे सकते हैं । जलपानके लिए घी, चीनी, सूजी या बेसनके बने पदार्थ, अंगूर, कटहल, बेदाना अनार, खजूर और बादाम आदि दे सकते हैं । ये सभी पदार्थ पुष्टिकारक हैं और केवल शुक्रमेही रोगीको दिये जा सकते हैं, पर रोगीका बलाबल और जठराग्निका विचार करके । अगर अन्धाधुन्ध दिये जायेंगे, तो हानि ही करेंगे । और प्रमेहवालोंको दूध-घी मना है, पर शुक्रमेहीको जिस तरह ये अग्निबल विचार कर दिये जाते हैं और देने चाहियें, उसी तरह माँ-बापके दोषसे होनेवाले



प्रमेहमें भी यह अल्प मात्रामें दिये जा सकते हैं, पर ज़ियादा नहीं । ऐसे प्रमेहमें करेला प्रभृतिके कसैले साग तेलमें भूनकर देना नुक्त-सानमन्द है, पर अपथ्यसे हुए प्रमेहमें नहीं ।

बहुत लोग प्रमेह, औपसर्गिक प्रमेह—सोजाक, शुक्रतारल्य, ध्वज-भंग और सोमरोग—बहुमूत्र—मूत्रातिसारके पहचाननेमें बड़ी गलतियाँ करते हैं, इसलिए भी दवाएँ फ़ायदा नहीं करतीं, अतः हम यहाँ इन सबका फ़र्क़ खुलासा तौरसे दिखाते हैं :—

प्रमेह और औपसर्गिक प्रमेह यानी सोजाक पेशाबकी नलीके रोग हैं । सोजाक एक मात्र मूत्र-नलीसे सम्बन्ध रखता है, सारे शरीरसे सम्बन्ध नहीं रखता; पर प्रमेह, मूत्र-नलीसे सम्बन्ध रखने पर भी, सारे शरीरसे सम्बन्ध रखा है । प्रमेह होनेसे शरीरकी खून, मांस, चर्बी और वीर्य आदि धातुएँ खराब होकर, मूत्र-नलीद्वारा, मूत्रके साथ बाहर निकल जाती हैं । इससे मनुष्य दिन-दिन बलहीन होकर मर जाता है । सोजाकमें शरीरकी धातुएँ मूत्र-मार्गसे बाहर नहीं निकलतीं; इसलिए रोगी अत्यन्त तकज़ीफ़ पाने पर भी प्रमेह वालेकी तरह कमजोर नहीं होता । उसको मूत्र-नलीमें घाव हो जाते हैं । उनमें पेशाब आते समय बड़ी जलन होती है । प्रमेहवालेको पेशाबके समय सोजाकवालेकी तरह जलन या पीड़ा नहीं होती । प्रमेहके और कारण हैं और सोजाकके और । प्रमेह मिहनत न करने, आनन्दमें बैठे रहने, दही-दूध आदि कफ़कारी पदार्थोंके अधिक खाने वगैरहसे होता है, पर सोजाक बहुधा वेश्या प्रभृतिके सहवाससे होता है । हाँ, स्वप्नसुख या स्वप्नदोषसे प्रमेह और सोजाक दोनों होते देखे गये हैं । कहा है—

आस्या सुखं स्वप्न सुखं दधीनि ग्राम्योदकान्परसाः पयांसि ।  
नवान्नपानं गुड वैकृतं च प्रमेह हेतुः कफकृच्च सर्वम् ॥

जो दिन-रात बैठे रहने या पड़े रहनेमें आनन्द मानते हैं और सोनेसे सुखी रहते हैं अथवा स्वप्नमें, दिनके समय खियोंमें मन लगाये रहनेसे



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५७१

सुन्दरी नारियोंको देखते हैं। स्त्रीके अभावसे वीर्य गरम रहता है, इसलिए सुपनेमें सुपनेकी रमणियोंके साथ भोग करते हैं, भोग करनेसे वीर्यपात हो जाता है, इसे ही “स्वप्नदोष होना” कहते हैं। इन कारणों से और दही वगैरः जियादा खाने वगैरः-वगैरः कारणोंसे प्रमेह होता है। मतलब यह है, इस तरह स्वप्नमें बारम्बार वीर्य जानेसे प्रमेह हो जाता है। इसी तरह स्वप्नमें सुपनेकी मनोरम नारीसे मैथुन करनेसे वीर्य निकलते ही अक्सर आँखें खुल जाती हैं। आँखें खुलते ही वीर्य का बाहर निकलना बन्द हो जाता है और नलीमें जो वीर्यके अंश रह जाते हैं वे जखम पैदा कर देते हैं। जिसे सोजाक होता है, उसे बहुधा शुक्रमेह, शुक्रतारल्य या ध्वजभंग-नामर्दी रोग पैदा हो जाते हैं; क्योंकि सोजाक जड़से बहुत कम आराम होता है। कोई बिरला ही सोजाक वाला होगा, जिसे प्रमेह या शुक्रतारल्य रोग न हो। सोजाकमें अत्यन्त शीतल चिकित्सा करने या अधिक नहाने वगैरः से गठिया रोग हो जाता है। अनेक रोगी लँगड़े-लूले तक होते देखे गये हैं। जिस तरह सोजाकसे शुक्रमेह, शुक्रतारल्य और नामर्दी आदि रोग होते हैं; उसी तरह प्रमेहके बहुत दिन बने रहनेसे, उनका इलाज न होनेसे, मधुमेह हो जाता है। मधुमेह हो जानेसे रोगीका पेशाब शहदकी तरह गाढ़ा, मीठा, लिबलिबा और पिंगल वर्णका हो जाता है। इतना ही नहीं, रोगीके शरीरका स्वाद भी मीठा हो जाता है। इस मेहमें जिस दोष की अधिकता रहती है, उसी दोषके लक्षण अधिक दीखते हैं। मधुमेह की चिकित्सा जल्दी न होनेसे शरीरमें नाना प्रकारकी पिड़िकायें हो जाती हैं। कह आये हैं कि, मधुमेह और पिड़िका-मेह असाध्य होते हैं। भगवान्की दया होनेसे ही आराम होते हैं। आशा है, पाठक प्रमेह, सोजाक और मधुमेहका अन्तर समझ गये होंगे।

जिस तरह प्रमेह रोग पेशाबकी नलीका रोग है और उसमें पेशाब की राहसे धातुएँ बह-बहकर निकलती हैं, उसी तरह मूत्रातिसार भी मूत्र-नलीका रोग है। इस रोगमें देहका जलीय पदार्थ विकृत और



स्थानच्युत होकर मूत्र-मार्गमें उपस्थित होता और पेशाबकी राहसे अधिकताके साथ निकलता है। निकलते समय किसी तरहकी पीड़ा नहीं होती। निकलनेवाला जल साफ़, शीतल, सफ़ेद और गन्ध-शून्य होता है। इस रोगमें कमजोरी, मैथुनकी असमर्थता, मस्तककी शिथिलता तथा मुँह और तालूका सूखना ये लक्षण होते हैं। इसमें जलीय अंशका क्षय होता है, इसलिए इसे “सोमरोग” कहते हैं। यही रोग जब औरतोंको होता है, तब उनकी योनिसे शरीरको धारण करने वाला पदार्थ जाता है। इस रोगमें सोम धातुका नाश होता है, इस लिए इसे “सोम रोग” कहते हैं। जब यही सोम रोग पुराना हो जाता है, तब यह मूत्रातिसार हो जाता है। इस दशामें पेशाब ज़ियादा होते हैं और उनकी मिक्कदार भी ज़ियादा होती है। फ़र्क़ यही है कि, प्रमेह में शरीरकी सभी धातुएँ जाती हैं, पेशाब तरह-तरहके रङ्ग और गन्ध वाले होते हैं, पर मूत्रातिसार में पेशाब साफ़, सफ़ेद, शीतल और गन्ध-हीन होते हैं। उदकमेही रोगीका पेशाब यद्यपि साफ़, सफ़ेद, शीतल गन्धहीन और पानी जैसा होता है; पर वह किसी क्रूर गदला और चिकना भी होता है। पर इसमें पेशाबोंकी अधिकता, मस्तकमें शिथिलता, मुख और तालुशोष आदि लक्षण होते हैं, वह उस प्रमेहमें नहीं होते।

शुक्रतारल्य रोग होनेसे मलमूत्र त्यागते समय अथवा थोड़ी भी कामेच्छा होनेसे वीर्य निकल जाता है। स्त्रीको देखते ही, उसे छूते ही, उसकी याद आते ही या भग-दर्शन करते ही वीर्य निकल जाता है। स्वप्नदोष होते हैं, स्त्रीप्रसङ्गमें दो मिनट भी नहीं लगते—फौरन वीर्य निकल जाता है, अग्नि मन्द हो जाती है, दस्त-क्रब्ध रहता है या पतले दस्त लग जाते हैं, सिर घूमता है, आँखोंके चारों ओर काला-कालासा दीखता है, कमजोरी हो जाती है, काम-धन्धेमें दिल नहीं लगता, किसीसे बात करने या किसीके पास बैठनेको मन नहीं चाहता—एकान्त स्थान अच्छा लगता है। जब रोग बढ़ जाता है, तब लिङ्गके



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५७३

खड़े हुए बिना ही वीर्य निकल जाता है । लिङ्ग के खड़े होनेकी शक्ति ही जाती रहती है । फिर धीरे-धीरे ध्वजभङ्ग रोग हो जाता है । शुक्रतारल्यसे ध्वजभङ्ग रोग होता है । यह शुक्रतारल्य रोग कम उम्रमें स्त्री-प्रसङ्ग करने, हस्तमैथुन या गुदा-मैथुन करने, बहुत ही जियादा स्त्री-प्रसङ्ग करने वगैरः कारणोंसे होता है । जिस तरह ध्वजभङ्ग रोग शुक्रतारल्यसे होता है; उसी तरह भय, शोक या अन्य मानसिक भावोंसे, मुँहफट स्त्रीकी बातोंसे, गरमी या उपदंश होनेसे, मैथुनेच्छा होने पर मैथुन न करनेसे तथा लाल मिर्च, खटाई आदि गरम और नमकीन पदार्थ जियादा खानेसे भी होता है । शुक्रतारल्य रोगी मैथुन कर सकते और करते हैं, यद्यपि उन्हें कोई आनन्द नहीं आता । प्रमेह वाले भी मैथुन करते और कर सकते हैं, किन्तु ध्वजभङ्ग या नपुंसकता वाले मैथुन नहीं कर सकते । कहा है :—

**क्लीवः स्यात्सुरताशक्नस्तद्भावः क्लैव्यमुच्यते ।**

जो पुरुष स्त्रीसे मैथुन करनेकी इच्छा तो करे, पर मैथुन कर न सके, उसे “क्लीव या नामर्द” कहते हैं ।

नामर्दी पर हम पहले बहुत-कुछ लिख आये हैं, लेकिन कितने ही रोगी उतना समझा देने पर भी नपुंसकताके कारणोंको नहीं समझते और कितने ही स्वप्नदोष और शुक्रमेहके सम्बन्धमें प्रश्न किया करते हैं, इसलिए यहाँ पर हम पहले नामर्दी या नपुंसकताके कारणोंको दूसरी तरह लिखते हैं । साथ ही स्वप्नदोष और शुक्रमेह पर भी विस्तारसे लिखते हैं । हमने पहले स्वप्नदोष पर इसलिए नहीं लिखा था, क्योंकि स्वप्नदोष एक तरह का प्रमेह ही है । इसे स्वप्नमेह या स्वप्न प्रमेह भी कहते हैं । जो दवाएँ प्रमेहोंको नाश करती हैं, वे ही स्वप्नदोष या स्वप्नमेहको आराम करती हैं । आशा है, अब पाठकोंके दिलोंके शक रफा हो जायँगे और वे इन रोगोंके भेद अच्छी तरह समझने लगेंगे ।



## नपुंसकता या नामर्दी ।

हमने इस विषय पर पीछे विस्तारपूर्वक लिखा है, फिर भी कमजोर दिमाग वालोंके लिए यहाँ हम नामर्दीके कारणोंको संक्षिप्त रूपसे लिखते हैं :—

( १ ) हस्तमैथुन । आजकल जितने नामर्द होते हैं, उनमें अधिकांश हस्तमैथुन या हथलस अथवा मुष्टिमैथुनसे होते हैं । आजकलके लड़कोंमें कोई विरला ही होगा, जो हस्तमैथुन न करता हो । इस हस्तमैथुनने भारतके करोड़ों नवयुवकों का सत्यानाश कर रखा है । हस्तमैथुन करने वाला स्त्रीभोग या सन्तान पैदा करने योग्य नहीं रहता । हाथकी रगड़ लगनेसे पेशाब निकालनेवाली नली, जिसे अंग्रेजीमें यूरेथरा कहते हैं, खराब हो जाती है । उसमें सूजन वा वरम आ जाता है । उसका मुँह लाल हो जाता और खुला रहता है । पेशाब बारम्बार आता है । वीर्यकोशकी स्पर्शशक्ति बहुत ही तेज हो जाती है । वीर्य जल्दी-जल्दी बनता और निकलता है । नोंदमें स्वप्नदोष होकर वीर्य निकल जाता है । जाग्रत अवस्थामें बूँद-बूँद टपका करता है । क्योंकि इस हस्तमैथुनकी रगड़ोंसे वीर्यकोशके ज्ञानतन्तु या नर्व्ज (Nerves) कमजोर हो जाते हैं । जब ज्ञानतन्तुओं या मांसरज्जुओंमें वीर्यको रोकनेकी क्षमता नहीं रहती, तब प्रमेह--शुक्रमेह या स्वप्नमेह जैसे भयङ्कर रोग होकर वीर्यका नाश हुआ करता है और इसका परिणाम “नपुंसकता” होता है । याद रखना चाहिये, हस्तमैथुनसे दो हानियाँ मुख्य होती हैं:—( १ ) लिंगेन्द्रियकी मैशीन भीतर-बाहरसे खराब हो जाती है, और ( २ ) वीर्यनाशकी राह खुल जाती है । पुरुष-शरीरमें वीर्य ही पुरुषत्व है । जब वीर्य न रहेगा, तब पुरुषत्व



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५७५

कहाँसे रहेगा ? पुरुषत्व-हीन पुरुष स्त्रीको भोगमें किस तरह सन्तुष्ट कर सकेगा ? जो पुरुष मैथुन ही न कर सकेगा, उसके सन्तान कैसे होगी ? और भी सुनिये:—

जो लड़का या जवान हस्तमैथुन करता है, उसके लिंग और फोतों में दर्द होता है, फोते ढीले होकर लटक जाते हैं । लिंगपर नीली-नीली मोटी-मोटी नसें दीखने लगती हैं । लिंगेन्द्रिय मुर्मा जाती है, उसकी चमड़ी सुकड़ जाती है । स्खलित होनेसे आनन्द नहीं आता । इस मूर्खका चेहरा पीला जर्द हो जाता है । नेत्रोंके इर्द गिर्द कालाई छा जाती है, चेहरेपर दागसे हो जाते हैं, आँखोंसे धुँधला-धुँधला दीखता है; बिना सहारे खड़ा नहीं रहा जाता और न बैठा ही जाता है । काम-धंधा बुरा लगता है । मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है । आँखें नीची रहती हैं । असमय में ही बाल सफेद या पीले होने लगते हैं । कभी दस्त लगते हैं तो कभी पेशाब बन्द हो जाता है । कलेजा धकधक करता है । हौलदिलो हो जाती है । सिरके बाल उड़ने लगते और गञ्जा होने लगती है । जुकाम या नजलेकी शिकायत बनी रहती है । चेहरा रूखा हो जाता है । आँखें भीतरको धसक जाती हैं । चलते समय पाँव टेढ़े-तिर्छे पड़ते हैं । दाँत जल्दी हिलने लगते हैं । चित्त उदास रहता है । मन मुर्माया रहता है । सिरमें दर्द हुआ करता है । इसलिए बिना तकिये या और किसी सहारेके बैठा नहीं जाता, हाथ-पाँव सो जाते या सुन्न हो जाते हैं । इन शिकायतोंके सिवा कूल्होंमें गठिया, पक्षाघात, फालिज, आक्षेपक, अपस्मार-मृगी और अनेक भयङ्कर रोग हो जाते हैं । जो बालक पहले अक्लमन्द और तेजजहन हो, फिर यकायक ही मूर्ख और कुन्द-जहन हो जावे तो फौरन समझलो कि, यह हस्तमैथुन करने लग गया है ।

खूब खुलासा यह है कि, इन सारी ही भयानक बीमारियोंकी उत्पत्तिका कारण वीर्यनाश है । यों तो वीर्य शरीरके सारे भागोंमें रहता है; पर हृदय, मस्तिष्क और अण्डकोष या फोतोंमें विशेष रूपसे



रहता है । इसलिए, वीर्यका नाश होनेसे हृदय, मस्तिष्क और लिंगेन्द्रियमें उसका प्रभाव अधिक देखा जाता है । इस तरह वीर्यनाश करनेसे प्रमेह, शुक्रमेह, स्वप्नमेह ( स्वप्नदोष ), पागलपन, हृदय-रोग और नपुंसकता प्रभृति भयानक रोग हो जाते हैं ।

( २ ) गुदामैथुन या लौंडेबाजी । यह उससे भी बुरा काम है । नियमपूर्वक स्त्रीभोगके सिवा, वीर्य-नाश करनेके जितने भी तरीके हैं, उन सबमें यह सबसे गन्दा और लज्जाजनक है । जो काम जानवर भी नहीं करते, उसे नीच पुरुष करते हैं; अतः वे पशुसे भी गये-बीते हैं । गुदा इस कामके लिये ईश्वरने नहीं बनाई । वह बड़ी सख्त जगह है । कामके जोशमें आकर, जब मूर्ख पुरुष लिंगको जबर्दस्ती भीतर घुसाते हैं, तब बहुधा लिंगमें चोट या जोरकी रगड़ लगती है । इससे वीर्य और मूत्र निकालनेवाली नलीकी बनावट खराब होने लगती है । नसों पर जोर पड़नेसे नसें टूट जाती हैं—ढीली हो जाती हैं । इस कर्मवालेको लौंडोंके सिवा औरत से शहवत नहीं होती । बाक़ी जो हानियाँ हस्तमैथुनसे होती हैं, वह सब इससे भी होती हैं । नपुंसकता होनेमें तो शक ही नहीं । कोई भी लौंडेबाज या बच्चाकश स्त्रीके कामका रहते नहीं देखा ।

( ३ ) अत्यन्त मैथुन । नियमानुसार स्त्री-प्रसंग ही आनन्ददायक होता है । जिस तरह सभी कामोंकी 'अति' दुःखदायी है, उसी तरह अति रति या अत्यन्त स्त्री-भोग भी खराब है । अत्यन्त मैथुनसे लिंगमें स्पर्शकी शक्ति नहीं रहती यानी नष्ट हो जाती है । इस दशामें तरह-तरहकी वीर्यको पैदा करनेवाली और पुष्ट करनेवाली दवाएँ सेवन करनेसे भी विशेष लाभ नहीं होता । जो बहुत ही भोग करते हैं, उनका लिंग स्पर्शको इतनी तेजीसे जान जाता है, कि जितनी जल्दी वीर्य बनता है, उतनी जल्दी निकल जाता है । इसका नतीजा यह होता है कि लिंग बहुत ही कमजोर हो जाता है । इससे अण्डकोष, वीर्यकोष और ज्ञानतन्तु यानी नर्व्ज ऐसे खराब हो जाते हैं कि वीर्य



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५७७

ठहर नहीं सकता । किसी स्त्रीको देखने या छूने-मात्रसे अपनी जगहसे चलायमान होकर निकल जाता है । मैथुनमें स्तम्भनका नाम भी नहीं रहता । भगप्रवेशकी नौबत नहीं आती, भगदर्शन करते ही अथवा दो-चार सेंकण्ड या एकाध मिनटमें निकल जाता है । रोग बहुत बढ़ जाने पर तरह-तरहसे गिरा करता है ।

फिर ऐसे भोगियोंके चेहरे फीके पड़ जाते हैं । नेत्रोंमें गड्ढे हो जाते हैं, गाल पटक जाते हैं, स्मरणशक्ति नष्ट हो जाती है, बुद्धि मारी जाती है, मस्तिष्क सूना और कमजोर हो जाता है, शरीर बलहीन हो जाता है, भोजन नहीं पचता, अग्नि मन्द हो जाती है, दिल घबराने लगता है और वायुगोला आदि अनेक रोग आ घेरते हैं । सुनते हैं, चींटे प्रभृति छोटे जानवर मैथुन कर चुकते ही मर जाते हैं । घोड़े और हाथी क्षण-भरके लिये बेहोशसे होकर मादीन पर सिर रख देते हैं । रति या मैथुन ऐसी ही बला है । कैसा ही ताकतवर आदमी हो, अत्यन्त मैथुनसे बेकाम हो जाता है । अति मैथुनका भी अन्तिम फल नपुंसकता है । इसलिये सभी आचार्योंने इसे अत्यन्त कम करनेकी राय दी है ।

( ४ ) प्रमेह । प्रमेह, शुक्रमेह और स्वप्नमेहसे आजकल नपुंसकता जियादा होती है । हस्तमैथुन, गुदामैथुन और अति मैथुनसे प्रमेह होते हैं और प्रमेह होनेसे वीर्यक्षय होता है । जब वीर्य नहीं, तब पुरुषत्व कहाँ ? वीर्यनाशका फल तो नामर्दी होनी ही चाहिये । हिकमत-वाले कहते हैं, कि सोते-जागते, मैथुनके समय घुसानेसे पहले या घुसाते ही, पेशाबके पहले या पीछे, पाखानेके समय, उत्तेजना होकर या बिना उत्तेजना हुए, किसी तरह भी थोड़ा या बहुत वीर्य निकल जाता है, उसे “जिरियान” कहते हैं । जिरियान या प्रमेह जब बहुत दिनों तक बना रहता है, उसका इलाज नहीं होता, तब वीर्यक्षय हुआ करता है, और आदमी एकदमसे नामर्द हो जाता है ।

और भी सुनिये—जो लोग गद्दे-तकियोंके सहारे पड़े रहते हैं



दूध-वही मावा-मलाई खूब खाते हैं, पर कसरत या मिहनत नहीं करते, खूब सोया करते हैं, स्वप्नमें रूपवती नारियोंके साथ मैथुन करके खलास हो जाते हैं अथवा कफकारक पदार्थ जियादा सेवन करते हैं, उनके वातादि दोष कुपित होकर, शरीरकी आधारभूत धातुओं—मेद, रक्त, वीर्य, रस, चर्बी, लसीका, मज्जा, ओज और मांसको दूषित करते हैं यानी वातादि दोष पुरुषकी वस्ति या पेड़ू में पहुँचकर वीर्य और मूत्रको दूषित करते हैं। वीर्यके दूषित होनेसे वीर्यक्षय होता है। वीर्यके क्षय या नाशसे नपुंसकता हो जाती है—पुरुषार्थ नष्ट हो जाता है। क्योंकि जब वीर्य ही नहीं, तब पुरुषार्थ कहाँ ? और भी खुलासा यह है, कि प्रमेह होनेसे शरीरकी वीर्य आदि धातुएँ खराब होकर, मूत्र-नली द्वारा, मूत्रके साथ बाहर निकलती हैं। जब शरीरमें वीर्य आदि धातुएँ ही न रहेंगी, तब पुरुषत्व कहाँसे रहेगा ? नपुंसकता होगी ही होगी; क्योंकि पुरुषत्वकी जड़ तो वीर्य है। अब साफ हो गया कि, प्रमेहसे भी नपुंसकता होती है।

नोट—बहुतसे अनाड़ी, प्रमेह होने पर भी, प्रमेहका इलाज न करके, ताकत लाने और वीर्य बढ़ानेको धातुवर्द्धक, वीर्य-उत्तेजक बाजीकरण औषधियाँ दे देते हैं। नतीजा यह होता है कि उल्टा रोग बढ़ता है। इसलिए प्रमेह-रोग होने पर बाजीकरण दवाएँ कभी न देनी चाहिएँ। पहले हमें वीर्यका दूषित होना और निकलना बन्द करना चाहिये, यानी प्रमेह आराम हो जावे, तब बाजीकरण दवाएँ देनी चाहिए। इस विषय पर हम आगे विस्तारसे लिखेंगे।

( ५ ) स्वप्नदोष । स्वप्नदोष अगर महीनेमें दो-एक बार होते हों, तब तो कोई हानि नहीं। पर अगर महीनेमें दस-पाँच बार या रोज ही होते हों तो भयंकर हानि है। स्वप्नदोष भी एक तरहका प्रमेह है, इसीसे इसे “स्वप्नमेह या स्वप्नप्रमेह” भी कहते हैं। पर है यह सब प्रमेहोंमें बड़ा भाई। खुलासा यह है कि, अगर स्वप्नदोष बलवान् पुरुषको महीनेमें दो-एक बार हो जावे, तब तो कोई भय नहीं। अगर स्वप्नदोष दिन-रातमें कई-कई बार या जल्दी-जल्दी होने लगे और बल घटने लगे



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५७६

तो भयानक हानि है । बारम्बार स्वप्नदोष होने से लिंगेन्द्रिय शक्तिहीन — कमजोर और स्पर्शज्ञान-रहित हो जाती है । बारबार वीर्य निकलनेसे शरीर कमजोर होने लगता है । शरीरकी कमजोरीके कारण लिंगमें तेजी या चैतन्यता आकर स्वप्नदोष और भी जल्दी होने लगते हैं । शरीर की कमजोरी और नित्यके वीर्यनाशसे मनुष्यके शरीरकी रेढ़ हो जाती है । कमर और पीठमें वेदना होती है । बिना मसनद, तकिया या खम्भे वगैरःके सहारे बैठा नहीं जाता । खड़ा रहना तो मरना हो जाता है । वीर्यकोषके ढीला हो जानेके कारण, वीर्य पानी की तरह बहा करता है । भग-दर्शन करते ही, बिना प्रवेश किये ही, पुरुष स्वलित हो जाता है । फोटे ढीले और लिबलिबे-से हो जाते हैं और थैलों की तरह लटका करते हैं । लिंग एक तरफ को झुक जाता है, ढीला हो जाता है और एक बालकके लिंगकी तरह अत्यन्त छोटा हो जाता है । इसके और भी लक्षण हम आगे लिखेंगे ।

अति मैथुन से भी स्वप्नदोष बुरा ।

जो दिन-रातमें चार-चार बार मैथुन करते हैं, वे उतने कमजोर नहीं होते, जितना कि स्वप्नदोषवाला कमजोर हो जाता है । स्त्रीभोगी का वीर्य स्वाभाविक प्रकारसे निकलता है और उतना ही निकलता है, जितना कि निकलना चाहिये; किन्तु स्वप्नदोषीका वीर्य स्वभावके विरुद्ध गिरता और परिणाममें अधिक गिरता है । इसलिये स्वप्नदोष-वाला अति मैथुनवालेकी अपेक्षा अधिक बलहीन होता है । रातमें चार-पाँच बार मैथुन करनेवालेकी बनिस्बत दो बार स्वप्नदोष होने-वाला ज़ियादा कमजोर हो जाता है । स्त्रीभोगी भोगके अन्तमें आनन्द अनुभव करता है । और जरा भी कमजोर नहीं होता; किन्तु स्वप्नदोषी की हालत तो और ही हो जाती है । उसके सिरमें दर्द होता है, कामको दिल नहीं चाहता, और दस्त साफ़ नहीं होता वगैरः-वगैरः ।

याद रखो, जो लोग अति मैथुन, हस्तमैथुन या गुदामैथुन वगैरःसे



वीर्यनाश करते हैं, उन्हें यह स्वप्नदोष नामक घोर प्रमेह होता है और अन्तमें नपुंसकता इनाममें मिलती है ।

( ६ ) अमैथुन । जिस तरह अति मैथुनका परिणाम नपुंसकता है, उसी तरह अमैथुनका परिणाम भी नपुंसकता है । मतलब यह है कि, अत्यन्त मैथुनसे भी पुरुष नामर्द हो जाता है और कतई मैथुन न करनेसे भी नामर्द हो जाता है । लिङ्गमें उत्तेजना वीर्यसे होती है । वीर्य फोतोंमें खूनके पकनेसे होता है । फोतोंमें खून उस समय आता है, जब कि पुरुषका ध्यान लिङ्गकी तरफ होता है । जो पुरुष इस तरफ ध्यान नहीं देता-भोगसे नफरत करता है, उसके फोतोंमें वीर्य नहीं बनता । नतीजा यह होता कि यह नपुंसक हो जाता है । इस विषय पर, हमने इसी भागमें विस्तारसे लिखा है ।

हिकमतके एक ग्रन्थमें लिखा है कि, अगर विषयभोगकी बात सुननेसे, किसी सुन्दरीको देखने या छूने वगैरहः से अथवा और किसी बातसे यदि कामेच्छा तीव्र हो, अङ्गोंमें बेचैनी हो, तो समझो कि वीर्य बहुत क्षीनता है । अगर खास वजह न हो, तो लिङ्गके उत्तेजित होने पर मैथुन जरूर करो । जो लोग इस तरह उत्तेजना होने पर मैथुन नहीं करते, उनका वीर्य जहरीला हो जाता है ! बारम्बार ऐसा करने से—इच्छा होने पर भी भोग न करनेसे—बेहोशा, मृगी और अन्य प्राणनाशक रोग हो जाते हैं । प्रबल इच्छा होने पर मैथुन करनेसे शरीर फूल-सा हलका हो जाता है, दिल खुश हो जाता है, शान्ति और सुख की नींद आती है ।

( ७ ) भ्रम । आजकल बहुत लोग कोरे भ्रमसे भी नामर्द बने हुए हैं । भ्रमसे मिथ्या भी सत्य हो जाता है । रोग न रहने पर भी रोग हो जाता है । नपुंसकता न होनेपर भी नपुंसकता हो जाती है । देखनेमें आता है कि, वीर्य-रोगके प्रायः सभी रोगी भ्रमके फन्देमें फँसे रहते हैं । रोग न होने पर भी, अपने तई रोगी समझते हैं और रोगमुक्त हो जाने—आराम हो जाने पर भी, अपने तई रोगी समझते हैं ।



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५८१

आप उन्हें अच्छी-से-अच्छी दवा सेवन कराइये, पर वे कभी नहीं कहते कि हमें आराम है। वैद्य हज़ार विश्वास दिलावे, पर उन्हें संतोष नहीं होता। वे तो अपनी लम्बी—आदि-अन्तरहित कथा सुनाकर वैद्यकी नाकमें दम कर देते हैं। जब तंग आकर एक वैद्य फटकार देता है, तब दूसरेके पास जाते हैं, पर उन्हें सन्तोष लाभ कहीं नहीं होता। वृथा भटक-भटक कर मर जाते हैं। इसलिए अपना भला चाहनेवाले रोगियोंको, वृथाका भ्रम त्याग कर, अच्छे वैद्योंसे इलाज कराकर सुखी होना चाहिये।

स्त्री-भोगसे कुछ पहले जब कि जोरसे मैथुनेच्छा होती है या पुरुष मैथुनको तैयार ही होता है, तब वीर्यके से रज्जकी एक सफ़ेद और चपदार चीज लिङ्गके मुँहसे बाहर निकल आती है। वास्तवमें, यह वीर्य नहीं होता। यह लिङ्गकी जड़की ग्रन्थियोंका रस होता है। इसे “मजी” कहते हैं। जिन पुरुषोंके लिङ्गके चैतन्य होने पर यह “मजी” ❀ नहीं निकलती, वे अच्छी तरह भोग नहीं कर सकते। लेकिन बहमी रोगी या निरोग, वैद्यके समझाने पर भी, इसे वीर्य समझते हैं और इसके इलाजके लिए भटकते फिरते हैं। पर यह कोई रोग नहीं, जिसकी दवा की जावे।

❀ डाक्टरी किताबोंमें लिखा है, प्रोस्ट्रैट ग्लैण्ड या उपस्थ-मूल-ग्रन्थिकी मूत्राशय गर्दन है। जहाँसे मूत्रवाहिनी नली शुरू होती है वहीं पर यह होती है। इसमें १२ से २० तक बहुत छोटी नालियाँ होती हैं, जिनके छेद मूत्र-नलीमें रहते हैं। इस ग्रन्थीमें दूधके जैसा तरल रस रहता है। स्त्री-भोगके समय या जब और किसी तरहसे लिंगेन्द्रिय चैतन्य और तेज़ होती है, तब वह फूल जाती है। उसके फूलनेसे उस ग्रन्थी पर दबाव पड़ता है। दबावकी वजहसे, वीर्यसे पहले या पीछे वह रस निकलता है। उस रसके निकलनेसे पुरुषमें कुछ भी कमज़ोरी नहीं आती। उसके वीर्यसे पहले या मिलकर निकलनेसे वीर्य आसानीसे निकल आता है। उसकी राहमें कोई रुकावट नहीं होती; अर्थात् वह रस वीर्यकी राहको ठीक कर देता है। जितनी ही भोगेच्छा तीव्र होती है, उतना ही वह रस ज़ियादा निकलता है।



उपस्थकी जड़पर एक तरहकी ग्रन्थियाँ होती हैं, जिन्हें डाक्टर लोग प्रोस्टेक् ग्लैण्ड्स कहते हैं। उन्हीं ग्रन्थियोंके रसको “मजी” कहते हैं।

मूत्राशय या यूरेटरके मुँह पर भी कई ग्रन्थियाँ होती हैं। उनसे निकलनेवाले रसको “वही” कहते हैं। यह वही गाढ़ी, लसीली और चपदार तथा अण्डेकी सफेदी-जैसी होती है। यह भी रंगमें वीर्य-जैसी ही भलकती है और पेशाबके पहले या पीछे निकलती है। यह उस सूक्ष्म नलीको नर्म और तर रखती है, जिसमें होकर लिंगके मुख तक वीर्य आता और बाहर निकलता है। ईश्वरके काम बड़ी कारीगरीके हैं। अगर ये मजी और वही न होतीं, तो मैथुन करने और वीर्य निकलनेमें बड़ी मुश्किल होती। उसी तरह जब स्त्री-पुरुष मैथुन करते हैं, तब स्त्रीकी योनिमें एक चिकना पदार्थ निकल कर उसे चिकनी कर देता है। इस चिकनाईसे पुरुषको मैथुन करनेमें सुभीता होता है। अगर योनि सूखी रहती, तो पुरुष सुखसे मैथुन न कर सकता। बहुतसे गँवार इसे भी रोग समझते हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि, नासमझ लोग इस “मजी और वही” के पीछे पागल होकर वैद्योंको ठगाते फिरते हैं और बहुतसे अनजान वैद्य इसे वीर्य रोग समझकर इसका इलाज करते रहते हैं। जब आराम नहीं होता, तो इसकी चिन्ताके मारे बीमार न होने पर भी बीमार, कमजोर और चिड़चिड़े हो जाते हैं।

इसी तरह जब दस्त कब्जसे होता है, तब लोग मल निकालनेको किछते या जोर लगाते हैं। उसी समय एकाध बूँद वीर्य निकल आता है, पर जब कब्ज नहीं होता, तब वीर्यकी बूँदें नहीं निकलतीं। अगर यह हालत हो तो रोग नहीं समझना चाहिये। बहुतसे लोग महीनेमें एक दो बार कब्जकी हालतमें एक-दो बूँद वीर्य निकलता देखकर पागल हो जाते हैं; समझाये नहीं समझते। अन्तमें उनकी चिन्ता उन्हें इस रोगसे ग्रस्त कर ही देती है।



ऐसा कौन पुरुष है, जिसे महीनेमें एक-दो बार स्वप्नदोष न हो जावे। विद्वानोंका कहना है कि एकाध बार स्वप्नदोष होने से सिरदर्द और नेत्र-दोष वगैरः कई रोग चले जाते हैं और शरीर हल्का हो जाता है। पर बहमी लोग इस बातको न मानकर इसके लिए बुरी तरह चिन्तित हो जाते हैं। इस चिन्ताकी वजहसे फिर तो उन्हें यह रोग पूरी तरह हो ही जाता है।

मानसिक क्लृप्तता या मनकी नामर्दीके सम्बन्धमें हमने इसी भागमें विस्तारसे लिखा है। जो मनुष्य भ्रमको त्यागकर, मनको स्थिर और शान्त नहीं रखते, वे निरोग होने पर भी नामर्द हो जाते हैं।

( ८ ) कमर या गर्दन पर, पीछेकी तरफ चोट लगने या जख्म होनेसे, चूतड़ोंके बल गिरनेसे, और मस्तिष्कमें चोट लगनेसे अच्छा-भला पुरुष नामर्द हो जाता है। इसका भीतरी भेद समझना हो, तो चिकित्सा-चन्द्रोदय सातवें भागमें लिखा “स्नायु मण्डल या नर्वस सिस्टमका वर्णन” पढ़िये-समझिये।

( ९ ) शारीरिक दुर्बलता। अच्छा खाना न मिलने, जलवायुकी खराबी एवं शोक और दुःखकी अधिकतासे नया खून नहीं बनता। जब खून ही नहीं तब वीर्य कहाँसे आवे? मतलब यह है, कि खून की कमीसे पुरुष नामर्द हो जाता है।

( १० ) मुटापा। जब मनुष्यके शरीरमें मेद या चर्बी बढ़ जाती है, तब वह नामर्द हो जाता है। इस विषयपर हमने “चिकित्सा-चन्द्रोदय” पहले और सातवें भागमें लिखा है।

( ११ ) स्खलित न होना। मैथुनके समय, अगर कोई पुरुष भोग करता-करता स्खलित न हो, बिना स्खलित हुए अलग हो जाय, तो वह नामर्द हो जाता है। अगर कोई छोटी उम्रका छोकरा, फोतोंमें वीर्य पैदा हुए बिना मैथुन करता है, तो वह नामर्द हो जाता है।

( १२ ) शीघ्र-पतन। अगर कोई पुरुष औरतके पास बैठते ही, उसे छूते ही या भगप्रवेश करते ही एक क्षणमें स्खलित हो जावे, तो



समझना चाहिये कि उसे शीघ्रपतन का रोग है। अगर यह रोग दो साल तक बना रहे और इलाज न हो, तो वह पुरुष नामर्द हो जाता है।

नोट—अगर औरतका काम न जागा हो और पुरुषको उत्तेजना हो इस दशामें अगर पुरुष शीघ्र स्खलित हो जावे तो शीघ्रपतन रोग नहीं है। अगर अधिक आवेश की वजहसे पुरुष जल्दी खलास होजावे तो शीघ्रपतन रोग नहीं है। इसी तरह अगर कोई दृष्ट-पुष्ट पुरुष बहुत दिनों बाद अपनी स्त्रीसे मिले और जल्दी ही स्खलित होजावे तो भी रोग मत समझो।

जिन लोगों को जल्दी स्खलित होनेका रोग हो उन्हें अपनी पीठपर शीतल जलके तरङ्गे देने चाहिये, शीतल जलसे लिंगको सवेरे-शाम धोना चाहिये और शीतल पानीके तरङ्गे देने चाहियें। शरीरको साफ रखना चाहिये। जल्दी हजम होनेवाला भोजन करना चाहिए, पतले बिछौनेपर सोना चाहिए; क्योंकि गुदागुदा गरम बिछौना हानिकारक होता है। पक्के फर्शके, उजियाले-दार ठण्डे मकानमें रहना चाहिये। पेशाब करके सोना चाहिये। जिन कसरतोंसे ऊपरकी पेशियोंको मेहनत पड़े वैसे कसरतें करना चाहिए। जैसे गेंद उछालना, मल्लयुद्ध करना, लेज़म गोला हिलाना। शीशेका टुकड़ा गुर्दे पर बाँधना चाहिए। गरम मसाले, चाय, काफी—कहवा, नर्म बिछौने, दस्तकी कब्जीळ, सोनेसे पहले जल पीना, तमाखू पीना, अफीम खाना और चित्त या सीधे सोना इन सबसे परहेज़ करना चाहिये।

हमारी ऊपरकी हिदायतें शीघ्रपतन-रोगी और स्वप्नदोष-रोगी—सबके लिये मुफीद हैं।

( १३ ) कुछ अहित पदार्थ। अफीम, गाँजा, चरस और तमाखू वगैरः नशीले पदार्थोंके सेवनसे पुरुष नामर्द हो जाता है। इसी तरह कपूर, धनिया, सफेद चन्दन और कःहू आदि शीतल पदार्थोंके अत्यधिक या बहुत दिनों तक सेवन करनेसे पुरुष नामर्द हो जाता है। भोग करके लिङ्गको शीतल जलसे धोनेसे या लिङ्ग पर गीला कपड़ा

ऋदस्तका कब्ज बहुत बुरा रोग है। जिन लोगों को दस्त कब्जियत से होता है, वे मल निकालनेको जोर लगाते और काँखते हैं, इससे वीर्याशय पर जोर पड़ता है और जोर पड़नेसे वह ढीला हो जाता है। नतीजा यह होता है कि स्वप्नदोषके सिवा भी हर समय वीर्य निकलता रहता है।



रखनेसे अथवा पलंग पर गुलाबके फूल बिछाकर सोनेसे भी पुरुष नामर्द हो जाता है ।

( १४ ) वीर्यकी कमी । लिंगमें उत्तेजना वीर्यसे ही होती है । सभी भोगी जानते हैं, कि जब एक बार मैथुन करनेसे वीर्य निकल जाता है, तब उसी समय लिंगमें उत्तेजना नहीं आती । जब कुछ समयमें फिर वीर्य बन जाता है, तब लिंग-उत्थान होता है । मतलब यह है कि, जब वीर्यका बनना कम हो जाता है, तब कम उत्तेजना होती है और जब बनना बन्द ही हो जाता है, तब भोग-शक्ति एकदमसे जाती रहती है । फिर हजार उपाय करने पर भी लिंग उत्तेजित नहीं होता । जो लोग रात-दिन मैथुन करते हैं अथवा जो हस्त-मैथुन आदि कुकर्मों द्वारा वीर्यको नाश करते हैं, वे वीर्यकी कमी या वीर्यके न बननेसे नामर्द हो जाते हैं ।

( १५ ) दूषित वीर्य । जो लोग गरमी या सोजाकवाली अथवा रजस्वला आदि स्त्रियोंसे मैथुन करते हैं, उनका वीर्य दूषित हो जाता है, उन्हें प्रमेह आदि रोग हो जाते हैं । फिर वे धीरे-धीरे पूरे नपुंसक हो जाते हैं ।

## बाजीकरण ।

इस बाजीकरण-विषय पर, हम इसी भागके पृष्ठ १६८ में लिख आये हैं, पर इतनेसे हमारे कितने ही प्रेमी पाठकोंकी तृप्ति नहीं हुई और कितने ही सज्जनोंने अनेक प्रश्न किये हैं; अतः हम इस विषयको यहाँ फिर लिखते हैं । आशा है, इससे पाठकोंको पूर्ण सन्तोष होगा ।



## वाजीकरण शब्दका अर्थ ।

“वाजी” शब्दका अर्थ घोड़ा है । घोड़ेमें मैथुन करनेकी बड़ी भारी शक्ति होती है । जिस क्रिया या चिकित्सा अथवा तरकीबसे मनुष्य घोड़ेके समान मैथुन करनेवाला हो जावे, उसे “वाजीकरण” कहते हैं ।

“वाजी” शब्दका अर्थ “वेग” भी है । जिसमें शुक्र या वीर्यका वेग हो, उसे “वाजी” कहते हैं । अथवा जिसका वीर्य पुष्ट और अधिक हो, उसे “वाजी” कहते हैं । इसके विपरीत, जिसमें शुक्र या वीर्यका वेग न हो, जिसमें वीर्यकी अधिकता न हो, और जिसका वीर्य पुष्ट भी न हो, उसे “अवाजी” कहते हैं । “अवाजी” जिस क्रिया से “वाजी” हो जावे, उसे “वाजीकरण” कहते हैं । मतलब यह है कि, वाजीकरण-क्रियासे पुरुषमें वीर्यकी अधिकता हो जाती है और उसका वीर्य पुष्ट हो जाता है, इसलिए वह वाजी या घोड़ेकी तरह मैथुन कर सकता है ।

“सुश्रुतसंहिता” के चिकित्सा स्थानके २६वें अध्यायमें लिखा है:—

सेवमानो यदौचित्याद्वाजीवात्यर्थं वेगवान् ।

नारीस्तरप्यते तेन वाजीकरणमुच्यते ॥

जिस चीजके उचित रूपसे सेवन करनेसे, मनुष्य घोड़ेकी तरह अत्यन्त वेग और पराक्रमवाला होकर, मैथुनसे स्त्रियोंको सन्तुष्ट कर सके, उस चीजको “वाजीकरण” कहते हैं ।

खुलासा यह है कि, जिस आहार-विहारसे पुरुषमें घोड़ेके समान मैथुन करनेकी क्षमता हो जावे, उसे “वाजीकरण” कहते हैं ।

जिसमें एकदमसे वीर्य नहीं है, जो स्त्रियोंसे मैथुन नहीं कर सकता, जो नपुंसक या नामर्द है, उसे जिस तरकीबसे वीर्यवान् और मैथुन करनेमें पूर्ण सामर्थ्यवान् बना सकते हैं, उसे “वाजीकरण” कहते हैं ।



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । १८७

## वाजीकरण पदार्थ ।

“सुश्रुत”में लिखा है :—

भोजनानि विचित्राणि पानानि विविधानि च ।

वाचः श्रोत्रानुगामित्यस्त्वचः स्पर्शसुखास्तथा ॥

यामिनी सेंदुतिलका कामिनी नवयौवना ।

गीतं श्रोत्रमनोहारि ताम्बूलं मदिराः स्त्रजः ।

मनश्चाप्रतीघातो वाजी कुर्वन्ति मानवम् ॥

नाना प्रकारके खाने और पीनेके पदार्थ, कानोंको प्यारी लगने वाली बातें, छूनेमें आनन्ददायी शरीरका नर्म चमड़ा, चन्द्रमाकी चाँदनी रात, नवयौवना कामिनी, सुननेमें मनोहर गीत, पान, शराब, फूलोंकी माला और मनका उत्साह—ये सब सामान मनुष्यके लिये “वाजीकरण” हैं ।

स्त्री ही सर्वोत्तम वाजीकरण है ।

“चरक”के चिकित्सा स्थानमें लिखा है :—

सुरुपा यौवनस्था लक्षणैर्या विभूषिता ।

या वश्या शिञ्जिता याच सा स्त्री वृष्यतमामता ॥

रूप-लावण्यवती, युवती, उत्तम लक्षणोंवाली, वशीभूता और शिञ्जिता—पढ़ी-लिखी स्त्री ही सबसे उत्तम वाजीकरण है ।

“चरक”में ही और भी कहा है :—वाजीकरणमग्रयञ्च क्षेत्रं स्त्री या प्रहर्षिणी, अर्थात् जिसके देखनेसे सारी इन्द्रियाँ प्रसन्न हो उठें, वही स्त्री सबसे उत्तम वाजीकरण है । रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द—ये पाँच इन्द्रियोंके अर्थ हैं । ये सभी एक स्त्रीमें मौजूद हैं, अतः स्त्री इन सबसे अधिक प्रीतिकारी है । स्त्रीके सिवा और किसी भी पदार्थमें ये पाँचों इन्द्रियार्थ एकत्र नहीं होते । स्त्रीमें ही प्रीति है, स्त्रीमें ही सन्तान है, स्त्रीमें ही धर्म और अर्थ हैं तथा स्त्रीमें ही लक्ष्मी है ।



बहुत लिखनेसे क्या—स्त्रीमें ही संसारका सच्चा सुख है। इसी-  
लिये किसीने स्त्री-सुखको परमानन्दका सहोदर भाई माना है।  
कहा है:—

संसारे तु धरासारं धरायां नगरं मतम् ।  
आगारं नगरे तत्र सारं सारङ्गलोचना ॥  
सारङ्गलोचनायाश्च सुरतं सारमुच्यते ।  
नातः परतरं सारं विद्यते सुखदं नृणाम् ॥  
सारभूतन्तु सर्वेषां परमानन्द सोदरम् ।  
सुरतं ये न सेवन्ते तेषां जन्मैव निष्फलम् ॥

संसारमें पृथ्वी सार है। पृथ्वीपर नगर सार है। नगरमें  
महल सार है और महलमें मृगलोचनी कामिनी सार है। मृगनयनी  
कामिनीमें “सुरत” सार है। पुरुषोंके लिये “सुरत”से बढ़कर और  
सुख नहीं है। सारे ही सार पदार्थोंमें परमानन्दका सहोदर भाई  
“सुरत” सार है। उस “सुरत”को जो पुरुष सेवन नहीं करते,  
उनका जन्म वृथा है।

स्त्रीसे ही पुरुषके सन्तान होती है। बिना सन्तानवाला पुरुष  
छायाहीन, एक शाखावाले, निष्फल और बदबूदार वृक्षके समान है।  
सन्तानहीन पुरुष तस्वीरके दीपक, सूखे तालाब या मुलम्मेके जैसा  
है। सन्तानहीन पुरुष—पुरुष कीसी आकृति होने पर भी—तिनकोंसे  
बने हुए पुतलेके समान है। बहुसन्तान पुरुषको बहुमूर्ति, बहुमुख,  
बहुव्यूह, बहुक्रिय, बहुनेत्र, बहुज्ञान और ब्रह्मात्मा कहते हैं। प्रीति,  
बल, सुख, वृत्ति, विस्तार, विभव, कुल, यश, लोक, समूह, सुखानुबन्धु,  
और तुष्टि ये सब सन्तानके आश्रित हैं। जिन्हें इन सब सुखोंकी  
दरकार हो, जिन्हें संसारके सभी सुखोंका सार “सुरत-सुख” भोगना  
हो, उन्हें वाजीकरण-परायण होना चाहिये। यानी वाजीकरण पदार्थ  
सेवन करने चाहियें।



## दो तरहकी वाजीकरण-चिकित्सा ।

सभी तरहकी चिकित्सायें दो तरहसे की जाती हैं :—( १ ) आहार द्वारा और ( २ ) विहार द्वारा । वाजीकरणमें भी आहार और विहार दोनोंसे ही काम लिया जाता है । खाने-पीनेकी चीजें आहार कहलाती हैं, इनके सिवा और सब विहार कहलाती हैं । 'चरक'से ही हम आहार रूप वाजीकरणकी एक मिसाल देते हैं :—

माषयूषेण यो भुक्त्वा घृताद्यं षष्ठिकौदनम् ।

पयः पिबति रात्रिं सकृत्स्नां जागर्ति वेगवान् ॥

जो पुरुष धुली हुई उड़दकी दालके साथ साँठी चाँवल या पुराने चाँवलोंका भात "घी" मिलाकर खाता है और ऊपरसे "दूध" पीता है, उसकी लिंगेन्द्रियमें इतना बल आ जाता है, कि मारे वेगके रात भर उसे नींद नहीं आती । और भी :—

तृप्तिश्चटक मांसानां गत्वा योऽनुपिवेत्पयः ।

न तस्य लिंग शैथिल्यं स्यान्न शुक्र क्षयोनिशि ॥

जो पुरुष पेट भर कर चिड़ेका मांस खाता और ऊपरसे दूध पीता है, उसके लिङ्गमें जरा भी ढीलापन नहीं आता अथवा सारी रात वीर्य स्वलित नहीं होता ।

ये दोनों आहार रूपी वाजीकरणकी मिसालें हैं ।

चित्र-विचित्र वस्त्र पहनना, इत्र-फुल्ले लगाना, कस्तूरी चन्दनादिका लेप करना, दूधके समान सफेद पलंग पर सोना, मनोमोहनी नारीके हाथों से पैर दबवाना, सुन्दरियोंसे दिल्लगी-हँसी करना एवं तोता-मैना आदि पक्षियोंकी बोली सुनना वगैरः विहार-रूप वाजीकरण हैं ।

वाजीकरणका फल तत्काल होता है । मनुष्य जो कुछ खाता-पीता है उसका 'रस' तो एक ही दिनमें बन जाता है, पर रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये धातुएँ पाँच-पाँच दिनमें बनती हैं । इस तरह पुरुषका वीर्य और स्त्रीका रज प्रायः एक महीनेमें बनते हैं ।



लेकिन वाजीकरण पदार्थ खानेसे उसी दिन वीर्य बन जाता है—एक महीना नहीं लगता । कहा है—

वृष्यादीनि प्रभावेण सद्यः शुक्रादि कुर्वते ।

अर्थात् वाजीकरण पदार्थ खानेसे तत्काल वीर्यादि धातुएँ बन जाती हैं ।

**वाजीकरण किन-किनको हितकारी है ?**

“सुश्रुत” में लिखा है :—

स्थविराणां रिसूनां स्त्रीणां वाल्लभ्यमिच्छताम् ।

योषित्प्रसंगात्स्त्रीणानां क्लीवानामल्परेतसाम् ॥

विलासिनामथंवतां रूप-यौवन-शालिनाम् ।

नृणां च बहुभार्याणां योगा वाजीकरा हितः ॥

जिनकी जवानी ढल गई है—जिन्होंने चालीसके बाहर कदम रख दिया है—यानी चालीसकी अवस्थाको पार कर गये हैं, जो स्त्रीभोगकी अधिक इच्छा रखते हैं, जो स्त्रियोंके प्यारे होना चाहते हैं, जो स्त्रियोंके संगसे क्षीण हो गये हैं, जिनमें स्त्री-भोगके कारण कमजोरी आ गई है, जो नामर्द हो गये हैं, जिनमें स्त्री भोगनेकी सामर्थ्य नहीं रही है, जिनकी लिंगेन्द्रियमें चैतन्यता नहीं होती, जिनका वीर्य कम हो गया है, जिनको ध्वजभङ्ग होग हो गया है, जो भोगी और विलासी हैं, साथ ही धनवान्, रूपवान् और जवान हैं तथा जिनके घरमें बहुत सी स्त्रियाँ हैं—उनको वाजीकरण योग हितकारी हैं ।

**वाजीकरण-सेवन किनके लिए अनुचित है ?**

लिख आये हैं कि, वाजीकरण पदार्थोंसे तत्काल वीर्य पैदा होता है और वह वीर्य गर्भाधान के ही उपयुक्त होता है । वह शरीरमें ऐसा जोश पैदा करता है, कि पुरुष बिना मैथुन किये रह ही नहीं सकता; क्योंकि वह वीर्य शरीरमें रुक ही नहीं सकता । “सुश्रुत”के सूत्र स्थान में कहा है :—



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६१

**वाजीकरणयस्त्वोषधयः स्वबलगुणोत्कर्षाच्छुक्र शीघ्रं विरचयन्ति ।**

वाजीकरण औषधियाँ अपने बल, गुण और उत्कर्षसे शरीरमें वीर्य पैदा करके, उसे शीघ्र ही बाहर निकाल देती हैं। वीर्य निकलने के लिए ही मैथुन की इच्छा होती है। जैसे—स्त्री को चूमने और आलिंगन करनेसे वीर्य निकलना चाहता है, तब पुरुष मैथुन करना चाहता है। मैथुन करनेसे वीर्य निकल जाता है; यानी स्त्री वगैरः अपने बल या प्रभावसे वीर्य को बढ़ातीं और निकाल देती हैं। इसी तरह दूध-घी वगैरः खानेसे वीर्य पैदा होता है और निकलना चाहता है, इसीलिए पुरुष को मैथुनेच्छा होती है। यह दूध और घी का गुण है। कौंचके बीज और उर्द की दाल वगैरः अपने प्रभाव और गुणोंसे वीर्य पैदा करते और फिर उसे निकलने पर उद्यत करते हैं, यानी मैथुनेच्छा पैदा करते हैं।

चूँकि वाजीकरण पदार्थोंसे तत्काल वीर्य बनता और मैथुन द्वारा निकल जाना चाहता है, इसलिए वाजीकरण औषधियाँ उसे ही सेवन करनी चाहिये, जो शास्त्रनियमानुसार मैथुन कर सकता है, जिसे मैथुन करनेसे हानि नहीं है अथवा जिसके घरमें स्त्री है।

वाजीकरण पदार्थोंका सेवन जवान आदमीके लिए ही विशेष रूपसे उपकारी है। बालक और बूढ़ेको इसका सेवन करना उचित नहीं; क्योंकि बालक और बूढ़ेको मैथुनकी मनाही है। बालककी धातुएँ बढ़ती रहती हैं। उनके बढ़नेके समयमें उन्हें छेड़ना, उनकी बढ़तीको रोकना है। जो बालक वाजीकरण सेवन करके स्त्री-प्रसङ्ग करता है, उसका शरीर और वीर्य आगे बढ़ने नहीं पाते। जिस तरह थोड़े पानीवाला तालाब ज़ियादा पानी निकालनेसे पहले ही सूख जाता है, उसी तरह बालक काफ़ी वीर्य पैदा हुए बिना खर्च करनेसे यानी मैथुन करनेसे नष्ट हो जाता है। जो लोग लड़कपनेमें शादी करके छोटे-छोटे बालकोंको बहुओंके पास सुला देते हैं, उनके बालक कच्चे वीर्य को, समयसे पहले ही, नष्ट करनेसे सदा रोगी रहते हैं; अथवा



छोटी उम्रमें ही मर जाते हैं । अब्बल तो उनके द्वारा गर्भ नहीं रहता । अगर रह भी जाता है, तो जो सन्तान पैदा होती है वह मर जाती है या सदा रोगी रहती है ।

जिस तरह बालककी धातुएँ बढ़ती रहती हैं, उसी तरह बूढ़ेकी धातुएँ प्रायः कम होती रहती हैं । इस अवस्थामें जो बूढ़ा स्त्री-प्रसंग करता है, वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है । इसी वजहसे बूढ़ेको भी स्त्रीप्रसंग नहीं करना चाहिए । और जब उसे स्त्रीप्रसंग न करना चाहिये, तब वाजीकरण भी सेवन न करना चाहिये ।

नरो वाजीकरण्योगान् सभ्यक्छुद्रो निरामयः ।

सप्तत्यन्तं प्रकुवर्ति वर्षादुर्ध्वं तु षोडशात् ॥

न चैव षोडशाध्वक् सप्तत्या परतो न च ।

आयुष्कामी नरःस्त्रीभि संयोगं कर्तुमर्हति ॥

क्षयवृद्धयुपदंशाद्या रोगश्चातीव दुर्जयाः ।

अकालमरणं च स्याद्भजतः स्त्रियमन्यथा ॥

पुरुषको अच्छी तरहसे वमन-विरेचन आदिसे शुद्ध होकर सोलह वर्ष की उम्रसे ऊपर और सत्तर वर्ष की उम्रसे पहले यानी सत्तर वर्ष की अवस्था तक वाजीकरण सेवन करना चाहिये; क्योंकि आयुकी कामनावाले—जियादा जीने की इच्छावाले पुरुषको सोलह सालसे कम उम्रमें और सत्तर सालसे ऊपर की उम्रमें स्त्रीप्रसंग न करना चाहिये । जो इस नियमपर नहीं चलते उनको क्षय, उपदंश, अण्डवृद्धि और प्रमेह आदुर्जय रोग हो जाते हैं और वे अकालमृत्युसे मरते हैं ।

जिसके घरमें स्त्री नहीं है, उसे वाजीकरणसे बचना चाहिये, क्योंकि वाजीकरण पदार्थोंसे पैदा हुआ वीर्य रुकेगा नहीं । उसके निकालनेको स्त्रीकी जरूरत होगी । स्त्री न होनेसे, पुरुष या तो हस्त-मैथुन—गुदामैथुन आदि द्वारा वीर्य निकलेगा अथवा बाजारू औरतों के पास जाकर वीर्य निकालेगा । इन सभीका नतीजा खराब होगा । अगर वह इन कामोंमें से कोई भी काम न करेगा, वीर्यको जबर्दस्ती



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६३

रोकेगा, तो भी उसे अनेक रोग हो जावेंगे; इसलिए जिसके घरमें नारी हो, वही वाजीकरण सेवन करे ।

जिसका मन वशमें नहीं है, जो अपनी इन्द्रियको क़ाबूमें नहीं रख सकता, उसे भी वाजीकरण सेवन न करना चाहिये । जो इन्द्रिया-सक्त पुरुष वाजीकरण सेवन करता है, वह स्त्रीके न होने या समय पर न मिलनेसे अनेक तरहके नियम-विरुद्ध कर्म करके अपने तई नाश कर लेता है ।

साधु-महात्मा या ब्रह्मचारी पुरुषोंको भी वाजीकरण सेवन करना उचित नहीं, क्योंकि वे स्त्री-भोग तो कर नहीं सकते । अगर वे वाजीकरण सेवन करेंगे, तो शरीरमें वीर्य पैदा होगा ही और वह निकलना भी चाहेगा ही । उसके निकलनेके लिए स्त्रीकी जरूरत होगी । स्त्री न होनेसे वे भले घरोंकी स्त्रियोंको अपने फन्देमें फँसा कर उनका सतीत्व भंग करेंगे और आप भी अपना व्रत भंग करके पापके भागी होंगे । जो साधु-महात्मा रबड़ी, मलाई, मावा आदि पुष्टिकर भोजन करते हैं, वे ही अन्तमें व्यभिचारी बनते हैं । वाजीकरण पदार्थ खानेवालोंको स्त्री बिना सर नहीं सकता; क्योंकि तैयार हुआ वीर्य शरीरमें रुक नहीं सकता । बकौल “सुश्रुत”के वाजीकरण औषधियाँ शरीरमें वीर्य पैदा करके, उसे गर्भाधानके लिए फौरन ही बाहर निकाल देती हैं ।

नतीजा यह निकला कि, उन पुरुषोंको ही वाजीकरण आहार-विहार सेवन करने चाहियें, जिनकी इन्द्रियाँ उनके वशमें हैं, जिनके घरोंमें स्त्रियाँ हैं और जिन्हें स्त्री-सेवनकी मुमानियत नहीं है तथा जो सब तरहसे निरोग हैं ।

विलासिनामर्थवतां रूप-यौवन-शालिनाम् ।

नराणां बहुभार्याणां विधिर्वाजीकरो हितः ॥

स्थविराणां रिरंसूनां स्त्रीणां वान्लभ्यमिच्छताम् ।

योषित्प्रसंगात् क्षीणानां क्लीवानामल्परेतसाम् ॥



हिता वाजीकरा योगा प्रीत्यपत्यबलप्रदाः ।

एतेऽपि पुष्टि देहानां सेव्याः कालायपेक्षया ॥

भोगियोंके लिए, धनवानोंके लिए, रूपवान और यौवनवालोंके लिए, उन बूढ़ोंके लिए जो स्त्री-भोगकी इच्छा रखते हैं, उनके लिए जो स्त्रियोंके प्यारे होना चाहते हैं, उनके लिए जो स्त्रियोंको भोगनेसे कमजोर हो गये हैं, उनके लिये जो नामर्द और कम वीर्यवाले हैं—वाजीकरण योग ( नुसखे ) फायदेमन्द हैं । इनसे औरतें प्यार करती हैं, बल बढ़ता और औलाद होती है । इनके सिवा जो हृष्ट-पुष्ट और तन्दु-रुस्त हैं उनको भी, अपने वीर्यकी रक्षा और उसके बढ़ानेके लिए, समयका विचार करके, वाजीकरण सेवन करना चाहिये ।

**निरोगको वाजीकरणकी क्या जरूरत ?**

जिस तरह निर्दोष और पुष्ट वीर्यवालेको स्तम्भनकारक औषधिसे लाभ होता और आनन्द आता है—उसी तरह स्वस्थ या निरोग पुरुषको वाजीकरण औषधियोंसे लाभ होता है । जिस तरह दूषित और निर्बल वीर्यवालेको स्तम्भन-औषधि उल्टा नुकसान करती है, उसी तरह किसी भी बीमारीवालेको वाजीकरण औषधिसे लाभके बजाय हानि ही होती है । “दूध” सबसे बढ़कर वाजीकरण है, पर इसे “प्रमेह”का कारण माना है; यानी दूध वाजीकरण है, पर प्रमेह रोग पैदा करता है । अगर दूषित वीर्यवाला वाजीकरण औषधि सेवन करता है, तो वाजीकरणसे पैदा हुआ शुद्ध वीर्य भी, पहलेके दूषित वीर्यमें मिलकर, दूषित हो जाता है । इस तरह वाजीकरण सेवनसे कोई लाभ नहीं होता, उल्टी हानि होती है । बहुतसे नातजुर्बेकार वैद्य प्रमेह में—खास कर शुक्र प्रमेहमें—वाजीकरण औषधियाँ सेवन कराकर उसे बढ़ा देते हैं । इसलिए, अगर रोगीको प्रमेह या ज्वरादिक रोग हों, तो पहले उन्हें दूर करके, तब वाजीकरण औषधि सेवन करानी चाहिये । किसी भी रोगकी हालतमें वाजीकरण देना खाना



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६५

हितकारक नहीं । वाजीकरण निरोग शरीरमें वीर्य बढ़ानेवाला और मैथुनशक्तिको प्रबल करनेवाला है ।

## वाजीकरण सेवन करनेसे पहले पेट साफ करना आवश्यक है ।

वाजीकरण औषधि शरीर और पेट साफ करके ही सेवन करनी चाहिए । अशुद्ध शरीरमें वाजीकरण औषधि अपना पूरा चमत्कार दिखा नहीं सकती । जिस तरह मैले कपड़े पर उमदा रंग नहीं आता; उसी तरह अशुद्ध या मैले शरीरमें वाजीकरण औषधि अपना गुण पूर्ण रूपसे दिखा नहीं सकती, इसलिए जब वाजीकरण औषधि सेवन करनी हो, पहले दस्तावर दवा खाकर पेट साफ करलो । “चरक” के चिकित्सा-स्थानमें कहा है:—

स्रोतः सुशुद्धेष्वमले शरीरे वृष्यं यदाद्यं हितमत्तिकाले ।

वृषायतेतेन परं मनुष्यः तद्ब्रंहणञ्चैव बलप्रदञ्च ॥

तस्मात्पुरा शोधनमेव कार्यं बलानुरूपं नहि सिद्ध योगाः ।

सिद्ध्यन्ति देहे मलिने प्रयुक्ताः म्लिष्टे यथा वाससि रोग योगाः ॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिख आये हैं । “सुश्रुत”में भी लिखा है:—

एते वाजीकरा योगाः प्रीत्यपत्यबलप्रदाः ।

सेव्या विशुद्धोपचित देहैः कालाद्यपेक्षया ॥

ऊपर लिखे हुए वाजीकरण योग—नुसखे हर्ष, सन्तान और बल देनेवाले हैं । इनको जुलाब वगैरःसे शुद्ध और निरोग शरीरवालोंको, समयका विचार करके, सेवन करना चाहिये । मतलब यह कि वाजीकरण नुसखे उन्हें फायदा नहीं करते, जिन्होंने जुलाब वगैरःसे शरीर के छेद साफ नहीं किये हैं, जिनके शरीरमें जीर्णज्वर आदिक और रोग हैं तथा जो शोककाल और गरमी प्रभृतिका विचार किये बिना इनको सेवन करते हैं ।



## वाजीकरण सेवनमें पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

तेलकी मालिश, उबटन लगाना, स्नान करना, खुशबूदार फूलोंकी माला, उत्तमोत्तम गहने, दूधके समान सुन्दर पलंग, साफ-सफेद कपड़े, सुन्दर-सुन्दर चिड़ियोंका चहचहाना—पायजोब, भाँभन, कड़े और छड़े आदि गहनोंकी झनकार, सुन्दरी और ध्यारी स्त्रियोंसे पैर दबवाना,— इन पदार्थोंसे नामर्दी जाती रहती है—फौरन प्रसंगेच्छा होने लगती है; अतः वाजीकरण सेवीको ये सब पदार्थ पथ्य हैं ।

खाने-पीनेके पदार्थोंमें गेहूँ, जौ, उड़द, अरहर, आलू ( छिले हुए ), गोभी, घुँइयाँ ( अरबी ), भिण्डी, केला, धीया ( लौकी ), जमी-कन्द, चौलाई, दही, दूध, मावा ( खोआ ), मिश्री और चीनी वगैरः पदार्थ पथ्य हैं ।

अपथ्य ।

जियादा लालमिर्च और खटाई खाना, तेलमें पके पदार्थ खाना, अत्यन्त व्रत-उपवास करना, बहुत जियादा मिहनत करना, बहुत बैठना, अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करना, एकदम स्त्रीसे अलग रहना, डरना, फिक्र या चिन्ता करना, रोग हो जाना, दिनमें सोना, अविश्वास करना, शोक या रंज करना, स्त्रीमें व्यभिचार आदि दोषका पाया जाना और बुढ़ापा वगैरः अपथ्य हैं । कोई कैसी ही उत्तम वाजीकरण औषधि सेवन करे और इन अपथ्योंमें से कोई एक या अधिक सेवन करे, तो उसे कुछ भी लाभ न होगा; अगर होगा तो बहुत थोड़ा, अतः वाजीकरण सेवन करनेवालेको भी पथ्य सेवन करना और अपथ्यसे बचना जरूरी है । शोकसे तो क़तई बचना चाहिये, क्योंकि बुढ़ापा जल्दी लानेमें यह सर्वोपरि है । कहा हैः—

पन्थाः शीतं कदन्नं च वयोवृद्धाश्च योषितः ।

ममसः प्रातिकल्यं जरायाः पंच हेतवः ॥



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६७

बहुत राह चलना, अत्यन्त सर्दी सहना, सड़ा-बुसा भोजन खाना, सूदी स्त्रीसे भोग करना और मनमें सदा दुःख या रंज रहना—ये पाँच बुढ़ापा लानेमें डाकगाड़ीके समान हैं ।

इन पाँचोंसे ही नहीं, एक-एकसे ही बुढ़ापा खूब जल्दी आता है । पहले चार कारणोंसे तो हमारा जन्म-भर काम नहीं पड़ा—पर पिछले शोकने तो हमें सारी उम्र सताया—अथवा अपनी बेवकूफीसे हमने शोकको अपना साथी बनाया । नतीजा यह हुआ कि, चालीस सालकी उम्रमें ही हमें बुढ़ापेने घेर लिया । जो संसारमें सुखसे जीना चाहते हैं, लम्बी उम्र चाहते हैं और स्त्री भोगना चाहते हैं, उन्हें किसी दशामें भी शोक न करना चाहिये ।

## वाजीकरणकी क्या जरूरत है ?

जब तक शरीर निरोग न हो, शरीरमें खूब वीर्य न हो, मैथुनकी शक्ति न हो, तब तक स्तम्भन वगैरहकी दवाएँ खाकर भोग करना बृथा है । इनसे कोई भी लाभ नहीं होता । इसलिए सबसे पहला काम वीर्य-भण्डार बढ़ाना, शरीर और वीर्यको पुष्ट करना है । कहा है—  
“न हीनवीर्यस्य कदापि सौख्यम् ।” अर्थात् वीर्यहीनको कभी सुख नहीं मिलता—मैथुनमें आनन्द नहीं आता । “अनङ्ग-रंग”में कहा है ।

शक्तेरभावात् स्तम्भादि सर्वमेवाप्रयोजकम् ।

अतः शरीर पुष्ट्यर्थं वाजीकरणमुच्यते ॥

शक्ति न होनेसे स्तम्भन या रुकावटकी सभी चीजें बेकार हैं, इसलिए शरीरको पुष्ट करनेके लिए वाजीकरण कहते हैं ।



## स्वप्नदोष ।

रातमें या दिनमें, गहरी नींदमें सोते हुए, बिना किसी तरहकी कामेच्छाके, वीर्य निकलना एक रोग समझा जाता है। चूँकि यह रोग निद्रावस्था—स्वप्नावस्थामें होता है, इसलिए इसे “स्वप्नदोष” कहते हैं।

खुलासा यह है कि, बहुतसे लोग गहरी नींदमें सोते हुए, सुपनेमें किसी रूपवती रमणीको देखते हैं, देखते ही आलिंगन आदि करते हैं और स्खलित हो जाते हैं। कितने ही स्वप्नमें कुछ भी नहीं देखते और स्खलित हो जाते हैं। स्खलित होते ही आँख खुल जाती हैं और धोती तर पाती है। किसी तरह भी, नींदमें, बिना कामेच्छाके, वीर्य निकलना, “स्वप्नदोष” कहलाता है।

महीनेमें एक-दो बार स्वप्नदोष होना रोग नहीं समझा जाता। अगर महीनेमें ५७ बार या द्वादशदिन स्वप्नदोष हो, तो वह निश्चय ही रोग है। मतलब यह है कि, किसी दृष्टपुष्ट बलिष्ठ पुरुषको महीनेमें दो एक बार स्वप्नदोष होनेसे कोई हानि नहीं होती। अगर यह हालत दिन-रातमें कई बार या हर रातको होती है, तो ताकतवर भी कमजोर हो जाता है। हर दिन वीर्यका नाश होनेसे पुरुषके शरीर की रेढ़ हो जाती है और शीघ्र ही अच्छा इलाज न होनेसे जिस तरह प्रमेह “मधुमेह”में परिणत हो जाता है, यह रोग भी “मधुमेह”में परिणत हो जाता है।

स्वप्नदोषको “स्वप्नप्रमेह” भी कहते हैं। जो भेद प्रमेह और सोझाकमें है, वह भेद प्रमेह और स्वप्नदोषमें नहीं है। यों तो ये तीनों ही



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ५६६

पेशाबकी नलीके रोग हैं, पर “प्रमेह” सोझाककी तरह एकमात्र पेशाब की नलीसे ही सम्बन्ध नहीं रखता, बल्कि सारे शरीरसे सम्बन्ध रखता है। प्रमेह होनेसे शरीरकी धातुएँ दूषित होकर, मूत्रनली द्वारा मूत्रके साथ निकलती हैं, इससे मनुष्यकी जिन्दगी खतरमें पड़ जाती है। जिस तरह प्रमेह सारे शरीरसे सम्बन्ध रखता है; उसी तरह स्वप्नदोष भी सारे शरीरके शुक्रसे सम्बन्ध रखता है। जिस तरह प्रमेह अत्यन्त मैथुन, हस्तमैथुन और गुदामैथुन आदिसे पैदा होता है; उसी तरह स्वप्नदोष रोग भी अत्यन्त मैथुन और अप्राकृतिक मैथुन आदि कारणोंसे होता है। इसलिये स्वप्नदोषको स्वप्नप्रमेह कह सकते हैं।

## वीर्यका नाश होना—प्रमेह है ।

आजकलके प्रमेह-रोगियोंमें शुक्रप्रमेही जियादा पाये जाते हैं। शुक्रप्रमेहकी गणना कफज प्रमेहोंमें है। जिसका पेशाब वीर्य-जैसा होता है अथवा जिसके पेशाबमें वीर्य मिला रहता है, उसे “शुक्रप्रमेही” कहते हैं। मतलब यह कि शुक्रप्रमेही रोगी शुक्रके जैसा या शुक्र-मिला पेशाब करता है—पेशाबमें मिलकर वीर्य शरीरसे बाहर जाता है। स्वप्नदोषमें, केवल वीर्य पेशाबकी राहसे जाता है। इस हिसाबसे दोनों भाई-भाई हैं। स्वप्नदोष या स्वप्नप्रमेह बड़ा भाई और शुक्र-प्रमेह छोटा भाई है, क्योंकि स्वप्नदोष या स्वप्नप्रमेहमें पेशाबकी नली द्वारा एक मात्र वीर्य ही जाता है, किन्तु शुक्रमेहमें वीर्य पेशाबमें मिलकर जाता है।

शुक्रप्रमेह और स्वप्नप्रमेहकी तरह ही वीर्यका नाश करनेवाला एक और रोग है, उसे “मूत्रशुक्र” कहते हैं। इसकी गणना “मूत्राघात” रोग में है। जो पुरुष पेशाबकी हाज़त मारकर, पेशाबकी हाज़त होने पर भी, बिना पेशाब किये, स्त्रीप्रसंग करता, उसे “मूत्रशुक्र” रोग हो जाता है। इस रोगके होनेसे, पेशाबसे पहले या पीछे, वीर्य राख-मिले



पानीके समान पेशाबकी नलीसे निकलता है। चूँकि इस रोगके होनेसे भी वीर्य बिना स्त्री-प्रसंगके चाहे जब नाश होता रहता है, इसलिये कह सकते हैं कि, शुक्रप्रमेह, स्वप्नदोष और मूत्रशुक्र तीनों ही वीर्यनाशक रोग हैं। इनका फ़र्क समझानेके लिये ही हमने तीनोंकी तशरीह कर दी है।

मूत्रके साथ, स्वप्नावस्थामें अथवा और किसी तरह भी—सिवाय स्त्री-सहवासके—वीर्यका नाश होना “प्रमेह” है। डाक्टर लोग भी वीर्यके नाश होनेके रोगोंको आमतौर से “स्परमेटोरिया” (Spermatorrhoea) कहते हैं। इस अँगरेजी शब्दका अर्थ ही वीर्यका बहना है। पेशाबके साथ वीर्य जानेके रोगको वैद्य लोग “शुक्रमेह” कहते हैं। उसी को एलोपैथिक डाक्टर “डायरनैल पोल्यूशन” और हिक्मतवाले “सैलान मनी” कहते हैं। यूनानीमें शुक्रमेहको “जिरियान” भी कहते हैं। स्वप्नदोष या स्वप्नप्रमेहको डाक्टर लोग “नाइट डिसचार्ज” (Night discharge), “नाइट पोल्यूशन” (Night pollution) अथवा “इन्वालन्टरी सेमिनल डिसचार्ज” (Involuntary seminal discharge) कहते हैं और यूनानी हकीम इसे “एहतलाम” कहते हैं।

सारांश यह कि, हमारा स्वप्नदोष—नाइट डिसचार्ज या एहतलाम एक तरहका प्रमेह अवश्य है, क्योंकि इसमें बिना स्त्री-प्रसंगके वीर्यका नाश होता है; पर यह शुक्रमेह नहीं है; क्योंकि शुक्रमेह वालेका वीर्य पेशाबमें मिलकर जाता है, पर स्वप्नदोषवालेका तो निरा वीर्य ही वीर्य जाता है।

बहुत लोग स्वप्नमेहको शुक्रमेह लिखते हैं। शुक्रमेह बैठनेके सुख से, दही, प्राम्य पशु, जलजीव, अनूपदेशमें रहनेवाले हंस चकवा आदिका मांस रस, दूध, नया अन्न, नया जल, शक्कर आदि गुड़के पदार्थ तथा इसके सिवा और कफवर्द्धक पदार्थोंसे होता है। शुक्रमेह कफप्रधान है। वह कफ-मेद-जनक कारणोंके अधिक सेवनसे हुआ करता है।



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ६०१

परन्तु स्वप्नदोष अधिक व्यवाय और व्यायाम आदि द्वारा, वायुके शरीर में प्रबल होनेसे—चैतन्य स्नायुजालोंकी चंचलता व विशृङ्खलताके कारण हुआ करता है। हृदयमें दर्द, सब रस खानेकी अधिक इच्छा, तन्द्रा, शिथिलता, कम्प, शूल और कब्ज—वगैरः स्वप्नदोषवालोंमें पाये जाते हैं—ये सब “वात-प्रधान वसामेह” आदि के उपद्रव हैं; अतः स्वप्नदोषको वात-प्रधान वसामेह आदिके अन्तर्गत मान सकते हैं; पर स्वप्नदोष, वात-प्रमेहोंकी तरह, बिल्कुल असाध्य नहीं होता—बल्कि साध्य या याप्य होता है।

### प्रसंगवशात् शुक्रमेह-वर्णन ।

चूँकि आजकल शुक्रमेह-रोगी बहुतायतसे देखनेमें आते हैं; इसलिए हम यहाँ पर शुक्रमेहका वर्णन कुछ विस्तारसे कर देना अनुचित नहीं समझते। “चरक”में लिखा है:—

शुक्राभंशुक्रमिश्रं वा मुहुर्मेहति यो नरः ।

शुक्रमेहिनमेवाहुः पुरुषश्लेष्मकोपतः ॥

जो पुरुष वीर्यकी सी आभा या वीर्यकी सी रंगतवाला और वीर्य मिला हुआ पेशाब करता है, उसे “शुक्रमेही” कहते हैं।

### शुक्रमेह किन्हें और क्यों होता है ?

जो अज्ञानी पुरुष आयुर्वेद या कामशास्त्रके नियम न जाननेके कारण और वीर्यकी क्रीमत न समझनेकी वजहसे अत्यन्त स्त्री-प्रसंग, हस्तमैथुन और गुदामैथुन प्रभृतिसे अपने वीर्यको नष्ट करते हैं, उन्हें प्राणनाशक “शुक्रमेह” हो जाता है; क्योंकि अत्यन्त मैथुन या हस्त-मैथुन आदि कुकर्मों द्वारा वीर्य-नाश होनेसे वीर्यको रोकनेवाली नसें ढीली पड़ जाती हैं, उनमें वायु भर जाता है। इस दशामें, स्त्रीके याद करने या देखने मात्रसे वीर्य निकल जाता है।



## शुक्रमेहसे नपुंसकता ।

जिसे शुक्रमेह रोग हो जाता है, उसकी वीर्यको रोक रखनेवाली नसों ढीली हो जाती हैं, उनमें शक्ति नहीं रहती, इसलिए ऐसे पुरुषका वीर्य स्त्रीको छूने या देखने मात्रसे गिर जाता है । भग-दर्शन तककी नौबत नहीं आती । इतना ही नहीं, नींदमें किसी स्त्रीको देखने और मैथुन करनेसे अथवा पेशाबकी थैलीमें पेशाबके भर जानेसे, लिंगके उत्तेजित होने या किसी सुन्दरीका ध्यान करने मात्रसे वीर्य निकल पड़ता है । अब कहिये, ऐसे मर्द कामसे मदमाती, पूर्ण-नवयुवती नारियोंकी तबीयत कैसे राजी कर सकते हैं ? कुछ दिन, जब तक कि रोग अपनी पूरी जवानीमें नहीं आता, ये लोग किसी तरह गिल्ली-डण्डा खेल लेते हैं, औरत बेचारीकी तो इच्छा पूरी नहीं होती । जब रोग पूरे जोरमें आ जाता है, तब लिंग एक-दम ढीला हो जाता है, किसी तरह नहीं उठता ।

## शुक्रमेहके उपद्रव ।

जिन्हें शुक्रमेह हो जाता है, उनकी जठराग्नि मन्दी हो जाती है, भूख नहीं लगती, खाना हज्म नहीं होता, दस्त कब्ज हो जाता है, जब देखो तब दस्त न होने की शिकायत करते हैं, सिर भारी रहता है, कभी पतले दस्त लग जाते हैं और शरीरमें एक-दम कमजोरी आ जाती है ।

## कफज प्रमेहोंके उपद्रव ।

जिसे कफज प्रमेह या उसका बच्चा शुक्रमेह होता है, उसके पेशाब पर मक्खियाँ बैठी हैं, हर समय सुस्ती घेरे रहती है, शरीरमें मांस बढ़ जाता है, जब देखो तब जुकाम बना रहता है, शरीर कमजोर हो जाता है, खाना खाने या किसी काम करनेको मन नहीं चाहता, खाया हुआ भोजन नहीं पचता, दिल उदास रहता है, मुँहमें थूक भर भर आता है, कण होती है, नींदका जोर रहता है, खाँसी और श्वासकी



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ६०३

शिकायत बनी ही रहती है और ज़रा चलने या थोड़ा-सा भी काम करनेसे साँस फूल उठता है। ये सब कफके प्रमेहोंके उपद्रव हैं, अतः शुक्रमेहके भी उपद्रव हैं, क्योंकि कफके दस प्रमेहोंमें ही शुक्रमेह है।

## समस्त प्रमेहोंके उपद्रव ।

(स्वप्नमेहके उपद्रव)

सब तरहके प्रमेहोंमें नीचे लिखे उपद्रव पाये जाते हैं:—

(१) प्यास बहुत लगती है।

(२) ज़रा भी अधिक खानेसे दस्त लग जाते हैं।

(३) ज्वर हर समय बना रहता है।

(४) दाह—जलन या बेचैनी रहती है।

(५) शरीर दुबला हो जाता है।

(६) किसी कामको दिल नहीं चाहता।

(७) खाने पर रुचि नहीं होती।

(८) खाया हुआ नहीं पचता।

(९) सारे शरीरसे, विशेषकर बगलोंसे बदबू निकलती है।

(१०) दाद, खाज और फुन्सियाँ होती हैं।

(११) प्रमेह-रोगी चलनेसे ठहरना, ठहरनेसे बैठ जाना, बैठनेसे लेट जाना और लेटनेसे सो जाना चाहता है; उसमें इतनी कमजोरी हो जाती है कि, वह चलना नहीं चाहता। अगर मजबूरीसे थोड़ा भी चलता है तो थक जाता है। उसकी पिंडलियोंमें पीड़ा होती है, इसीसे वह चलता-चलता ठहर जाता है, ठहरते ही बैठ जाना चाहता है, बैठते ही लेट जाना और लेटते ही सो जाना चाहता है। प्रमेहवाले को नींद बहुत आती है। थोड़ीसी मिहनतसे मारे थकानके उसे सोये बिना कल नहीं पड़ती। उसे किसी काममें उत्साह नहीं होता। याद रखो, प्रमेह-रोगीकी परीक्षा उसकी चेष्टाओंसे बड़ी ही आसानीसे



होती है। यह भी याद रखो, कि जो उपद्रव प्रमेहोंके हैं, वे ही स्वप्न-प्रमेह या स्वप्नदोषके हैं। क्योंकि स्वप्नदोष या स्वप्नप्रमेह भी तो एक प्रमेह ही है।

यों तो हम स्वप्नदोषके सामान्य लक्षण उधर लिख आये हैं और जो कुछ प्रमेहोंके सम्बन्धमें लिखा है वही स्वप्नदोषके सम्बन्धमें भी समझना चाहिये। फिर भी, थोड़ी समझवालोंके लिए हम स्वप्नदोषके निदान, कारण, पूर्वरूप और लक्षण आगे लिखे देते हैं—

### स्वप्नदोष या स्वप्नमेहके कारण ।

प्रायः नीचे लिखे हुए कारणोंसे स्वप्नदोष या स्वप्नमेह रोग होता है, अतः पाठकों को कारण जानकर, कारणोंसे बचना चाहिये:—

( १ ) नाटक, थियेटर, सिनेमा-बायस्कोप और रंढियोंका नाच देखना ।

( २ ) थियेटर या नाटक आदिमें देखी हुई वेश्या-एक्ट्रेसों पर दिल चलाना, हर समय उनका खयाल करना और उनसे मिलनेकी बन्दिशें बाँधना ।

( ३ ) लण्डनरहस्य, छबीली भटियारी, पूरनमलका खयाल, मुकलावा बहार एवं सहस्र रजनी चरित्र आदि मनमें क्षोभ या कामोत्तेजना पैदा करनेवाली पुस्तकें या कामोत्तेजक गन्दे नावेल-उपन्यास पढ़ना ।

( ४ ) यास-दोस्तोंमें बैठकर सुन्दरी स्त्रियोंके रूपकी तारीफें करना ।

( ५ ) अपनी ही स्त्रीके पीहर या और कहीं जानपर उसकी बारम्बार याद करना ।

( ६ ) वाजीकरण पदार्थ सेवन करने पर भोगके लिये स्त्रीका न होना ।

( ७ ) पहले बहुत मैथुन करना, पर पीछे इस कामसे रुक जाना ।



नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ६०५

( ८ ) ज्वर या जीर्णज्वर आदिसे शरीरका कमजोर हो जाना या आराम हो जाने पर ज्वरांशका शेष रह जाना ।

( ९ ) सोजाक या गरमी—उपदंश हो जाने पर, उनका जड़से आराम न होना—उनके अंशोंका बना रहना ।

( १० ) विषयी और कामी पुरुषोंकी संगितमें रहना ।

( ११ ) कामविकार उत्पन्न करनेवाले स्थानोंमें जाना; जैसे रंडियोंके डेरेपर जाकर मुजरा सुनना वगैरः ।

( १२ ) बहुत दिनों तक ब्रह्मचर्य-व्रत रखकर, बीचमें उसे तोड़ देना और फिर ब्रह्मचर्य पालन करना ।

( १३ ) खूबसूरत लड़कोंको पास बिठाना और उनके साथ ताश-गंजफा आदि खेल खेलना ।

( १४ ) हस्तमैथुन या गुदमैथुन करना ।

( १५ ) अग्नि मन्द होना ।

( १६ ) अजीर्ण होना या भोजन न पचना ।

( १७ ) दस्तका कब्जियतसे होना ।

( १८ ) मलमूत्रके वेग रोकना ।

( १९ ) मानसिक परिश्रम अधिक करना ।

( २० ) चाय या कह्वेकी आदत डाल देना ।

( २१ ) रातको जागना और दिनको सोना अथवा रातको काफी नींद न लेना ।

( २२ ) रातके समय अधिक खाना और खाते ही सो जाना ।

( २३ ) रातके समय मानसिक और शारीरिक परिश्रम अधिक करना ।

( २४ ) खट्टी, मीठी, गरम और चरपरी चीजें; जैसे लाल मिर्च, अमचूर, लहसन, प्याज, राई, गुड़, हींग, चटनी, अचार, गरम मसाले, वही और तेलमें पके हुए गरम पदार्थ अधिक खाना ।

( २५ ) सोनेसे पहले रातको पेशाब न करना और रातको पेशाब



की हाजत होने पर भी आलस्यवश न उठना—पेशाबको लिये हुए ही पड़े रहना ।

( २६ ) सवेरे सूर्योदय तक बिस्तरोंमें पड़े रहना ।

( २७ ) गरिष्ठ और भारी पदार्थ खाना ।

( २८ ) अत्यन्त गरम दूध पीना ।

( २९ ) नरमानर्म बिछौनों पर सोना ।

( ३० ) पलंगका सिरहाना नीचा और पायतान ऊँचा रखना ।

( ३१ ) भाँग, गाँजा, चरस और तमाखू प्रभृति नशीली चीज सेवन करना ।

( ३२ ) सोते समय गरम दूध या चाय वगैरः पीना ।

( ३३ ) कसकर लँगोट बाँधना । इससे दबावके कारण लिंगमें उत्तेजना होती और स्वप्नदोष हो जाता है ।

( ३४ ) 'मुझे स्वप्नदोष है, हाय यह कैसे आराम होगा,'—इस तरहकी चिन्ता रखना ।

( ३५ ) हमेशा उदास रहना—चित्तको प्रसन्न न रखना ।

## स्वप्नदोष या स्वप्नमेहके पूर्वरूप ।

स्वप्नदोष या स्वप्नमेहके पूर्वरूप इस भाँति होते हैं:—

( १ ) हाथ-पैरके तलवोंमें विशेषतासे जलन रहती है ।

( २ ) शरीरके अवयवोंपर और खासकर सिरपर चिकनाई रहती है ।

( ३ ) थोड़ीसी मिहनत करने या ज़रा-सी ऊँचाईपर चढ़नेसे साँस फूल उठता है ।

( ४ ) तालु, गला, जीभ और दाँतोंमें मैलका अधिकतासे जमना ।

( ५ ) प्यासका ज़ियादा रहना ।

( ६ ) हर समय नींदसी आना, पर गहरी नींद न आना ।



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ६०७

(७) क्रोध करना और जरासी देरमें राजी होना ।

(८) शरीरमें बदबू आना—खासकर बगलोंसे अधिक दुर्गन्ध निकलना ।

(९) मनमें उत्साह न होना ।

(१०) चित्त उदास रहना ।

(११) अनेक काम करनेको तबियत चलनी, पर करना एकको भी नहीं ।

(१२) शरीरमें थकान-सी बनी रहना ।

(१३) बालोंमें उलझन होना—गुलभट्टे पड़ना और मैलका बढ़ जाना ।

(१४) मुँहमें मिठास रहना ।

(१५) हाथ-पाँवका सो जाना—स्पर्शशक्तिका कम होना ।

(१६) मुँह और तालूका सूखना ।

(१७) खड़े होने पर बैठनेको जी चाहना और बैठने पर लेट जानेको ।

(१८) शरीरका बहुधा गरम रहना ।

(१९) पेशाब पर मच्छरों और चींटियोंका अधिक आना । इसी तरह शरीर पर भी इनके हमले होना ।

(२०) शरीरसे पेशाबकी सी दुर्गन्ध निकलना ।

नोट—ये पूर्वरूप हमने “सुश्रुत” और “चरक” से लिखे हैं । इस मौक़े पर सुश्रुताचार्य कहते हैं:—जिस पुरुषको जरा भी अधिक पेशाब हो अथवा जिस पुरुषमें सारे अथवा आधेसे ज़ियादा पूर्वरूप दिखाई दें, उसे प्रमेह-रोगी समझना चाहिये ।

खुतासा यह कि, प्रमेहके सारे ही पूर्वरूप या रूप मिलें, तभी प्रमेह न समझना चाहिये; क्योंकि प्रमेहके चिह्न एकबारगी ही साफ़ नज़र नहीं आते । ज्यों-ज्यों रोग बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों लक्षण प्रकट होते जाते हैं । प्रमेह वह रोग है, जो मनुष्यके जीवनको जल्दी ही ख़तम नहीं करता । अनेक प्रमेहवाले अपने काम-काज करते रहते हैं और यहाँ तक कि सन्तान भी पैदा करते रहते



हैं। जब यह रोग उग्र रूप धारण करके असाध्य हो जाता है, तभी महा-मुश्किल होती है। अतः इसके कम-से-कम लक्षण नज़र आते ही—यहाँ तक कि पेशाबमें थोड़ीसी अधिकता होते ही—सावधान हो जाना चाहिये और इसे वहींसे मार भगानेकी चेष्टा करनी चाहिये।

## स्वप्नदोष या स्वप्नमेहके लक्षण ।

जिन अभागोंको स्वप्नदोष या स्वप्नमेहका रोग होता है, उनमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

( १ ) किसी सुन्दरी नारीके सुपनेमें देखने, छूने या आलिंगन करते ही वीर्य निकल जाना अथवा जाग्रतावस्थामें स्त्रीको देखने, छूने, आलिंगन करने अथवा मैथुनकी इच्छा करते ही वीर्यका स्रवित हो जाना ।

( २ ) मस्तिष्क या दिमागका खालीसा जान पड़ना, सिरमें दर्द बना रहना, आँखोंके सामने अंधेरा आना, सिरमें चक्कर आना और बातोंका याद न रहना वगैरः ।

( ३ ) कमरमें दर्द रहना, सीधा बैठ न जाना, लेटने या पड़े रहनेको जी चाहना ।

( ४ ) चित्तका स्थिर न रहना, किसी एक बात पर दिल न जमना ।

( ५ ) मनमें तरह-तरहके वहम उठना ।

( ६ ) आलस्य बना रहना । किसी भी कामको दिल न चाहना । दबाव या मजबूरीसे बेमन होकर थोड़ा-बहुत काम करना ।

( ७ ) आँखोंके चारों तरफ़ काले या नीले-नीले घेरेसे दिखाई देना । आँखोंकी रोशनी कम हो जाना, आँखोंका खड्डोंके भीतर धँस जाना ।

( ८ ) हाथों और पैरोंके तलवोंका जलना, उनमेंसे आग-सी निकलना ।



## नवीन चिकित्सकों और रोगियोंके जानने योग्य बातें । ६०६

( ६ ) मनमें सदा उदासी बनी रहना--चित्तका कभी प्रसन्न न होना ।

( १० ) हाथ-पैरोंका काँपना । हाथ-पैरोंसे किसी भी चीज़को अच्छी तरह न पकड़ सकना ।

( ११ ) दिलका धड़कना या धकधक करना ।

( १२ ) शरीर कमजोर हो जाना और चेहरेकी रौनक या कान्तिक मारा जाना ।

( १३ ) कभी खाना हज़म हो जाना और कभी न होना ।

( १४ ) दस्तका साफ़ न होना । कब्ज ही बना रहना ।

( १५ ) पैरोंमें फूटनी या बेचैनी रहना ।

( १६ ) नींदका कम आना या कतई न आना ।

( १७ ) शरीरके समस्त जोड़ोंका शीतल मालूम होना ।

( १८ ) हाथ-पैरोंके तलवोंमें पसीने आना ।

( १९ ) हाथ-पैरोंका सो जाना यानी उनके छूने या चुटकी काटनेसे कुछ भी मालूम न होना ।

( २० ) पीठमें कमोवेश दर्द होते रहना ।

( २१ ) भूखका कम हो जाना ।

( २२ ) बिना बुढ़ापा आये, जवानीमें ही, बालोंका पक कर सफ़ेद या पीले होना ।

( २३ ) बालोंका झड़झड़ कर गिरना और गंज हो जाना ।

( २४ ) पीठकी रीढ़का कमानकी तरह झुक जाना । कमर और पीठमें वेदना होना । बिना तकिया या मसनदके सहारे बैठ न सकना ।

( २५ ) वीर्यका पानीकी तरह पतला हो जाना, अतः भगदर्शन करते ही—बिना प्रवेश किये ही स्खलित हो जाना । जरा भी रुकावट न होना ।

( २६ ) मुँह और शरीरसे बदबू निकलना ।



( २७ ) पेशाबमें कभी-कभी जलन सी होना ।

( २८ ) आँखोंसे कम दीखना, अतः ऐनक या चरमेकी ज़रूरत होना ।

( २९ ) आँखोंमें आलस्य या नींद भरी रहना और नींदके सिवा और कुछ भी अच्छा न लगना ।

( ३० ) गलेकी आवाजका बिगड़ जाना और कभी-कभी खाँसी हो जाना । छातीका कफसे भरी रहना ।

( ३१ ) फोतोंका ढीला या लिबलिबा सा हो जाना और लम्बे हो कर लटकना ।

( ३२ ) लिंगका एक ओरको झुका रहना, ढीला होना और एक छोटेसे बच्चेके जैसा अत्यन्त छोटा हो जाना ।

( ३३ ) नाड़ीका अत्यन्त मन्दी चालसे चलना ।

( ३४ ) दाँत-दाढ़ोंका सूज जाना और उनमें कीड़े पड़ जाना ।

( ३५ ) कभी दो-चार दिन तेज़ भूख लगना और फिर कई दिन तक खानेसे नफरत करना ।

## स्वप्नदोष नाशक नुसखे ।

( विद्वान् वैद्यों और हमारे द्वारा परीक्षित )

( १ ) भोजनके बाद, नित्य, एक या दो पके हुए केलेकी गहर या फली खाया करो । अथवा, सवेरे ही एक केलेकी गहरमें दो-चार बूँद “शहद” मिलाकर खाया करो । इस उपायसे स्वप्नदोष रोग और वीर्य-विकार नाश होकर वीर्य बढ़ता और उसका गिरना या बहना बन्द होता है ।



नोट—पका केला धातुरोगकी उत्तम दवा है । यह नुसखा स्वयं हमारा परीक्षित है ।

( २ ) भीमसेनी कपूर १ माशे, पिसी-छनी हल्दी १ तोले, पिसी-छनी शीतलचीनी ६ माशे, अफीम २ रत्ती और पिसी हुई मिश्री २ तोले—सबको मिलाकर छान लो और रख दो । इसकी मात्रा २ माशे की है । रातको सोते समय, १ मात्रा खाकर ज़रासा जल पीनेसे, चन्द रोजमें स्वप्नदोष जाता रहता है ।

नोट—यह नुसखा श्रीमान् पण्डित हरिनारायणजी शर्मा आयुर्वेदाचार्यका परीक्षित है । हमने “वैद्य” से लेकर स्वयं इसकी अनेकों रोगियोंपर परीक्षा की है ।

( ३ ) मुलेठी एक पाव लाकर महीन पीस-कूट-छान लो । इसमेंसे दो माशे चूर्ण १ तोले वी और ६ माशे शहदमें मिलाकर, सवेरे ही, चाटने और ऊपरसे एक पाव धारोष्ण-दूध पीने से स्वप्नदोष आराम होता है ।

नोट—मुलेठीका चूर्ण दश माशे, गायका मक्खन दश माशे और शहद पाँच माशे मिलाकर चाटने और ऊपरसे गायका दूध मिश्री मिलाकर पीनेसे वीर्य खूब पुष्ट और बलवान हो जाता एवं स्त्रीप्रसंगमें आनन्द आता है । यह नुसखा हम पहले भी लिख आये हैं । अगर कोई इसे दो-चार महीने सेवन करता रहे तो स्त्रीप्रसंगमें अपूर्व आनन्द आये । यह नुसखा हमारा खूब परीक्षित है ।

( ४ ) शर्बत गुलाब अथवा शर्बत खस अथवा शर्बत सन्दलमें आधी रत्तीसे दो रत्ती तक, मोती-भस्म मिलाकर चाटनेसे, भीतरी गरमी शान्त होकर स्वप्नदोष रोग आराम होता है ।

( ५ ) ऊपरकी विधिसे मूँगा-भस्म चाटनेसे भी स्वप्नदोष आदि धातु-रोग आराम होते हैं ।

नोट—अमीरोंके लिये मोती और मूँगा-भस्म बड़ी ही उत्तम चीज है । मोती-भस्म सेवनसे नेत्र-रोग, विष-दोष, राजयक्ष्मा, उरःक्षत आदि नाश होकर धातुकी कमजोरी जाती और बलकी वृद्धि होती है । इससे कफपित्त, कफक्षयी, खाँसी, श्वास और मन्दाग्नि नाश होकर शरीर खूब तैयार होता है । मूँगेमें प्रायः वही गुण हैं, जो मोतीमें हैं । पारे और गन्धककी कजलीके साथ फूँके



हुए मोती और मूँगे बड़ा गुण करते हैं । इनके फूँकने की विधि हम पीछे लिख आये हैं ।

मूँगा फूँकने की नई विधि—दो तोले मूँगे की जड़ या डाली को आधपाच बकानके फूल या बनफसाके फूलोंमें लपेट कर एक कुल्हड़ेमें बन्द करो । ढक्कनको खूब बन्द करके कपरोटी करो और सुखा लो । फिर बीस सेर कण्डों में कुल्हड़ेको रखकर आग लगा दो । जब आग शीतल हो जावे, कुल्हड़ेको निकाल कर खोलो और भीतरसे मूँगाभस्म निकाल लो । यह मूँगाभस्म भी अच्छी होती है ।

( ६ ) एक तोले गुलकन्द गुलाबमें, दो चाँवल भर हल्दी द्वारा फूँकी हुई उत्तम “वंग-भस्म” मिलाकर, सवेरे ही, ७ दिन तक खाओ और ऊपरसे थोड़ा सा शीतल जल पीओ । बाद ७ दिनके, इसी तरह फिर सात दिन तक खाओ, पर ऊपरसे पानीकी जगह गायका धरोष्ण दूध पीओ । परमात्माकी दयासे, १४ दिनमें, स्वप्नदोष भाग जायगा ।

नोट—यह नुसखा गरम मिर्जाज वालोंको अच्छा होगा । मौसम गरमी में भी लाभदायक प्रमाणित होगा । यह नुसखा आयुर्वेदचार्य पण्डित कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी बी० ए० का और हमारा भी परीक्षित है ।

( ७ ) नित्य, सवेरे-शाम, तीनसे पाँच तक गुलाबके ताजा फूल मिश्रीके साथ खाकर, ऊपरसे गायका दूध पीनेसे स्वप्नदोष रोग नाश होता है ।

नोट—बढ़िया चावलोंमें पाँच ताजा गुलाबके फूल डालकर पकाओ । पकने पर उत्तम घी डालकर खाओ । इस भात से अमीरोंको एक दो दस्त साफ़ हो जाते हैं और सेदे पर गरमी नहीं पहुँचती ।

( ८ ) ताजा आमलोंका रस १ तोले, ताजा नीम-गिलोयका स्वरस १ तोले, मिश्री १ तोले और शुद्ध शिलाजीत दो रत्ती—इन सब को मिलाकर सवेरे-शाम पीनेसे, ४० दिनमें स्वप्नदोष आराम हो जाता है ।

नोट—जाड़ेमें, मिश्रीकी जगह “शहद” मिलना चाहिये ।



( ६ ) मौसम गरमीमें, एक तोले कतीरा-गोंद, रोज, रातके समय, आध पाव पानीमें भिगो दो । सवेरे ही वह फूल आवेगा, उसमें २ तोले मिश्री मिलाकर पी लो । इस नुसखेसे १०।१५ दिनमें स्वप्नदोष आराम हो जाता है ।

नोट—यह नुसखा शीतल है, अतः जाड़े और बरसातमें लेना उचित नहीं । हाँ, जिसके वीर्यमें गरमी बहुत हो और मित्राज भी गरम हो, वह हर मौसममें ५।७ दिन सेवन कर सकता है ।

( १० ) धनिया पुराना ६ माशे, बुरादा सफ़ेद चन्दन ६ माशे, सुखे आमले ६ माशे और ताजा गिलोय ६ माशे—इन सबको अधिकचरा करके, रातके समय, एक कोरी हाँडीमें, आध पाव जल डालकर, भिगो दो । सवेरे ही उसका पानी नितार पी लो । वह स्वप्नदोष जो वीर्यपर गरमी पहुँचने से होता है, इस नुसखेसे २१ दिनमें चला जाता है ।

नोट—जिनके मित्राजमें गरमी जियादा हो अथवा जिन्हें गरमी बहुत सताती हो और साथ ही स्वप्नप्रमेह आदि रोग हों, उनके लिये यह नुसखा तुरावट लाकर आराम करता है ।

( ११ ) एक तोले बबूलका गोंद, रोज रातको, आध पाव जलमें भिगो दो । सवेरे ही मल-छानकर उसमें २ तोले मिश्री मिला दो और पी लो । इस नुसखेसे २१ दिनमें स्वप्नदोष चला जाता है ।

( १२ ) इमलीके बीज आध पाव लेकर दूधमें भिगो दो, फूलनेपर छिलके उतार फेंको । पीछे उन छिली हुई मींगियोंको खरलमें तोलकर डालो और ऊपरसे उतनी ही मिश्री भी तोलकर डालो और घोटो । खूब घुट जानेपर जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम, एक एक गोली खानेसे स्वप्नदोष जाता रहता है । गरम और भारी पदार्थोंसे परहेज रखना जरूरी है ।

( १३ ) भीमसेनी कपूर ४ रत्ती, बंगभस्म ८ माशे, शुद्ध शिला-जीत १ तोले और सफ़ेद मूसली ४ तोले—सबको खरलमें डालकर



घोटो और ऊपरसे बबूलके गोंदका पानी ढालते रहो । जब चार घण्टे घुटाई हो जावे, चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बनालो और छायामें सुखालो । सवेरे-शाम, एक-एक गोली खाकर ऊपरसे गायक धारोष्ण दूध पाव-भर या त्रिफलेका भिगोया हुआ पानी पीनेसे ४० दिनमें स्वप्नमेह—स्वप्नदोष और प्रमेह-सम्बन्धी सब विकार नाश हो जाते हैं ।

नोट—यह नुसखा मनोरमा-सम्पादक पण्डितवर महावीरप्रसादजी मालवीय, आयुर्वेद-चार्यका परीक्षित है और “धन्वन्तरि” से हमने लिया है ।

( १४ ) कागजी बादामकी १ मींगी, मिश्री ३ माशे, उत्तम लूनी घी ३ माशे और गिलोयका सत्त ३ माशे—इन सबको ६ माशे “शहद”में मिलाकर, सवेरे-शाम चटनेसे ८ दिनमें ही स्वप्नदोष भागता नजर आता है ।

नोट—यह नुसखा भी उक्त मनोरमा-सम्पादकजीका है ।

( १५ ) गिलोयका सत्त १ तोले, दिल्लीकी सफ़ेद मूसली २ तोले, दरियाई तालमखाने ३ तोले, मखानोंकी ठुरी ४ तोले और मिश्री ५ तोले—सबको पीस-छानकर रखलो ।

इसमें से छै-छै माशे दवा, सवेरे-शाम मिश्री-मिले गायक धारोष्ण दूधके साथ खानेसे सब तरहके प्रमेह, स्वप्नमेह—स्वप्नदोष, धातुविकार, मूत्रदोष, वीर्यका जल्दी स्थलित होना यानी शुक्रतारल्य आदि रोग निश्चय ही नाश होते हैं । जिन्हें सोजाक होता है, अक्सर उनका वीर्य दूषित हो जाता है । इसलिये सोजाकके हमारे “सर्व्वसोजाक नाशक चूर्ण” द्वारा, आराम हो जानेपर, इस अमृत-समान प्रमेहान्तक चूर्णको ३ महीने खानेसे घोर सोजाकी भी निर्दोष और पुष्टवीर्य हो जाता है । इस नुसखेमें राई भरकी शंका नहीं है । अनेकों बार हाल ही में परीक्षा की है । यह चूर्ण भी हमारे यहाँ तैयार मिलता है । नाम इसका “सोजाकान्तक चूर्ण” है ।

नोट—गिलोयका सत्त आजकल असली नहीं मिलता, अतः ताजा गिलोय मँगाकर स्वयं अपने-आप सत्त निकाल लेना चाहिये ।



(१६) शतावर १ पाव, कौंच की गिरी १ पाव, तालमखाने १ पाव, गोखरू आध पाव, केशर ३ माशे, जायफल ३ माशे और मिश्री तीन पाव सबको पीस-कूटकर छान लो। इसमेंसे एक-एक तोले चूर्ण सवेरे-शाम खाकर, ऊपरसे गाय का धारोष्ण दूध पीनेसे स्वप्न-दोष और प्रमेहादि विकार नाश होते हैं। अच्छा नुसखा है।

(१७) सफेद मूसली, कौंचके बीजोंकी गिरी, शतावर, सूखे आमले और चीनी—इन पाँचों को बराबर-बराबर दो-दो तोले लो और पीस छान लो।

चूँकि यह चूर्ण तैयारी १० तोले होगा, इसलिये इसका चौथाई—अर्थाई तोले गिलोयका सत्त पीसकर इस चूर्णमें मिला दो। इस चूर्ण की मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। एक मात्रा खाकर ऊपर से पाव भर दूध पीनेसे स्वप्नदोष-रोग निश्चय ही चला जाता है। झाल ही में परोक्षा को है; पर इस रोगवालेको कुछ नियम भी पालन करने होते हैं। बाज्रबाज्र औकात, बिना नियम पालन किये, कोरी दवासे लाभ नहीं होता। सबसे पहली बात तो यह है कि, इसकी पैदाइशके कारणों को त्याग देना चाहिये।

नोट—सवेरे ही पलंगसे उठकर, भावे जितना साफ बासी जल पीओ। फिर सेर डेढ़ सेर पानीका लोटा लेकर पाखाने जाओ। जब आबदस्त ले लो, तब बचे हुए पानीको पतली धारसे धारे-धीरे लिंगेन्द्रियकी जड़पर डालो। रातको सोते समय हाथ-पाँव और मुखको शातल जलसे धो लो, तब पलंग पर कदम रखो।

(१८) गोखरू, सूखे आमले और गिलोय—इन तीनोंको समान-समान लेकर, महीन पीस-छान लो और रख दो। इसमें से २ माशे चूर्ण घा और चीनीमें मिलाकर खानेसे स्वप्नदोष आराम होते हैं।

(१९) चोपचीनी का पिसा-छना चूर्ण १ तोले, मिश्री १ तोले और घा १ तोले—तीनोंको मिलाकर, नित्य सवेरे हा, सात-आठ दिन खानेसे बेहद लाभ होता है।



नोट—उपरोक्त दोनों नुसखे, पं० श्रीकृष्णप्रसाद श्री त्रिवेदी जी० ए० आयुर्वेदाचार्यके आजमाये हुए हैं। हमने भी परीक्षा करली है।

(२०) काहूके बीज १ तोले, भाँग १ तोले, कासनीके बीज १ तोले, धनिया १ तोले और नीलोफर १ तोले लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें १० तोले “मिश्री” पीसकर मिला दो। सबके अन्तमें १० तोले “ईसबगोल” मिला दो। बस, अब यह चूर्ण तैयार हो गया। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण नित्य गायके धारोष्ण दूधके साथ सेवन करने से स्वप्नदोष आराम हो जाता है तथा वीर्यकी गर्मी भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—ईसबगोल को कभी भी कटना न चाहिये।

(२१) अफीम आधी रत्ती, कपूर दो रत्ती और शीतलचीनीका छना हुआ चूर्ण ६ रत्ती—इन तीनोंको मिलाकर, रातको सोते समय नित्य, जलके साथ खा लो। सबेरे उठते ही ६ माशे मोचरस और २ तोले मिश्री पीस-छानकर फाँक लो और ऊपरसे पाव-भर धारोष्ण दूध पी लो। इस नुसखेके २१ दिन सेवन करनेसे स्वप्नदोष-रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(१२) शीतलचीनीका पिसा छना चूर्ण रख लो। रोज रातको सोते समय, २ माशे चूर्ण खाकर, थोड़ा ताजा पानी पी लिया करो। रातमें पेशाबकी हाजत होते ही, बिना आलस्य, पेशाब कर आया करो। इस सरल उपायसे स्वप्नदोष नहीं होता।

(१३) त्रिफलेका चूर्ण “शहद” में मिलाकर रोज चाटनेसे स्वप्नदोष आराम हो जाता है। मगर यह नुसखा कुछ लोगोंको गरमी करता है; अतः ऐसे मौके पर इसे शहदके बजाय “मिश्री” के साथ लेना चाहिये।

(२४) छै माशे सूखे आमलोंका चूर्ण ६ माशे मिश्री मिलाकर लगातार महीने दो महीने खानेसे प्रमेहादि स्वप्नदोष रोग आराम हो जाते हैं।



( २५ ) छै माशे आमलोंका चूर्ण शहदमें मिलाकर चाटने और ऊपरसे “चीनी मिला हुआ मॉड” पीनेसे २१ दिनमें स्वप्नदोष और कष्टसे आराम होनेवाले प्रमेह भी आराम हो जाते हैं ।

( २६ ) बबूलके नर्मोनर्म पत्ते खाकर, ऊपरसे शीतज पानी पीनेसे स्वप्नदोष और प्रमेह निश्चय ही आराम हो जाते हैं । जवानके लिए ६ माशेसे १ तोले तक पत्ते खाने उचित हैं । प्रमेहकी यह अनमोल दवा है । परीक्षित है ।

( २७ ) बबूलके नर्म पत्ते और नर्म कलियाँ लाकर छायामें सुखा लो और पीस लो । फिर इस चूर्णमें बराबरकी “मिश्रं” मिलाकर रख दो । सवेरे-शाम छै-छै माशे चूर्ण खाकर ताजा जल पीनेसे समस्त प्रमेह और स्वप्नदोष नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—प्रमेहोंके लिए “बबूल” अन्सीर दवा है । एकवार एक गँवार बबूलके पेड़को जड़से नाश कर रहा था । कोकशास्त्रके रचयिता कोका पण्डितने उसे बबूल काटते देखकर कहा—“अरे मूर्ख ! तुझे प्रमेह है और वह इस वृक्षसे आराम हो सकता है । तू इसे काटकर अपने ही जीवनकी जड़ काट रहा है ।”

( २८ ) आध सेर गायके दूधमें तीन छुहारे और २।३ तोले मिश्री डालकर पकाओ । जब आधा दूध रह जाय, छुहारोंकी गुठलियाँ निकाल फेंको, फिर छुहारे खाकर दूध पीलो । इस दूधके लगातार कुछ दिन पीनेसे स्वप्नदोष आदि धातु-विकार निश्चय ही नाश होते हैं और खूब बल-वीर्य बढ़ता है । पर यह नुसखा जाड़ोमें अच्छा काम देता है ।

( २९ ) सकृद मूसली ४ तोले, बहमन सकृद ४ तोले और ईसबगोलकी भूसी १० तोले लाओ । मूसली और बहमनको पीस-छान कर, उसमें ईसबगोलकी भूसी बिना कूटे ही मिलादो । इसमेंसे ६ माशे चूर्ण बराबरकी मिश्री मिला कर नित्य खाओ और ऊपरसे गायका थोड़ा-सा दूध पीओ । इस नुसखेसे २१ दिनमें ही अपूर्व



चमत्कार दीखता है । प्रमेह, जिरियान या वीर्यपतन रोग नाश करनेमें बहुत ही उत्तम नुसखा है । परीक्षित है ।

और विधि—ऊपर के सारे चूर्ण को दो सेर गायके दूधमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब गाढ़ा होने पर आवे, इसमें आध पाव मिश्री मिला दो और कलछीसे चलाते रहो, ताकि जलने न पावे । जब खोआ सा गाढ़ा हो जाय, उतारकर उत्तम बर्तनमें रख दो । इसमेंसे दो या तीन तोले रोज़ खाकर ऊपर से धारोष्ण दूध पीनेसे प्रमेह—जिरियान, स्वप्नदोष—अहतलामादि निश्चय ही आराम होते हैं । इस तरह पकाकर खानेमें कोई तकलोफ नहीं होती ।

( ३० ) कस्तूरी १ माशे, केशर १ माशे, जायफल ४ माशे, जावित्री ६ माशे, ऊद ३ माशे, शुद्ध शिलाजीत ४ माशे, सोनेके वर्क १ माशे, चाँदीके वर्क २ माशे और अबीध मोती ३ माशे—लाकर रखो ।

बनानेकी विधि—पहिले मोतियोंको २५ तोले अर्क गुलाबमें खरल करके सूखी भस्म बना लो । जावित्री, जायफल और ऊदको अलग पीस-छान लो । फिर कस्तूरी वगैरः सारी दवाओंको खरलमें डालकर, ऊपरसे “हरी भाँगका रस” दे-देकर, १५ घण्टों तक खरल करो । इसके बाद, उत्तम “शहद” डाल-डालकर, ६ घण्टे तक खरल करो और चने-समान गोलियाँ बनालो ।

सेवन-विधि—इन गोलियोंसे स्तम्भन होता है । रुकावटके लिए अक्वल दर्जेकी दवा है । चूँकि यह स्तम्भनकारी दवा है, इसलिए स्वप्नदोषको भी आराम करती है । क्योंकि प्रमेह नाशक और स्तम्भन-कारक दवाएँ, बहुधा, स्वप्नदोषको आराम करती हैं । जब स्त्री-भोग करना हो, तब १ गोली खाकर, ऊपरसे छोटी इलायची बुरककर, गरम दूध मिश्री-मिला हुआ पीओ । रुट्टी चीजोंसे परहेज रखो । खूब रुकावट होगी और जोश भी ज़ियादा आवेगा । जाड़ेके दिनोंमें रोज़ १ गोली



शाम को खानेसे बदनमें ताकत आती, भोगेच्छा बलवती होती और स्वप्नदोष रोग नाश होता है । अमीरोंके लायक चीज है ।

नोट—हमारे एक मित्रने यह नुसखा कई बार आजमाया है । आप इसकी बड़ी तारीफ़ करते हैं । इसलिए हमने इसे उनसे नोट कर लिया और पाठकोके उपकारार्थ यहाँ लिख दिया है । हमारे मित्र महोदयने इसे स्तम्भन पर ही आजमाया है । हम भी, बिना परीक्षा किये ही, कह सकते हैं, कि जाड़ेके दिनोंमें ये गोलियाँ अच्छा आनन्द दिखा सकती हैं । अमीर इन्हें अवश्य बनवावें या बनावें ।

( ३१ ) अश्रक भस्म १ भाग, शीशा भस्म ३ भाग और बङ्ग भस्म ४ भाग लेकर, खरलमें डालो और ऊपरसे “शतावरका रस” दे-देकर घोटो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो । इसीको “मेहान्तक रस” कहते हैं । इस रसको उचित अनुपानके साथ सेवन करने से प्रमेह और स्वप्नमेह आराम हो जाते हैं । मात्रा—१ से ३ गोली तक ।

( ३२ ) शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, लोह भस्म १ तोले, जस्ता भस्म १ तोले, चाँदी भस्म १ तोले, ताम्बा भस्म १ तोले, अश्रक भस्म १ तोले और बङ्ग भस्म ७ तोले—तैयार करो । पहले पारे और गन्धकको खूब खरल करो, ताकि कज्जलीमें चमक न रहे । फिर उसीमें सारी भस्में मिलाकर ३ घण्टे खरल करो और रख दो । इसे “बंगाष्टक” कहते हैं । इसकी मात्रा १ से २ रत्ती तक है । अनुपान—शतावर या मूसली प्रभृति किसी एक बल्य दवाका काढ़ा ।

नोट—शतावर, मूसली, विदरीकन्द, सालममिश्री, बंसलोचन, गोखरू, असगन्ध और इलायचीके बीज आदि बल्य औषधि हैं । इनमें से किसी एक का काढ़ा “बंगाष्टक”की मात्रा पर पीना चाहिये ।

( ३३ ) शतावर, मूसली, विदारीकन्द, सालम-मिश्री, असगन्ध, बंसलोचन, गोखरू और इलायचीके बीज आदि इनमें से किसी एक या दो-तीन-चार दवाओंको पीस-छानकर रख लो । इसमें से ३ या ६ माशे



चूर्ण, बराबरकी या दूनी मिश्री मिलाकर, खानेसे स्वप्नदोष रोग निश्चय ही जाता रहता है ।

( ३४ ) प्रमेह-प्रकरणमें लिखी हुई “चन्द्रप्रभा वटी” सेवन करनेसे स्वप्नप्रमेह रोग आराम हो जाता है ।

( ३५ ) बंग भस्म और अभ्रक भस्म अथवा शीशा भस्म और अभ्रक भस्म मिलाकर, एक या दो रत्ती प्रमाण ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे स्वप्नप्रमेह नाश हो जाता है ।

( ३६ ) मूँगा या मोती-भस्म शर्बत गुलाब, शर्बत चन्दन, शर्बत खश या शहदमें मिलाकर चाटनेसे स्वप्नप्रमेह नाश होता और बल-वीर्य बढ़ते हैं । अमीरोंके लिए यह उत्तम दवा है ।

नोट—सर्द मिर्जाजवालेको शहदमें दवा चाटनी चाहिये और गर्म मिर्जाज-वालोंको शर्बतोंमें । इसी तरह मौसमका भी ध्यान रखकर अनुपान तजवीज करना चाहिये ।

( ३७ ) बंग भस्म, शुद्ध शिलाजीत, छोटी इलायची और बंस-लोचन समान-समान लेकर “शहद”के साथ घोटो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम एक-एक या दो-दो गोली खाकर, ऊपरसे धारोष्ण दूध पीनेसे समस्त प्रमेह और स्वप्नदोष निश्चय ही आराम होते हैं । परीक्षित है ।

( ३८ ) बंगभस्म १ रत्तीमें एक या दो चाँवल भर “रस-सिन्दूर” मिलाकर खूब घोटो और “शहद”में मिलाकर चाटो । ऊपरसे धारोष्ण दूध पीओ । इससे प्रमेहादि रोग निश्चय ही नाश होते हैं ।

नोट—स्वप्नदोष नाश करनेके लिए हल्दी, अफीम या माँगमें फूँकी हुई बंग अच्छी होती है । हल्दीमें बंग फूँकनेकी विधि बंग तैयार करने की विधियोंमें लिखी है । हल्दीमें फूँकी हुई बंग बड़ी ही सफेद और उत्तम होती है ।

( ३९ ) बंग भस्म ६ माशे, मूँगा भस्म ६ माशे, संग जराहत (सेलखड़ी) ६ माशे, इलायचीके बीज ३ माशे और बंसलोचन



६ माशे—सबको पीस-छानकर रखलो । मात्रा—३ माशे की । अनु-  
पान—गायका धरोष्ण दूध । समय—सवेरे-शाम । इसके सेवन करने  
से सोजाक, प्रमेह, स्वप्नदोष, पतली धातु और शीघ्र वीर्यपतन आदि  
रोग निश्चय ही नाश होते हैं । यह दवा हमें एक मित्र हकीम ने बताई  
थी और हमने अनेक बार परीक्षा की तो ठीक फल पाया ।

नोट—इस नुसखेमें बंग भस्म हल्दी की फूँकी लेनी चाहिये ।

( ४० ) रस-सिन्दूर, अभ्रक भस्म, शीशा भस्म, मुश्क काफूर,  
सोनामक्खीकी भस्म, जस्ता भस्म और चाँदीकी भस्म—इनको समान-  
समान लेकर, खरलमें डालो और ऊपरसे “कमलके फूलोंका स्वरस”  
दे-देकर, सात दिन तक खरल करो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ  
बनाओ और छायामें सुखा लो । सवेरे-शाम एक-एक मात्रा “कसेरूके  
रस”के साथ लेनेसे सातसे चालीस दिनके भीतर, स्वप्नमेह आदि  
समस्त वीर्य-विकार नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

( ४१ ) स्वर्णबंग २ रत्ती, लोह-भस्म आधी रत्ती, मकरध्वज  
आधी रत्ती, अभ्रक भस्म आधी रत्ती, शतावर १ रत्ती और सफेद  
मूसली १ रत्ती—इन सबको मिला लो । यह एक मात्रा है । सवेरे-शाम  
ऐसी एक-एक मात्रा “शहद” में मिलाकर चाटनेसे स्वप्नमेहादि रोग  
नाश हो जाते हैं ।

( ४२ ) कतीरा गोंद १५ तोले लेकर घीमें तल लो । फिर इसे  
पीस कर इसमें “ईसबगोल की भूसी २ तोले और तवाखीर १ तोले”  
मिला दो । इसकी मात्रा १॥ तोले की है । एक मात्रा खाकर, गायका  
दूध पीनेसे स्वप्नदोष आराम होता और दस्त भी खुलासा होता है ।

( ४३ ) गिलोयका सत्त, शुद्ध शिलाजीत, तवाखीर, इलायची,  
मुलहठी, तालमखाने और पाषाणभेद एक-एक तोले; चाँदीके वर्क  
६ माशे, सोनेके वर्क ६ माशे, बंगभस्म १ तोले, अण्डोंके छिलकोंकी  
भस्म ६ माशे, मूँगा भस्म ६ माशे, अकीक भस्म ६ माशे, अभ्रक भस्म  
६ माशे, फौलाद भस्म ४ माशे और कूजेकी मिश्री सारे वजनके बराबर



लेकर—पीस-छान कर तैयार कर लो । मात्रा—६ माशे । सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर मिश्री-मिला हुआ बकरीका दूध पीनेसे ७, २१ या ४० दिनमें स्वप्नप्रमेहादि सारे वीर्यरोग नाश होते हैं ।

( ४४ ) मुलहठी २ माशे, अनारके फूल ४ माशे, काहू ३ माशे, गुलाबके फूल २ माशे और संभालूके बीज ५ माशे—पीस-छान कर रख लो । सवेरे-शाम तीन-तीन माशे दवा खाकर ताज्जा जल पीनेसे “मजी”का आना बन्द हो जाता है ।

( ४५ ) शुद्ध गन्धक और एक या तीन सालका पुराना गुड़ दोनों मिलाकर १ तोले खाने और ऊपरसे धारोष्ण दूध पीनेसे स्वप्नदोष और समस्त प्रमेह आराम होते हैं । परीक्षित है ।

( ४६ ) चार रत्ती शुद्ध शिलाजीत “शहद”में मिलाकर चाटने और ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीनेसे समस्त प्रमेह आराम होते हैं ।

नोट—यह नुसखा गरम मिर्जाजवालोंको कम फायदा करता या नहीं भी करता है । हाँ, कफ-प्रकृति या सर्द मिर्जाजवालोंको तथा जाड़ेमें खूब लाभ-दायक है ।

( ४७ ) हरड़का चूर्ण ३ माशे, एक तोले “शहद”में मिलाकर सवेरे-शाम चाटनेसे प्रमेह नाश होते हैं ।

( ४८ ) शुद्ध शिलाजीत ४ रत्ती और लोह-भस्म २ रत्ती—इनको ३ माशे शहदमें मिलाकर सवेरे-शाम चाटो और दो घण्टे बाद “शर्बत नीलोफर” शीतल जल मिलाकर पीओ । इससे पित्त शान्त होकर प्रमेह आराम हो जाते हैं ।

( ४९ ) त्रिफलेका काढ़ा या जौका काढ़ा रातको बनाकर रख दो और सवेरे ही पी लो । जौके काढ़ेमें थोड़ा “शहद” मिला लेना चाहिये । इनसे स्वप्नदोष जाता रहता है ।

सूचना—उपरोक्त नुसखोंमें से कितने ही नुसखे हमारे अपने और कितने ही “धन्वन्तरि” नामक वैद्यकके मासिकपत्रके हैं । धन्वन्तरि



के नुसखोंके लिए हम वैद्यवर बांकलाल जी महोदय, सम्पादक "धन्वन्तरि" के चिर आभारी हैं। हम उन वैद्यवरोंका भी आभार मानते हैं, जिन्होंने अपने आजमाये हुए नुसखे उक्त पत्रमें छपवा दिये हैं।

## स्वप्नदोष-रोगियोंके याद रखने योग्य बातें ।

( १ ) प्रमेहनाशक दवा सेवन करते समय कब्ज रहना ठीक नहीं। अगर कब्ज हो, तो नीचे की तरकीबोंसे फौरन कब्जको दूर करना चाहिये :—

१—रातको दो तोले गुलकन्द-गुलाब खाकर, गरम दूध पी लेनेसे दस्त साफ हो जाता है।

२—हरड़का मुरब्बा खाकर गरम दूध पीनेसे दस्त साफ हो जाता है।

३—एक तोले गुलबनफशा और ६ माशे गुलाबके फूलोंका काढ़ा बनाकर और चीनी मिलाकर रातको पी लेनेसे सवेरे दस्त साफ हो जाता है।

४—छोटी हरड़ ५ माशे, सौंफ ३ माशे और मिश्री ३ माशे इनको कूटकर खाने और गरम दूध पीनेसे दस्त साफ हो जाता है।

५—रेवन्दचीनी २ माशे और एलुआ २ माशे—इनको पानीमें चोट कर २० गोलियाँ बना लो। रातको एक, दो या तीन गोली खाकर दूध पीनेसे दस्त साफ हो जाता है।

( २ ) प्रमेहनाशक दवा खाते समय, सवेरे-शाम, सूर्योदयसे पहले और सूर्यास्तके समय मैदानकी हवा जरूर खानी चाहिये। सवेरे-शाम कम से-कम दो-दो मील चलना चाहिये।

( ३ ) हरदिन जलमें तैरना चाहिये।

( ४ ) हरदिन एक या दो बार नहाना चाहिये।

( ५ ) प्रमेहनाशक दवा सेवन करते समय लालमिर्च, तेल, खटई,



गरम चीज तथा कब्ज करनेवाले आलू, मटर, टिण्डे, अरबी, कचालू, मैदाके पदार्थ, गुड़, चीनी, नशीले पदार्थ, भूखसे जियादा खाना, स्त्री-प्रसंग करना, रोग या और किसी तरहकी चिंता करना, मांस, मदिरा, लहसन, प्याज, अण्डे, पुलाव, गरम मसाले, अचार, सिरका, दही, रायता, सोते समय दिशा-पेशाब न करना या और समय रोकना, लिंग को रोज शीतल जलसे न धोना, सोते समय चाय या काफी पीना, मनमें ईर्ष्या-द्वेष या भय-क्रोध रखना, नाच-गानेमें जाना, कामियोंकी सुहबत, रातको देरसे खाना और खाकर फौरन सो जाना, रातमें बहुत जागना, दिनमें ( गरमीके सिवा ) सोना, अधिक मिहनत करना और उदासा रहना—इन सबसे बचना परमावश्यक है ।

( ६ ) चने, गेहूँ, जौ, चनेकी दाल, मूँगकी दाल, अरहरकी दाल, जौका हलवा, लपसी, जौका औटाया जल, जौके पदार्थ—शहद मिले हुए, मूँग या चनेकी दालके रसके साथ पुराने चाँवलोंका भात, मूली, पालक, गाजर, कद्दू, काशीफल, शलगम, दूधकी लस्सी मिश्री-मिली, बेसनके लड्डू जिनमें बबूलका गोंद हो, दिनमें दो-एक घण्टा कसरत, दिनमें एक या दो बार स्नान, शीतल जलसे पेड़ू मलना, लिंगकी जड़ पर शीतल जलकी धार देना, दिल खुश रखना और जल्दी हजम होने वाले पदार्थ खाना ये सब प्रमेह-रोगी या स्वप्नदोष-वालेको पथ्य हैं ।



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिए फलोंके गुणावगुण ।

फालसे—पके फालसे पाकमें मधुर, शीतल, विष्टम्भी, पुष्टिकारक, हृदयको प्रिय होते हैं तथा ये खून-खराबीके रोग, ज्वर, क्षय, पित्त और दाह-जलनको नाश करते हैं ।

पके फालसे खटमिट्टे होनेकी वजह से निहायत जायकेदार मालूम होते हैं । खाना खानेके बाद थोड़ेसे फालसे खाने से खाना अच्छी तरह हजम हो जाता है ।

पके फालसों के खाने या शर्बत बनाकर पीनेसे स्वप्नदोष, प्रमेह, सोजाक, पित्तके कारणसे हुई शिकायतें, दाह-जलन, चक्कर आना और स्त्री-पुरुषोंकी पेशाबकी नालीकी जलन वगैरः रोग निस्सन्देह नाश होते हैं ।

फालसोंका शर्बत बहुत ही सुस्वादु, जायकेदार और गुणकारी होता है । हम स्वयं थोड़े पके फालसे लेकर, पत्थर या काँचके भासनमें जल डालकर १२ घण्टे भिगो रखते हैं । पीछे उन्हें उसी जलमें मसलकर अन्दाजकी मिश्री डालकर, कपड़ेमें छानते और पीते हैं । कभी-कभी काँचके बर्तनको पानीकी बर्फमें थोड़ी देर रख देते हैं, पीछे काँचके साफ टमलर—आबखोरोंमें पीते हैं । एकदम गटागट पीनेसे मजा नहीं आता । चुस्कियाँ लगाकर पीनेसे ठीक अमृतका-सा मजा आता है । मन करता है कि पीते ही रहें, पर पेट भर जानेसे पीया नहीं जाता । इस शर्बतसे खट्टी, चरपरी, पित्तकारक चीजें खानेकी



खराबियाँ, दाह-जलन, घबराहट और घोर प्यास आदि शान्त होकर मनको कली खिल उठती तथा विचित्र शान्ति मिलती है ।

जिन लोगोंको प्रमेह, सोजाक या स्वप्नदोष आदि ऊपर लिखे हुए रोग हों, वे वैशाख-जेठमें जब कि फालसोंका सीजन—मौसम होता है, फालसोंका शर्बत जरूर पीवें, अगर वे भयङ्कर रोगोंसे छुटकारा पानेकी इच्छा रखते हैं । अगर किसी दवाके साथ-साथ यह शर्बत पीया जावे, तो पंजाबमेलकी तेजीसे रोग नाश हों ।

बहुत लोग फालसोंको केवल नमक लगाकर खाते हैं; कुछ नमक, कालीमिर्च, इलायची लगाकर खाते हैं । अनेक लोग नमक, मिर्च, जीरा, धनिया डालकर चटनी बना लेते हैं । चटनी बड़ी जायकेदार और हाजिम होती है । भूख जरा भी न हो तो भी खाने पर रुचि हो जाती है ।

**आम**—संस्कृतमें आमको रसाल, पिकवल्लभ, फल-श्रेष्ठ, स्त्रियप्रिय, वसन्तदूत और नृपप्रिय आदि कहते हैं ।

आम कई तरहके होते हैं; उनके कल्मी, मामूली, अनेक नाम होते हैं और उनके जायके और गुण भी नामानुसार अलग-अलग होते हैं । जैसे, लँगड़ा, मालदा, कृष्णभोग, फजली, गुलाबपाश, तोतापरी, राड़ी, बम्बैया, लखनौवा, सफेदा वगैरः ।

उसी तरह सब तरहके आम दो प्रकारके होते हैं :—( १ ) कच्चे और ( २ ) पके ।

कच्चे आममें गुणावगुण दोनों होते हैं । कच्चे आमोंको भूभल या आगमें भूनकर, पानीके साथ मसल कर, आमका पना बनाते हैं । इसमें मुना जीरा, सेंधानोन और कालीमिर्च डालते हैं । इस पनेके पीनेसे भयानक-से-भयानक लूह क्यों न लगी हो, आराम होगा । आमके पनेको शरीर पर भी मलते हैं ।



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिए फलोंके गुणावगुण । ६२७

पके आम—मीठे हों तो वीर्य बढ़ानेवाले, ताकत लानेवाले, सुख-दायी, हृदयको प्रिय, रंगको निखारनेवाले और ठंडे होते हैं, पित्तको नहीं बढ़ाते। कसैले रसके आम कफ, अग्नि और वीर्यको बढ़ाते हैं। पेड़ पर पके आम पचनेमें भारी, वायुनाशक और खटमिट्टे होते हैं तथा कुछ-कुछ पित्तको कुपित करते हैं।

कल्मी आमोंको माल्दह आम कहते हैं। ये कसैले, स्वादिष्ट, शीतल, भारी, ग्राही—क्वाविज और रूखे (वादी करनेवाले) होते हैं। इनके खानेसे दस्त कब्जीसे होता और पेट पर अफारा आ जाता है, क्योंकि ये वादी करते हैं। इतना होने पर भी ये कफ और पित्तको नष्ट करते हैं।

आम-रस—बलदायक, भारी, वातनाशक, दस्तावर, हृदयको अप्रिय, तृप्ति करनेवाला, पुष्टि करनेवाला, और कफ बढ़ाने वाला होता है। अगर आमोंका रस निकालकर, उसमें बराबरका दूध और सफेद बूरा अथवा मिश्री अन्दाजकी मिलाकर यह कपड़ेमें छान लिया जावे, तो निहायत बढ़िया सुस्वादु “अमरस” बन जाता है। छाननेका चख बहुत गफ-गाढ़ा न होना चाहिये। ऐसे कपड़े से केवल पानी-सा निकलता है और मजेदार अंश वृथा फेंका जाता है। ऐसा दूध-मिश्री मिला अमरस पित्तको नाश करता है, तथा रुचिकारक, पुष्टिदायक और बलवीर्यवर्द्धक होता है। स्वादमें बहुत ही सुस्वादु, मीठा, और तासीरमें ठंडा होता है। यह अमरस यक्ष्मा-रोगियोंको बहुत ही मुफीद है। इससे उनके ज्वर और खाँसी वगैरः शिकायतें रफा होतीं तथा ताकत बढ़ती है। जब यक्ष्मा वालेको दमा-श्वास रोग बहुत तकलीफ देता हो, कफमें खूनके छींटे आते हों, उस दशामें अमरस विशेष लाभदायक है। एक बारमें १ छटौंका तक अमरस रोगी पी सकता है।

पके हुए आम खा या चूस कर मिश्री-मिला अधौटा दूध पीनेसे बलवीर्य बढ़ता है, इसमें स्तीभर भी शक नहीं।



**खरबूजे**—मीठे और पके खरबूजे पेशाब लानेवाले, ताकतवर, कोठा साफ करने वाले, निहायत स्वादु, शीतल, वीर्य बढ़ाने वाले तथा वात और पित्तको नाश करने वाले होते हैं। जो खरबूजे खट्टे, मीठे, खारे रसके होते हैं, उनके खानेसे घोर सोजाक और रक्तपित्त रोग पैदा होते हैं। जिनके शरीरमें वीर्यकी कमी है या उन्हें वीर्यकी कमीसे नपुंसकता रोग है, वे मौसममें उत्तम ताजा खरबूजे जरूर खाया करें। उत्तम खरबूजा खानेसे यक्ष्मा रोगमें अवश्य लाभ नजर आता है।

**सन्तरे**—सन्तरे और नारंगी एक ही चीजके दो नाम हैं, अगर भेद है तो जरासा। कुछ लोग मीठी नारंगियोंको सन्तरे कहते हैं। नागपुरके सन्तरे और सिलहटकी नारंगियाँ बहुत मशहूर हैं। नागपुरी सन्तरोंका छिलका देखकर, उनके कच्चे होनेका वहम होता है, पर वे अत्यन्त मीठे होते हैं। सिलहटी सन्तरोंमें एक खास तरहका जायका होता है।

**नारंगियाँ**—मीठी, खट्टी, अग्नि-दीपक और वात-नाशक होती हैं। मिठासके साथ जरासी खटास होनेसे वे बहुत जायकेदार होती हैं। यह हृदयको प्रिय, दिलको ताकत बरूशने वाली, भोजनको पचाने वाली, रसरक्त आदि धातुओंका पोषण करने वाली और खूनके दौरमें मदद करने वाली, नवीन रक्त पैदा करने वाली, बलवीर्य बढ़ाने वाली और शरीरको पुष्ट करने वाली होती हैं।

जिन लोगोंको खाना हजम नहीं होता, वे भोजनके बाद नारंगीको छीलकर खावें, अथवा छीलकर रस निकालें और उसमें मिश्री मिलाकर पीवें। यह नारंगीका रस निहायत जायकेदार, भोजन पर रुचि करने वाला और उसे पचाने वाला होता है। अगर २-४-६ मासके शिशुको एक दो फाँकोंका रस रोज पिला दिया जावे, तो बालकके शरीरमें अनेक रोग उठने ही न पावें। बच्चेका रंग नारंगीके



जैसा ही हो जावे । इसके नियमपूर्वक खाने वालोंके चेहरे और शरीर का रंग साफ हो जाता है; क्योंकि शरीरमें नवीन खूनका सञ्चार होता है । कमजोर-से-कमजोर आदमी सन्तरे खानेसे ताकतवर हो जाते हैं, क्योंकि नारंगी रस-रक्तादि धातुओंका पोषण करती है । जब शरीरमें शरीरके आधारभूत रस-रक्तादि बढ़ेंगे, तब दुःख ही क्या रहेगा ?

**शहतूत**—दो तरहके होते हैं, काले और सफेद । लाल और हरे भी देखे जाते हैं । पके हुए शहतूत पचनेमें भारी, स्वादिष्ट, तासीरमें ठंडे, पित्त और बादीको नाश करने वाले होते हैं ।

काले शहतूत—मीठे और जरा खट्टे होते हैं, मिठास कुछ अधिक और खटास कम होती है, इसीसे स्वाद बढ़ जाता है । ये हृदयको प्रिय; प्यास, जलन, मुँहके छाले, भौर आना, चक्कर आना, गश या बेहोशी आना, क्रय होना और पित्त ज्वरको नाश करने वाले होते हैं । ये भी पुष्टिकारक, शरीरमें नया खून पैदा करने वाले, भोजन पचाने वाले, भूख बढ़ाने वाले और वीर्य पैदा करने वाले होते हैं ।

सफेद शहतूत—ये काले शहतूतोंसे ज़ियादा मीठे पर, पचनेमें भारी होते हैं । इन गुणोंके सिवा ये और सब बातोंमें काले शहतूतोंके समान होते हैं ।

**शर्वत-शहतूत**—फालसोंकी तरह शहतूतोंका शर्वत भी बनाया जाता है और वह पीते ही घोर प्यास और जलनको दूर करके शान्ति प्रदान करता है ।

**सेव**—सेव काश्मीर और पेशावर वगैरह कई देशोंसे आते हैं । कहते हैं कि काश्मीरो सेव बढ़िया होते हैं । सेव तासीरमें निहायत शीतल, पाक और रसमें मीठे, रुचिकारक, स्वादिष्ट, हृदयको प्रिय, द्रिप्त-दिग्मागमें ताकत पैदा करने वाले, शरीरमें नवान रक्त ( नये खून )



का सञ्चार करने वाले, वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक, कफकारक और वीर्यवर्द्धक होते हैं। इनके खाने या इनका रस निकालकर भोजन के साथ या भोजनके बाद पीनेसे शरीर सुखी और तैयार रहता है। जो कमजोर नहीं हैं, वे खाना खानेके साथ या पीछे छीलकर एक दो सेव अवश्य खाया करें। इसे और नाशपातीको शास्त्रकारोंने “अमृतफल” कहा है।

**नाशपाती**—पकी नाशपाती पचनेमें हल्की, बहुत मीठी, वीर्य-वर्द्धक, तीनों दोषों ( वात-पित्त-कफ ) को नाश करने वाली, वृत्ति करने वाली, हृदयको हितकारी और दिलको ताकत देनेवाली होती है।

नाशपातीकी ही बहुत लोग “नाक” कहते हैं। पर यह नाशपातीकी अपेक्षा नर्म, मुरमुरी सी और अत्यन्त मीठी होती है। काश्मीरके सेवोंकी तरह नाशपाती भी वहाँकी सबसे अच्छी समझी जाती है। पेशावर वगैरह की नाशपातियाँ काश्मीरियोंकी अपेक्षा सख्त और गुणों में भी हीन होता हैं; हालाँकि वे भी मीठी और सुखादु होती हैं।

जो नाशपाती जितनी ही जियादा मीठी, जितनी ही जियादा रसवाली, और जितनी ही नर्म होती है, वह उतनी ही उत्तम समझी जाती है।

सेवकी तरह नाशपातीका रस भोजनके साथ या भोजनके बाद पीने या नाशपाती छीलकर खानेसे स्वास्थ्य सुधरता है, दस्त साफ होता है, भोजन आसानी से पचता है तथा रक्तका संचार अच्छी तरहों होता है। हमने भोजनके बाद नाशपातीका रस पीकर और सैकड़ मरीजोंको पिलाकर अच्छा फल देखा है। यह फल त्रिदोषनाशक है, अतः सभी तरहके रोगियोंको मुफीद है।

**अंगूर**—कच्चे अंगूर हीनगुण और भारी होते हैं। खट्टे अंगूर रक्तपित्त पैदा करते हैं। पके अंगूर या पके दाख दस्तावर, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, धातु पुष्ट करनेवाले और पचनेमें भारी होते हैं।



इनके खाने या रस पीनेसे प्यास, ज्वर, श्वास रोग, वमन होना, वातरक्त, कामला, रक्तपित्त, मूत्रकुच्छ, दाह, जलन, मेह, शोष और मदात्यय नाश होते हैं। अंगूरोंके रसमें मिश्री मिला कर पीनेसे यक्ष्मा रोग में लाभ दीखता है।

गायके थनके जैसे दाख—भारी, वीर्य-वर्द्धक, कफ और पित्त-नाशक होते हैं। किशमिशोंमें भी यही गुण होते हैं।

शरीफा या सीताफल—यह फल अत्यन्त मीठा, चिकना और वृत्तिकारक होता है। इससे दिलमें ताकत आती, वीर्य बढ़ता, रस-रक्त आदि धातुओंका पोषण होता तथा दाह, रक्तपित्त आदि रोग नाश होते, पर यह पचने में भारी होता है। भोजनके पीछे शरीफा खा लेनेसे जलन वगैरः नहीं होती।

सिंघाड़े—ये हरे और लाल तथा छोटे और बड़े के भेदसे कई तरहके होते हैं। छोटे सिंघाड़ोंसे बड़े सिंघाड़े ज़ियादा मीठे, गुणकारक और स्वादिष्ट होते हैं। उसी तरहसे हरेसे लाल अच्छे होते हैं।

सिंघाड़े तासीरमें ठंडे, पचनेमें भारी, स्वादिष्ट, कसैले, ग्राही-क्राबिज्ज वीर्यवर्द्धक, वात और कफको बढ़ाने वाले तथा पित्त, रुधिर-विकास और दाहको नाश करने वाले होते हैं।

पके सिंघाड़े—मीठे, कुछ कसैले, पुष्टिकारक, शीतल, बल और वीर्य बढ़ाने वाले तथा कुंछ कफकारी होते हैं। प्रमेह वगैरः रोगोंमें मुफीद होते हैं।

कच्चे सिंघाड़े—निहायत मीठे, रुचिकारक, शीतल, प्यास-नाशक, हृदयको हितकारी, खून-विकार, जलन, पित्त, थकान और रक्तपित्त आदि रोग नाशक होते हैं।

सिंघाड़ोंको पानीमें उबाल कर भी खाते हैं। इनकी गुलियोंको सुखा-पीसकर, सिंघाड़ेके आटेकी पूरी, पकौड़ी, हलवा प्रभृति पदार्थ बनाये जाते हैं जो बल-वीर्य बढ़ाने वाले होते हैं।



**खिरनी**—बलवीर्य बढ़ाने वाली, चिकनी, ठंडी और पचनेमें भारी होती है। प्यास, बेहोशी, मद, भ्रान्ति, क्षय और तीनों दोष नाशक होती है। रक्तपित्तमें सुफीद होती है।

**बेल-फल**—यह कच्चा और पका दोनों तरहका काम में आता है। कच्चे बेलका गूदा निकाल कर सुखानेसे “बेलगिरी” बनती और वह ग्राही या क्राबिज होती है अथवा अतिसार-संग्रहणी नाशक दवाओंमें डाली जाती है। कच्चा बेल ग्राही या क्राबिज होता है और कफ, वात तथा शूलको नाश करता है।

**पका बेल**—भारी, तीनों दोष वाला, दुर्जर, मुश्किल से पचने वाला, बदबूदार, जलन करने वाला, ग्राही, मीठा और अग्नि मन्द करने वाला होता है। कोई कहते हैं, पेड़ पर पका बेल खुशबूदार, अत्यन्त मीठा, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, गरम, मलको रोकने वाला, वायु नाशक, अतिसार, संग्रहणी, श्वास, खौंसी, क्षय और अग्नि-मान्द्य प्रभृति रोग नाशक होता है।

पेड़ पर पके हुए बेलका गूदा निकाल कर, उसे पत्थरकी कूँड़ीमें ठंडे पानीमें मसलो और कपड़ेमें छान लो। फिर उसमें छोटी इलायची, कालीमिर्च, लौंग, जरासा कपूर और मिश्री मिलाकर शर्बत बनालो। इस शर्बतके पीनेसे प्यास, वमन, जलन और थकान दूर होती और एक प्रकारकी सुख-शान्ति मिलती है। भोजनके बाद बेल खाने या बेलका शर्बत पीनेसे कब्ज नहीं होता।

**अनार**—मीठा, खट्टा और खटमिट्टा तीन तरहका होता है।

**मीठा अनार**—त्रिदोष नाशक, तृप्तिदायक वीर्यवर्द्धक, हल्का, कसैले रस वाला, ग्राही-क्राबिज, चिकना, बुद्धि और बलदाता, दाह, ज्वर, हृदय-रोग, कण्ठरोग तथा मुँहकी बदबूका नाशक है।

**खटमिट्टा अनार**—अग्निको जगाने वाला—रोचक, हल्का और किसी क्रूर पित्तकारक है।



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिए फलोंके गुणावगुण । ६३३

खट्टा अनार--पित्तको पैदा करता और वात-कफको नाश करता है ।

ज्वर आदि अनेक रोगोंमें डाक्टर लोग रोगियोंको अनार देते हैं । जिन को कुछ भी नहीं पचता, उन्हें अनारका रस देते हैं । अनारके दाने अलग करके, पत्थरके साफ चिकने खरलमें कूटने और फिर काँचके प्यालेमें कपड़े द्वारा निचोड़नेसे रस निकलता है ।

जिन यक्ष्मा-रोगियोंका शरीर हड्डियोंका कङ्काल हो जाता है, उन्हें ऐसा रस इच्छानुसार मिलनेसे बहुत लाभ होता है । यक्ष्मा-रोगीको दस्त न होते हों और खाँसी न आती हो, तभी अनारोंका रस देना चाहिये । खाँसीका जोर हो, तब अनारके रसका भस्मके द्वारा अर्क खींचकर पिलाना हितकर है ।

नीबू--भारतमें नीबू बहुत तरहके होते हैं । जैसे कागजी नीबू, बिजौरा नीबू, जंभीरी नीबू, मीठा नीबू ( मिट्ठा ) और कमला नीबू वगैरः । हमारे व्यवहारमें कागजी, बिजौरा, जंभीरी, कमला और मिट्ठा सभी कमोवेश आते हैं; पर जियादातर कागजी नीबू काममें आता है ।

कागजी नीबू--इसका छिलका कागज जैसा पतला होता है इसीसे इसे कागजी नीबू कहते हैं । यह सब तरहके नीबुओं या खट्टाइयोंमें श्रेष्ठ है । यह स्वादमें खट्टा, वातनाशक, दीपक, पाचक और हल्का होता है । यह कीड़ोंको नाश करता, पेटका दर्द दूर करता, अत्यन्त रुचिकारक, वात-पित्त-कफ तथा शूल या दर्द वालोंको बहुत ही मुफीद है । त्रिदोष, अग्निक्षय, बादीकी पीड़ा वालों, विषसे दुखियों और मन्दाग्नि वालोंको यह नीबू देना चाहिये । हर दिन खानेके साथ थोड़ा नीबूका अचार खाना या नीबूका पत्ता खाना हितकर है । हैजा, बदहजमी प्रभृति अनेक भयंकर रोग इसके खाने-पीनेसे भाग जाते हैं । भारी-से-भारी अजीर्ण, अफरा, विशुचिका,



पुराना कब्ज, पेटके कीड़े, पेटके रोग, पित्तज्वर, विषमज्वर, मुँहसे पानी गिरना, विषके विकार, चक्र आना, बेहोशी, नशा सा बना रहना, ज़ियादा नशेसे रोग होना, कय होना और ग्लानि वगैरहमें कागजी नीबू अमृत है। जिन लोगोंको बदहजमी और पित्त की शिकायत रहती है, भीतरी जलन होती है, वे मिश्रीका शर्बत काँच या पत्थर-मिट्टीके वर्तनमें बनाकर छान लें, और उसी कपड़े पर एक-दो उत्तम ताजा कागजी नीबूओंका रस निचोड़ दें। लगातार ऐसा शर्बत पीनेसे अनेक व्याधियाँ अदृश्य हो जाती हैं।

एक भाग नीबूका रस और छै भाग मिश्रीका शर्बत मिला लो। पीछे १ लौंग और दो-चार कालीमिर्च पीस-छानकर डाल दो। अगर यह पना भोजनके बाद पिया जावे, तो खाने-पिये पदार्थोंको फौरन पचा देगा। यह पना अग्निदीपक और रुचिकारक है। जिन्हें अजीर्ण बना ही रहता है, वे कम-से-कम २१ दिन इसे पीकर तो देखें। जब लाभ न हो तभी डाक्टर, हकीम और वैद्योंके दरवाजे खटखटावें।

**विजौरा नीबू**—मधुर, रसमें खट्टा, अग्निदीपक, हल्का, कंठ, जीभ और हृदयका शोधक तथा श्वास, खाँसी, प्यास और अरुचिनाशक है। अनेक आचार्य इसे त्रिदोषनाशक, रुचिकारक और अनेक रोगनाशक लिखते हैं।

**जंभीरी नीबू**—जरासी मिठास और अधिक खटास लिए होता है। यह अग्निदीपक, अत्यन्त रुचिकारक और पाचक होता है। इससे वायु नीचेकी तरफ जाती यानी गुदा की हवा नीचे जाकर निकल जाती है। यह अजीर्ण, शूल, गोला (गुल्म) और पेटके रोग नाश करता है। मलबन्ध, खाँसी, वमन, प्यास, आम-दोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीड़ा, मन्दाग्नि और पेटके कीड़ोंको नष्ट करता तथा वात और कफको भी शान्त करता है। यह बड़े जंभीरी नीबूकी



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिए फलोंके गुणावगुण । ६३५

बात है । छोटा जंभीरी नीबू प्यास और वमनको नाश करता है । खूब पका हुआ जंभीरी नीबू जियादा मीठा हो जाता है; अतः वह तृप्तिकारक, स्वादिष्ट हो जाता है । अगर खानेके साथ यह नित्य काममें लिया जावे, तो भोजन सुखसे पच जावे ।

**मीठा नीबू**—इसे शर्बनी नीबू भी कहते हैं । यह मीठा और भारी होता है । वात, पित्त, विष (जहर), साँपका जहर, खून-विकार, प्यास, शोष, अरुचि और वमन को नाश करता है । लेकिन कफ-सम्बन्धी रोगोंको पैदा करता तथा बल और पुष्टि करता है । कहते हैं, यह गुणोंमें प्रायः सन्तरेके समान होता है ।

**खजूर**—शीतल, रुचिकारक, भारी (पचनेमें), तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, काबिज, वीर्य और बल बढ़ानेवाले होते हैं । इनके खानेसे क्षय रोग, घाव, खाँसी, श्वास, प्यास, कोठेकी वायु, वमन, कफ, ज्वर, अतिसार, मद, मूच्छ्रा, रक्तपित्त, वातपित्त और मदसे हुए रोग नाश होते हैं ।

**केला**—पका केला स्वादिष्ट, शीतल, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, रुचिकारक और मांसवर्द्धक होता है । भूख, प्यास, आँखोंके रोग और प्रमेहको नाश करता है । पका केला वातज और पित्तज खाँसियोंको भी मार भगाता है । एक केलेकी गहरमें छिलका हटाकर ५ काली मिर्च या १ पीपर खाँसकर, रातमें, ओसकी जगहमें रख दो; सवेरे ही, छिलका हटाकर, पहले तो मिर्च या पीपर खालो और पीछे केला । इस उपायसे सूखी और पित्तकी खाँसी जाती रहती है । नित्य बिला नागा, एक केलेकी पकी गहरमें जरा-सा घी मिलाकर खानेसे प्रमेह भाग जाता है । अगर सरदी करे, तो १ या २ बूँद शहद भी डाल लो ।

**कच्चा केला**—तासीरमें शीतल, पचनेमें भारी, दस्तको रोकने और बाँधने वाला, कफ-पित्त, रुधिर-विकार, घाव, क्षय रोग और बादी



को नाश करता है। अतिसार-संग्रहणीमें कच्चे केलेको उबालकर छील लेते हैं। फिर २।४ लौंगोंका छौंक देकर, केलेको दही, धनिया, हल्दी, सेंधा नोन, गोल मिर्च मिलाकर पकानेसे बहुत ही जायकेदार तरकारी बन जाती है। अगर खानेवाला रोगी न हो, तो जरा-सी अमचूरकी खटाई और लाल मिर्च डाल देनेसे ऐसा स्वादिष्ट साग बनता है कि खाने वाले अँगुलियाँ चाटते हैं।

**नारियल**—यह दो तरहके होते हैं—( १ ) एक हरे ताजा गिरी वाले, और ( २ ) सूखी गिरी वाले। ताजा, नर्म, सफेद, दूधसी गिरी वालेको कच्चा नारियल कहते हैं। जो ऊपरसे सूखे होते हैं और फोड़ने पर जिनमेंसे सूखी सफेद गिरी निकलती है, उन्हें पके या सूखे नारियल कहते हैं।

**कच्चा नारियल**—इसके अन्दरकी गिरी बहुत मोठी, जायकेदार, रुचिकारक होती है। तासीरमें ठंडी, रक्तपित्त, अम्लपित्त, पित्तज्वर, दाह-जलन, प्यास, खूनविकार, वमन, भ्रम, बेहोशी और दिलके रोग नाश करनेवाली होती है। जिन लोगोंको अम्लपित्त रोग हो, खाना खानेके बाद खट्टी-खट्टी डकारें आती हों, छाती और गलेमें जलन होती हो, खाना हजम न होता हो, वे भोजनके बाद नित्य बिला नागा थोड़ा-सा कच्चा नारियल घीयाकस पर घिसकर या जोरा सा बनाकर या चाकूसे काटकर जरूर खाया करें। इससे भोजन सुखसे पच जाता है।

**सूखा नारियल**—इसकी गिरी पचनेमें ज़ियादा भारी होती है। स्वादमें मीठी, तासीरमें ठण्डा, वीर्य बढ़ानेवाली, ताकत लाने वाली, पेशाबकी थैलीको शोधनेवाली, दिलको अत्यन्त हितकारी, वात और पित्तको शान्त करनेवाली, प्यास, क्षतक्षय, दाह-जलन, प्यास और अम्लपित्त—भोजन पचते समय खट्टी डकारें आना, छाती वगैरह में जलन होना, भोजन न पचना, बदहजमी और विदग्ध अजीर्ण (भ्रम-



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिये फलोंके गुणावगुण । ६३७

प्यास, बेहोशी—धूँँके साथ खट्टी डकारें, पसीना, दाद और पित्तके अनेक रोग ) प्रभृति रोग दूर हो जाते हैं । इससे वात-पित्तकी शान्ति होती है, पर कफका किसी कदर कोप होता है ।

नोट—जिन लोगोंको पुराने चावलोंका भात भी नहीं पचता, अथवा जिन्हें चाँवल पचते ही नहीं—वें भात खानेके बाद अगर थोड़ी सी नारियलकी गिरी खा लिया करें तो भात आसानीसे पच जावे ।

हरे नारियलका पानी—बम्बई और बंगाल प्रान्तमें ऐसे नारियल बहुत पैदा होते हैं । लोग मौसम गरमीमें, प्यास लगने पर, हरे नारियलका पानी खूब पीते हैं । हरे पानीके नारियलोंमें गिरी नहीं बनती, केवल पानी भरा रहता है । इससे घोर प्यास और कलेजे की जलन फौरन शान्त होती तथा मनमें शान्तिका सञ्चार होता है । यह पानी निहायत ठंडा, स्वादिष्ट, वृष्णिकारक होता है । प्यास, जलन, मूर्च्छा और दिलके रोग इस जलके पीनेसे निश्चय ही शान्त हो जाते हैं ।

यह तारीफ उस नारियलके जलकी है जिसमें केवल जल-ही-जल होता है, गिरी नहीं पड़ती । जिस नारियलमें गिरी पड़ गई हो यानी गिरी और पानी दोनों हों, उसका पानी सुस्वादु, रुचिकारक, वृष्णिकारक, शीतल, रक्तपित्त, अम्लपित्त, वमन, भौर आना और दिलके रोग आदि नाशक होता है । यह पानी केवल पानी वाले नारियलके पानीसे ज़ियादा भारी होता है ।

खुलासा—नारियलका फल शीतल, मुश्किलसे पचने वाला, मूत्राशय शोधने वाला, क्रात्रिज, पुष्टिकारक और बलदायक होता है । वात-पित्त, खूनकी खराबी और दाहको नाश करता है । हरे नारियलकी गिरी पित्तज्वर और पित्त नाश करनेमें एक ही होता है । इसी तरह हरे नारियलका पानी शीतल, वीर्य-वर्द्धक, अग्निदीपक, हल्का, मीठा, मूत्राशय-शोधक, प्यास और पित्तको शान्त करने वाला होता है ।

नोट—प्रमेह रोगीको भी हरे नारियलका जल मुफ़ीद होता है ।



## फलोंका व्यवहार लाभदायक ।

जो लोग मोटे थलथल हों, वे अगर अपनी मुटाई नाश करना चाहें तो नीबू और नारंगी वगैरः खट्टे फल खूब खावें या उनका रस एक या दो गिलास नित्य बिला नागा पीवें। मुटाई कम होकर ताकत आवेगी ।

जो लोग कमजोर हों वे फलोंका व्यवहार खूब करें। ताजे पके सेब, नाशपाती, अंगूर, केला और अंजीर इस कामके लिए बहुत अच्छे हैं, क्योंकि इनमें चीनी बहुत होती है और जल्दी ही हजम होकर शरीरकी नसोंमें पहुँच जाती है। इनकी मददमे गई हुई ताकत फिर लौट आती है। शरीरमें खून किसी भी कारणसे कम हो गया हो तो, फलोंके खानेसे वह फिर बढ़ जाता है। केलेमें यह गुण बहुत ज़ियादा है। बच्चोंके बदनमें जो खूनकी कमी होती है, उसके लिये फल सर्वोत्तम दवा है।

जिन लोगोंको पेचिश हो गई हो, उन्हें फल खून खाने चाहिए। अगर पेचिश बहुत ही बढ़ गई हो, तो खजूर और अंगूर खाने चाहिए।

अगर आदमी भोजनके साथ सदा फलोंका व्यवहार करता रहे, तो उसे रोग बहुत ही कम सतायेंगे, और पुराने रोगोंका जोर कम हो कर वे नाश हो जावेंगे।

अगर शरीरकी कान्ति सुधारनी हो, तो आप फलोंका व्यवहार करें। इस कामके वास्ते नारंगी सबसे अच्छा फल है, क्योंकि इसकी मददसे खूनका ज़हरीला अंश दूर हो जाता है।

बहुतसे अनाड़ी वैद्य कहते हैं कि, गठिया-रोगीको फल न खाने चाहियें या खट्टे फल न खाने चाहियें। यह उनकी गलती है। फलोंकी खटाई गठियामें लाभदायक है। खूब फल खानेसे गठिया रोग भाग ही जाता है।



## धातु-रोगियोंकी जानकारीके लिए फलोंके गुणावगुण । ६३६

फलोंमें इन्द्रिय-जुलाबकी भी ताकत है। वे गुर्दोंके खराब मैलको निकाल डालते हैं। गुर्दोंमें मैल जम जावे, तो फल ही खाइये। नारंगी और तरबूजोंसे यह काम खूब होता है। वे पेशाब द्वारा सारा मैल निकाल देते हैं और उनके काममें मदद देते हैं।

अजीर्ण रोगमें आठ-दश दिनों तक केवल फल खानेसे रोग भाग जाता। कमजोर अजीर्ण रोगीको केलेका गूदा खूब पतला करके और उसमें मलाई मिलाकर खाना हितकर है। दो भाग केला और दो भाग मलाई मिलानी चाहिये।

सेब, नाशपाती, नारंगी, केला, रसभरी, शहतूत और अनार में अजीर्ण-नाशक शक्ति है। सबसे अधिक गुण अंगूर, खूबानी, अंजीर, किशमिश और खजूरमें पाया जाता है। जितनी अजीर्ण नाशक दवाओंका इश्तिहार दिया जाता है, उनमें “अंजीर” अवश्य होता है।

अगर हृदयका काम धीमा हो, या उसमें गरमी आ गई हो, तो उस शिकायतके दूर करनेको फलोंका व्यवहार करें। फलोंमें जो नमक और खटाई होती है, वह हृदयके काममें एक तरहकी संचालन-शक्ति पैदा करती है। हृदय फलोंकी चीनीको मामूली चीनीसे जल्दी पचा लेता है।

वैद्यकके मतसे--प्रमेह-रोगियोंके लिए नारंगी, अमरुद, ऊखका रस, आम, इमली, कुम्हड़ा, लहसन, प्याज, मूली, केला, आलू, अरबी, पके फल, सूखे मेवे, नीबू, अदरक आदि हानिकारक या अपथ्य हैं। परन्तु आधुनिक चिकित्सकों की राय है कि प्रमेह-रोगको काराजी नीबू या पाती नीबू, नरम कच्चा केला, केलेके फूल, परवल, बैंगन, सहजनेकी डंडी, सिंघाड़े, किशमिश, बादाम, अनार और खजूर आदि पथ्य या हितकर हैं।

नोट—प्रमेहोंमें पुष्टिकर पदार्थ अपथ्य हैं, पर शुक्र प्रमेहमें पथ्य हैं।



## बल-वीर्यवर्द्धक और पुष्टिकारक फल ।

फालसे, मीठे आम, आमरस, खरबूजे, शन्तरे, शहतूत, सेव, सीताफल, सिंघाड़े, पेड़का पका बेल, कनार, मीठा नीबू, पका केला, नारियलकी सूखी गरी आदि फल बल-वीर्य वर्द्धक और दिल-दिमागमें ताकत लाने वाले होते हैं । सिंघाड़े, पका केला और हरे नारियलका जल आदि प्रमेहनाशक होते हैं । नारंगी, शहतूत, सेव और नाशपाती नवीन रक्तका सञ्चार करते हैं ।

---



## उत्तमोत्तम परीक्षित नवीन योग ।

हमें अनेक उत्तमोत्तम योग अनेक यूनानी और वैद्यक-ग्रन्थों तथा मासिक-पत्रोंमें मिले हैं, उन्हें हम पाठकोंके उपकारार्थ नीचे प्रकाशित करनेका लोभ संवरण नहीं कर सकते । इनमें से अधिकांश नुसखे हमने इन १०।१५ सालोंमें रोगियोंको दिये या बताये । जिन्होंने अच्छा चमत्कार दिखाया, वे ही यहाँ लिखे जाते हैं । करीब-करीब सभी नुसखे आजमूदा हैं । चन्द ऐसे भी हैं जिन्हें हम आजमा नहीं सके । उनके आगे “अपरीक्षित” शब्द लिख दिया है । जिनके सामने “परीक्षित” शब्द लिखा है वे कई-कई बारके परीक्षित हैं । जिनके सामने “परीक्षित-अपरीक्षित” कुछ भी नहीं लिखा है, वे एकाध बार ही काममें लिये गये हैं । बेकाम नुसखा एक भी नहीं है । बहुतसी अँग्रेजी पेटेन्ट दवाइयाँ इस बार लिखी हैं, वे सभी एक-दो बार आजमाई गई हैं । लोग उनको बेच-बेच कर लाखों रुपये कमा रहे हैं ।

### ( १ ) स्वप्नदोष नाशक योग ।

स्वर्ण बंग	....	....	१ तोले
प्रवाल भस्म	....	....	१ तोले
अभ्रक भस्म	....	....	१ तोले
शुद्ध शिलाजीत	....	....	४ तोले
शुद्ध अफीम	....	....	६ माशा

इन सबको खरलमें डाल, ऊपरसे बकरीका दूध डाल-डाल कर, ३ दिन तक खरल करो और मूँग-समान गोलियों बना लो ।



सवेरे-शाम, एक-एक गोली खाकर, मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुरोग एवं अन्य 'वीर्य'-विकार नाश होकर मैथुन-शक्ति बढ़ती है ।

### ( २ ) सरल वाजीकरण योग ।

सितोपलादि चूर्ण	....	....	१ तोला
भैंसका घी	....	....	१ तोला

इन दोनोंको काँच या मिट्टीके बर्तनमें रख लो । फिर उसी बर्तनमें गाय या भैंसका धारोष्ण दूध दुह लो और पीलो । इस तरह दोनों समय लगातार २-५ मास पीनेसे परम वाजीकरणका काम देगा ।

### ( ३ ) नपुंसकत्वहर योग ।

मक्खन	....	....	१ तोले
मिश्री	....	....	१ तोले
चाँदीके वर्क	....	....	२ नग बड़े

इन तीनोंको मिलाकर सवेरे-शाम खानेसे ४-५ मासमें सहजमें नामर्दी जाती रहती है ।

### ( ४ ) अपूर्व वाजीकरण योग ।

गिलोयका सत्त ( असली )	....	....	६ माशे
बड़का दूध	....	....	६ ”
मिश्री	....	....	१ तोले

तीनोंको मिलाकर, दोनों समय खाओ । आपका वीर्य शुद्ध होगा, वीर्यके सब विकार दूर होंगे, वीर्य गाढ़ा और पुष्ट होगा तथा संभोगमें पूरा आनन्द मिलेगा ।

### ( ५ ) स्वप्नदोष नाशक गरीबी योग ।

असगन्ध नागौरी	....	....	५ तोले
---------------	------	------	--------



## उत्तमोत्तम नवीन योग ।

६४३

काली मूसली	...	...	५ तोले
तालमखानेके बीज	...	...	५ ”

सबको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो । मात्रा—३ माशे । समय—सवेरे-शाम । अनुपान—गरम दूध मिश्री-मिला हुआ । इसके लगातार खानेसे बलवीर्य बढ़ेगा और स्वप्नदोष रोग दूर होगा ।

## ( ६ ) अनुभूत बाजीकरण योग ।

बबूलका गोंद	...	...	२ तोले
ढाकका गोंद	...	...	२ ”
शतावर	...	...	२ ”
काली मूसली	...	...	२ ”
सफेद मूसली	...	...	२ ”
असगन्ध नागौरी	...	...	२ ”
मुलहठी ( छिली )	...	...	२ ”
तालमखानेके बीज	...	...	२ ”
मिश्री	...	...	१६ ”

मिश्री छोड़, सब दवाओंको कुटी-छनी दो-दो तोले मिला लें । फिर उनमें चूर्णके समान १६ तोले मिश्री पिसी-छनी मिला दें । सवेरे-शाम एक-एक तोले दवा खाकर, मिश्री-मिला गरम दूध पीवें ।

मैथुन-शक्ति बढ़ानेमें यह योग परमोत्तम है । लगातार ६० दिन खा देखें । फल न होगा । परीक्षित है ।

## ( ७ ) प्रवाल योग ।

मूँगा भस्म	...	...	२ रत्ती
केलेकी पकी फली	...	...	१ नग

पके केलेकी छिली फलीमें मूँगा भस्म मिलाकर, सवेरे-शाम खानेसे मैथुनेच्छा इतनी बढ़ जाती है कि लिख नहीं सकते । आप इसे लगातार ४० दिन ही खाकर फल देखें ।



नोट—मूँगा मसम कजलीके योगसे बनी हुई ही ऐसा चमत्कार दिखावेगी ।  
विधि पीछे इसी मागनें लिखी है ।

### ( ८ ) पुष्टिकारक महौषधि ।

जायफल	...	...	१ तोले
अगर ( काली )	...	...	१ ”
रुमी मस्तगी	...	...	१ ”
बालछड़	...	...	१ ”
दालचीनी	...	...	१ ”
खसकी जड़	...	...	१ ”
शाहबलूत	...	...	१ ”
कस्तूरी	...	...	१ माशे
सालम मिश्री	...	...	६ माशे
मिश्री	...	...	११ तोला

इन सबको पिसी-छनी तोल-तोलकर मिला लो । पीछे सारी दवाके वजन से तिगुना असली “शहद” लेकर मिला दो । सारी दवाएँ १८ तोले १० माशे हैं, अतः शहद ५६।। ( साढ़े छप्पन ) तोले मिलाना ।

मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है । इस दवाके सवेरे-शाम चाटनेसे खूब बलवीर्य बढ़ता और दिल खूब खुश रहता है । ताकतके लिए उत्तम दवा है ।

### ( ९ ) पुष्टिकारक गरीबी योग ।

सूखी दूधी ( छोटी )	...	...	१ पाव
मिश्री ( पिसी )	...	...	१ पाव

दोनोंको पीसकर मिला लो । मात्रा—१ तोला । अनुपान—१ पाव गायका दूध । समय—सवेरे-शाम । इस दवासे शरीर पुष्ट और बलवान होता है ।



## उत्तमोत्तम नवीन योग ।

६४५

नोट—दूधका चुप छत्ता-सा होता है । ऊपरको कम आता है । ज़मीन पर ही फैलता है । दुद्धी तीन तरहकी होती है:—

( १ ) नौकदार लाल पत्तोंकी, ( २ ) गोल पत्तोंकी, ( ३ ) मूँगके पत्ताने-समान छोटे पत्तोंकी । तीनों प्रकारकी दुद्धियों में दूध निकलता है । इसका सर्वाङ्ग दवाके काम आता है । मात्रा—२ माशे की ।

## ( १० ) नपुंसकत्व नाशक सरल योग ।

छिले बादाम	...	...	४ नग
शहद	...	...	१ माशे
मिश्री	...	...	१ माशे

बादामोंको पत्थर पर बिसो । फिर उस पर शहद और मिश्री ढालकर मिला लो । इस तरह सवेरे-शाम चाटनेसे ४६ मासमें खूब ताकत आती है । नामर्द भी मर्द हो जाता है ।

## ( ११ ) पुष्टिकारक हलवा ।

ढाककी छालका रस	...	...	२ तोले
गेहूँकी मैदा	...	...	२ ”
सफेद बूरा	...	...	२ ”
घी	...	...	२ ”

इन सबका हलवा बनाकर, दोनों समय खानेसे शरीर खूब शुष्ट होता और अपूर्व आनन्द आता है ।

## ( १२ ) टानिक पिल्स ( मद्रासी ) ।

क्विनाइन सल्फ	...	...	१ ग्रैन
सलफेट आफ आयर्न	...	...	३ ग्रैन
आइल कोज	...	...	२ मिनिम

यह १ गोली का मसाला है । आप इसी हिसाबसे चाहे जितनी गोली बनालें । यह खूब ताकत लाती है । मद्रासकी पेटेन्ट दवा है । खूब बिकती है ।



## ( १३ ) कानपुरी शक्तिवर्द्धक दवा ।

नागौरी असगन्ध	...	...	२॥ तोले
सत गिलोय ( गुर्च )	...	...	१ ”

इन दोनोंको भांगरेका रस डाल-डालकर खूब घोटो । घुट जाने पर दो-दो माशे की गोलियाँ बना लो । इनके सवेरे-शाम खानेसे खूब ताकत आती है, पर ३-४ मासमें ।

## ( १४ ) धातुपुष्टिकी अपूर्व आजमूदा गोली ।

एक्सट्रैक्ट नक्सवोमिका	...	...	४ ड्राम
एक्सट्रैक्ट डामियाना पल्व	...	...	२ औंस
किनाइन सल्फास	...	...	१ औंस
गमबैजोइन	...	...	२ औंस
हाइपो फासफेट आब आयरन	...	...	३० ग्रैन

इनको खरलमें घोटकर, ढाई-ढाई रत्तीकी गोलियाँ बना लो । दिनमें ३ बार, गायके दूधके साथ, ये गोली खानेसे नामर्द मर्द हो जाता है । ये गोलियाँ अनेक कारखानोंसे पेटेन्ट होकर बिक रही हैं । हैं भी खूब मुफीद । परीक्षित हैं ।

## सर्वाङ्ग शक्तिवर्द्धक रस-योग ।

## ( १५ ) चाँदी-भस्म ।

शुद्ध पारा	...	...	२ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	२ ”
शुद्ध चाँदीका बुरादा	...	...	१ ”

पहले पारे और गन्धकको खरलमें डाल, ७२ घण्टे तक लगातार खरल करो, जब बिना चमककी कजली हो जावे, उसमें चाँदीका बुरादा भी मिला दो और “नीबूका रस” डाल-डालकर लगातार ७२ घण्टे तक खरल करो । पीछेसे टिकिया बना सुखा लो ।



अब काँटेदार चौलाई एक पाव सिलपर पीसकर लुगदी बना लो । उस लुगदीमें टिकियाको रखकर, कपड़मिट्टी करो और गजपुटमें १६ सेर आरने कण्डे डाल, उनके बीचमें दवाको रख आग दे दो । जब आग और दवा ठण्डी हो, जावें निकाल लो । आपको उत्तम भस्म मिलेगी ।

इस भस्मकी मात्रा १ चाँवलसे चार चाँवल तक है । सवेरे-शाम दो-दो तोले मक्खन में १ मात्रा रख कर चाटो ।

इस भस्मके चाटनेसे वीर्य-सम्बन्धी समस्त रोग नाश हो जावेंगे । प्रमेह, स्वप्नदोष, नपुंसकता आदिकी यह भस्म दुश्मन है । इससे शरीर के सभी अङ्गोंमें ताकत आती है । दिल, दिमाग और यकृत या लिवरकी कमजोरी नाश हो जाती है । अपूर्व आनन्ददायी चीज है । ३-४ मास लगातार चाटने से राजबकी ताकत पैदा होती है ।

( १६ ) स्वप्नदोष नाशक अचूक नुसखा ।

गोखरू	....	....	५ तोले
तालमखाने	....	....	५ ”
शतावर	....	....	५ ”
कौंचके बीज ( छिले हुए )	....	....	५ ”
खिरंटीके बीज	....	....	५ ”
मिश्री	....	....	१२॥ ”

सबको अलग-अलग कूट-पीसकर छान लो और अलग-अलग तोल-तोलकर पाँच-पाँच तोले मिला लो । चूर्णके वजनकी आधी मिश्री मिला लो ।

सवेरे-शाम छै-छै माशो खा कर, ऊपरसे धारोष्ण दूध पीनेसे शुक्रमेह, शीघ्रपतन, स्वप्नमेह, स्वप्नदोष, धातुक्षीणता नाश होकर, २१ दिनमें ही अपूर्व चमत्कार दीखने लगता और खूब बल-वीर्य बढ़ता है । अगर कोई इसे चार महीने लगातार सेवन करले, तो धातु-सम्बन्धी रोगकी जड़ ही नाश हो जावे ।



## ( १७ ) अंगरेजी पेटेन्ट टानिक पिल्स ।

( ताकत की गोलियाँ )

क्विनाइन सल्फ	...	...	१ ड्राम
फेरी रिडेटक्म	...	...	३ ड्राम
ऐक्सट्रैक्ट केलेम्बा	...	...	१ ड्राम
ऐक्सट्रैक्ट डामियाना	...	...	३। ड्राम

इन सबको खरलमें डालकर खरल करो और ऐक्सट्रैक्ट जैन्सन जितना मिला सको मिला दो और पाँच-पाँच रत्तीकी गोलियाँ बना लो ।

एक गोली रोज गरम दूध-मिश्रीके साथ खानेसे बदनमें खूब ताकत आती है । यह दवा पेटेन्ट है और खूब बिकती है ।

## ( १८ ) खून बढ़ानेवाला नुसखा ।

गाय या बकरीका दूध	...	...	१ पाव
मधु ( शहद )	...	...	६ माशे
गायका घी ( ताजा )	...	...	१० माशे
काली मिर्च ( पिसी-छनी )	...	...	६ रत्ती
मिश्री ( पिसी हुई )	...	...	१ तोले

सबेरे शाम, ऐसा दूध पीनेसे बहुत ही दुबला-पतला आदमी खूब हृष्ट-पुष्ट और मोटा-ताजा हो जाता है । अगर कोई ताकतवर दवा खाकर ऊपरसे यह दूध पिया जावे, तो मरा हुआ खून भी जो उठे । शरीर हिंसुतके समान लाल हो जावे । क्षय या थाइसिस रोगीमें खूनका नाम भी नहीं रहता, इस दूधको पिलानेसे रोगीके बदनमें काफी खून पैदा हो जाता है ।

धारोष्ण दूधमें घी और शहद वगैरः मिलाकर पीना चाहिये ।



## ( १६ ) परम पुष्टिकर पारेकी भस्म ।

देशी नौसादर ( पिसा हुआ )	...	...	५ तोले
तूतिया ( पिसा हुआ )	...	...	५ तोले
शुद्ध पारा	...	...	३ तोले

नोट—पारा शुद्ध लिया जावे या हिंगुलसे निकाल लिया जावे । तूतियाको शुद्ध करनेकी जरूरत नहीं ।

बनानेकी तरकीब ।

चूल्हे पर लोहेकी छोटी सी कढ़ाही रखो । कढ़ाहीमें पहले ढाई तोले पिसी नौसादर बिछा दो । नौसादर पर ढाई तोले पिसा तूतिया बिछा दो । तूतिया पर तीनों तोले पारा धीरेसे रख दो । अब पारेके ऊपर बाकी बची ढाई तोले नौसादर बिछा दो और नौसादर पर ढाई तोले बचा हुआ तूतिया बिछा दो । चूल्हेमें मन्दी-मन्दी आग लगाओ । आग जलाकर कढ़ाहीमें, धीरे-धीरे एक सेर पानी डालो । जब यह एक सेर पानी जलकर सूख जावे, फिर एक सेर पानी धीरे-धीरे डालो । जब यह दूसरा एक सेर पानी भी जलकर सूख जावे, तब फिर तीसरी बार एक सेर पानी डालो और जला सुखा दो ।

तीसरे सेर जलके सूखते ही कढ़ाहीको चूल्हेसे उतार लो । उसमें रखी दवाको बारम्बार तब तक धोओ जब तक कि काला पानी आना बन्द न हो जावे । जब काला पानी न आवे, दवाको एक खरल में डाल दो ।

दवाको खरलमें डालकर, सत्यानाशीकी नर्म-नर्म पत्तियों और टहनियोंका स्वरस चार तोले उसमें डालो और एक घण्टे तक लगातार घोटो । एक घण्टे घोटकर, दवाको पानीसे धो डालो । इसके बाद दवाको फिर खरलमें डालो और सत्यानाशीका स्वरस चार तोले डालकर, फिर एक घण्टे घोटो । घुट जाने पर फिर उसे धो डालो । यह दो बार हुआ । अब फिर तीसरी बार दवाको खरलमें डालकर, ऊपरसे चार



तोले सत्यानाशीका स्वरस डालो और १ घण्टे घोटकर धो डालो । इसी तरह चौथी, पाँचवीं, छठी और सातवीं बार खरलमें डाल-डाल कर, ऊपरसे चार-चार तोले सत्यानाशीका स्वरस डाल-डाल कर प्रत्येक बार एक-एक घण्टे घोटो और धोओ । सात बार घुटाई-धुलाई होजाने पर, दवाकी टिकिया बना लो और उसे सात दिन पड़ी रखो । वह सूख कर कड़ी हो जावेगी ।

नोट—सत्यानाशी कटेरीकी कोमल-कोमल पत्तियां और टहनियाँ ला कर बिना जल डाले, सिलपर पीसो और अट्ठाईस तोले रस कपड़ेमें निचोड़ लो । सात प्यालियोंमें चार-चार तोले रस वजन करके मर लो । हर बार घोटते समय, एक प्यालीका रस खरलमें डाल लो ।

जब सात दिनमें टिकिया सख्त हो जावे, पाँच तोले मयूरशिखा लाकर सिलपर पीस लुगदी बना लो । उस लुगदीके बीचमें टिकियाको रख कर गोला सा बना लो । उस गोले पर एकके बाद दूसरी—इस तरह सात कपरौटी कर लो और सुखाओ ।

अब एक गड्ढेमें, बकरीकी सूखी मैंगनी ३ सेर डाल कर जलाओ, जब एकदम धूआँ न रहे, उस कपरौटी किये हुए गोलेको आगके बीचमें रख दो, ताकि वह नीचे-ऊपर आगमें ढका रहे । दो दिन तक उसे मत छेड़ो । तीसरे दिन शीतल होने पर निकाल कर देखो, पारा आपको बताशेकी शकलमें मिलेगा । उसे पीस-छानकर रख लो । वजन ठीक उतना ही होगा, जितना कि पारा रखा था यानी तीन तोले अगर जरा-बहुत तोलमें कम हो जावे तो हर्ज नहीं ।

### सेवन-विधि ।

इसकी मात्रा दो चाँवल भर की है । एक मात्रा भस्म, एक या दो तोले ताजा मक्खनमें मिलाकर नित्य चोटो । ईश्वरकी दयासे, १५ दिनमें ही, बूढ़ोंमें भी जवानीका जोश दिखाई देगा । जन्मके नामर्दके सिवा सब नामर्द मर्द हो जावेंगे ।



## पथ्यापथ्य ।

तेल, खटाई, लाल मिर्च, गुड़, दही और मछली न खवें ।  
जल्दी पचने वाली तर चीजें खावें ।

भस्म बनानेसे पहिले नीचे लिखी चीजें तैयार रखो:—

( १ ) पिसा-छना देशी नौसादर	...	...	५ तोले
( २ ) पिसा-छना तूतिया	...	...	५ " "
( ३ ) शुद्ध या हिंगुलोत्थ पारा	...	...	३ " "
( ४ ) सत्यानाशीका स्वरस ( ७ बार को )	...	...	२८ " "
( ५ ) मयूरशिखा बूटी ( ताजा हरी )	...	...	५ " "
( ६ ) बकरीकी मैंगनी	...	...	३ सेर

नोट—मयूरशिखाको हिन्दीमें मोरशिखा, बंगलामें मयूरशिखा, गुजरातीमें मोरशिख, फारसीमें असनानें या असलाण कहते हैं । लैटिनमें सिलोसिया क्रिस्टाटा कहते हैं । इस बूटीके लुप लगते हैं । इस पर मोरकीन्सी चोटो होती है । इसीसे इसे मागशिखा कहते हैं । दवाके काममें इसका सर्वाङ्ग आता है । यह बूटी पित्त, कफ पित्त, अतिसार, बलप्रहदोष, मूत्रकृच्छ्र आदि नाश करती और वशीकरणके कामोंमें अच्छी समझी जाती है ।

सत्यानाशीके भी लुप होते हैं । यह खंडहर मकानों और सूखे ताल-तलैयाँमें पैदा हाती है । इसके पत्त, फल, डाली वगैरः सब अंगोंमें काँटे होते हैं । फूल पीले आते हैं । फलका डोरा होता है । उसमें काले काले बीज निकलते हैं । पत्ते तोड़नेसे पीले रंगका दूध निकलता है । इसकी जड़को “चोक” कहते हैं । इसके दूधका रङ्ग सुवर्णके जैसा होता है । इसीसे इसे “स्वर्ण-क्षीरं” कहते हैं । इसके दूधकी एक बूँद घीमें मिलाकर आँखोंमें लगानेसे फूला और रतौंधी नाश हो जाते हैं ।

## धन्यवाद ।

यह नुसखा पं० शालग्रामजी शर्मा, ज्योतिषी मुकाम मंडी, जिला लुधियाना का है । आपने इसे वैद्य और धन्वन्तरिमें छपाया था । हमारे एक मित्रने वहींसे उपयोगी समझ कर लिया है । हमने इस नुसखेको खूब खोला-खाल कर



समझा दिया है । कहीं भी सन्देहकी बात नहीं रखनी है । अफसोसकी बात है, हम इसे खुद बनाकर आजमा नहीं सके । अगर हमें बनाने और किसीको सेवन कराकर आजमानेका मौका मिला तो नतीजा लिख-छाप कर चिट लगा देंगे । पाठक बनावें और देखें ।

## महावाजोकरण योग ।

( शिंगरफकी सफेद भस्म )

### पहला काम ।

पाँच तोले बढ़िया रुमी 'शिंगरफकी डली'को एक कढ़ाहीमें रखो । उसके ऊपर, एक सेर पिसा हुआ सूखा "बिरौजा" डाल दो । नीचे आग लगाओ । पहले १ घण्टा मन्दी आग दो । बाद १ घण्टेके मध्यम और फिर तेज आग दो । पहले बिरौजा गल जावेगा । उसके बाद आग लग उठेगी । जब सारा बिरौजा जल जावे, तब शिंगरफकी डलीको निकाल लो ।

नोट—शिंगरफकी शोधनेकी जरूरत नहीं । अशुद्ध शिंगरफकी डली लेनी चाहिये । आग देनेसे सारा बिरौजा जल कर उड़ जावेगा । कढ़ाहीमें केवल शिंगरफकी डली रह जावेगी । मुमकिन है, कढ़ाहीमें इधर-उधर बिरौजेका थोड़ा सा काजल चिपटा रह जावे । मतलब यह है कि बिरौजा नहीं रहेगा । काजल वगैरह छोड़ कर शिंगरफकी डलीको निकाल लेना ।

### दूसरा काम ।

बिरौजेका काम खत्म करके, शिंगरफकी डलीको लेकर एक साफ कढ़ाहीमें रखो । नीचे मन्दी-मन्दी आग जलाओ । डलीके ऊपर "फासफरसका तेल" एक-एक बूँद डालो । यहाँ तक कि, बीस तोले "फासफरसका तेल" खत्म कर दो ।

नोट—फासफरसका तेल जल्दबाजीसे एक-एक बूँदसे अधिक न डालना । एक-एक बूँद ही डालना । इस तेलके डालनेसे चमक सी निकलेगी । ध्यान रखें, आगकी लपटें न उठने पावें । लपटें उठनेसे शिंगरफ उड़ जावेगा और आपका धन और परिश्रम बृथा चला जावेगा । एकसे अधिक बूँदें



ढालनेसे बह कर डलीके नीचे चला जावेगा और शिंगरफ कम हो जा सकता है ।

### तीसरा काम ।

फासफरसके तेलका काम खत्म करके शिंगरफकी डलीको निकाल लो । फिर साफ कढ़ाहीमें शिंगरफकी डली रखो । डली पर पाँच तोले कुटी हुई मालकाँगनी, पाँच तोले कुटे हुए भिलावे, पाँच तोले घी और पाँच तोले शहद डालो । मतलब यह कि, इन चारोंके बीचमें शिंगरफकी डली रहे । चूल्हेमें पहले ४ घण्टे मन्दी-मन्दी आग लगाओ, इसके बाद ४ घण्टे मध्यम और अन्तके ४ घण्टे खूब तेज आग लगगओ ।

नोट—पहले चार घण्टेकी आग भिलावे आदिको तेल निकालनेके लायक बना देती है । इसके बादके चार घण्टेकी आग सब तेलको जुदा करके डली पर कोट बना देती है । अन्तकी चार घण्टेकी आग शिंगरफको सुरक्षित रखते हुए, उसे अपना सत्त्वांश देकर भस्म हो जाती है । इस समय जरा सावधानीकी जरूरत है । ध्यान रखो, ज्योंही काँगनी, भिलावे प्रभृति चारों पदार्थ जल जावें, कढ़ाहीको फौरन आगसे नीचे उतार लो । अगर भिलावे वगैरःकी भस्म हो जाने पर भी आप कढ़ाहीको आग पर जरा भी देर रखे रहोगे, तो शिंगरफकी डलीसे पारा उड़ जावेगा और आपका किया-घरा काम मिट्टी हो जावेगा । काँगनी, भिलावे वगैरःके साथ आग देनेके समय आप स्टोव चूल्हेसे काम लें, क्योंकि उसमें आगको तेज, मन्दा और बहुत तेज करनेका सुभीता होता है । बल्कि इस भस्मके सारे ही काम स्टोव चूल्हेसे लो । जब एक बार १२ घण्टे आग दे चुको, भिलावे वगैरः जल जावें, आप डलीको कढ़ाहीसे निकाल कर साफ कर लें और फिर उसे साफ कढ़ाहीमें रखें ।

जब एक बार काँगनी-भिलावे वगैरःके साथ, मन्दी, तेज और बहुत तेज आग दे चुको, डलीको निकाल साफ कर, साफ कढ़ाहीमें रखो और फिर उसी तरह पाँच तोले मालकाँगनी, पाँच तोले भिलावे, पाँच तोले घी और पाँच तोले शहद डालकर चार घण्टे मन्दी, चार



घण्टे बीचकी, और चार घण्टे तेज आग दो । जब चारों चीजें जल जावें, फौरन ही डलीको निकालकर साफ करो और साफ कढ़ाही में रखो ।

अब तीसरी बार फिर डलीके ऊपर कुटी हुई मालकाँगनी, कुटे हुए भिलावे, घी और शहद पाँच-पाँच तोले डालकर, चार घण्टे मन्दी, चार घण्टे बीचकी और चार घण्टे तेज आग दो । जब भिलावे वगैरः जल जावें, फौरन डलीको निकाल साफ करो और साफ कढ़ाहीमें रखो ।

चौथी बार फिर साफ डली पर पाँच-पाँच तोले कुटी काँगनी, भिलावे, घी और शहद डालकर मन्दी, बीचकी और तेज आग दो । जब सब चीजें जल जावें, डलीको फौरन निकाल कर साफ कर लो ।

नोट—भिलावे वगैरःके साथ चार बार आग लगानेसे यह काम खतम होगा । इन चारों आँचोंके लिए, चार जगह, पाँच-पाँच तोले कुटी मालकाँगनी, पाँच-पाँच तोले कुटे भिलावे, और पाँच-पाँच तोले घी और शहद तोलकर प्यालोंमें रख लेना ।

यहाँ तक तीन काम खतम होंगे और चौथा काम चलेगा ।

### चौथा काम ।

भिलावे वगैरःके साथ चार बार आग देकर डलीको निकालो और साफ करके साफ कढ़ाहीमें रखो । नीचे मन्दी आग लगाओ और साथ ही ऊपरसे आकका दूध एक-एक बूँद डली पर डालो, जब तक कि पास रखे एक सेर आकका दूध न टपका लो ।

नोट—दूध एक-एक बूँदसे ज़ियादा मत डालना और डलीके ऊपर डालना—इधर-उधर नहीं । कोई ३० घण्टोंमें दूध टपक चुकेगा । एक आदमी उठे, दूसरा बैठ जावे । रात-दिन काम चलता रहे । जल्दबाज आदमी कामको बिगाड़ देगा ।

यहाँ चार काम खतम होंगे । दूधके खतम होते ही डलीको निकाल साफ कर, साफ कढ़ाहीमें रखो और पाँचवा काम शुरू करो ।



### पाँचवाँ काम ।

जब आकका दूध खत्म कर दो, डलीको निकाल, साफ कर, साफ कढ़ाईमें रक्खो, नीचे मन्दी आग दो और डलीके ऊपर प्याजका स्वरस एक-एक बूँद टपकाओ, जब तक कि छै सेर रस टपका न लो ।

नोट—एक बोतल या तीन पाव प्याजका रस टपकानेमें प्रायः २४ घण्टे लगेंगे—६ सेर या आठ बोतल रस टपकानेमें  $२४ \times ८ = १९२$  घण्टे या आठ दिन-रात लगेंगे । कई मेहनतियोंके लगनेसे यह काम अच्छी तरह होगा । आप ऐसा भी कर सकते हैं कि, आज एक सेर रस टपकावें, फिर आग ठंडी कर दें । फिर दूसरे दिन एक सेर टपकावें । पर इस तरह काम बहुत देरसे होगा और उतना अच्छा भी न होगा । अगर वैसा प्रबन्ध न हो सके, तो बीचमें आराम ले-लेकर ही करें ।

यहाँ आकर पाँच काम खत्म होंगे ।

### छठा काम ।

जब प्याजका सारा रस टपकांलो, तब डलीको निकाल साफ कर, साफ कढ़ाईमें रक्खो । नीचे मन्दी आग दो, ऊपरसे एक-एक बूँद ब्राण्डी ( Brandy ) तब तक टपकाओ, जब तक कि पूरी चार बोतलें न टपकावें ।

नोट—एक बोतल ब्राण्डी टपकानेमें प्रायः बारह घण्टे लग जाते हैं । यहाँ आकर छठा काम खत्म होगा ।

### सातवाँ और आखिरी काम ।

मुर्गीके अण्डोंकी भस्म दस तोलेको आकके दूधमें खरल करो और उसे शिंगरफकी डलीपर लहेस दो और डलीको सुखा लो । पीछे एक मिट्टीकी सराईमें आधी पाँच तोले मुर्गीके अण्डोंकी भस्म बिछा दो । उस भस्म पर शिंगरफकी डली, जो दूधमें लिहसी है, रखदो । उस डली पर फिर आधी यानी पाँच तोले भस्म बिछा दो । फिर ऊपरसे दूसरी सराई रख कर, दोनों सराईयोंकी सन्धें कपड़मिट्टीसे



बन्द कर दो । सन्धे बन्द करके ऊपरसे चारों तरफ भी कम-से-कम सात-सात कपरौटी कर दो, ताकि हवा जानेको साँस न रहे । अगर चरा भी साँस रहेगी, तो पारा उड़ जावेगा । कपरौटी की हुई सराइयों को सुखालो । जब खूब सूख जावें, छै सेर आरने ( जंगली ) कण्डोंके बीचमें सराइयोंको रख फूँक दो । जब आग वगैरः एकदम शीतल हो जावें, सराई निकाल कर खोलो । सफेद शिंगरफ-भस्म मिलेगी ।

सेवन-विधि ।

मात्रा—एक चाँवल भर । एक मात्रा मक्खन या मलाई मिला कर खावें । ऊपरसे मिश्री-मिला दूध पीवें । सात दिनमें नामर्द मर्द हो जावेगा और तन्दुरुस्त आदमी औरतके लिये पागल हो जावेगा ।

मुर्गीके अण्डोंकी भस्मकी विधि ।

मुर्गीके अण्डे लाकर उनके भीतरकी सफेदी जरदी वगैरः निकाल देना, केवल छिलके आध सेरके करीब लेना, छिलकोंको नीबुओंके रसमें खरल करके, खटकन बूटी पीसकर, उसके लुगदेके भीतर खरल किये हुए छिलके रखना । पीछे इस लुगदेको सुखाकर, ऊपरसे कपड़-मिट्टी करना और इसे भी सुखाकर गजपुटमें फूँक देना ।

यही अण्डोंकी भस्म आपको शिंगरफकी डली पर लहेसनी होगी और यही डलीके नीचे ऊपर बिछानी होगी । कहते हैं, यह दवा शीघ्रपतन और स्वप्नदोषकी रामवाण दवा है । इससे स्त्रियोंका श्वेत-प्रदर जड़से नष्ट हो जाता और वे फिरसे नवयौवना हो जाती हैं ।

शिंगरफ-भस्मकी तैयारीके लिए नीचे लिखी चीजें जुटानी होंगीः—

( १ ) शिंगरफकी डली	...	...	५ तोले
( २ ) बिरौजा	...	...	१ सेर
( ३ ) फासफरसका तेल	...	...	१ पाव
( ४ ) मालकौंगनी कुटी हुई	...	...	२० तोले



## उत्तमोत्तम परीक्षित योग ।

६५७

( ५ ) मिलावे कुटे हुए	...	...	२० तोले
( ६ ) घी	...	...	२० तोले
( ७ ) शहद	...	...	२० तोले
( ८ ) आकका दूध	...	...	१ सेर
( ९ ) सफेद प्याजका रस	...	...	६ सेर
( १० ) ब्राण्डी	...	...	४ बोतल
( ११ ) मुर्गीके अण्डोंकी भस्म	...	...	२० तोले

## ( २० ) चांदी की सफेद भस्म ।

जैपुरी असली चांदीका रुपया आगमें लाल-सुर्ख करके, नीबुओंके रसमें पचास बार बुझाओ । इस तरह रुपया शुद्ध हो जावेगा ।

चौदह तोले "लाल मिर्च" पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो । लुगदीके बीचमें उस रुपयेको रखकर, उसपर कपरोटी करो और सुखा लो । सूखने पर उसे बीस सेर कण्डोंके बीचमें रखकर आग लगा दो । जब आग बगैर शीतल हो जावे, उसे खोलो । आपको सफेद भस्म मिलेगी ।

## ( २१ ) हिंगुलकी सफेद भस्म ।

उत्तम हिंगुल एक तोला लेकर आकके दूधमें खरल करो और टिकिया बना लो ।

आकके फूल चार तोले सिलपर पीसो और फूलोंकी लुगदीमें हिंगुलकी टिकिया रखकर, ऊपरसे कपरोटी करो और सुखा लो । सूखने पर उसे डेढ़ सेर कण्डोंके बीचमें रख फूँक दो । सफेद भस्म तैयार मिलेगी ।

## ( २२ ) संखिया भस्म ।

एक तोले संखिया एक मिट्टीके कुल्हड़ेमें रखो । ऊपरसे एक पाव आकका दूध भर दो और कुल्हड़ेको बिना धूँकी आगपर रखकर, पकाओ । जब आकका दूध जल जावे, तब उसी कुल्हड़ेमें एक पाव



थूहरका दूध भर दो और पकाओ । जब थूहरका दूध भी जल जावे, उसी कुल्हड़ेमें एक पाव भेड़का दूध भर दो और पकाओ । जब यह दूध जल जावे, संख्याकी डलीको निकाल लो ।

गेहूँका आटा चार तोले लेकर आकके दूधमें सानो और एक रोटी बनालो । उस रोटीमें उस संख्याकी डलीको रखकर आगपर सेको । सिक जाने पर, उस डलीको निकाल लो । फिर चार तोले गेहूँके आटेको आकके दूधमें सानो और रोटी बनाकर, उसमें संख्याकी डली रखो और रोटी पकाओ । इस तरह और सत्रह बार आप आटे को आकके दूधमें सानो, उसकी रोटी बना लो, उस रोटीमें संख्याकी डली रख आग पर सेको । मतलब यह, कुल इक्कीस बार आप संख्या की डलीको रोटी बना-बनाकर सेको । पहली बार रोटीको मामूली खाने की रोटीकी तरह सेको । पीछे दूसरी, तीसरी, चौथी बार क्रमशः ज्यादा ज्यादा सेको । इक्कीस बार सिक जानेपर डलीको रोटीसे निकाल लो ।

इस संख्यामें “ताम्बा” गलाकर डालनेसे सफेद भस्म बन जावेगी । इसी तरह “रूपया” गलाकर डालनेसे उसकी भी भस्म हो जावेगी और वह भस्म वजनमें दूनी होगी । यानी एक तोले संख्या की और एक तोले चाँदीकी भस्म होगी ।

### ( २३ ) संख्या भस्मकी और विधि ।

पहले संख्याको, १२ घण्टे तक, नीबुओंके रसमें खरल करके शुद्ध कर लो ।

पीपल या इमली अथवा ढाककी छालको सुखाकर, आग लगा दो । जब राख हो जाय, उठा लो । इस राखको २४ घण्टे तक घोग्वार के रसमें घोटकर सुखा लो । पीछे उसे एक हाँडीमें भरकर, हाँडीका मुँह बन्द करके, उसे गजपुटमें फूँक दो । शीतल होनेपर हाँडीसे भस्म को निकाल लो और फिर २४ घण्टे ग्वारपाठेके रसमें घोट, सुखा, हाँडीमें भर, गजपुटमें फूँक दो । तीसरी बार फिर उसे ग्वारपाठेके



रसमें घोट, सुखा, हाँडीमें भर, गजपुटमें फूँक दो । यह भस्म कामकी हो गई ।

अब एक हाँडीमें यह तैयार भस्म भरो, भस्मके बीचमें संख्याकी डली रखो । हाँडीका मुँह बन्द कर, हाँडीकी कपरोटी करो और सूखने पर गजपुटमें फूँक दो । स्वांग शीतल होने पर, हाँडीसे डलीको निकाल लो । यही संख्याकी भस्म होगी ।

### ( २४ ) संख्या-भस्मकी और विधि ।

एक तोले संख्याको एक कपड़ेमें बाँध, एक हाँडीमें अधर लटका दो । आधी हाँडीमें ढाई सेर गायका दूध भर दो और हाँडीके नीचे मन्दी-मन्दी आग लगाओ, जिससे भाफ संख्याको लगे । इस तरह संख्या शुद्ध हो जावेगा । इस शुद्ध संख्याको चार तोले कागजी नीबुओंके रसमें खरल करके टिकिया बना लो ।

इमलीकी छाल लाकर सुखा लो । सूखने पर आग लगा दो । जब भस्म हो जावे, रख लो । कोई ४-५ सेर राख दरकार होगी ।

एक हाँडीमें आधी हाँडी यह राख भर दो । उसपर संख्याकी टिकिया रख दो । टिकिया पर फिर इमलीकी राख दाब-दाब कर गले तक भर दो । हाँडी पर सराई रख, हाँडीकी कपड़मिट्टी करो और सुखा लो ।

सूखी हाँडीको चूल्हे पर रखकर १६ घण्टे आग दो । पहले ५ घण्टे आगको तेज रखो, फिर ५ घण्टे आगको बीचकी रखो और अन्तमें ६ घण्टे आगको मन्दी रखो । जब आग वगैरः ठण्डी हो जावे, हाँडीसे भस्म निकाल लो ।

नोट—संख्या ग्वारपाठके रसमें खरल करनेसे भी शुद्ध हो जाता है ।

### ( २५ ) पारेकी भस्म ।

शुद्ध पारा	...	...	५ तोले
शुद्ध गन्धक	...	...	५ तोले



बड़ी सीप	...	...	२ नग
धानकी भूसी	...	...	१५ सेर

बनानेकी तरकीब ।

एक सीपमें पिसी हुई गन्धक अढ़ाई तोले बिछा दो । गन्धक पर सारा पारा रख दो । पारे पर फिर बाक्री रही अढ़ाई तोले गन्धक बिछा दो । इसके बाद सीप पर दूसरी सीप रखकर ७८ अच्छी कपरौटी करो और सुखा लो । सूखने पर, सीपीको धानकी भूसीमें रख कर आग लगा दो । जब आग ठण्डी हो जावे, सीपको निकाल लो और उसे खोल कर पारेकी भस्म निकाल लो ।

फल ।

इस भस्मको १२ चॉवल-भर मक्खनमें मिलाकर खानेसे बूढ़ा भी जवानीका मजा लूटने लगता है । हस्तमैथुनिये इसे सेवन करके फिरसे निर्दोष होकर संसारका सुख भोगते हैं । इसके खाने वाला इच्छानुसार रुक सकता है ।

( २६ ) गंधक-योग ।

शुद्ध आमलासार गंधक महीन पीस कर खरलमें डालो । ऊपरसे सेमलकी मूसलीका रस डाल-डालकर २१ दिन तक, लगातार खरल करो और सुखा लो । पीछे पीस छानकर शीशीमें भर लो ।

सबरे-शाम डेढ़ डेढ़ माशे यह दवा धारोष्ण दूधमें मिलाकर पीनेसे प्रमेह वगैरः धातुरोग छूमंत्रकी तरह भाग जाते हैं । कम से-कम ४५ दिन सेवन करें । सुपरीक्षित है ।

( २७ ) उन्मत्त पंचक अर्क ।

धतूरा	...	...	१० तोले
कपूर	...	...	१० ”
भाँग	...	...	१० ”
जावित्री	...	...	१० ”



पोस्तके डोडे	...	...	१० तोले
अजवाइन	...	...	५० तोले

इन सबको अधिकवरा करके, मिट्टी या चीनीके बासनमें भर दो और ऊपरसे १६ सेर गायका दूध भर दो और २४ घण्टे भोगने दो । बादमें, कलईदार भभकेमें डाल अर्क खींच लो और बोतलों में भर लो ।

एक या दो तोले यह अर्क, काँच या चीनीके प्यालेमें निकाल रोज सवेरे-शाम पीनेसे यह पुरुषोंको कामान्ध या मदान्ध कर देता है । यह अर्क नशा लाता है, अतः पहले आधा तोलेसे शुरू करना उचित है ।

( २८ ) नामदी पर अचूक गोली और मरहम ।

गोलियाँ ।

जिंक फोस्फाइड	...	...	४ ग्रैन
ओरो क्लोराइड	...	...	५ ग्रैन
एक्सट्रैक्ट नक्सवोमिका	...	...	३० ग्रैन
एक्सट्रैक्ट कोका	...	...	४ ड्राम
फेरी आर्सीनास	...	...	८ ग्रैन
एक्सट्रैक्ट डामियाना	...	...	६ ड्राम
एक्सट्रैक्ट केनेवस इन्डिका	...	...	३० ग्रैन
पिल फासफोराई	...	...	४ ड्राम
फैराईफास	...	...	२ ड्राम
खलोइन	...	...	१५ ग्रैन

बनानेकी तरकीब ।

इन सब दवाओंको विनायती खरलमें डालकर खरल करो और उड़-समान गोलियाँ बनालो । ये गोलियाँ कड़वी होती हैं, अतः इन्हें शुगर-कोटेड ( Sugar-Coated ) करलो यानी खींड़ चढ़ा दो या सोने-चाँदीके बर्क चढ़ा दो ।



## सेवन-विधि ।

सवेरे-शाम एक-एक गोली निगल कर, ऊपरसे गायका आध सेर गरम दूध मिश्री और एक तोले धी मिलाकर पीनेसे निस्सन्देह लाभ होता है ।

## पथ्यापथ्य ।

धी, दूध और हल्की चीजें खावें । लाल मिर्च, गुड़, तेज, खटाई, भारी चीज, स्त्री-प्रसंग, धूप और आलस्यसे बचें ।

## इन्द्रिय पर लगानेकी मरहम ।

टिंचर मुश्क	...	...	१५ बूँद
ऑइल यूडोन्डी फिलि	...	...	१ ड्राम
ऑइल क्रोकिलाई	...	...	२ ड्राम
ऑइल फास्फोरा	...	...	१ ड्राम
कैम्फर	...	...	१० ग्रेन
ऑइल क्रॉटन	...	...	२ ग्रेन
ऑइल आव् केन्थाइडिस	...	...	१ ड्राम
वैजलीन	...	...	३ ड्राम

इन सब चीजों को खरलमें डालकर थोड़ी देर खरल करें और शीर्षामें भर लें ।

## लगानेकी विधि ।

रातको सोते समय, शीर्षामें से एक चने भर तेल (मरहम) लेकर, धीरे-धीरे इन्द्रिय पर, सीवन-सुपारी बचाकर, मलो । पीछे एक भोजपत्र या बँगला पान, यही तेल लगा, आग पर गरम कर, इन्द्रिय पर लपेट दो । ऊपरसे पतला कपड़ा लपेट, धागा लपेट दो । नित्य रातको इसे मलो । अगर फुन्सियाँ निकल आवें तो इसे मत लगाओ । १०१ बारका धोया मक्खन कई दफा फुन्सियों पर चुपड़ो । जब फुन्सी मिट जावें, फिर इसी मरहमको लगाने लगे ।

स्त्री-प्रसंग और शीतल जलसे इन्द्रिय बचाओ । अगले जलतीसे यह मरहम सीवन सुपारी पर लग जावे और वहाँ जलन होवे,



तो “वैजलीनमें” कपूर मिलाकर या जिंक आकसाइड मिलाकर वहाँ लगाओ । ठण्डक पड़ जायगी ।

नोट—प्रिन्स होमियो एण्ड आयुर्वेदिक औषधालय, मेरठके मालिकने ये गोली और मरहम परोपकारार्थ पत्रोंमें प्रकाशित की हैं । आप कहते हैं, इन गोलीयों और मरहमसे सौ में सौ नामर्द चंगे होते हैं । ये कमी फेल नहीं होतीं । हमने स्वयं इनकी परीक्षा नहीं की है, पर एक प्रतिष्ठित विद्वानकी बात पर विश्वास करके इन्हें अपनी पुस्तकमें स्थान दिया है । पाठक परीक्षा करें । हम आपको धन्यवाद देते हैं । हम भी परीक्षा करेंगे । अगर ये ठीक निकलीं तो इसकी सूचना छपवा कर पुस्तकमें लगा देंगे ।

### ( २६ ) अपूर्व मैथुन शक्तिवद्धक योग ।

मुलहठी पिसी-छनी	....	....	२ तोले
असगन्ध पिसी-छनी	....	....	२ तोले
विधारा पिसा-छना	....	....	१ तोले

इन तीनोंको मिलाकर शीशीमें रख लो । चूर्ण अढ़ाई माशे और उत्तम “मकरध्वज” खूब घुटा हुआ १ रत्ती, मिश्री-मिले दूधमें मिलाकर, जाड़ेके मौसममें, सवेरे-शाम प.नेसे अपूर्व बलवीर्य बढ़ता है । ३४ महीने सेवन करनेसे मैथुन-शक्ति बेहद बढ़ जाती है । परीक्षित है ।

नोट—मकरध्वज जितना अच्छा होगा, गुण उतना ही अधिक होगा । मकरध्वजको खरलमें डालकर, २४ घण्टे खरल करो और एक-एक रत्तीकी पुड़िया बना कर रख लो । अगर मकरध्वज अच्छी तरह पिसा न होगा, तो पेटसे निकल जायगा और कुछ भी लाभ न होगा ।

### उत्तमोत्तम लेप और तिले ।

#### ( ३० ) शिथिलता नाशक लेप ।

कौड़िया लोबन	....	....	१४ तोले
लौंग	....	....	४ ”
जायफल	....	....	४ ”
जावित्री	....	....	४ ”
हरताल ( शुद्ध )	....	....	४ ”



इन सबको पोसकूटकर आतिशी शोशोमें भरो और पाताल-यन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लो ।

इस तेलकी एक सोंक पानमें लगाकर खाने, और सीवन-सुपारी चबाकर इन्द्रिय पर रोज मलनेसे इन्द्रियों में तेजी आती तथा ढीलापन और सूनापन चला जाता है ।

### ( ३१ ) बानर-चोआ ।

बन्दरके गूका पाताल-यन्त्र द्वारा चोआ टपकाकर, इन्द्रिय पर लगाने से लिङ्गका ढीलापन चला जाता है । यह नुसखा सिद्ध भैषज्य-रत्नावली का है ।

### ( ३२ ) शिथिलता नाशक घृत ।

सफ़ेद संखिया	...	...	१ तोला
अफीम	...	...	१ तोला

इन दोनोंको पाँच सेर दूधमें घोलकर, दहीका जामन देकर जमा दो । दूसरे दिन बिलोकर घी निकाल लो । इसको लिङ्ग पर लगानेसे शिथिलता दूर हो जाती है ।

### ( ३३ ) एक यूनानी तिला ।

मुर्गीके चालीस अण्डोंकी जर्दी	....	....	४० नग
अकरकरा पिसा-छना	....	....	१ तोले
दालचीनी	....	....	१ ”
जायफल	....	....	१ ”
लौंग	....	....	१ ”

इन सबको खरलमें घोटकर, पाताल-यन्त्रकी विधिसे तेल निकालो और लिङ्ग पर नित्य मलो । वह खूब तेज और सख्त हो जावेगा ।

### ( ३४ ) लिंगको दृढ़ करने वाला तेल ।

मीठे बादामोंका तेल	....	....	१ तोला
केशर	....	....	१ माशे



## उत्तमोत्तम परीक्षित नवीन योग ।

६६५

जायफल	...	...	१ माशे
जावित्री	...	...	१ माशे

इन सबको खरल करके इन्द्रिय पर लगाने और पानमें खानेसे लिङ्गमें तेजी और सख्ती आती है ।

## ( ३५ ) काबिल तारीफ तिला ।

अकरकरा	...	...	१ तोला
जायफल	...	...	१ "
सफेद चिरमिटी	...	...	१ "
मालकांगनी	...	...	१ "
शुद्ध मीठा विष	...	...	१ "
लौंग	...	...	१ "
दालचीनी	...	...	१ "
शुद्ध कुचला	...	...	१ "
शुद्ध धतूरेके बीज	...	...	१ "
काले तिल	...	...	१८,,

इन सबको कूट-पीसकर खरलमें डालो । ऊपरसे सफेद कनेरकी जड़का स्वरस डाल-डालकर २४ घण्टे खरल करो और पाताल-यन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लो ।

यह तिला खाने और लगानेके काममें आता है । एक सींक-भर तेल, पान पर लगाकर, खाने और सौवन-सुपारी बचाकर लिङ्ग पर नित्य मलनेसे नपुन्सकता नष्ट हो जाती है । पर यह तिला आवले-फफोले कर देता है, यही खराबी है । लेकिन आराम बीसों बिस्वे करता है । फफोले होने पर, तिला लगाना बन्द करके १०१ बारका धोया हुआ अफखनउस जगह लगाना चाहिये । अगर पूरा फायदा हो जावे तब तो कुछ बात ही नहीं, अन्यथा यही तिला फिर लगाना चाहिये ।



## ( ३६ ) अजीबो गरीब तिला ।

केशर	...	...	३ माशे
धतूरेके बीज	...	...	२ तोले
संखिया	...	...	१ तोले
अण्डोंकी जर्दी	...	...	६ नग की
बीरबहूटी	...	...	२ तोले
मालकांगनी	...	...	२ तोले

इन सबको कूट-पीस, आविशी शीशीमें भर, पाताल-यन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लो ।

सीवन-सुपारी बचाकर लिङ्ग पर एक डँगलीसे, धीरे-धीरे नित्य यह तिला मलो । ऊपरसे बैंगला पान और कण्डा लपेटो । अगर बाजरेके दानों-जैसी फुन्सियाँ होजावें, तो गायके घीमें कपूर मिलाकर वहाँ लगाओ । जब फुन्सी न रहें, फिर तिला लगाओ । सारे दोष दूर हो जावेंगे ।

## ( ३७ ) हस्तमैथुनियोंको तिला ।

केशर	...	...	६ माशे
लौंग	...	...	६ ”
दालचीनी	...	...	६ ”
कस्तूरी	...	...	६ ”
तज	...	...	१ तोला
बीरबहूटी	...	...	१ ”
खरातीन-सूखा	...	...	१ ”
जायफल	...	...	१ ”
जावित्री	...	...	१ ”
रुमी मस्तगी	...	...	७ माशे
शिगरफ	...	...	३ माशे



कूटन-पीसने लायक इवाओंको कूट-पीस कर खरलमें डालो ।  
ऊपरसे मुर्गीके अण्डोंकी सफेदी-जर्दी डाल-डाल कर खरल करो ।  
बस तिला बन गया ।

इस तेलमें जरा-सा शहद मिलाकर, धीरे-धीरे लिंग पर मलो  
सौवन-सुपारी बचा दो । हथलससे पैदा हुए सारे दोष दूर हो जायेंगे ।

( ३८ ) मैथुन-शक्तिवर्द्धक तिला ।

कौड़िया लोबान	...	...	४० तोले
विष	...	...	४ ”
अफीम	...	...	४ ”
धतूरेके बीज	...	...	४ ”
कुचला	...	...	४ ”
जावित्री	...	...	४ ”
तज	...	...	४ ”
लौंग	...	...	४ ”
अगर	...	...	२ ”
कपूर	...	...	२ ”
केशर	...	...	२ ”
कपूर कचरी	...	...	२ ”

इन सबको कूट-पीस कर, आतिशी शीशीमें भर, पाताल-यंत्र  
से ते निकाल लो ।

इसे शेरकी चर्बीमें मिजा कर, सौवन-सुपारी बचाकर, लिङ्ग पर  
मलने और एक-एक सौंरु-भर पान पर लगाकर खानसे मैथुन-शक्ति  
बेहद बढ़ जायगी ।

( ३९ ) नपुंसकत्वनाशक अव्यर्थ तिला ।

१—शुद्ध अफीम	...	...	१ तोला
२—शुद्ध मितावे	...	...	१ ”



३—शुद्ध धतूरेके बीज	...	...	१ तोला
४—शुद्ध सुहागा	...	...	१ ”
५—घी	...	...	१ पाव
६—चमेलीकी पत्तियोंका स्वरस	...	...	२६ तोले
७—पानी	...	...	१ सेर

पहली चार चीजोंको पानीके साथ सिल पर पीसो और लुगदी बनालो । कलईदार कढ़ाहीमें, लुगदी, घी, स्वरस और जल डालकर, खन्दाभिसे पकाओ, जब घी मात्र रह जावे, छानकर रख लो ।

इसमें से एक रत्ती घी पान पर लगाकर खाने और इसीको सीवन-सुपारी बचाकर, लिङ्ग पर मजनेसे नपुंसकता शर्तिया चली जाती है ।

### ( ४० ) नपुंसकत्वहर घृत ।

शुद्ध सफेद संखिया	....	...	१ तोला
शुद्ध अफीम	...	...	१ ”
गायका दूध	...	...	५ सेर

संखिया और अफीम दूधमें घोलकर, दहीका जामन देकर जमा दो । सवेरे ही रईसे बिलोकर घी निकाल लो ।

एक चाँवल-भर घी पान पर लगाकर खाने और सुपारी-सीवन बचाकर मजनेसे भी क्या नपुंसकत्व रह सकेगा ।

### ( ४१ ) करवीराद्य घृत ।

सफेद कनेरकी जड़की छाल	...	...	१० तोला
सफेद चिरमिटी	...	...	१० ”
मीठा कूट	...	...	२ ”
शुद्ध जमालगोटा	...	...	२ ”
दूध	...	...	१५ सेर

सब दवाओंको कूट-पीसकर दूधमें डालो और पकाओ । पीछे जामन देकर जमादो । सवेरे बिलोकर घी निकाल लो ।



## उत्तमोत्तम परीक्षित नवीन योग ।

६६६

इसे एक चाँवल-भर पानमें लगा कर खाने और लिङ्ग पर सीवन-सुपारी बचा मलनेसे नपुंसकता रहती न देखी न सुनी ।

## ( ४२ ) मुजरब तिला ।

तपकी हरताल	...	...	४ तोला
विष	...	...	४ ,,
सफेद सखिया	...	...	४ ,,
पीला सखिया	...	...	४ ,,
अकरकरा	...	...	४ ,,
आमलासार गन्धक	...	...	४ ,,
सुहागा	...	...	४ ,,
सफेद चिरमिटी	...	...	४ ,,
मालकांगनी	...	...	४ ,,
धतूरेके बीज	...	...	४ ,,
मुर्गीके अण्डे	...	...	१० नग

इन सबको कूट-पीसकर खरलमें डालो । ऊपरसे अण्डोंकी जर्दी-सफेदी ढालकर खरल करो और पाताल-यन्त्रकी विधिसे तेल निकाल लो । इस तिलेके ४० दिन लगानेसे इस्तमैथुनकी वजहसे पैदा हुई नामर्दी नहीं रहती, यह निश्चय है ।

## ( ४३ ) नपुंसकत्व गजकेशरी लेप ।

बिनौलोंकी मींगी	...	...	२ तोले
अफीम	...	...	२ ,,
जायफल	...	...	२ ,,
वत्सनाभ विष	...	...	२ ,,
अकरकरा	...	...	४ ,,
सूअरकी चरबी	...	...	२० ,,



सूखी दवाओंको कूट-पीस कर खरलमें डालो । ऊपरसे त्रिनौलोंकी मींगी और सूअरकी चरबी डाल कर ६ घण्टों तक खरल करो । बस, लेप तैयार है । इस तिलेको विधिसे लेप करने और पान-कपड़ा लपेटनेसे नपुन्सकत्व इस तरह भाग जाता है जिस तरह सिंहको देख कर हाथी भाग जाते हैं ।

### ( ४४ ) ब्राण्डो प्रभृतिका लेप ।

उत्तम ब्राण्डी	...	...	१ तोला
कनेरकी जड़का स्वरस	...	...	१ ”
गायका घी	...	...	१ ”

तीनोंको भिला कर, शीशीमें रख लो । सीवन-सुपारी बचा कर, लिंग पर लेप करने और पान-कपड़ा लपेटनेसे लिंगके सारे दोष दूर हो जाते हैं ।

### ( ४५ ) तिलों का राजा ।

सफेद कनेरकी जड़की छाल एक सेर अधकचरी करो । फिर उसे पाँच सेर दूधमें मिलाकर पकाओ । पीछे दहीका जामन देकर जमा दो और सवेरे रईसे बिलो कर घी निकाल लो । इस घीमें नीचे लिखी आठ दवाएँ कपड़-छन करके और तोल-तोल कर एक-एक तोले मिलादो :—

अकरकरा, तेजबल, तज, तेजपात, लौंग, जावित्री, दालचीनी और जायफल ।

घीमें ऊपरकी आठों दवाओंको मिलते ही तिलोंका राजा तैयार हो जावेगा ।

### लगाने-खानेकी तरकीब ।

इसे सीवन-सुपारी बचाकर, लिंगपर १५।२० मिनट रोज मलें और ऊपरसे बंगला पान और कपड़ा तथा धागा लपेट दें । इसीमेंसे एक चाँवल-भर घी पानमें लगा कर नित्य खावें । ४५ दिन लगाने-खानेसे हर तरहका नामर्द अच्छा हो जावेगा ।



## ( ४६ ) बाँकपन नाशक लेप ।

हालोंके बीज और कड़वा कूट बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ सिल पर पीसो और लिंगपर उसका लेप करके, ऊपरसे पान बाँधो । यह लेप करके, अगर लिंगपर लकड़ीकी खपची लगाकर पट्टी बाँधी जावे, तो कैसा भी टेढ़ापन हो दूर हो जावेगा । ढीलापन दूर होकर तेजी भी बढ़ेगी ।

## ( ४७ ) स्तम्भन कारक तिला ।

सफेद चिरमिटो, लाल चिरमिटो, सफेद कनेरकी जड़की छाल, लौंग, दालचीनी, नागौरी असगंध और अकरकरा—एक-एक तोले लेकर, सबको जरा-जरा कूट लो और पाताल-यंत्रकी विधिसे तेल निकाल लो ।

एक सौंफ-भर तेल पानपर लगाकर खाओ और सोंवन-सुपारी चचाकर रोज लिंगपर मजो । ऊपरसे पान और कपड़ा वगैरः लपेटो । अगर एक सौंफ भर तेल पात पर लगाकर खावें और एक घण्टे बाद मैथुन करें तो खूब स्तम्भने या रुकावट होगी । इस तिलेके खाने लगानेसे मैथुनेच्छा बहुत होती और ढीलापन दूर होकर लिंग लकड़ी-जैसा हो जाता है । इस तिलेसे आवले-फफोले नहीं उठने और न कोई अन्य पीड़ा होती है ।

## ( ४८ ) अपूर्व चमत्कारक तिला ।

शिंशरफ रूमी	...	...	२ तोला
सफेद संखिया	...	...	३ माशे
जमालगोटा	...	...	२ तोला
बीरबहूटी	...	...	२ तोला
मोम	...	...	४ तोला
मक्खन	...	...	१२ तोला



पहले शिंगरफ और संखियाको खूब महीन पीसकर छान लो । इनके बाद जमालगोटा और बीरबहूटीको पीस लो । चारोंको मिला दो । मक्खनको आगपर गरम करो और उसमें मोम भी मिला दो । जब मक्खन और मोम एकदिल हो जावें, उनमें शिंगरफ वगैरः चारों चीजें मिला दो ।

इस घीको सीवन-सुपारी बचाकर लिंग पर नित्य मलो और ऊपरसे बैंगला पान और कपड़ा लपेटो । २१ दिन लगानेसे अपूर्व चमत्कार दीखेगा और लिङ्गमें बेहद ताकत आवेगी ।

### ( ४६ ) फलोंका तेल ।

जमालगोटा ६ तोले, दाख, चिलगोजे, पिस्ते, चिरौंजी, अखरोट और नारियलकी गिरी हर एक दो-दो तोले—इन सबको कूटकर बादामका तेल निकालनेकी मशीनमें रख, दबा तेल निकाल लो । सीवन सुपारी बचा, लिङ्गपर १४ दिन मलनेसे नामर्दीको भागना ही पड़ता है ।

### मैथुनमें आनन्दकारी लेप ।

#### ( ५० ) लज्जत देने वाला लेप ।

औरतके सिरके बालोंकी राख १ माशे, कबूतरकी बीटकी सफेदी १ माशे, चमेलीका असली तेल ३ माशे—तीनोंको मिलाकर शीशीमें रख लो । जब मैथुन करना हो, इसे इन्द्रियपर लगाकर मैथुन करो । बेहद मजा आवेगा ।

#### ( ५१ ) राजबका मजा देनेवाला लेप ।

सुहागा, कस्तूरी, केशर, घीमें सेकी बीरबहूटी, पिसी दालचीनी, कपूर, लौंग, रीछका लिंग, इत्र केतकी, इत्र गुलाब, इत्र महुँदी, इत्र अगर, इत्र खस, इत्र मोतिया, इत्र शाहनाज, इत्र अम्बर और इत्र केशर एक-एक रत्ती लाकर खरलमें खूब घोटो और एक शीशीमें



भरदो । जब संभोग करना हो, लिंग पर लगा कर भोग करो । गजबका मज्जा आवेगा । स्त्री-पुरुष दोनोंको स्वर्ग दीखेगा ।

नोट—सुहागा, केशर, बीरबहूटी, दालचीनी, कपूर, लौंग वगैरहका पीसकर कपड़ेमें छान लेना और तब एक-एक रत्ती तोलकर खरलमें डालना । रीछके लिंगको रैतीसे रेतकर महीन कर लेना ।

### ( ५२ ) अपूर्व आनन्ददायक लेप ।

कस्तूरी २ रत्ती, बच २ माशे, अकरकरा ३ माशे, रुहीदाना ६ माशे, लवेण्डर ६ माशे और असली शहद ७ माशे—इन सबको खरलमें डाल, ऊपरसे गुलाब या केवड़ेका अर्क डाल घोटो और लिंग पर लगा लो । सूखने पर पोंछ लो और मैथुन करो । इतना आनन्द आवेगा कि लिखकर बता नहीं सकते ।

### ( ५३ ) बीरबहूटी आदिका आनन्दकारी लेप ।

बीरबहूटी, हिंगुलोत्थ पारा और शुद्ध सफेद संखिया—दो-दो तोला और मुर्गीके सात अण्डोंकी जर्दी—सबको मिलाकर खरलमें १२ घण्टों तक खरल करो और चने-समान गोलियाँ बनाकर, आतिशी शीशीमें भर पातालयंत्रकी विधिसे तेल निकालो ।

इस तेलकी एक सींक भर कर पान पर लगाओ और जाड़ेमें नित्य खाओ । मैथुनशक्ति खूब बढ़ जायगी । अगर संभोगसे कुछ देर पहले एक सींक खाकर, संभोग करोगे तो खूब देर तक रुकावट भी होगी ।

आतिशी शीशीसे तेल निकल आनेके बाद जो छूँछ उसमें रहे, उसे रख लो । उसमेंसे ज़रा-सी पानीके साथ पीसकर लिंग पर लगाने और मैथुन करनेमें खूब आनन्द आता है ।

नोट—इस नुसखेमें ज़हर है, अतः एक सींकभरसे ज़ियादा न खाना, कम खाना बेहतर है । अगर खुशकी आवे, तो दूध-बी और मिश्री मिलाकर पीना ।



## ( ५४ ) कपूरादि लेप ।

कपूर ४ रत्ती और सुहागा १ माशे दोनों काजलके समान लेकर जरासे असली शहदमें मिला लो । इसे लिंगपर लेप करो । जब सूख जावे, भोग करो । अतीव आनन्द आवेगा ।

## ( ५५ ) अत्यानन्दी लेप ।

साबुन और मिश्रीको महीन पीस, नो लूके रसमें मिला, इन्द्रियपर लेप करो, जब सूख जावे संभोग करो । बहुत ही आनन्द आवेगा ।

## ( ५६ ) कबाबचीनीका लेप ।

शीतलवनी, अकरकरा, सांठ और ह्रीरा हांग, एक-एक माशे लेकर महीन पीसो और पानीके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो ।

जब संभोग करना हो, एक गोली मुँहमें रखो । थोड़ी देर बाद मुँहसे निकाल, थूकके साथ रगड़ो और लिंगपर लेप करो । जब सूख जावे, मैथुन करो । राजबका मज्जा आवेगा ।

## ( ५७ ) अपूर्व लेप ।

मुर्गेकी चर्बी और मुर्गेका पित्ता दोनोंको पीसकर लिंगपर लेप करो और सूखने पर मैथुन करो । स्त्री इतनी खुश हो जावेगी कि वह और किसी भी पुरुषको पसन्द न करेगी ।

## ( ५८ ) परम पुष्टिकर और लुधावर्द्धक बटी ।

शुद्ध सफेद संखिया	...	...	१ तोला
शुद्ध हरताल तपकी	...	...	१ तोला
शुद्ध शिंगरफ रुमी	...	....	१ तोला

इन तीनोंको खरलमें डाल ऊपरसे नीबुओंका रस दे-दे कर तब तक खरल करो, जब तक कि १०० नीबुओंका रस न खत्म हो जावे । जब सारा रस शेष हो जावे, मूँग समान गोलियाँ बना लो ।

सवेरे-शाम एक-एक गोली, बिना दांत लगे, निगलकर, ऊपरसे मिश्री और घी मिला गरम दूध पीओ । दूध-घी जितना ही जियादा



पिया जावेगा उतना ही अच्छा होगा । जाड़ेमें २१ दिन, इन गोलियोंके खानेवाला रोज पाँच सेर दूध और एक पाव घी पचा सकेगा । ताकत तो हृदसे जियादा बढ़ेगी ।

नोट—पित्त प्रकृति या गरम मिज़ाज वाले इन गोलियोंको न खावें । सर्द मिज़ाज वाले भी आरम्भमें चौथाई गोलीसे शुरू करें । ज्यों-ज्यों सहते जावें, पूरी गोली पर आ जावें ।

संख्या और हरताल वगैरः अशुद्ध लेनेसे भी काम चलेगा, क्योंकि नीबूका रस उन्हें शोध देगा, पर शुद्ध चीज फिर शोधी जावे तो और अच्छा । कहा हैः—

शुद्धस्य शोधनं मृतस्य मारणं गुणाधिक्याय ।

( ५६ ) शक्तिवर्द्धक अंग्रेजी गोली ।

एक्सट्रैक्ट डामियाना	...	...	२ ड्राम
एक्सट्रैक्ट कोका	...	...	२ ”
क्विनाइन सल्फ	...	...	१ ”
फासफोरस	...	...	६४ ग्रेन
स्ट्रिकनिन्याँ	....	...	१ ग्रेन
शुगर मिल्क	...	...	४ ड्राम

इन सबको मिला—विलायती खरलमें घोट—दो-दो ग्रेनकी गोलियाँ बना लो । इनसे ताकत आती है और कमजोरी दूर होती है, यह ठीक है ।

नोट—इन गोलियोंकी बंदौलत एक बंगाली सज्जन खूब रुपया पैदा कर रहे हैं । १०० गोलीकी कीमत ५) लेते हैं ।

( ६० ) शक्ति बटी ( अंग्रेजी ) ।

एक्सट्रैक्ट नक्सबोमिका	...	...	१० ग्रेन
फासफोरस	...	...	१ ग्रेन



क्विनाइन सल्फ	...	...	३ ड्राम
शुगर मिलक	...	...	२ "

सब दवाओंको विलायती खरलमें छोटकर चालीस गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे प्रमेह-स्वप्नमेह और नपु-  
न्सकता नाश होती है ।

## ( ६१ ) डामियाना पिल्स ।

( ताक़तकी गोली )

फासफोरस	...	...	३६ ग्रैन
एक्सट्रैक्ट नक्सवोमिका	...	...	१८ ग्रैन
एक्सट्रैक्ट डामियाना	...	...	७२ ग्रैन

इन तीनोंको एकत्र खरल करके ३६ गोलियाँ बना लो । सवेरे-  
शाम एक-एक गोली खानेसे शरीर पुष्ट होता, ताक़त आती, दिमाग  
में बल आता और अकल तेज होती है ।

नोट—कलकत्तेके एक मुसलमान सज्जन इन्हीं गोलियोंके कारणसे  
मालामाल हो रहे हैं ।

## ( ६२ ) टानिक पिल्स ।

( ताक़तकी गोली )

फासफोरस	...	...	१६ ग्रैन
सलफेट सिनकोना	...	...	३७६७ ग्रैन
पिपारीन	...	...	१२६३ ग्रैन
पाडोफिलीन	...	...	१ ग्रैन
एक्सट्रैक्ट नक्सवोमिका	...	...	३३ ग्रैन
शुगर मिलक	...	...	२५ ग्रैन

यह २५ गोलियोंका मसाला है । यह गोली अफ्रीकासे आती हैं ।  
क्रीमत १) लगती है, पर लागत १ आना मात्र है । ये गोलियाँ डवर  
नाश करके ताक़त लाती हैं । बनाने वालेने प्रमेह और स्वप्नदोष इत्यादि



पर भी रामबाण लिखी है ।

### ( ६३ ) सोजाककी दवा ( पेटेन्ट ) ।

धीग्वारका गूदा	...	...	६ तोले
भुना कल्मी शोरा	...	...	३ तोले

दोनोंको एकमें रख दो—गनी हो जावेगा । उसे शीशोमें भर दो ।  
देहलीकी एक दूकान इसके लिए मशहूर है । भीड़ लगी रहती है ।  
नाम है “सोजाक विन्दु” ।

### ( ६४ ) अपूर्व स्तंभन बटी ।

सफेद कनेरकी जड़की छाल	...	...	६ माशे
शुद्ध कुचला	...	...	६ ”
समन्दर शोख	...	...	६ ”
धतूरेकी जड़की छाल	...	...	६ ”
शुद्ध अफीम	...	...	६ ”

सबको महीन पीस-छानकर शहद या गायके घीमें खरल करो  
और मूँगके दाने-समान गोलियाँ बना लो । संभोग-कालके दो घण्टे  
पहले एक गोली खाकर मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे दो घण्टे रुकावट  
होती है ।

### ( ६५ ) शीघ्रपतन नाशक बटी ।

छोटी इलायचीके बीज	....	....	१ तोला
जावित्री	....	....	१ ”
जायफल	....	....	१ ”
लौंग	....	....	१ ”
अकरकरा	....	....	१ ”
दालचीनी	....	....	१ ”
केशर	....	....	१ ”



शुद्ध शिंगरफ	...	...	१ तोला
शुद्ध अफीम	...	...	१ "
अभ्रक हज्जार पुटी	...	...	१ "
मकरध्वज ( षडगुणबलिजारित )	...	...	३ माशे
कस्तूरी	...	...	६ माशे

सारो चीजें कुटी-छनी महीन लेना । मकरध्वजको ८।१० घण्टे खरल कर लेना । फिर सबको खरलमें डाल, ऊपरसे शहद मिला घोटना और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लेना । संभोगकालसे दो घण्टे पहले, एक गोली खाकर मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे खूब रुकावट होती है और सदा खानेसे मैथुनशक्ति बढ़ती है ।

### ( ६६ ) समस्त प्रमेहनाशक परीक्षित योग ।

बबूलका गोंद, बंसलोचन, सफेद चन्दनका बुरादा, कहरवा, कतीरा, निशास्ता, रुमी मस्तंगी, खसके सफेद बीज, सालम मिश्री, सूखा पोदीना, कुलफेके बीज, मोचरस, छोटी इलायचीके बीज, सूखे सिंघाड़े और शुद्ध शिलाजीत एक-एक तोले तथा मिश्री पन्द्रह तोले—सबको मिला लो ।

मात्रा—१ तोलेकी है । सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर दूध पीनेसे समस्त प्रमेह, स्वप्नदोष, शीघ्रपतन आदि नाश हो जाते, वीर्य गाढ़ा और पुष्ट होता तथा संभोगशक्ति बढ़ जाती है । परीक्षित है ।

### महावाजीकरण योग ।

( सुपरीक्षित )

( १ ) शुद्ध फौलादका चूरा	...	...	२० तोले
( २ ) शुद्ध सफेद संखिया	...	...	४ "
( ३ ) शुद्ध तपकी हरताल	...	...	४ "
( ४ ) शुद्ध आमजासार गन्धक	...	...	४ "



( ५ ) शुद्ध अष्ट संस्कारित पारा ... ४ तोले :

( ६ ) देशी कपूर ... २ , ,

नोट—ऊपर जो २० तोले फौलादका चूरा लिखा है उसीकी भस्म बनाई जावेगी । यह भस्म १६ आँचमें होगी । फौलाद—चार बार एक-एक तोले संखिया और डेढ़-डेढ़ माशे कपूरके साथ खरल करके पाँच पाँच सेर कण्डोंमें फूँका जावेगा । इसीलिए चार तोले संखिया एक बार ही लिख दिया है । संखियाकी तरह ही फौलाद—चार बार एक एक तोले हरताल और डेढ़-डेढ़ माशे कपूरके साथ खरल करके पाँच-पाँच सेर कण्डोंमें फूँका जावेगा । इसीलिए चार तोले हरताल एक बार ही लिख दी है । हरतालकी तरह, फौलाद—चार बार एक-एक तोले गंधक और डेढ़-डेढ़ माशे कपूरके साथ खरल करके पाँच-पाँच सेर कण्डोंमें फूँका जावेगा । गंधककी तरह ही फौलाद—चार बार एक-एक तोले पारे और डेढ़-डेढ़ माशे कपूरके साथ खरल करके पाँच-पाँच सेर कण्डोंमें फूँका जावेगा । चार आँचमें चार तोले संखिया, चार आँचमें चार तोले हरताल, चार आँचमें चार तोले गन्धक और चार आँचमें चार तोले पारा खत्म होगा । फौलाद वहका वही १६ बार खरल करके फूँका जावेगा ।

इस बातको याद रखो कि, फौलाद लगातार चार बार संखिये और कपूरके साथ खरल नहीं किया जावेगा । पहली बार फौलाद संखिये और कपूरके साथ खरल होगा, दूसरी बार हरताल और कपूरके साथ, तीसरी बार गन्धक और कपूरके साथ और चौथी बार पारे और कपूरके साथ खरल होगा । इस तरह चार आँच लगेंगी । चार आँच लग जाने पर फिर वही क्रम चलेगा यानी पाँचवीं आँचके समय फिर फौलाद संखिया और कपूरके साथ, छठी आँचके समय हरताल और कपूरके साथ, सातवीं आँचके समय गन्धक और कपूरके साथ और आठवीं आँचके समय पारे और कपूरके साथ खरल होगा । इसी तरह नवीं आँचके समय, फिर फौलाद संखिये और कपूरके साथ खरल होगा । आगे उसी तरह समझ लें । फिर भी, आगे हम प्रत्येक आँचके समयकी चीजें अलग-अलग ही लिखे देते हैं ।

यह भी याद रखो कि जो-जो काम, जैसे फौलाद संखिया और कपूरको खरल करना, टिकिया बनाकर सुखाना, टिकियोंको कुल्हड़े या सराबोंमें रखकर कपरोटी करना, कपरोटीको सुखाना और कुल्हड़े या सराब-सम्पुटको पाँच-पाँच सेर जंगली कण्डोंमें फूँकना—पहलो बार करने होंगे, वही सब प्रत्येक आँचके समय करने होंगे । हम सिर्फ पहली आँचके साथ सारी बातें लिखेंगे, आगे



नहीं । उन्हीं सब बातोंको बारम्बार नहीं लिखेंगे । भस्म बनाने वाले हमारे न लिखने पर भी, प्रत्येक बार खरल करके, सारे काम पहली आँचकी तरह करें ।

## भस्म की विधि

### पहली आँच

फौलादका चूरा	...	...	२० तोले
संख्या	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

तीनोंको खरलमें डालकर, ऊपरसे ग्वारपाठेका स्वरस दे-दे कर, १२ घण्टे तक खरल करो । पोछे टिकियाँ बनाकर उन्हें सुखालो । सूखने पर उन्हें कुल्हड़ेमें भर दो । कुल्हड़ेमें ढकना रख, सन्धे बन्द कर दो और ऊपर से छै-सात कपड़ोंको करके सुखालो । सूखने पर, एक गढ़ेमें पाँच सेर आरने कण्डे भरकर, उनके बीचमें कुल्हड़ेको रख दो और आग लगा दो । जब आग वगैरः शीत हो जावें, कुल्हड़ेको गढ़ेमेंसे निकाल, कुल्हड़ेसे फौलाद भस्मको निकाल लो ।

नोट—यह एक आँच लग गई । इसी तरह १५ आँच और लगानी होंगी । एक आँच लग जाने पर फौलादको निकालकर, खरलमें डालना होगा और उसके साथ जो चीजें लिखी हैं उनके साथ खरल करके फिर फूँकना होगा । जो-जो काम पहली बार करने पड़ेंगे, वही सब हरेक बार करने होंगे । जैसे खरल करना, टिकिया बनाना, कुल्हड़ेमें भरकर करौटी करना आर पाँच सेर कण्डोंमें फूँकना वगैरः ।

### दूसरी आँच

फौलाद	...	...	२० तोले
हरताल	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।



## उत्तमोत्तम परीक्षित नवीन योग ।

६८१

## तीसरी आँच

फौलाद	...	...	२० तोले
गन्धक	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वह सब करो ।

## चौथी आँच

फौलाद	...	...	२० तोले
पारा	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

## पाँचवी आँच

फौलाद	...	...	२० तोले
संखिया	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

नोट—ध्यान धरलो, पहली आँचके समय फौलाद, संखिया और कपूर खरल करनेको लिखा है । ठीक वही संखिया और कपूर इस पाँचवी आँचके समय लिखे हैं । पहिली चार आँच, दूसरी चार आँच, तीसरी चार आँच और चौथी चार आँच एक समान होगी ।

## छठी आँच

फौलाद	...	...	२० तोले
हरताल	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वह सब करो ।



## सातवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
गन्धक	...	...	१ तोले
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

## आठवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
पारा	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

## नवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
संखिया	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

## दसवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
हरताल	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

## ग्यारहवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
-------	-----	-----	---------



## उत्तमोत्तम परीक्षित नवीन योग ।

६८३

गन्धक	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ मासे

जो-जो काम पहली आँच के समय लिखे हैं वही सब करो ।

## बारहवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
पारा	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ मासे

जो-जो काम पहली आँच के समय लिखे हैं वही सब करो ।

## तेरहवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
संखिया	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ मासे

जो-जो काम पहली आँच के समय लिखे हैं वही सब करो ।

## चौदहवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
हरताल	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ मासे

जो-जो काम पहली आँच के समय लिखे हैं वही सब करो ।

## पन्द्रहवीं आँच

फौलाद	...	...	२० तोले
गन्धक	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ मासे

जो-जो काम पहली आँच के समय किये हैं वही सब करो ।



## सोलहवीं आँच ।

फौलाद	...	...	२० तोले
पारा	...	...	१ ”
कपूर	...	...	१॥ माशे

जो-जो काम पहली आँचके समय लिखे हैं वही सब करो ।

नोट—पहली चार आँच, दूसरी चार आँच, तीसरी चार आँच और चौथी चार आँचकी खरल होने वाली चीजें एक समान हैं ।

यद्यपि १६ आँच लगनेसे भस्म बन गई, पर अभी एक काम और बाकी है । उसके भी हो जानेसे असली फौलाद-भस्म तैयार होगी ।

## आखिरी काम ।

इस भस्मको एक लोहेकी कढ़ाहीमें डाल दो । तोलमें जितनी यह भस्म हो, उतनी ही सूखी बीरबहूटी लेकर कढ़ाहीमें रखी भस्मके ऊपर डाल दो । कढ़ाहीके नीचे आग जलाओ । जब सारी बीरबहूटी जल जावें, उन्हें उड़ा दो । बीरबहूटी उड़ जावेंगी, पर उनकी टाँगें रह जावेंगी । टाँगोंको होशियारीसे निकाल दो । बस, भस्म तैयार है । यह भस्म पानीपर तैरेगी । यानी एक प्यालेमें जल भर लो । उस पर चुटकी भरके, यह भस्म धीरे-धीरे डाल दो । अगर भस्म कच्ची नहीं है तो वह तैरती रहेगी, नीचे पैदीमें नहीं बैठ जावेगी । अगर कच्ची होगी, लोहा होगा, उसकी राख नहीं हुई होगी, तो वह अवश्य नीचे बैठ जावेगी ।

## सेवन-विधि

इसकी मात्रा चार चाँवल भरसे एक रत्ती तक है । एक मात्रा मक्खन या मलाईमें मिलाकर खावें । ऊपरसे मिश्री मिला दूध पीवें । अनार, सेव, अंगूर, घी, शक्कर, पेड़ा, कलाकन्द, हलवा, पूरी, दाल, भात, आलू-परवल वगैरः खाना चाहिये ।

लालमिर्च, तेल, रुटाई, नमक नहीं खावें । सेंधानोन और काली



मिर्च खा सकते हैं । स्त्री-प्रसंग, दिनमें सोना और रातमें जागना मना है जब तक कि दवा खाई जावे ।

### फल

इसके सेवनसे नया खून पैदा होता है । २१ दिनमें चेहरा लाल-सुर्ख हो जाता है । ४० दिन लेनेसे तो इतनी सामर्थ्य आ जाती है कि, बिना प्रसंग किये रुकना मुश्किल हो जाता है । हमें यह योग 'रत्नाकर' और 'चाँद' नामक मासिक-पत्रोंसे मिला है । अतः सम्पादक रत्नाकर-चाँद और पंडितवर बालकृष्ण शर्माको हार्दिक धन्यवाद देते हैं । आप लिखते हैं कि ६।७ मात्रा खाते ही कामवासना बलवान हो जाती है । मूत्रमेह, पाण्डु और यकृतकी कमजोरीके लिए अक्सीर है और पुरुषार्थके लिए बेनजीर है । आपने इसे सैकड़ों रोगियों पर आजमाया और हरबार अच्छा फल पाया । हम भी इसे बनाते और मरीजोंको देते हैं । एक आदमीका वजन एक हफ्तेमें चार पौण्ड बढ़ गया । दूसरे का चेहरा लाल सुर्ख हो गया । नया खून पैदा करनेमें यह बेजोड़ है । पर हमने इतना चमत्कार नहीं देखा कि, इसके २१ दिन सेवन करनेसे स्त्री बिना रहा ही न जावे ।

इस योगकी कहानी भी विचित्र है । यह नुसखा पण्डित बालकृष्णजीको लाहौरके सुप्रसिद्ध वैद्यवर पं० ठाकुरदत्तजी शर्मासे मिला । पं० ठाकुरदत्तजीको नवाब बहावलपुरके ससुर हाजी हयात-मुहम्मद खाँ साहबसे मिला । हाजी साहबको यह कल्लातकी पहाड़ी गुफामें रहनेवाले रत्नगिरि नामक एक साधुसे मिला । साधु महाशयने अपनी सेवा करनेवाले एक ग्वालेको इसकी चार खुराक दे दीं । वह चारों मात्रा एक साथ खा गया । उसे खाते ही कामज्वर चढ़ा । अगर साधु महाराज उसका इलाज न करते तो वह ग्वाला मर जाता । उस बूढ़े ग्वाले पर इसका इतना असर हुआ कि, उसे बुढ़ापेमें तीन शादियाँ करनी पड़ीं । पाठक इसे बनावें और फायदा उठावें ।



## सावधानी ।

बीरबहूटीकी टाँगें भस्मसे निकालनेमें बड़ी दिक्कत होती है। बड़ी पित्तेमारीसे टाँगें निकलती हैं। हमें तो एक बार भस्मको एक प्यालेमें रखकर ऊपरसे पानी भर देना पड़ा, तब सारी टाँगें पानीपर आगईं, भस्म नीचे रह गई। हम नहीं कह सकते, उक्त दोनों पण्डित जी बीरबहूटियोंको टाँगें किस तरह बीनते हैं। सारी टाँगें बीन-बीन कर निकाल देना, आकाशके तारे गिनता है। हमारी रायमें कैसी भी जबरदस्त बिनाई हो, कुछ-न-कुछ टाँगें भस्ममें जरूर रह जावेंगी।

## चन्द सुपरीक्षित अचूक नुसखे ।

## मेहमिहर तैल ।

( क ) काली तिली का तेल	...	...	४ सेर
( ख ) लाख ८ सेरको ६४ सेर पानीमें पकानेसे शेष रहा रस			१६ सेर
( ग ) शतावर का रस	...	...	४ सेर
( घ ) गायका दूध	...	...	४ सेर
( ङ ) दही या दहीका घोल	...	...	१६ सेर

( च ) कल्ककी दवाएँ—सौंफ, देवदारु, मोथा, हल्दी, दारुहल्दी, मूर्वामूल, कूट, असगन्ध, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, रेणुका, कुटकी, सुलहटी, रास्ना, दालचीनी, इलायची, भारंगी, चव्य, पुराना धनिया, इन्द्रजौं, करंजके बीज, अगर, तेजपात, त्रिफला, तालुका, बाला, चरियारा, मँजीठ, गुलसकरी, सरल, पद्माख, लोध, सोया, बच, सफेद जीरा, खसकी जड़, जायफल, अड़ूसेकी छाल और तगर हरेक दो दो तोले ।



## बनानेकी तरकीब ।

किसी कलईदार कढ़ाहीमें तेल, लाखका रस, शतावरका रस, दूध, दहीका घोल और कल्क या लुगदी रख, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ । जब तेल मात्र रह जाय, आगसे उतार छान लो । इस तेलके पकानेमें, आग लग कर तेल जल जानेका भय रहता है । अतः आग खूब मन्दी रखना ।

इस तेलसे प्रमेह, विषम ज्वर और दाह (शरीरमें जलन) मिटते हैं । प्रमेह रोगमें पेट और पेड़ू पर अपने हाथसे १ घण्टा तक मलो । अगर बहुमूत्र रोग हो और उसमें प्यास बहुत लगती हो तो हाथ-पैरों पर इस तेलको मलो । इससे और लाक्षादि तेलसे वदनकी बदबू, खुजली, भ्रम-चकर और वातरोग नाश हो जाते हैं । इसके मलनेसे प्रमेह-रोगमें अपूर्व चमत्कार देखा है । प्रमेह-रोगी इसे जरूर मालिश करावें ।

नोट—तेलकी मूच्छा करलो । लाख खूब धोकर भिगोओ । शतावर जौकुट करके रातको भिगो दो और काढ़ा बनालो । चि० चन्द्रोदय दूसरे भागके सफा ३३५ में लिखी विधिसे लाखका रस बना लो । मामूली रससे वह दस गुना गुणकारी होता है ।

## स्वर्ण-बङ्ग ।

शुद्ध राँग को छोटी सी कढ़ाहीमें रख पिघला लो । फिर इसमें राँग के बराबर शुद्ध पारा मिलाकर पिट्ठी बना लो । मिले हुए पारा और राँग कलछीसे चलाते रहनेसे पिट्ठी बन जावेगी । फिर इस पिट्ठीमें बार-बार पानी डाल-डाल कर धोओ और काला-काला पानी निकाल दो । इसके बाद पिट्ठीको खरलमें निकाल लो और उसमें पारेसे दूनी गंधक और गंधकके बराबर पिसी हुई नौसादर डालकर खूब खरल करो और कजली बना लो । इस कजलीको आतिशी शीशी में भरकर बालुकायंत्र विधिसे ( मकरध्वजकी तरह ) पाक करो । पाक होनेपर शीशीमें लगा हुआ सोनेके जैसा पीला चूर्ण ले रखो । यही स्वर्णबङ्ग है ।

इस स्वर्णबङ्गसे प्रमेह रोग नाश होते और शुक्र या वीर्य गाढ़ा होता है ।



और एक तरकीब ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक और नौसादर—तीनोंको बराबर-बराबर लेकर रखो । पहले एक छोटी कढ़ाहीमें शुद्ध राँगको गलाओ, फिर उसमें रखा हुआ पारा डालकर मिला दो । फिर इसको कढ़ाहीसे निकाल कर खरलमें डालो । जब सब मिल जावें, उसी खरलमें पिसी गंधक और नौसादर डाल दो । खरल करके, इस कजलीको काँचकी पक्की शीशीमें भर दो और शीशी पर ६-७ कपरौटी करके सुलाओ । फिर इस शीशीको बालुकायंत्रमें रखकर, मकरध्वजकी तरह पाक करो । जब सोनेके से कण हो जावें, तब समझो, स्वर्णबंग तैयार हो गई ।

इस स्वर्णबङ्गसे प्रमेह, शुक्रतारल्य-वीर्यका पतलापन आदि नाश होकर वर्ण और बलकी वृद्धि होती है ।

इन्द्रवटी ।

रस-सिन्दूर, बङ्गभस्म, अर्जुनकी छाल, इन सबको समान-समान लेकर रखो, फिर इसको सेमलकी मूसलीके रसमें खरल करके चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बना लो । एक या दो गोली ६ मासे असली शहद और ३ मासे सेमलके मूसलाके चूर्णमें मिलाकर चाटनेसे मेह और मधुमेह दोनों नाश होते हैं ।

बृहत् बङ्गेश्वर ।

बङ्गभस्म, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, चाँदी भस्म, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म और कपूर हरेक दो-दो तोले, सीसा भस्म आधा तोला और मोती भस्म आधा तोला—इन सबको खरल करके, कसेरुओंके रसकी भावनायें दो और दो-दो या एक-एक रत्ती भरकी गोली बनाओ । इन गोलीनोंको उपयुक्त अनुपातके साथ सेवन करनेसे प्रमेह, मूत्र-कुच्छ और सोमरोग प्रभृति रोग नाश होते हैं ।

श्री JAGADGURU VISHWANATHAN  
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR  
LIBRARY

Jangamawadi Math, Varanasi  
Acc. No. CC-0. Public Domain. Jangamawadi Math Collection, Varanasi







SRI JAGADGURU VISHWARADHYA  
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR  
LIBRARY.

Jangamwadi Math, VARANASI,

Acc. No. ~~2087~~

1630

5330







